

महाभारत

सभापर्व्व

सबलसिंहचौहानविरचित

उत्तमश्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणकी रीतिपर दोहा चौपाई में सरलतासे वर्णित है॥

जिसमें

शिशुपालवधपूर्वक श्रीमहाराजयुधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ मयरचित सभा में भीमसेन करके दुर्य्योधन की अप्रतिष्ठा दुर्य्योधनरचित मययज्ञ में युधिष्ठिरादि पराजय, द्रौपदी चीरहरण, गान्धारीदत्तयुधिष्ठिरादि को वरदान, पुनः द्वितीयद्यूतयज्ञ में युधिष्ठिरादि का पराजय हो वनवास गमनादि कथा सविस्तार वर्णन है॥

सम्पूर्णभारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियों के उपयोगार्थ

[illegible] बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापी गई

सन् १९०२ ई०॥

१ जुज ५ वर्क

श्रीगणेशायनमः॥

अथ सभापर्व॥

सुमिरिव्यासगणपतिचरणगिरिजाहरभग
सभापर्व भाषा भणत सवल सिंह चौह
सत्रह सौ सत्ताइस संवत शुभ मधु म
नवमी अरु गुरु पक्षसित भैयह कथा प्रक

अब नृप सुनहु कथा भै जोई। तव हित हेतु कह
कुरु पाण्डव सोहैं द्वौ आछे। जस ससिमाज बरर
इन्द्रप्रस्थ द्वौ वसैं सुखारी। मतिदृगअंधराज्य
धन महि सेन सौंपिसव दीन्हा। बुद्धिचक्षुनिजसुत
कानि राज्यपदकी अतिभारी। भीष्म द्रोण भे उ
सोहत दुर्योधन नृप गादी। भूमि पाण्डुनन्दन
इन्द्रप्रस्थ महँ पूरुब ओरा। कुरुसमाज सोहत
बसत तहां सब भूप समाजा। भीषम वाहलीक
विदुरकृपागुणनिधि सुखधामा। रविनन्दन अरु अ

दो॰ भरद्वाज सुत आदि भट दुर्योधन रुख दे
करतकाजकुरुनाथसंगनिशिदिनरहतविशे

चित्ररम्य सोहहिं बहुभांती। त्रिदशपुरी देखत र
तेहिथलते गत पश्चिमआसा। योजन सव कुंतीसु
तहां युधिष्ठिर राजहिं राजा। विपुलसम्पदा सहित
मतिदृग दीन्हे नगर पर्चाया। धर्मनन्द लीन्हे ध
दुर्योधनहिं राज्य सब दीन्हा। धर्मराज कछु मर्प न

भूमि अनेक नरेशन केरी। जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी॥
अर्जुन॥ भीमसेन॥ बलदाई। जीतिलिये जहँ तहँ भुवराई॥
तेसव दण्ड देहिं नृप धर्म्महिं। नहिं डरपहिंकुरुराजकुकर्महिं॥
सो० आवहिं विपुल नरेश जीते प्रथमहि पांडुजे।
करहिंविनय उपदेश देहिंदंड मतिहग सुतहिं॥
न दण्ड कुरुपतिगृह आवहिं। करिविनतीअनेकसमुझावहिं॥
पाण्डुसुतनकी अतिभयमानी। दण्ड पठाइ देइँरजधानी॥
योधनभय मिलन न जावहिं। गुप्तरूप धन दण्ड पठावहिं॥
द्र समान राज्य नृप करई। चलै सुमार्ग सत्य नहिंटरई॥
ति निपुणता जगमहिं छाई। प्रजालोगसुखलहहिं अघाई॥
सम्पति गृह कुबेर ते भारी। राज वन्धु सव आज्ञाकारी॥
मयकी॥ सभा बनाई जोहै। रचना अद्भुतलखि मनमोहै॥
महल अनेक बने शीशाके। लखि मनमोहै सुरईशा के॥
जलअगाधथलनहिंलखिपरई। जहँथलदृगजलमनहुँघुमरई॥
लखिविचित्रथलचितभ्रमिजाई। फिरसँभरतनहिं कोटिउपाई॥
दो० भीमसेन अर्जुन नकुल लघुभ्राता सहदेव।
महावीर बहुभुजबली करहिं नृपति की सेव॥
नृप पदवी शिर कौरव केरी। तिनते अधिक धर्मनृपकेरी॥
एकदिन धर्मराज मनआजा। राजसूय करि होई काजा॥
निजमंत्री अरु वन्धु बोलाये। करिमतठीक व्यासपहँ आये॥
भाइन सहित चरण शिरनावा। कुशलपूछिऋषिकंठलगावा॥
ऋषिरुखपाइ धर्म्म महिपाला। कहेउमनोरथसकलभुवाला॥
ाइ पार तो करौं उपाई। नत चुपसाधिरहौं ऋषिराई॥
हे ऋषिकुशलमनोरथ तोरा। करहिं भूप वसुदेव किशोरा॥
नत नरेश विदा पुनि मांगी। ऋषिपदपरसि चलेअनुरागी॥
ज मन्दिर नृप आतुर आये। देश देश कहँ पत्र पठाये॥
लिखअनेक विधिविनयबड़ाई। दीन्ह पत्र हरि नगर पठाई॥

॥ दो०-प्रियपरिजन परिवारअरु हलधरसहितकृपाल ।
सवहू आइ करुणायतन कीजे मोहिं दयाल ॥
वासुदेव द्वारका विराजत । वलयुत यदुवंशी सब राजत ॥
यकदिन माधव के मन आई । नहिंकछु राजपुरके सुधिपाई ॥
ऊधो हलधर सभा घनेरी । चरचा करत पाण्डवन केरी ॥
बहुविधि करत विचार खरारी । तेहि अवसर आये चर चारी ॥
वेतपाणि तब खबरि जनाये । सुनियदुनन्दन तुरत बुलाये ॥
जाय सबन नायो तहँ माथा । उठिकै पत्रलीन यदुनाथा ॥
बांचि सभा महँ सबन सुनाई । दूतन दीन्हेउ वास दिवाई ॥
तेहिअवसर ऋषिनारद आये । हरि गुण गावत वीनवजाये ॥
॥ दो० ऋषिहिं देखि करुणायतन कीन्हेउ दंड प्रणाम ।
सहितसभाउठिमुनिचरण धरयोशीशनिजराम ॥
दीन सुआसन अति अनुरागा । प्रभुकरजोरि रजायसु मांगा ॥
हम सनाथ आगमन तुम्हारे । निजजनजानि नाथपगुधारे ॥
अब कृपालु करि मोपर दाया । आगम हेतु कहो ऋषिराया ॥
तब बोले ऋषि सहित सनेहू । तुमहिंउचितवचनप्रभुयेहू ॥
तुव दरशन त्रिभुवन महराजा । यहितेअधिककवनवड़काजा ॥
यह हरि केवल हेतु हमारा । शक कहेउ कछ चलतीवारा ॥
भयउ कृपालु भूप शिशुपाला । देतसुरन दुखकठिन कराला ॥
अतिवल देवांगना विलासी । करत दशानननादि के हासी ॥
सवन कहत मैं आप विधाता । संहरता करता अरु त्राता ॥
तेहिको नाथ पंथ कर वासी । करहुकृपालु सहजसुखरासी ॥
श्रुतिमारग यहिनिपट उलंघा । पठइय शीश सुदर्शन संघा ॥
दो० सुने श्रवण ऋषिमुखवचन कृपासिन्धु भगवान ।
॥ भृकुटि भंग कीन्हेउ मनहुँ उग्र केत अस्थान ॥

निश्रसदेअशीश ऋषिनारद । ब्रह्मसभा गे ज्ञान बिशारद ॥
हे हरि उद्धव हलधर तेरे । तांति परम असमंजस मेरे ॥
मैं नरेश निमंत्राण दीन्हा । ऋषिनारद यहआयसुकीन्हा ॥
गल कर्स करतव्य हमारे । कुलन बिनाशिशुपालाहिमारे ॥
तिबल धर्मराज के भाई । जीते जित नरेशसमुदाई ॥
म बिन यज्ञ युधिष्ठर करिहै । गयेविना शिशुपाल उबरिहै ॥
हहु युगल तुम मंत्र बिचारी । पितु समहौ हमरे हितकारी ॥
कछु करत मोर अपराधा । सोनहिंसकत नेकुकरिबाधा ॥
हत लोकपाल शिशुपाला । सो यह होत हृदयमसशाला ॥
दो० सुनत शत्रु बध सुरति करि नैन तरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति बोले बाणी बाम ॥
हिं भूलि रिपुहि जे जीती । उदय न होतकहत असनीती ॥
हि प्रकार रिपुमूल उखारी । उदितयथातम नाशितमारी ॥
न्हे बिना शत्रु पद नाशा । करियप्रतिष्ठाकी जनिआशा ॥
लि बिन रजहिं पङ्ककरिदीन्हे । थिरनहिंरहतयतनबहुकीन्हे ॥
बलगसुख न बिदिततनधरको । जीवतजबलग एकोअरिको ॥
जेमिरबिशशिहि राहुदुख देतो । सबसुरतबसहाय कतुकेतो ॥
हिजिमि सत्य शत्रुहरि सोई । देखि ठाढ़ि रोमावलि होई ॥
मन करतसपनेहु रणकालहि । भारोमांचसुनतशिशुपालहि ॥
ति अब न नागपुर जाहू । रिपुजगजीवतकछनहिंकाहू ॥
हिपसतो पुर लीजे घेरी । सजहुवाजिगज सैन्यघनेरी ॥
त दिन यदुकुल कै तलवारी । रहा न दामिनिकै छविभारी ॥
अब उहगण तरवारि तरंगा । लहेसुबरिबिकिरणिनसंगा ॥
लि शिशुपाल प्राणहतकीजे । करै धर्म सख आयसुदीजे ॥
सकहि करन लगे मद्र पानी । उगिलतवमतवचनकरिनाना ॥
नि उद्धव ते सैन बुझाई । तुमकछुकहहु कहेउ यदुराई ॥
सो० सत्य सत्य यह बात भाषे मूशलपाणि जो ।

॥ चौ० ॥ सुनत मन्त्र मम तात उद्धव । यदुनन्दनकहेउ ॥ चौ० ॥
सहज जीति शिशुपालन जैहे । भूपसमूह सहायक ऐहे ॥
रोगसमूह राजयक्ष्मा जिमि । नृपसमूहशिशुपालप्रबलतिमि॥
समरपर प्रभु मारिय ताही । सहसा कर्म उचितअसनाही॥
अपर न हितदायक जग तोसे । करत धर्म मखनाथ भरोसे॥
तुम विहीन करिहे मखनासा । होइहै धर्म नरेश उदासा॥
अइहैं विपुल भूप मख माहीं । बांधि बांधितन्न मरिये ताहीं॥
कारजा युगल बनत असकीन्हि । प्रथम ताहि तुमहीं बरदीन्हे॥
सहिशत अधिक एकअपराधा । करिहौं तत्र प्राणनके बाधा॥
इन्द्रप्रस्थ अइहैं सब राजा । खुलिजइहैं रिपुमित्रसमाजा॥
उठे सुनत हरिउद्धवबानी । भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी॥
हने निशान साजि बहु सेना । उठी धूरि जिनु अर्क रहेना॥
॥ दो० ॥ हलधर ऊधो सात्यकी अपर लोग सब साथ । दो० ॥
॥ चौ० ॥ निज नरेश के द्वार पर जात भये यदुनाथ॥ चौ० ॥
उग्रसेन ह्वाते मांगि रजाई । इन्द्रप्रस्थ कहँ चले गोसाई॥
हरिपुर ते दल चले समूहा । चतुराननमुखजिमिश्रुतिजूहा॥
आवत सुन्यउ धर्म महराजा । मिलन चलेसँगसुभटसमाजा॥
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागी । हलधरसहितउमँगिअनुरागी॥
मिलत न प्रीतिहृदयकहिजाती । पुनिपुनि भेंटिजुड़ावत छाती॥
रविनंदिनि तट दल समुदाई । दीन नृपति विश्राम कराई॥
हरि बलदेव लोग कछु साथा । चले अवास धर्म नरनाथा॥
सकल बंधु तेहि अवसर आये । हरिहिविलोकिनयनजलछाये॥
॥ दो० ॥ मिले वृकोदर विजय नर युगल बन्धुहरपाय॥ दो० ॥
॥ चौ० ॥ पूछी कुशल कृपाल तब कहो युधिष्ठिरराय॥ चौ० ॥
कुशल देखि तव चरण मुरारे । जो तुम दीन जानि पगुधारे॥
हलधर कीन्ह कृपा सब भांती । अरु सात्यकि ऊधो संघाती॥
आये प्रभु मोहिं कीन्ह सनाथा । प्रणतारतभञ्जन यदुनाथा॥

सभा मध्य हरि हलधर गये। शुभ सिंहासन बैठत भये॥
धर्म महीप कहत मृदुबाणी। गे अन्तःपुर शारँगपाणी॥
मिलिरानिनकहँसहितहुलासा। बहुरि गये कुंती के पासा॥
बंदत चरण देखि अनुरागी। पुनिपुनि कंठ लगावन लागी॥
द्रुपदसुता पूछत कुशलाता। परमानंद प्रफुल्लित गाता॥
कछुक मधुर पकवान मिठाई। द्वारे हलधर दीन पठाई॥
राम सहित नृप भोजन कीन्हा। उद्धवसहित सात्यकी दीन्हा॥
राम बहुरि अंतःपुर आये। उद्धव सात्यकि संग लगाये॥
कुंती रामहिं आवत जाना। आगेचलि कीन्हेउ सनमाना॥
चरणन परे मातु उर लाये। भूप सहित पुनि द्वारसिधाये॥
दो० उहांद्रौपदी हर्षयुत करत विविध सनमान।
भोजन करवायो हरिहिं बहुरि खवायो पान॥
यदुपतिकछुक परीतहँ रहिके। चलत भये रानिन ते कहिके॥
आये धर्म महीपति पासा। बिछी प्रयंक सेज शुभवासा॥
तहां पौढ़ि प्रभु सोवन लागे। रहा यामदिन यदुपति जागे॥
जुरी सभा बहु गायन आये। सकलकलामहँकुशलसोहाये॥
जागि धर्मसुत राम जगाये। परम सुखद आसन बैठाये॥
आसव पान राम तब कीन्हा। होय नृत्यअस आयसु दीन्हा॥
राम बचन सुनि गायन गाये। बहुप्रकार करि नृत्य रिझाये॥
यहिविधिदिनप्रतिसहितसनेहा। कछु दिन कृष्णरहे नृपगेहा॥
अद्भुत यज्ञ दिवस नियराना। आवत तहाँ महीपति नाना॥
जरासन्ध सुत प्रबल भुवारा। आइतहां दलकीन्ह जोहारा॥
भेंट देहकतु शिबिर भुवाला। तेहिअवसरआयेशिशुपाला॥
धर्मराज तब नकुल बोलाये। मनभावत शुभ वास देवाये॥
देश देश के भूपति आये। धर्मराज पद शीश नवाये॥
भेंट अनेक भूप बतलावहिं। करहिं प्रणामवासशुभपावहिं॥
परहिं ते चरण कृष्णके आई। पुनिपुनि धर्मसुतहिशिरनाई॥

धीरवृकोदर आदिक मिलिकै । बैठहि भूपसभा सबहिलिवै
गई भीर पाण्डव दरवारा । कीट न पावत और दुवारा
तब बोले हँसि शारँगधारी । कुरुपति कहँ अवलेहु हँकारी
॥ दो० ॥ चरवर बोलि नरेश तब दीन्ह्यो तिनहिं रजाइ ।
॥ ले आवहु कुरुनाथ कहँ करहि सभा मम आइ ॥
बहुरि बोलायो एक चरलीन्हा । गंगासुतहि निमन्त्रण दीन्हा
बाहुलीकि गृह एक पठावा । करिवहु भांति विनय समुझावा
द्रोण कृपा गृह पत्र पठाई । लिखि अनेक विधि विनय बड़ाई
विपुल दूत नरनाह बोलाई । दै पुंगीफल नृप समुझाई
जे सब विपुल नागपुर वासी । सचिव महाजन जे गुणरासी
पृथक पृथक कहि नाम नरेशा । पठये चर बहु करि उपदेशा
सुनत निदेश प्रजाजन आये । नेमंत्रित अरु विनहि बोलाये
आवहि चले प्रजा बहुतेरे । ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे
उचित अवास दीन सब काहू । मखदरशन हित अति उत्साहू
चरवर उहां नागपुर गये । सबकहँ देत निमंत्रण भये
गयो दूत कुरुपति दरवारा । दीन्ह पत्र बहुवार जोहारा
तब कुरुपति शकुनी हँकराये । बाँचि पत्र सब भेद सुनाये
पुनि मंत्रि आज्ञा नृप कीन्ही । सजि निज सैन दुन्दुभी दीन्ही
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये । कृपाचार्य सब साज बनाये
सजि दल चतुरंग भयो कुरुराई । बाजत पटह भेरि सहनाई
गज आरूढ़ कुरुपति छवि पाई । चहुँदिशि तुरँग रहे ठहनाई
चरवर कहेउ कि कुरुपति आये । धर्मनरेश सुनत सुख पाये
बन्धु बोलाइ सकल तिन लीन्हे । मिलहु जाय नृप आयसु दीन्हे ॥
बंधु सकल अरु सुभट समाजू । चले भीम भेंटन कुरुराजू ॥
तब उठि साथ चले यदुनन्दन । जेहि मग आवत कौरवनन्दन ॥
प्रथमहिं मिले पितामह आगे । हरिहि देखि रथ तजि अनुरागे ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा । बाहुलीक विकरण सरदारा ॥

दो॰ अतिआदरमिलिसबतकहँ भीमसहितयदुराय। ...
कियो नकुल सहदेव सँग वास करावहु जाय॥

नाना भाँति करहु सेवकाई। असकहि अग्र चले यदुराई॥
मिलहिं बरूथ सुभटसगमाहीं। करत जोहारचले सबजाहीं॥
बिदुर दीख यदुनन्दन आये। द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये॥
पुनिपुनि कृपासिन्धु भगवाना। मिलेबहुतविधिकरिसन्माना॥
तब पारथहिं कहेउ यदुराई। सुथल शिबिर करवावहुजाई॥
बिदुर समेत रुक्मि अस्थाना। पारथगुरुसँग कीन पयाना॥
भीम समेत चले यदुराई। आगे आवत लखिकुरुराई॥
विविधभाँति बाजत बहु बाजा। हय हींसत गर्जत गजराजा॥
कुरुपति भीमहिं आवत देखा। सहित रमापति सुंदरभेखा॥
शकुनी करण सहित अनुरागे। तब कौरवपति कुंजरत्यागे॥
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई। विविधभाँति पूछीकुशलाई॥
आये भीमसेन अनुरागे। कीन जोहार भेंट धरिआगे॥
अतिहित मिलत भये कुरुराई। चलेसमेत समाज लेवाई॥
जहँ यमुनातट निपट सुपासा। दीनतहां कुरुनायक बासा॥
पटल बितान गड़े बहुतेरे। डेरा परे कुरुपतिहि केरे॥
यदुपति बहुरि सभामहँ आये। समाचार सबनृपहिं सुनाये॥
मुनिनरेशतब अतिसुखलहेऊ। तुरतबोलि मन्त्रिनसबकहेऊ॥
सब समाज सब साजहुजाई। हयगजरथदल द्रव्यमनाई॥
धर्मराज कर आयसुपाये। निजनिजकारजसकलसिधाये॥

दो॰ इहां करण शकुनी सहित नृप भय प्रातःकाल।
शिबिरशिबिरमिलिभूपतिनगयेजहाँशिशुपाल॥

कुरुनाथहि आवत जानी। आगेमिलेत्यागि अभिमानी॥
तहँ कुरुनाथ रहे कछु काला। भयेबिदा कहिसकल हवाला॥
देखत धर्म प्रताप महाना। जात चलेमनकृत अनुमाना॥
राजत तहां पांडुकुलदीपा। उतरेत्पहुँदिशि निपुलमहीपा॥

लै लै भेंट धरन ते आये। कुंजरपुर नरेश बहु आये॥
बहुत भेंट पांडव के आवत। हम राजा बिनु हेतु कहावत॥
कुरुपति यह देखत निजनैनन। शोचतमनमहँकहिकहिबैनन॥
एक नगरमहँ दुइ अधिकारी। भयो बड़ायह अनरथ भारी॥
अबलगजगतविदित लघुभाई। ते अब भये तुल्य बलदाई॥
जगती बहु पदवी थल थोरे। ते अब भये बरोबरि मोरे॥
गजपुर चलिहि न एक दोहाई। करिहैं आज्ञा भंग प्रजाई॥
होत अवज्ञा जे नृप केरे। मरण नीक तेहि जीवन तेरे॥
॥दो॰ हमकहँ दण्ड न देहिंते देहिं धर्मजेहि जाइ।
॥ छलबलकरि बश कीजिये असकछु होइउपाइ॥
यहिविधि गे कुरुनाथ विताना। नित्यनिमित्त करत अस्नाना॥
इहां धर्म्मसुत सँग सबभाई। हलधर उद्धव अरु यदुराई॥
सुभट सकल दिशि शोभा पाये। प्रथमहिं आइ दिलीकहँ आये॥
करि नरनाह विनय करजोरी। गये पितामह भवन वहोरी॥
दूरिहि ते अभिवादन कीन्हा। उठि गांगेय लाय उरलीन्हा॥
मिलि हलधरहिं प्रेमयुतहीते। कुशल प्रश्न पूछी सबहीते॥
मांगि विदा सुतधर्म सिधाये। द्रोणभवन अतिआतुर आये॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा। विदुर ज्ञाननिधिपरमउदारा॥
सबहियथोचित मिलिनरपालू। विनय सप्रेम कहेउ निजहालू॥
मांगि विदा चले नरनाथा। द्रोणकुमार भमो तब साथा॥
वैयभवन कुरुनाथ चले जब। फिरिसहितहरिहलधर उद्धव॥
भूपति कहेउ हेतु अस्नाना। है कछु भेद धर्मसुत जाना॥
लखि हलधरकी भौंह तिरीछी। फिरि रहो यह बात सुनीछी॥
कहहिं परस्पर सब विरवाहीं। विग्रहदेखि परत भल नाहीं॥
॥दो॰ सकलबंधु अरु द्रोणसुत नवटसमाजविशाल।
॥ आवत देखे धर्मसुत सपदि उठे शिशुपाल॥
पुनिपुनि भेंटेउ नृप शिशुपाला। पूछिकुशल कहिसकलहवाला॥

रायमिलिकरु भोरहिंसखकीजे । वेगि जाव मैं आयसु दीजै ॥
जरासंधसुत गृह नृप आये । यहि प्रकार सत्रभूप मँझाये ॥
आये बहुरि सभा महँ राजा । बोलिलीनेसबसचिवसमाजा ॥
॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
मखशालाकहँ अब तुम जाहू । अद्भुत रचहु कहेउ सब काहू ॥
तिन पुनिशकट अनेक पठाये । कदलीखम्भ विपुल भरिआये ॥
षोडश सहस खम्भ कंचनके । चहुँदिशि सोहत हैं मंचन के ॥
हरित मणिन के पत्र भँगाये । पद्मराग के पुष्प सोहाये ॥
सोहत सर्व्व अनूप चँदोवा । कहि न जाय जानै जिनजोवा ॥
गजमुक्ता झालरि चहुँ पासा । रंग रंग रत्नन की भासा ॥
षोडशसहस खम्भ कदलीके । रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके ॥
मखशाला अति चित्र बनाई । देखत बिशुकर्म्मा सकुचाई ॥
सुधजन बिपुल देखि अनुरागे । बहुबिधि चक्रवनावन लागे ॥
आसेधौम्य घटज ऋषि व्यासा । शौनक नारद शुक दुर्वासा ॥
शुक्राचार्य बृहस्पति आये । कश्यप विश्वामित्र सोहाये ॥
दो॰ यहिबिधिअट्ठासीसहस आयगये ऋषिजानि ।
नृपप्रणाम कीन्हेउ सबहिं जोरिजोरि युगपानि ॥
सो॰ मखमण्डल महँ वास दीनमहीपति महिसुरन ।
जहँ सबभांति सुवास थल बैठे आहुति चले ॥

दूतउवाच ॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये । दुर्योधन पहँ दूत पठाये ॥
लावहु सहित समाज लेवाई । चलेदूत नृप आयसु पाई ॥
जाय देखि कुरुपतिदरबारा । आवहिंमिलन महीपअपारा ॥
कीन्ह जोहार नृपहिं तेहिकाला । कहेउ बोलावत धर्म्मभुवाला ॥
सुनि मांगेउ नरनाह तुरंगा । शकुनी करण दुशासनसंगा ॥
तजि हयद्वार तहां पगुधारा । जहँ नृपधर्म्मराज दरबारा ॥
अर्जुन भीमसेन दरवानी । लैआवहिं राजन सनमानी ॥

जहँलागे जेहिभांति विधाना। करेउतात तहँनिजमनमाना॥
॥ दो० धर्मायसु कुरुनाथ सुनि बोलिसकल जनलीन।
॥ कंचनकोप विशालपर राखि शकुनिकहँदीन॥
पुनिकुरुपतिगुरुसुतहिहँकारा। सौंपि रत्नमणिगण भँडारा॥
सम परतीति बिना जनिकोई। पावै धनद सुरेश कि सोई॥
पुनि सौबलि नरनाह बोलाये। सौंप्यो तामके कोष सुहाये॥
सकलसौंपि कुरुनाथहिदीन्हा। पुनिठनको बोलाइनृपलीन्हा॥
रहेउजोधातु लोह सब भारी। कुरुपतिकीनताहिअधिकारी॥
देखि धर्मसुत सकल बनावा। दुश्शासनहिबहोरि बोलावा॥
सबहित तुमहिं परिश्रम भाई। करहु दुशासन होई राई॥
सुनिअसवचनभूपसुखमाना। सौंपि दीन सबमोदीखाना।
मोदी भवन दुशासन आये। थलप्रतिशतशतवैश्यटिकाये।
तिन्हीं सकल नरेशन केरे। आवहिं चले दुशासन नेरे।
॥ दुश्शासनउवाच॥
सनंद पाइ पुनि मोदीखाना। जाइतुलावहिंविविधविधाना॥
॥ दो० इहाँ धर्म नरनाह तब विकरण लीन बुलाइ।
॥ वसनकोष सौंपे सकल कहिमृदुवचन बनाइ॥
बहुरि नरेश दुमंत बोलाये। सौंपि महिष गोवृन्द सोहाये॥
द्विरदहिंबहुरिबोलाइ नरेशा। सौंपि गयेन्द यूथ उपदेशा॥
दुर्दर्शनहिं सो बहुरि बोलावा। सौंपि तुरंगम साजसोहावा॥
सहदेवहि बोले नरनाहू। भाजनभवन तात तुम जाहू॥
ईंधन धनगेह सकल जे भाई। राखिदेहु तुम अनुचरजाई॥
शिविरशिविरप्रति शकटभराई। पठवहु जाइ नृपनकहँ भाई॥
... नम्हारा। कीजै करु श्रम अंगीकारा॥

प्रभुसबपर शिरताजहोई करिय कृपाकरिसोइ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

योधन आदिक जे करता । सबनबोलिकहपाण्डवभरता ॥
आयसुकर्ण करहि जस जाहीं । फेरहु पत्रन करहु न नाहीं ॥
मांगहिं जो जब रविकुलकेता । करवसकोच न सो तब देता ॥
विसुतकहेउ करन यहकाजू । मखगृह गये धर्म महराजू ॥
जो यहमनी चिस्तु बिधिनाना । मेवामधुर विपुल पकवाना ॥
नकुलहि भूपकीन अधिकारी । लागे करन अनेक तयारी ॥
लिये चतुर बिद्वान बोलाई । जिनदेखे मखविपुल कराई ॥
जे संकल्प ऋषिन के आगे । धरहितेबोलहिं चतुरसभागे ॥
आयेमख ऋषि सहसअठासी । अपर विप्र जे गुणगणरासी ॥
तिनकर भोजनादि सबकाई । सोपि पार्थ कहँ धर्मजराई ॥
तहां कुरुपतिहिं सबहिं हँकारा । करण दुशासनादि सरदारा ॥

दो० करि दुर्वचन भीम बहु द्रुपदसुता सम संग ।
कहत्रप कीजेअवशिसोइ यज्ञहोहि जेहि भंग ॥

ताते करण अवशि शिरधरहू । दानप्रमान त्यागि तुमकरहू ॥
दुश्शासनहि कहेउ नरनाहू । विपुलसीध पठवहु सबकाहू ॥
चित्राहिगुण त्रिगुण करिदीजे । यश लीजे मखभंग करीजे ॥
रहहिं न देशकोप जब सोई । मखविध्वंस हँसी सबकोई ॥
कहहिं न तबकोइ धर्महिराजा । चलहिंनछत्र न बाजहिंबाजा ॥
यहिबिधिभूपति आयसुदीन्हा । सादरसबनमानिशिरलीन्हा ॥
विकरणकहेउ युगल कर जोरी । सुनिये विनयकृपानिधिमोरी ॥
भीम द्रोपदीकृत अपराधा । नाहिन धर्मसुवन कृतबाधा ॥
यह अनर्थ शिर तासुबिसाई । नाथलोक परलोक नशाई ॥
बिहँसि नरेश कहीं सुनुभ्राता । भीमसमेत द्रुपदकी जाता ॥
कीन्हेउ स्वल्प वचन अपराधा । धर्मनरेश प्रबल कृत बाधा ॥
भारत होन युधिष्ठिर राजा । होतभंग ममपद पतिलाजा ॥

बंधुनीति अस कहति पुकारे । नहिं कल्याण शत्रु बिनमारे
नीतिअधर्म नेकविचारिय ॥ जिहिविधितेहिविधिशत्रुहिमारिय
जहँलगि चाहियो करिये हानी । कहतपुकारिनीतिअसिबानी
॥ दो० ॥ सुनिभ्राता मुख बचन अस विकरण रहेचुपाय ।
॥ ॥ नृपआयसु सब शीशधरि चलत भयो शिरनाय ॥
होतप्रात याचकगण जागे । जहँतहँ बंश प्रशंसतलागे
आवहिं विप्रवृन्द बहुतेरे । जहँदिशिकरत वितानघनेरे
सुनि अस शोर उठे जवजागे । देनदान रवितन्दन लागे
लेखक मंत्री करण बुलाये । पत्र याचकन विप्रन पाये
कोउतुरंग गजकोउ निधिपावा । कोउमणि हाटकभारसोहावा
भाजन बसन लहे पुनि कोई । कोउ अतिरंक धनदसम होई
जहँ रवितन्दन चारि देवावहिं । याचकजाहिं बीस तहँपावहिं
सबन दुशासन दीन्हे आना । बस्तुपठावत बिन अनुमाना
चिट्ठाद्विगुण त्रिगुणकरि दीन्हे । देतकिवार बीस गुण कीन्हे
यहिविधि करहिं अधर्म अनेका । छूटन हेतु धर्मसुत टेका ॥
॥ दो० ॥ लखिअनरथ अतिसात्यकी हृदयपरमदुखपाय ।
॥ ॥ सकलकथा विस्तारते भीमहि कह्यो बुझाय ॥
भीम हृदय पुनिभयो दुखभारा । आयेदेखि सकल व्यवहारा
भयोरोष उर अति दुखपाये । सात्यकिसहितकृष्णपहँ आये
कहेउ भीम हरि परम अकाजू । भयो नाश युग लोकसमाजू
तिपुट यज्ञ यह अनरथ मूला । हमपर भयो ईश प्रतिकूला
असकहिकहेउ सकल इतिहासा । चलतनसाइगदविक्रमभासा
प्रभु नहि कृत्य योग जगमाहीं । सकतसुरेश धनदरहिनाहीं
सुनिअसभीमहिं शङ्कर जानी । धरहु धीर कह शारँगपानी
कहत वृथा तुम हमहिं सँदेशा । कहहुजाइ जहँ धर्मनरेशा
मत कीन्हे हम कौन उपाऊ । कीन्ह भूप करता कुरुराऊ
कछु न होत अब कौन हमारा । करे आपुसम जो करतारा

तुम कहहु नरेशहि जाई । मन भावत तस करें उपाई ॥
॰ बंधुसकल अरुसचिवगण बोलिभीमसबबात ।
कहतभयो गद्गदगिरा सुनतगये जरिगात ॥
सुतहि सब दूषण देहीं । कीनकुसाज साज बिनजेहीं ॥
भीम सँग सकल समाजा । चले जहां कुन्ती सुत राजा ॥
पहि कृत सकल प्रणामा । बहुरि एकान्त गये लैधामा ॥
कहन भीम करजोरी । सुनहु नाथ बिनती यकमोरी ॥
सात्यकी लखिअसरंगा । बहुरिकहेउ निजगमनप्रसंगा॥
चितसकलदेखिजिमिआये।सबप्रसंग कहि सकलसुनाये॥
जसबचनकहेउ भगवाना । कुरुपति केर कुकर्म बखाना ॥
असमहमि भूमिनृपपरेऊ । धीरधुरीण धीर पुनि धरेऊ ॥
बैठे नृप मंच बिशाला । बोले भीम नाइपद भाला ॥
नरेश मोहिं देहु रजाई । कुरु अनुचर सबदेउँ उठाई ॥
के कीरति जगत प्रशंशी । करिहैं काज सकल यदुबंशी ॥
॰ सांबसहित अनिरुद्ध प्रद्युम्नादि कुमार जे ।
ते सबबिगतबिरुद्ध करिहैं कारज नाथतव ॥
बिचार कीजै नृपआना । इनकर उचितकरबअपमाना॥
कदाचि करआयुध धरिहैं । तौपुनिकठिनगदामममरिहैं ॥
ग बंश बीर अस कोहै । रहै ठाद मम सन्मुखजोहै ॥
प यज्ञकरौ सजि साजा । मैं मदनाश करौं कुरुराजा ॥
भूप मों देहु रजाई । देहुँ भगाइ कुरुपतिहि राई ॥
शिन प्रतिथल मुनिराखी । कीजै दूरि पाप अभिलाखी ॥
विधि मूढ़ चहत उपहासा । मतिठग बंशकरौं सबनासा ॥
॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
धर्मसुत चुप करिरहऊ । भूलिन बात बंधु असकहऊ ॥
प्रयंत सदा निजजाना । करिय न काहूकर अपमाना ॥
कृत कर्म मूढ़ फलपैहै । हमहिं न रमारमण बिसरैहै ॥

कहेउ भीम अवहीं लग राजा । नहिंभारी कछु भयउ अकाजा॥
बड़ अकाज होई अब आगे । यह कुरुनाथ धर्मपथ त्यागे॥
आयसु देहु युधिष्ठिर राई । करों वाद कुरुपति सनजाई॥
दो० कहेउभूप अनुचित न अब वोलहु वशअज्ञान ।
हम समेत कुरुनाथ कर होत तात अपमान ॥
निज मन भापहिं कौरवराजू । ताते हम सौंपेउ सब काजू॥
कहेउ न कछु यदुवंशिनपाहीं ।गृहतजिअनतउचितअसनाहीं॥
यहिविधिप्रियदुवंशिहित्यागी। कीनआजुसो मम शिरलागी॥
अब अपमान किये वड़िहानी । रहहुचुपाइ तात असजानी॥
परहित लागि होइ अपराधा । नहिंजगवुध करिहें उपवाधा॥
पर अपमान वचे निज होई । दोप न धरहिं विवुधगणकोई॥
होइहि तात न हँसी हमारी । सदा सहायक गिरिवरधारी॥
यह निश्चय आवत मन मोरे । तात तजहु परतीति न भोरे॥
जे खल चहत आन अपमाना । तिनकर सदा करत भगवाना॥
अस जियजानि शोकपरिहरहू । यज्ञकाज सवप्रमुदित करहू॥
होइहि सो जुकरहिं भगवाना । तुमहिंहमारिशपथपितुआना॥
अब नहिं प्रकट वात यह होई । राखहुसकल हृदय निजगोई॥
धर्म्मराज के वचन सोहाये ।निजनिजकारजसकलसिधाये॥
दो० लखि अनरथ यदुवंशमणि निज विचार मन कीन ।
आठों सिद्धी निद्धि नव वोलि सु आयसु दीन ॥
जे सव धर्म्मराज भण्डारा । होइ तहां अववास तुम्हारा॥
निकसैंकोटिन मन किन कोई । घटे न सो परिपूरण होई॥
होइ भक्त मम काज न भंगा ।करहिनजगजेहिअपयशसंगा॥
ताते तुमहिं कहहुँ सिखयेहू । धर्मज वाल कोश अव लेहू॥
करिहैं कुरुपति अति सेवकाई । निज यश हेतु द्रव्यपरजाई॥
नहिं सन्मानिसके करिजासू । करहुविविध तुम आदरतासु॥
सो हमहूं तुमहूं मिलि कीने । केहु कहेउ न भर्महिं दीने॥

न्ही बिदा सीखि दै भूरी। सब भंडार भयो भरि पूरी॥
तसतसकलवस्तुबिधिकोटी। कोशप्रमाण होत नहिं छोटी॥
चरित्र कीन्हे भगवाना। समं न दूसर जानत आना॥
दो० धर्मज भट निज यूथ सँग गये देखि सब कोस।
सुमिरत यदुनन्दनचरणपुनिपुनिकरत भरोस॥
आयो दिन शुभ यज्ञकर गहगह हने निशान।
मखमण्डलमहँ धर्मसुत प्रातहि करिअसनान॥
प्रथम बिभूति सुखदसबकाला। तापर डासि नागरिपुछाला॥
कुश आसन मृगचर्म सोहावा। चित्रगलीचा अतिसुखपावा॥
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके। पहिरे यज्ञ बिभूषण नीके॥
वेद मन्त्र द्विजकरहिं उचारा। आसन धर्मराज पगु धारा॥
जहँ तहँ विपुल बाजने बाजे। आसन धर्म नरेश विराजे॥
प्रथम भूप पूजे गणनायक। सोहतसाथआपु कुरुनायक॥
जहँलागत मणि कंचनकाजू। तहँ हर्षत बहु कौरवराजू॥
ऋषिगणदेव पुजावन लागे। चक्रनवग्रह अति अनुरागे॥
यज्ञ क्रिया जस वेदन बरणी। धर्मनरेश करत तसकरणी॥
श्रुति मारग जसपूजन कह्यऊ। यामचारिगतबासर भयऊ॥
हवनसमयअवअतिनियराना। आवनलगे महीपति नाना॥
मख मंडल देखत तेहि काला। आये सहदेवहि शिशुपाला॥
यातुधान लखिसहित समाजा। कर गहि बैठारत कुरुराजा॥
बहु सनमान करत महिपाला। बैठारे जहँ मंच बिशाला॥
दो० तेहि अवसर आवत भये नरनाहन के वृन्द।
बैठारत शकुनीकरण कुरुपति सहित अनन्द॥
भीषम द्रोण विदुर तब आये। कर गहि दुश्शासनबैठाये॥
मगहराज के बन्धव आवे। आसन परम सुहावनपाये॥
जिनके कीरति जगत प्रशंशी। तेहि अवसर आये यदुबंशी॥
आसव पिय हल आयुधहाथा। तेहि पाछे आवत यदुनाथा॥

ऊधव सात्यकि सहित कुमारा। कर गहि भीम पंथ बैठारा॥
लागेउ होन हुताशन काजा। ग्रंथि निबंधनकर महराजा॥
कृपाचार्य कुरुपतिहि बखाना। अवनृपसमयआइ नियराना॥
नृप शिर तिलककरै अवकोई। राजसूय करता तव होई॥
तासु पखारि चरण नरनाहू। करै बहोरि वरण सवकाहू॥
सकलतिलकभूपति शिरकरई। तव नरनाह श्रुवा अनुसरई॥
दो० कुरुपति वालमीकिसन कहेउ वचन शिरनाइ।
नाथ तिलक करि यज्ञ हित लीजे चरणधुवाइ॥
कहेउआदिकवि कश्यपहि तिनघटसुतहिसुनाइ।
यहिविधिसवसवसोंकहत उठत न कोउऋषिराइ॥
कहेउव्याससवऋषिअसकहहीं।सकलभुवनपतिसोहतअहहीं
तिनहिं विलोकतउठत न कोई। आवै जो सवविधि वड़होई
प्रथमहिं उठै रमापति आछे। सव ऋषिवृन्द आइहैं पाछे।
कहै भीम अव वेगि खरारी। उठत न होत अकारज भारी।
सुनि अस धर्मराज रुख पाई। ठाढ़ भये उठि सहजसुहाई।
त्यागि मंच मन अति हर्षाई। मृगपति ठवनिचले यदुराई॥
लखिशिशुपालक्रोधअतिकीन्हा।चर्मकृपाण हाथ गहिलीन्हा॥
गरजिजलदइव गिरा गँभीरा। कहेउ नीचसुनरे यदुवीरा॥
नहिंजानत निजजाति प्रभावा। सकलसभामहँउठिशठधावा॥
दो० अवजनि पग आगेधरहु नतमम चलतकृपान।
तासुवचन अवलोकि तव ठाढ़रहे भगवान॥
कुरुपतिआदि कुटिलमनहरषे। मानभंग लखिहलधर मरषे॥
चहत ताहि मूसलगहिमारन। पुनिपुनि ऊधवकरतनिवारन॥
फरकत यदुवंशिन के बाहू। जहँ तहँ सव वरजैं सवकाहू॥
करत कोप शिशुपाल समाजा। वरजिवरजिराखतऋषिराजा॥
थर थर कांपत सव नर नारी। कहहिंहोत यहअनरथ भारी॥
विकल होत अति धर्मजराजा। सवविधिआपनजानिअकाजा॥

भाम कहेउ मृदुवचन सुनाई । दमघोषक सुत रहा चुपाइ ॥
जनि दुर्वचन कहियअबभारी । होई अनरथ निपट प्रकारी ॥
दो० भीम वचन दमघोषसुत सुनि कछुकान न कीन्ह ।
कहेउ दुर्वचन बहुहरिहि प्रभुकछु उतर न दीन्ह ॥
रेशठ निपट जाति कर हीना । नाग नगरते भये कुलीना ॥
सनकादिकअपि वृन्दनआगे । रंचककाति न कीनिअभागे ॥
हम बैठे सब विपुल भुवारा । ज्येष्ठबंधु कहँ लघु करिडारा ॥
बड़आश्चर्य द्विजन के आगे । चरण अहीर धुवावन लागे ॥
अब द्विजवृन्द भये पुनि कैसे । शूद्र न मानत गुरुकहँ जैसे ॥
प्रथम ग्वालगृहप्रकटअभागा । पुनि यदुवंश कहावनलागा ॥
भयो वर्णसंकर जग जाना । सबकर मूढ़ करत अपमाना ॥
सुनि कटु वचन उठे यदुवंशी । राखहिं उद्धव आदि प्रशंशी ॥
पारथ भीम आदि सब योधा । कहतनकछुक जरतउरक्रोधा ॥
दो० निजमन्दिरलखिआगमनकछुनकहततेहिपास ।
शोच विवश नृपधर्मसुत लखि यदुनन्द उदास ॥
हर्ष विवशकुरुनायक आदी । त्रिसमयवशसबअपिसनकादी ॥
सुनहुतात कह नृप मृदुवानी । रहहुचुपाइ काज निजजानी ॥
मख विध्वंस होई मम ताता । तुमकहँलाग कवनिश्रड़िवाता ॥
वचन न मानत धर्मज केरे । कहतहरिहि बहुवचन करेरे ॥
भूमि बैठु निज आसन जाई । नत छेहे मख भंग लराई ॥
धर्म्म नरेश बन्धु युत नीचू । धोवतग्वालचरण मखबीचू ॥
हरिउदास सुनिवचन तिरीछे । आगे चलत न घूमतपीछे ॥
देखि दशा यदुनन्दन केरी । करुणा हृदय हलधरहिघेरी ॥
सहिनसकतगहिउधन्नराखत । पुनिशिशुपालवचनअसभाषत ॥
दो० विप्रवृन्द की कानि तजि चरण धुवावन जात ।
धीरहीन जाने अवनि मूढ़ न मनलखिपात ॥
यहिविधिकहत विपुलदुर्व्वादा । विनघनहोत गगनमहँ नादा ॥

भा दिग्दाह उलूक पुकारे। महि डगमगत उदितभे तारे॥
यातुधान कटु कहत अनेका। कृतअपराधअधिकशतएका॥
बोलन चहत अपर कटुवाणी। कहेउ सरुपतब शारँगपाणी॥
अब रसना जनिचपलचलाई। नत जैहे शिर सहित उड़ाई॥
कहि अस वचन नयनरतनारे। कालरूप कर चक्र सँभारे॥
लागेउ घूमन चक्र कराला। कहेउ वचन गम्भीरकृपाला॥
अब न वचन निकसै मुखतेरे। नत जैहो यमसदन व
सुनि कर गहेउ चर्मकरवाला। कहिदुर्वचनउठेउ शिशु
यातुधान भट उठेउ सरोषा। यदुजनअस्त्रगहहिं
पारथ झपटि धनुषगुणदीन्हा। गदा उठाइ पवनसुत
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू। गयेयुगल भट पहु
झपटिझपटिभटआयुधगहहीं। धरुधरुमारुमारुधर
दो० भीष्म द्रोण शकुनी करण दुर्योधन नरन
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत जासुभंग
विकल धर्मसुत धरै न धीरा। उमहे यातुधान
रक्षणमख समाव ऋषिधीरन। कुरुपतिठाढ़किये
भीम दुशासनादि भट भारी। रक्षहिं यज्ञ
अस मन चाहत कौरवराजू। होइ महा मख
गजपुर भयो कोलाहलभारी। मनहुँ प्रवेश का
विकलशोकवश शत्रुअजाता। नो०दा०
कुंती आदि सकल वरनारी। विकलहो०नि
व्यासआदि सब धर्म नरेशहि। समु
इहां होत वहु हाहाकारा मिनिसमद
विपुल सहायक जेभटभारी। आइगये नि
वहु यदुवंश सहायक राजा। आये साजि
सो० हल मूसल निजपानि गहेउ रेवती
परम रोषवश जानि ऊधव करत

केवल एकलांड़ि शिशुपाला। अपर न होइ जीव वशकाला।
जबलगि तुमनहिं करो प्रहारा। चली न अपरमनुजहथियारा।
होइ सरोष भय देहु देखाई। यातुधान जेहि जाइ पराई।
जेहि विधि धर्मजाइ मखभंगा। होइ तात सोइ तजियप्रसंगा।
परम चतुर ऊधव मुखवानी। हलधरलीन्हसकलशिरमानी।
उत शिशुपाल प्रचारत आवा। बार बार हरि चक्र फिरावा।
पाणि सुदर्शन भेष कराला। डरतनकटुककहतशिशुपाला॥
प्रलय समय जिमि शंकर केरे। तेहि प्रकार हरिनयन तरेरे॥
त्यागेउ हरि बहु बार भ्रमाई। करत रमापति शंभु दोहाई॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥
दो० ताके कंठ सुदरशन घूमेउ बार हज़ार।
शीशकाटिप्रभुरुखनिरखि गयो विष्णुआगार॥
शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ। देवन देखि सुमनझरिकरेऊ॥
यदुवंशिन असि चर्म उठाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥
मूसल पाणि गहेउ हलधारी। दनुजन देखि भयो भयभारी॥
अति भयभीत निशाचर भागो। पीछे यदुवंशी गण लागो॥
चपरि सँभारि समर समुहाहीं। चलतनअस्त्रभाजिजेहिजाहीं॥
यहिविधिनिशिचर निकरपराने। जहँ तहँ गये जात नहिं जाने॥
धावन धर्महिं खबर जनाई। नाथ विजय यदुनन्दन पाई॥
चक्रपाणि गहि रूप कराला। काटेउ दमघोषक सुत भाला॥
भयवश देखि अमित प्रभुताई। गये निशाचर सकल पराई॥
खण्डित शीशपरेउशिशुपाला। महाराज भूतल यहि काला॥
दो० सुनतमर्षि कह धर्मसुत हरियह नीक न कीन्ह।
अपर कहहु केते सुभट यमपुर शासन दीन्ह॥
के चैद्य बिन कह हलकारा। अपरतगयो युगलदिशिमारा॥
नि सरोष भय कुरुनरपाला। भृकुटी कुटिलविलोचनलाला॥
रक्तअधर कहन असलागे। द्रोणी द्रोण धर्मसुत आगे॥

भा दिग्दाह उलूक पुकारे। महि डगमगत उदित भे तारे॥
यातुधान कटु कहत अनेका। कृतअपराधअधिकशतएका॥
बोलन चहत अपर कटुवाणी। कहेउ सरुपतव शारँगपाणी॥
अव रसना जनिचपलचलाई। नत जैहै शिर सहित उड़ाई॥
कहि अस वचन नयनरतनारे। कालरूप कर चक्र सँभारे॥
लागेउ घूमन चक्र कराला। कहेउ वचन गम्भीरकृपाला॥
अव न वचन निकसे मुखतेरे। नत जैहौ यमसदन वसेरे॥
सुनि कर गहेउ चर्मकरवाला। कहिदुर्वचनउठेउ शिशुपाला॥
यातुधान भट उठेउ सरोषा। यदुजनअस्त्रगहहिं करिरोषा॥
पारथ झपटि धनुपगुणदीन्हा। गदा उठाइ पवनसुत लीन्हा॥
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू। गयेयुगल भट पहुँचिसचेतू॥
झपटिझपटिभटआयुधगहहीं। धरुधरुमारुमारुधरुकहहीं॥
दो० भीष्म द्रोण शकुनी करण दुर्योधन नरनाह।
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत जासुभंग उतसाह॥
विकल धर्मसुत धरै न धीरा। उमहे यातुधान यदुवीरा॥
रक्षणमख समाव ऋषिधीरन। कुरुपतिठाढ़किये निजवीरन॥
भीम दुशासनादि भट भारी। रक्षहिं यज्ञ समाज सुखारी॥
अस मन चाहत कौरवराजू। होइ महा मख भंग समाजू॥
गजपुर भयो कोलाहलभारी। मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी॥
विकलशोकवश शत्रुअजाता। मोहिदारुणदुखदीनविधाता॥
कुंती आदि सकल वरनारी। विकलहोहिंनिजकर उरमारी॥
व्यासआदि सव धर्म नरेशहि। समुझावतकरि वहुउपदेशहि॥
इहां होत वहु हाहाकारा।दामिनिसमदमकहिअसिधारा॥
विपुल सहायक जेभटभारी। आइगये शिशुपाल पक्षारी॥
वहु यदुवंश सहायक राजा। आये साजि वजावत वाजा॥
सो० हल मूसल निजपानि गहेउ रेवती रमण जव।
परम रोषवश जानि ऊधव करत प्रवोध वहु॥

केवल एकलांडि शिशुपाला। अपर न होइ जीव वशकाला॥
जबलगि तुमनहिं करौ प्रहारा। चली न अपरमनुजहथियारा॥
होइ सरोप भय देहु देखाई। यातुधान जेहि जाइ पराई॥
जेहि विधि धर्मजाइ मखभंगा। होइ तात सोइ तजियप्रसंगा॥
परम चतुर ऊधव मुखबानी। हलधरलीन्हसकलशिरनानी॥
उत शिशुपाल प्रचारत आवा। बार बार हरि चक्र फिरावा॥
पाणि सुदर्शन भेप कराला। डरतनकटुककहतशिशुपाला॥
प्रलय समय जिमि शंकरकेरे। तेहि प्रकार हरिनयन तरेरे॥
त्यागेउ हरि बहु बार भ्रमाई। करत रमापति शंभु दोहाई॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥

दो० ताके कंठ सुदरशन घूमेउ वार हज़ार।
शीशकाटिप्रभुरुखनिरखि गयो विष्णुआगार॥

शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ। देवन देखि सुमनझरिकरेऊ॥
यदुवंशिन आसि चर्म उठाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥
मूसल पाणि गहेउ हलधारी। दनुजन देखि भयो भयभारी॥
अति भयभीत निशाचर भागो। पीछे यदुवंशी गण लागो॥
चपरि सँभारि समर समुहाहीं। चलतनअस्त्रभाजिजेहिजाहीं॥
यहिविधिनिशिचर निकरपराने। जहँ तहँ गये जात नहिं जाने॥
धावन धर्महिं खबर जनाई। नाथ विजय यदुनन्दन पाई॥
चक्रपाणि गहि रूप कराला। काटेउ दमघोषक सुत भाला॥
भयवश देखि अमित प्रभुताई। गये निशाचर सकल पराई॥
खण्डित शीशपरेउशिशुपाला। महाराज भूतल यहि काला॥

दो० सुनतमर्षि कह धर्मसुत हरियह नीक न कीन्ह।
अपर कहहु केते सुभट यमपुर शासन दीन्ह॥

एक चेद बिन कह हलकारा। अपरनगयोयुगलदिशिमारा॥
सुनि सरोप भय कुरुनरपाला। भृकुटीकुटिलविलोचनलाला॥
फरकतअधर कहन असलागे। द्रोणी द्रोण धर्मसुत आगे॥

उचित न मखमण्डलमहँ ऐसी। भई पितामह बात अनैसी॥
मखहितप्रथम निमन्त्रणदीन्हा। भवनबोलाइ तासुबध कीन्हा॥
यज्ञादिक कारज यश हेतू। अपयश पूरिरह्यो भरिखेतू॥
मख विध्वंस भयो सबभांती। निपट बंधु ये वंश कुजाती॥
तातें यत्न कीजै अब सोई। अपयशभंग जौनविधि होई॥
करिय साज सजि समर वहोरी। जेहिसंसार धरै नहिं खोरी।
नतु महिहीन होइ यदुवंशी। कीजगरहै न कुरु कुलवंशी॥
दो० द्रोण पितामह सजगहोइ गहहुहाथ हथियार।
होइनाश यदुकुल सकल नतु अब वंशहमार॥
सम्मुख समर यदुन सनलेहू। जियत न जान द्वारकहिदेहू॥
महारथिन निजधनुष चढ़ाये। सजगभये नृप आयसुपाये॥
निजदल नृप संदेश पठावा। करहुसमरहितसकलबनावा॥
धर्मराज रुखलखि सब भाई। सजग ठाढ़भे धनुष चढ़ाई॥
दीख विदुर भा अनरथ भारी। आयो धर्म नरेश पछारी॥
कहेउगुप्त यह अनुचित ताता। उचिततुमहिंनहिंशत्रुअजाता॥
बिन शिशुपाल हेतु मखरच्छा। अपर वीर हरि बधे न इच्छा॥
यदुपति सदा करत हिततोरा। करत शत्रुवत अन्धकिशोरा॥
सबविधिचहत तुम्हार अकाजू। ताते सजत समर हितसाजू॥
हरि तव यज्ञ सुफल करवहैं। नृप निजचलत बिगारकरहैं॥
सुनिअसबचन भीममनमाना। भूप विदुरसब सत्य बखाना॥
दुष्ट रूप कुरुनाथ सुभाऊ। है हमरे सब कछु यदुराऊ॥
पठे सँदेश द्रौपदी रानी। हरिसनसमरकिये बड़िहानी॥
दो० धर्मराज सुनिसुनिबचन निजमन करत विचार।
हरि बियोगइतअयश उतउरदुखदुसहअपार॥
पुनि धीरजधरि धर्म नरेशा। कह्यउ बिदुरमतभलउपदेशा॥
कहु सुत धर्म पितामह पासा। नाथ तुम्हार सदा हमदासा॥
अब करि यतन करहु मनुसोई। मख रक्षा अयश कछु होई॥

तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई। जेहि न होइ हरिसंग लड़ाई॥

भीष्मउवाच॥

कहेउबात भलि जसमन मोरा। मैं समझावों अंधकिशोरा॥
असकहि भीष्म तहां पगुधारा। जहँकोपत कुरुनाथ भुवारा॥
पाहिं पितामह बहु समुझाये। सहितसमाज धर्मपहँ आये॥
हत काह पूंछत कुरुनायक। कहेउनरेशहोइ ज्यहितायक॥
वयह विमल पितामहवानी। हमतुमसकलकरियंशिरमानी॥
ह कुरुनाथ उचित मत एहा। समर सरोप त्यागि संदेहा॥
ननहिं नेकु कानि मनमानी। दीन उतारि क्षणकमें पानी॥
ो० नीचहोत तौ वधउचित तुल्यसमर अवयोग्य।
अपरयतनकरि अयशते कवहुँन होवअरोग्य॥
ठीक कह सुन नृप वानी। सत्य विवेक धर्म नयसानी॥
सवनधेउदनुजकुल टीका। करवतासु असकहव ननीका॥
भा हरि जन्म पुनीता। वधत वली दुष्टन कहँ वीता॥
ामिलहि तुमहिंसमयोधा। करतसमरयदुपतिहिप्रवोधा॥
न जे भट रणकृत भारे। मानहुं मरे प्रथम के मारे॥
मुझि परिहरहुकुमतिही। सोहनसमरतुम्हैं यदुपतिही॥
ह न विक्रमसहितसहाई। नाहक प्राण गँवैहो जाई॥
चक्र हल मूसल नाना। हरिहलधर करिहैं घमसाना॥
तव कहिहौं पण्डिताइहम काहकुमारगकीन्ह।
तिहिअवसरहलधरसहित यदुपतिदर्शनदीन्ह॥
हल मूसल हाथा। आगे तेहि पीछे यदुनाथा॥
ाण गहे कर माहीं। उग्ररूप छूटत रिस नाहीं॥
त्यकिदुहुदिशिआवत। अस्त्रगहे वहु यदुपति धावत॥

कृष्णउवाच॥

ल धर्म्म सुत पाहीं। हमशिशुपाल वधे मखमाहीं॥
यह वात अयोगू। दोष तुम्हार न देहैं लोगू॥

अब तुम साजसाजि मखकरहू। जनि विस्मयमन रंचकधरहू॥
नत कीजै हमहूं तुम सोई। कहहिं वचन कुरुनायकजोई॥
जो दमघोष सुवन कर अंगू। होइजो प्रकट करै रण रं
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला। ताहि पठावहु भुवन भुवाल
संग करहु सेनापति जाई। आवहिं दण्ड बांधि बरिआ
जे नृप दण्ड चैद्य कहँ देता। पठवहु निजचर सेन समेत
आवहिंदण्ड सवन प्रतिवांधी। भूप भई महि विगत उपाधी
दो० धर्मराज सुनिहरिवचन कहअसउचित न नाथ।
वधवोलाइ करिदण्डहित पठइय निजजनसाथ॥
तासु तनयवधसमुझिदुखारी। पुनियहदण्डविपतिबड़िभारी
कह प्रभु उचित नीतिकहवाता। नृपकहँदण्ड विचार न ताता।
निज सेनापति भूप बुलावा। कहेउ यथा हरिआयसु पावा।
आवहु दण्ड बांधि सब तेरे। नहिं शिशुपाल सुतन के नेरे।
गुप्त कहेउ यह हरि नहिं जाना। चैद्य राखि रथ कीन पयाना॥
माहिष्मती नगर पहुँचाई। लीन्हे डांड़ि अपर भुवराई॥
कह शिशुपाल सुतनते येहू। हौ अदण्ड तुम दण्ड न देहू॥
अपर नरेश करै कोउ भीरा। वेगि जनावब धर्म्मज तीरा॥
सब हम करब सहाय तुम्हारी। धर्म दोहाय नगर तब भारी॥
असकहि बहुविधिधीरजदीन्हा। आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा॥
दो० इहां तुरत यदुबंश मणि आयसु दीन्ह कराय।
बाजे विविध निशानघन सबनदीन बैठाय॥
याम निशागत यह सब भयऊ। पुनि यदुनाथ महामखठयऊ॥
जस मखमारग वेदन वरणा। कीन धर्मसुत सब आचरणा।
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा। छत्र धराय राज्यपद दीन्हा।
बाजे विपुल शंख घरियारा। भेरि धनुमुख पवँरि दुवारा॥
विपुलदान द्विजवृन्दन पाये। तृपिमन अशन पानकरवाये॥
भे बकशीश याचकन भारी। शतयोजननहिंरह्यउभिखारी॥

जहँतहँ बारमुखी बहु नाची। नगर नगारेकी धुनि
कछुदिनसत्रहि राखि नरनाहा। करिसतकार समेत उत्र
नृपन विदाहित आयसु मांगे। चलती बार निपट अनु
साजि बाजि गजवाहन नाना। दुर्योधन दल कीन पय
फिरे पांडुनन्दन पहुँचाई। उद्धव राम सहित यदुर
ाहुलीक पद पुनि शिरनावा। गंगासुवन ते आयसु पा
ेदुरहि मिलत नाथजगतीके। भेंटत राम कृष्ण अतिनी
ीन्हविदा अति पुलक शरीरा। गे सुतधर्म द्रोण गुरु ती

दो० गुरुहिनायशिर भेंटि पुनि अतिहित द्रोणकुमार।
मगमहँ मिलि रविनन्दनहि जातभयेआगार॥

ंशिन मिलि धर्म भुवारा। कीन्हेउ अशनअनेकप्रकारा
ल बहोरि सभामहँ आये। कोउ विश्राम करतसुखपाये
खेलत बहु पंसासारी। खेलत कौतुक की बलभारी
त नृत्यगान सुन कोऊ। कोउमृगयाहितसजतसँजोऊ
हलधर युत धर्म नरेशा। लखिमनसकुचतकोटिसुरेशा।
मारग निकसतकुरुचन्दा। देखिपरत बहु याचकवृन्दा॥
त लखि कुरुनाथ सवारी। कहहिं प्रशंसिप्रचारिप्रचारी॥
न आदिकन सुनाई। करैं धर्मसुत केरि बड़ाई॥
न होहिं धर्मसुत भारी। जिनके तुमसमान भण्डारी॥
पाण निपुण सब भांती। भूप दशा कैसे कहि जाती॥
किंकरन के मन ऐसे। आपु नरेश होहिं धौं कैसे॥
रहे न जगमहँ रंककोउ सबनर धनपद पाव।
तासु कोशकीरति विमल कहहु मनुजकिमिगाव॥
तेधर्मसुयशसुनि कानन। विहरतहृदयमनहुंपविनानन॥
कुचतजनुअवनिसमाई। यहिविधिकुरुपतिमन्दिरजाई॥
ने नहिं काजनशाना। पुनिपुनिधुगनिजजीवनजाना॥
बेलोकि युधिष्ठिर केरा। कुरुपति उर संशय घ्वेरा॥

प्रातहि उठे धर्मसुत राजा। हलधर कृष्णसमेत समाजा
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई। दूतनकहीं खबरि असिआई
प्रभु अब नागनगर भलबसई। अमरावती जानि लघुहँसई
अबकोउरंक न असयहिग्रामा। तुमते हीन जासु गृहसामा
सबके गृह मणि कंचन रासी। दास अनेक अनेकन दासी।
गजरथ चपल तुरंगम छाये। गृहगृहजनु हरिधनद बसाये।
दो० प्रथमजयतितवजयकरण जयकुरुनाथ भुवाल।
कहहिं पररुपर रंक ते जिन कीन्हों धनपाल॥
धर्म्मराज तव दान पताका। विदित रसातल भूतलनाका॥
दूतवचन सुनिअतिसुखमाना। बहुरि नरेशकरत अनुमाना॥
कहत दूत सब जो निधि मेरे। भे तस रंक नागपुर केरे॥
यहि मन्दिर ते जिमि मैं एका। प्रकट तथा धनवान अनेका॥
नेक कोशमम भयो न खाली। दानदशा सुनि भूतल हाली॥
सो यह द्रव्य कहांते आई। पूछहु भीमहिं भूप बोलाई॥
सुनिनृपबचन पवनसुत हाला। कहेउभयो यदुनाथ दयाला
सत्यतुम्हारि ससुझिमनमाहीं। त्राता अपर दीखकोउ नाहीं।
देखि अनाथ दया प्रभुकीन्हीं। राखिलाजकरुणानिधिलीन्हीं।
कुरुपतिचहत भंगमख कीन्हा। कृपासिन्धु सोइकरै न दीन्हा॥
सो० रही प्रीति उर छाइ यदुपतिकी करणी समुझि।
दशा न सो कहिजाइजोरिपाणि विनवतहरिहि॥
जय राधावर हलधर सोदर। जयतिदयानिधिजयदामोदर॥
जय जय जय वृन्दावन वासी। लक्ष्मीपति वैकुण्ठ निवासी॥
निज जन हेत सदातुमत्राता। ममपतिराखिलीनतुमजाता॥
हलधर सहितजयति जयजोरी। राखेउलाज दयानिधि मोरी॥
सुनत वचनकह दीनदयाला। रही तुम्हारि लाजसबकाला॥
तुम सरीख जे भूतल राजा। नहिं तिनकानृपहोतअकाजा॥
कह नृपनाथ सुनौ गि[illegible] संशय भारी॥

चैद्यजाहि निजधाम पठावा । रोषमोहिं केहि कारण आ
विदुर बुझाइ कह्यउ ममपाहीं । तब संतोष भयो मनमा
दो० हँसि बोल्यउ यदुवंशमणि तुमहिंउचित यह भाव ।
नीतिधर्म्म उर बसत है कस न रोष उर आव ॥
जो नृपहोत अज्ञ अविचारी । करत न रोषसभय लखिरा
आवत जहां निमन्त्रण दीन्हे । शत्रुमित्रतहँ उचित न चीन्हे
अनुचितखोरि धरत सबलोगू । समता तासु कहत वधयोगू
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ । अयशविलोकिक्रोधउरभयऊ
तदपिनीचअस ज्यहि थलपैये । करियविनाश विचार न लैये
कीन क्षमा तुम असजियजानी । यह वधयोग अमंगलखानी ।
नुति नृपधर्म परम सुखपाये । हलधर कृष्णसमेत नहाये ।
द्धव सात्यकि राम सोहाये । प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये ॥
शन पानकरि सहितसमूहा । मांगीबिदा चले दल जूहा ॥
दो० बहु प्रकार रानीन मिलि कुन्ती पद शिरनाय ।
प्रद्युम्नादि कुमार जे मांगत सबहि रजाय ॥
चढ़सकल निजनिज रथन चले निशानबजाय ।
पुर बाहरलग धर्मसुत फिरत भये पहुँचाय ॥
गये द्वारकहि जब यदुराई । बैठे सभा धर्मसुत आई ॥
करहिं धर्मसुत राज्य सुखारी । सुखरुख जोगवतबांधवचारी ॥
अभिमनुआदिविलोकिकुमारा । लहतमोदमन धर्म्म भुवारा ॥
एक दिन बाजि चढ़े नरनाथा । सुभट समाज चलेबहुसाथा ॥
अश्वारूढ़ बन्धु बरचारी । धाये बन्दी विरद पुकारी ॥
अभिमनु आदिक साथकुमारा । महिपमती नगरी पगुधारा ॥
आगे मिल्यउ चैद्यसुत आई । कीन अनेक भांति पहुनाई ॥
भयबाहँ करि ताहिबसाये । कहिअदण्डनृपनिजपुरआये ॥
नरेश जानि सब लायक । दण्डपठाइ देहि नरनायक ॥
दो० यहिविधि विपुल प्रताप नृप बसत नागपुरमाहिं ।

सबलसिंह लखि जासुगति धनदशक्र सकुचाहिं ॥
इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
शिशुपालबधनंयुधिष्ठिरयज्ञनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो०।जनमेजय कहऋषि कहहु सकलकथा बिस्तारि ।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन नाथभई किमि रारि ॥

कहऋषि सुनुनृप गजपुरबासी । कुरुपाण्डवचरित्र सुखरासी ॥
सुनत होइ नर बिनहिं प्रयासा । सिद्धि कामना सुरपुर बासा ॥
आयो देखि धर्म मख जबते । निशिनर्नीदकुरुनाथहितबते ॥
बन्धु बिभवलखि परम उदासा ।यतनविचारतकेहिबिधिनासा॥
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई । सुनि जरिजातगातकुरुराई ॥
यकदिनकुरुपतिसचिवबोलाये । शकुनी करण दुशासनआये ॥
पूंछत सबही कुरुकुल दीपा । होइ नाश जेहि धर्ममहीपा ॥
कीन्हसबनमिलि यहमतठीका । जोरिसमूह समर अवनीका ॥
कीजै सकल बन्धु अब घेरी । चहुँदिशि धर्मजभवनगरेरी ॥

दो० पितहि पूंछि अनुचित उचित तमकीजै तबकाज ।
उचित मंत्र शकुनी कह्यो सबके मन भलआज ॥

करण दुशासन नृप मनमाना । बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना ॥
संजय दीख कि कुरुपतिआये । करिसतकार बिबिध बैठाये ॥
मतिदृगचरण धरैं सब शीशा । पावहिं मनभावती अशीशा ॥
शकुनी कह्यो सुनो महराजा । तुम्हरेसुतहि रोषबड़लाजा ॥
पाण्डव सभा प्रबल इनदेखी । अतिविस्मयबशरूपबिशेखी ॥
तहँ कछु भूप भयो अपमाना । ताते दुर्योधन दुख माना ॥
होत अवज्ञा गजपुर माहीं । भीमकानि मानत कछु नाहीं ॥
एक राज्य महँ भे दुइ राजा । कीनमंत्र यह जानि अकाजा ॥
दल बटोरि कीजै रण रीती । लीजै धर्म्म नरेशहि जीती ॥

दो० बंधुमित्र अरु पुत्र सब थल गेरिर करिनास ।
... सकल धर्म्महिं बनपुरबास ॥

नि मतिदृग शकुनी मुखबानी । बोले बचन देखि बड़ि हा
अतुम्हार हमहिं नहिं भावत । ईशबाम असबचन कहाव
मर दक्ष जिन के मन ऐसे । जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे
न के साथ सदा बनवारी । करि न सकहिं रणशक्रप्रचारी
रिकाई खेलत नहिं हारे । तासु न बिगरहि बातबिगा
ीति सकहि को धर्मकुमारा । जहँ जगदीश आपु रखवारा
नते समर न पैहो पारा । अबसुतजनियहकरहुबिचारा
र्मराज अपराध बिहीना । करत तात तुम मंत्रअलीना

दो० सुनि शकुनी बोले बहुरि भूपकही भलिबात ।
हारिजीति कीन्हेसमर कुरुपति जानि न जात ॥

शकुनिउवाच ॥

द्यूतकर्म हम निपुणहैं कुरुपति । पंसासार ख्याल अद्भुतगति ।
कपट अक्ष भावे मन जोई । सुनहु नरेश परइ तब सोई ।
कपट भेद पांडवन बोलाई । जीति लेब सब अक्ष खेलाई ॥
ऐहैं धर्म्म महीपति आछे । युद्ध जुवा पग धरै न पाछे ॥
देशकोशनृप सकल लगाइहि । जीतिलेबसबरहिनहिंजाइहि ॥
युद्ध किये पांडव नहिं हरिहैं । उनकर पक्ष कृष्ण तब धरिहैं ॥
जीते ख्याल न बढ़िहि बिरोधू । कहीनकोउअनुचितकरिक्रोधू ॥
भूप हमारि मानि सिख लीजै । अपरबात जनि चित्त धरीजै ॥

दो० कपट भेदकरि पांडवन जीतहु देहु निकारि ।
एक छत्रमहि भोग वहु रहइ न कंटक धारि ॥

सुनिकुरुपति मन भयो अनंदा । जनु चकोर पायोनिशिचंदा ॥
पुनिपुनि शकुनी केरि बड़ाई । करै लाग कुरुपति हर्षाई ॥
भलगुण तातगुप्तकरिराख्यउ । ममहिततहेततातसोइभाष्यउ ॥
नीकलाग मत अन्ध नरेशहि । पुनिपुनिशकुनीकहउपदेशहि ॥
पूछहु तात बिदुर पहँ जाई । परमभक्त गुणनिधि ममभाई ॥
यादवकुल जिमि उद्धवज्ञानी । तिमि कुरुवंश बिदुरसज्ञानी ॥

तब कुरुनाथ विदुरगृह आये । शकुनि दुशासन संगसोहाये ॥
देखिविदुरमन अति अनुरागा । आसन दीन रजायसु मांगा ॥
शकुनी वरणि कहेउ सब साजा । तुमहिं मंत्र पूछत कुरुराजा ॥
दो० उनकहँ दीन्हेउविभवविधितुमजनिकरहुखभार ।
निज सेवाते कीन वश केशव जो करतार ॥
विदुरवचन कुरुपतिहि न भाये । तुरत पितामह के गृह आये ।
करतप्रणाम धरणिधरि शीशा । देखिगंगसुत दीन अशीशा ॥
सत्यव्रत के बैठ समीपा । कही कथा कौरव कुलदीपा ॥
भीष्मउवाच ॥
जो तुम सुत पूछहु मम हीका । कहबरहा अस कहव न नीका ॥
नृपमुखवचन चहिय नयलीन्हे । राज्यनरहततहि तजिदीन्हे ॥
भल न रिझाउव इन बातनते । जीत न उनके उतपातन ते ॥
जस उनसुभट समर महिजीते । मख कारज कीन्हे मन चीते ॥
असमखयहिकुलकाहुनकीन्हा । जगउठिगयोयाचकनचीन्हा ॥
मरेउ न हरि हलधरके मारे । युग करि जरासंध ते फारे ॥
को असमुभट भयो यहि वंशा । जासु करिय वहुवार प्रशंसा ॥
दो० जेनर मानत जीति निज हारि मानि तिमिलेत ।
विदितकरहिंजयअजयतजितेहियमभलिसिखदेत ॥
तुम अब तात रहउ चुपसाधी । जनिकीजै करियतन उपाधी ॥
यहमत नृपतुम असठहरायो । करिसोवतजिमिसिंहजगायो ॥
भीष्मवचनकुरुपतिसुनिलीन्हा । नाहिंन कछु प्रतिउत्तरदीन्हा ॥
उठिपुनि शकुनी सहितनरेशा । विषसम लाग अमीउपदेशा ॥
कीन्ह द्रोणकहँ दण्डप्रणामा । लहेउअशीश होइ मनकामा ॥
कहि शकुनी सबहेतु सुनावा । द्रोणद्रोणसुतमनहिं न आवा ॥
द्रोणउवाच ॥
भरद्वाज सुत कह सुनु राजा । हमतुम्हार वांछितशुभकाजा ॥
[illegible] करई । तासु पराजयसमुझि न परई ॥

कहु न सो दुर्योधन राजा। जेहि पीछे बड होइ अकाजा॥
दो० गुरुमुख वचन नरेशसुत जानी जनकी बात।
शीश नाइ मांगी विदा, गये जहां रविजात॥
आदर बहुत तरणिसुत कीन्हा। रत्न सिंहासन आसन दीन्हा॥
कर्णउवाच॥
कहेउ रजायसु होइ नरेशा। प्रभु आगमन मोहिं अंदेशा॥
तेहि अवसर कुरुपति रुखपाई। शकुनी विधिवत कथा सुनाई॥
कह रविसुत नृपसुनु मतमोरा। बोलि लेहु सब भूप किशोरा॥
मम घट कालनिशा नियराई। कार्तिकमास शरद ऋतु पाई॥
खेलत द्यूत सकल संसारा। तिनहिं बोलाइहि पांडुकुमारा॥
जिनहिं धरहि कपट चतुराई। यह सलाह रविसुत मनभाई॥
दुर्योधन सुनि अतिसुख माना। पुनिपुनि भेंटत करत बखाना॥
दो० आतुर उठि शकुनी करण मगकृत भाँकि बिलास।
सबलसिंह कह तब गये गांधारी के पास॥
इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दुर्योधनमंत्रप्रश्नवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥२॥
कह प्रणाम मातुपद भूपति। देइ अशीश अशीसन प्रमुदित अति॥
कहेउ मनोरथ निज नरनायक। करिय न मात बात बेलायक॥
नहीं ईश तुमहिं ठकुराई। बैठि रहहु निज भवन चुपाई॥
नरजग जन्म सफल करि लीजे। बंधु विरोध कदाचि न कीजे॥
सुनि वचन नृप मनहिं न भाये। भानुमती गृह आपु सिधाये॥
शकुनी आदि भवन निज गये। भूप सेज पर शोभित भये॥
भानुमती ते सकल हवाला। कहि पूछेव कौरव कुलपाला॥
करियुगल कर कौरव सती। कहेउ नाथ सुनियें ममबानी॥
कीजिय न बंधु विरोध अनीते। सजग भये पुनिजाहिं न जीते॥
दो० तेहिभाये सती वचन निजबल कहेउ भुवार।
होतप्रात आये सभा हने निशान अपार॥

आये कुरुपति निजमखशाला। बैठि चित्रसारी नरपाला॥
चरवर बहु कुरुनाथ पठाये। बोलि बोलि सब भाइन लाये॥
आये शकुनी करण दुशासन। करि जुहार बैठे निजआसन॥
सकल बंधु आये तिहि तीरा। लषण कुँवर आदिक भैभीरा॥
नाइ नाइ शिर नृपहि जोहारी। जहँ तहँ सोहतहैं भट भारी॥
प्रतिपवँरिन दरवानि समाजा। त्रिपुलविभवराजतकुरुराजा॥
पूछेहु सवहिं भरतकुलकेतू। कहि बिस्तार कहेउ सबहेतू॥
निज निजमंत्र न राखहु गोई। सब मिलिकरहुकरबहमसोई॥
प्रथम मंत्र जो शकुनि बखाना। ठीक नीक सबके मनमाना॥
॥दो॰ एकछत्र कीजिय धरणि देपाण्डव वनबास।
॥ सबनकह्योमतठीक यह कुरुपतिहृदयहुलास॥
॥ विकर्णउवाच॥
विकरण कह्यउ जोरि करदोऊ। नाथ अयशभाजन जनिहोऊ॥
जिन कीन्हेउवशत्रिभुवननाहा। जगदुर्लभ प्रभु ताकहँकाहा॥
रक्षक जासु रमापति राजे। तासुकहियक्योंहि भांतिपराजे॥
कौरवनाथ कही असि बानी। सुनु ममवचन बंधु सज्ञानी॥
पाण्डव जीति सके किन कोई। कहहु शेष कीजे बश सोई॥
जाके शीश धरी सब धरणी। पाण्डवकी कीर्तिकहै करणी॥
शेष दिनेश जाहिं किन जीते। विजय न एक धर्मसुतहीते॥
सकलकहहिं सो बचन प्रमाना। एक कहहिं कीजै जनि काना॥
असकुरुनाथकहेउमुसक्याई। दुश्शासन बोलो शिरनाई॥
॥दो॰ नाथ कीजिये बात यह सत्य सत्य मत मोर।
॥ मैं अनुचर करिहौं सकल कुरुपति आयसुतोर॥
बंधु वचन सुनि नृप सुखपाये। शिल्पकार बहु तुरत बुलाये॥
जाय सजहु तुम सदसिसुहाई। देखत जाहि चकित सुरराई॥
तबलगि रचना रचहु सँवारी। द्यूतदिवस जब आवकुमारी॥
सब धवई नरनाह पठाये। अनुचरसाथविपुलजनआये॥

ोककाष्ठकरसुनिसुनिआवहिं । रचहिंसभानृपआयसुपावहिं ।
ीत मास अहँ करि निपुणाई । दीन्ही मनहुं नवीन बनाई ।
दुर्योधन नृप सभा निहारी । बैठहिं दिनप्रतिहोहिं सुखारी ।
सुन्दर मास दमोदर आवा । कालनिशाथलअतिनियरावा॥
शकुनी करणहिं पूछि नरेशा । पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा ॥
दो० कालनिशा जागरण हित आवहु सबभुवराइ ।
द्यूतखेल खेलहुइहां करहु सभा मम आइ ॥
खेलब हम अरु धर्मकुमारा । देखहु आय सकल सरदारा॥
दुर्योधन कर आयसु पाई । गजपुर सब आये भुवराई ॥
सुखद शिविर पाये सबकाहू । बहु सतकार करत नरनाहू ॥
कुरुनंदन तब विदुर बोलाये । जाहु धर्म पहँ कहिपठवाये ॥
धर्मराज गृह विदुर सिधाये । तुरग सवार साथ शतधाये ॥
चपल तुरंगम विदुर सँवारा । जात चले पाण्डव दरबारा ॥
विदुर आगमन सुनि सुखपाये । आगे मिलन धर्मसुतआये ॥
पहुरि सभा लै गयो भुवारा । सादर सिंहासन बैठारा ॥
पुनि पुनि भूप रजायसु मांगत । प्रीतिविलोकिविदुरअनुरागत॥
विदुरउवाच ॥
दो० हृदयविचारित नखलिखत कौरवकी मतिपोच ।
हाथी हरहट मदगलित नाहिंन शील सँकोच ॥
सुनहुतात मम आगम काजा । तुमहिंबोलावत हैं कुरुराजा ॥
अभिवादन करि कहेउसँदेशा । आये ममगृह विपुल नरेशा ॥
द्यूतहेतु हम साजि उछाहू । सो तुमहूं आवहु नरनाहू ॥
इह कालनिशि जागहु आई । देखहु मम समाज समुदाई ॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता । कुरुपतिके मनहै छल ताता ॥
शकुनीकरणहिसहितदुशासन । चाहततुमकहँ देशनिकासन ॥
यहै मनोरथ जीतब भूपा । कहँ कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहिं परमप्रिय जानिसुनावा । करहु भूप जो मनहिं बनावा ॥

कहत भये अस धर्मजराई । सुनहु सचिव भीमादिकभाई
कुरुपति के ईर्षा भे भारी । हमकहँ जीतन कहत हँकारी
दो० युद्ध जुवाँवश होत नहिं भ्राता करहु विचार ।
होत तासुजय तात सुनु जेहि सहाय करतार ॥
यह कुरुपतिभलिबातविचारी । मानंत जीति तो जानत हारी
बिदुर विचारिकह्यो मोहिं पाहीं । कासमुझतकुरुपतिमनमाहीं
बोले विदुर कही भलि बाता । हम यहभेद न जानत ताता ।
कहाउ भीम मतिभ्रमकुरुराऊ । सोकिमिजानहिं भाउकुभाऊ ।
चलहु भूप अब करहु तयारी । खेलिय नृप गृह पंसासारी ।
उन श्रमकरि सब भूप बुलाये ॥ कौतुक देखन ते नृप आये ॥
जो न नरेश चलौ तुम काली । कुरुपतिहोइमनोरथ खाली ॥
भीम बचन सबके मन भाये ॥ भूप प्रीत गजबाजि सजाये ॥
गये बितान पटल लदि आगे । पटह धेनुमुख बाजन लागे ॥
सो० निकर नगारे बाज बोले विरद प्रयात के ।
गरजिउठे गजराज हय हींसत थहरात रथ ॥
बिदुर समेत चढ़े नृप हाथी । प्रचलत भये भीमादिक साथी ॥
उठे निशान चले नरनायक । धाये विपुल चहूँदिशिपायक ॥
तुरगारूढ़ लगिनि करवालहि । गहिकर घेरिचले नरपालहि ॥
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये । आतुर लषण कुमार पठाये ॥
उलका द्विरद दुशासन साथा । नायो धर्मराज पद माथा ॥
दै असीश नृप धर्म समोदा । बैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा ॥
मुक्तामाल दीन्ह पहिराई । दिये विविधपकवान मिठाई ॥
कीन्ह बिदा कुरुनाथ कुमारा । आप बितान बीच पगुधारा ॥
दो० तेहि अवसर आवत भयो धर्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालकी भीतरगई अवास ॥
लषण समेत बिदुर इत आई । सकलकथाकुरुपतिहिसुनाई ॥
कुरुरनिवास भवन सुधिपाई । मिलनद्रुपदतनया पहँ आई ॥

सुनि आवत दुर्योधन रानी । चलीं मिलन हित सकल सयानी ॥
तजि नरवाहन सब रनिवासा । मिलीं द्रौपदी सहित हुलासा ॥
करि सब विधि सब कहँ सतकारा । भांति अनेक भई जेवनारा ॥
कुरुपति बन्धुन की सब नारी । निज निज भवन गमन कृत झारी ॥
चलन चहेउ दुर्योधन रानी । द्रुपदसुता राखेउ गहि पानी ॥
करन धर्मसुत कै पहुनाई । भूरि वस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पान करि धर्मज राजा । लीन बोलि द्विज साधु समाजा ॥
बैठ युधिष्ठिर भाइन ॥ लैके विप्रन सहित सुआसन देके ॥
द्रुपदसुता अरु पाण्डव रानी । सोहहिं पटल कपाट सयानी ॥
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा । हरि की कथा रसाल अनूपा ॥
सो० हरि की कथा रसाल कहन लगे द्विज विदुषवर । [illegible]
[illegible] सुनत धर्म महिपाल जहँ तहँ दरबानी खड़े ॥ [illegible]
[illegible] राय दुर्योधन निरयस । सञ्जय तेतब कहत भयो अस ॥
अब तुम जाहु जो पाण्डुसुत ठाईं । आ शकुनी करि मन्त्र सहाई ॥
कहेउ धर्मसुत तें समुझाई । प्रात द्यूत खेलहिं इत आई ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये । आतुर धर्मराय पहँ आये ॥
भूप समीप लीन बैठाई । तब सञ्जय बोलेउ रुख पाई ॥
तुमहिं प्रात कुरुनाथ बोलावा । द्यूत कर्म हित साज बनावा ॥
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी । मिलब प्रात सब कहँ हम आनी ॥
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये । धर्म बचन कुरुपतिहिं सुनाये ॥
दो० सुनहु भूप सञ्जय कह्यो येहा कह धर्मज राइ ।
॥ [illegible] स्वजन सहित कुरुपतिहिं मैं प्रात भेंटिहौं आइ ॥ [illegible]
॥ [illegible] सबल सिंह संजय बचन सुनि कौरव कुलनाथ । [illegible]
॥ [illegible] जात भयो विश्राम थल युवती नन्दन साथ ॥ [illegible]
॥ इति श्रीमहाभारते सभापर्व भाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ३ ॥ [illegible]
तेहि रात्रीकर भयो बिहाना । पाण्डव गये द्रोण अस्थाना ॥
संग भूमिसुर साधु समाजा । नमत द्रोणपद पाण्डव राजा ॥

परत दण्डवत धर्मज कीन्हा । द्रोण उठाइ लाइ उरलीन्हा॥
पाइ अशीश भेंटि सब भाई । मिले द्रोणनन्दन पुनिआई॥
पूंछी कुशल प्रश्न नृप आछे। तब कुरुकही कुशलसबपाछे॥
कहहु कुशलसब धर्मकुमारा । बोले वचन भूप श्रुतिसारा॥
नाथकुशलसबविधि अनुगामी। तव अशीश मोरेशिरजामी॥
मांगी विदा भूप शिरनायो। तुरत पितामह के गृहआयो॥
परशि चरण नृप द्वौ करजोरा । लखि हरषे मन गंगकिशोरा॥
॥ भीष्मउवाच ॥
॥ दो० पुत्र युधिष्ठिर भद्रतब होइ सो आशिष दीन्ह।
॥ करणीकुरुपतिकीसमुझि सजलनयनकछुकीन्ह॥
वहेउ युगल तनु प्रेमप्रवाहा । आयसु मांगि चले नरनाहा॥
बुद्धिचक्षु के मंदिर आये । पितु भ्रातापद शीश नवाये॥
धरम आगमन सुनि सुखपाये । परमप्रीति मतिदृगउरलाये॥
परत चरण लखि पांचो भाई। बरबस भूप लिये उरलाई॥
रहे भूप तेहि थल धरि त्वारी। करत प्रीति मतिदृग बैठारी॥
उठि धर्मज नाये पद शीशा। विदा कीन नृपदिये अशीशा॥
चले समाज समेत भुवारा । कुरुपति के मंदिर पगुधारा॥
आवत देखि धर्म नरनाथा । उठे भूप भट यूथप साथा॥
मिलिअनेकबिधिकरिसतकारा। कुशल पूंछि आसन बैठारा॥
॥ दो० भेंटि भलीविधि युगलनृप बहुआदर बहुभाइ।
धर्मराय देखेउ बहुरि रविनन्दन गृह आइ॥
रविसुत सुनेउ धर्मसुतआये। विसासेन कहँ तुरत पठाये॥
आगे मिलत चरणगहिरहेऊ । चिरंजीव अधरम अरिकहेऊ॥
सुत समेत रविसुत पहँ आये । मिलतपरस्पर चपजलछाये॥
कुशल प्रश्न पूछत मृदुबानी। गये अँगारमती जहँ रानी॥
धर्महिं देखि रानि सुख भरेऊ । भीमादिक भ्रातन आदरेऊ॥
लखिसतकार विपुल सुखपाये। आतुर भूप विदुर गृहआये॥

मिले कृपहिं नृप अतिहित तेरे । आवत भये बहुरि नृप
खान पान करि पति जगतीके । पुनि सोहैं सिंहासन नें
रही तँबूरनकी ध्वनि माची । वारवधू बहु वृन्दन ना
॥दो॰॥ करत हास्य भीसादि सब लखि अप्सरा ललाम ।
॥ यहि प्रकार आनंदते बिगत भई निशियाम ॥
तेहि अवसर संजय तहँ आये । लै सँदेश कुरुनाथ पठ
खेलन अक्ष चलहु नृप आजू । तुमहिं बोलावत कौरव र
संजय वचन भूप सुनि लीन्हा । नहिं ताकर प्रतिउत्तर दी
विप्रवृन्द तेहि अवसर आये । प्रथम भूप उठि शीशनिव
दीन्हे सबन यथोचित आसन । बहुरि आप बैठे सिंहास
गायक नर्त्तक बदन दुराई । रहे चुपाइ भूप रुख प
वेद ऋचा द्विज वृन्दन गाये । सुनि वंश प्रेम सभा मन भ
गावहिं बिदुष सकल गुण पूरे । बिबिध प्रकार बजाइ तँ
होतहिं प्रात धर्म के जाये । गंधारी गृह आतुर आ
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई । दीन्ह अशीश मातु सुख
॥सो॰॥ दासी वृन्द बिशाल दीन्हे मंच अनेक धरि ।
॥ बैठे धर्म नृपाल सचिव सखा भाइन सहित ॥
कनक प्रयंक बिराजत रानी । जनु सोहत कैलास भवा
उठि नरनाह रजायसु मांगा । बंदि मातुपद अतिअनुरा
आति भल कुरुनंदन के आई । सबके भवन धर्मसुत ज
भेटत सबहिं गये दिन चारी । आई कालनिशा भयका
दीपक आइ धर्मसुत कीन्हा । बिपुलद्रव्य महिदेवन दी
कीन्हेउ आइ बुद्धि हग एका । धरि दीन्हे मणिदीप अने
गजपुर प्रकटि रही उजियारी । भयो बिनाश निशातम भा
दो॰ जात भयो ताही समय सभा भवन कुरुनाथ ।
॥ बिकरण दुश्शासन करण सौबल शकुनी साथ ॥
दियो किंकरन डारि गलीचा । अद्भुत बसन परे बिचबीच

बैठि गयो कुरुनायक जाई॥आवन लागे नृपति समुदाई॥
बाह्लीक गांगसुत आये॥भूरिश्रवा बिषसेन सोहाये॥
सुद्धामृन्यु अलम्बुष उलूका॥मगदत्त बंधु चतुर अहिमूका॥
सोमदत्त शशिबिन्दु सुनेशा॥सैंधवपति अरु शल्य नरेशा॥
आइ गये नृप तीसि हजारा॥रहत सदा जे कुरु दरबारा॥
करहिं वकीलति निज महि हेतू॥अचल करहिं कौरव कुलकेतू॥
आये सभा वकील घनेरे॥जे हित करत नरेशन केरे॥
कौरव नायक के शत भाई॥आये साथे सुभट समुदाई॥
॥सो॰॥ तेहि अवसर आइ बेतपाणि गणगुण निपुण॥
॥ कीन्हे सबन बैठाइ यथा उचित आसन सबन॥
॥दो॰॥ द्रोण कृपा भीषम करण आवत लखि कुरुनाथ।
॥ सहित सभा संभ्रम उठे बैठारे गहि हाथ॥
आये बहु सतंग पुर वासी॥सचिव महाजन जे गुणरासी॥
सबहि नरेश कीन्ह सतकारा॥आवत देखे द्रोणकुमारा॥
करि आदर अनेक नरनाहू।कहेउ धर्मसुत पहँ तुम जाहू।
बेतपाणि तब खबरि जनावत।सहित समाज युधिष्ठिर आवत।
तबलग धर्मराज प्रभु धारा।जहँ तहँ नृप बहु करत जोहारा।
मिले अग्र आतुर दुर्योधन।बैठारे करि बिबिध प्रबोधन।
भ्राति प्रताप कुंती के बालक।सोहत सभा प्रजापतिपालक॥
तेहि अवसर कुरुपति रुखपाये।पंसासारि दुशासन लाये॥
दीन्ही धरि अजीतिरिपु आगे।करगहि भीम बिलोकन लागे॥
सो कुरुपति निज हाथ उठाई।लियें धर्मसुत अस उठाई॥
फरकेउ अशुभ नयन भुजबायें।उर थरहरेउ छींक भइ दायें॥
॥सो॰॥ दिये धर्मसुत डारि परेउ न पांसा जो चहेउ।
शकुनी लीन सँभारि फेंकेउ महि नहिं पर परेउ॥
धर्मराज पांसा महि मारे।बोले बचन नयन रतनारे॥
मेरा हमार भये कुरुनन्दन।कुरुनीति सेटहिं मोहिमतिनन्दन॥

कहहु कुमंत्रलागि श्रुतिमाहीं। युद्ध जुवां लायक तुम नाहीं॥
शकुनी लज्जित निपटसभामा। कुरुपतिहृदय रोषतरुजामा॥
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा। बिहँसि राइ प्रतिउत्तरदीन्हा॥
हम शकुनी कहँ नृप बैठारा। यामेंकछु न अकाज तुम्हारा॥
शकुनी हारहि सो हम देहीं। अंगीकार जीति करि लेहीं॥
हम हारे शकुनी के हारे। बड़िअनुचितनृपज्ञानबिचारे॥
जो निजहानि भूप तुम जानो। निजकिंकर तुमहूंकोउआनो॥
सो० हमखेलब तवसाथ होइ नीच सब भांति जो।
कह्योवचन कुरुनाथ शकुनी तो शिरमौरमम॥
धरहु भार निज शीश बैठारहु किनसाहनी।
हमहिं न ओछिमहीश मैंखेलव नृपसरसिमहँ॥
दो० धर्मराज सन भीम तब कहनलगे कर जोरि।
छल है जुवां न खेलिये सुनिये बिनती मोरि॥
घलि नरेश कीजै निज राजू। शकुनीते खेलिय केहिकाजू॥
अतिहित भीमसेन के बानी। युगल बन्धु पारथ मनमानी॥
बरजतसकल धर्ममहराजहि। भीष्मादिकसबसहितसमाजहि॥
जनि पांसा अब धर्मचलावहि। बामविधाता कछुनहिंभावहि॥
होनहार को सकत मिटाई। बोले धर्मराज सुनु भाई॥
जो यह बोलत कुरुपति बाता। छलबिहीनलागतमोहिताता॥
क्षत्री धर्म कांछ हम कांछे। युद्ध जुवां पगपरइ न पाछे॥
एकदिशि कालप्रचारहिजबहूं। क्षत्रिधर्म धरिमुरियन तबहूं॥
यहिमाफिरि आपुसिकर बीचू। पाछे पांव धरै सो नीचू॥
दो० अस कहि धर्म नरेश तब पांसालीन उठाय।
दशा संकटा कठिन है निपट रही नियराय॥
द वर्ष पतिगत बल भयऊ। रवि कुदृष्टिमूरतिथलगयऊ॥
ग्रह अशुभपरे थलहीथल। वर्षप व दैत्रयोदश निर्बल॥
हहिंविदुषजननृपाहिं शरिष्टा। महाराजदिनतुमहिं अरिष्टा॥

जब अस वचन सुनहिं कुरुनायक। लागहिं हृदय कठिन जनु शायक॥
भावीवश नृप मनहिं न भाये। भापि दावँ निज अक्ष चलाये॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई। कहेउ करण कुरुपति रुखपाई॥
धर्मज वृथा न वड़ श्रम कीजे। पाँसा में कछु होड़ वदीजे॥
काढ़ि कण्ठते गजमणिमाला। सो धरि दीन धर्म महिपाला॥
हरितमालमणि कुरुपति राखी। पाँसा चलन लगे वलभाखी॥
कपट अक्ष शकुनी संभारे। कहत परत सोइ विनहिं विचारे॥
होत जीत कुरुनायक केरी। हारे धर्मज वस्तु घनेरी॥

दो॰ ताहीसमय वुलाइयो निज कुरुनाथ दिवान।
आयो आयसु मानि सोइ परमप्रपञ्च निधान॥

हारि जीति जो होइ हमारी। सो तुम सकल लिख्यो सम्भारी॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई॥
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा। जीति लिये मुक्तामणि हीरा॥
मोती रतन जवाहिर जेता। मूंगा कञ्चन कोश समेता॥
शकुनी कपट अक्ष वल जीते। चित अस धर्मज भे सुखरीते॥
जीतिवस्तु धर्मज गृह राखी। वोलहिं विकल भूमिपति साखी॥
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये। जीति देखि कुरुगण सुख पाये॥
परहिं न धर्मराज के पांसे। चकित लोग सब देखि तमासे॥
आदि धरादि लोह अरु चांदी। रहेउ न शेष ताम्र कोशादी॥
द्रव्य जो होति धातु पट दोई। रहेउ न धर्मराज गृह कोई॥

दो॰ शकुनी अक्ष सँभारि कै फिरि लीन्हेउ निजहाथ।
कपट भेद महँ दक्ष अति पक्ष धरे कुरुनाथ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे। क्षणमहँ सकल धर्मसुत हारे॥
तरकस कवच धनुप दस्ताना। चर्म त्रिशूल कटार कृपाना॥
शक्ति कराल अस्त्र सव चीन्हे। पृथक पृथक धरि धर्मज दीन्हे॥
तजे अक्ष शकुनी छलकारी। यहि विधि गये धर्मसुत हारी॥
बाढ़ेउ रोप धर्मसुत अंगा। धरेउ सकल दल नृप चतुरंगा॥

तब शकुनी छल अक्ष चलाये। कोरे कागज जीति लिखाये
धरेउ धर्म महिषी गण गाई। जीते शकुनी अक्ष चलाई
व्याघ्र कुरंग शृगाल शशादी। कानन नर बानर चित्तादी
पक्षी बहु विचित्र बहु भांती। रंग रंगके अगणित जाती
कनक पींजरा सोहहिं पांती। लखि शोभा भारती भुलाती
॥ दो० नृपआयसु अनुचर सकल सेवहिं खगमृग वृन्द।
॥ प्रथमनाम कहि धर्म्मसुत धरे विगत आनन्द॥
करते शकुनि अक्ष जब डारैं। धर्म हारि सब लोग पुकारैं
वाहन रथ शिविकासुखपाला। उष्ट्र महिषि शकट विशाला
एकएक भिन्न भिन्न धरिदीन्हे। शकुनी जीति कपटबललीन्हे
धरेउ नरेश तुरंगम सामा। कहेउ पृथक शाला प्रतिनामा
यहि प्रकार धरिधर्मज बाजी। हारे सकल तुरंगम ताजी
लखिआपन सबभांति बनाऊ। रोम रोम हरषे कुरुराऊ
धर्मज नयन वामभुज फरके। भय बश अंग धकाधकधरके
रहेउ न चेतभयो मति भंगा। धरेउ धर्मसुत यूथ मतंगा
देश देश जहँ मत्त समाजा। धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा
॥ दो० पांसा शकुनी पाणि गहि देत भूमि जबडारि।
करतकुलाहललोगसब निजनिज दावँपुकारि॥
हारे धर्मराज गज सर्वा। शकुनी अक्ष लेइ सहगर्वा
रहत सदा जे भूपति संगा। शेष रहे ते सकल मतंगा
पृथक पृथक कहि भूपतिनामा। धरेउनरेशजिनहिं विधिवामा
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे। भइ शिरहारि धर्मसुत केरे
चकित लोग सब देखितमासा। कहुँ न परत धर्मसुत पांसा
पुनिपुनि परत दावँकुरुपतिको। को जानै परमेश्वर गतिको
सुनिकर सरुष धर्मसुतपाहीं। वाहुलीक आदिक पछिताहीं
शकुनी पाण्डवसुतहि प्रचारा। लीन जीति भाजन भंडारा
कंचनआदिजड़ितमणिभाजन। हारे सकल धर्म महराजन

जबअसवचनसुनहिंकुरुनायक।लागहिंहृदयकठिनजनुशायक॥
भावीवश नृप मनहिं न भाये।भापि दावँनिज अक्ष चलाये॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई।कहेउकरणकुरुपति रुखपाई॥
धर्मज वृथा न बड़ श्रम कीजे।पाँसा में कछु होइ वदीजे॥
काढ़ि कण्ठते गजमणिमाला।सो धरिदीन धर्म महिपाला॥
हरितमालमणि कुरुपतिराखी।पाँसा चलन लगे बलभाखी॥
कपट अक्ष शकुनी संभारे।कहतपरतसोइत्रिनहिंत्रिचारे॥
होत जीत कुरुनायक केरी।हारे धर्मज वस्तु घनेरी॥

दो० ताहीसमय बुलाइयो निज कुरुनाथ दिवान।
आयो आयसु मानिसोइ परमप्रपञ्च निधान॥

हारि जीति जो होइ हमारी।सोतुमसकललिखोसम्भारी॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई।लागेउ करन शूद्रपति सोई॥
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा।जीति लियें मुक्तामणि हीरा॥
मोती रतन जवाहिर जेता।मूंगा कञ्चन कोश समेता॥
शकुनी कपट अक्ष बलजीते।चितअस धर्मज भे सुखरीते॥
जीतिवस्तु धर्मज गृह राखी।बोलहिंबिकलभूमिप्रतिसाखी॥
शकुनीपुनि पुनि अक्षचलाये।जीति देखिकुरुगणसुखपाये॥
परहिं न धर्मराज के पांसे।चकित लोग सब देखितमासे॥
आदि बरादिलोहअरु चांदी।रहेउ न शेप ताम्र कोशादी॥
द्रव्य जो होति धातु पट दोई।रहेउ न धर्मराज गृह कोई॥

दो० शकुनी अक्षसँभारिके फिरि लीन्हेउ निजहाथ।
कपट भेदमहँ दक्षअति पक्ष धरे कुरुनाथ॥

क्षणमहँ सकल धर्मसुतहारे॥
अष्टधातु आयुध भय कारे।
तरकस कवच धनुप दस्ताना।चर्म त्रिशूल कटार कृपाना॥
शक्ति कराल अस्त्र सबचीन्हे।पृथकपृथक धरिधर्मज दीन्हे॥
तजे अक्ष शकुनी छलकारी।यहिविधि गये धर्मसुतहारी॥
बाढ़ेउ रोप धर्मसुत अंगा।धरेउ सकल दल नृपचतुरंगा॥

सजिदल दुर्दर्शन चले बाजन लगे निशान॥
देखियुधिष्ठिर अति दुखपावा। दुर्योधन ते वचन सुनावा॥
नीति नरेशन के असि होई। जो जसदण्डउचित सो देई॥
हमअदण्डकृतसुतशिशुपाला। तुम पठयेदलअतिविकराला॥
जो कै है महि दीन हमारी। तुम ते ना पाई भिखियारी॥
मखमहँ गयो तासु पितुमारा। कियेदण्ड बिनुयुगलकुमारा॥
तुमहिं उचितहै तव मतिवंता। लेहु दण्ड जनि बर्ष प्रयंता॥
यह प्रतिपालहु बात हमारी। मनभावहिं तसकरहु अगारी॥
तुमहिं नरेश उचित यहबाता। बार बार कह शत्रु अजाता॥
सो० धर्म्मराजके बैन सुनि बोले कुरुनाथ तब।
हमैंउचित यहहैन करिय दण्ड बिन चैद्यसुत॥
अवनी प्रतिअदण्ड करिदेहीं। हम तजि राज्य कमंडलुलेहीं॥
तवमुख कहत बनत यहबाता। अपरन काहुहिसुनतसोहाता॥
धर्मराज सुनि कुरुपति बानी। गेजरिगात तेज बल हानी॥
भीमसेन फरके भुज दंडा। अधर फरहरत रोप प्रचंडा॥
पारथ भयो बिलोचन लाला। लखि आनर्थक धर्मभुवाला॥
नाहिन समय रोप कर आता। किमि समुझै मूरख अज्ञाता॥
परम सुजान चतुर जे बीरा। समय बिचारि धरैं मन धीरा॥
जाहि अभय हम दीनवसाई। अब तापर दारुण भयआई॥
सकल हारिकर मोहिं न शोचू। जस यह परेउ परम संकोचू॥
सो० निजनयननलखिमोहिं होत दुसह दुख निपटलखि।
तात न तेहिबिधि सोहिं समय जानि धीरजधरहु॥
शपथ हमारि हजार आयसु बिन जनि करिययह।
त्यागहु सकल बिचार तात भये अपमान कर॥
तब बोले सहदेव सभागे। कादेखौ देखिहो अब आगे॥
नवते भूप स्याल तजि दीजे। रक्षत प्राण भवन मग लीजे॥
तदुर्योधन नृप अति नीचू। मारहि सबहिंबुलाय कुमीचू॥

सो० बसन कोश गये हारि रंगरंगके अतिसुभग।
दीन्हे पांसा डारि शकुनी सांचे कपटके॥

दो० देश देशके पाण्डवन देत भूप अवनीश।
सकलपत्रधरिदावँपर दीन्हेउ धर्म्म महीश॥

शकुनी पाँसा तमकि चलाये। कुरुपतिजयतिनिशानदिवाये॥
बोलि लिये तब धावन चारी। द्विरद दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी॥
कहेउ कि हम जीते नृपभारी। जेनहिं मानत आनि हमारी॥
एक बिहीन धर्म महिपालहि। जेनडरत सपनेहुं रणकालहि॥
ते अब सहज जीति हमपाये। बिनप्रयास बिधितापबुभाये॥
पठवहु बोलि सकल नरनाहू। आवहिंनहिं सेना सजिजाहू॥
देहिं दंड नत आनहु बाँधी। देश देश प्रति करहु उपाधी॥
दंड चतुरगुण दशगुण लेहू। मिलहिंनतेहिमम शासनदेहू॥
दुर्योधन कर आयसु पाये। निजनिजकारजसकलसिधाये॥
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये। देश देश लिखि पत्र पठाये॥

दो० मिलहु आइ आतुर निपट त्यागिसकलसन्देह।
देहु दण्ड कुरु भूपतिहि नत जैहौ यमगेह॥

जहँ कहुं वीर धीर नृपजाना। साजि बिकटदलकीनपयाना॥
जिनते बैर भाव अधिकाई। करि उपाय तहँ करैं लराई॥
सपनेहुं पांडुसुवन बल पाई। कीनअवज्ञा जेहि सुधिआई॥
करहिं उपाधि तासु सँगनाना। जेहिंविधिहोयतासु अपमाना॥
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं। लखिबलहीन त्यागितबदेहीं॥
काहुहि बाँधि लेहिं करिसंगा। काहुहि करहिं समरमहँभंगा॥
यहकुरुपतिअतिशयसुखपावा। दुर्दर्शनहिं बहोरि बुलावा॥
तात सजहु तुम दल चतुरंगा। लेहु धीर भट यूथप संगा॥
महिषमती नगरी कहँ जाई। धरिआनहुनिशिचरसमुदाई॥
जहँ शिशुपालसुवनबिख्याता। किये दण्डबिनु शत्रुअजाता॥

बा० दण्ड बांधिलीजे उचित कीजै अवशि पयान।

सजिदल दुर्दर्शन चले बाजन लगे निशान॥
खियुधिष्ठिर अति दुखपावा। दुर्योधन ते वचन सुनावा
रीति नरेशन के असि होई। जो जसदण्डउचित सो देई
मअदण्डकृतसुतशिशुपाला। तुम पठयेदलअतिविकराला
जो है हे महि दीन हमारी। तुम ते ना पाई भिखियारी
रणमहँ गयो तासु पितुमारा। कियेदण्ड बिनुयुगलकुमारा
तुमहिं उचितहै तव मतिवंता। लेहु दण्ड जनि वर्ष प्रयंता
यह प्रतिपालहु बात हमारी। मनभावहिं तसकरहु अगारी
तुमहिं नरेश उचित यहबाता। बार बार कह शत्रु अजाता
सो० धर्म्मराजके बैन सुनि बोले कुरुनाथ तब।
हमेंउचित यहहैन करिय दण्ड बिन चैद्यसुत॥
अवनी प्रतिअदण्ड करिदेहीं। हम तजि राज्य कमंडलुलेहीं
तवमुख कहत बनत यहबाता। अपरन काहुहिसुनत सोहाता
धर्मराज सुनि कुरुपति बानी। गेजरिगात तेज बल हानी
भीमसेन फरके भुज दंडा। अधर फरहरत रोप प्रचंडा
भारथ भयो बिलोचन लाला। लखि अनर्थके धर्मभुवाला
नाहिंन समय रोप कर भ्राता। किमि समुझै मूरख अज्ञाता
परम सुजान चतुर जे बीरा। समय बिचारि धरैं मन धीरा
जाहि अभय हम दीनवसाई। अब तापर दारुण भयआई
सकल हारिकर मोहिं न शोचू। जस यह परेउ परम संकोचू
सो० निजनयननलखिमोहिं होत दुसह दुख निपटलखि।
तात न तेहिविधि सोहिं समय जानि धीरजधरहु॥
शपथ हमारि हजार आयसु बिन जनि करिययह।
त्यागहु सकल बिचार तात भये अपमान कर॥
तब बोले सहदेव सभागे। कादेखो देखिहो अब आगे
अबते भूप ख्याल तजि दीजे। रक्षत प्राण भवन मग लीजे
नतदुर्योधन नृप अति नीचू। मारहि सबहिंबुलाय कुमीचू

जोरि युगलकर द्रौपदी कहति विकल अतिबात॥
सुनहु तात तुम नीतिनिधाना। सोमगननहिं तुमजोनहिंजाना॥
तुमकहँ तात शपथ शतमोरी। कह्यउतातनहिं राखेउ चोरी॥
कहहु सत्य तजि जीवन पापू। हारेनृप मोहिं प्रथम कि आपू॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा। किंकर भये मिट्यउ पदभूपा॥
दासन के गृह होइँ न रानी। नीतिविचारिसमुझ्हुममवानी॥
छूटि गये सब नात हमारे। नृपहारे हँस जाहिं न हारे॥
जो मोहिं प्रथम धरेउनरनाथा। त्यागिलाजचलिहौंतवसाथा॥
कै किंकरी करौं सब काजू। जो कहिहैं कौरव शिरताजू॥
वेगि समुझि प्रतिउत्तर दीजे। आयसुहोय अवशि सोइकीजे॥

दो० सुनि दुश्शासन वचन अस धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति नीति विचारति चेरि॥

सो० कहत कटुक दुर्बाद रोष भरा धावत भयो।
देखि जाय मर्याद भय बश भागी द्रौपदी॥

जात पुकारत आरत वानी। देखिदुशासनअतिरिसमानी॥
झपटि केश लीन्हेउगहिहाथा। चलेउघसीटतजहँ कुरुनाथा॥
देखि दशा दासिन के वृन्दा। करहिंविलापविपतिपरिफन्दा॥

दीन्हे शकुनी अक्ष उलारी। किंकर भये धर्मसुत हारी॥
छूटि राज्य पद दास कहाये। भये अचेत रहे शिर नाये॥
पुनिपुनि शकुनीकहेउ नृपाहीं। जो कछु शेष रहा गृह माहीं॥
उठतख्याल अत्र सोधरिदीजे। पाछे पगधरि अयश न लीजे॥
धर्मसुतहिं कुरुनाथ प्रचारा। गूढ़गिरा कहि बारहिं बारा॥
तुमनृप विदित सत्यव्रतधारी। परहिं न पद ये कर्म पछारी॥
अटपटि कुरुनन्दन कै बानी। समुझि न परी तर्कछलसानी॥
उर वरि उठी रोप दुखज्वाला। धरेउ भूप तनया पञ्चाला॥
वान्धवप्रियजनअतिदुखभरेऊ। मानहुँ अन्ध महानद परेऊ॥

सो० शकुनी सवन पुकारि साखीकरि नरनाह वहु।
दीन्हेउ पाँसाडारि हारिगये नृप धर्मसुत॥
लखि अनरथकी वात भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सव गात मानहुँ विनु मारे मरे॥

धर्मराज तन सुधि विसराये। करते उठत न अक्ष उठाये॥
भयो शोकवश धर्म भुवारा। मनहुँ कमलवन परेउ तुपारा॥
भीपम विदुर निपट दुखपावा। द्रोण कृपा महिशीश नवावा॥
वाहलीक उर दुख अधिकाई। गये सभातजिगृहअकुलाई॥
मन विस्मय वासि द्रोण कुमारा। काधौं कीन चहत करतारा॥
सचिव महाजन गजपुरवासी। विलपतविकलपरीजनुफांसी॥
समुझि समुझिकुरुनाथसुभाऊ। होत हृदय नहिं धीरज काऊ॥
रविसुत शकुनी उर आनन्दा। मनहुँ उदधिलखिपूरणचन्दा॥

दो० दुश्शासन आदिक अनुज सकल प्रफुल्लितगात।
रोम रोम कुरुनाथ के हर्ष न हृदय समात॥

चीर चीर गज वाजि लुटाये। द्विजन दान नानाविधि पाये॥
याचकगण सकल अयाची। विजय नगारे की धुनिमाची॥
भाँती कुरुपति पाण्डव रानी। कहेउ धर्म्मसुत ते पहचानी॥
अनुचर भयो समेत समाजा। करहुमानि मम आयसुकाजा॥

नहिं सहदेव बचन मन भाये। धर्मराज कर अक्ष उठाये॥
भीमबहोरि कहेउ, सुनुभ्राता। चारियाम यामिनिरहि जाता॥
याम सपाद दिवस चढ़ि जाई। अब अवसरनृपचलियनहाई॥
भीमबचन सुनि कहकुरुराजा। शकुनी ते भागे बड़ि लाजा॥
प्रथम हीनकरि चहत न खेले। तासु संग बड़ि हास पखेले॥
कुन्तीसुत सुनि अति दुखपाये। राखि दावँ बड़ अक्षचलाये॥
सो० परे न धर्मज अक्ष शकुनी लीन उठाय कर।
कपट भेद महँ दक्ष पुनि पाँसा फेंको चहत॥
दो० धर्म्मराज निजराज्यसब धरि दीन्हे यकदाय।
जीतिलीन्हशकुनीसकल बिनश्रमकपटउपाय॥
सो० धरन लगे नर देव राज्यसकल चितभ्रमबसी।
काहि दीन्हेउ सहदेव चारि बरणब्राह्मणबिना॥
ब्राह्मण कहहुजाहिं किमि हारे। सब प्रकार शिरमौर हमारे॥
लखि सहदेव केरि चतुराई। बिहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई॥
राज्य जीतिकुरुनायक लीन्ही। गहगह जयति दुन्दुभीदीन्ही॥
कपट बितान शेष जे रहेऊ। सो धरि बहुरिधर्मसुत कहेऊ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ। शकुनी जीते छल बल तेऊ॥
देश कोश समेत धरि दीन्हा। नकुलजीतिकुरुनायकलीन्हा॥
पारथ धरेउ सहित सब सामा। हयगज बसन कोश धन ग्रामा॥
कुरुपति जीति धनंजय पाये। परमानन्द निशान दिवाये॥
धरेउ दांव नाहिं रहेउ सँभारा। हारे भूप सकल परिवारा॥
बहुरि भूप युत सहन भँडारा। हारे भीम सहित परिवारा॥
हारि गये कुरुनायक जीते। गयो रंक पद भागि महीते॥
दीन्हे द्विजन याचकन दाना। हयगजभूमि रतनमणिनाना॥
गजपुर रहेउ न रंक अभागी। केवल धर्म धुरन्धर त्यागी॥
दो० चितभ्रम चकित अजात अरि धरिशरीर निजदीन्ह।
धर्म धुरन्धर धीरधर नहिं बिचार कछु कीन्ह॥

ीन्हें शकुनी अक्ष उलारी। किंकर भये धर्मसुत हारी॥
ाटि राज्य पद दास कहाये। भये अचेत रहे शिर नाये॥
ुनिपुनि शकुनीकहेउ नृपाहीं। जो कछु शेष रहा गृह माहीं॥
ठतख्याल अब सोधरिदीजे। पाछे पगधरि अयश न लीजे॥
र्मसुतहिं कुरुनाथ प्रचारा। गूढ़गिरा कहि बारहिं बारा॥
ुमनृप विदित सत्यव्रतधारी। परहिं न पद ये कर्म पछारी॥
अटपटि कुरुनन्दन के बानी। समुझि न परी तर्कछलसानी॥
उर बरि उठी रोष दुखज्वाला। धरेउ भूप तनया पञ्चाला॥
बान्धवप्रियजनअतिदुखभरेऊ। मानहुँ अन्ध महानद परेऊ॥

सो० शकुनी सबन पुकारि साखीकरि नरनाह बहु।
दीन्हेउ पाँसाडारि हारिगये नृप धर्मसुत॥
लखि अनरथकी बात भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सब गात मानहुँ बिनु मारे मरे॥

धर्मराज तन सुधि बिसराये। करते उठत न अक्ष उठाये॥
भयो शोकवश धर्म भुवारा। मनहुँ कमलवन परेउ तुषारा॥
भीषम विदुर निपट दुखपावा। द्रोण कृपा महिशीश नवावा॥
बाह्लीक उर दुख अधिकाई। गये सभातजिगृहअकुलाई॥
मन विस्मय बसि द्रोण कुमारा। काधौं कीन चहत करतारा॥
सचिव महाजन गजपुरवासी। बिलपतविकलपरीजनुफांसी॥
समुझि समुझिकुरुनाथसुभाऊ। होत हृदय नहिं धीरज काऊ॥
रविसुत शकुनी उर आनन्दा। मनहुँ उदधिलखिपूरणचन्दा॥

दो० दुश्शासन आदिक अनुज सकल प्रफुल्लितगात।
रोम रोम कुरुनाथ के हर्ष न हृदय समात॥

ीर चीर गज बाजि लुटाये। द्विजन दान नानाविधि पाये॥
े याचकगण सकल अयाची। विजय नगारे की धुनिमाची॥
ीती कुरुपति पाण्डव रानी। कहेउ धर्म्मसुत ते यहबानी॥
ानुचर भयो समेत समाजा। करहुमानि ममआयसुकाजा॥

कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई। माथे मानि करव हम सो
रूख वदन करि कह कुरुराई। द्रुपदसुता अब देहु मँगा
सदसि वाचसुनि निर्भय वानी। रोषज्वालसुनि उरसरसान
धरि धीरज रिस सो उरमारी। मूर्च्छिपरेउनृपश्रवनिदुखा
रह्यउ न चेत कह्यउ कछु नाहीं। अटकिरहेउमणिखम्भनमा
दो० सबलसिंह धर्मजदशा लखी न काहू आन।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि परम रोष सरसान॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेदुर्योधनधर्मपराजय
द्यूतवर्णननामचतुर्थोऽध्यायः॥४॥
दो० सुनिये नृप निज वंश के पुनिचरित्र सुखदाय।
बोले दुर्योधन बहुरि कामी प्रात बुलाय॥
सूत प्रातकामी ज्यहि नामा। करतसदा कौरवपति कामा
अतिगम्भीरवचन नृपकह्यऊ। धर्मराज महराज न रह्यऊ
भये आजुते दास हमारे। सब परिवार द्रौपदी हारे।
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई। द्रुपदसुता तुम आनहु जाई।
ल्यावहु सभा द्रुपद की जाता। तुमसबबिधि प्रपंचमगज्ञाता।
कह्यउ संदेश गये पति हारी। अब तुम सेवहु सेज हमारी॥
सुनत प्रातकामी उठि धावा। आतुरधर्मशिबिरकहँआवा॥
दुर्योधन कर सकल सँदेशा। कह्यउशीलतजिसकलभदेशा॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा। नतु धरि लैजैहैं निजहाथा॥
सो० सुनत सूत मुखबात भयवश काँपी द्रौपदी।
विकल भये सबगात कौरवनाथसुभावलखि॥
धरिधीरज कह द्रुपदकुमारी। सुनहु सूतपति बात हमारी॥
कस यह बचन कहा कुरुराई। राजसभात्रियकेहिबिधि जाई॥
पठयो सूत यह आयसु मोहीं। धरि लैआउँ सभा महँ तोहीं॥
सुनत निठुर सारथिमुख बानी। अति सरोष दुर्योधन रानी॥
कहेउ सूत ते बचन बिचारी। ज्ञानिपान तुम्हरे शिरझारी॥

भूले। कहे भूल कहि तेरे। गये विसरि भुज पाण्डवकेरे
समुझि परत यह हेतु विशेखा। चहत नयन तव यमपुर देखा
बोलेउ सूत सुनहु महरानी। आयउँ मैं नृपआयसु मानी
वचन तुम्हार शीशधरि जैहों। दोष न मैं कुरुपति पहँ पैहों

॥दो०॥ सुनत सारथी के वचन तुरत दीन हुरियाय।
॥ लखि शैनी बदन गयो भागि भयपाय ॥

कहिसन्देश सकल तेहि दीन्हा। सुनिकुरुनाथ क्रोध अतिकीन्हा।
दुश्शासनहिं बुलाय नरेशा। कहेउ सरोष सत सन्देशा।
पुनिपुनि कहत रोष दारुणअति। केशपाणिधरिल्यावघसीटति।
मह शठपाण्डु सुवन भय पाई। सक्यउ न मूढ़ द्रौपदी ल्याई।
भीम बाहु लखि कम्पित गाता। अजहू शङ्कर कहत न बाता।
सबते प्रिय निज जीवन जानी। सकल मूढ़ नहिंधीरजआनी॥
चलेउ दुश्शासन आयसु मानी। आयो द्रुपदसुता जहँ रानी॥
आवत सरुष दुशासन देखी। पाञ्चाली भयत्रासित विशेखी॥
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई। चलु बोलत दुर्योधन राई॥

॥दो०॥ दुश्शासन के वचन सुनि द्रुपदसुता अकुलानि।
॥ हमरे तुम सहदेव सम कहत जोरि युगपानि॥

तात नीति मग देखु विचारी। कैसे जाय सभा महँ नारी॥
जबलगिहमशिरते न अन्हाहीं। पुरुषमुख देखन कहँ नाहीं॥
मैं रज स्रवत एक पट धारी। सभा गये पतिजाय तुम्हारी॥
तात चले कर अवसर नाहीं। नतजातिउँ मैं कुरुपतिपाहीं॥
भीष्मादिक क्षत्री बहु राजा। जातसभामहँ त्रियकहँलाजा॥
तातएकान्त बोलि कुरुराई। मैंसबविधिकहतिउँ समुझाई॥
मम दिशिते समुझाइ नरेशा। कहेउ तात अतिभलसंदेशा॥
दुश्शासन तव मन न तरेरे। सुनरी हारि गये पति तेरे॥
कसनाविचार कीन तिन मूढ़ा। म्वहिंसमुझावतिजिमिमैंमूढ़ा॥

॥दो०॥ चलितिन तें त्रिय सदसिकहँ करति उतर प्रतिगात।

जोरि युगलकर द्रौपदी कहति बिकल अतिवांत॥
सुनहु तात तुम नीतिनिधाना। सोसंगनहिं तुमजोनहिंजाना॥
तुमकहँ तात शपथ शतमोरी। कह्यउतातनहिं राखेउ चोरी॥
कहहु सत्य तजि जीवन पापू। हारेनृप मोहिं प्रथम कि आपू॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा। किंकर भये मिट्यउ पदभूपा॥
दासन के गृह होइँ न रानी। नीतिविचारिसमुझुममबानी॥
छूटि गये सब नात हमारे। नृपहारे हम जाहिं न हारे॥
जो मोहिं प्रथम धरेउनरनाथा। त्यागिलाजचलिहौंतवसाथा॥
ह्वै किंकरी करौं सब काजू। जो कहिहैं कौरव शिरताजू॥
वेगि समुझि प्रतिउत्तर दीजे। आयसुहोय अवशि सोइकीजे॥
दो० सुनि दुश्शासन वचन अस धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति नीति विचारति चेरि॥
सो० कहत कटुक दुर्वाद रोष भरा धावत भयो।
देखि जाय मर्याद भय वश भागी द्रौपदी॥
जात पुकारत आरत बानी। देखिदुशासनअतिरिसमानी॥
झपटि केश लीन्हेउगहिहाथा। चलेउघसीटतजहँ कुरुनाथा॥
देखि दशा दासिन के वृन्दा। करहिंविलापविपतिपरिफन्दा॥
दुर्योधन कर सब रनिवासू। विलपतगिरतनयनमगआंसू॥
परी धर्मसुत शिविर तरापा। गजपुरसकल शोकवशकांपा॥
गहे दुशासन द्रौपदि बारा। निकसतनागनगरगलियारा॥
देखि दशा विलपहिं पुरवासी। जड़जंगम खगमृगनृपदासी॥
जेहिसंग निकसत अंधकुमारा। देखि वज्र उर जात दरारा॥
देखत सब जहँतहँ बिलखाहीं। होत शोर जेहि मारग माहीं॥
दो० देखि झरोखन महल ते दासी वृन्द हवाल।
जायजायरनिवासप्रति विदितकीन्हततकाल॥
सुनिअसिगति कौरवगणरानी। विलपहिंसकलहृदयहतिपानी॥
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी। करुणाभवन भवनप्रतिघेरी॥

धावत पँवरि पँवरिप्रति जाता। द्रुपदसुता परबशबिलखाता॥
मोहिं छुड़ाव मातु गन्धारी। बार बार कह द्रुपदकुमारी॥
भीतर दासिन खबरि जनाई। तजिपर्यंक जननि उठिधाई॥

गाधारीउवाच॥

हा पुत्री हा धर्मज प्यारी। बलिबलिजाय मातु गन्धारी॥
छूटे केश उघरि गयो चीरा। बिलपतिदासीगण सँगभीरा॥
आवत जानि मातु गन्धारी। गयो दुशासन बेगि अगारी॥
जबलगि रानि द्वार पग दयऊ। राजसभा दुइशासन गयऊ॥
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी। करत मूढ़ कोउ तर्क विशेखी॥

सो॰ करत दया कोउधीर कोउधिककह दुश्शासनहिं।
तजत नयन कोउनीर कोउनिन्दत भीमादिकन॥
द्रुपदसुताके केश गहि खैंचत कुरुपति अनुज।
बैठेसकल नरेश मध्य सभा तहँ ले गयउ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई। जाय समीप दीन ठढ़ियाई॥
चहुँदिशि चकितचितैपांचाली। राजसभा लखि थरथरहाली॥
ना बश नहिं रहेउ सँभारा। स्रवत नयनमगते जलधारा॥
तिसुंदरिलखि द्रुपदकिशोरी। कामिन केरि भई मति भोरी॥
हहिं जासुगृह द्रुपदकिकन्या। धन्यधन्य पाण्डवपतिधन्या॥
नपुनि दुश्शासनहिं सराहीं। है बड़िभागिगही जेहि बाहीं॥
न्य आजु दुर्योधन राई। आयसु जासुमानिधरि आई॥
चनलाभहमहिं जेहि दीन्हा। सुफलजगतमहँजीवनकीन्हा॥
मंदशालखि कोउदुखपावहिं। कोउपछिताइशीशमहिनावहिं॥

दो॰ दुश्शासन कह द्रौपदी कारोवत बेकाज।
होत न आये सदसि महँ चेरिनको बड़िलाज॥

षम बिदुर नाव महि शीशा। द्रोण कृपा उर शोच सरीशा॥
कल धर्मशीलन दुख पावा। नीचन के उर आनँद आवा॥
शकुनी करण अनंद समंझे। दुर्योधन करि नयन तिरीछे॥

दुश्शासन प्रति कहेउ प्रचारी। बसनहीन करु द्रुपदकुमारी॥
ले बैठारि देहि मम जानू। बांधव बेगि कहा मम मानू॥
उठे दुशासन आयसु मानी। विकरण कहत जोरियुगपानी॥
तव मुख वचन न सोहत ऐसे। कुरुकुलतिलक कहत तुम जैसे॥
कृपद्रोण गुरु भीषम आगे। तुमनृपकहत लाजभयत्यागे॥
देश देश के भूपति राजत। तुमदुर्वचनकहतनहिंलाजत॥
ज्येष्ठ बन्धु कै जो त्रिय होई। मातुसमान कहत श्रुतिसोई॥
॥ दो० क्षण मा तासु उतारि पति तुम हारी कुरुराज।
अब अस कहत कि जो सुने होत न तेहि डर लाज॥
पूरण शशिमहँ कीरति तोरी। जनि महीश डारहु करि थोरी॥
मानि विनय मम प्रभु अनुरागी। देहु द्रुपदतनया अघत्यागी॥
धर्मराज सँग बिन अपराधू। कीन्ह नाथ तुम कस असाधू॥
विकरण वचन धर्मनय साने। सुनि सरोष रविनंद रिसाने॥

कर्णउवाच॥

सुनु विकर्ण लय तव शिशुताई। इन वचनन नहिं शोभा पाई॥
छोट वदन कहेउ बड़ि बाता। सुनि किमि सकै महिप गुरु ज्ञाता॥
है यह सभा सकल गुणखानी। तुम निज जानि अधिक सज्ञानी॥
बाल कलाप वचन कहि दीन्हा। चाहत हैं सबका लघु कीन्हा॥
वयस न भूपन के मन योगू। जानत तुम न हँसत सब लोगू॥
दो० खेलहु सब मिलि बालकन जाय शरासन बान।
सत्य देउ जनि भूपतिहि हो तुम शिशु अज्ञान॥
बालक इव गृह भोजन करहू। निज मन अहमिति निफल धरहू॥
दुर्योधन आयसु शिर धरहू। यह कारज मम सादर करहू॥
कहहि विकर्ण सुनु मन जीकी। यम नहिं होनहार कछु नीका॥
जस नृप तस मंत्री कुबचाना। अमयहिं यह निज वचन प्रमाना॥
करि सकोप बहन कुरुराजा। द्रुपदसुता मनदुख नाराजा॥
मदन हीन सब सूझत नाहीं। चलन्ह तोहिं सभा महँ नाहीं॥

है यह सभा अन्ध नृप केरी । केहि प्रकार सू भै री चेरी ॥
ई हम सुवन अन्ध नृपती के । भीमसहित तुम जानत नीके ॥
भव तुम्हें क्षिति देखै कोऊ । देखहु सबहि भीम तुम दोऊ ॥
दो० देखन हित अन्धी सभा, तुमकहँ लीन्ह बुलाय ।
कीन्हेउ मम अपमान जिमि तुम अपने गृह पाय ॥
त द्रौपदी बसन निज त्यागू । बैठि जांघ मम करु अनुरागू ॥
भी सभा न देखै कोई । जानत जाति हमहीं तुम दोई ॥
ये चतुर पाँच पति तेरे । भे बिन नयन सभा तिहि बेरे ॥
त तुम समेत यह भीमहिं । करहिं न रोष वृकोदर जीमहिं ॥
हरि विलोकि दुशासन ओरा । मानत तें तहिं आयसु मोरा ॥
दुपद तनया नँगियाई । लै सँग जानु देहु बैठाई ॥
वचन सुनि भीम कराला । तिक्त रोम रोम प्रतिज्वाला ॥
नयन गगन प्रकट विलोकी । लीन गदा रिस रहत न रोकी ॥
सकल भीम रुख पाई । भये सरोष सुभट समुदाई ॥
पाणि गही असि मूठी । कह नृप होति सत्य मम झूठी ॥
दो० धर्मज वदन निहारि विकल सकल रिस मारि कर ।
दीन गदा महि डारि भीम विकल पारथ असिहि ॥
पाण्डुसुत सब शिर ताई । वारिज नयन वारि सरसाई ॥
दुशासन रोष रिसाता । कह कुरुपति हित विदुर असि बाता ॥
न हमार भूप सुनि लीजे । पाँचे अम्बर हरण करीजे ॥
कथा शुभ सुनहु नरेशा । अग्निशर्म ब्राह्मण यक देशा ॥
यक प्रहर्ष अति भारी । कीन युगल मिलि मित्राचारी ॥
पुन डुहन कै होई । तिभय सकल भांति भय सोई ॥
काल भे युगल सयाने । मित्राचार परस्पर माने ॥
अहेर दोउ यकदाई । फिरत विपिन कन्या यक पाई ॥
राक्षससुत तो यह कही कन्या को हम लेह ।
विप्र कहे दे मित्र मोहिं परी डुहन अवरेह ॥

युगल परस्पर शोर मचावा । पुनि यह मंत्र ठीक ठहरावा ॥
जाकहँ चाहे अन्न यह कन्या । पावे सो यह त्रिभुवन धन्या ॥
झगरत गे कन्या के पासा । करहु दया जापर विश्वासा ॥
जासु हृदय डारहु जयमाला । पावे सोइ कहु वचन रसाला ॥
कन्या कहेउ सुनो मतिवन्ता । जो सरिष्ट सोई मम कन्ता ॥
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना । कहद्विजमैं सबविधि सज्ञाना ॥
झगरत अग्निशर्म्मपहँ आये । कहेउवाद निजपद शिरनाये ॥
दुइमा को सरिष्ट को नामी । भाषहुसत्यवचन तुमस्वामी ॥
॥ दो० ॥ पुनिपुनि बिनतीकरतहौं कहिये करुणाऐन ।
॥ ॥ मित्र पुत्र निज पुत्रतें तब बोले द्विज बैन ॥
हमतें वाद बिनाश न होऊ । जाउ प्रहर्ष तीर तुम दोऊ ॥
चले विवाद करत स्वर ऊंचे । तुरतजाय तेहि भवन पहूंचे ॥
तब प्रहर्ष पूछत मनलाई । का झगरत हो तुमदोउभाई ॥
तब वे कहनलगे निजस्वारथ । ज्यहिप्रकारजसभयोयथारथ ॥
तुम प्रहर्ष करि कहो बिचारा । दुइमा कौन सरिष्ट कुमारा ॥
राक्षस सुनत मौन होइ रहेउ । तब विचारि दूनोंसनकहेऊ ॥
कश्यप ऋषिहि पूछि मैं आवों । बेगि यथारथ तुम्हैं सुनावों ॥
उठि प्रहर्ष ऋषिके गृह जाई । कीन प्रणाम चरण शिरनाई ॥
॥ दो० ॥ कीन्ह विनय करजोरिकर बैठेउ आयसुपाय ।
॥ ॥ ऋषि पूछेउ आये कहां कहिये राक्षसराय ॥
ऋषि वचन सुनि प्रीति समेता । लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता ॥
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा । कीनविपिनमहँ झगराझोरा ॥
झगरत आये हो मम भवनहिं । कौनसरिष्ट कहो हमगवनहिं ॥
कह कश्यप सुनु राक्षस राऊ । झूठवचन तुम कहेउ न काऊ ॥
जो सुत होय तुम्हार सरिष्टा । तो अबसत्य कहो मतिनिष्टा ॥
होय श्रेष्ठ जो विप्र कुमारा । कहेउअसत्यनत्यागिबिचारा ॥
कहे असत्य अधोगति जाई । लक्ष बर्ष लौं नरक रहाई ॥

ऐसे थल यह उचित न ताता। भूलि असत्यकहेउजनिबाता
दो॰ कश्यपऋषिहि प्रणामकरि राक्षस निजघरजाय। ६
दुनहत के आगे वचन कहन लाग समुझाय॥
कह राक्षस सुनु ब्राह्मणपूता। तव पितु हमते सरस बहूता।
मातु तोरि है बड़ी सयानी। हमरे सुतते तुम बड़ज्ञानी।
सत्यकहा राक्षस जिउवधिका। दुइसे बर्ष आयु सं अधिका।
अन्त न कंठपरी यम फांसी। भाकमलापतिनगर निवासी।
सत्य असत्य केर असवीचू। होतकृषी जस सींच असींचू।
बीचु अनीति नीति कर भारी। जनुरजनीअँधियारिउज्यारी।
कहींविदुर नृप नीकि न रचना। जनिबोलहुअधर्मअसवचना।
नागफांस कर नहिं अंदेशा। जो तुम करत अधर्म नरेशा।
सुनिअसवचनविदुरदिशिताकी। भ्रकुटिकीनकुरुपतिरिसबांकी।
दो॰ भृकुटि भंग कुरुनाथ लखि विदुररहे चुपसाधि।
थरथर कम्पति द्रौपदी दृष्टि विलोकि उपाधि॥
सो॰ परी विपति चारीश लखिदरकत उर बज्रको।
धीर न धरत महीश निज समुझावत द्रौपदी॥
कपट द्यूत शकुनी ते हारे। विधियहगतिलिखिदीनललारे।
अहहदैव दिवसन कर फेरू। गिरि ते रज रजहोत सुमेरू॥
सभामध्य पति पांच हमारे। महावीर रण टरत न टारे॥
मोहिं उघारि होन कब देहैं। उठिके भीम अवशिसुधि लेहैं॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका। समरथ शूर एकते एका॥
जाननहार धर्म्मपथ केरा। क्षत्री भीषम आदि बड़ेरा॥
पदपिनभूपहिकहिनिनिहोरी। तो परन्तु लेहैं सुधि मोरी॥
गंगासुत चुपाइ किमि रहिहैं। आखिरउठि राजासन कहिहैं॥
दो॰ अनुचित होइ न पाइ है लेहैं मोहिं छड़ाइ।
आजु पितामहते सरिस धीर बीरको आइ॥
है गुरु द्रोण सभामहँ सोई। जिनते अस्त्र सिखे सबकोई॥

॥भारद्वाजी॥ तनय करण शूरा। लेहें मोहिं छुड़ाय जरूरा॥
इत उत बहु भरोस ठहरावत। पुनि२ निज मन कहँ समुझावत॥
बहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई। खैंचहु चीर दुशासन भाई॥
हेहु बसन सब आतुर छोरी। गहि बैठारु जांघपर मोरी॥
होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता। आलिंगन करि द्रुपदकि जाता॥
अतिशय विकल द्रौपदी कांपी। लतरी हु चन्द्रहि जिमि झांपी॥
इतउत दिशा दुखित मन हेरी। केहरि मनो मृगी वन घेरी॥
भीषम द्रोण करणादि शिर नितई। निजपति देखि आश सब वितई॥
॥ दो० सकल सभा दिशि देखि पुनि चितइ पांडव ओर। [illegible]
॥ [illegible] भीमहिं देखि सरोष पुनि बरज्यो धर्म्मकिशोर॥ [illegible]
बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी। उठ्यो दुशासन रिसकरि भारी॥
आतुर कहत चलत कटु धावा। मनहु कृतांत राज चलि आवा॥
एकपाणि लीन्हें गहि केशा। यक कर बसन गहे यम भेशा॥
सकल सभाजन त्रियगहि हेरी। ग्रामग्राम गजनगर बसेरी॥
बहु अचैनी पाति जे जन साधू। बडूत बारिधि शोक अगाधू॥
धीरन कि मुख जोवत अहहीं। चहत पितामह अबकछु कहहीं॥
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहहीं। अवशि वचन गंगासुत कहहीं॥
कृपाचार्य गतिपति लखि बामा। रहिहैं किमि चुप अश्वत्थामा॥
यहि बिधि निज मन करत भरोसा। शील धीर जे मारग दोसा॥
॥ सो० जे शठ कायर कूर मानभंग सब विधि चहत। [illegible]
॥ [illegible] सकल सभा भरिपूर करत मनोरथ पृथक पुनि॥ [illegible]
फकरिसि सबन दुशासन जाई। सरुप प्रचारत पुनि कुरुराई॥
धीरि धुरीण रहे चुप साधी। आगतभय सकल अपराधी॥
लखि दुर्दशा द्रुपदतनया की। शोकज्वालि पाण्डव उरवा की॥
वारिज नयन वहीं जलधारा। रहे नाइ शिर पाण्डुकुमारा॥
निपट विकल लखि पाण्डुकिशोरा। नाहि विदरत उर कठिन कठोरा॥
सदपि छुट यस तहि थल माहीं। ले हरपत मन धरपत नाहीं॥

दुर्योधन कर प्रबल प्रतापा। तपतमनहुँ रवि द्वादश ताप
अति करुणा सबके उर होई। प्रतिउत्तरकरि सकत न को
भीष्मद्रोण कुरुविभवविलोकी। रहेचुपाइ सके नहिं रोंकी
दो० तीक्षण भृकुटि सरोष लखि अति कुरुनाथ भुवार।
सकल सभा भयवश विकल कांपहिं वारहिंवार॥
कृपाचार्य डर शोच अपारा। कहि न सकें कछुद्रोणकुमार
कोउ शिरनाय रहे सकुचाई। अश्रुपात कोउकृत दुखदाई
जे नृप धीर वीर बल भारी। जानिसत्यलखिहोहिंदुखारी
सकहिंन कछुकहि काहुहिकाऊ। दुर्योधनकर समुझि सुभाउ
बारबार कह कौरव राजू। वेगि दुशासन करु यहकाज
खैंचन लाग बसन गहिपानी। द्रुपदसुतातनअतिअकुलानी
तनया विकल द्रुपद नृप केरी। छूटी आश सकलदिशिहेरी
काल रूप लखि कौरवनाथा। जायरहेउचित जहँयदुनाथा
धारमण वचन सुनु मेरे। कौन विलाप कलाप करेरे
कृत विरह सिन्धु रघुनाथा। जिमि गहिलीन भरत करहाथ
मि कपीश सुग्रीव उबारा। राखि विभीषण रावण मारा
यहिनिरादर किय पितुमाता। ताकहँ नाथ भयो तुम त्राता
म विन नाथ सुने को मेरी। करि विलाप दे हांक करेरी
दो० भुजउठाय हरिस्मर दिशि पाहिपाहि पुनि टेरि।
कृष्ण कृष्ण राधारमण दीन्ही हांक करेरि॥
त्य दलन प्रहलाद उबारण। लांगहुममगोहारिजगतारण
न अनाथ के नाथ गोसांई। सो न होइ लज्जा जेहिजाई
तुम विन आरत पक्ष गहीको। राखु रमापति लाज गईको
सदय त्यागी सुधि हमारी। तुमजनित्यागहुगिरिवरधारी
के सभा सकल अघधारी। कोउ न पहन नुद्रावन नारी
सका लाज जात हरि मेरी। त्रिभुवन नाथ शरण मैं तेरी
वैठे अटल दयानिधि एहो। मोहिं उबारि देखि पछितैहो

ह असे गज कीन पुकारा। तब तुम नाथ न लायहुवारा
दो० गोकुल बोरत घेरि घन जिमि रक्षा तुम कीन्ह।
नाश्यो मातलि सूतमद गिरिवर करधरिलीन्ह॥
तुम नाथ कहां गिरिधारी। यह पापी खेंचत मम सारी
खैंचिवसन समकरिहि उघारी। का करिहौ तबआय खरारी
ये लाज प्रभु विरद न रहिहै। तुमहिंकृपालुकाहकोउकहिहै
अंवसहरेउ बचेउ यक बसना। सोऊ हरत बचावत कसना
ज्याजरत जिमि गोपन राखा। कौरवअग्निदीन्हगृहलाखा।
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा। दीनदयाल कहां यहि बारा।
दारिददहि द्विजके दुखकाटे। धनपतिसरिससदनधनपाटे।
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई। राखिलेहु ममलाज न जाई॥
दो० श्रीपति दीनदयाल अब तुम पति राखहुमोरि।
फिरि हरि कैसी करहुगे जब पट लेहैं छोरि॥
ब्रीचसभाप्रभुन्वहिं नंगियावत। करुणासिन्धुधायकिनआवत॥
द्रुपदसुता लखिविकल पुकारा। प्रणतपालहरि बिरदसँभारा॥
द्वारावति तजि नांगे पांयन। आतुर आइ गये नारायन॥
प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा। प्रकट वसन रूप पट बाढ़ा॥
बसन रूपधरि बसन समाने। धीरज द्रुपदसुता उर आने॥
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता। निकस्योबसनबसनमगतेता॥
देखि चरित्र क्रोध ते पागा। परमरोप करि खैंचन लागा॥
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती। मथसागरसुर असुरकिपांती॥
कढ़नी मनहुँ शेष भय सारी। दुश्शासन जनु देवसुरारी॥
खैंचत लरुप दुशासन सारी। निजतनपुरवत बसनखरारी॥
सो० देखि बसन के बाढ़ि मक्ति प्रेम बश द्रौपदी।
भइ रोमावलिठाढ़ि विनय करत गदगदगिरा॥
गयो शोच मन भयो अनन्दा। जनुचकोरपायो निशिचन्दा॥
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी। जय गोपाल गोवर्द्धनधारी॥

जय शारँगधर जय असुरारी। जय मनमोहन कुंजविहारी॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा। कमलनयन शोभा शतकामा॥
पीताम्बरधर धरणी पालक। जय वसुदेव देवकी बालक॥
जय तवकर सरोज यदुराया। कीन्ह्यो जेहिकर मोपर दाया॥
पद सरसिज ममहित धाये। दुश्शासन कर दर्प नशाये॥
य मधुसूदन यदुपतिस्वामी। जयत्रिलोकपतिअन्तर्यामी॥
यअघारि जयजयअविकारी। जय जय जय केशी कंसारी॥
य मम लज्जा राखनहारे। जयति यशोदा नन्ददुलारे॥
दो० जय कृपालु करुणायतन जयति कौशलानन्द।
मोरपक्षधर मुरलिधर जयजय आनँद कन्द॥
जयति सच्चिदानन्द हरि ईश्वर जगदाधार।
राखौ लज्जा जाति निज जय मम नाथ उदार॥
य हर्ष विवश पंचाली। कहिचिग्घारति जयवनमाली॥
जयकार पूरि पुनि रहेऊ। दुष्टन विना सवन जयकहेऊ॥
देखि सुमन झर कीन्ही। गहगह गगनदुन्दुभीदीन्ही॥
देखि वसन चहुँफेरा। मन थिरभयो पाण्डवनकेरा॥
ताप दिनकर सम भयऊ। कौरवसिसुकिकुमुदसमगयऊ॥
पुकारति द्रुपदकुमारी। खेंचत सरुप दुशासनसारी॥
जोर वहुभांति दरेरा। वाढ़तवसन सकल चहुँफेरा॥
श्याम सित रंग हेरे। भांति भांति के वसन घनेरे॥
ग के वहुत निकारे। पीताम्बर के ओढ़नहारे॥
मिश्रित रँग के पट वढ़े थके दुशासन हाथ।
देवन जे देखे नहीं ते पुरये यदुनाथ॥
सन तनुधरि भगवाना। वढ़ये विविध रंग परिवाना॥
पपुतरी प्रभु कीन्ही। विरदावलि मूरतिकरि दीन्ही॥
चीर दुशासन हारा। अम्बर मनहुँ देवसरिधारा॥
के अम्बर तेरे। हारे भुजा दुशासन केरे॥

निकसे पट विचित्र बहुतेरे। नहिं समात मन्दिर नृपकेरे
दशसहस्र गजबलथकिगयऊ। दशगजअम्बरहरणनभयऊ
निपट होत लखिअनरथबाता। नाना भांति होत उतपाता
शिवा यज्ञशाला में बोली। ढहे भवन धरणी जब डोली
अशुभ शब्दकृत रासभश्वाना। मेघन बिना व्योम घहराना
सो० हींसे सकल तुरंग हयशाला महँ बार यक।
चिघरेमत्तमतंग निजनिजआश्रमबिकलसब॥
भयो दाह दिग कररत कागा। तदपिनवसनदुशासनत्यागा
बढ़ति बिलोकि तजे पुनिधरई। अनत गहै पुनि सो परिहरई
बिदुर दीख भा अनरथ भारी। गेज्यहिगृह बिलपति गंधारी
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं। होत अकाज न सूझत तोहीं।
कृष्ण आजु द्रुपदी तन व्यापे। बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे।
नहिं होइहि सुतधर्म अकाजू। जिनके यदुनन्दन महराजू॥
सदा दास कर करत सहाई। प्रणतारत भंजन यदुराई॥
जे हरि हन्यो निशाचर राजू। सहिदुख निजभक्तनके काजू॥
सो जानी सब बात तुम्हारी। नहीं अज्ञात असित गंधारी॥
दो० जानि बिकलप्रह्लादजिमि जोहरिभक्त अनन्य।
सहिश्रम निकस्यो खम्भ तें कश्यपहन्योहिरन्य॥
सो० अब अनेक उतपात देखिपरत अनरथ निपट।
होन चहत सोइबात तुवतपंवल ते थपिरही॥
अबते रानि कहा सुनु मोरा। भाग्यअभाग्यहोत अबतोरा॥
बसनछुड़ाव दुशासन करसन। चलतचहत नतु चक्रसुदर्शन॥
गंधारी सुनि अति दुख पाई। बिलपत बिदुर संग उठिधाई॥
मतिहत सुत खैंचत इतचीरा। थक्यो पराक्रम भयो अधीरा॥
भुजथकिगयोबढ़तनहिंजाना।वसनत्यागिमनअतिखिसियाना॥
निज आसन बैठेउ शिरनाई। मनहुँ रंक निधिपाइ गँवाई॥
दुर्योधन नृप बैठ उदासा। मानहुँ भयो राजपद नासा॥

हित भयो सकल मद भंगा। निपट विकल अपमानतरंगा॥
नत शोर मारग श्रुति केरे। पूंछत मतिदृग संजय तेरे॥
त कहां यह हाहाकारा। संजय कहे सहित विस्तारा॥
ओ॰ सुनतदशा दुखपाय संजय करगहि पाणिनिज।
सभाविलोक्यो जाय कुरुपति की अनरथकथा॥
य सभा कंचन सिंहासन। सोधृतराष्ट्रनृपतिकरआसन॥
ऐ गये तहँ मतिदृग जाई। परम रोष नहिं बरणिसेराई॥
शासन कहँ नृप दुरिआई। शठ कुरुकुल तैं दीनलजाई॥
धिन पर क्रोध अपारा। कहि कटु वार वार धिक्कारा॥
हे अवसर आई गंधारी। कहिदुर्बचन कीन्हरिसभारी॥
हो दुष्ट कर्म तुम नीचू। परिहो अधम नरक के बीचू॥
हेउ सरुष शाप गंधारी। कहमतिदृगसुनुद्रुपदकुमारी॥
बधू जे सकल हमारी। मनक्रमबचनअधिकतुमप्यारी॥
सँग शठनकीन अपराधा। भयो मम वृद्धापनमहँ बाधा॥
॰ पुत्रि तोहिं मम सत्त शत मनवांछित बर मांगु।
दुष्टन कीन कुकर्मसो मम दिशि ते सब त्यागु॥
तुम ममनिहोर शिरमानी। करहु क्षमा अपराध भवानी॥
मांगु पुत्री बरदाना। तुमसममोहिंनप्रियकोउआना॥
राज कुरुपति प्रिय मोरे। नाहिंन सुता तदपि सम तोरे॥
ार नृप कह बर मांगू। द्रुपदसुतामन सुनि अनुरागू॥
बचन जोरि युग पाणी। सुनहु नरेश सत्य मम बाणी॥
समेत सकल परिवारा। दास भाव भे पाण्डुकुमारा॥
नरेश मांगे न्वहिं दीजे। दासभाव बिन सकल करीजे॥
र अस्त्र देहु सब काहू। कीजे बेगि बिदा नरनाहू॥
दृग कहेउ तोहिं मैं दीन्हा। मांगुअपर कछुआयसु कीन्हा॥
॰ सुनहु पिता कह द्रौपदी मनवांछित बरदान।
मैं पायो तुम्हरी कृपा नाथ सत्त नृप आन॥

तव प्रसाद अब कुरुकुलकेतू। फिरि होइहैसुखसम्पतिसेतू॥
उचित विप्र मांगै वर चारी। कहतवेद असनीतिविचारी॥
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई। मांगै एक शूद्र सुत होई॥
मैं तो पुत्रवधू क्षत्रानी। लीन्हे मांगि तीनि वरजानी॥
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा। नरनायक मम मानिनिहोरा॥
बुद्धिचक्षु चर चतुर बोलाये। सब के वाहन अस्त्र देवाये॥
चढ़ि वाहन गहि आयुध हाथा। चले अवास धर्म्मनरनाथा॥
परसे चरण बुद्धि हग केरे। बोले भूप युधिष्ठिर तेरे॥
लज्जाविवश वचन सुनि तोरा। हे सुत होत विकलमनमोरा॥
सो० वचनतोरसुनि तात लज्जित अवनि समात मैं।
मोहिं अक्षत यह बात पुत्र परम अनुचित भई॥
होइ तुम्हार परम कल्याणा। सुनुअशीषममवचनप्रमाणा॥
जीति तुम्हारि राज्यसबलीन्ही। दुर्योधनअनीति बड़िकीन्ही॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी। लीजै सुत प्रसाद मम मानी॥
मतिहगआयसुशिरधरिलीन्हा। शीशनवाय गमनगृहकीन्हा॥
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा। दीन्हत्यागित्यहिओर न हेरा॥
पटल वितान सेन चतुरंगा। चपल तुरंगम मत्त मतंगा॥
सकल धर्म्मनन्दन तजिदीन्हा। सहितकुटुम्बभवनमगलीन्हा॥
मिले विदुर मारग महँ आई। जात भये निजभवनलेवाई॥
रानिनसहित नृपतिअन्हवाये। खान पान विश्राम कराये॥
दो० यहँ उठिकुरुपति सभाते गेसब निजनिज धाम।
खानपान असनानकरि शेष दिवस रहयाम॥
द्रोणकरणभीषम शकुनि निजनिजगृह मगलीन।
खान पान विश्राम पुनि सबभूपालन कीन॥
प्रथम करो असनान पुनि भोजन करि कुरुनाथ।
सबदलसिंह आयो सभा दुरद दुशासन साथ॥
इतिमहाभारतेभाषाकृतेद्रौपदीचीरबढ़नोनामपंचमोऽध्यायः५॥

दो॰ सुंदर कनक प्रयंकपर शयन करी कुरुराय।
बिदुर भवन हैं धर्मसुत कही चरवरन आय॥
ति नरेश मन अतिदुखपाये। सौवल शकुनी करणबोलाये॥
हित दुशासन करत सलाहा। बोले दुर्योधन नरनाहा॥
त्यो राज धर्म्मसुत केरी। दीन्हीं बहुरि पितासोइफेरी॥
ती अवनि पितातजि दीन्हा। सोहमरेहितअतिभलकीन्हा॥
टे भूप दासि गति तेरे। लेत भूमि असिधार गरेरे॥
गब राज्य उचित मत ताते। किंकरता बिनु धर्म्मज जाते॥
ब तुम यतन बतावहु सोई। मृषा मनोरथ मोर न होई॥
खश होत मनोरथ खाली। संशय बिबशउठतमनहाली॥
न्हसकल कछुसरेउ न काजू। भयोजानि मम परमअकाजू॥
दो॰ अवते कीजै यत्न कछु बिदुर भवन सुतधर्म।
हैं अवहीं सुनिये सचिव कहकुरुनाथ कुकर्म॥
त शत्रुगति प्रकट भई सो। आपुस बीती प्रीति गई सो॥
है लाभ भा सचिव हमारा। मारत शत्रु गयो बिन मारा॥
इ अनरथ अब सजगभयेते। बहु उतपात करैं हम तेते॥
नि कुरुनाथ बचन अनुरागे। सबमिलिमंत्र बिचारनलागे॥
रेउठीक मत नृप सुख पाये। बहुबिधिसौबल सिखे पठाये॥
र्म्म नरेश बिदा उन मांगी। बिदुर पठाइ फिरे अनुरागी॥
ज गृह जात युधिष्ठिरराई। सौबल मिल्योबीचमगआई॥
न जोहार माथ महि लाई। कहनलगेउ पुनिबचनबनाई॥
कि सहित करिछल चतुराई। निजबशकीन युधिष्ठिरराई॥
लहु नरेश कुरुपतिहिजीती। लीजै बैर द्यूत करि नीती॥
दो॰ बड़ि अनीति शकुनी करी शठ समेत कुरुराज।
होतदुसहदुखहृदयममगतितुम्हारिलखिलाज॥
इ गति होई कुरुपति केरी। हृदय बुताइ ज्वाल तबमेरी॥
रि बहुयतन नृपहि पलटाई। कुरुसमाज कहँ गये लेवाई॥

करि बहुप्रीति सभा बैठारी। मँगवाई पुनि पंसासारी
भावी प्रबल मेटि को सकई।बरजिवरजिसबप्रियजनथकई
धर्म्मराज कर अक्ष गहे जब। विहँसिवचनयहकर्णकहेतब।
का अब धरत युधिष्ठिरराऊ। कह नृप जो कहिये कुरुराऊ।
हारहिसो अस कुरुपति कहई। द्वादश वर्ष विपिन सो रहई।
कन्द मूल फल करै अहारा। उदासीन इव सब आचारा।
हारै सो निज भवन न जावै। आतुर कानन पंथ सिधावै।
दो० होइ बैठ जेहिथल यथा तस कानन मग लेइ।
अन्नअशन अरुराज्यसब सो तजितृणइवदेइ॥
अनुचर अपर लेइ नहिं संगा। एकल्यागि निजवंश प्रसंगा॥
तापस तनु धरि कानन जाई। देइ महीपति चिह्न दुराई॥
यहिविधि द्वादश वर्ष वितावै। नेम सहित त्यरहीं जबआवै॥
ग्राम निवास करै अज्ञाता। वर्षदिवसकहिजाय न जाता॥
मिलै न खोज रहै यहिभाँती। वर्ष त्रयोदशई जब जाती॥
पावै राज्य चौदहीं आये। खोजत्रयोदशई विन पाये।
जो कदापि त्यरहीं सुधिपाई। द्वादश वर्ष बहुरि बनजाई।
जब जब खबरि तेरहीं पाई। तब तब सो काननमगजाई॥
मिलै न खबरि तेरहीं जासू। सो पुनि करै राज्य निजवासू॥
दो० भीष्मादिक सब थरहरे सुनि कुरुपतिकी बात।
कहिप्रमाण धरि दाउँ सोइ दीन्हो शत्रुअजात॥
कह सौवल सुनु धर्मकिशोरा। होइ खेल शकुनीसँग मोरा॥
मैं खेलौं तुम्हरी बदि राजा। देखो शठ शकुनीकर काजा॥
बोले कुरुजन धर्मज ताता। छलकहिभलब शत्रुअजाता॥
कर गहि अक्ष युधिष्ठिरराऊ। मानि प्रमाणधरो सोइदाऊ॥
वरजत रहे सकल हितकारी। केहिविधिमिटै जो होनेहारी॥
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई। परेउ दांव शकुनी करआई॥
खल खेलार अजित शकुनीते। पुनिपुनि हारिगये नहिं जीते॥

दो० हारेउदाउँ अधर्म अरि चुपकिरहे शिरनाय।
विजयनगारे किंकरन हने सो आयसुपाय॥
टत सभा देश गृह कोशा। लखिउरशोकहोत सहरोशा
मते शल्यदिशि धर्म्मजज्ञानी। बोले स्रवत नयनजलपानी
नु शठ तैं सब लाज गँवाई। भयसिवृथा माद्री कर भाई
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई। धिकधिक त्वहिंजननीकेभाई
महारे शठ तैं नहिं हारे। लाजरोप कहँ गये तुम्हारे
जानत जगततोहिं सबलायक। विक्रमथकेउदेखिकुरुनायक
धिक धिक पापबुद्धि शठतोरी। निजनयननदेखहुगति मोरी
धिकधिककितवकितवअभिमानी। दीन्हेउमूढ़त्यागि ममवानी
नहिं कछु कुरुपति केर कुकर्मा। नहिं शकुनीकृत कर्णअधर्मा
समरथ भीष्म द्रोण संघाती। तिन्हें दोष देइय क्यहि भांती
तैं शठ भयसि पापकर मूला। होत न मूढ़ हृदय तवशूला
दो० देखि दशा मम लाजतजि रहे मूढ़ चुपसाधि।
कहिनसकहिंकोउनीचकछु कृतकुरुनाथउपाधि॥
अधर्म निजकाल बिताई। जो न विनाश करौं तवआई।
न गहौं शरचाप कृपानी। करौं त्याग क्षत्रीकुल बाना।
एकहि भूप अग्र परुधारा। कहत रोषवश पवनकुमारा।
जि जलदसम नयन तरेरे। बोले चितै दुशासन तेरे।
पट नीच तव बुद्धि पिशाची। निश्चय मीच शीशपरनाची।
हि कर वसन द्रौपदी केरे। गहि खैंचेउ करिजोर दरेरे।
उखारि डारौं भुज तेरे। दाह बुताय हृदय तब मेरे।
कि जंघ बैठहु कहि चेरी। भइमतिभ्रम कुरुनायककेरी।
रत कुशल करि सिंहजगाई। वैनतेय बलि वायस खाई।
त यथा यह वार्त अयोगू। तेहिंविधिहमहिंहँसतसबलोगू।
दो० सुनत सभा असकहत मैं सबप्रतिवचन पुकारि।
तबलगधिकमोहिंकुरुपतिहि जबलगटारौंनमारि॥

संगर भूमि गदालै हाथा। जंघ भंग करिहौं कुरुनाथा॥
कहे वचन करफल देखरावों। तौ मैं क्षत्रिय वंश कहावों॥
अवधि विताइ कहा मम मानू। जो न विनाश करौं तव जातू॥
तौ हम होइँ निरय पथगामी। पन्नग योनि जन्म परिनामी॥
बैठु जंघ मम द्रुपदसुताते। कहेउ सो दुर्योधनमुख जाते॥
निज पदते मरदउँ मुख सोऊ। बन्धु हमार बोध तब होऊ॥
दिवस विताइ गदाधरिलरिहौं। अन्ध नरेश वंश संहरिहौं॥
त्रिय तजि पुरुष न राखौंएका। मतिदृगवंश सत्य मम टेका॥
कृष्ण शपथ नृप चरण दोहाई। वीते दिवस करव सब आई॥

दो० असकहि निज करगहिगदा भीमचले नृपसाथ।
बोले पारथ रोष वश जो कुमार सुरनाथ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी। कीन्हेउममविस्मय तजिहासी॥
धरणी सम करिहौं शरमारी। करण प्रतिज्ञा सत्य हमारी॥
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे। निज नैनन सुख देखनहारे॥
धन्य धन्य सब लायक केरे। निज निजनैन परम सुखहेरे॥
जन्म प्रयंत सत्यव्रत कीन्हा। अन्तकिवयसलाभभललीन्हा॥
शर सागर कौरव कुल वोरों। भीष्मादिकक्षत्रिन शरफोरों॥
तौ मैं कुन्तीसुत शुचि साँचा। काटों तवशिर कठिननराचा॥
मोहिं अजात शत्रु के आना। वीते दिवस करों मनमाना॥
अस कहि चले युधिष्ठिरसंगा। बोले नकुल रोष भरिअंगा॥
सुनु रे करण पापकर अंशा। करौं विनाश सकल तववंशा॥
विष्वक्सेन आदि सुत तोरे। होइहैं नाश सकल करमोरे॥

दो० सबलसिंह कहि नकुल अस गये युधिष्ठिर पास।
जो न करौं यह सत्य सब होइनरक मम वास॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानगाथायांसभापर्वे सौबलयुधिष्ठिरद्यूतक्रीडानामषष्ठोऽध्यायः ६॥

कह ऋषिराय सत्य सुनुराजा। मष्टरहे कुरुनाथ समाजा॥
तब सहदेव शकुनितन हेरी। भृकुटि भंग करि नयनतरेरी॥
शकुनी तव मति ईश भ्रमाई। नीच मीचु करियत्तबोलाई॥
द्यूत हराय कियो छल भारी। कीन सकल दुर्दशा हमारी॥
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं। ईर्षा लाज न कछु मनमाहीं॥
जनिभूलेउ यहि भूलि बिशेखी। बीते दिवस परी सब देखी॥
कुरुपति नाशसहित परिवारा। होइहै ममकर मरणतुम्हारा॥
बीते अवधि शरासन धरिहौं। रिपुकृतकर्मप्रकटसब करिहौं॥
कृष्ण सत्य अरु धर्म महीशा। करौं समर तवखंडित शीशा॥
दो० बीते दिवस प्रमाण निजकरौं सकलप्रण सांच।
मति दृगसुत कटिकटिगिरहिं दाहनकरै नराच॥
असकहि चलन भूपपहँ चह्यऊ। द्रुपदसुता तबरिसवशकह्यऊ॥
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा। जब ममशिरहोइ वहैपनारा॥
बांधवँ कच तबकरि असनाना। कोटिभूप यदुपति के आना॥
अस कहि केश दिये छिटकाई। दुश्शासन के रुधिर नहाई॥
जेहिविधिनाथ लाजमम राखी। करेहुसत्यप्रणजनअभिलाखी॥
जंघ भंग कुरुपति सुनिकाना। भैसुखबिपुललहब भगवाना॥
बढ़त केश बिगलित पंचाली। अतिभयकार मनो कंकाली॥
मनु सुन्दरता भय गति दूरी। रोष कराल रहा भरिपूरी॥
दो० असकहि द्रुपदकुमारिपुनि चली युधिष्ठिर साथ।
बल्कल लाये दास गण लखि रुख कौरवनाथ॥
यहि मग जात युधिष्ठिरराई। अग्रदिये धरि भाजन जाई॥
योधन कर आयसु जोई। किंकर कहत जोरि करदोई॥
न बल्कल अब धारण कीजे। गृहमगतजिकाननमगलीजे॥
ससुनि भीम भयो मनरोषा। धिककहिदेत भुजन परदोपा॥
न तरंग त्रिलोचन लाला। कह्यउ नाय धर्मज पदभाला॥
नृपदास भये अब नाहीं। आयसु नीच करतकेहिपाहीं॥

राज्य त्यागि कानन मग जैहैं। तहँ कुरुपतिकाहमहिसिखैहैं॥
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे। कानृप बहुरि जन्म धरिहारे॥
जो न तजत मम नीच पछारी। चहतविलोकन शठयमधारी॥
आयसु मोहिं नराधिप देहू। विक्रम वन्धु देखि करिलेहू॥
दुर्य्योधनहिं प्रकट देखरावों। जो तुम्हारअनुशासन पावों॥
॥ दो॰ तौ सौभाई आजु सब कुरुपति आदि बटोरि।
मारि पठावों यमपुरन नृप तव सत्त करोरि॥
आजु सहायक हैं भगवाना। जीतव एक न पैहै जाना॥
जिन करुणाकरि चीर बढ़ावा। सो मम बाहु सहायकआवा॥
तदपिमरण जो यहि थलहोई। धृक मम विस्मय कहैन कोई॥
भीष्मादिक विनमारे मरिहैं। वृश्चिकराशि न एकउवरिहैं॥
सहिअसिविपतिनजीवननीका। समुझाइये महीपति जीका॥
पारथ कहेउ मोर मत येहू। वेगि नरेश रजायसु देहू॥
तमकि तमकि निजअस्त्रउठाये। सजगदेखि कुरुगणभयपाये॥
वल्कल वसन अनूप सुहाये। जे प्रथमहिं कुरु किंकरलाये॥
दो॰ भीम वचन सुनि कुरुपति जाइजनायो हाल।
वुद्धि चक्षु सुत रोषवश भयो विलोचन लाल॥
कहत भयो कुरुनाथ तव यूथप सुभट बोलाइ।
घेरि पवँरि मारहु सकल जियत न पावहिंजाइ॥
भूपति आयसु धनुष चढ़ाये। सुभट समूह रोष वश धाये॥
करण दुशासनादि भटभारी। घेरिपवँरि प्रतिठाढ़ अगारी॥
सातौ द्वार वीर ठढ़िआई। कीन्हेउ वज्र केवार देवाई॥
इत यह साज सजे कुरुराई। उत आयसु मांगत सबभाई॥
वेगि महीपति देवे योगू। करियेसमरन कर्म्म अयोगू॥
रिस डर मारे वड़ दुख होई। कीन्हे समर मिटे नृप सोई॥
होइ जीति तवनृप भटिवाता। मरणनीकनहिं शत्रुअजाता॥
जो यहिविधि भइ जगतहँसाई। करव काह जगजीवन गाई॥

समर भुजा सुखपावें। अतिकराल तन तापप्रभावें,
र तातें लहव सुख नीके। करिकरिखण्डखण्डकुरुपतिके,
नरेश जारत उर शोषू। मिलिहिं न युगललोकसंतोषू,
॰ पुनिपुनिअनुजसरोषअति मांगतसकलनिदेश।
मंन विचार कर कोटिविधि बोले वचन नरेश॥
चिनअस भूलि न कहऊ। भयोअरोग्यअरुक्षिजनिरहऊ
प्रयन्त होम जिमिकरई। अन्तकि वेसताहि परिहरई
सहिशीशसकल दुखसेतू। चहत वेगारन अव विनहेतू
त्रयोदश भयो सम लेखे। अवनिजनयन उमापतिदेखे
पतीश देखिय नैपाला। डाकिनि देश भयंकर काला
नाथ सम ईश्वर देखी। होइहै जीवन सुफलविशेखी
काल उज्जैन अशेखी। अमरनाथ कश्मीर सो देखी
॰ विश्वनाथ वाराणसी वहुरि देखि शशिभाल।
सुनहु वंधु आनन्दयुत कटिहि सहजसवकाल॥
कहि भूपति चिह्न दुराये। पहिरे वलकल वसन सुहाये
सुता युत वांधव चारी। पहिरे वसन वेष अतिभारी
न जड़ित पट चित्र उतारे। ते नरेश त्यहि थल सवडारे
किंकरन परे पट पाये। गत दरिद्र धनवान कहाये
सुजन जनसंग महीपा। आगे चले पाण्डुकुल दीपा
सीन इव वेष वनाये। मनहुँ महातप तनधरि आये
हँ पवँरि जहँ वल्कलधारी। धावहिं सुभट समूह प्रचारी
भग त्यागहिं धर्मकुमारा। आतुर आवहिं आन दुवारा
केवार जड़े तहँ पावहिं। शायकवीर सरोप चलावहिं
॰ कहहुं दुशासन शकुनिकहुं सूधनाथ भट वृन्द।
देखि पवँरि अति धर्मसुत गये जहां रविनन्द॥
करण धर्मसुत आये। वलकलधर शर चापचढ़ाये
सिकहा सुनु शत्रु अजाता। तुमका द्रुपदसुता भवत्राता

भ्रमरमध्य जिमि वोहित परई । गहि करहाथ पार कोउकर
त्राता नारि भली तुम पाई । करण तर्क करि हँसे ठठा
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू । वोले भीम भयो उर दा
सुनु रविनन्दन दूषण यामे । भेदन दंपति श्रुति परिणा
द्रुपदसुता है जीति हमारी । हँसी न देखहु हृदय विचार
होउ न अज्ञ विवश परतीती । देखहु पूंछि विदुरसन नीत
निज तन होत प्रकट यक देही । वामअंग त्रिय परम सनेह
तीसरि जाति पुत्र निज होई । कहे विदुर यह प्रकट न गो
॥ दो० सुनि न कहेउ रविसुतकछू चुपकिरहे अरुगाइ ।
॥ वोले धर्म नरेश तव आरत वचन सुनाइ ॥
मोहिं करण अव मारग देहू । करि दुर्गतिजनिजीवनलेहू
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं । दीजे पन्थ कवनविधि तोहीं
फिरे धर्म्मसुत सुनि असिवानी । स्रवतनयन वारिजमगपानी
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता । होतशोर तहँ जनुपविपाता
सुभटसरोषअस्त्रगहिधावहिं । लखिसुत धर्मअपरमगजावहिं
यहिविधिनृपचहुँदिशिफिरिआये । मारुमारु तजिपंथ न पाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा । शिरधुनिकहतशोकयुतभी
[illegible] नम्हारि भ्रमा [illegible] । करत शील उर वज्र किना

सदा सहायक हैं करुणाकर। कस न खबरि लेहं राधावर
द्रुपदसुता की लाज बचाई। तिनहिं न बात बड़ी यह भाई
असकहिं लोचन वारि विमोचें। विदुर समेत बंधु सब शोचें
दो० सकल कहें आरत वचन त्राहित्राहि यदुनाथ।
सजलनयन पुनिपुनि कहत राधावर धुनिमाथ॥
जात विकललखिद्रुपदकिशोरी। कहतघटोत्कचदोउकरजोरी
सुनो विनय मम धर्मकुमारा। विश्वम्भर रखवार तुम्हारा
अब नरेश मोहिं आयसु देहू। जिमि निजकिंकरइवकरनेहू
तब नरेश निज दृष्टि चढ़ाई। सहितकुटुम्ब नाथ सबभाई
करि दुर्योधन भवन उलंघा। जाउँ भूप तव आयसु संघा
न तो महीपति आयसु देहू। करौं महा रण करि संदेहू
ननु यहि अवसर जहँ कुरुराई। जाइ समीप देहुँ पहुंचाई
आयसु वेगि देहु मोहिं राजा। तवपद सत करौं सोइकाजा
कहेउ भीम कहँ हे कुरुनाथा। तहँ मैं जाउँ गदागहिहाथा
सो० करु सुत सोइ उपाय भूपति आयसु देहिं जो।
जियकीजरनिबुताय सम्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य अबहीं जो कीन्हों प्रथम।
होत शरीर असत्य को जानै जीवन मरण॥
भीम वचन सबके मन भाये। आयसुमांगिमांगि शिरनाये।
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा। मानहु आयसु सकल हमारा।
मारग यही विपिन कहँ लीजे। विग्रह बन्धु कदापि न कीजे।
यहिप्रकार कहि धर्मकिशोरा। बोले चिते घटोत्कच ओरा।
धन्य धन्य सुत भाग तुम्हारा। लीनउबारि सकल परिवारा।
सब समेत अब सुत बड़भागी। काननपंथ चलिय दरत्यागी।
सपनेहुँ आन विचार न करहू। ममअनुशासन सुत उरधरहू।
कहेउ सुभगशिष धर्मकुमारा। कीनसवन मिलि अंगीकारा।
घटोत्कच तनु धरेउ विशाला। आयोरूप इयान कचराला।

अमरसध्य जिमि वोहित परई। गहि करहाथ पार कोउकरई॥
त्राता नारि भली तुम पाई। करण तर्क कारि हँसे ठठाई॥
कछु नहिं कहा धर्म नरनाहू। बोले भीम भयो उर दाहू॥
सुनु रविनन्दन दूषण यामे। भेदन दंपति श्रुति परिणामे॥
द्रुपदसुता है जीति हमारी। हँसी न देखहु हृदय बिचारी॥
होउ न अज्ञ विवश परतीती। देखहु पूंछि विदुरसन नीती॥
निज तन होत प्रकट यक देही। वामअंग त्रिय परम सनेही॥
तीसरि जाति पुत्र निज होई। कहे विदुर यह प्रकट न गोई॥
॥ दो० सुनि न कहेउ रविसुतकछु चुपकिरहे अरुगाइ।
॥ बोले धर्म नरेश तब आरत वचन सुनाइ॥
मोहिं करण अब मारग देहू। करि दुर्गतिजनिजीवनलेहू॥
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं। दीजे पन्थ कवनविधि तोहीं॥
फिरे धर्म्मसुत सुनि असिवानी। स्रवतनयन वारिजमगपानी॥
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता। होतशोर तहँ जनुपविपाता॥
सुभटसरोपअस्त्रगहिधावहिं। लखिसुत धर्मअपरमगजावहिं॥
यहिविधिनृपचहुँदिशिफिरिआये। मारुमारुतजिपंथ न पाये॥
भे अति विकल धर्मसुत जीमा। शिरधुनिकहतशोकयुतभीमा॥
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई। करत शील उर मज्ञ किनाई॥
अबनहिंमिलिहैं कुरुपतिभारी। भे नृप कुपंथ कुमीचुहमारी॥
॥ दो० अहहदैव तुवगतिअगम मरे मीचु विन आइ।
॥ मनकी मनहींमें रही कहि घिलपत संत्र माइ॥
होत सभा महँ भूप रजाई। जियतनजातभवनकुरुराई॥
हमहिं न रहत मरे कर शोचू। भानृपदुखद तुम्हार सकोचू॥
इत नरहार भार तुव नाथा। उतरणसुमट न कौरवनाथा॥
यह नरेश बड़ शोक समाजा। वीर बधे नहिं होतअकाजा॥
जाहि बन्धुजन प्रियजन मारे। हृदय शोक दुख होतहमारे॥
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई। सुनहु तात तुम तजिकदराई॥

दा सहायक हैं करुणाकर। कस न खबरि लेहैं राधावर॥
पदसुता की लाज बचाई। तिनहिं न बात बड़ी यह भाई॥
संकहिं लोचन बारि बिमोचैं। विदुर समेत बंधु सब शोचैं॥
दो० सकल कहैं आरत बचन त्राहित्राहि यदुनाथ।
सजलनयन पुनिपुनि कहत राधावर धुनिमाथ॥
त बिकललखिद्रुपदकिशोरी। कहतघटोत्कचदोउकरजोरी॥
नो विनय मम धर्मकुमारा। विश्वम्भर रखवार तुम्हारा॥
व नरेश मोहिं आयसु देहू। जिमि निजकिंकरइवकरनेहू॥
नरेश निज पीठि चढ़ाई। सहितकुटुम्ब नाथ सबभाई॥
दुर्योधन भवन उलंघा। जाउँ भूप तव आयसु संघा॥
नौ महीपति आयसु देहू। करौं महा रण करि संदेहू॥
यहि अवसर जहँ कुरुराई। जाइ समीप देहुँ पहुंचाई॥
यसु वेगि देहु मोहिं राजा। तवपद सप्त करौं सोइकाजा॥
उ भीम कहँ हैं कुरुनाथा। तहँ मैं जाउँ गदागहिहाथा॥
० कुरु सुत सोइ उपाय भूपति आयसु देहिं जो।
जियकी जरनिबुताय सन्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य अबहीं जो कीन्हों प्रथम।
होत शरीर असत्य को जानै जीवन मरण॥
वचन सबके मन भाये। आयसुमांगिमांगि शिरनाये॥
धर्म्मसुत अबकी बारा। मानहु आयसु सकल हमारा॥
यही बिपिन कहँ लीजे। विग्रह बन्धु कदापि न कीजे॥
कार कहि धर्म्मकिशोरा। बोले चितै घटोत्कच ओरा॥
धन्य सुत भाग तुम्हारा। लीनउबारि सकल परिवारा॥
मेत अब सुत बड़भागी। काननपंथ चलिय डरत्यागी॥
हुँ आन विचार न करहू। ममअनुशासन सुत उरधरहू॥
सुभगशिप धर्मकुमारा। कीनसबन मिलि अंगीकारा॥
कच तनु धरेउ बिशाला। श्यामरूप श्याम कचलाला॥

[illegible]
सहित द्रौपदी धर्मज राई। दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई॥
बाम बाहु पर बान्धव चारी। भीमादिक लीन्हेउ बैठारी॥
पुनिपुनि गर्जि चलत जब भयऊ। नृपकरजोरि बिदुरसनकहेऊ॥
तात पितासम आपु हमारे। शिशुपनते सबबिधि रखवारे॥
समसुधि अबयादवपति लीन्हीं। रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे। पितुमातासम हितननिहोरे॥
अबते एक मोरि रखवारी। करेउतातममविनय विचारी॥
जो गृह रहै देइ दुर्योधन। तातनिहोरे किहेउ प्रबोधन॥
तुम तहँ जात रहेउ कछुकाला। गयेदिवसदुखकटहिंविशाला॥
जबजब सुरति करै मम माता। करेहुप्रबोधविकललखिगाता॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे। मातु प्राण धन के रखवारे॥
सो० बिपिन महा दुखरूप ताते उचित न मातुसँग।
कही युधिष्ठिर भूप गहबर उर व्याकुल निपट॥
कहेउ प्रणामहमारतात मातुसन त्रिबिधबिधि।
अस कहि धर्मकुमार चकित चितै रोवनलगे॥
कहेउ बिदुर नृप धीरज धरहू। आतुरगमनबिपिनमगकरहू॥
हम कुंती बहुबिधि समुझैहैं। रंचक शोक न शीश बिसैहैं॥
हमहिं उचित बिनकहे तुम्हारे। सब प्रकार पद सेवन हारे॥
तदपिकहेउतबअतिभलकीन्हा। महाबिपतितजिधीरजदीन्हा॥
अबनहिं काम यहां के ठाढ़े। कुरु आयसु आवतभटगाढ़े॥
तुम कहँ करुणासिंधु सहाई। दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई॥
[illegible] शत्रु अजाता। भयेसरण नृप नीकि न बाता॥

दो० मोहिंनहोय लवलेशदुख तवप्रसाद वन जात।
बीते दिन पद देखिहौं शोच परिहरिय मात॥
भीम सँदेश विदुरसन कहेऊ। ममदिशितातमातुसनकहे
कहेउ सहायक जो यदुराई। बीते दिवस गहौं पद आ
भयो हमार कठिन अपमाना। अमरशरीर तजत नहिंप्रान
होत न कछु अब कीन हमारा। काधों अग्र करिय करतार
कुरुपति सदृश एक विन रोरे। सबशठ देखि परत रिपु मोरे
कोउ सज्जन परमारथवादी। पापी सकल भीष्म द्रोणादी
तुम धर्मिष्ठ विदुर सब भांती। गदगदगिरानपुनिकहिजाती
कह पारथ सुनु तात सुजाना। तुम समर्थ विज्ञान निधाना
हवन विपति मातुसन भारी। जेहिसुखलहहिंनहोइँदुखारी
सो० करेहुयत्न सोइतात मातु लहै सुख शोचतजि।
करि कौरवकुलघात दरशावों जननी वदन॥
दो० पृथकपृथकमातहिंकहेउ निजनिजसवनसँदेश।
तेहि अवसरकरुणा निपट वरणि न जाइ नरेश॥
र वार कह द्रुपद किशोरी। सुरत करायहु मातहि मोरी॥
र्नीय तुम श्वशुर हमारे। नहिं संदेश पठावन हारे॥
चितक्षमव कुअवसरजानी। कहेउ मातुते ममप्रिय वानी॥
सेवाकर अवसर आवा। भाग्यकठिनतवमोहिंभ्रमावा॥
जीवत राखहिं जगदीशा। धरिहौंआइ चरणतर शीशा॥
प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे। रहिहैं मोहिं समेत सुखारे॥
कहि विदुरचरणगहिरानी। विलपत भापत आरतवानी॥
पुनि मिलत धर्म नरनाहू। वहेउ विलोचन वारि प्रवाहू॥
अवसर कुरु आयसु मानी। चहुँदिशि वीर धीर अररानी॥
अनेक नगिनि करवाला। रूप भयंकर धनुप विशाला॥
० धर्मसुतहि पारथ कहेउ नाथ रजायसुहोइ।
चलत वार कौरव सुभट कछुक दीजिये खोइ॥

॥दो० होन लग्यो उतपात बहु चले पवन उनचास।
॥ अंधकार माया प्रबल दिवस नाथ उर त्रास॥
मायां वश राक्षस की धारी। सब परिवार पृष्टि बैठारी॥
सहित द्रौपदी धर्मज राई। दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई॥
वाम बाहु पर बान्धव चारी। भीमादिक लीन्हेउ बैठारी॥
पुनिपुनि गर्जिचलतजबभयऊ। नृपकरजोरि बिदुरसनकहेऊ॥
तात पितासम आपु हमारे। शिशुपनते सबबिधि रखवारे॥
ममसुधिअबयादवपति लीन्ही। रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे। पितुमातासम हितननिहोरे॥
अबते एक मोरि रखवारी। करेउतातममविनय बिचारी॥
जो गृह रहे देइ दुर्योधन। तातनिहोरे किहेउ प्रबोधन॥
तुम तहँ जात रहेउ कलुकाला। गयेदिवसदुखकटहिंविशाला॥
जबजब सुरति करै मम माता। करेहुप्रबोधविकललखिगाता॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे। मातु प्राण धन के रखवारे॥
सो० विपिन महा दुखरूप ताते उचित न मातुसँग।
कही युधिष्टिर भूप गहवर उर व्याकुल निपट॥
कहेउ प्रणामहमार तात मातुसन बिबिधविधि।
अस कहि धर्मकुमार चकित चिते रोवनलगे॥
कहेउ विदुर नृप धीरज धरहू। आतुरगमनविपिनमगकरहू।
हम कुंती बहुविधि समुझैहैं। रंचक शोक न शीश बिसैहैं।
हमहिं उचित बिनकहे तुम्हारे। सब प्रकार पद सेवन हारे॥
तदपिकहेउतमअतिभलकीन्हा। महाबिपतितजिधीरजदीन्हा
अबनहिं काम यहां के ठाढ़े। करु आयसु
तुम कहँ करुणासिंधु सहाई। दी
नमन कीजिये शत्रु अजाता।
विदुर वचन सुनि धर्मनरेशा।
मोर प्रणाम कहेउ जननी तें।



महाभारत

वनपर्व्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

भाषा उत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणकी रीति पर दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है ॥

जिसमें

बनान्तरविषे पांचोंपाण्डवों व द्रौपदी को दुर्वासादि मुनियोंका समागम व अनेक असुरों करके दुःख पहुँचना पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञात वास रहनेका विचार अनेक कथाओं में वर्णित है

वही

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

ग्यारहवींबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आइ, ई) के छापेखाने में छापी गई
सन् १९०२ ई०॥

नहिं भायो पारथ वचन नाय विदुरपद भाल।
चलो घटोत्कच ते कहेउ सत्य धर्म्म महिपाल॥
लखि कुम्भोत्कच भूपरुख आतुर वार न लागि।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि गयो नागपुर त्यागि॥
सवलसिंह सुनि विदुरमुख कौरवनाथ हवाल।
ह्वै उदास शकुनी करण वोलिलिये ततकाल॥

इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वभाषासवलसिंहचौहानविरचिते
पाण्डववनगमनंनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

इतिसभापर्वसमाप्तम्॥



महाभारत

वनपर्व्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणकी रीति पर दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है ॥

जिसमें

वनान्तरविषे पांचोंपाण्डवों व द्रौपदी को दुर्वासादि मुनियोंका समागम व अनेक असुरों करके दुःख पहुँचना पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञात वास रहनेका विचार अनेक कथाओं में वर्णित है ॥

वही

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

ग्यारहवींबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आइ, ई) के छापेखाने में छापी गई

सन् १९०२ ई०॥

नहिं भायो पारथ वचन नाय विदुरपद भाल।
चलो घटोत्कच ते कहेउ सत्य धर्म्म महिपाल॥
लखि कुम्भोत्कच भूपरुख आतुर वार न लागि।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि गयो नागपुर त्यागि॥
सबलसिंह सुनि विदुरमुख कौरवनाथ हवाल।
ह्वै उदास शकुनी करण बोलिलिये ततकाल॥

इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
पाण्डववनगमनंनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

इतिसभापर्वसमाप्तम्।

महाभारत

वनपर्व्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणकी रीति
पर दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है ॥

जिसमें

बनान्तरविषे पांचोंपाण्डवों व द्रौपदी का दुर्वासादि मुनि-
ओंका समागम व अनेक असुरों करके दुःख पहुँचना
पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञात वास रहनेका
विचार अनेक कथाओं में वर्णित है

वही

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

ग्यारहवींबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापी गई

सन् १९०२ ई० ॥

अथ वनपर्व ॥

दोहा ॥

अब वनपर्व कथा यह आगे सुनहु नरेश ।
छांड़ो देशहि धर्मसुत कीन्हो वन परवेश ॥

कामक बिपिन रहे तहँ जाई । धौम्य नामप्रोहित तहँ आई ॥
जहां बिपिन है बहु बिस्तारा । सिंह भालु बाराह अपारा ॥
कामी नाम दैत्य यक रहई । महा,सो बीर पराक्रम अहई ॥
ताके डर बहु तपी डेराई । तेहिवन निशिवासरसोरहई ॥
मानुष चाप पाइकै धायो । धर्मराज सन पूंछन आयो ॥
किंवर नाम अहै बन मोरा । को तुम बीर अहो बरजोरा ॥
धर्मराज बोले यह बानी । पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी ॥
भीम धनंजय नकुल कुमारा । सहदेव लघुहै बंधु हमारा ॥
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं । सत्य बचन तोसों सबकहहीं ॥
यह द्रौपदी अहै पटरानी । हारे राज्य लियो वन आनी ॥
दो० सुनत दैत्यहंसि बोलेउ विधिम्वहिंदीन्हअहार ।
भीम नाम बलवीर सो बैरी अहै हमार ॥
रहे वकासुर बन्धु हमारा । ताको भीमसेन संहारा ॥
सखा हमार हिडम्बक रहई । मारो ताहि दैत्य असकहई ॥
सोविधि मोकहँ दीन्ह मिलाई । आजु मारिहौं पांचो भाई ॥
शोणित करौं भीमकर पाना । तब संतुष्ट होइ मम प्राना ॥
यह कहि प्रलयरूप तन धारा । वृक्ष एक [illegible]सि भीम उपारा ॥
मारयो भीमसेन करि क्रोधा । किंवर नाम [illegible]न्य बड़ योधा ॥
मारयो वृक्ष तासु के माथा । कोपित [illegible] [illegible]लयतनाथा ॥

एकै एक जीति नहिं पायो। दूनों वीर जूझ मन लायो॥
तब पर्वत यक दैत्य उपारा। भीमसेन के उर पर डारा॥
मारु मारु करिके तब धावा। चंद्रहिराहु ग्रसनजनु आवा॥
दो० उठेउ भीम तबक्रोध करि मल्लयुद्धतबठान।
जिमि सुग्रीवहिवालिसों बिबिधभांति मैदान॥
क्रोधित भीमगह्यो तब ताहीं। दूनौ हाथ दियो कटिमाहीं॥
बहुरि भीम पकरेउ शिरवारा। क्रोधवंत होइ भूमि पछारा॥
आरत दूनों कीन्ह चिकारा। मुखते चली रुधिरकी धारा॥
भीम दैत्य को जबहिं संहारा। छांड़ेउतबजब प्राण निकारा॥
बधेउ दैत्य कहँभीम जुझारा। हर्षित भे तब पवनकुमारा॥
मिलि सब बंधुहर्ष उरछाये। दुर्वासा तहँ देखन आये॥
साठि सहस्र शिष्य लै साथा। बोलेउ वचन सुनहु नरनाथा॥
हम सबकहँ भोजन करवावो। नातरु ब्रह्मशाप तुम पावो॥
त्रासवंत पाण्डव सब भयऊ। तबद्रौपदिहरिसुमिरनकरेऊ॥
सुमिरत श्रीहरिआये जबहीं। क्षुधावंत भाषेउ तिन तबहीं॥
भोजन नेकु न कछु गृह अहई। श्रीपतिसों यहद्रौपदि कहई॥
यदुपति कछु न भोजन अहई। लावो पात्रसों यदुपतिकहई॥
भोजन भाजन लैकर आई। यकु रंचक भाजी तहँ पाई॥
पुनिकृष्णहिं असवचनसुनाये। तीनोंलोक तृपित होइजाये॥
मुनिगणकेर उदर भरि आये। श्रीहरि द्वारावती सिधाये॥
दुर्वासा कहँ भीम बुलाये। भोजन हेतु चलौ मुनिराये॥
दुर्वासा तब वचन प्रकाशा। कबहुं न होइ भक्तकर हासा॥
दो० यह कहिगे दुर्वासऋषि हर्षित धर्मकुमार।
सूर्य विनयकरिद्रौपदी। पूजा करिविस्तार॥
भे प्रसन्न तब रवि वर दीन्हो। मांगुमांगु यहकहिसोलीन्हो॥
कहा द्रौपदी धर्म उपाई। अन्नपूरणा देहु गुसांई॥
भे प्रसन्नरवितहँ अति दीन्हों। धर्मराज कहँ हर्षितकीन्हों॥

प्रतिदिन तहँ ब्राह्मण बिधिनाना। भोजन करैं बहुत सुखमा
साठि सहस्र तहँ मुनिवर आये। नितप्रति तहँ भोजन करव
ऐसे धर्मराज तहँ रहई। परम हर्ष बनभीतर अह

दो० ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन बनमें धर्म भुआर।
पांडव विजय रहस्य है सुने पाप संहार॥

आगे सुनु जनमेजय राजा। धर्मराज कीन्ह्यो जसकाज
सरवर एक सुभग बन रहेऊ। जलकारण सहदेव तहँ गय
जलमें एक जंतु तहँ रहई। पायो शब्द वचन सो कहइ
को तुम जीव कहो अब भाई। कहो सो सब मम कथा बुझा
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हो। तुरतहि ग्राह लील तिल बलीन्ह
यहि प्रकार तहँ चारिउ भाई। लीले ग्राह सरोवर जाइ
धर्मराज तहँ करो बिलापू। पाछे गये सरोवर आपू
जलभाजन देखेउ तब राई। तटमें चरण चिह्न हैं भाइ
अरु चक्र चिह्न पाइ लखि राजा। तब चलि गयो सरोवर काजा
लखि भाजन राजन तब गहई। पावन शब्द ग्राह तब कहई
दो० को जीवित को जागत कहो भेद समुझाइ।
॥ कहे बिनाहिं सरोवर कोउ न जल लैजाइ॥

धर्मराज तब मनमहँ जाना। यही जन्तु कछु कस्यो बिधाना
धर्मराज तब कह समुझाई। जीव जौन सो सुनु मनलाई
धर्मशील समता मन रहई। सत्यछोड़ि मिथ्या नहिं कहई
बिष्णुभक्ति आनै करि ज्ञाना। प्रेम भाव मनमें जो ठाना।
जाके हृदय कपट है नाहीं। परसेवक सोहै जगमाहीं।
जीवै सदा सो भक्त कृपाला। तू किमि जीवै सुनु चण्डाला।
कहे वचन। अस धर्मभुआला। तब छोड़ेउ सहदेवै काला।
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी। धर्मराज तब कहेउ बखानी॥
सेवा मात पिताकी करई। सदा धर्म हिरदय महँ धरई॥
पापकूप देखि मीच नहुँ न जाना। जीवै सदा भक्त भगवाना॥

तू किमि जीवे जो निज चोरा । परो है अधम काल के फेर
इतनो सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं । नकुलहिं कहँ छांड़ेउ पुनि तबहीं
और सत्य अपने जिय माना । है यह धर्म्मराज जिय आन

॥ दो० को जीवत है जगत में सुनियें धर्म्म कुमार ।
॥ सुनु रे पापी पातकी धर्मज वचन उचार ॥

देह आपनी हठ करि जाना । करे योग विधि वेद प्रमाना
ये षटचक्र विदारे कोई । जीवे सदा भक्तजन सोई
तू तो भक्ति धर्म नाहिं जाना । सदा मृत्यु मुख सुनु अज्ञानी
इतना सुनि त्यहि अर्ज्जुन वीरा । उगिलि ग्राह क्षै हर्ष शरीरा
पुनि तब ग्राह कही यह बानी । धर्म्मराज सुनि कह्यो बखानी
जीवत योग देह महँ होई । भावत कर्म्म धर्म्म नाहिं सोई
कामी क्रोध लोभ अहंकारी । कालरूप जानै संसारी
जीवे जो यह भक्त सुजाना । जीवै सदा भक्त भगवाना
तें किमि जिये मूढ़ अज्ञानी । परो नरक चौरासी खानी ॥
सुनत भीम उगिलेउ तिहि वारा । विनय कीन्ह तिहिं बारम्बारा ॥

॥ दो० सुनिये भूपति धर्मसुत जानत सब संसार ।
॥ छुवो जो चरण शरीर लस तब होवे उद्धार ॥

परस्यो चरण भूपतिहिं जबहीं । दिव्य रूप राजा भे तबहीं ॥
धर्म्मराज पूछ्यो हरषाई । कौन कहो गति कैसे पाई ॥
तबहि राउ सों कहेउ विचारी । सुनहु धर्म्मसुत विपति हमारी ॥
हम तो यही शाप हित पाई । ताते तब लीलेउ सब भाई ॥
सो तब तुमहिं चीन्हि हम पायो । तुमहीं ते उद्धार करायो ॥

॥ इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते वनपर्व्वे
॥ धर्म्मराजग्राहसंवादे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई । जौन हेतु हम यह गति पाई ॥
मैं यदुवंशी अहेरे गयऊं । कर्म्महीन तबहीं सों भयऊं ॥
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ । मम संग अश्व न एको रहेऊ ॥

परेउं भूलिके सो वन माहीं। त्रिपिनसघनतहँसूझयोनाहीं॥
तीनि कहार रहें तेहि पाहीं। एक मृतकभा तेहि वनमाहीं॥
कर्म्महीन ते दुख में लहेऊ। करत तपस्याऋषिवनरहेऊ॥
तीन महाऋषि जान न पाये। तिन्हें कहार तहां धरिलाये॥
आनि पालकी माहिं लगाये। निजपुरकोफिरितबहमआये॥
द्वारे धरी पालकी आई। बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाई॥
भोजनपान खबरिनहिं लयऊ। वासरगयउ राति पुनिभयऊ॥
दो० वासर बीते रैनि भे कीन्हेउँ मैं उच्चार।
प्रथम पहर में भाषेउं को जागत संसार॥
तब मुनि कही तहां यह बाता। जन्ममृत्यु दुखसुखसँगलाता॥
क्षुधातृषाते नितदुख सहई। करतबंध सो सुखनाहिं लहई॥
जाने यह जग दुःख समाजा। सो जागे सब सोवत राजा॥
दूजे यहै चलाई बाता। जागे कौन कहौ सति ताता॥
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना। योगी योगकरो नित ध्याना॥
कामरु क्रोध लोभ अहँकारा। बसे देह में सब बटपारा॥
सदा ज्ञान ते रहे सचेता। सोवत जागत रहे सो येता॥
तीजे पहर पूछ में आहीं। सो सुनिबोले पुनि मुनिपाहीं॥
जो कोइ ध्यान करे जगमाहीं। ताको संकट परे न काहीं॥
दिव्यज्ञान करिहरिको जाने। हिंसा कपट हृदय नहिंआने॥
जो दुखी सो संशय भरई। परवश ह्वै प्रचार सो करई॥
सो जागे सब सोवे राजा। सोवै खोवै आपन काजा॥
चौथेपहर कहेउ को जागे। क्रोधित मुनि बोले मो आगे॥
सुनु मूरुख जागे जो ज्ञानी। तू किमिजागैगृह अभिमानी॥
ग्राह होय राजा तैं जाई। भूप शाप ऋषिको यह पाई॥
दो० तब मैं विनती कीन्हेउ भा बड़ दोष हमार।
कीजे दाया महा मुनि, अब हमार उद्धार॥
बोले मुनि तब सहित कृपारा। द्वापर युग उद्धार तुम्हारा॥

पाण्डुपुत्र अइहैं वन माहीं। धर्म्मपुत्र धर्म्मै मन चाहीं॥
परसे अंग होव उद्धारा। पुनि दीन्ह्योवर याहिप्रकारा॥
सो राजा तव दर्शन पाई। मम उद्धार भयो अब आई॥
एहि प्रकार ते पायउँ शापू। मेटेउ शाप कृपा करि आपू॥
अस्तुतिकरिराजा दिविगयऊ। धर्म्मराज मन हर्षित भयऊ॥
भाइनसहित हर्षहिय भयऊ। तेहिथलवसे धर्म्मसुखलहेऊ॥
सुनो भूप जनमेजय ताता। सो जड़भरत हतो मुनित्राता॥
दो० रहेहर्षि सोतेहि वन परम मनोहर ठाय।
सहित द्रौपदी राजतहँ अरुसब चारिउ भाय॥
तबसों द्रुपदराज भगवाना। धृष्टद्युम्न सँग करेउ पयाना॥
मिलन हेतु सो वनमहँ आये। वहुविधिउन्हें कृष्णसमुझाये॥
दुखसुखयहै विधिकरतबराजा। हस्तिनपुर कर राज समाजा॥
यहिविधिमिले तिनाहिंसोजाई। सहित द्रौपदी पांचो भाई॥
धौम्यऋषिहिमिलिवहुसुखमाना। तबहिंद्रुपदगृहाकियोपयाना॥
पांडव वसहिं जौन वनमाहीं। कामकवन उत्तम है जाहीं॥
वहु दिन रहे तौन वनमहहीं। चारिउवन्धु धर्म्मसुत रहहीं॥
दो० वहुदिन कामकवनहिं में रहे पाण्डु तहँ आइ।
ह्वै उदास पुनि धर्म्मसुत छांडो सो वनजाइ॥
तवहिं दैत्य वनपांडव गयऊ। मार्कण्डेय मुनि दरशन दयऊ॥
नारद आदि सुनो यह तवहीं। पांडव गये दैत्य वन जवहीं॥
तहां वसहिंवहुऋषयसमाजा। पांडव शोक मिटेउ वे काजा॥
सो सम्वाद वहुत विस्तारा। कछु संक्षेप सुनो सुख सारा॥
वसे दैत्य वन पांडव आई। तहां द्रौपदी बात चलाई॥
कहे वचन तब धर्म नरेशहि। विपिन वास वहुसहेकलेशहि॥
पापी दुर्योधन जग जाना। शकुनीकर्ण दुशासन नाना॥
अंध नृपति कछु कहो न आई। सुनो धर्मसुत पांचो भाई॥
महँ सहित उनवनहिंपठाये। दुर्योधन छलस्याल न लाये॥

निकु कृया हिरदै महिं लायो। कपट अक्ष करि वनहिं पठायो॥
॥ दो॰ आपु सहेउ बहु दुःख बन हमें सहो नहिं जाइ।
॥ दुर्योधन अपकारि सों रानी कह्यो बुझाइ॥
नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा। ताकर यह फल विधि बहु दीन्हा॥
भीम वीर अर्जुन धनुधारी। पल मा करें सकल संहारी॥
ये तुम्हरे वाचा के कारन। सकें न कौरव दल संहारन॥
आज्ञा देउ सुनो हो राऊ। मारें शत्रु देश तव पाऊ॥
क्षमा केर अवसर अब नाहीं। क्षिपि केहरव कहां पै जाहीं॥
क्षमा के समय क्षमा है भारी। युद्ध समय कीजे हठि रारी॥
जान धर्म क्षत्री के कर्मा। मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा॥
द्रौपदि केर वचन ये सुनि कै। बोले वचन धर्म मन गुनि कै॥
कहे वचन राजा तिहि ठाईं। धर्महिं सदा वेद मो अहई॥
बारह संवत निज सुख हारा। चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा॥
॥ दो॰ किये कोउ सम पाव नहिं राजा कह्यो बुझाइ।
॥ काल किये मुनि यसनहिं भाषेउ पाण्डवराइ॥
जात धर्म सब कालहिं करई। परे दुःख तेहि जनि परिहरई॥
हैं सब घट में पुरुष प्रधाना। दुःख सुख सब समान करि जाना॥
एक पुरुष है सुख दुख दाता। दूसर आहेन सुनु मम बाता॥
सुनत भीम क्रोधित कर भयऊ। धर्मराज सन बोलत भयऊ॥
जापे धर्म महासुख पाये। तो वन को संकट केहि आये॥
कौन धर्म महँ बहु दुख पाये। देखत देखत राज्य गँवाये॥
कौन धर्म दुर्योधन राऊ। राज्य को सुख सो सकल बनाऊ॥
आज्ञा देउ बधौं सो भाई। फिरि पीछे लेजावँ लवाई॥
तुम्हहिं राज्य देउँ हे राजा। ऐसो जाय करौं सब काजा॥
अर्जुन धनुष खैंचि शर धारे। एक क्षण में कुरुराज संहारें॥
॥ दो॰ तुम्हें हीन बलक रया जानें अपने जीम।
॥ आज्ञा देहु धर्मनृप कह्यो कोप करि भीम॥

भीम वचन सुनि राजा कहई। जुआ खेल हारे सब अहई ॥
वाचा हारि करो सत कर्म्मा। पीछे युद्ध कीजिये धर्म्मा ॥
धर्म्म न छांड़व जवतक प्राना। धर्म्म ते राज्यवृद्धिजगजाना ॥
ताही समय व्यास तहँ आये। हर्ष हृदय पांडव समुझाये ॥
तव यकमंत्र व्यासमुनि कहेऊ। सुनिकै धर्म्मराज सुखभयऊ ॥
पुनि यह मंत्र जपो तुम जाई। पारथते तब कहेउ वुझाई ॥
देउँ मंत्र जपते वर पैही। युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ ॥
इन्द्र वरुण यम शंकर देवा। होत सबै परसन्नहिं सेवा ॥
यहकहिकै ऋषिव्याससिधाये। कामकवन पुनि पांडव आये ॥
कामकवन पुनिभयउ प्रकाशा। पांचो बन्धु द्रौपदी पासा ॥
दो॰ यहिप्रकारते वनहिंमहँ रहे पाण्डु सुत आनि।
जनमेजय नृप आगेहू वैसम्पानि वखानि ॥
इतिश्रीमहाभारतेसवलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वकामकवन
पांडववासवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥
सुनु राजा रहे जौन प्रकारा। चारिउ बांधव धर्म्म कुमारा ॥
केतिक दिवस रहेतिहि ठाहीं। यकदिन पारथ नृपसों काहीं ॥
आज्ञा होय जाउँ मैं तहँवां। गौरीपति के दर्शन जहँवां ॥
आज्ञा पाइ चरण छुइराई। चढ़ो हिमाचल पर्वत जाई ॥
व्यास मंत्र जो विद्या देऊ। तौन मंत्र जपि ध्यान लगेऊ ॥
फल औ मूल भये त्रयमासा। पुनि दुइमासभयो उपवासा ॥
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये। पारथ सों इमि वचन सुनाये ॥
काहे तप कठोर तनु त्रासा। मन इच्छा सो करो प्रकाशा ॥
जो वांछा उर अहै तुम्हारे। होइ सिद्धिसुनु वचन हमारे ॥
भये शम्भु यहि अन्तर्द्धाना। तेहि वनपारथ पुनि तपठाना ॥
दो॰ अन्तर्द्धान महेश भे अरु अर्जुन वर पाइ।
कै प्रसन्न तप करतभे शंकरसों मनलाइ ॥
तप साधत बीते कछु काला। घोर चरित्र सोसुनो भुवाला ॥

रूप किरात धरो हर तहँवां। करत उग्र तप पारथजहँवां॥
दोउकर धनुषबाण करलीन्हो। रूप सुन्दरी गौरी कीन्हो॥
भूत कटक सब संग लेवाई। कोल भील कर वेष बनाई॥
अहै नाम शुक दैत्यकुमारा। शूकर रूप घोर पुनि धारा॥
पारथ के आगे भे आई। रूप किरात महेश्वर जाई॥
चला दैत्य तारक के काजा। करो विचार भूत के राजा॥
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे। ध्यान छांड़ि कै पारथ जागे॥
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ। तब किरात अर्जुन सनकहेऊ॥
बहुत परिश्रम करि मैं आयों। बड़ो पराक्रम करि मैं पायों॥

दो० तेहि चाहत है मारन अरे मूढ़ अज्ञान।
अर्जुन कहो न मानितव हन्योतासु शिरवान॥

ग्राहरूप तजि दानव भयऊ। तबकिरातमनक्रोधित भयऊ॥
मारेसि ग्राह आपने हाथा। पठवों तोहिं ग्राहके साथा॥
यमपुर अबहिं पठावों तोहीं। तैं अब वीर विरोधेसि मोहीं॥
जो शक्ती है तनु तुव हारी। तातें अस्त्र देहु परहारी॥
सुनि कै क्रोध धनंजय ठाना। पुनि किरातपर वर्ष्यो बाना॥
एको बाण न भेदेउ अंगा। विस्मय करि पारथ मन भंगा॥
तब हंसि शंकर बचन बखाना। और बाणतोहिं करौं निदाना॥
अर्जुन धनुष हन्यो बर जोरा। टूट्यो अस्त्र तीन पुनिघोरा॥
अर्जुन कह्यो किरात न होई। होय विष्णु की शंकर सोई॥
माया वपु करि बंचेउ मोही। भयोचकित चिन्तामन सोही॥

दो० खड्गघाव जो मारेउ सो निःफल ह्वै जाय।
तबहिंवृक्षयक लीन्ह्यउ पारथक्रोधितधाय॥

शंकर भूत बाण अस मारा। काटि वृक्ष भूतल में डारा॥
तब पारथ मुष्टिक अस मारा। पौरुष करि अर्जुनहिंप्रहारा॥
शंकर पुनि तहँ हाथ पसारा। अल्प तेजको पारथ मारा॥
लागत भूमि परेउमुरझाई। क्षणकएक पुनि चेत सो आई॥

हुरहु पुनिकहि उठ्यो प्रचारी। तब सोहृदयनिहारि निहारी॥
थमहिं पूज्यो शंकर जोई। पारथ ताहि विलोक्यो सोई॥
जो माला हर गरेनिहारा। देखिचकितभे पाण्डुकुमारा॥
निश्चय जान्यो शंकरहोई। परेउ दौरि चरणनपर सोई॥
क्षमाकरौ यह चूक हमारी। बिन जाने कीन्ही मैं रारी॥
तबशंकर प्रसन्नचित भयऊ। हितकरिचितैपरमसुखदयऊ॥
मैं प्रसन्न हरिहर कहिदीन्हा। तबअर्जुनप्रणामसो कीन्हा॥
दो० पशुपतिअस्त्रमंत्रहिसहित हरअर्जुनकहँदीन्ह।
हर्षित गात धनंजय चरणकमल गहिलीन्ह॥
तुमसँग युद्ध पारको पाई। ऐसी शक्ति न काहू भाई॥
अस्त्रदेइके पशुपति नाथा। अन्तर्द्धान भये गणनाथा॥
हर्षवंत कह पारथ बैना। मैं शंकर देख्यों भरि नैना॥
धनिजीवन जग आजहमारा। जोशंकर निज नैननिहारा॥
पारथ बहुलहर्ष जिय पायो। तौनेसमय देवसब आयो॥
इन्द्रआदि सँग सबदिगपाला। पारथऊपर भयो दयाला॥
र नारायण सुरपति कहई। तुम नररूपजन्म सुतअहई॥
मिसहै नहिं क्षत्री भारा। तेहिकारण अवतारतुम्हारा॥
हिविधि अस्त्र जौन हैं जेते। सिखैदेव हम तुमकहँ तेते॥
हकहिं शक्रअस्त्र सबदीन्हे। मंत्रनसहित समर्पण कीन्हे॥
दो० कालदण्ड यम दीन्हेउ बरुण दियो जलबान।
बज्रदण्ड इन्द्रादिदै हर्षित भो बलवान॥
बउपकार अगिनि को कीन्हो। पावक अस्त्र तहां बहुदीन्हो॥
तपंच गांडिव धनुलीन्हो। नंदिघोपरथ हुतभुकदीन्हो॥
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हो। तबहीं इंद्रकलुक शिपदीन्हो॥
तुलसाथ स्वर्ग कहँ ऐहो। अस्त्र अनेक तहां तुम पैहो॥
हकहिके सुरपति तबगयऊ। रथसहसूत उपस्थितभयऊ॥
देवसभा जब पारथ गयऊ। नानाअस्त्र इन्द्र तब दयऊ॥

बहुविधि अस्त्रसिखाये ताहीं। इन्द्रलोक पारथजहँ
देवअस्त्रपढ़ि सब विधि जानी। सुरपतिजिष्णुपरमसुख
दो० सिखे अस्त्र बहु पारथहि देवपुरीमहँ जाय।
चिन्ता करत युधिष्ठिर पारथ को हित पाय॥
कौने देश धनंजय गयऊ। चारिउ बान्धव शोचतभ
कीन्ह्यो शोच द्रौपदीरानी। तबहिंधर्मसुतकह्यो बख
विद्या महा व्यासते पायउ। तौने कारण वनहिं सिधा
गौरीपति अवराधन गयऊ। कौनहेत जिय विस्मय भय
हर पूजाते संशय नाहीं। है कल्याण लोक तिहुँमा
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा। इमि सबको समुझावतरा
तप कारण पारथ तहँ जाई। सुनत भीम तबकहो रिस
जो वियोग पारथ सँग होई। प्राण त्याग करिबो सबको
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा। सहतेउँकतयहदुखहिसमा
क्षमा किये राजा कह पैये। दिनदिनदुखबहुविधिकिमिसहि
दो० राजदेश सब लूटेउ राव तुम्हारे हेत।
देहु रजायसु राजतुम अबते होउ सचेत॥
मरिये शत्रु देश तब पाई। वनको दुःख सहो नहिंजा
बारह वर्ष सहो दुख भारा। एक वर्ष अज्ञात भुवार
अर्जुन वीर बड़ो धनुधारी। और सहायक श्री बनवारी
राव तुम्हारी आज्ञा पावों। दुर्योधन शतबंधु नशावों
भीमके वचन श्रवणसुनिलीन्हे। धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हे
सुनो भीम जो वचन बखानो। दोष हमार सत्यकरिजानो
सुनिमम वचन रहो अरुगाई। पीछे बन्धु करो मनुसाई
अब यहि समयरहो चुपभाई। तबेदस्वअश्वपतिहँचलिआई
धर्मराज उर आनँद छाये। अर्घ देइ आसन बैठाये।
कहेउआप सबदरशि कलेशा। महादुखित होइवरणिनरेशा।
दो० तजेउँ देशवहदल महँदुँ दुर्योधनके काज।

आदि अंत सुनि आगे वरजोदुख सवराज ॥
सुनिके तब दुखकहो बखानी। मिटै न कर्मलिखा सुनुज्ञानी ॥
सुमतो बड़ो दुःख नृप पाये। राज्यछोड़ि वनवासहि आये ॥
नलदुखसुनो मनहिंधरिराजा। घटै पाप वहु सुक्ख समाजा ॥
पांसे खेलि हारि सब देशा। रानी सँग वन कीन्हप्रवेशा ॥
एकवस्त्र दोनों ढिग रहेऊ। सोऊ तजि राजा बन गयऊ ॥
पायउ सो दुख वहुवन जाई। छुट्यो दुःख भे राजा आई ॥
ताको कहेउँ सहित विस्तारा। सावधान होइ सुनो भुवारा ॥
तासु दुखहि सुनिहौ हो राऊ। सुनत प्राण धीरज न रहाऊ ॥
पायउ पतिव्रता दुख जेता। तोपर कहो जाइ नहिं तेता ॥

दो० सुनतदुखहिंवहुनृपतिके पारथ वीर न होइ।
धर्मराजके आगे कहत दुख ऋषि सोइ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसवलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
नलोपाख्यानोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध यक देशा। तहँ पुनीत नल नाम नरेशा ॥
वहु विस्तार कहो नहिं जाई। लघुकरि ताहिकहौंसमुझाई ॥
यक दिन राव सरोवर जाई। पंगति हंस देखि वहु पाई ॥
तबहीं हंस पकरि नृप जाई। रोइ हंस तब नृपहि सुनाई ॥
राजा वेगि छांड़िदे मोहीं। कन्या एक मिलावों तोहीं ॥
देश विदर्भ भीम नृप रहई। कन्या एक तासु गृह अहई ॥
दमयंती विधि रूप सवांरी। देखि गिरा रति रूप निहारी ॥
सुनतहि राजहर्ष मनलीन्हा। तुरतहि छांड़ि हंसकहँदीन्हा ॥
राजा गे अंतःपुर माहीं। देश विदर्भ हंस उड़ि जाहीं ॥
उतरो जाइ हंस सो तहँवां। पारिजात फूले वहु जहँवां ॥

दो० उत्तम सरवर देखिके उतरो हंस विचारि।
विधिरचना सवसखीसँग आईराजकुमारि ॥

देखि हंस कहँ राजकुमारी। गहन हेत तब बुद्धि विचारी ॥

तब वह हंसरूप अति धरेउ। निजवश कन्याको मनकारेउ।
सुनु दमयंती बात हमारी। नैषध देश महीपति भारी॥
नल राजा उपमा को कहई। देखत रूप मोहि जग रहई॥
तब यह सफल तोर है रूपा। जो पति पावो नलसों भूपा॥
सुनि दमयंती हृदय जुड़ाना। हंसवचन सुनि हर्षितप्राना॥
कह दमयंती करहु उपाई। जाते होइ मोर पति राई॥
भये स्वयम्बर उनकहँ वरिहों। अरु काहूको चित्त न धरिहों॥
सुनत वचन यहकहेउ बुझाई। जात अबहिं मैं कहाँ उपाई॥
बढ़ो हंस तब पंख पसारी। देखि रही तब राजकुमारी॥
दो॰ हंस देश नैषध महँ राजहि कहा बुझाइ।
कन्यामन तुमसों बसेउ करहु हर्ष मन राइ॥
राजा सुनत हर्ष मन कीन्हो। पूरबकथा कहन मनलीन्हो॥
देखि सुताकर चितहि उदासा। रानी नृपसों बचन प्रकासा॥
राजा सन रानी कह बाता। कन्या योग स्वयम्बर गाता॥
सुनत बचन राजा मन भाये। देश देश तब विप्र पठाये॥
राजा भीम स्वयम्बर कीन्हो। भूपन सबहिनिमंत्रण दीन्हो॥
नल राजा कह नेवत पठावा। करिनिजसाज तुरंगसिधावा॥
नारद सुरपुर बात जनाये। चारो दिगपति सुनतै धाये॥
इन्द्र वरुण यम पावक अहई। चारिव देव चले मुनि कहई॥
मारग मांझ मिले नलराई। सुरपतिवचनकहो समुझाई॥
हम सब जात स्वयम्बर काजा। हँसि के वचनकही सुरराजा॥
हमरे हेत दूत है जाहू। दमयंती हमसों करे ब्याहू॥
चारि जने हम यक मनमाना। सुनि नलराजा बहुतलजाना॥
दो॰ बोले नल नृप मन्दिर रहैं बहुत रखवार।
राज सुता पहँ कैसही जाय वचन उचार॥
इन्द्र कहो मम आज्ञा होई। तुमहिं जात देखिहै न कोई॥
करिमनदुखित चलेनृप तहँवां। राजकुँवरि अंतःपुर जहँवां॥

दूनों जन ते दरशन भयऊ। दुवो रूप मूर्च्छित ह्वै गयऊ।
सखी धाइ तब शीतल नीरा। सींचेउ तब जल दुवोशरीरा।
दूनों चेत भये मन माहा। तब परचा दीन्हों नरनाहा॥
जौन प्रकार इहां को आये। आवत काहुन देखन पाये॥
इन्द्र वरुण यम पावक आये। तेइ दूत करि मोहिं पठाये॥
चारोजन कहँ मनमहँ धरहू। एकजने कहँ स्वामी करहू॥
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई। देव नाग नर चित्त न अहई॥
केवलपति हम तुम कहँ जाना। देवनागनहिं कोउ मनमाना॥

दो॰ जादिन हंसहि रूपकह ता दिन में पति जान।
देव नागनर गन्धर्व हृदय और नहिं आन॥

राजा कहेउ दोष मोहिं होई। कहँ देव हमहीं सब कोई॥
दूत ह्वै आपन काज सवाँरा। देव अवज्ञा दुख है भारा॥
कह कन्या नृप देवन साथा। पठयहुतुमहिं होन नरनाथा॥
जिय अपने मन तुमहीं आनों। तुम तजि कैसे दूसर जानों॥
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये। देवन पै नल राजा आये॥
देव सबै तब पूछन लीन्हो। तबहीं नल यह उत्तरदीन्हो॥
मोहिं छांड़ि मन और न माना। मैं गुण रूप तुम्हार बखाना॥
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना। राजसभानल करेउ पयाना॥
देश देश के राजा आये। अद्भुत भूषण रूप बनाये॥
चारिव देव भये नल रूपा। लखिनहिंपरेसो एकस्वरूपा॥

दो॰ बैठ जहां नल राजा सब करि करि शृंगार।
सँग प्रोहित करमालले सभा मांझ पगुधार॥

प्रोहित सब कर नाम बताये। नल राजा कर नाम सुनाये॥
कन्या देखि तहां यह रूपा। पांचो जने बैठ नल रूपा॥
बिनय करत तब राजदुलारी। ये देवहु मैं शरण तुम्हारी॥
नैषध पति है स्वामी मोरा। करो प्रकट पद बंदत तोरा॥
सुनिके बिनय दया सुर कीन्हे। आपन रूप बहुरिधरिलीन्हे॥

चीन्हे नल तब राजदुलारी । जयमाला ताके उर डारी ॥
राजा सत्य वचन कह सोई । देवन तजिजनि हममनहोई ॥
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी । क्षणयकतुमहिंकरबनहिंन्यारी ॥
दीन्ह देवपति यह वरदाना । इन्द्र कहे सम पवन पयाना ॥
सुमिरत तुमढिग तुरतहिंऐहों । याते सदा सुक्ख तुम दे हों ॥
दो० पावक अग्नी शक्तिदै वरुण दियो जलदान ।
धर्म विषे रति यम दई भे सब अन्तर्द्धान ॥
देव सबै वर देकर गयऊ । आशाभंग सकलनृप भयऊ ॥
यहि प्रकार दमयंति विवाही । वेदमंत्र करि जो विधि गाई ॥
दाइज भीमनृपति वहुदीन्हो । ह्वै केविदाचलनचितकीन्हो ॥
बाजन शब्द मनो घन गाजा । नगर आपने आयउ राजा ॥
ऐसे आइ वसे रजधानी । नल राजा दमयंती रानी ॥
केतिक दिवस वीतिइमि गयऊ । नाना केलि रंग रति भयऊ ॥
नृपके पुत्र प्रकट यक भयऊ । इन्द्रसेन असनामसो कहेऊ ॥
कन्या एकभई पुनि ताके । वहुतक हर्ष भई मन वाके ॥
ऐस रंग रस राजा कीन्हो । इन्द्रसरिस उपमाकहँलीन्हो ॥
धर्मवंत नैपधपति राजा । पाले प्रजा पुत्रके काजा ॥
दो० राज्य करे नल राजही करि वहुधर्म प्रकार ।
दमयंती अरु राजा पूजेउ दूनों आश ॥
आगे सुनो धर्म भुवराऊ । देवलोक कर करेउ उपाऊ ॥
वैठे सभा देवता जाई । कलियुग वैठतहां सुखपाई ॥
इन्द्र तहां यक बात चलाई । दमयंती राजा नल पाई ॥
देवन केर करेउ अपमाना । नल राजाको पतिकरिजाना ॥
सुनियह कलियुग उठा रिसाई । बोलेउ वचन क्रोधजियलाई ॥
नलके निकट जात सुरराई । राजछोड़ावउँ निजघरिआई ॥
कलियुग द्वापर दोनों भाई । पहुँचे नगर नैपधहि आई ॥
द्वापर ते कलि कह मुसुकाता । होइ कहा यह सुनु ममभ्राता ॥

हम अब विप्र रूप ह्वै जैये। चलिये अबपुष्करसों कहिये ॥
पुष्करसों यह तब करिवाता। तुम अबजीतौ नलकहँ ताता ॥
दो० जीतिलेहु नलराजहि कह कलियुग समुझाइ।
बैल रूप तब कलियुग कहेउ तासु ते आइ ॥
धरि यहरूप उन्हें समुझाई। नल पहँ जाउ स्वरूप बनाई ॥
तहां पुनीत रहे नल राई। तिन के वदन प्रवेशहु जाई ॥
एक समय वनमें नल राजा। तृपालागि जललीन्हेनिराजा ॥
यहिप्रकार तव अवसर पाये। नलशरीरमहँ कलियुगआये ॥
पुष्कर गे तब नलके पासा। जाइकरेउ यह वचन प्रकासा ॥
जुआ हेत आयहुँ तुम पाई। आजु दुवोजन खेलिय भाई ॥
नल राजा के मन महँ आई। खेलन हेत सो करेउ उपाई ॥
दमयंतीके वचन न भाये। नलराजा सब द्रव्य गवाँये ॥
सोन रूप जो लाव भुवारा। धरत दाउँ पलमहँ सबहारा ॥
गज तुरंग हारे सब राऊ। एकौ वार न जीत उपाऊ ॥
दो० बहुत दावँ जब लायऊ हारेउ सब भंडार।
पुरजन मंत्री संगलै आये नल दरबार ॥
रानी अरु मंत्री समुझाये। राजाके कछु मनहिं न आये ॥
रानी कह सब हारे राजू। खेलु न अबउठिचलुनलराजू ॥
होइ कहीं छूटत सब देशा। झूठ वचन नहिंमानु नरेशा ॥
एक सखी बोली तेहि पासा। पठवो पुत्र सासुके पासा ॥
यह सो आइ यहां लै जैहैं। सुत कन्या विदर्भ पहुंचैहैं ॥
कहिये और बात कछु नाहीं। पढ़न हेत पठये तुम पाहीं ॥
सुत कन्या तब रथ बैठावा। सारथि देश विदर्भ पठावा ॥
पहुंचे वेगि सारथी तहँवां। देश विदर्भ भीम नृप जहँवां ॥
दमयंती पठये लै साथा। सुतप्रतिपालकरो नरनाथा ॥
कलिजुआ कहेउ सो गाथा। चिन्तावन्त भये नरनाथा ॥
दो० यहकहिसारथि तबचलो राजहि कियो जोहार।

बहुत देश तहँ देखिके अवध नगर पगुधार॥
है ऋतुपर्ण भूपके नाऊं। हय सारथी रहे तेहि ठाऊँ॥
राज्य सकल तब पुष्कर जीता। यहकलियुगकीन्हेउँविपरीता॥
पुष्कर कहो रहो कछु अहई। दमयंती लावहु यह कहई॥
सुनतराउ भो क्रोध अपारा। रानी के आभरण उतारा॥
हारे अस्त्र आभरण जेते। राजस्थान आदि पुर तेते॥
सर्वस हारि उठे नल राजा। पांसा खेले भयउ अकाजा॥
दमयन्ती जानो यह राजा। कियो चलन वनकेर समाजा॥
रोइ चली दमयन्ती रानी। सोकरुणा किमिकरों बखानी॥
राज्य तजा वनवास सिधाये। ताकीकरुणा जाति न गाये॥
दासी दास बहुत बिलखाहीं। दमयन्ती नृप पाछे जाहीं॥
दो० चले जात नृपराज सों पुरजन धीर धराय।
दमयन्ती नृप ऊपमा रामचन्द्र सों जाय॥
पुष्कर दूत फिरे सब गाऊँ। नलराजा कर लेव न नाऊँ॥
उनहिं कोउ जो भोजन देहीं। पकरि ताहि कारागृह देहीं॥
नगर लोग नृप पाछे जाहीं। भयबशहोइबहुत बिलखाहीं॥
बाहर नगर रहे दिन तीनी। भोजनखबरि न केहू लीनी॥
क्षुधावंत तब राजा भयऊ। पक्षि एक तहँ देखत भयऊ॥
सुनु रानी यह बचन हमारा। यह पक्षी है आजु अहारा॥
आपन बसन तासु पर डारो। सो पक्षी लै गगन सिधारो॥
गा अकाश तब बोल्यो बयना। हमें न अबतुव देखौनयना॥
खेलि अक्ष सब राज्य गवांवा। बसन हीन तबहीं सुखपावा॥
राजासुनि यह चकित भयऊ। बसन लिये वह पक्षीगयऊ॥
दो० राजा कह रानी सुनहु क्षुधावंत भे प्रान।
परमहंस यह देहते चाहत कियो पयान॥
अर्द्ध बसन पहिरयो नरनाहा। रानी संग चले गहिबांहा॥
दमयन्ती धीरज धरि कहई। दुखसुखनारिपुरुपसबसहई॥

चले राह राजा अरु रानी। द्वै राहै तव आइ तुलानी।
दक्षिण दिशि यक्षमारग जाई। रानीसन बोले नलराई॥
दूसर मारग सुनु मनलाई। देश विदर्भ सूत यह जाई॥
पाय पितागृह सुखतुम रहऊ। संग हमारे दुख किमि सहऊ॥
रानी सुनत भरे जल नयना। रोदनकरतिकहतिअसवयना॥
कंत चित्त है तुम थिर नाहीं। ऐसे वचन कहत मुखमाहीं॥
पतिके दुखलों त्रिय दुखहोई। पितुको राज्य कामकेहिसोई॥
जो तुम दुख वनसहौ अपारा। तौंपतिसुख हमारसवछारा॥

दो० कुण्डिनपुर कहँ चलौ नृप जो मनमानेकंत।
तुमकहँ देखत भीमनृप करिहैं प्रेम अनंत॥

बोले राव भीम नृप पाहीं। ऐसे रानि जाव हम नाहीं॥
हमको पंथ देखावत कंता। कौनकाज पितु राज्य अनंता॥
चले जात वन गहन गँभीरा। रानी सहित धर्म नृप धीरा॥
एक वृक्षतर वनहिं मँझारी। सोयउ राउ संग ले नारी॥
देखि राउ उर में बहु सोगा। देखौं विधि कीन्हों कसयोगा॥
रविशशिजिनकहँ देखेउनाहीं। सो मम संग फिरतवनमाहीं॥
मेरे संग विपिन दुख पैहैं। बहु संताप कहां लौं सैहैं॥
जाउँ याहितजि जो वनमाहीं। आखिर पिताभवन सोजाहीं॥
यह विचार नृपके मनआयो। कलियुगहृदय धर्मडपजायो॥
वसन अर्द्ध लीन्हो पुनि राजा। दयाहीन कलिके वश साजा॥

दो० क्षण आवै नल निकटही क्षणकचले तजिमोह।
करै विचार अनेक विधि कवहुँ करै मन क्षोह॥

भीमसुता तजि चलिगे राजा। बहुरोदन करि चलेअकाजा॥
गये राव मन बहुदुख पागी। भीमसुता तेहिअवसरजागी॥
चहुँदिशिचितेचकितचितभयऊ। हाहाकरि बहुरोदन ठयऊ॥
हाहा स्वामी कंत हमारे। तजि मोकहँ वन कहांसिधारे॥
प्रथमहिं कहो न छांडव तोहीं। जबलगिनटयिचजीवनमोहीं॥

यहि दुख जीवन जात हमारा । वचनझूँठनृप भयउतुम्हारा
कीन्ह्यो सेवा सदा तुम्हारी । कौनि चूक भै कंत हमारी
आज्ञाभंगकबहुँ नहिं कीन्हा । केहिहितत्यागिहमहिंदुखदीन्हा
धीरज आइ देउ जो नाहीं । कैसे प्राण रहैं वन माहीं
कहौ नाथ कैसे तुम रहऊ । हमहिंछोड़िकिमिधीरजगहऊ
दो० सघन विपिन महँ रोवती दमयंती बिलखाइ ।
कौने अवगुण कीन्हेउ दीन कंत दुख आइ ॥
सर्पएक तब सन्मुख आवा । रानी पद मुख भीतर लावा
रानी विकल बहुत बिलखाई । हाय कंत मोहिं राखौ आई
नैषध देश स्वामि जब जैहौ । कहो कंत मोकहँ कहँ पैहौ
व्याध एक तहँ देखेउ जाई । वधिक सर्प कहँ टारेहु जाई
वधिक सर्प कहँ डारेउ मारी । पीड़ितकाम कह्यो सुनुनारी ।
काम वश्य होइ बोलेउ बानी । केहिहितवनमेंफिरो भुलानी ।
तब रानी कहँ चिंता आई । नलको मनमें पुनिपुनिध्याई ॥
रानी शाप वधिक कहँ दीन्हा । तुरतभस्मतेहिखलकहँकीन्हा॥
करत विलाप चली वनमाहीं । गिरिकंदर वन ढूंढ़तजाहीं ॥
कोई नल की कहै न बाता । रोवतरानी अति बिलखाता ॥
दो० भृगुवशिष्ठ मुनिअंगिरा नारदमुनि जहँ आहिं ।
करिविलापतबरानिसो पहुंची तेहिथलमाहिं ॥
जाइतिनहिं कीन्ह्यउ परणामा । आपनदुःख कह्यो तबवामा ॥
सबमुनिमिलियहआशिषदीन्हों।मिलिहैंनलमुनिजियसुखकीन्हों
अंतर्द्धान भये मुनि राई । चिन्ता उर रानीके आई ॥
सपनो सो मनमें यह जानी । मानुष जन्म कहा तबरानी ॥
कर्मवश्य वन फिरों भुलानी । ऐसे शोचि रानि अकुलानी ॥
नलको खोजत बहु दुख पाये । आपनपतिकहुं देखि न पाये ॥
नायक कहो नगर को जैये । खोजो जाइ कर्म गति पैये ॥
वनमहँ ढूंढि बहुत दुखपाये । ग्रामनगर खोजो चितलाये ॥

दो० चली संग बन राजके बसे एक बन आहिं।
सिंधुर यूथ बहुततहँ निकसे त्यहि बनमाहिं॥
कचरिगये तहँ बहु बनिजारा। हाइ हाइ सबकरें पुकारा॥
दमयंती देखो तब ताहीं। बहुत लोग कचरे बन माहीं॥
दमयन्ती कह करत बिलापा। मैं बचि गई कौन बश पापा॥
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई। दिना आठ दश पंथसिराई॥
नाम बाहुबल राजा आही। उत्तम नगर चित्तवर जाही॥
तौन नगर महँ पहुँची आई। लरिकनतहँदुखदीन्ह बनाई॥
मनमें दुःख अहै तेहिभारी। बावरिरूप फिरहि तहँनारी॥
ऊपर महल भूप महतारी। देखोतिननिजनयन निहारी॥
तब रानी यक सखी पठाई। दमयंती कहँ संग लै आई॥
तब पूंछेउ राजा महतारी। आपनि व्यथाकहौ सुकुमारी॥
दो० दमयंती यह भाष्यउ हम मानुष अवतार।
करोंकहांलगिबातबहु बिधिदुखलिखालिलार॥
कह्यउ रावकी तब महतारी। रहौ गेह काहू सुकुमारी॥
दमयन्ती बोली यह बाता। रहै धर्म्म रहिबे तहँ माता॥
होइ जौन शुचि सेवों चरणा। ऐसीहोइरहिहौं तेहि शरणा॥
ब्राह्मण सों पूछति मैं बाता। जाते सुख पावों मैं माता॥
सुनि राजाकी मातुबखाना। पुत्री कह्यउसोबचन प्रमाना॥
समकन्या जो अहै सुनन्दा। रहो तासुसँग कहिआनन्दा॥
तहां जाइ दमयंती रहई। नलकी कथा सुनोजसअहई॥
यक बनमें दावानल लाग्यो। तहँ यकसर्प जरे दुख पाग्यो॥
ऊंचेस्वर तब कीन्ह पुकारा। हाबिधि मोकहँ कौनउबारा॥
मैं नारदको डसिकैलीन्ह्यो। अचलशापमोकहँऋषिदीन्ह्यो॥
दो० चलि नहिं सक्यों हेततेहि बनमें लागीआगि।
कौनउबारै आनि अब जरतसकों अबभागि॥
तबहिं भूपमन दया जो आई। तुरतजाइ तेहिलियो उठाई॥

हि दुख जीवन जात हमारा । वचनझूँठनृप भयउतुम्हारा ॥
कीन्ह्यो सेवा सदा तुम्हारी । कौनि चूक भै कंत हमारी ॥
आज्ञाभंगकबहुँ नहिं कीन्हा । केहिहितत्यागिहमहिंदुखदीन्हा ॥
धीरज आइ देउ जो नाहीं । कैसे प्राण रहैं वन माहीं ॥
कहो नाथ कैसे तुम रहऊ । हमहिंछोड़िकिमिधीरजगहऊ ॥
दो० सघन विपिन महँ रोवती दमयंती बिलखाइ ।
कौने अवगुण कीन्हेउ दीन कंत दुख आइ ॥
सर्पएक तव सन्मुख आवा । रानी पद मुख भीतर लावा ॥
रानी विकल बहुत बिलखाई । हाय कंत मोहिं राखो आई ॥
निषध देश स्वामि जब जैहौ । कहो कंत मोकहँ कहँ पैहो ॥
व्याध एक तहँ देखेउ जाई । वधिक सर्प कहँ टारेहु जाई ॥
वधिक सर्प कहँ डारेउ मारी । पीड़ितकाम कह्यो सुनुनारी ॥
काम वश्य होइ बोलेउ बानी । केहिहितवनमेंफिरो भुलानी ॥
तब रानी कहँ चिंता आई । नलको मनमें पुनिपुनिध्याई ॥
रानी शाप वधिक कहँ दीन्हा । तुरतभस्मतेहिखलकहँकीन्हा ॥
करत बिलाप चली वनमाहीं । गिरिकंदर वन ढूंढ़तजाहीं ॥
कोई नल की कहै न बाता । रोवतरानी अति बिलखाता ॥
दो० भृगुवशिष्ठ मुनिअंगिरा नारदमुनि जहँ आहिं ।
करिबिलापतबरानिसो पहुंची तेहिथलमाहिं ॥
जाइतिनहिं कीन्ह्यउ परणामा । आपनदुःख कहो तबबामा ।
तबमुनिमिलियहआशिषदीन्हीं । मिलिहैंनलसुनिजियसुखकीन्हं
अंतर्द्धान भये मुनि राई । चिन्ता उर रानीके आई ।
सपनो सो मनमें यह जानी । मानुष जन्म कहा तबरानी ।
कर्मवश्य वन फिरो भुलानी । ऐसे शोचि रानि अकुलानी ।

बारह मास दुःख भो जाता। जाइकहेउ तब द्विजसबबाता॥
मोर स्वयम्बर कहियो जाई। सुनत दुःख जो ओरो पाई॥
आधोवसन तजो निशिनारी। वनबिचदीखनअसन बिचारी॥
यहै बात सुनि रोवै जोई। जानेउ नल राजा सो होई॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँपाई। ग्रामग्राम देशनप्रति जाई॥
अवध नगर राजा गृहगयऊ। तहां जाइके यहदुख कहेऊ॥

दो० सुनि वाहुक तहँ रोयउ ब्राह्मण पायउ आस।
यहै देखिके ब्राह्मण गे दमयंती पास॥

दमयंती पूछत बिलखाई। कहो विप्र सबबात बुझाई॥
जननी पास गई तब नारी। ह्वै उदास तब वचन उचारी॥
नलकी खबरि कही समुझाई। मिलन केर सबकरहु उपाई॥
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो। विप्र सुदेशहि तुरत पठावो॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा। कहै जाइ सम्मत उपदेशा॥
जो आजुहि नृप पहुँचहु जाई। तो दमयंती पावहु राई॥
को नल विन पहुँचै यहिवारा। यही प्रातिज्ञा चित्त बिचारा॥
माता सब विप्रन सन कहई। तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई॥
सब यह हाल सुनावहु जाई। है ऋतुपर्ण सभा जेहिठाईं॥
तब राजा वाहुक हँकराई। एकदिवस महँ पहुंचउँ जाई॥

दो० आजुहि पहुंचउँ तहांसो वरहुँ भीमजहिजाहि।
आजु करों पुरुषारथ देश विदर्भहि आहि॥

यह कहि विप्र तुरन्त पठाये। वाहुक रथहि साजि लैआये॥
राजा ते यह कहि समुझाई। आजु विदर्भ देउ पहुँचाई॥
सुनतहि राव भयो असवारा। जोतेउ रथ सारथितेहिवारा॥
छूटि वसन तब करते परेऊ। लेन हेत राजा मन करेऊ॥
कहेउ सूत शत योजन राहा। लोटत परलीन्ह्यो नरनाहा॥
इन्द्र केर चेला नरनाहू। वक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू॥
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहही। फूल पत्र फल येते रहहीं॥

बोल्यो व्याल पैग गनिजाहू। तब हमार होई निरबाहू॥
राजाचल्यो पैग गनि ताहू। दशौं पैग बोले नरनाहू॥
दशौंपैग जब कह्यो सुवारा। काट्योनलके मांझलिलारा॥
श्याम स्वरूप भूप ह्वै गयऊ। दैयक बसन मंत्रदुइ दयऊ॥
एक मंत्रपैहौ निज रूपा। यक मंत्रते ह्वैहौ भूपा॥
यहि विद्या भय तोहिं न होई। यहगति तोरिकीन्ह मैं जोई॥
है ऋतुपर्ण अवधपुर राई। ह्वै सारथी रहौ तहँ जाई॥
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ। यहतबकहि करकोटक गयऊ॥
शापहु ते सो भयउ उबारा। गयउभूप ऋतुपर्ण के द्वारा॥

दो॰ बाहुकनामा सारथी रहौं आपु के धाम।
होइविकट हय जौनतुम करौं शुद्ध मम काम॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई। भीम भूप मन चिंता आई॥
तबहीं विप्र समूह बोलाये। नल दमयंती खोजि पठाये॥
बहुतक देश फिरे द्विज जाई। बीरबाहुपुर देखेउ आई॥
विप्र सुदेव देखि गो तांहीं। दमयंती मिलि जलके पाहीं॥
ब्राह्मण को दमयंती चीन्हा। करिप्रणाम बहुरोदन कीन्हा॥
द्विजकोलै पुनि निजगृहआई। तबहिं सुनन्दा सब सुधिपाई॥
राज मातु तहँ दौरी आई। दमयंती कहँ चीन्हेउ जाई॥
भूपमातु पूंछी यह बाता। आपन देश नाम कहु ताता॥
भीम भूप के प्रोहित अहई। नाम सुदेव हमारो कहई॥
रोयें सुनन्दा नृप महतारी। अहोप्रथमनहिंकीन्हचिन्हारी॥

दो॰ सेवा कीन्हि हमारि बहु नल राजाकी बाम।
मैं अनचीन्हे तुमहिंसों करवायों सब काम॥

भीमसों ब्राह्मण जायसुनायउ। राजा निजदल लोगपठायउ॥
कन्या को लै गयउ भुवारा। राजा भीम विदर्भ सिधारा॥
पाछे नल कर खोजन हेना। ब्राह्मण विदाकिये नृपसेना॥
नाऽपर्ण बोले द्विज पाहीं। तिनसों अबदमयन्तीकहहीं॥

बारह मास दुःख भो जाता। जाइकहेउ तब द्विजसबत्राता॥
भोर स्वयम्वर कहियो जाई। सुनत दुःख जो ओरो पाई॥
आधोवसन तजो निशिनारी। वनबिचदीखनअसन बिचारी॥
यहे बात सुनि रोवे जोई। जानेउ नल राजा सो होई॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँपाई। ग्रामग्राम देशनप्रति जाई॥
अवध नगर राजा गृहगयऊ। तहां जाइके यहदुख कहेऊ॥
दो० सुनि बाहुक तहँ रोयउ ब्राह्मण पायउ त्रास।
यहे देखिके ब्राह्मणा गे दमयंती पास॥
दमयंती पूछत बिलखाई। कहो विप्र सबबात बुझाई॥
जननी पास गई तब नारी। ह्वै उदास तब वचन उचारी॥
नलकी खबरि कही समुझाई। मिलन केर सबकरहु उपाई॥
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो। विप्र सुदेशहि तुरत पठावो॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा। कहे जाइ सम्मत उपदेशा॥
तो आजुहि नृप पहुँचहु जाई। तो दमयंती पावहु राई॥
जो नल बिन पहुँचे यहिबारा। यही प्रतिज्ञा चित्त बिचारा॥
माता सब विप्रन सन कहई। तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई॥
तब यह हाल सुनावहु जाई। हे ऋतुपर्ण सभा जेहिठाई॥
तब राजा बाहुक हँकराई। एकदिवस महँ पहुंचउँ जाई॥
दो० आजुहि पहुंचउँ तहांसो बरहुँ भीमजहिजाहि।
आजु करौं पुरुषारथ देश विदर्भहि आहि॥
यह कहि विप्र तुरन्त पठाये। बाहुक रथहि साजि लै आये॥
राजा ते यह कहि समुझाई। आजु विदर्भ देउ पहुँचाई॥
सुनतहि राव भयो असवारा। जोतेउ रथ सारथितेहिबारा॥
छूटि वसन तब करते परेऊ। लेन हेत राजा मन करेऊ॥
कहेउ सूत शत योजन राहा। लौटत परलोग्यो नरनाहा॥
इन्द्र केर चेला नरनाहू। बन बहेर मिला तेहि ठाहू॥
देइ राय ऋतुपर्ण सो कहहीं। फूल पत्र फल केते रहहीं॥

धेको तरसे फल अरु आता। भूमी माहिं परे झरि पात
यक संशय फलहे तरु माहीं। पांचकोटि दल हैं तरुवाह
बाहुककह्यो उतरि हमगनिहं। फिरत्वारजो सममतिमनि
दो० बाहुक हठ करिके गने पत्र फूलफल ताहि।
जो कछु भापतराज भो सो लखतरु में आहि॥
बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना। अक्ष विद्या यह राव बखान
बाहुकअक्षदुगुनगनिदीन्हयउ। गणितमंत्रराजासो लीन्हउ
जब नल भूप मंत्र यह पाये। तबसों कलियुग चले पराये
पूरुब विष ज्वाला तनुलागा। तौन त्रासते कलियुगभागा
अस्थित भयउ बहेरे माहीं। ताते पाप बहेरे आहीं
यह कौतुक तब मारग भयऊ। पाछे देश विदर्भहि गयऊ
तब पूछ्यो यक भीम भुवारा। कह्यो आपजू कहँ पगुधारा
ह्वै लज्जित नृपकहेउ बुझाई। मिलन आपुकहँ आयनभाई
राजा बहुविधि आदर कीन्हा। उत्तम सदनवास तब दीन्हा।
दमयंती तब रच्यो उपाई। नलको चीन्ह्यो मन में आई।
दो० करन रसोई साज सब बाहुक पास पठाय।
पावक अरु जल ना दियो कीन्हों ऐस उपाय॥
पवन ते पावक आनेउ पानी। पावकध्यानअगिनिपुनिआनी॥
दासी डरी देखि ब्योहारा। दमयंती सों करत विचारा॥
दमयंती दोउ बाल पठाये। दासिसँग रथशालहि आये॥
देखि सुतन कहँ जलभरिनैना। बाहुक ते दासी कहबैना॥
क्षुधावंत बालक सुनि लेहू। भोजन आनि कछुकइनदेहू॥
तब बाहुक बालककहँ दयऊ। लै बालक अंतःपुर गयऊ॥
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना। निश्चय नल दमयंतीजाना॥
तब दमयन्ती आई तहँई। रथशाला बाहुक है जहँई॥
पछिले दुखकी कथा चलाई। सुनत रुदन कीन्हो नरराई॥
रानी कहो कृपा अब करहू। माया तजो रूप सोधरहू॥

दो० करकोटकको ध्यानधरि जप्यो मंत्र शतआनि।
पूर्वरूप तब पायऊ नलको तब पहिंचानि॥
तबऋतुपर्णचकिततलखिभयऊ। बहुविनती राजासन कियऊ॥
क्षमा करो सब दोष हमारा। मैं साचा तब जानि न पारा॥
तब नर भीम अनुग्रह कीन्हो। नृपऋतुपर्णकोबहुसुखदीन्हो॥
नलहि पाइ तब हर्षितराजा। आज्ञा भै तब बाजे बाजा॥
सो ऋतुपर्ण विदा तहँ भयऊ। अवधनगर तब राजागयऊ॥
तब नरवर भूपति पगुधारा। लैदल परिग्रह संग भुवारा॥
जा ऋतुपर्ण सों विद्या पाये। तब पुष्करपर जुआ लगाये॥
मंत्र यंत्र नल जेते जाई। हारो पुष्कर नृप को भाई॥
देश कोश साहस भण्डारा। रथगजद्रव्य जोहतो अपारा॥
जीते नल पुष्कर जो हारा। फिरिक्रोधितकै कहेउ भुवारा॥
दो० दमयंती के दास तुम कुटुंबसहित हो आन।
कलिदुख हमकहँ दीन्हऊ तुमहिं कहेको जान॥
पुनि नल भे नैषध के राजा। आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा॥
अर्द्ध वसन रानी ले दीन्हे। अर्द्ध फारिजो नलनृपलीन्हे॥
रावदेखि सो अतिदुख कियऊ। बैठे राजा दुख बिसरयऊ॥
धार्मिकनल तब धर्महि कीन्हो। एक ग्राम पुष्कर को दीन्हो॥
ऐसे राजा दुख सो पाये। पुण्य वीर राजा कहवाये॥
वृहदश्व मुनि पुनि अनुसारा। सुनो युधिष्ठिर धर्म्मकुमारा॥
यहि के सुने पाप तनु भागे। व्याधिहोय सोतननहिंलागे॥
दुखी सुनै सबदुख मिटिजाई। बन्दितहो त्यहिबन्दिछोड़ाई॥
राज्य ते हीन सोराज्यहि पावै। जेहिदुख बहुतसुनै क्षयपावै॥
होयहो धर्म्मज तुमहुँ भुवारा। जोयहकथा सुनेहु सुखसारा॥
दो० वृहदश्वमुनि भाषेऊ धर्म्मराज सुख पाव।
नशैपाप तनु सुखबढ़ै नलचरित्र जोगाव॥
इतिश्रीवनपर्वणिनलोपाख्यानेनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

बहुदिन राजा तेहि बन रह्यऊ। यकदिननारदमुनि तहँगयऊ।
नारद कहि सम्वाद अपारा। तीरथ वरत महातम सारा।
तेहिअन्तरसुनिके यहभयऊ। लोमशऋपिपुनितेहिथलगयऊ॥
राजा देखत पूजा कीन्ह्यउ। अर्घपाद्य दै आसनदीन्ह्यउ॥
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई। मोकहँ तुम ढिग इन्द्रपठाई॥
इन्द्रलोक यक दिन पगुधारा। देखा अर्जुन सभा मँझारा॥
सिखे शस्त्र अरु अस्त्रअपारा। परमअनन्दितआहि कुमारा॥
पारथ हित चिन्ता तुम पाये। सुरपति ताते हमहिं पठाये॥
कहन कुशल पारथ की राजा। हम इतको आये यहिकाजा॥
सुनहु तहां हम जात हैं राऊ। राजा सुनत परम सुखपाऊ॥
सहित बंधु नारी नर नाथा। तीर्थराजको चलि मुनिसाथा॥
धौम्यनाम प्रोहित सँगलागे। चलेजात मनअतिअनुरागे॥
तीर्थराज के दर्शन कीन्हे। परम हर्ष भूपति मन लीन्हे॥
औरो पुनि तीरथ हैं जेते। परसे कहत न आवैं तेते॥
नैमिष बन काशी अस्थाना। गया सुरसरी आदि बखाना॥
सर्व तीर्थ परसे तब राजा। चित उदवेग धनंजयकाजा॥
गंधमदन पर्वत भे पारा। बद्रिक आश्रम गये भुवारा॥
बिंदुतसर तीरथ तब देखा। नाना बन पर्वत बहुलेखा॥

दो॰ पुनि बिंदुतसर तीर्थ महँ पांचौ जने अन्हाइ।
पुष्प पत्र फल शोभित देखत तरुवर जाइ॥

पूर्व ओर से पवन उड़ाई। पुष्प एक तेहि सरमहँ आई॥
अहैं सहसदल पुनि तेहिमाहीं। सुंदरबहुत सुगंधित अहहीं॥
जलतें फूलद्रोपदी लीन्हा। भीमसेन के आगे कीन्हा॥
आइ सो फूल देवके लायक। सुनोवृकोदर हो ममनायक॥
वेगि अनुग्रह मोपर कीजे। यकशतपुष्पआनिमोहिंदीजे॥
सुनिके बचन वृकोदर कहई। देहों आनि शोच जनि करई॥
धनुषबाण कर लेकर धाये। जौने दिशिसों पवनते आये॥

चलो सिंधुसम भीम रिसाई। गंधमदन गिरि देखेउ आई॥
सो पर्वत गहवर वन भारी। नाना सर्प रहत विषधारी॥
नाना मोर नृत्य तहँ करई। कोकिलकुहकिहरषिजियभरई॥
दो० छयो ऋतु तहँ प्रकट शुभ करत भँवर गुंजार।
अमृतसम फल लाग्यऊ हरष्योपवनकुमार॥
बहुवन भीतर हरषि अधारा। कुन्तीसुत जो पवन कुमारा॥
तेहिवनविहरत भीमसोफिरहीं। नादसिंहसम पुनिपुनिकरहीं॥
हने ग्राह मृग गेंड़ा भारी। क्रीड़ाकरइमिवनहिं सँभारी॥
भगे जंतु पुनि वन के नाना। सिंह भालु मृग सबै पराना॥
गरजे भीम जंतु सब भागे। कदलीवन देख्यउयक आगे॥
महागँभीर सो वह वन अहई। क्रीड़ित भीम सोवहवनरहई॥
तोरेउ वृक्ष तोन वन नाना। मिष्टपाकफल करि सो पाना॥
गरजे भीम करे फल पाना। जीव जंतु सब शंका माना॥
तेहि वन माहँ रहैं हनुमाना। शब्द सुनत सो करेहुपयाना॥
हनूमान तब देह बढ़ावा। उज्ज्वलरूप अनूप सुहावा॥
दो० बोले कुबचन भीमसों बनतें कियो उजार।
मेरे हाथहि मरण तुव भाषो पवनकुमार॥
यह कुबेर वन सब जगजाना। करत भोगयहकहहनुमाना॥
हनू संग जो वन रखवारा। दुओ वीर बलपुंज जुझारा॥
तिन सब आइ कही यहबाता। भयोभीमसुनि क्रोधते ताता॥
धनुषबाण पुनिकरले लीन्हेउ। युद्धवृकोदरबहुविधि कीन्हेउ॥
हते भीम जे वन रखवारा। तब कुबेर पहँ जाइ पुकारा॥
मानुष एक गहे धनुबाना। कदलीवनकीन्हेउ खइकाना॥
हनूमान तेहि बरजन ठाना। सुना कुबेर आपु जो काना॥
आइ कुबेर हनू समुझाई। करो विरोध न तुम कपिराई॥
देखो तुम यह मानुष नाहीं। मानुष बेष देव कोउ आहीं॥
लेहु फूल खावो फल नाना। जेतिक मनमहँ होइ सुजाना॥

दो० हनूमान यह सुनतही क्रोधे बहुत बढ़ाइ।
फूलकाज विधि भीमसों कीन्हों ऐस उपाइ॥
हनूमान बोले यह बानी। सुनियेभीम वचन असजा
रामकाज लगि मैं यकबारा। लंका वीर बहुत संहा
सागर नांघि लंक मैं जारा। महिरावण पाताल सँहा
यहै नेम मेरे मनमाहीं। मैं कछु प्रीति देखावत नाह
इतना प्रेम आप करिलेई। पाछे फूल जान लै दे
यह हमार लंगूर जो अहही। ताते बात कहत तोहिं पाह
भूमि ते मम लंगूर उठावो। लैके फूल जान तब पावो
सुनतहिभीम कोप जियगह्यऊ। टारनचित्त लँगूर सो करेउ
बायें हाथ गह्यउ तब ताहीं। नेक न डोला सो महि नाहीं
फिरिबल कीन्हो भीमजुभ्झारा। बज्र लँगूर टरत नहिंटारा
दो० गहेउ गदा कर भीम जो धरो भूमि महँ ताहि।
दोनों कर लंगूर सो गहो भीम कर माहिं॥
हारेउ भीम करेउ बहु करणी। कपि लंगूर न डोलत धरणी
भीमसेन यह मन में जाना। महावीर ये हैं हनुमाना
हारो भीम ठाढ़ होइ रह्यऊ। हर्षि गात कपि बोलत भयऊ
कै प्रसन्न भाष्यो हनुमाना। मांगो वर जो तुम मनमाना।
यहसुनिभीम कहन असलागे। अमृतवचन हनुमानकेआगे।
जब कौरव कहँ मारन जाई। तबकपि करियो मोरसहाई।
रामकाज कीन्हेउ जिमिभाई। तैसेइ होउ हमार सहाई॥
हनुमान बोले यह बाता। भीमसेन सुनिये यह ताता॥
पारथ के रथपर हम रहिहैं। रक्षा करत अस्त्र सब सहिहैं॥
ऐसे वचन कहे हनुमाना। भीमसेनसुनि बहु सुखमाना॥
दो० यह रहस्य राजा सुनो हनू भीम व्यवहार।
दूनों पवन पुत्रबल कह सुनि हृदय विचार॥
भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना। भीमसेनलखि बहुसुखमाना॥

लेहु फूल जेते मन भावै। यहै हनू तब बात सुनावै॥
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ। अपने गृहकुबेर तब गयऊ॥
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं। तोरत फूल जौन मन माहीं॥
बिहरत भीम हरषि बन माहीं। सुमन सुगन्धिततोरेउआहीं॥
भीमसेन बन में बहु गरजैं। हांक सुनत पशुपक्षी लरजैं॥
व्याघ्र सिंह औ गज मतवारे। गेंड़ा महिष अनेकन मारे॥
भीमसेन के शंका भयऊ। भागिजन्तु तेहि वनतेगयऊ॥
जनमेजय तब हर्षितभयऊ। वैशम्पायन कथा सो कह्यऊ॥

दो० भीमसेन मन हर्षित लीन्ह फूल करिहेत।
वैशम्पायन भाषत सुनिये भूप सचेत॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते वनपर्वणि
भीमहनुमानसंवादेनाम पंचमोऽध्यायः ५॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ। कहँ ममबन्धु वृकोदरगयऊ॥
जयअकुलाइ मनों उर दरकै। कुशकुन देखिबामअँगफरकै॥
नेशिस्वपना लखिबिस्मयराऊ। कुशलक्षेमविधिभीममिलाऊ॥
कहा धौम्य यह वचन बिचारी। घटउत्कचसुमिरनअनुसारी॥
घटउत्कच आये नृप पासा। काआज्ञा यहवचन प्रकासा॥
तब राजा यह बोलत भयऊ। गंधमदनगिरिभीमजोगयऊ॥
नाना कुशकुन देखियत भाई। ताते चितचिंता अधिकाई॥
ौनिउ बन्धु पुरोहित रानी। राजाकह यह वचन बखानी॥
सबको सुत लै चलिये तहँवां। गंधमदनगिरिभीमहै जहँवां॥
सुनत हरषि उठिकरो प्रणामा। जोआज्ञा कहिये सो कामा॥

दो० पांचोजने चढ़ाइ पुनि पीठि आपने आन।
गंधमदन पर भीम जहँ कीन्हे तुरत पयान॥

नाना बन सब देखत जाई। घटउत्कच के ऊपर राई॥
ई इतिहास पंथकर अहई। लिखे न जाई सूक्ष्मसोकहई॥
गंधमदन पर्वत जेहिठाईं। धर्मराज प्रविशे तहँ जाईं॥

करि बंका ॥

 वरियारा ॥

दैत्य अशंक मानि नहिं शंका । हांकत बीर को पर धावा ॥
तबहिं द्रोपदी धर्मकुमारा । पीछे नकुल वी सुतराजा ॥
इनकहँ तुरत भूमि वैठावा । देकर हांक भीम हिं ।
भीमकही निज मरणके काजा । पापी लै भाजे हिं ॥
दो० आजुमारि तोहिं एकशर पठवों यमके क्षउपारा ॥
यहकहि गदा घावतेहि दीन्ह्यो मस्तकम पलटाई ॥
गदाघाव तब भीम सँभारा । तबहीं खलयक विस्तारा ॥
मारो वृक्ष भीम पर जाई । मारो गदा भीम घनघोरा ॥
दोनों वृक्ष युद्ध परिहारा । मल्लयुद्ध तहँ पुनि जनुसोई ॥
दोनों वीर लरें बरजोरा । करें युद्ध मानो तहिवारा ॥
कंपमान धरणी महँ होई । प्रलय काल आवे परिवारा ॥
मुष्टिक एक भीम तब मारा । छांड्यो दैत्यप्राण य ।
परम हर्ष भो धर्मकुमारा । और अनन्दित भे ॥
दो० आशिर्वादहि देत मुनि राजा सूंघत मा त गाये ॥
भुजपूजत लोमशऋषिय हरषि आपने हा हिवारा ॥
परम हर्ष राजा तब पाये । कहि संक्षेपहि भा तोमाना ॥
पुनिसबमिलिके कीन्ह बिचारा । बद्रिकआश्रम गे त भयऊ ॥
नाना पुष्प रम्य अस्थाना । रहे हर्षि वन राव नपाऊ॥
सब्बँत चारिवीति इमि गयऊ । पंचम वर्ष उपस्थित
यही प्रकार रहे वन राऊ । धौम्यआदि मुनिभो ॥
दो० नाना ...

धवलाचल पर दरश हमारा। निश्चय पैहो धर्म भु
चलो सो पर्वत देखो जाई। पारथ दरश हेत कहँ
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी। तीनों बंधुरु लोमश ज्ञ
कीन्ह विचार चले सब तहँवां। पर्वतधवल आइपुनि जा
लोमश धौम्य संग त्रियभाई। ज्ञानकथा बहु बरणत
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा। पूरण वारि राव अवर
सोहै मालपृष्ठि तेहि पासा। धवला पर्वत परमप्रक
फटिकशिला तहँ देखत भयऊ। दानवघोर तहां पुनि रह

दो० रक्ष यक्ष दानव बहुत सब कुबेरके दास।
सो पर्वत देखों तहां पुरी कुबेर प्रकास॥

देखि भीम तहँ राक्षस जेते। वेगिहि भीम सँहारेउ
तबहिं कुबेर मरम सब पाये। युद्ध हेतु तब आपु सिध
तब प्रणामकरि धर्म्मकुमारा। शुद्ध वचन कहि युद्ध नि
हर्षित ह्वै कुबेर पहँ गयऊ। धर्म्मराज तेहि पर्वत रह
अर्जुन देवलोक महँ रहयऊ। अस्त्रअनेक सुरनते लह
देवन केर शत्रु जे पाये। मारिसकल यमलोक पठ
जासों देव युद्ध मों हारा। सो मारे सब पाण्डुकुम
होइ सन्तुष्ट देव बर दयऊ। कीटअस्त्र तब वासव दय
समय एक तहँ सो सुर आई। बैठि सभा महँ सभा बन
यम कुबेर जलपति बैसन्दर। बैठे और अनेक मुनिन

दो० तब अर्जुन कहँ गोदलै बैठे देव भुवार।
नृत्यकरततहँनृत्यकी हर्षितसभामँझार॥

नाम उर्वशी देव अप्सरा। नृत्यकरत सो सभा मांझ
[illegible] बजावे। नाना रूप नृत्य लय ल

प्रीति सहित अर्जुन तेहि हेरा। सो सुरपति देखेउ तेहि वेरा॥
जो उर्वशी तुमहिं वश करेऊ। तौनत्रियासुत तुमकहँदयऊ॥
अर्जुन कहो जाय जो हारा। इनते प्रकटो वंश हमारा॥
उव्यो अखारा नृत्य सेराना। अपने गृह सुर कियोपयाना॥
सुरपति गे अपने अस्थाना। निजथलगे पारथ बलवाना॥
अर्द्ध निशा वीती सो आई। तेही समय उर्वशी आई॥
अर्जुन के मन्दिर पगु धारा। देखे लगे कपाट दुआरा॥
बहुत यतनकरि खोलिकेवारा। अर्जुन कहँ त्रैवार पुकारा॥
दो० चेत पाइ अर्जुन तब मन में करें बिचार।
अर्द्धरात्रि किमिउर्वशी आई निकटहमार॥
कहै धनंजय वचन विचारी। ममढिग केहिहितआईनारी॥
अर्द्धरात्रि वीती पुनि गयऊ। निद्रा वश्य देव सब भयऊ॥
जो कछु दुखहै चित्त तुम्हारा। कहो प्रात सो करौं उधारा॥
राति जाउ अपने गृह नारी। पुरुष पियार एक की नारी॥
पारथ बात सुनी सो नारी। मोहिं मदन करहै अनुसारी॥
हृदय समानो रूप तुम्हारा। कामव्यथा तनजरतहमारा॥
सुनत धनञ्जय विस्मयमाना। त्राहित्राहिकरि मूंदेउ काना॥
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी। इन्द्र अप्सरा मातुहमारी॥
ऐसि बात अपने मुखमाहीं। भूलिबातजनि कहुमोहिंपाहीं॥
सुनत उरवशी व्याकुल भयऊ। दुःखित ह्वै पारथ ते कह्यऊ॥
दो० हम आई तुम आशकरि सोतो भई निराश।
जानेउँ अहो नपुंसक यह कहि वचन प्रकाश॥
ब यह शाप पार्थ कहँ ...

होउ नपुंसक दीन्हो शापा। ताते मो मन भा संत
सुनिके इन्द्र महादुख पावा। तुरत सभामहँ ताहि बुल
इन्द्र कहे नारी कह कीन्हा। मो सुत कहा शाप तें दी
सुनत उर्वशी लज्जा पाई। हाथजोरि तब विनय सुन
मेरो शाप होय उपकारा। क्रोध न कीजै देव भुव

दो० होइ यक वर्ष नपुंसक नृप विराटके देश।
संवत बीते शाप ते होइहौ मुक्त सुवेश॥

यह वर तब पारथकहँ दीन्हा। अपने भवनगमनतबकी
तबहिं इन्द्र पुत्रहि समुझाई। देव अस्त्र दीन्हेउ बहुअ
कुण्डल कवच इन्द्र तबदीन्हों। भापेमुनि अर्जुन शुभकी
मिलि सब देव शंख यकदीना। जाके नाद शत्रु बलही
पांच वर्ष सुरपुर महँ भयऊ। पारथ तबहिं इंद्रसों कहय
आज्ञा दीजै इंद्र भुवारा। परसों पद कह धर्म भुव
सुनिके इंद्र तुरत वर दयऊ। तबरथमातलिसाजतभय
भेंटि सकल सुर चढ़े विमाना। मृत्युलोककहँ किया पया
रथ प्रवेश करि आयउ तहवां। धवल शिखरपरराजाजह
धर्मराज पारथकहँ देख्यउ। पुनिनिजजन्मसुफलकरिलेख्य
पारथजाय चरण नृप गहेऊ। पूछी कुशल हर्ष बहु भय

दो० सर्व कथा विस्तार से पारथ किया बखान।
राजा आगे सहित विधि बरणयो बहु सुजान॥

जेहिविधि शंकर दरशन पाये। जिमि किरात ह्वै हरतहँ आ
जैसो युद्ध भयो तेहि ठांा। सुरपति जैसे दरशन पा
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ। जैसे अस्त्र लाभ तहँ भय

तवहीं मातलि रथले गयऊ। धर्मराज आनंदित भयऊ॥
पुनियहकथासो ऋषिहिसुनाये। घटउत्कच तेहिअवसरआये॥
करि प्रणाम सब के पद बंदे। कहे वचन तब परम अनंदे॥

दो० देश छोड़ि करि राजा आये दूरि पयान।
चलो सबै काम्यक बनहिं हर्षित भये सुजान॥

सुनत बात यह सब मन भाये। तब सबकहँफिरिपीठिचढ़ाये॥
सबको ले काम्यक बन आये। रहे तहां आनंद बहु पाये॥
काम्यकबनहिं बहुतदिनगयऊ। परमअनंदितसबजनरहयऊ॥
तहां बहुरि आये यदुनाथा। मिले आइ पांडवसुत साथा॥
मिलेकृष्ण पुनि धीरज दीन्हा। द्वारावती गमन पुनि कीन्हा॥
अभिअंतर तब कथा सुनाये। मार्कण्डेय महामुनि आये॥
बहु सम्वाद तहां मुनि कीन्हों। सो संक्षेप कहन में लीन्हों॥
ऐसे पाण्डव वन महँ रहयऊ। कथाप्रसंग धर्म तबकहयऊ॥

दो० पंच बंधु अरु द्रौपदी रहे पाण्डु वनमाह।
भारत पुण्य कथा यह जनमेजय नरनाह॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणिअर्जुन वरप्रोक्तोकाम्यकवनआगमननामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

ऐसे पांडव वन सुख पाये। दूत जाय कुरुनाथ सुनाये॥
काम्यक वन महँ पांचो भाई। तबहिं विचार करें शतभाई॥
करण दुशासन शकुनी राजा। मंत्र कुमंत्र करें सबकाजा॥
बनोवास पांडव दुख नाना। बलकलबसन करें परिधाना॥
माथे जटा तपी के भेशा। देखियशत्रु कियो उपदेशा॥
देखब जाइ द्रौपदी पासा। सबमिलिकै करिबे उपहासा॥
दुखमें शत्रु देखिये राई। याते आनँद और न भाई॥
दुर्योधन दल साज करायो। भीषम द्रोण भेद नहिं पायो॥
और लये रथ पैदर साजा। चले हर्षि दुर्योधन राजा॥
काम्यक वनमें पहुंचे जाई। देखत ताहि हरष बहुपाई॥

दो० काम्यकवन देखा तबै एक सरोवरआहि।
देवरु किन्नर गंधरव क्रीड़करैं तेहि माहि॥

व चरित्र सुनहु सज्ञाना। कुरुपतिको होइहैअपमाना॥
ाम चित्ररथ गंधूव राऊ। स्त्री सहित सरोवर आऊ॥
ली सहित सोक्रीड़त भयऊ। वाही थल दुर्योधन गयऊ॥
दुर्योधन लखि लज्जा पायो। क्रोधवन्त गंधर्व सुनायो॥
अरे मूढ़ त्वहिं यह हंकारा। ताकरफलतुमलह्यउभुवारा॥
हाथ अस्त्र वह गन्ध्रव नाना। दियोतिनहिं आज्ञा परमाना॥
मारु मारु यह आयसु दीन्हें। अस्त्र गहेसो धरिसव लीन्हें॥
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई। गन्ध्रव मानुष समनहिं कोई॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा।यहलखिकरणक्रोधअतिकीन्हा॥
हाथ अस्त्र लैकै तव धाये। गन्ध्रव दलमें वाण चलाये॥

दो० गन्ध्रव दलमें वाण वहु भयो भूमि अँधियार।
ऐसे मारे करण वहु क्रोधित वाण अपार॥

गन्ध्रव सबै पराभव कीन्हे। क्षतलागे तव जात न चीन्हे॥
मारेउ करण खेंचि कर तीरा। चल्यउ रुधिर गंधर्व शरीरा॥
अस्त्र अनेक करत परिहारा। रुण्ड मुण्ड गन्धर्व सँहारा॥
काहू हाथ कटेउ अरु पाऊ। काहू केर हृदय महँ घाऊ॥
रुधिर नदी गन्ध्रवरणभयऊ। भागे सबै मार्ग तव लयऊ॥
भागे सब कहुं खोज न पाये। पाछे देखत करण सिधाये॥
देखि पराभव इन्द्र कुमारा। हाथ धनुप शर तव परचारा॥
तव गन्धर्व दुशासन मारा। परोदुशासन भुवि असभारा॥
रथते दुश्शासन भुइँ आये। लज्जावंत महा भय पाये॥
करणके संग तबै रणठाना। महावीर दोउ एक समाना॥

दो० क्रोधवंत गंधर्व पति मारे वाण प्रचण्ड।
करणसँभारि सक्यउनहीं कटेछत्रयरुदण्ड॥

मारे रथ सारथि संहारा। हाथ धनुपगहि करणगुवारा॥

रि तव गन्धव शर नाना। शरनतेज रजभयो निदाना॥
रुदल सबै पराभव दीन्हा। दुर्योधनहिं बांधि पुनिलीन्हा॥
डव कर वैरी में जाना। रहों तोहिं दुख देहोंनाना॥
रुपति कहँ बांधेलिय जाई। देखेउ भीमसेन तव धाई॥
खि हरषि मनआये तहँई। रहे धर्मसुत पुनि जेहिठहँई॥
रि हाथ राजासन कहई। ऐस दुःख दुर्योधन सहई॥
योधनहिं बाँधि लै जाई। चलिकै राज्यकरौ सवभाई॥
हा अधर्मि शत्रुभो नाशा। मिल्यउराजतुव बिनहिंप्रयाशा॥
नहिं राव यहकहोबखानी। कैसे नाश भयउ अज्ञानी॥
दो० कौन प्रकारहि हेतुकहु कैसे शत्रु विनाश।
सोसव ममआगे कहो कीन्हों भीम प्रकाश॥
ही भीम राजहि समुझाई। गा अखेट दुर्योधन राई॥
धि रचनाते गंध्रव आयउ। युवतीसँग सरक्रीड़ा ठायउ॥
वा तहँ दुर्योधन राऊ। गंध्रवगण रण तहांउपाऊ॥
ण आदि सेना सव भागी। छांडो राजहि परमअभागी॥
व राज महाबल करेऊ। दुर्योधनहि बांधि लै गयऊ॥
त धर्मसुत बिस्मयभयऊ। भीमसेनते यहिविधिकह्यऊ॥
ति शास्त्र नहिंजानतअहहू। मूरुख रूप सदा तुमरहहू॥
पारथ ते यहकहि राजू। लेउ छड़ाइ सुयोधन आजू॥
बंधुसों कलह प्रमाना। बंधु बंधुको बल जगजाना॥
हीं तुरत लयावहु भाई। गंध्रव कहँ तुव दे बिचलाई॥
दो० जो गंध्रव छांड़े नहीं तौ तेहि करव सँहार।
मारि निपातो धरणि पर कुरुपति लेहु उबार॥
आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई। हांक दई गंधर्वहि आई॥
देखत पारथ गंध्रव नाना। शीघ्रवन्त तव करेउपयाना॥
तव बिचार गंधर्वन कीन्हा। दुर्योधनहिं डारि तव दीन्हा॥
तव पारथ असवाण चलाये। भूमि स्वर्ग सोपान वनाये॥

अब आज्ञा दे धर्म नरेशा। गयउ द्रुमति सो अपनेदेशा॥

दो० धौम्य नाम प्रोहित तहां धर्मराज के साथ।
बारह संवत पूरभे कहो बात नरनाथ॥

अब अज्ञात बरष परमाना। कहां रहउँसो करहु बखाना॥
कुरुके दूत फिरै सब ठाऊ। कहां दुरौं सो कहो उपाऊ॥
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं। बारहबर्ष फेरि बन जाहीं॥
तौ हमार दुख छूटत नाहीं। रहिये गुप्त कौन बन माहीं॥
यहबिचारि मनरोदन कीन्हा। हमें बिधाता बहुदुख दीन्हा॥
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई। धर्मराज ते कह समुझाई॥
तुम तौ धर्म रूप हे राऊ। बिपतिकालकादरकसआऊ॥
सुख दुख व्यापक है संसारा। चित्त धीर्यकरु पांडुकुमारा॥
माया बिष्णु गुप्त हैं राजा। गुप्त रूप देवन कर काजा॥
बामनरूप छल्यउ बलिराऊ। देवकाज कीन्हयउ परभाऊ॥

दो० राम रूप माया धनी रावण कीन्ह सँहार।
चित चिन्ता केहि हेतकर सुनिये धर्म भुवार॥

यहि प्रकार प्रोहित समुझाये। तबहिं धीर राजा मनआये॥
पांच बन्धु अरु प्रोहित संगा। करत तहां बहुकथा प्रसंगा॥
जयद्रथ बहु लज्जा जियपावा। पार्थ भीम अपमान करावा॥
राजवन्त हर सेवा ठाना। गंगाधर को कीन्हों ध्याना॥
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ। पाइव जीती मन महँ धरेऊ॥
भइ प्रसन्न तब शंकर आयो। मांगुमांगु वर वचनसुनायो॥
करि परणाम जयद्रथ कहई। जीता पांच पाण्डवन चहई॥
गंगाधर बोले यह वाणी। पारथ तनमन शारँगपाणी॥
चारिहु बन्धु जीतिहो राऊ। पारथ कहँ जीते नहिं पाऊ॥
यहवर तो गंगाधर दीन्हों। जयद्रथ हृदय हर्ष बहुकीन्हों॥
यह बनपर्व कही मैं गाई। रहे बने महँ धन्नजराई॥
फल तीरथ करि अरुदाना। सिन्धु आदितरिता अस्नाना॥

जो केदार बद्रिकाश्रम जाये। जगन्नाथ के दरशन पावे।
नाना दुख ब्रतकरि जो सहई। सो वनपर्व सुने फल लहई।

दो० कहि वनपर्व कथा यह सुनुजनमेजय राय।
पुण्य कथा श्रीभारत सबलसिंह कहि गाय।

श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेवनपर्वणि
बंदुर्योधनयुद्धवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति वनपर्व समाप्तम् ॥



महाभारत

विराटपर्व्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जिसमें

द्रौपदी सहित युधिष्ठिरादि पांचोंभाइयोंका व्यासोपदेश से नृप विराट के यहां शैरंध्री कंक जयन्त वृहन्नलासेनीपाहुक नामसे दासवत् रहना जयन्तकरके मल्लवध व हस्ती मदनाश पुनः शैरंध्रीरूप देखकर कीचक का आसक्त होकर जयन्तकरके मरना अरु धेनुहरण जान वृहन्नलाकरके समस्त कौरवादि वीरोंका परास्तहोना व अभिमन्यु विवाह श्रीकृष्णका पाण्डवोंको पञ्च ग्रामदेने के लिये समझाना व उसको न मानकर महाभारत रचना आदि कथा वर्णन है

ग्यारहवींबार

लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर (सी. आई. ई) के छापेखाने में छापीगई
सन् १९०२ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ विराटपर्व ॥



कहे सकल वनपर्व के ऋषि-नरेश को ठाट ।
सबलसिंह चौहान कहि भाषत पर्व विराट ॥
धर्मराज तब विकल के सुमिरयो व्यास मुनीश ।
नाशन दास कलेश हित आये जिमि जगदीश ॥

दण्ड प्रणाम नृपति उठि कीन्हा । मुनिवर विहँसि लाय उर लीन्हा ॥
चारिउ बंधु द्रौपदी रानी । परसेउ चरण व्यासके आनी ॥
आय दीन मृग चर्म बिछाई । चरण धोय बैठायो आई ॥
पातन को व्यजना कर लीन्हों । पवनकुमार पवन तब कीन्हों ॥
भोजन तबै लै आई रानी । नकुल दीन्ह जल भाजन आनी ॥
करि भोजन ऋषि शयन अनन्दे । सहदेव आय चरण तब वन्दे ॥
कह्यो राउ नयनन भरि वारी । भलेहि नाथ मम सुरति विसारी ॥
कह्यो कलेश बरणि नहि आवा । अन्धसुवन मोहिं बहुत सतावा ॥
कपट रूप करि भूमि लड़ाई । सबहिं बोलाय सुनाय कराई ॥
दो० द्वादश वर्ष जाइकै विपिन बसेरो लेइँ ।
खोज न पावहिं तेरहीं इनहिं राज हम देइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावें । द्वादश वर्ष बहुरि वन जावें ॥
मोहित दुरन बतावहु ठाऊँ । कहिवन कौन देश ऋषि जाऊँ ॥
खोजत वर्ष मध्य जो पैहै । बहुरि वनै कुरुनाथ पठैहै ॥
आज्ञा देउ तहाँ तहँ जाई । जहँ सुखहोइ दुःख कटिजाई ॥
जाउँ तहां जहँ मोहिं छपावै । कहुँ कुरुनाथ खोज नहिं पावै ॥
[illegible] विचारा । है नहिं अन्त छपावतुम्हारा ॥

त्यागहु पकरि आइ सेवकाई । नृप विराट गृह रहो छपाई ॥
सत्य वचन सुनु भूप हमारा । तहँ कटिजैहै काल तुम्हारा ॥
करो विचार नृपति अब सोई । भीतर बर्ष न जाने कोई ॥
दो० जाइ रहो बैराट में जहाँ न जानै कोइ ।
कालकटे विपदाघटे अधिकअधिक सुखहोइ ॥
जैहैं बीति बिपति सुख पैहौ । नृपतिफेरि धरणीपति ह्वैहौ ॥
जाइ रहो तुम देश पराये । रहिहौ सबसन शीश नवाये ॥
ऐसो परै कहै जो कोई । सहियो त्रिलग न मानबकोई ॥
मद सोधे नृपता कहुराये । रह्यो जाति औ नामछपाये ॥
हीनरूप ह्वै रह्यो भुवारा । यामें होइ छपाव तुम्हारा ॥
बोलेउ राउ जोरि युग पानी । नामसेकलनरूपिकहोवखानी ॥
आपुस में कहिये हम सोई । होइ दुराव न जाने कोई ॥
नृप के वचन सुनत सुख पाये । व्यास सबन के नाम बताये ॥
कंक नाम भूपति को भाखा । नाम जयन्त भीम को राखा ॥
दो० नाम धनंजय को कह्यो वृहन्नला ऋषि व्यास ।
सैनी सहदेवहि कह्यो सकल गुणनकी रास ॥
बाहुक नाम नकुल को फेरा । शैलन्ध्री द्रौपदी केरा ॥
काटहु कलह जाय नर देवा । गर्व छांड़ि कीजे सब सेवा ॥
छांड़ि क्रोध रहियो तुम राजा । न्यायसमानिकरेहुनितकाजा ॥
कबहुँ न करहु गर्व अपकारा । सेयहु नृपति समेत बिचारा ॥
रह्यो सदा सबको रुख राखे । परम अधीन दीन बच भाखे ॥
निशिदिनकरहुनवनलखिकाजा । जाते रहे प्रसन्नित राजा ॥
भीम आदि बरजेउ सब भाई । जनि काहूसन करहि लड़ाई ॥
भये प्रकट जनिहै कुरुराजा । होइहै नृपतितुम्हारअकाजा ॥
दो० यहिविधितव बहुशिषदये गयेव्यासऋषिराज ।
सोई मन्त्रनमें धरो मनसा वाचा काज ॥
कहै परम सीख भूपाला । चलेकछुकदिन तदिन पाञ्चाला ॥

नितप्रतिसकलअहेरसिधावहिं।खगमृगअमितमारिलेआवहिं॥
धौम्यसहितऋषिसहसअठासी। भोजनकरहिंसहजसुखरासी॥
एक दिवस नृप निकट बुलाये। कह्योव्याससोइ वचनसुनाये॥
हम अज्ञात वास अब करिहैं। मिलै न सुधि तेहिदेशदोरिहैं॥
वंश पुरोहित मम हितकारी। करौकहो भलि चहौ हमारी॥
संवतवादि मिलेउम्बहिं आई। महि पर्यटन करौ तुम जाई॥
यह कहि नयननीर भरि आये। विदाकरत नृपअतिदुखपाये॥
सकलऋषिनकरिदण्डप्रणामा। विदाकिये कहिकहिसवनामा॥
चलेसकलमिलिआशिषदीन्हा। नैमिषविपिनवासतिनकीन्हा॥
करिअतिकष्ट करहिं जपयोगा। करुणासहितकरहिंप्रिययोगा॥
कथा विचित्र महामुनि कहेऊ। जनमेजयमुनिसुनिसुखलहेऊ॥
मुनिसन प्रश्नबहुरि नृपकीन्हा। किमि अज्ञातवास उनलीन्हा॥

दो० व्याससीखता ऋषिकह्यो भामन भूप उचाट।
पांच बन्धु संग द्रौपदी आये नगर विराट॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा। कहेनि छिपाइयतनकेचीन्हा॥
पुरते कछुक दूरि बन रहेऊ। अन्धकूप ता भीतर रहेऊ॥
शमी वृक्ष ता मध्य विराजा। ताके निकट गयउ वलिराजा॥
अस्त्र सनाह वसन वर त्यागी। शमी वृक्ष राखेउ बड़भागी॥
भीमसेन यक मृतक लै आई। वृक्ष मध्य दीन्हो लटकाई॥
अब तरु भयउ निकंटक सोई। याके निकट न अइहै कोई॥
यहकहि फिरि सरवर तट आये। नृपतिआपु द्विजरूप बनाये॥
सबहिंराखि तहँ चलेउ नराटा। गयो प्रथम तब नगर विराटा॥

दो० दरवानी द्विज देखिकै अद्भुत रूप विलोकि।
कह्यो नगर पैसार नृप द्वार सकै नहिं रोकि॥

पैठत नगर शकुन नृप भयऊ। भीमसेन सहदेव ते कहेऊ॥
कैसे शकुन होत ये भाई। हमहिं गणित करि देहुबताई॥
ऐसे लक्षण मैं पहिंचाने। होइहै काज सकल मनमाने॥

मिली बाल बालक मगलीन्हे । धेनुबाल प्यावत सुखकीन्हे ॥
सुख महँ दिवस बीति हैं नीके । कै हैं काज महीपति जीके ॥
अशकुन एक होत है भीमा । यहै शोच आवत है जीमा ॥
लीले मूष वाम मंजारी । वीते कछुदिन कलह पछारी ॥
सरवर बन्धव चारि ठयेऊ । राजसभाचलि भूपति गयऊ ॥
द्विजको रूप महीपति कीन्हे । अक्षमाल शिर चन्दन दीन्हे ॥
लकुटि पाणि पुस्तकी सोहाई । सभा मध्य पहुँचे सो जाई ॥
दो० दीन्ह अशीश नृपीश तब भेंट्यो सहित सनेह ।
उठिविराट नृप विप्रलखि शिरनायो युतनेह ॥
कह नृप विप्र कहांते आयो । धर्मराज तुम पास पठायो ॥
कहेउ वचन मो चलती वारा । करिहैं नृप प्रतिपालतुम्हारा ॥
हम पर परम अवस्था आई । काटहु दिन विराट गृह जाई ॥
मोसन वचन कहेउ यह सांचो । गिरिवर गुहा पैठिगये पांचो ॥
ताहु विराट महीपति पासा । उहां तुम्हैं सब भांति सुपासा ॥
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा । जानो सब गुण ज्ञान निबेरा ॥
धर्मसुवन तुम पास पठावा । ताते निकट तुम्हारे आवा ॥
आनि महीप कीन्हो सनमाना । बैठारे गुण ज्ञान निधाना ॥
कहो नाम निज भूपति पूँछा । कहेउ नरेश सकल छलछूँछा ॥
कनाम स्वाहिं व्यास बखाना । सुनिक्षितिपतिकीन्होसनमाना ॥
मान्यो ब्राह्मण परम अनूपा । अर्द्धासन बैठारेउ भूपा ॥
दो० प्रीति पुनीत भुवालकी परमस्वच्छ द्विजदेखि ।
रह्यो युधिष्ठिरकी सभा है गुणवान विशेषि ॥
नेआयो तहँ पवनकुमारा । आनि भूपकहँ कीन्ह जुहारा ॥
घ तन दीरघ भुज दण्डा । निरखत कौतुकभयोअखण्डा ॥
के निकट भीम जब गयऊ । देखि सभा सब चकृत भयऊ ॥
न बूझि सबै भय पावा । कौतुक कौन देश ते आवा ॥
यह कौन परत नाहिं चीन्हें । मल्लरूप दरबी कर लीन्हें ॥

चकित सभासद कराहिं विचारा । यहधौं कौन आहि करतारा ॥
आवत देखि विराट महीपा । बूझै ताहि बुलाय समीपा ॥
॥ दो० ॥ कितते आये कौन तुम कहा तुम्हारो नाम ।
कौनजाति केहि हेत कहि आयो मेरे धाम ॥
सुनु नृप नाम जयंत हमारा । राज युधिष्ठिर कर सुवारा ॥
करौं विविध विधिते जेवनारा । व्यंजन अमित बनावनहारा ॥
अति सुगंधयुत मिष्ट सलोने । करौं पाक औरै नहिं होने ॥
जेइ कृतज्ञ भूप भूपाला । बकसतनिततपटमणिगणमाला ॥
सरवर भीमसेन की राखत । अमृतसोरिसवचननृपभाषत ॥
भोजन करत भीम के संगा । पालि नृपतितनकीन्हमनेगा ॥
सुनिविराटनृपअतिहितकीन्हा । रहउ बंधुसम आदर दीन्हा ॥
जिमि राखत तुव पांडुकुमारा । तेहिते हेत हमार अपारा ॥
॥ दो० ॥ निरखे सरवरि भीमकी भूपति ताकी देह ।
तैसो बली विचारिकै ढिगराखे करि नेह ॥
निशा पाय अस पार्थ विचारा । केहि विधि नगरकरों पैसारा ॥
होय दुराव न जानै कोई । सहदेव यतन बतावहु सोई ॥
सुधि भूली तुमको किन भाई । सुरपुर असुर बध्यो जबजाई ॥
तब सुरनाथ कृपा अतिकीन्हा । अस्त्रसिखाइमुकुटनिजदीन्हा ॥
तब उन पुत्रभाव करि जाना । दीन्ह वास भीतर अस्थाना ॥
देखि मेनका देह बिसारी । भई काम वश सुरपति नारी ॥
रति मांगी तुमते करि ईड़ा । पारथ करहु संग ममक्रीड़ा ।
पूरण करो मोरि अभिलाषा । त्राहि त्राहि माता तुम भाषा ।
तब मेनका क्रोध अति कीन्हा । होवहु हिज्जशाप यहदीन्हा ।
प्रात होत सुरपति पहँ जाई । शापकथा तुम सकलसुनाई ।
कहेउ सुरेश मेनकहि बोली । शाप अनुग्रह करो अमोली ।
सुनि सुरेश के बचन रसाला । कीन्हो शाप अनुग्रह बाला ।
जब चाहो तब वर्ष प्रयन्त । रहनला तन होयहु सन्ता ।

सुर त्रिय शाप आशिषा भयऊ । हिज्ज़रूप अर्जुन है गयऊ ॥
भूषण बसन द्रौपदी केरा । तन शृंगार कीन्हो बहुतेरा ॥
दो० बृहन्नला के पुरुष तब कीन्हो तिय को रूप ।
कंकण किंकिणि आदिदे अभरण सजे अनूप ॥
शिर सिन्दूर तमोल मुख मेंहदी युत युगपानि ।
जावक चरण मृदंग की धुनि कीन्हो तित आनि ॥
भ्रमत पाण्डुकुमारा । कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा ॥
राज्य युधिष्ठिर केरा । आयो करि पुहुमी को फेरा ॥
द्वार देश फिरि आयो । भोजन कहुँ न पेटभरिपायो ॥
चले युधिष्ठिर राई । कहेउ मोहिं तव निकटबुलाई ॥
सेवक विराट भुवारा । तहँ कैहै प्रतिपाल तुम्हारा ॥
राजा सन जाई । समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
यक द्वार एक प्रभु आवा । कहत युधिष्ठिर मोहिं पठावा ॥
दो० सुनि बोले भीतर नृपति सब बूझ्यो व्यवहार ।
सकल गान सांगीत लखि कला चौसठी चार ॥
ति युधिष्ठिर केर अखारा । करों गान सांगीत प्रचारा ॥
कहुँ मोहन राग रसाला । नाचिनाचिरिझवों महिपाला ॥
जो गुण कहिवे निजवानी । कहत भूप आवत गिल्यानी ॥
कहे जो धर्म समाजा । मम गुण पूंछ कंकसन राजा ॥
पदी सकल नृप जेती । जानत सकल कंकन्यपतेती ॥
अन चल्यो युधिष्ठिर राई । कहेउमोहिं निजनिकटबुलाई ॥
तुम विराट नृप जाई । मिलहमोहिंनिजकाल बिताई ॥
समरत्थ विराट भुवाला । सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला ॥
० स पारथको सारथी वृहनला त्वहिं नाम ।
जीवत आयो आपुघर लियो आइ विश्राम ॥
पुनि करिकै बहु नेहू । पठयो इहां जानिके गेहू ॥
भार हमारो लेहू । वस्तर अन्न वर्षभरि देहू ॥

लघु कन्या बालकन पढ़ाऊं। पूरणगति सांगीत सिखाऊं॥
विद्याअमित वरणि नहिं जाई। अल्प दिवसमहँ देउंसिखाई॥
भूप सुता उत्तरा कुमारी। सौंपी पढ़न योग सुकुमारी॥
फिर सहदेव पहूंचे आई। नृपसों वचन कहत शिरनाई॥
मैं तो धर्मपुत्र को ग्वाला। अतिशयकृपाकरहिंमहिपाला॥
निकसिदूरिवन वीथिन गयऊ। दै उपदेश पठैम्वहिं दयऊ॥
करि जानों गायन के साज। अरुजानों नवविधिहथियारू॥
मो देखत गोधन को हरई। को नरजुरि ममसमता करई॥
वर्ष पञ्च इक धेनु चराई। सेवन करीं पञ्चशत गाई॥
सत्य वचन यह सुनहु भुवारा। सेनिखोप है नाम हमारा॥
मोहिं जयंत कंक ऋषिजानहिं। उनहिंबूझिभूपतितबमानहिं॥
सुनि तिन जानेहुबुद्धि विशाला। सौंपी सब सुरभी भूपाला॥
दो॰ फेरि नकुल आये तहां लीन्हे ताजन हाथ।
देखिरूपकी राशि तब चकित भये नरनाथ॥
कौन देशको जाति कहु कहा तुम्हारो नाम।
केहि कारण वैराट कहि देखो मेरो धाम॥
बाहुकराय युधिष्ठिर केरा। राखत मान सबै विधि मेरा॥
मैं दुरिके वन गयो सुवारा। दै सबते हम कहँ दुखभारा॥
काटर कूचर अश्व चलावों। योजन शत प्रमाण ले धावों॥
बूझहु कंक ऋषिहि गुण मेरो। आयों नृपति नाम सुनितेरो॥
मो कहँ सौंपो साहन जेते। करों बनाय सूध सब तेते॥
सुनि भूपाल अमित सुखपावा। पाण्डुसुवन ते हेत बढ़ावा॥
देखि मूक मुखतिन तेहिकाला। कहवाहुकतन चतुर भुवाला॥
दो॰ सौंपेउ साहन नकुल कहँ हो भूपाल उदार।
बहुरि सो आई द्रौपदी भूपति भवन मँझार॥
नगी किधों पन्नग की जाई। कैमला किधों देह धरिआई॥
रानिन सहित सखिनके वृन्दा। निरखमुखचकोरजिमिचन्दा॥

कह रानी निज नाम बतावो। केहिकुलकी कुलवधू कहावो॥
कहाँ जाति आपनि गुणग्रामा। केहिकारजआइउ ममधामा॥
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी। दासी तासु लेहु म्वहिंजानी॥
सुनेहुँ श्रवण तुवअमितबड़ाई। देखेहुँ द्वार विपतिवश आई॥
पतिसँग चली विपिन जबरानी। मोसनकही विहँसियहबानी॥
तुम गृह जाहु विराट भुवाला। काटेहु कालककुक दिनवाला॥
दो० आइउँ तुव सेवाकरन सैलंधरि ममनाम।
आज्ञा देहु कृपाल कै करों यहां विश्राम॥
बोली विहँसि वचन तव रानी। केहि सेवा में बहुत सयानी॥
चन्द्रवदनि सोइ वेगि बताऊ। सौंपौंतुमहिं सहितचितचाऊ॥
भोजन मैं करवावों रानी। भूषण अंग सजों सुखदानी॥
चुनि चुनि नये वसन पहिराऊं। लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं॥
लै कुंकुम घनसार लगावों। कुसुमावलि शुचि सेजवनावों॥
अतर लाय तन पानखवावों। तुम्हरी आज्ञा सदा बजावों॥
करिहों दोय काज नहिं रानी। छुवहुं चरण नहिंजूठनि खानी॥
सैलंधरी वचन सुनि काना। रानी बहुत कीन सनमाना॥
तनया सम मेरे गृह रहियो। मोसन मनकी बातैं कहियो॥
हलुकी भारी कोइन भाषाहिं। सब कोई आदर तुवराखहिं॥
तुम थोरहिं कीजे सन्तोषा। निशिदिन करों तुम्हारोपोषा॥
सैलंधरी जोरि युग पानी। करतविनय सुनियोकछुरानी॥
रक्षक मोर पञ्च गन्धर्वा। निशिदिन मोहिंरखावत सर्वा॥
अति बलवंत भयानक सोई। रहैं संग देखै नहिं कोई॥
सो वे अन्तरिक्ष के वासी। करैं प्रीति जानैं निज दासी॥
पाप बुद्धि देखै म्वहिं कोई। करैं निवत होय छिन जोई॥
जाको अन्न खाइये रानी। तापै रहिय सदा डर हानी॥
याते तुमकहँ प्रथम जनाई। पाछे जनि टहर पति जाई॥
सत्यबचन सुर मोर सहाई। लखे कुदृष्टि जियत नहिंजाई॥

राखी निकट परमहित मानी । निशिदिनप्रीतिकरतप्रतिरानी॥
सजतशृंगार सिखावत जोई । सैलंधरी वचन सोइ होई॥
काल पाइ कै पांडु कुमारा । मिलहिं समेत द्रौपदी दारा॥
सकलअवस्थानिजनिजकहई । फिरि विलगाय मौनकरहई॥
जबभूपतिहिजोहारन आवहिं । प्रथमकंकऋषिकोशिरनावहिं॥
दो० यहि विधि पांचो पांडुसुत और द्रौपदी वाम ।
कालक्षेपपुनि करहिं जिमि क्षुद्रसकलगुणग्राम ॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेविराटपर्वे
पांडवअज्ञातवासवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥
दो० कछु दिनवीते नगरमों गृह गृह प्रतिउत्साह ।
अपनीदुहिताको रच्यो नृपति विराटविवाह ॥
देश देश कहँ दूत पठाये । सकलक्षितीश पुहुमिके आये॥
सभा विचित्र रची तहँ राजा । जनुअमरावतिरच्यो समाजा॥
आपु लसे जैसे सुर साई । सब नरेश जनु सुर समुदाई॥
सुरगुरुसमऋषिकंक विराजा । अतिविचित्रतहँ वनीसमाजा॥
कहूं नृत्यकारी नाचि गावें । कहूं नाटकी स्वांग लै आवें॥
नाचहिं कहुं निटुपकरि जाला । कूजाहिंकांख बजावहिं ताला॥
गाल फुलावहिं करहिं तमासा । नानाभांति करहिं परिहासा॥
बारमुखी बहु नाचहिं गावहिं । बीनी बेनु मृदंग बजावहिं॥
बाजहिं आउझ झांझ तँबूरे । मुनिमन हरत राग अतिपूरे॥
चन्द्र वदन उर्वशी लजाहीं । जिनहिंदेखिरतियुतिकछुनाहीं॥
काहूं मल्ल लरहिं अति भारे । कहूं मेष अतिलरहिं सिंगारे॥
मत दंपति कहुं लरहिं दँतारे । श्याम वर्ण पर्वत से भारे॥
दो० शोभा राज समाजकी मोपै कहीन जाय ।
देश देश के भूप सब जुरे सुवेश बनाय ॥
मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा । दीरघ तन दीरघ भुजदण्डा॥
औ द्वौ चरण कड़ा द्वौ पानी । पीत बसन शोभाकी खानी॥

बड़ा भीर भूपन के देखी। कही सभा महँ बात परेखी ॥
अहंकार युत बचन बखाना। सुनहु महीप बचन दे काना ॥
जीति विदर्भ देश जे शृंगी। जीते मल्ल सरंग तिलंगी ॥
काशमीर लाहौर चँदेरी। वन्दर सब करनाटक हेरी ॥
अंग बंग कामरू मँझाई। औरो देश विलोकेउँ जाई ॥
दो० मोसे मल्ल जुरे नहीं कोउ न कौनेउँ देश।
है कोई मोसे जुरे आज्ञा देहु नरेश ॥
सुनि सुनि सभा न बोले कोई। मन साहस काहू नहिं होई ॥
नृप बिराट को सुधि है आई। तबजयन्त कहँलीन्हबोलाई ॥
सुनि जयन्त ममआज्ञा मानो। मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो ॥
अपने मन कीन्ह विचारा। तुम सुआर यह मल्लजुझारा ॥
जो हारो तो हारि न होई। जीते द्रव्य देइ सब कोई ॥
जो मारो जो मल्ल जुझारा। जगमहँहोइहि सुयशतुम्हारा ॥
सुनिजयन्त बोल्यो कछु नाहीं। रहे चुपाय कंक मुख चाहीं ॥
कहेउ कंककिमि हृदय डेराना। करु जयन्त नृपवचनप्रमाना॥
दो० तब जयन्त यह मल्लसों कहीबात अरगाय।
हम तुमरससों खेलिये लीजै सभारिझाय ॥
तू जो आने रोषमन डारे भुजा उपारि।
हम परदेशी उदरहित देहैं भूप निकारि ॥
कहेउ मल्ल सुनु कौन विचारा। तैं कस कादर वचन उचारा ॥
घ भुजा वचन कह दीना। ऐसी कहै होय जो हीना ॥
सुनि नयन अरुण के आये। तब जयंत यह वचन सुनाये ॥
अबजौन होय बल तोरा। जनिमानसिखलमोरनिहोरा ॥
त युद्ध लागे दोउ करना। मुष्टिघात अरुघालहिंचरना ॥
तयुद्ध दोउ यहिबिधिकरहीं। लपटहिंधरहिंभूमिझुकिपरहीं॥
फिरिकरिबलउठहिंसँभारी। समबलयुगल नमानहिंहारी ॥
जयंतभुजबल अतिकीन्हा। मल्ल उठाय डारिमहि दीन्हा ॥

करिवड़ क्रोध सो भूपर डारा । जनु सुरवज्र गिरिनको मारा ॥
सँभरिउठ्यो यह वचन सुनाये । अवमारों खल तू कित जावे ॥
ले तव गुरज उठो अकुलाई । हनो जयन्त नासिका जाई ॥
विषम चोट थर हरेउ शरीरा । मूर्च्छि गिरेउमहि पांडववीरा ॥
देखेउ कंक सेलंध्री जानी । हाइहाइकरिअति अकुलानी ॥
चेति जयंत उठो गल गाजी । जान नपाइहिअवखलभाजी ॥
भूमिहिं सातवार धरि मारहुँ । गहिरे गात्र दुष्टको गारहुँ ॥
फेरिजुरेउ जिमिकरि वलजोरी । कीन्ह प्राण विनमल्ल मरोरी ॥

॥दो॰ मृतक तासु तन क्रोधकरि दीन्हो दूरिपवाँरि ।
देश देशके भूप सव करत वड़ाई भारि ॥

देखत सभा सवे नर हर्षे । वसन कनक मणि मोलनवर्षे ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा । कहौं सुनो अवभा जसकाजा ॥
मत्त गयंद नृपति को ऐसो । कज्जल गिरि भूधर के जैसो ॥
कानि महावत की नहिं आवे । करे प्राण विन जो ढिगपावे ॥
सुंदर महल दिये महिपारी । गये निकट नर डारे फारी ॥
शूंड़ि दावि वहु वृक्ष उखारे । नहिं कुन्तल ते रहे सँभारे ॥

दो॰ वांधहु जाय गयन्द कहँ पठये नर नरपाल ।
सकैनिकट नहिंजाय कोउ देखिदेवविकराल ॥

जाय भूप सन कथा जनाई । कोऊ निकट सके नहिं जाई ॥
केसेहु हाथ न कुंजर आवे । अवसो करिय जो भूपवतावे ॥
तव जयंत ते कहेउ वोलाई । गजहि पकरि ले आवहुजाई ॥
के वांधहु के डारहु मारी । पुरको कटक देहु निकारी ॥
जव नरेशकी आज्ञा पाई । चल्यो वृकोदरअति हरषाई ॥
सिंहनाद गरज्यो वलवीरा । तव गयंद थरहरेउ शरीरा ॥
पूंछ पकरि झकझोरेउ ऐसे । दावत मृग करु चीता जैसे ॥
दशन पकरि ले पहुंचो थाना । ज्यों अजयालीजे गहिकाना ॥
बांधि ताहि भूपहि शिरनायो । तवजयंत वसनन पहिरायो ॥

दो० यहिविधि बीते मासदश नृप बिराट के तीर।
कालक्षेप निशिदिन करैं पांडुपुत्र बलबीर॥

इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वसबलसिंहचौहानभाषा
कृतेद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

दो० कीचकबली विशालतन नृप तरुणी को बन्धु।
सहसद्विरदसमताहिबल यौवनमदअतिअन्धु॥

शत बांधव कीचक के बली। बल अवगाहननृपअस्थली॥
सोहत यकयक मातु के जाये। ऐसे सुभट महीपति भाये॥
एक दिवस कीचक हरषाई। निज भगिनी के मंदिर जाई॥
रानी ढिग कीचक चलिजाई। कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई॥
बंधु बिलोकि हृदय हरषानी। दीन्हअशीशमुदित मनरानी॥
भोजन करत कनक की थारी। द्रुपदसुता तहँ करत बयारी॥
देखि चेरि कहँ कीचक बीरा। काम विवश थरहरेउ शरीरा॥
इत भगिनीसन बचन बखाना। दासी वश ह्वै रह्यो पराना॥
तहँ कीचक तन दशा बिसारी। सेलंधरि दिशि रहो निहारी॥
भयो काम वश बुद्धि भुलानी। छांडिसिलोकलाजकुलकानी॥
सेलंध्री अपने मन जाना। कामविवश यह खल बौराना॥
ताहि सुनाय कहो सुनु रानी। अकथकथा कछुकहौंबखानी॥
गंध्रव पंच महा बल भारे। तेमम सँगनिशिदिनरखवारे॥
अन्तरिक्ष देखे नहिं कोई। तुमकहँ प्रथम सुनायों सोई॥
मोहिं कुदृष्टि बिलोके जोई। सो नर कठिन कालवशहोई॥

दो० अवशि हनैं गन्धर्व तेहि मोहिं बिलोके जोइ।
बली होइकी निर्बली जीवत बचै न सोइ॥

यदपि सेलंध्री बिभवबखाना। कीचकमनहुसुन्योनहिंकाना॥
काम अन्ध नहिं सूझत तेही। बिपअसखहरिगयो सबदेही॥
भयो बिकल सब दशा बिसारी। दोकरजोरि विनय अनुसारी॥
भगिनी सन बोला बिसवासी। मांगे देहु मोहिं निज दासी॥

मोकहँ मिलै मोहिं यह इच्छा । मांगों लाज छांड़ि यह भिक्षा ॥
मोहिं दया करिकै यह दीजै । याकों बदि सहस्र तुम लीजै ॥
लाज छांड़िकै करों ढिठाई । करो वचन फुर हृदय जुड़ाई ॥
होइ मोरि तौ जाउ लवाई । देउँ वन्धु किमि वस्तु पराई ॥
दो० द्रुपदसुताकी अनुचरी देतमोहिं अति क्षोभ ।
यह मोरे जनु पूतरी करो वन्धु जनि लोभ ॥
जादिन प्रथम भवन मम आई । कन्या कै राखेउँ मैं भाई ॥
कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा । सुनइ न काम विवश मतवारा ॥
रानी वचन कहे विधि नाना । कीचक सुन्यो न एको काना ॥
बोली बहुरि बचन यह रानी । सुनहु वन्धु इक कथा पुरानी ॥
द्रुपदसुतापति सँग बनगयऊ । इसहि पठाइ भवनममदयऊ ॥
रहे जीविका हित गृह माहीं । दासी मोरि वन्धु यह नाहीं ॥
जाइय भवन दई नहिं जाई । देउँ कौनि विधि वस्तु पराई ॥
यह सुनि नयनअरुण ह्वै आये । क्रोधवंत ह्वै बचन सुनाये ॥
दो० कहु कैसे तू राखिये दासी वल करिलेहुँ ।
राज्य पाट सब छीनिकै कोटि कोटि दुखदेहुँ ॥
चेरी लागि नशावहु राजू । तोरे कहा सुधरिहै काजू ॥
अति वलवन्त वन्धु शतमोरे । राखिलेइ ऐसो को तोरे ॥
सुन्यो कठोर वन्धु की वानी । बोली परम क्रोध कै रानी ॥
पर तरुणीरत जे जग भयऊ । ते निजकरणीसों मिटिगयऊ ॥
जो चाहौ आपनि कुशलाता । फेरि कहौ जनि याकी वाता ॥
रावण कथा सुन्यो तुम भाई । रामचन्द्र की नारि चोराई ॥
सियाहरत नहिंलागि विलम्बा । नश्योदशाननसहितकुटुम्बा ॥
गोतमतियलखि शक्र लुभाने । भयो सहसभग जगसबजाने ॥
बांधेउ असुर पाप वश सोई । भयो खण्ड जानत सबकोई ॥
ह्वै सकाम गिरिजा तन हेरा । एक नयन बिन भये कुबेरा ॥
शुम्भनिशुम्भअसुरअभिमानी । मोहा परम शक्ति जियजानी ॥

कथा प्रसिद्ध सकलजगखानी। अपने पाप मिटा अभिमानी ॥
बन्धुवधूरत रघुपति जानी। मारेउ बालि हिये शरतानी ॥
परत्रियरतहित शठमनदीन्हा। पैहै फलखल आपन कीन्हा ॥
दो० भगिनी मुखके वचनसुनि कियपयान निजधाम।
विकल महाजिय कल नहीं घरी मुहूरत याम ॥
कीचकको सुधिबुधिनाहिं रहेऊ। सूनेमहल सैलन्धरि लहेऊ ॥
कामअंध अंचल तेहि गहेऊ। आतुरके यहिविधितबकहेऊ ॥
चित हमार तुव रूपहिं पागो। भयो असक्त सुधीरज भागो ॥
मेरे तरुणी शशि अनुहारी। सबपर होय सोहागिलनारी ॥
उत्तम भूषण बसन बनावो। अरु दासीको नाम मिटावो ॥
बचन तुम्हार मेटि नहिंजाई। रहो नारि मम हृदय समाई ॥
सुनत वचन मन शंका आई। कहेउ सैलन्ध्री वचन बनाई ॥
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा। कीन्हे प्रीति नाश है तोरा ॥
गन्धर्व पंच मोहिं रखवारी। दीरघ तनमन विक्रम भारी ॥
मोहिं छुवत वे तुरते आवें। सुनु कीचक तुव प्राण नशावें ॥
तव मारे मम अपयश होई। मोकहँ दोष देइ सब कोई ॥
या महँ उभय प्रकार बिगारा। मरण तोर मम देशनिकारा ॥
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी। इहां जीविका उठी हमारी ॥
यहसुनिकीचक अतिभयमानी। गई पराइ पाण्डु की रानी ॥
निशिदिन ताकहँ नींद न आवे। धन सम्पति घरबार न भावे ॥
बोलि दूतिका यहि विधिकहेऊ। वहदासी मम चितबसिरहेऊ ॥
दो० मनसावाचाकर्मणा तुम अब करहु उपाउ।
मृगनयनी निशिकरवदनि मोपरभुरै लेआउ ॥
भुरै ले आउ सैलंध्री आवे। निज इच्छा मांगो तुम पावे ॥
गई दूतिका विविध प्रकारा। लागी करन युक्ति उपचारा ॥
बहुत भांति दूती समुझायो। चित्त सैलन्ध्री एक न आयो ॥
यहां बिचार न बोले सोई। आजुकाल्हिकछुकाज न होई ॥

रही मास द्वै अवधि हमारी । नहिं जाने कुरुपति अपकारी ।
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो । जहां सैलंध्री तहँ चलिआयो ।
दो० सूने घरमों पायके गहे केश कर धाय ।
अबकहु राखैतोहिंको कौन छुड़ावैधाय ॥
गन्धव महँ गन्धवपति होई । सकै छुड़ाय तोहिं नहिंसोई ।
गन्धव के बल तू अभिमानी । बोलु छुड़ाय देइ अबआनी ।
यदपि बली रक्षक तू होई । मोरे तुल्य होइ नहिं सोई ।
व्याकुल भई नीचवश रानी । गई लाज अब हृदय डेरानी ।
हरे कृष्ण नाम यह भाखी । दुश्शासनते तुम पति राखी ।
सैलन्ध्री विनवै मृदुवाणी । विविधप्रकार जोरियुगपाणी ।
यदपि विनयकृतविविधप्रकारा । सुनै न कामविवश मतवारा ।
बोला कामवश्य रिसिआई । तजौंतोहिं करि निजमनभाई ।
दो० दासी कर्मकराइकै त्रास देखावहुँ तोहिं ।
अपनो मनभाईकरौं यही बानि अबमोहिं ॥
कैसेहु खल नाहिंहठतजै अंचल डारोफारि ।
करतेकेश न तजैसो अतिअकुलानी नारि ॥
सैलन्ध्री तब बुद्धि विचारी । विविधभांति कीन्हींमनुहारी ।
रसते प्रीति बढ़तिहै जोई । तसनहिं कछु अनरसतेहोई ।
दान मान युत आदर धरई । परतिय सो अपने वशकरई ।
यथा बीजते द्रुम उठिजाई । तिमिरसकी प्रतीति सरसाई ।
निशिदिन लिये रहै मनुहाथा । बढ़ै हेत तब परतिय साथा ।
मिष्ट सुधा सम वचन सुनावै । इष्ट समान हिये बिचलावै ।
कहत वचन फुरवै सब सोई । परपत्नी ताके वश होई ।
यह कीचकहुसुन्यो ना चीन्हा । परतियबरबसकेहिवशकीन्हा ।
दो० जानत रसकी प्रीति नहिं तैं खल एको बात ।
परतरुणीको मनदयो तबसबसुख सरसात ॥
रहसिरहसि अबमनमिलै तोलहिहँसिपरनारि ।

॥ ॥ बोरायो यह बिचन कहि गूढ़ उपाय विचारि ॥

तजे केश तव गृह अभिमानी । सैलन्धरी गई जहँ रानी ॥
कह ऋषि सुनु कुरुवंशभुवारा । गये बीति पुनि इकपखवारा ॥
दीपमालिका के दिन रानी । बोली सैलन्ध्री सों बानी ॥
भोजन मिष्ट कछुक हित भाई । सुरा पात्र दै आवहु जाई ॥
द्रुपदसुता सुनि अति अकुलानी । जाव मोर उहँनीक न रानी ॥
लज्जा मोरि जीव वहि केशा । रानी जात न लागी वेशा ॥
यदपि सैलन्ध्री कह्यो बखानी । वरवस ताहि पठायो रानी ॥
पिये मत्त मद कनक प्रयंका । देखि सैलन्ध्री भयो सशंका ॥
अशन पान महि राखि परानी । धाय केश पकरे गहि पानी ॥
सैलन्ध्री तब बचन उचारे । गहत केश केहि हेत हमारे ॥
जु मन बसेउ मोर मन सोई । दिनरतिकीचकपशुगति होई ॥

दो० रैनि गये तुम आयेउ नाच अखारे जाय ।

॥ शिथिल भयो यह बातसुनि केशादिये मुकराय ॥
॥ योग भोग सूने सदन वन निशि कीचक राय ।
॥ जाउ तहां हौं आइहौं यामक रैनि गवाँय ॥

हां उत्तरा कीन चटसारा । होइ मिलाप हमारो तुम्हारा ॥
लते लाज बचन नहिं जाती । करि छलगई वहुरि जहँरानी ॥
चक यहसुनि अतिसुखपावा । कह्यो सैलन्ध्री बचनसुहावा ॥
त भयो अपने गृह सोई । हेरत बाट निशा कब होई ॥
दुखित तहँ द्रौपदि रानी । हे पतिभूप जहां सुखदानी ॥
चक कानि न याको राखी । सो जाति वाम भूपसन्द भाखी ॥
वसु अर्जुन को नृप दीजे । कीचक मारि सो नृप कीजे ॥
कहिके उपजी तन तापा । ऊंचे स्वर करिकीन्ह विलापा ॥
त बाम श्वास नहिं आवे । नृपति बहुत भांति समुझावे ॥
० मास दिवस बीते त्रिया सो ब्रत पूरण होइ ।
तौलगि कालहि काटिये लखै कहूनहि कोइ ॥

अवधि बीत कीचक संहारौं । तवत्रिय औरविचारविचारौं ॥
की तव लगे रहो मन मारी । की वनवास करावो नारी ॥
सुनि नृपवचन विकलभै रानी । करतविलापहिये अकुलानी ॥
उतर देत नहिं वनहि वनावा । नयनन नीरगरे भरि आवा ॥
रोदन करत चली तब रानी । गे पति अत्रपतिवात न मानी ॥
विलखि वदन तिय पहुँचीतहां । हते वीर वल अर्जुन जहां ॥
नयन सनीर कढ़त नहिं वानी । कथा समस्त वखानी रानी ॥
वरणी कीचक की अधिकाई । क्ह्यो भूपमन कछुनहिं आई ॥
दीन्ह जवाव धरणि के धरणा । आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा ॥
मेरो कहो गोसाईं कीजे । हति कीचकजगमें यशलीजे ॥
तुमहिं अछत असहालहमारा । वलपौरुष कहँगयो तुम्हारा ॥

दो० कह्योपार्थतवत्रियासों करिअतिक्रोधकराल ।
आज्ञा पावों भूपकी शठहिं वधौं उत्ताल ॥

जो भूपतिकी आज्ञा पावों । तो कीचक यमलोक पठावों ॥
नृप की कानि न तोरी जाई । तोरें कछु नहिं करौं उपाई ॥
सरवर तीर सवन के आगे । चलती वार वचन नृप मांगे ॥
मम आयसु बिन कृतकठिनाई । कृष्णचरण तेहिकोटि दुहाई ॥
नृपको वचन न मेटो जाई । मास दिवस तुम रहो चुपाई ॥
सुनत सैरंध्री अति दुखमाना । पारथको कछु वचन बखाना ॥
छूटो तुमहिं क्षत्रिकुल वाना । तजेउ सानधरि वेष जनाना ॥
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा । तुमहिंजियतअसहालहमारा ॥
सो सुनि पार्थ रहो शिरनाई । माद्री सुतन तीर चलि आई ॥

दो० गई नकुल सहदेव पहँ विलखि वदन वरनारि ।
अधिकारी ता दुष्टकी सव विधि कही पुकारि ॥

कीचक वांह हमारी गही । तुम में कहो कहां पति रही ॥
मेरे कहेको नहिं हँसिटारो । क्यों न आपने अरिकहँ मारो ॥
सहदेव नकुल कही सुनु रानी । मेटि न जाइ भूपकी कानी ॥

कह्यो नृपतिम्वहिं वारहिंवारा । भ्राता यह न करेउ अपकारा ॥
कटुक कहेउ सुनिलेउ चुपाई । काहुहि उतरु न दीजै भाई ॥
बेन आज्ञा कृत करम दुरन्ता । जानौ पाप मोर वपु हन्ता ॥
वा दुख देखि मोहिं कठिनाई । नृप आयसु मेटी नहिं जाई ॥
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा । जोरिपाणि रानिहिं समुझावा ॥
दो॰ सुनिसुनि तेरेवचन अब बाढ़त क्रोध अपार ।
मेटाजाय न नृपवचन विनयो वारहिंवार ॥
मारौंकीचक क्षणकमहँ भूपति आयसु पाय ।
करै अवज्ञा नारि अब काकरि नरकहिजाय ॥
स एक तू और निवारी । तब सकिहौं कीचककहँमारी ॥
नहूँ ते तिय भई निरासा । पहुँची भीमसेन के पासा ॥
जल नयन भरि आंशूढारे । सींजत नयन भये रतनारे ॥
नपुत्र तब यहिविधिजानी । विलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी ॥
यो द्वार लखे तिय नयना । श्वासलेत कछुकहे न वयना ॥
ली विलखि आजु गृहमाहीं । कीचक दुष्ट गही ममनाहीं ॥
डुसुवन पै फिरी पुकारी । वे गुहारि लाग्यो नहिंचारी ॥
ब तुम स्वामी रहो चुपाई । गहि सो दुष्ट मोहिं लैजाई ॥
यो श्रवणजबसकल प्रसंगा । रोष बढ़ो विकसो सब अंगा ॥
खे त्रियके मुखके मलिनाई । दौरिगई दृगमें अरुणाई ॥
त वचन उतरु नहिं देती । गहवर वयन नयन जलसेती ॥
चकको सुनि तसमुख नामा । भयो सक्रोध भीम बलधामा ॥
त जो न वधौं क्षण जाई । कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई ॥
ो॰ लीन्हों मीचु बुलाइकै नीच आपने हाथ ।
जीतो चाहत श्वानेनर सिंहवलीके साथ ॥
र जुरा चहत हरि संगा । चीतहि जीता चहै कुरंगा ॥
त कपोत वाजसनरारी । मूषक जीतन चहत मँजारी ॥
भ चहत मतंगहि ठेलो । चहत भुजंग गरुड़सँगखेलो ॥

॥ तुम सन कही वचन कटुबागी । अपने हाथ मीच ग्रहि मांगी
॥ कहेसि विलोमवचनतजिज्ञाना । यहिकर काल आय नियराना
॥ सैलंध्री यहि विधि समुझाई । चल्यो भीम त्रिय रूप बनाई
॥ नाच महल महँ बैठो भीमा । दीप बुझाय क्रोध करि जीमा
॥ तहां काम बश कीचक आवा । नारिजानि कुचपाणि चलावा
गहे भीम तब दो भुज दण्डा । मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा
करिवल भीम ताहि महि डारा । चला पराय अधम हियहारा
मोहिं युधिष्ठिर भूप दुहाई । कीचकवधो जियत नहिंजाई
दो० ॥ कालसर्पसों खेलेउ कामलहरि अकुलाय ।
॥ त्रिय पूंछ मरोरी सिंहकी । अब जीवत नाहिं जाय ॥
॥ पकरो भीम क्रोध करि धाई । भिरो बहुरि शठ ताल बजाई
॥ दोनों महँ हारि न कोई माने । कोपि असितगति युद्धहि ठाने
॥ अतिबल भीमसेन तब कीन्हा । पटक्यो भूमि कंठ पग दीन्ह
॥ मारि दुष्ट प्राणन बिन कीन्हा । मूढ़ उठाय पुहुमि तब दीन्ह
॥ मेहरा खोहडे राखो जाई । जाने पुरजन नाहिं यहि भाई
॥ डारेउ भीम तहां बलवाना । परेउ अधम तन शृङ्गसमाना
॥ लरत ढहे जो गेह शब्द अघाता । सुनि नरेश जागो अधराता
॥ चाहेउ चलन खड्ग गहि पानी । बरजेउ युगल जोरि कर रानी
॥ नाथ सैलन्ध्री तुव बर दासी । कीचक करी तासु सँग हासी
॥ गंध्रबराज पंच तासु रखवारे । जानो परी कीचक उन मारे
॥ चुपकि रहेउ नृप लो कुशलाई । सुनि त्रिय बचन बैठ अरगाई
॥ कहमुनि सुनु जनमेजय राजा । कहेउ सो भीम कीन्ह जस काजा ।
दो० मारि दुष्ट धरि खोहमें मनकी व्यथा नशाय ।
॥ अर्द्धनिशा सुत पवन को निज थल पहुँचो जाय ॥
॥ जागे पुरजन सदन प्रति प्रात भयो नरनारि ।
॥ त्रिय न्त्तकदेखि कीचकनहीं कोउनहिं सक्यो विचारि ॥
॥ इति श्रीमहाभारते कीचकवधवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० अन्तःपुर चरवर वदन सुधि पाइ नरपाल।
सचिवसभासद सुभटसँग तहँ आयो तिहिकाल॥
.पो बिलोकि शंका उपजाया। सजलनयनमुखवचनन आया॥
ोक विवश तन दशा बिसारी। करत विलाप तापअतिभारी॥
.यहिप्रहिव्रंध्यो जो निनहिंजाई। बार बार कहि नृप बिलखाई॥
.रियउपायसमिलैजहिंशोधा। बिनअरिनिधनमिटिहिनहिंक्रोधा॥
.धु बन्धु सुधि ताक्षण पाई। भूपति की तरुणी तहँ आई॥
.दन करत बहुत अकुलानी। देखत भूप व्यथा तन जानी॥
.अपने मनहीं महँ दुख साना। बार बार यह वचन बखाना॥
.कीचक कोनि शूर सँहारो। जासों युद्ध जुरो सो हारो॥
.अंग तहाँ क्षत औरन आयो। भूलिरहेउ कछु शोध न पायो॥
.रानि महीप कह वचन बखानी। बोली बिलखि वदन कै रानी॥
दो० रहे तुम्हारे धाम में जाहि सैलंध्री नाम।
गंधव रक्षक तासु के रक्षत आठोयाम॥
कीचक अति आसक्त ह्वै गही सैलंध्री बाल।
ताही दिन तें में लख्यो घेरो है यहिकाल॥
.कीचक तिन गन्धर्वन मारे। नहिं काहू पर गयउ उबारे॥
.अब चलि क्रियातासुकी कीजै। ले ले कुश सब अंजलि दीजै॥
.रानी बचन श्रवण सुनि राजा। लागो करन क्रियाको साजा॥
.तब कुतवालै बोल्यो राऊ। प्रजालोग सब बेगि बोलाऊ॥
.ले कीचक को घाटे जाऊ। विधिसों सबै क्रिया करवाऊ॥
.कह ऋषि कंक नीचको अंगा। छुवते सुकृत होइ सो भंगा॥
.उत्तम जाति होइ नर कोई। छुवे अंग कीचक कर सोई॥
.गयो नृपति सुधि आपु तुरन्ता। कहेउ लै आउ सुधारजमन्ता॥
.बार बार तासन कह राऊ। कीचक मृतक घाट लैजाऊ॥
.सुन्यो न बचन रहेउ चुपकाई। फेरिनृपति अस कहेउ रिसाई॥
.तें मेटो बल वचन हमारा। मूढ़ कहां तब होइ गुजारा॥

मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी। मानत पांडु सुवन के आ
धर्मराज पठयो तकि मोहीं। सरबरि गनों बन्धुकी तो
नृपके बचन श्रवणसुनि भीमा। कहेउ वचन क्रोधित कैजी

दो० मारो कीचक मैं कहां कत कीजत है कोध।
मो दुख मानत वादि नृप अंतहि लीजै शोध॥
भोजन भाजन छांड़ि के मैं नाहिं अंतहि जाउँ।
मनसा वाचा कर्मणा। तुमकहँ बहुत डेराउँ॥

सो० करी कृपा नरनाहु यहिविधि कही जयन्त सों।
कीचकको लेजाहु दूरि नगर ते कृति करहु॥
बन्धु कुटुम्बी सोइ मृत्यु कही सों काढ़ि के।
कहा परी है मोहिं ऐसे कर्म न हों करों॥

बारबार इमि कह्यो भुवारा। कृति करवावहु जाय सुवारा
देखि कंक ऋषि केर इशारा। तबजयन्त इमि वचनउचारा।
जो अन्न भोजनको कछु पावों। तो कीचक ले घाटे जावों।
भोजन अमित भूप मँगवावा। बैठि जयन्त तहां सब पावा।
रोवें कीचक के सब भाई। बरणि विविधबलशीलबड़ाई।
मेवा बहु पकवान मिठाई। खात जयन्त न होत अघाई।
कह नरेश सुनु वचन जयन्ता। मृतढिग भोजन कर्म दुरन्ता।
लेजा लोथ करत कत देरा। क्रियाकरन हित होत अबेरा

दो० करि भोजन बलवन्त तब कीचक लियो उठाय।
दूरि नगर ते घाट पर मृतक उतारो जाय॥
इत कीचक के बन्धु सब पकरि सैलन्ध्री बाल।
जारनचल्यो कुबन्धुसँग लियोचल्योलेहिबाल॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो। पकरि पांय वाके सँगजारो।
बरजत पुरजन सो नहिं मानें। कटु वचन बिलनाहिं आनें।
करत विलाप द्रौपदी रानी। को राखे बिन शारँगपानी।
विविधभांतिसोंकरतविलापा। अतिशयकठुअधिहुसंतापा।

खत रह्यो विराट भुवाला । सोउन रोकिसक्यो तेहिकाला॥
करि ताहि तहँवां ले आयो । कीचकमृतक जहां पौढ़ायो ॥
रिभरि घृतघट केतिक आने । चन्दनअगर न जायँ बखाने ॥
हँ द्रौपदी अधिक सन्तापा । हा गन्धर्ब कहि करतविलापा ॥
वत मोहिं तुव बरतन्ददरेरा । तुवबल थकितभयो यहिबेरा ॥
दो० रुदनकरत लखिद्रौपदी गृहतबबल्योजयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अंगमें देखत कर्म्म दुरन्त ॥
बसन उतारि धरेउ कहूं भीम भीमके धाय ।
फूलिगात दूनो भयो उपमा कही न जाय ॥
गये अरुण नयन रतनारे । उठो क्रोध नहिं रहत सँभारे ॥
कुटिकुटिलअतिक्रोधप्रचण्डा । कालदंड सम द्वौ भुजदण्डा ॥
वर समान कलेवर भयऊ । सरवरनिकटभीमचलिगयऊ ॥
रे बिचार करों अब सोई । जेहित्रियबचै निधनखलहोई ॥
ष उपाय बन्यो गन्धर्वा । कीचक बन्धु बधौं जेहि सर्वा ॥
रें सकल सो करों उपाई । जेहिखलएकजियतनहिंजाई ॥
सनउतारि खोह धरि दीन्हा । भीमरूप तब भीमने कीन्हा ॥
नरूप तन परम मतंगा । कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अंगा ॥
दो० कीच चढ़ाइ सकलतन केश दिये मुकराय ।
कर तरुवरले वज्र सम देदिखराई आय ॥
चक बन्धु भजे अकुलाई । कह गन्धर्ब पहुँचिगा आई ॥
म बटोरि बीर सब लयऊ । सुरजनु वज्र गिरिनको हयऊ ॥
म लपेटि पंक तन धायो । बड़े केश बहुधा मुकरायो ॥
भयानक लखि बिकरारा । चहुँदिशि भागिचले नरदारा ॥
हांकि कीचक के भाई । वृक्ष घातदै गर्द मिलाई ॥
निशंक सब लोथ उठायो । चिता बनाइ सकेलि चढ़ायो ॥
हाथ कहा हथियारू । सो सब बरणों ताको सारू ॥
जयंत कछुबरणि न जाई । जब गन्धर्ब पहूँचो आई ॥

प्रथम भजे नर देखत जोई । करत पुकार भूपसन सोई ॥
दो० गये शेष तहँ नर जिते कहौ भूप सन जाय ।
॥ करतरु वरगन्धर्व्वले तेहिथलपहुँचो आय ॥
मानुष रूप गहे द्रुम पानी । कीचककुलकोघालिसिवानी ॥
महाराज पठवहु सब योधा । लेयँ जाय तिन्हकर सब शोधा ॥
जब यहवचन सुन्योनृपकाना । भयो सशंक अचंभव माना ॥
अंग अंग हालेउ सब गाता । मुखसेनिकसिसकतनहिंबाता ॥
वह शव कीचक भीम जरायो । फिरिजहँद्रुपदसुतातहँआयो ॥
खलवधि भीमनिकटजवगयऊ । रानी अंगन अतिसुखभयऊ ॥
बोली वचन हास करि रानी । राख्यो तुम पांडव को पानी ॥
हता सो अर्जुन भयो जनाना । तुमलगिरह्यो वंशको बाना ॥
जब द्रौपदी कही यह बाता । भयो प्रसन्न भीम सब गाता ॥
दो० गृहतन पठई द्रौपदी । आपु गये सरपास ।
॥ न्हाय धोय पहिरे बसन आयो आपु अवास ॥
॥ सरवर तर द्रुम डारिकै । आयो भूप निकेत ।
॥ धाय धाय नर नारि सब पूछत करि करि हेत ॥
पहुँचो भीम भूप दरबारा । समाचार कहु कहेउ भुवारा ॥
कहु जयंत कैसी भै भाई । कैसे गन्धर्व पहुँचो आई ॥
अरुण नयन देखो युत क्रोधा । ताकी सरवरि और न योधा ॥
हाथ तमाल मनहुँ यमदण्डा । कालदण्ड सम बाहु प्रचण्डा ॥
अति विशाल तन वेष कराला । देखिय जनु कालहु के काला ॥
कीचक बन्धु हते बलभारे । सो तेहिं मम देखत संहारे ॥
बड़े बीर मारे बलवाना । कोऊ भागि न पायो जाता ॥
तहँ नृप एक बुद्धि म्वहिं आई । गिरिकन्दरमहँ रह्यों लुकाई ॥
कृष्ण देव मम कीन्ह सहारा । भूप कृपा करि मोहिं उबारा ॥
निकरि न सक्यों तासु की त्रासा । गिरि कंदर भे देखि तमासा ॥
दो० नीचे ऊपर काठ करि कीचक दीन्हों डारि ।

आयो बीर कराल तहँ जहां सैलन्ध्री नारि ॥
ाके कान मांझ कछु कहेऊ। हौं सशंक बैठो तहँ रहेऊ ॥
खत सो उड़ि गयो अकासा। डारि दियो द्रुम सरवर पासा ॥
सुनत नरेश चित्त भयमानी। देवी रूप सैलंध्री जानी ॥
अरु गंधर्व भक्ति डरराख्यो। निशिदिननृपसेवाअभिलाख्यो ॥
पांचव बांधव कालहि पाई। भये एकथल सब्रजन आई ॥
कहा द्रौपदी नृपहि सुनाई। चारि बन्धु तुमलाज बिहाई ॥
द्रुपद कुमारि बार बहु भाखी। भीम लाज मेरी हठि राखी ॥
सुनत प्रसन्न भये सब भाई। कोउ सकै नहिं भेदहि पाई ॥
रही राति कछु प्रात तुलाना। गयेसकलनिजनिजअस्थाना ॥

दो॰ यहिबिधि बीते दिवसकछु नृपतिबिराटनिकेत।
दूरे रहे पाण्डव सकल कालक्षेप के हेत ॥

इतिश्रीमहाभारतेबिराटपर्व्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
कीचकबधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दो॰ वैशम्पायन सों कही जन्मेजय यह बात।
कहो कथा मम वंशकी सुनत न श्रवणअघात ॥

कहऋषि चितदै सुनहुभुवारा। कथाविचित्र अमियरससारा ॥
दुर्योधन नृप यह सुधि पाई। कीचक केहुँ मारयउ शतभाई ॥
शकुनि कर्ण ते पूछि नरेशा। कीचकबध बड़मोहिं अँदेशा ॥
सहसनागबल अति बरियारा। कहो कर्ण केहिं कीचकमारा ॥
सुनत कर्ण इमि कह्यो बखाना। कहौं सुनहुनृप मैं जसजाना ॥
मो मन उपजत यह संदेहू। भीम कस्यो है कारज येहू ॥
पठवहु दूत तहां चलि जाई। सुधिलै खबरिजनावहि आई ॥
भूपति की आज्ञा जब पाई। पठयहु शकुनि दूत समुदाई ॥
चले दूत नहिं लागी बारा। पहुँचे देश बिराट भुवारा ॥
सकलभांति तिनकीन्ह ढिठाई। तहां न सुधि पांडव की पाई ॥
भये थकित घूमे हलकारा। आयनृपति कहँ कीन्हजुहारा ॥

जोरिपाणि तिन विनय सुनाई । पाण्डवकीकहुँ सुधिनहिंपाई
सकल विराटपुरी हम देखी । लेत सुद्धि तहँ रहे विशेखी
केहिं मारे कीचक सो भाई । सो कछु भेद जानि नहिंजाई
लखे न पाण्डुसुवन तेहिठावां । सुन्यो श्रवण नाहिं एकोनावां
कह्यो दूत नृप सो वचयेहू । सुनि नरेश मन भा संदेहू

दो० भूपति मन संदेह करि बोले भीषम द्रोन ।
पुर विराट कीचक वधे केहिधौं कारण कौन ॥
कीचक को संहारि है भीम विना नहिं और ।
कह्योद्रोणगजसहससम सुभटनको शिरमौर ॥

कह्यो सुशर्मा नृप सुनिलीजे । अबकछु और विचार न की
संग चमू कछु देहु सहाई । चेढ़ों नृप विराट की ग
और यतन ते वे नहिं ऐहें । धेनु हरण सुनि तुरते धै
सुरभिहरणसुनि नहिं सहि रेहें । लागिगोहारि चले सब ऐ
होत युद्ध नहिं रहहिं सँभारा । तहँ खुलिजैहें शत्रु तुम्हा
भूपति अमित सैन सँगदीन्हों । विदावेगि तेहिअवसरकीन्हं
गमनी संग चमू चतुरंगा । उठी धूरि छपिगयो पतंग
शकुनिवोलायकह्यो इमिराजा । अवसबकरहुकटकको साज

दो० चली चमू चतुरंगिनी गज तुरंग के यूथ ।
रथी महारथि अतिरथी सुभट पदातिवरूथ ॥

चली सेन को बरणै पारा । बाजे गो मुख शंख नगारा
झांझ ढोल अरु भेरि बजाई । मारू राग सहित सहनाई
चलतनृपहि अतिहोतअतंका । टेर नकीब भये बहु डंका
बिरद बखानि बंदिजन बोले । हाली धरा धराधर डोले
दल कलिंग भगदत्त महीपा । आये साजि नरेश समीपा ।
द्विरद दुमत्त दुशासन भ्राता । शकुनी कृतवर्मा से ज्ञाता ।
विकरण करण शल्यवलधामा । कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा ॥
सिंधुराज लक्ष्मन बलधामा ।सजिसजिनिजदलहनेनिशाना॥

वाहुलीक गंगाधर राजा। नृप कांबोज कीन रणसाजा॥
सौ बांधव दुर्योधन केरे। औरौ सजे वीर बहुतेरे॥
भीषम द्रोण हलस्युस साजे। सोमदत्त भूरिश्रव गाजे॥
दक्षिण दिशा सुशर्मा घेरा। उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा॥
दो० व्रज वीथिन छाये सुभट लियो देश सब घेरि।
बांध्यो ग्वालसमूह तहँ लीन्हों धेनु खदेरि॥
केतक ग्वाललिय बांधिसुशर्मा। केतिक भाजिगये वशभर्मा॥
ते नरेश पहँ जाय पुकारे। धेनु वृन्द हरिगये तुम्हारे॥
सेनापति पठवहु बलदाई। शत्रुजीति गो लेइ छोड़ाई॥
गोधन हरो सुशर्मा आई। उठिनरेश चलिलेहु छड़ाई॥
जो न नरेश होहु असवारा। तौनहिंगोधनमिलिहितुम्हारा॥
और न सकहि सुशर्महिं जीती। सुनु नरेश मनमान प्रतीती॥
खिसचित्र दिशिनृपतिसुजाना। करिसुधिकीचककीपछिताना॥
दो० कीचककहँ सुमिरै नृपति यहकहि वारंहिवार।
याबिन सुरभी वेढ़िया को कहि लखै पुकार॥
हरुये बोल्यो भूप तब सेनापाल बुलाय।
धाइ सुशर्मा वीरजे सुरभी लेहु छुड़ाय॥
तर शंख नृपति सुत वीरा। औरौ सजे अमित रणधीरा॥
ते नरेश साजिके साजा। बाजे विपुल जुझाऊ बाजा॥
गजरथ अरु पदादि बहुसंगा। बहु कुरंगगति चले तुरंगा॥
करि बहुयतन सुशर्मा हांकी। चलितहिंसकतधेनुसबथाकी॥
सहदेव खुरा व्याधि उपजावा। ताते धेनुसकत नहिं जावा॥
तबलगि सुभट गये सब आई। बाजे पटह शंख सहनाई॥
पणव धेनु मुख भेरि समूहा। बाजे कटक भयो अति हूहा॥
उभय कटक महँ बाजन बाजे। करिकरि नाद वीररसभ्राजे॥
दुहुदिशि दलउमड़े घनघोरा। जहँतहँ सुभट भिरे बरजोरा॥
रण भयो अलूझा। अपनबिरान परत नहिंसूझा॥

विविधभांति तन अस्त्र प्रहारें । टरे न एक एक के टारे
उत्तर कुवँर आनि रण मण्डो । वाणनते रिपु सेन विहण्डो
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा । करि संधान सारथी मारा
करि अति नाद सुशर्मा गाजे । चढ़ि तुरंग उत्तर रणभाजे
गयो नगर तन अति भयमानी । लेयनु शंख कीन्ह रणआनी

दो० शंख सुशर्मा वीरते परो आनि जब जोर ।
महा भयंकर युद्धभो विशिख चले चहुँओर ॥
विजय वृहन्नल घर रहो पांडुपुत्र तहँ चारि ।
देखत कौतुक युद्धको सके न कोऊ हारि ॥

पञ्चबाण तब शंख प्रहारे । ते शर काटि सुशर्मा डारे
शरवहुत्यागिकीन्ह अतिजूझा । मूर्च्छितकुवँरनयननहिंसूझा
देखि सारथी रथी अचेता । दलपीछेगा यतन समेता
तब विराट नृप करि संधाना । एकबार मारे सौ बाना
तेशर त्रिशिख सुशर्मा काटे । वाण पचीस क्रोध करिछांटे
मूर्च्छित भयो विराट भुवारा । करिनिबन्ध निजरथपरडारा
वर्षन वाण सुशर्मा लागा । भयो अधीर कटक सबभागा
नृपहि बांधि सब जीति सहाई । चल्यो धेनु लै शंख बजाई

दो० सहदेव वपुष गुवालके कंकन्नृपहि शिरनाय ।
टेरि सुशर्मा हांक दै भिरे ततक्षण जाय ॥
मत्त करीदल तासुको अंकुश टेर सुनाय ।
फेरो वलकरि सिंह ज्यों गहो कोपि धरधाय ॥

भयो युद्ध कछु कहत बनैना । देखतथकित भई सब सेना ।
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा । लात घात मुष्टिका प्रहारा ।
भिरहिंगिरहिंउठिलरहिंसँभारी । अतिवलयुगल न मानैहारी ।
तबहिं सुशर्मा वलकरि हारो । पांडुपुत्र गहि धरणि पछारो ॥
मल्लयुद्ध करि दल विचलायो । छोरिविराटहि दलमहँलायो ॥
भीमसेन गज यूथ सँहारे । पकरि तुरंग तुरंगन मारे ॥

गहि पदादि के शीश उपारे। और सबै मल्लन को मारे॥
बारहिं बार भीम रण गाजे। सुनिसुनि नाद शत्रुसबभाजे॥
नकुल कीन्ह तब खड्गप्रहारा। कटीसैन बहि शोणित धारा॥
दो० बही सरित तहँ रक्तकी गयो सुशर्मा भाजि।
छोरि विराटहि लै चले पाण्डुपुत्र रण गाजि॥
आय कंक कहँ नायो माथा। देखिसकलदल भयोसनाथा॥
फिरी धेनु सुख भयो अपारा। गृहकहँ चल्यो विराट भुवारा॥
उत्तर दिशि दुर्योधन राई। घेढ़ि लई सुरभी समुदाई॥
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता। किते जूह लै चले तुरन्ता॥
धेनु वृन्द यक करण विलोकी। रथ दौराय लीन्ह तहँ रोकी॥
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा। तेहितहँखुराव्याधि उपराजा॥
बहुविधि मारि ग्वालगण थाके। अचलभयो धनुचलतनहांके॥
मिथुना शाप करण कहँ दीन्हा। फल पैहौ तुम आपन कीन्हा॥
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा। भारत में अटके रथ तोरा॥
दो० अपर ग्वाल गण आइकै बहुविधि करी पुकार।
उत्तर उत्तर की दिशा घेढ़ो धेनु तुम्हार॥
सुरभी शत हरिगई तुम्हारी। बैठ सुचित्त सदनमहँ भारी॥
हरी एक दुर्योधन गाई। एक दुशासन लै हँकवाई॥
करिवर एक करण हरिलीन्हा। कृतवर्मा आगे धरि दीन्हा॥
नृप भगदत्त गाय बहुतेरी। हरे यूथ चहुँ ओर गेरेरी॥
पीत श्याम सुरभी बहु चोरी। हरिलीन्हीं कपिला अरुधोरी॥
लक्षन कुवँर हरे यक जूहा। लै कलिंग यक धेनु समूहा॥
कुवँर पुकार श्रवण सुनु मेरी। हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी॥
लिये जात धन अश्वत्थामा। उत्तर दिशि उत्तर बलधामा॥
दो० ग्वाल विलाप कलाप करि उत्तर ते बहुभांति।
कही तुम्हारी धेनुहरि लीन्हे कुरुपति जाति॥
बाह्लीक गंगाधर गाई। हरिकाम्बोज लीन्ह अगुवाई॥

सोमदत्त भीषम रण गाढ़े । शकुनी शल्य रोकि मगठाढ़े ।
करतकुलाहल गिरिगिरिजाता । दीरघ दीरघ स्वरकरिबाता ।
कहतगोपकरि विविधविलापा । धेनुहरण सुनितोहिं न व्यापा ।
ऐसो धृक जीवन जग तोरा । शालंतउरन बचनसुनिमोरा ।
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला । सेनासहित न भवनसुवाला ।
मेरे रथ नहिं सारथि भाई । होत लेत मैं धेनु छड़ाई ।
जो मेरो रथ हांकत होई । कौरव जियत न छांड़ों कोई ।
दो० द्रुपदसुता यह वचन सुनि अर्जुनते अकुलाय ।
कह्यो वृहन्नल कुवँरका तुम रथ हांको जाय ॥
कह्यउ पार्थ तुव त्रिय बौरानी । रथहांकबगति हमनहिंजानी ।
कहे कुवँर मोसन नहिं होई । देव निकारि देश ते सोई ।
दासी भरे कुवँर उरभावा । चहत जीविका मोरिछड़ावा ।
जानों गाय सकल मैं गीता । विविध भांति नाचों संगीता ।
और बजावहुँ मैं सब बाजा । करोंप्रसन्न उदर हित राजा ।
चहत मोरि सबविधिउपहासी । नृपाकुवँर बोलत यह दासी ।
यह कहि पार्थ रहे अरगाई । द्रुपदसुता रानी पहँ आई ।
तहां बैठि उत्तराकुमारी । कहेउ सैलंध्री वचन उचारी ।
वचन हमार सुनहु महरानी । धेनुबेढ़ि कुरुपतिअभिमानी ।
पठवहु कुवँर भवन नहिं राजा । धेनु गये लागी कुल लाजा ।
दो० यह पारथ को सारथी वृहन्नला यहि नाम ।
जो यह हांके कुवँर रथ जीते सब संग्राम ॥
अब पठवहु उत्तराकुमारी । प्राणनते बढ़ अधिकपियारी ।
जो यह कहहि दिव्यते बानी । सो फुरकरहि सत्यानुरानी ।
कन्या सरस जानि मन ताको । विद्या सकल पढ़ाई याको ।
हांकब रथ न कहा किन कोई । याको इठ टौर नहिं सोई ॥
सुनिके श्रवण सैलंध्री बानी । कह्यउ उत्तरा ते यह रानी ॥
संग सैलंध्री के तुम जाऊ । विनयबृहन्नल को समुझाऊ ॥

ठकरि कह्यउकाज ज्यहिहोई। उत्तर को रथ हांके सोई॥
नंत वचन आतुर सो आई। संग सैलन्ध्री लीन्ह लेवाई॥
दो० जाय पार्थ पहँ रुदन करि गई कंठ लपटाय।
मलिनवसन गुड़ियाभई खेल न मोहिं सोहाय॥
सुन्योश्रवण यहिपुर निकट आयोहै कुरुराय।
तिनको भूषणवसन गुरु मोकहँ देउ छिनाय॥
तबलगिकरों न वचनफुर मोरा। तबलगि कंठ न छांडों तोरा॥
भूषण वसन कौरवन केरा। विन आने नहिं होय निबेरा॥
अर्जुन ते उत्तराकुमारी। बोली वहुरि नयनभरिवारी॥
भीषम द्रोण करण उरमाला। दुर्योधनको मुकुट विशाला॥
देहु गुरू स्वहिं आनि छिनाई। यहिविधि वारवार रटलाई॥
कहत द्रौपदी श्रवणन वानी। सभासुद्धि सवतोहिंभुलानी॥
बीती अवधि डरहु केहिकाजा। लरहुनिकटआयो कुरुराजा॥
क्षत्री युद्ध डरहिं जो पारथ। कर्म धर्म वहुताहि अकारथ॥
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा। उठि न लरै कुलआवै लाजा॥
तुम शरमात प्रवल त्रियनाहीं। जियडेरातजिमिपियपहँजाहीं॥
दो० चित्रवाउ रत साहसी महावाहु वलधाम।
वृहन्नला को रूपधरि तुम छांडेउ वहनाम॥
स्योंहठिरहउ चुपकितुमपारथ। करो युद्ध है उत्तर स्वारथ॥
कह द्रौपदी श्रवणलगि वाता। भयद्दगअरुणफूलिसवगाता॥
कह्यो उत्तरी वचन रसाला। देहुमँगाय वसन मणिमाला॥
वारवार यह कहि विलखाई। तजै न कंठ स्त्री लपटाई॥
समुझायो विधि पार्थ अनेका। सुनि उत्तरी तजतनहिं टेका॥
अर्जुन देखि दया उपजाई। द्दगजलपोंछिकुवँरिसमुझाई॥
कौरव जीति वसन मणि लेऊं। पुत्री तोहिं क्षणक महँ देऊं॥
जो नहिं भूषण वसनहिलावों। आनुनफिरिनतोहिंदिखरावों॥
करि प्रबोध उत्तरी पठाई। उत्तर ते बोल्यो हरपाई॥

॥ दो० उत्तरसों तबहीं कही विजय वृहन्नल बात।
साजो कौरव युद्धको है प्रसन्न सब गात॥
पारथ सारथि मैं कियो जानत हों रथ हांकि।
जहां होतहै सारथी जीति सके को ताकि॥
इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वपंचमोऽध्यायः॥ ५॥

सुन्यो वचन यह राजकुमारा। हृदय मांझ सुखभयोअपारा
टोप सनाह पार्थ के आगे। राखे वचन कहन इमिलागे
कवच पहिरि पारथ परमाना। जाते अंग न भेदै बाना
जिमि कीचक पहिरै वरनारी। तिमिसनाहकृत सुवननगारी
देखि लोग सब हँसे ठठाई। कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई।
सिंधु समान कटक कुरुराई। रथ ले भाग्यो युद्ध डराई।
सबके वचन हासरस पागे। सुनत द्रौपदी शरसम लागे॥

॥ दो० कहत पार्थते द्रौपदी बौरावत क्यहि काज।
॥ रथ साजो अब कुवँरको रणजीतो कुरुराज॥
वर्षदिवसकी अवधिवदि गये औरदिनवीति।
कीजै युद्ध निशंकह्वै रही कौन की भीति॥
भयो वृहन्नल सारथी रथ आरुह्यो कुमार।
साजिकटकलीन्होंधनुष कोपिगह्यो तलवार॥

गन्धर्बन जे मन्त्र सिखाये। सो पढ़ि पार्थ तुरंग उठाये॥
ह्वै सारथी वेगि रथ हांको। औघट घाट न काननताको॥
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना। उत्तरके घट रह्यो न प्राना॥
गाजत गजहिं हिंसत है घोरा। दुन्दुभि भेरि नाद अतिशोरा॥
शङ्खनाद पूरे सब कोई। मारु मारु सबदलमहँ होई॥
द्वन्द्व घण्टध्वनि अति ठहनाई। मारू राग सहित सहनाई॥
रंग रंग बैरख फहराई। हरितपीतसित श्यामसोहाई॥
वाजत सेन सेन पर डंका। वरणिवन्दिजनकहतअतंका॥
सारथि सन उत्तर करजोरा। लैचलुभागि भवन रथमोरा॥

ारबार तेहिं विनय वखानी। एको वात न सारथि मानी॥
दो० करतविनय सोनहिंसुनत रथत्याग्योअकुलाइ।
भाजत लखि उत्तर कुँवर गहोपार्थ तवधाइ॥
ांधि धरो रथ ऊपर आई। सम्मुख चल्यो सेनपर धाई॥
ब गुरुद्रोण पार्थपहिंचान्यो। सवही ते यहिभांति वखान्यो॥
ांधिरथी रथ ऊपर धारो। ह्वै निशंक रणको पगुधारो॥
अवगाहन सागर संग्रामा। भुजवल पैज करी वलधामा॥
शूर सजग ह्वै सव धनुवाणा। लेहु शूल अरु शक्तिकृपाणा॥
पवन गवन समअर्जुनआवत। वा विनको जगमें असधावत॥
दुर्योधन ते द्रोण वखाना। अवसवसजगहोहु वलवाना॥
भूप भली कछु परत न दीसी। है आवनि यह अर्जुन कीसी॥
कह भीषम सुनु वचन हमारा। मृग सँगधावत दीखसियारा॥
कुवत नितम्ब तासुपद धावत। सुनु नरेश यह पारथ आवत॥
धरो वांधि रथ राजदुलारा। त्रियस्वरूप यह पाण्डुकुमारा॥
दो० मंद दृष्टि भइ द्रोणकी भीषम गये वुढ़ाय।
कह्यो शकुनि यह करणसों हँस्यो करण हहराय॥
सुनि भीषम भा क्रोध अपारा। कह नरेश सुनु वचन हमारा॥
वनवन फिरत वहुत दुखपावा। परम क्रोध करि पारथ आवा॥
वलहिंकोधकरितुमहिं विलोकी। ये शठ एको सकहिं न रोंकी॥
भीषम कह्यो करण सन वोली। दल की तीनि वनावहुटोली॥
एक सेन लै चलहु भुआला। एक करे गोधन प्रतिपाला॥
रथ रोंकि करो संग्रामा। एक सेन ते सव वलधामा॥
हि विधि भीषम मंत्र दृढ़ाई। तीनि अनी करि सेन वनाई॥
दो० द्रोणी कृतवर्मा शकुनि शत वंधव वीरेश।
कृपाचार्य अरु करण सँग लो लै चल्यो नरेश॥
। भगदत्त शल्य वलदाई। चले संग लै धेनु लवाई॥
पम द्रोण आदि रणधीरा। मग रोंके ठाढ़े सव वीरा॥

करें शंखध्वनि औ गल गाजें। मारू पटह भेरि वहु वाजें
गोमुख ढाक ढोल प्रणवानक। वाजतसवअतिहोतभयानक
द्विरद यूथ देखत अति भारी। मादों जलद घटा जनुकारी
रथके ठाट भूमि सब छाये। परे न भूपर तिल छिटकाये
तुरँग पदादि विलोकि अपारा। भयो सशंक विराट कुमारा
दो० उत्तर सों सारथि कही भय न करहु कलुषंक।
सकल निपातों अरिचमू रहियो आप निशंक॥
असकहि फेरों तुरँग रथ सुनि पाण्डव कुलदीप।
पलक न वीती विपिन महँ लेगे नगर समीप॥
अंध कूप तरुवर शमी ता पर धनु अरु वाण।
वेगि लै आवहु मो निकट गंजों अरिदलप्राण॥
सुनत वचन उत्तर हरषाई। त्यहिद्रुमनिकटतुरतचलिज
चढ़ेउ पार्थकी आज्ञा मानी। अस्त्रसनाह विलोक्यो आ
पार्थ सुनो मणि इवेत सनाहा। इवेत धनुष इवेतै गुणआह
आनो वेगि छुवे मति सोई। अस्त्रसनाह नृपति करहो
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा। अर्जुन ते यह वचन उचार
कनकरचितमणिखचितसोहाये। धनुष सनाह देखि युगपाये
आयसु होइ डारि महि दीजे। कह पारथ यह कतमत कीजे
यह सहदेव नकुल धनु गेरा। रहि न सकै मम खैंचि दरेरा
सो उत्तर छांड्यउ अरुगाई। और सनाह विलोक्यो जाई
कोटि भांति उत्तर वल करेऊ। जब न उठ्यो तबसोपरिहरेऊ
उठो न धनुष कवच हिय हारो। अर्जुन ते इमि वचन उचारो।
दो० उठ्यो न धनुष सनाहकर कोटि भांति वलकीन्ह।
लोहमयी जनु वज्रसम केहि निमित्त कै दीन्ह॥
परी गदा गिरिवर समताई। है केहिको म्वहिं देव वताई॥
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा। याको सुनहु सकलव्यवहारा॥
लोहमयी धनु कवच कराला। भीमसेन को गदा विशाला॥

लावहु और करिय रण जाई। मग हमार देखत कुरुराई॥
लाव वेगि धनुकवच हमारा। पल लागत जनु कल्प अपारा॥
जो गृह जाइ भाजि कुरुराई। फिरिका करव युद्धमहँ जाई॥
अक्षय तूण जाइ तहँ देख्यो। संभ्रमभयो कुवँर यह लेख्यो॥
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा। अहिके विशिख करतफुंकारा॥
खेकिरीटिस्वे कवच विलोका। रविसमतेज धनुपअवलोका॥
पारथते तव कह्यउ कुमारा। धनुजनु दिनकर तेजपसारा॥
तव आयुध हम छुवन न पावें। व्याल रूप शर काटनधावें॥
सुनु सारथि मम वचन सुनाये। मोपर अस्त्र न जायँ उठाये॥
यह सुनि के पारथ हरपाई। कवच अस्त्रसवलीन्ह उठाई॥

दो० निर्गुण धनुगुण करि सोई सूधेकीन्हे वाण।
काढ़ी गंगा भूमि ते धाये सकल कृपाण॥
पहिरि कवच शिरटोपदे निज धनुकरि टंकोर।
हांक्योरथ वहुकोपकरि पहुँचो कटक वहोर॥
वीर धनुर्द्धर धीरके मनमहँ कहूँ न हारि।
भादुर्घट सव घटनमहँ कौरवदल अतिकारि॥

वैठो आनि ध्वजा हनुमंता। जाके वलको नहिं कछुअंता॥
करिअति क्रोधधनुपशरलीन्हो। देवदत्त शंखध्वनि कीन्हो॥
चल्यो पार्थ निज रोप वढ़ाई। जीतन हित दुर्योधन राई॥
सारथिते उत्तर कर जोरी। कहै सुनहु विनती कछुमोरी॥
तुमते कहाँ वृहन्नल वांची। मोते कहो वात सव सांची॥
कौन आप न्वाहिं देव वताई। मो मनकी संशय मिटिजाई॥
कह अर्जुन भापत सति भाऊ। हे अपिकंक युधिष्ठिर राऊ॥
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा। भीम जयंत तुम्हार सुवारा॥
सेनी सहदेव नामहिं जानो। वाहुक नकुल मनहे मानो॥

दो० वह हे रानी द्रौपदी जाहि सैरन्ध्री नाम।
कछु न भय चित कीजिये जीतों सव संग्राम॥

तुम्हरी सुरभी सो हरी लेत हमारो शोध ।
अवसुन वीते सो अवधि तबमें कीन्हों क्रोध ॥
इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वकथनोनामपष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

दो० उत्तर फिरि लागो चरण सुनुस्वामी सतिभाय ।
दशौ नाम अपने कहो तो मोमन पतियाय ॥

कौरव वंश जन्म हम लीन्हा । अर्जुननामव्यासमुनिकीन्हा ॥
वान पंथ सुर द्विरद उतारा । पार्थ नाम भा जगत हमारा ॥
जीत्यो वात कवच संग्रामा । कीन्ह्यो सुनासीरको कामा ॥
भये प्रसन्न समेत समाजा । विजयी नाम धरो सुरराजा ॥
पुनि नरेश शिर मुकुट बँधावा । तहां किरीटि नाम कहवावा ॥
द्रुपद नरेश सेन जब काटी । एक मिलाय मांस अरुसाटी ॥
पुनि विभत्सरसकरि रणराखा । नाम विभत्सद्रोणयह भाखा ॥
धनपति जीतिदण्ड लै आना । नाम धनंजय कृष्ण बखाना ॥
द्वौ कर जोरि करौं संग्रामा । परो सव्यसाची तब नामा ॥
श्वेत तुरँग मैं रथ मचिआऊं । भयो श्वेत वाजी तव नाऊं ॥

दो० रथ साजत मैं युद्धहित ध्वजबैठत हनुमान ।
नामकपिध्वज जग विदित याहीते तूजान ॥

शब्द होत रहै हमरो बाना । शब्द भेद जग नामबखाना ॥
औरहु सुनो विराट कुमारा । हम तुम्हार कीन्हों अपकारा ॥
वारवार विनवों कर जोरी । सो सव चूक वकसिये मोरी ॥
भीमसेन शत कीचक मारे । ते अपराधी हते हमारे ॥
वरवस गह्यो द्रौपदी रानी । मारेउ भीम मानि गिल्यानी ॥
मारेउ मल्ल द्विरद गहिलायो । तेरे गृह हम अतिसुख पायो ॥
तुम्हरे आनि विपतिसवडारी । वर्षदिवसकी अवधि हमारी ॥
द्वादश वर्ष विपिन कै आये । तव छायामहँ अति सुखपाये ॥
सुनियह श्रवण विराटकुमारा । जोरियुगलकर वचनउचारा ॥
हलकी भारी जो हम कहेऊ । आपसमर्थ श्रवणसुखलहेऊ ॥

ो कछु हम ते भा अपराधू । सो सब क्षमाकरहु तुमसाधू ॥
दो० वीर धनंजय क्रोध करि चल्यो सबल रथहाँकि ।
अतिबल चले तुरंग तब रहे शिथिल ह्वै थाकि ॥
पाय तेज गन्धर्व्व को अतिबल भये तुरंग ।
कही द्रोण गुरु पार्थ सों कौन करै रण रंग ॥
ाय धनुर्द्धर भा रण काजू । सन्मुख करै युद्धको आजू ॥
रवली नहिं धीरज धरि है । कौनवीर अर्जुन सन लरिहै ॥
ल जैहै चहुँ ओर पराई । युद्धजुरे नहिं कोउ समुहाई ॥
नहु सकलमम वचन सुहावा । याते अधिक शोच उरआवा ॥
लय काल जेहि करै मशाना । कोधौं सहै पार्थ कर बाना ॥
टि उपाय करो सब सोई । अर्जुन जीति सकै नहिंकोई ॥
हिविधिकहि गुरुद्रोणबुझावा । भयो अपरनृपचरितसुहावा ॥
म पार्थ युग बाण चलाये । तेगुरु द्रोणनिकटचलिआये ॥
दो० एक गिरो गुरु चरणतर एक श्रवण ढिग आइ ।
करिप्रणाम पारथ कही परो भूमि पर जाइ ॥
तजेपार्थ पुनि बाण युग गयो पितामह पास ।
परोचरण यक श्रवण महँ कीन्होंआय प्रकास ॥
थम पितामह पार्थ प्रणामा । तुमते कहौं सुनहु बलधामा ॥
नि अर्जुनयहकह्यो सँदेशा । तुमसन्मुख रणमोहिं अँदेशा ॥
मब नाथ अपराध हमारी । कुरुपति हमें बैर है भारी ॥
पट द्यूत करि भूमि छड़ाये । तेरह वर्ष महादुख पाये ॥
रिहौं आजु भयङ्कर रारी । अबनापितामह लागिहमारी ॥
हि कहिबचन बाणमहिजाई । कहयउपितामह सबनसुनाई ॥
हे भीषम अब अर्जुनआवा । करहुसकलमिलिरणकोदावा ॥
कलसजगकै गहिहथियारा । करहुयुद्ध जनिकरहु अबारा ॥
दो० कहेउ द्रोण गांगेय ते सुनिये बचन प्रमाण ।
श्रवणलागि मोसे कह्यो यह अर्जुन को बाण ॥

तुम सम्मुखरण उचितनमोको। ताते विनय सुनायो तो
कपटद्यूत करि विपिननिकारा। तेरह वर्ष सह्यो दुख भा
अब न गुरू अपराध हमारा। करिहौं कटक सकल संहा
असकहि वाण परो महिजाई। ह्वै सचेत सब करहु लरा
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई। देखे सकल वीर समुदा
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये। तहँ कुरुनाथ देखि नहिंपा
उत्तर ते यह पार्थ बखाना। सुनु विराट सुतवचन प्रमान
अपरनिधननिसरहिंनहिंकाजा। चलु रथहांकि जहांकुरुराज
सुनि विराट सुत तुरँगउठाये। जेहिदलनृपतितहांचलिआ
लीन्हीं पार्थ भूप कहँताकी। लेगा वेगि कुवँर रथ हांकी
भीषम द्रोण सेन सब धाई। पहुँची निकट भूप के आई
हाहा हूत सेन महँ भयऊ। दल तीनों यकमिल ह्वै गयऊ
कह नरेश सब वीर बोलाई। को रोके अर्जुन कहँ जाई

दो० जीतन पारथ वीर हित बीटक लियो कलिंग।
अचल मेरुसों रणरचो कियो कोटि रण रंग॥

नृप कलिंग अर्जुन बल पाई। द्वौदिशि बाणवृन्द झरिलाई॥
दश शर तब कलिंगनृप छांटे। आवत पार्थ बीचहीं काटे॥
पुनि अर्जुन यकबाणप्रहारा। कुन्तल नृपकलिंग को मारा॥
पुनिशर हन्यो काल के आगे। काट्यो गजके ध्वजा पताके॥
गजतजिचढ़्योअपररथआई। कीन्ह कलिंग युद्ध अधिकाई॥
तब कलिंग कीन्हों अतिकोपा। शरनमारि पारथ रथ तोपा॥
अग्नि बाण तब पार्थ पवाँरा। सबशरभये निमिषमहँछारा॥
पुनिशतविशिखकलिंगचलाये। ते सब अर्जुन मारि गिराये॥

दो० पार्थ सहसदश बाण ते हतो कोपकरि वीर।
मूर्च्छितगिरोकलिंगरण धरि न सकतदलधीर॥

इतिश्रीमहाभारतेकलिंगयुद्धवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

दो० जब कलिंग मूर्च्छित भयो तबविकरण रणसाजि।

कोपि शरासन वाणलै आयो सन्मुख गाजि।
तब विकरण करिकोप चलाये। भूमि अकाश वाण ते छाये॥
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती। लगे मनहुँ दिवस महँ राती॥
अतिशयअन्धकार तहँभयऊ। परेनलखिदिनकरछपिगयऊ॥
विकरणहनो क्रोधकरि जियमों। तीस वाण पारथ के हियमों॥
पारथ वाण क्रोध करि छंड्यो। पलमहँ शरविकरणकेखंड्यो॥
औरो वाण पांडुसुत छांटे। हय गय मरे अमित रथकाटे॥
कोटिन अस्त्र खर शर मारा। काटिसेन वहि शोणितधारा॥
करी लोथ धरणी पर पाटी। वूझि न परे शीशअरु माटी॥
कहां जंघ कर शिर पद डारे। कहूँ कवन्ध परे महि भारे॥
दो० तब विकरण चालीस शर हन्यो कीशवलवन्त।
कोटि वाण पारथ हन्यो संगर भयो अनन्त॥
तब विकरण साहससहित भूमि परो मुरछाय।
देखि करण वलवीर तव आयो धनुपचढ़ाय॥
धनुप चढ़ाय करण ललकारे। कठिन वाण अर्जुन पर मारे॥
ते शर सर्वजिष्णु रण खंड्यो। करिअतिक्रोधसहसशरछंड्यो॥
ते सब विशिखकरण पुनिकांटे। लाघव शर पारथ पर छांटे॥
आवत देखे वाण अपारा। अर्जुन अग्निवाण तवमारा॥
करण वाण जारे सब आगी। लागी जरन सेन सब भागी॥
वरुण वाण तवकरणचलायो। क्षणभीतरसव अनलवुतायो॥
अर्जुन शर वूड़त जब जाना। मारो तुरत पवन को वाना॥
तासुचलत गा नीर सुखाई। ध्वजा पताका छत्र उड़ाई॥
अहिशरकरणत्यागतव कीन्हा। नागनसकलपवनभखिलीन्हा॥
तव अर्जुन शिखिवाणचलाये। मोरन सकल सर्पसमखाये॥
रविसुत अन्धकार शरपाग्यो। देखत सव पक्षीगण भाग्यो॥
परे देखि नहिं नयन पसारा। व्याकुल भयो विराटकुमारा॥
अर्जुन ते तव वचन उचारा। प्राण जात अवकरहु उवारा॥

तुम सम्मुखरण उचितनमोको । ताते विनय सुनायो तोके
कपटद्यूत करि विपिननिकारा । तेरह वर्ष सह्यो दुख भार
अब न गुरू अपराध हमारा । करिहौं कटक सकल संहार
असकहि बाण परो महिजाई । कै सचेत सब करहु लराः
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई । देखे सकल बीर समुदाः
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये । तहँ कुरुनाथ देखि नहिंपाये
उत्तर ते यह पार्थ बखाना । सुनु विराट सुतबचन प्रमाना
अपरनिधननिसरहिंनहिंकाजा । चलु रथहांकि जहांकुरुराजा
सुनि विराट सुत तुरँगउठाये । जेहिदलनृपतितहांचलिआ
लीन्हों पार्थ भूप कहँताकी । लैगा वेगि कुवँर रथ हांकी
भीषम द्रोण सेन सब धाई । पहुँची निकट भूप के आई
हाहा हूत सेन महँ भयऊ । दल तीनों यकमिल कै गयऊ
कह नरेश सब वीर बोलाई । को रोंके अर्जुन कहँ जाई

दो० । जीतन पारथ वीर हित वोटक लियो कलिंग ।
॥ अचल मेरुसों रणरचो कियो कोटि रण रंग ॥

नृप कलिंग अर्जुन बल पाई । द्वौदिशि बाणवुन्द झरिलाई
दश शर तब कलिंगनृप छांटे । आवत पार्थ वीचही काटे
पुनि अर्जुन यकबाणप्रहारा । कुन्तल नृपकलिंग को मारा
पुनिशर हन्यों काल के आगे । काटयो गजके ध्वजा पताके
गजतजिचढ्योअपररथआई । कीन्ह कलिंग युद्ध अधिकाई
तब कलिंग कीन्हों अतिकोपा । शरनमारि पारथ रथ तोपा
अग्नि बाण तब पार्थ पचाँरा । सबशरभये निमिषमहँछारा
पुनिशतविशिखकलिंगचलाये । ते सब अर्जुन मारि गिराये

दो० । पार्थ सहसदश बाण ते हतो कोपकरि बीर ।
॥ मूर्च्छितगिरोकलिंगरण धरि न सकतदलधीर ॥

इतिश्रीमहाभारतेकलिंगयुद्धवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० । जब कलिंग मूर्च्छित भयो तबत्रिकरण रणसाजि ।

म सत्र में पाले यहि कामहिं । पारथ जीति सकै संग्रामहिं ॥
दो० - यह कहिकै कुरुनाथ तब नेकु न मानी शंक ।
चल्यो निशान वजाइरण भयो महाआतंक ॥
भयोचलत अशकुनअतिभारी । रविकेअक्षतफेकरि सिआरी ॥
बिनु घन नभमंडल घहराई । रहे गिद्ध दल ऊपर छाई ॥
बोल उलूक भयंकर वानी । बिन वारिदनभ वरसत पानी ॥
करैं काक कंक नभ ठाटी । चलहिं जम्बुगणमारगकाटी ॥
रासभ श्वान भयंकर बोली । बोलत धरा वार वहु डोली ॥
गिरिगिरि परत शरासनपाणी । परतम्यानतजिनिकरकृपाणी ॥
खास दास कर छत्र विशाला । परोटूटि अरु नृप मणिमाला ॥
दिशा धूँधि धरणी पर छाई । गये नृपति के चमर उड़ाई ॥
अशकुन और भयो यकवांका । भूपति रथको टूट पताका ॥
दो० भै शंका भूपाल तब कह्यो द्रोण सन बोलि ।
अशकुनकारणसकलगुरु हमहिंवतावहुखोलि ॥
कह्यो द्रोण गुरु सुनु कुरुराई । कहतशकुनअतिविकटलराई ॥
है इहां कठिन संग्रामा । होहिंनिराश सकलवलधामा ॥
कह्यो वचन गुरुरह्यो चुपाई । वोल्योकरणनृपति सनआई ॥
ण भाजे मो कहँ भै लाजा । अब मैं लरव पार्थसन राजा ॥
ह कहि करण हांकिरथदीन्हा । वाण वृष्टि पारथ पर कीन्हा ॥
खि पार्थ लीन्हो शारंगा । पुनि रणरच्यो करण के संगा ॥
भय वीर लागे शर मारन । सौते सहस हजार हजारन ॥
वरविसुवनक्रोधअति कीन्हों । वाण पचीस फोंकपर दीन्हों ॥
क मारि रथ ऊपर छंड्यो । अर्जुन ते शर वीचहिं खंड्यो ॥
ौर पांच शर पार्थ चलाये । करण वली ते काटि गिराये ॥
दो० करण धनुर्दर क्रोधकरि हन्यो नराच अचूक ।
ते पारथ निज शरन ते काटि कियो दुइ टूक ॥
ौर सहसशरत्यागेउ पायल । ताते भयो तरणिसुत घायल ॥

तब पारथ रविबाण प्रहारा। तम भा दूरि भयो ...

दो० तब रविनन्दन कोप करि मारे पर्वत बान।
पारथरथपर शैलगण चहुँ दिशितें फहरान॥

बज्र बाण तब पार्थ प्रहारा। सबगिरिभयोनिमिषमहँछार॥
तब रविसुवन क्रोध उपजावा। पढ़िसुमंत्र यमबाण चलाव॥
पार्थ कठिन शर आवतजाना। मृत्युबाण कीन्हो संधान॥
अस्त्रशस्त्र लड़ि शीतलभयऊ। रविसुतकोपिकठिनशरलयऊ॥
सो लै अर्जुन के उरमारा। बही प्रवाह रुधिर के धारा॥
रविनन्दन विराटसुत ताका। मारो कठिन बाण दै हांका॥
अब अर्जुन रण करहु सँभारा। करों निधन सारथी तुम्हारा॥
अर्जुन लये बाण कर चोखे। कहो करण भूल्यो जनिधोखे॥
यमअरुइन्द्र वरुणचलिआवैं। सारथि छांह छुवन नहिंपावैं॥
सुनु रविसुत केतिक बलतोरे। सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे॥
यहकहिकै अर्जुनशर खण्डित। कीन्होंविशिखकर्णकोखण्डित॥
पुनि पारथकृत विशिखप्रहारा। भंज्यो तुरँग सारथी मारा॥
शतसहस्र शर भालक लीन्हे। रविनन्दन उर भेदन कीन्हे॥
अगणित बाण हृदय महँलागे। सहि न सके रविनन्दनभागे॥

दो० रण अर्जुन को नेकहू सहि न सको स्वइ बान।
रणमण्डित तजिको भयो रवि सों तेजनिधान॥

गयो पराय कुरुपति आगे। विकल वचन कर्ण तहँपागे॥
सुनु नरेश भा कठिन मशाना। सहि न सक्योअर्जुनकेबाना॥
जब यह सुन्यो कर्ण मुखबाता। क्रोध कृशानु जरे सबगाता॥
बोल्यो नृपति कुटिलकरिभौंहैं। अरुणवरण भे नयनरिसौंहैं॥
क्षत्रीकुल बालक रिसगारी। करत युद्ध पग परे पछारी॥
आयो करण युद्ध ते भागी। तुमहिंबिलोकिमोहिंरिसलागी॥
तुम अर्जुन कहँ पीठि दिखाई। भै बड़िलाज बरणि नहिंजाई॥
भूरिश्रवा मगधपति आगे। द्रोणहिं बोलि कहननृपलागे॥

दुश्शासन तव युद्ध सँभारो। देख्यो करण महाबल हारो॥
कर धनुष कोपि बलवाना। पारथ पर छांड़े बहु बाना॥
शर जिष्णु काटि सब डारे। दश शर दुश्शासन उरमारे॥
पंच वाण सारथि के अंगा। बीस वाण ते हने तुरंगा॥
चारि वाण काटे रथ चाका। सात वाणते ध्वजा पताका॥
पारथ कीन्ह कठिनशरजाला। करि फुंकारचले जनुब्याला॥
भये विरथ दुश्शासन भाजे। शंखध्वनि करि पारथ गाजे॥
वाण वृन्द झरिलाई। कुरुसेन सब चली पराई॥
भारत अति पारथ कियो मारी सेन अनन्त।
वाण शरासन साजिके तव आयो भगदन्त॥
दलजव डोलत ताको। मत्त द्विरद आगे नृप हांको॥
हस शर एकहि बारा। कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा॥
पार्थ काटि महिडारे। लक्षबाण करि क्रोध पवांरे॥
वाण काटि भगदत्ता। आगे पेलि चल्यो मयमत्ता॥
देखि अर्जुन धनुताना। मारो मगधराज उरबाना॥
रह्योशिथिलसब अंगा। तब कुन्तल लै फिरेउमतंगा॥
अर्ब खर्ब शर छांटे। भारत भूमि वाणते पाटे॥
१७ सन्मुख जेतो दलपायो। मारि पार्थ यमलोक पठायो॥
दो० अति संकटभा कटक महँ सेना चली पराइ।
तव पारथ रणभूमि में गर्जे शंख बजाइ॥
इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८॥
दो० पार्थवाण नहिं सहिसक्यो कुरुदल चल्योपराइ।
देखि द्रोणगुरु क्रोध करि आये रथ दौराइ॥
हंकमारि यह वचन सुनायो। पार्थसँभारु द्रोण अबआयो॥
सुनियहवचन पार्थचलिआगे। करन प्रणाम गुरुसन लागे॥
देख्यो द्रोण नमित पदसोई। आशिष दयो मनोरथ होई॥
तसकहि गुरुकोदण्डचढ़ायो। द्रोहुसजग कहियाणचलायो॥

लक्ष बाण सेना पर मारे। हय गज रथ पदाति संहारे।
पारथ करेउ युद्ध सरसाई। रणमहँ रक्त नदी बहिआई।
मत्त मतंग मरे जे भारे। भये सरिस दोउ ओर करारे।
चमकत खड्ग मीन सम जाने। चर्म सेवार सरिस अरु माने।
अहिसमरुधिर नदीमहँसांगी। जहँ तहँ परी धूप जनुनांगी।
शिरबिन कवचसहित उतराहीं। जहँतहँ सुभट ग्राहजनुआहीं।
बिन शिर सेन जात पहिंचाने। मनहुँ सूस जल में उतराने।
रथ के चक्र अमित उतराहीं। जनुआवर्त्त भ्रमत जलमाहीं।
परी पत्र पुरइनि सम मानो। बहतढाल कच्छप समजानो।
दो० भैरव भूत पिशाच सम गावत करि करि हेत।
नाचत चौंसठि योगिनी रुधिर पियत युत प्रेत॥
अंध धुंध रण भयो भयंकर। नाचत हँसत लेत शिरशंकर।
कटकटाहिंजम्बुकरणधावहिं। पियहिंरुधिरमलखाहिंअघावहिं।
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये। रणमहँ भये तृपित मनभाये।
उठहिंकबन्धमुंड बिनधावहिं। धरुधरुमारुमारुगोहरावहिं।
देखेउ करण भिहावन खेता। लीन्होधनुष कीन्ह चितचेता।
करि रिस शतसहस्र शरमारे। पाण्डुसुवन ते काटि निवारे।
अर्जुन कोपि बाण दश त्यागे। काटे तुरंग स्वामि उरलागे।
भयो बिरथ तव तरणिकुमारा। भयो आन रथपर असवारा।
करि रिस कीन धनुष टंकोरा। अशनिसमानशिलीमुखजोरा।
हांक मारि के करण चलावा। बीचहि अर्जुन काटि गिरावा।
समबलयुगल करणअरुपारथ। कीन्हों महा भयानक भारथ।
सत सहस्र शर पार्थ निवारे। हय गज कटे सुभट बहुमारे।
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा। कोटिनसुभट गिरे बहुनामा।
दो० करण धनुर्द्धर के हिये एक बार सो बान।
मारो अर्जुन कोपकरि कीन्हों कठिन मशान॥
तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई। रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई॥

ारे अर्जुन के दश बाना। बीस बाण मारे हनुमाना ॥
े द्वै शर तुरँगन के मारे। शिथिलभयो पगटरत न टारे ॥
दो॰ तब पारथ अति क्रोध करि मारो बाण कराल।
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा सुधि न रही तेहिकाल ॥
ब सारथि स्यंदन पलटावा। लै नरेश के आगे आवा ॥
ोण अपर रथ के असवारी। सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी ॥
े सरोष गुरु बहुशर छांड़ेउ। आवतअर्जुन बीचहिखांड़ेउ ॥
ब्हीं पारथ क्रोध अपारा। गुरु उरकठिन बाणयकमारा ॥
तबहिं द्रोण कहँ मूर्च्छा आई। फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई ॥
अर्जुनकोपि धनुष धरिहाथहिं। बधी सेन काटे बहु माथहिं ॥
री लोथ धरणी पर छाई। रणमहँरुधिरनदी बहिआई ॥
तब योगिनि तहँकरत बिहारा। तालबजाइ करत किलकारा ॥
भक्षहिंमांसरुधिर पुनि पीवहिं। आशिषदेहिंपार्थचिरजीवहिं ॥
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा। सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा ॥
दो॰ पवन गमन सम द्रोणसुत गयोतुरत रथहांकि।
बिशिखचलायो क्रोधकरि पारथकी दिशिताकि ॥
सोशर काटे निमिषमहँ कीन्हों पुनि शरजाल।
द्रोणतनयके उरहन्यो अर्जुन बाण कराल ॥
ागत बाण भयो तनुपीरा। रुधिर धारगा भीजि शरीरा ॥
धनुष चढ़ाय द्रोण सुत छांड़े। दिशिओविदिशिबाणसबमांड़े ॥
ते शर अर्जुन काटि निवारे। द्रोणी हृदय बाण दश मारे ॥
मा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें। मारों शर अर्जुन के हियमें ॥
टूटि कवच निसरेउ शर पारा। बहत प्रबाह रुधिरकेधारा ॥
अर्जुन अंधकार शर मारा। कुरुदलमध्य भयोअँधियारा ॥
ब्याकुलकटक भागिसबगयऊ। प्रभाअस्त्र द्रोणी गुणदयऊ ॥
ाते फैलि रह्यो उजियारा। अर्जुननिशितविशिखतममारा ॥
दो॰ तब रण कोप्यो द्रोण सुत खंड्यो अर्जुन बान।

सुनि अर्जुनकहिलीन्ह पिनाका। शर संधानि दीन पुनि हांका
सजग अहोकहि वाणचलावा। गुरुप्रेरित शर काटि गिरावा
लघु संधानि द्रोण शर मारे। ते सब पार्थ काटि महिडारे
दो॰ सहस वाण संधानकरि पार्थ कियो रण रंग।
रथ सारथि चूरण कियो जूझे चारि तुरंग॥
तव गुरु चढ़्यो अपररथ जाई। लै धनु वाण वुन्द झरिलाई
द्रोण विशिखयहिभांतिचलायो। भूमि अकाश वाण ते छायो
ते शर पार्थ निमिष महँ काटे। दिशिअरुविदिशिवाणतेपाटे
कोपि द्रोण शर अनल प्रहारा। किये वाण अर्जुनके छारा
सहस शिखा पारथ चहुँ ओरा। जारनचल्योअनलकरिशोरा
वरुण वाण तव पार्थ चलायो। क्षणभीतरसवअनलवुतायो
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा। नारायण शर पारथ मारा
अस्त्रअस्त्रतेभयोनिवारण। तवलगिनिशितविशिखअतिमारण
तव अर्जुन करि क्रोध अपारा। वज्रवाण पुनि कीन्ह प्रहारा
तव धनु तानि द्रोण रणलायक। तड़प्यो सेनानी को शायक
ताते इन्द्र वाण क्षय कीन्हों। तवपारथ मृतअस्त्रहिलीन्हों
दो॰ मृत्यु अस्त्रले द्रोणगुरु कीन्हों तुरत प्रहार।
सवलसिंह चौहान कह चल्यो करतफुंकार॥
संघटकरि अकाशउड़ि गयऊ। लड़तलड़तसोशीतलभयऊ
परे भूमि दोनों शर आई। कह्यो द्रोण अर्जुनहिं सुनाई
सुनहु पार्थ रण करहु सँभारा। अव नहिंहोय तुम्हारउवारा
असकहि महाकाल शरलीन्हा। पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा
जान्यो पार्थ भयो अव मरणा। सुमिरे कृष्णदेव के चरणा
छूटो जवहिं द्रोण को वाना। मुखपसारि लीन्हों हनुमाना
तव अर्जुन यक वाण प्रहारा। रथ सारथी द्रोणकर मारा
सहस वाण मारे गुरु अंगा। चारिवाण ते वध्यो तुरंगा
विरथहिभयो द्रोण जवजान्यो। भूरिश्रवा आनि अरुझान्यो

हुलीक गंगाधर आये । नृप काम्वोज युद्ध हितधाये ॥
मदत्त करि क्रोध अपारा । लेकर धनुष सेन ललकारा ॥
हि सकलमिलि युद्धप्रचारा । चहुँदिशिग्रसिअर्जुनकहँमारा॥
शूल सांगि कोउ शर बरसा । कोउअसिघातहनेकोउफरसा ॥
देख्यो पार्थ ग्रसे चहुँ ओरा । करि अतिक्रोधपार्थशरजोरा ॥
भये एक ते विशिख हजारन । कौरवदल लाग्यो संहारन ॥
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारो । सोमदत्त को दल सब मारो ॥
कोटिन अर्व खर्व शर सारत । सन्मुख आनि जुरे सबमारत ॥
ते कृपाण कर पार्थ उठो तब । मारिभगायदयो बलकरिसब ॥
जि शूर ते नहिं फिर हेरत । रण में पार्थ दौरिके घेरत ॥

दो० पार्थबाण नहिं सक्योसहि कुरुदल चल्योपराइ ।
धनु टंकोर्यो क्रोध करि सोमदत्त तब आइ ॥

सो विशिख पार्थ पर छांड़े । शक्रसुवन तेहि वीचहिं खांड़े ॥
ह अर्जुन कुरुपति वन काढ़ा । शकुनी करण मंत्रसुनिगाढ़ा ॥
महँ कीन्ह नहिं न्यायहमारा । मारन हेतु धनुप कर धारा ॥
वनहिंवचाहि वचनसुनुसांचा । असकहि पारथहन्योनराचा ॥
ग्यो विषम वाण उरजाई । सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई ॥
हलीक हांक्यो रथ आगे । करन युद्ध पारथ सन लागे ॥
कर धनुप कीन्ह संधाना । अर्जुन को मार्यो सौवाना ॥
ते शर पार्थ काटि सब दीन्हा । पार्थसहसशर त्यागनकीन्हा ॥
ाहलीक ते शर सब काटे । लक्ष वाण अर्जुन रथ पाटे ॥

दो० आवत देखे वाण जब पारथ गहि कोदण्ड ।
पलमहँ खंड्यो सकल शर कीन्ह्यो युद्धअखण्ड ॥

ात सहस्र शर एकहि वारा । वाहुलीक उर पारथ मारा ॥
यअचेत ह्वै गिरत विलोका । गंगाधर पारथ कहँ रोका ॥
ाण शरासन कृत संधाना । अर्जुन पर छांड़े बहु वाना ॥
शर खंडि पार्थशरत्याग्यो । सोमदत्त सुत उरसो लाग्यो ॥

॥ भाषापर्वे विराट यह सवल सिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वणिनवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दो॰ वैशम्पायन से कही जनमेजय शिरनाय।
कीन्हकृतारथ मोहिंतुम अद्भुतचरित सुनाय ॥

कह मुनि सुनु जनमेजय राई। कथाविचित्र श्रवणमनला
गुरुसुत दर्पण वाण चलायो। भूमि अकाश आरसी छाये
देखि अनेक द्रोण सुत पायो। पारथ के उर में भ्रम छाये
परत देखि वहु अश्वत्थामा। काके संग करों संग्राम
यह कहि पार्थ चलायो वाना। कीन्हद्रोणसुतकठिनमशान
लड़तलड़तद्वौदलमिलिगयऊ। द्रोणीकोपिखड्ग करलयउ
कीन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा। धनुगुण पारथको तवकाट
तव अर्जुन करि क्रोध अपारा। निजअसिकाटि सारथी मार
पुनि मारे द्रोणी के वाजी। भयवशगयो युद्धतजिभाजी

दो॰ अर्जुन धनुगुण साजिके कीन्ह विशिख संधान।
रोक्योतव जयदथ चलि साजिशरासन वान ॥

सिंधुराज दश विशिख चलाये। ते सब अर्जुन काटि गिराये
पुनि मारेउ पारथ यकतीरा। कवच भेदिगा छेदि शरीरा
सिंधु नृपति तव मूर्च्छा आयो। स्यंदन डारि सूत लै जायो
तवकरिक्रोधशकुनिचलिआयो। अर्जुन को बहुवाण चलायो
ते शर काट्यो पांडुकुमारा। पुनियकवाण शकुनिउरमारा
वाण लगत तन मोह जनावा। तवहिंसूत रथफेरि चलावा

दो॰ कोपकियो संग्राम तव पार्थ हन्यो वहुतीर।
पारथ के एकहु विशिख सहिनसकत कोउवीर ॥

शकुनीगिरत शल्यचलि आये। पारथपर बहुविशिख चलाये
सो शर अर्जुन काटि निवारे। वाण पचीस शल्य उर मारे
भयो विकल व्यापी वहुपीरा। गयोभागि उर रह्यो न धीरा
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा। जीति युद्ध तव शंख बजावा

साजि हलंबुष धनुष शर कीन्हों युद्ध अपार॥

हकर धनुष हलंबुष धाये । पारथरथ सन्मुख चलिआये ॥
त कोटि दानवगण साथहि । धाये सकल धनुषधरिहाथहि ॥
रि बांधहु दानवपति टेरो । धरुधरु मारुमारु कहिघेरो ॥
हुँ कीन्हों शर शक्ति प्रहारा । मुद्गर गदा शूल केहुमारा ॥
रस कृपाण चले गहिमारन । कोउखंजरकोउपरिघकटारन ॥
उ कर सुभटभुशुण्डीलीन्हे । महामारु पारथ पर कीन्हे ॥
न्दिपाल कोउ वृक्ष उपारी । केहुंगिरिशिला पार्थपर डारी ॥

दो० सातकोटि दलदैत्यको करि करि क्रोधअपार ।
सबमिलिकीन्हों पार्थपर निजनिजअस्त्रप्रहार॥
कियोहस्तलाघवअतिहि सबको बाणकृपाण ।
रोक्योपारथ असुरबहु मारिकियो विनप्राण ॥

रि पार्थ घाल्यो दल घानी । असुर सेन भहराइ परानी ॥
नुज राज तब करि संधाना । पारथ पर प्रेरेउ शत बाना ॥
शर काठि पार्थ रण कोपा । बाणन मारि दैत्य रथ तोपा ॥
शर दैत्यराज सब काटे । बाणन मारि पार्थ रथ पाटे ॥
र्जुन अग्निबाण फटकारा । सब शरकटे निमिष महँछारा ॥
न्दन सूत तुरग जरिगयऊ । अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ ॥
ट गयो स्यन्दन असवारा । सन्मुखचला करत ललकारा ॥
ों पार्थ तोहिं एकै बाना । काल तुम्हार आय नियराना ॥

दो० यहसुनि पारथ तबकह्यो दनुजराजसों बात ।
कियेबड़ाई निजबदन नहिंकछुबल सरसात ॥

तुम करिय आजु संग्रामा । जीते युद्ध होय बल धामा ॥
सकहि पार्थ लीन्ह शारंगा । दनुजराज के बधे तुरंगा ॥
मेतबाण करि क्रोध पवाँरो । स्यंदन भंजि सारथी मारो ॥
रि असुर स्यंदनचढ़िआयो । पारथ कहँ बहु बाण चलायो ॥
ई पुत्र सब शायक खंड्यो । लक्षबाण दानवपति मंड्यो ॥

परेउ मूर्च्छि गंगाधर जबहीं। रणकाम्बोजकीन्हपुनितबहीं
आवतही अर्जुन बलवाना। हृदय मांझ मारेउ यकबाना
लागत चेत न रह्यो शरीरा। रथ मुरझाइ गिरेउ रणधीरा
द्विरद् द्विमित्त क्रोध करि धाये। लक्षन कुँवर हलबुप आये
संग चमू चतुरंग घनेरी। लीन्हों पांडु सुवन कहँ घेरी

दो० शंक न मानत पार्थ भट यद्यपि ग्रसत अनेक।
डरत न गजसेना निरखि सिंहबली जिमिएक॥

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई। सेन किधौं वर्षा ऋतु आई
घोर घने गज दीरघ धाये। पावस जलदघटा जनुछाये
श्वेत बरण गजदंत बिभांती। सोजनुउड़त गगनबकपांती
होत चमर जहँ तहँ दल माहीं। राजहंस जनु गगन उड़ाहीं
घन गर्जत बाजत जे डंका। असिप्रहार जनुबिज्जुदमंका
धनुजनु सुरपतिधनुषविशाला। बुंद मनहुँ बरषत शरजाला
अर्ज्जुन मनहुँ वीररस पागे। शर समूह पुनि मारन लागे

दो० प्रलय कालके पवन सम पार्थ बाण हहराइ।
आइ फँसे कुरुदल भजे नीरदसे भहराइ॥

द्विरद द्विमत्त कीन्ह अतिकोपा। शरन मारि पारथ रथ तोपा
पारथ कीन्ह तुरत संधाना। अरि शरखंडि हने बहुबाना
पंच विशिख ते द्विरद प्रहारो। दुइशर लै द्विमत्त उर मारो
परे मूर्च्छि रण दूनों भाई। लक्षन कुवँर जुरे तब आई
अर्जुन उर मारे दश बाना। सत्तरि बाण हने हनुमाना
रुधिर धार भीज्यो सब अंगा। पारथ कोपि लीन्ह शारंगा
यहिविधिकीन्हों विशिखप्रहारा। रथ सारथी कुवँरको मारा
प्रेरेउ बहुरि बाण बहु साजी। कीन्हनिधनकुरुपतिसुतबाजी
भये अरुद्ध कुवँर रथ आना। कीन्हों बहुरि विशिखसंधाना
तब पारथ करि क्रोध अपारा। अशनिसमान बाण उरमारा

दो० मूर्च्छिपरा रणभूमि महँ जब कुरुनाथ कुमार।

तेऊ विशिख काटि महि डारे। बहुरि धनंजय वाण पवे
आवत देखि पार्थ को वाना। दनुजराज कीन्हों संधा
आवत शर अर्जुन के काटे। खंड खंड करि बीचहि प
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा। तुरग सूत दानव को मा
यहिविधि पार्थ बीसरथभंजेउ। अरुअनेक दलबादलगंजे
सके न जीति हारि हिय मानी। तबहिं हलंबुप माया ठान

दो० मारुमारुकहि दनुजपति गयोअकाश उड़ाय।
वरषनलाग्यो गिरिशिखर अंधकार उपजाय॥
सिंहनाद करि गगन महँ गरजत बारहिंबार।
विटपचलायो क्रोधकरि विविधभांतिहथियार॥

इतिमहाभारतेविराटपर्वणिहलंबुपयुद्धवर्णनोदशमोऽध्यायः १

दो० दैत्य युद्धते विकलभे तब उत्तराकुमार।
पारथराखहुप्राणअब यहिविधि करतपुकार॥

दीन वचन सुनि पांडुकुमारा। पढ़िरविमंत्र वाण तब मारा
सहसकिरणिशरकीन्हप्रकाशा। भयोतुरत माया निशिनाशा
पुनि अर्जुन कीन्हों संधाना। मारे दैत्यराज उर वाना
परोधरणिखसि मूर्च्छितभयऊ। स्यन्दनघालि सूतलैगयऊ
देखि युद्ध कृतवर्मा धाये। शंखध्वनि करिहांक सुनाये
मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो। सेनावधि तेरो मन बाढ़ो
असकहि कृतवर्मा रण कोपी। करिशरजाल दीन्ह रथतोपी
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाये। शर पंजर करि पार्थ दबाये
अर्जुन अनल वाण तब मारे। विशिखअसंख्यजारिसबडारे
कृतबर्मा करि क्रोध अपारा। कठिनवाण अर्जुन उरमारा

दो० लग्यो कठिन शर पार्थउर क्षतयुत भयोशरीर।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि पांडु पुत्र रणधीर॥

करिअतिक्रोधशिलीमुखछांड्यो। नृपकोधनुपशक्रसुतकाट्यो।
कटे धनुप कृत शूल प्रहारा। बीचहिपार्थ काटिमहिडारा

दो० हन्यो शिलीमुख तानि धनु कै सरोष पारत्थ।
सहस पेग पीछे टरो शन्तनु सुतको रत्थ॥
...ति रथ हांकि गंगसुत आयो। पारथपर बहुविशिख चलायो॥
...ब पारथ कीन्हों रिस भारी। ध्वजा खण्डि भीषमकी डारी॥
...टि बाण सेना पर मारे। हय गज रथ पदाति संहारे॥
...रि बिछाय दियो दल ऐसो। प्रलय पवन कदलीवन जैसो॥
...ोव सहित पारथ शर छूटे। शीश सेन केतिक के टूटे॥
...टे जानु जंघा यक बाहो। चले भाजि रणते नहिंचाहो॥
...रि अतिक्रोध धनुपशरसांध्यो। नागफांस केतिक भट बांध्यो॥
...रथ बाण वृष्टि जब ठानी। भयो विकल कुरुसेन परानी॥
दो० तब भीषम अति क्रोधकरि मारे तीक्षणबान।
शतलागे पारथ हिये शत सहस्र हनुमान॥
...ब अर्जुन करि क्रोध अपारा। तुरग सूत भीषम को मारा॥
...यो विरथ गंगासुत जबहीं। पूरो शंख पार्थ रण तबहीं॥
...ीषम आय चढ़ो रथ आना। अर्जुन पर पुनि शर संधाना॥
...र्योधन सब बांधव आये। चहुँ दिशि ओर पार्थके धाये॥
...र्छा बिगत द्रोण गुरु जागे। तानि शरासन शायक त्यागे॥
...रण आदि जागे सब बीरा। लै लै पाणि शरासन तीरा॥
...हुँदिशिग्रासिपार्थकहँलीन्हा। बाणवृष्टि क्रोधित कै कीन्हा॥
...द्गर गदा शूल कोउमारेउ। सांग सेलि कोउखड्गप्रहारेउ॥
...ग्यो चक्र फरसा कोउ मारा। केहुँ मारेउ कोतह हथियारा॥
...ोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हें। महामारु पारथ पहँ कीन्हें॥
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई। शरसन्धानि प्रबल रणकरई॥
दो० जबजान्योरथग्रसितभो कीन्हविशिखसन्धान।
पारथ छांड्यो क्रोध करि रण महँ मोहनबान॥
पारथ मोहन बाण चलावा। जो शर कृष्णदेव सिखरावा॥
मोहे सब कौरव बल बीरा। परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा॥

जात कहां कहि बाण चलावा। सो शर अर्जुन काटिगिरावा
पारथ दीन बाण गुण चोखा। भीषमपर छांड्यो करिरोखा
दो० आवत देख्यो युद्ध महँ जब अर्जुन को बान।
परमक्रोधकरिगंगसुत कीन्होंविशिखसँधान॥
हांक मारि शर कीन्ह प्रहारा। आवत बाण काटिमहिडारा
पुनि भीषम निज तेज सँभारो। पारथ कहँ बहुबाण सिधारो
ते शर कीन्ह पार्थ शतखंडा। हन्योक्रोधकरिविशिखप्रचंडा
लख्यो गंगसुत आवत बाना। शर संधानि शरासन ताना
शंतनुसुत काट्यो करि रोखा। तज्यो बाण पारथपर चोखा
ते शर अर्जुन काटि निवारे। भीषम ते यह वचन उचारे
धनुष सँभारि पितामह लीजै। सावधान मोसन रण कीजै
यहकहि अर्जुन बाण चलायो। कौरवदल बहु मारिगिरायो
द्विरद लक्ष मारे मतवारे। अश्वपदादि असंख्य सँहारे
दश सहस्र स्यंदन वधकीन्हो। रुण्डमुण्डकछुजातनचीन्हो
शोणित सरित बही विकरारा। काक कंक कृत मांसअहारा
पिअहिं रुधिरजम्बुकपलखाहीं। कटकटाहिं फेकरें हुआहीं
गिद्धखाहिंपलउड़हिं अकाशा। शंकर देखहिं युद्ध तमाशा
जहँ तहँ बहु कबन्ध उठि धाये। मारुमारु कहि शब्दसुनाये
दो० भयो भयंकर खेत अति अर्जुन कीन्ह मशान।
नाचत चौंसठि योगिनी करिकरिशोणितपान॥
भीषम देखि क्रोध जियआना। कीन्हों कठिन बाण संधाना
होय सक्रोध नराच प्रहारा। रथकहँ तीनि पेग पै टारा
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना। पारथ के मारे सौ बाना
लक्ष बाण हनुमानहिं मारे। अष्ट विशिख ते तुरँग प्रहारे
तब भीषम यह मंत्र विचारा। करौं निपात विराट कुमारा
तत्त्व बाण कीन्हों संधाना। कृष्यो विशिख पार्थतनजाना
है सरोष विषनाशक लीन्हों। ताते क्षणु अस्त्र क्षय कीन्हों

सब जन सुतकी कीरति गावैं। हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं॥
बारबार नृप निज मुख बरणी। उत्तर कीन्हि अमानुषकरणी॥
रथ चढ़ि एक न संग समाजा। सेन सहित जीत्यो कुरुराजा॥
भीषम द्रोण करण कृप हारे। और कहां जग जीव बिचारे॥
उत्तर सम जग कोउ न जुझारा। भयो कबहुँ नहिं होनेहारा॥
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई। कह्योकंकन्नपि तबमुसुकाई॥
दो० विजय वृहन्नल जेहिकटक सोकत जीतोजाइ।
जुरे युद्ध संग्राम थल कालहु देइ भगाइ॥
इतनी सुनत भूप उर जरेऊ। राते दृगकरि बहुरिस भरेऊ॥
ततक्षणहीं नरनाह विराटा। हन्यो कंकन्नपि पंसलिलाटा॥
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई। अंजलि में लैलीन्हीं आई॥
निरखि भूप मन चिन्तामानी। कह्यो सैलंध्री भेद बखानी॥
बिन जाने चित होत अँदेशा। कह्यो सैलंध्री सुनहु नरेशा॥
भूतल रुधिर परै जो येहू। द्वादश वर्ष न बरसै मेहू॥
यह कहिकै भूपति समुझायो। भीमसेन के उर दुख आयो॥
फरकत अधर नयन भे राता। चाहत भीम कियो उतपाता॥
दो० महा क्रोध लखि भीम उर धर्मपुत्र दै सैन।
बरजो केहरि क्षुधित ह्वै युक्तकह्यो यह हैन॥
उत्तर कुवँर भवन चलिआयो। भूपति सों यह वचन सुनायो॥
आजु वृहन्नल सब दल जीतो। कौरव गयो युद्धते रीतो॥
मारि शूर सब दीन्ह भगाई। प्रबल पवन जिमिमेघउड़ाई॥
भयो मौन नृप धाम सिधावा। भीतर उत्तर बोलि पठावा॥
युद्ध कथा सिगरी कहि दीनी। सारथि की शरजाल प्रवीनी॥
है अर्जुन जिन कौरव मारे। दिवस इतै यहि ठौर निवारे॥
यहि प्रकार सुतकहि समुझाये। सुनिविराटतबअतिसुखपाये॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राई। कथा विचित्र श्रवणसुखदाई॥
दो० धर्मपुत्र नरनाह सों अर्जुन बोल्यो बैन।

भयो गंग को आशिष सांचा। नहिं मोहेउ भीषम रणबांचा
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी। पट भूषण सब लेहु उतारी
चल्यो पार्थ की आज्ञा मानी। पहुँचो निकट भूप के आनी
कुरुपति और वीर बहुतेरे। भूषण वसन मुकुट सबकेरे
लेत कुवँर एकहु नहिं जागे। रथ ले धरे पार्थ के आगे
दुर्योधन की मूर्च्छा जागी। निजदिशिदेखिलाजअतिलागी
पार्थविजयलखि रिसउपजायो। लेकर धनुष युद्ध हित आयो
जाग्यो सकल सुभट समुदाई। चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई
भीषम आइ वराजि दलराख्यो। अरु यह वचन भूपतेभाख्यो
लरे एक है सब मिलि धायो। अर्जुनते रण जय नहिं पायो
दो० चुप ह्वैके रहो गृहचलौ पारथ अति बलधाम।
लज्जा ह्वै है भूप सुनु तजि भागे संग्राम॥
विकल भयो नृपअतिदुखपावा। क्रोधविवशमुखवचननआवा
दीरघ श्वास ब्याल जिमिलेई। लगे वज्रवत उतर न देई
भीषम ते बोल्यो बिलखाई। गई पितामह बिगरि लराई
कहभीषमअबलगि नहिंलाजा। भाज्यो कटक भूपनहिंभाजा
ताते नृप बरजत मैं तोहीं। कारणसमुझिपरो सबमोहीं
अर्जुन पर दयालु भगवाना। तुमतेसहि न जाइ नृपबाना
रण भागे तुव जक्त हँसाई। ताते भवन चलो कुरुराई
जीते पारथ सकल समाजा। तबलगिविजय न मागेराजा
भाजे सकल सेन किमिभारी। बिनु नरेश भागे नहिंहारी
भीषम वचन सुनत कुरुराई। फिरे भवन सँग भटसमुदाई
दो० भीषमआयसु मानिकै दल ले चल्योअवास।
धावन धायगयो तबहिं नृप विराट के पास॥
जीति उत्तरै अरिचमू कौरव गयो पराइ।
सुत सपूत कीन्ही विजय भाग तिहारे राइ॥
नृपति खेलत पँसासारी। संग कंकअरु ले सुखकारी।

दो० विपति हमारी सब हरी राख्यो पुत्र समान ।
तोसों तोहिं न दूसरो महि मण्डल नृप आन ॥
तुव पटतरि को दीजै आना । उऋणहोउँ नहिं अपनेजाना ॥
तुम सबको दीनी सबभलिहै । तुवकीरति जगमें नृपचलिहै ॥
नित नित नेति बढ़ै अतिभारी । भयो भूप तुव भुजा हमारी ॥
जीति समर सुरभी जे आनी । ज्यतनीत्यतनी जोकी जानी ॥
ते सब सबको ताको दीन्हीं । सबकी विदा महीपति कीन्हीं ॥
पहुँच्यो जाइ नगर कुरुराजा । सन्ध्या समय समेत समाजा ॥
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी । भये स्वप्न व्रत अन्न न पानी ॥
कुश बिछाय कृतसेन भुआला । हरि दानव लै गयो पताला ॥
दानवराज बहुत समुझावा । तुम लगि भूप हमारो दावा ॥
जो तुम प्राणत्याग करिदीन्हा । जगमिटिगयो दानवी चीन्हा ॥
तुव भटतन करिसकल प्रवेशा । करबयुद्ध जनि करब अँदेशा ॥
दो० करहु युद्ध कदराइ तजि छांड़हु सब सन्देह ।
प्रविशहिं सबकी देह में दैत्य आइ करिनेह ॥
यहि प्रकार कुरुपति समुझाये । दैत्य संग मृत लोक पठाये ॥
जेहि थल सैन कियो तो राई । कुश साथरी गयो पौढ़ाई ॥
गयोदनुज पुनिअसुर समाजा । प्रात होत जाग्यो कुरुराजा ॥
द्रोणी करण तहां चलि आये । कहि निजभेद भूपसमुझाये ॥
नरकासुर द्रोणी के अंगा । भाप्रवेश नृप सुनहु प्रसंगा ॥
लोह करण तन करण समानो । यहिप्रकार सब दानव जानो ॥
तेहि अवसर आये सब योधा । दनुजनामकहिनृपति प्रबोधा ॥
यहिविधिनृपतिकह्योबलधामा । मारिपार्थ जीतब संग्रामा ॥
कृतदानव तन सकल प्रवेशा । करहुयुद्ध नृप तजहु अँदेशा ॥
सुनि नरेशअतिशय सुखपाये । शकुनी बोलि मन्त्र ठहराये ॥
जाय दूत जहँ धर्म्म नरेशा । उनते यहिविधिकह्योसँदेशा ॥
अवधिसाधि तुमकीन्हप्रकासा । द्वादश वर्ष करहु बनवासा ॥

जाने हम सब कौरवन अबकछु चिंता है न ॥
तेरह वरष दिवस दश बीतिगये यहि भाव ।
अबबैठो शिरछत्रधरि गुप्तकरतकतनाव ॥

दीन्हत्रास कुरुनाथ निकारा । वसिवनवास सहे दुखभारा
छूटे अशन वसन घर नासा । अन्नहीन कीन्हो उपवासा
भूख प्यास ते भयो वियोगी । उदासीन जैसे रहे योगी
बल विहीन तुमको नृप जानी । अन्धसुवनकछुकानिनमानी
आयसु होइ जीति अपराधी । भुजबलजीतिलेउँमहिआधी
करि सन्धान बाण शर धारा । वारों कुरुधसहित परिवारा
देहु निदेश धनुष संधानों । भूप मरे कौरव सब जानों
यहि विधि कहत परस्परबाता । बीति रैनि गै भयो प्रभाता

दो० प्रातहोत शिर छत्र धरि धर्मपुत्र सुखपाय ।
दान दियो बहुयाचकन विप्र समूह बोलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरिकर ठाढ़े भये सुजान ।
करनहार सबराजके करत भूप सन्मान ॥
नहिंवाहनपदत्राणनहिं उत्तरसहित विराट ।
नृपतियुधिष्ठिरचरणउठिराख्योआनिललाट॥
भई ढिठाई होइ जो सो क्षमियो अपराध ।
चूक न मानत दास की भूप बड़े जे साध ॥

बिन जाने करवाई सेवा । क्षमहुचूक बड़ि भइ नरदेवा
ओछी पूरी चितमत धरियो । भूप अनुग्रह हम पर करियो
मम गृह रही द्रौपदी रानी । दासी भाव आजुलग जानी
बहु प्रकार ते टहल कराई । सो सब क्षमा करहु तुमराई
अस कहि परो चरण करजोरी । कीन्ह विनयबहुभांतिनिहोरी
मन वच कर्म दास तुव स्वामी । कीजै कृपा जानि अनुगामी
कह्यो भूप सन वारहि वारा । सविनयवचन विराटभुआर
सुनत युधिष्ठिर आनँद पाये । करि सनमान विराटबुझाये

हौ भूप यह त्रिभुवन राई। सदा रहत तुम मोर सहाई ॥
हरी कृपा विपति भे दूरी। कै दयाल कीन्हों सुखभूरी ॥
अभिमनु ब्याह रचो है राजा। आइय यहां समेत समाजा ॥
अभिमनु मातुसहितयदुराया। बोलेउभूप चलिय करिदाया ॥
दयाल कीन्हो सुख भारी। करी दूरि प्रभु विपतिहमारी ॥
दो० फिरि आयेहौ करतहौ करिहौ सदासहाइ।
सहितमातुअभिमन्युलै आपुहिपहुँचोआइ ॥
गयेकृष्णभगिनीसहित लैअभिमनुकहँसाथ।
उठे देखि सुख पायके धर्म सुवन नरनाथ ॥
मिलिके शारँगपाणिको लैआये निज गेह।
अस्तुतिबन्धुनयुतकरत मनवचक्रमकरिनेह ॥
ो कर जोरि कृष्ण के आगे। करनविनय कुन्तीसुत लागे ॥
ी यदुनन्दन मुनिजनचन्दन। कलमपहर सब दुष्ट निकन्दन ॥
जगतारण खलवदन विदारण। दुखतारण गजराज उधारण ॥
जापावन सन्तन मनभावन। ब्रजछावन गिरिधरनललावन ॥
जनमन रंजन भवभय भंजन। दनुज निमर्दनभवधनुगंजन ॥
लेस विनाशन प्रभुगरुड़ासन। यदुवंशी अवतंस प्रकाशन ॥
असुरनिवारण मुनिजनपारण। कुंजविहारण गणिका तारण ॥
नगधर नगधर पीताम्बर धर। हरिदामोदर हलधर सोदर ॥
सिन्धु सुतावर श्री राधावर। सर्व निवारण सर्व देवपर ॥
जनकसुता भूपण भवभूपण। सुररिपुदूपण तलतलपूपण ॥
भक्तन हितकर हरनिशिचारी। शुभगतिकारी भवभयहारी ॥
दो० करि अस्तुति श्रीकृष्णकी भूपति अतिसुखपाय।
नगर कम्पिला द्रुपद गण दीन्हों दूत पठाय ॥
सुनि सन्देश फूलि हियगयऊ। द्रुपद नरेश पयानहिं कियऊ ॥
गजरथ साहन तुरी तुपारा। सबदल युत बाहन नपढारा ॥
पंचाली सुत पांचो साथा। पहुँचोपुर विराट नर नाथा ॥

यहि विधि भूपति दूत पठावा। नृप... ... ...
सहित द्रौपदी पाँचो भाई। बैठ देखि यह बात ...

दो॰ प्रकटे भीतर अवधिमें फेरि करहु वनवास।
मितिसो पूरणकीजिये तब तुमकरहु अवास॥
कहि सबविधि मलमासकी समुझायो सो दूत।
समुझिताप बैठोतहाँ जिमि सुरपुर सुर दूत॥

इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्ववर्णनोनामएकादशोऽध्यायः॥११॥

दो॰ उत्तर सों कीन्हों मतो नृप विराट तेहि वार।
दुहिता दीजै अर्जुनहिं करि विवाह शुभचार॥

अर्जुन ताहि नृत्य सिखरायो। निशिवासर गुणगानबताय
सो दुहिता ताको अब दीजै। अवकछु और विचारनकी
यह कहि भूपति दूत पठायो। अर्जुन ते यह वात सुनाय
तोहिं सुतानृप अपनी दीन्हीं। हेतुविवाह करण चितलीन्ह
सुनत पार्थ यह वचन सुनावा। मैं दुहिता सम जानिपढ़ाव
वात कहत तोहिं लाज न आई। मिथ्यावचन कह्यो इतआ
मो सुतको दुहिता यह दीजै। आनँद सों यह कारज कीजै
यह कहि पार्थ दूत पलटाई। तेहिं विराटसों कह्यो बुझा
सो सुनिकै भूपति सुखपायो। बूझि मुहूरत मंगल गाय
गावत आनँद सों नर नारी। भूप युधिष्ठिर को दे गार
नैमिष वासिन अवधि बिताये। ताहीसमय सौम्यऋषिआ
करि प्रणाम पाण्डव सबभाई। पकरे चरण द्रौपदी आ
समाचार कहि भूप सुनाये। सुनत सौम्यऋषिअतिसुखपा

दो॰ दूत द्वारकानगरको पठवहु अतिसुख पाय।
वार न लागी वाटमें कही कृष्णसों जाय॥

दीनानाथ दयाल गुसाँई। कह्यो प्रणाम भूप सब भाई
कृपासिंधु हत दास सहाई। द्रुपद सुता की लाज बचाई
करी आश प्रह्लाद पुकारे। हरी त्रास हरणाकुश मारे

न यहि भांति बनाई । चित्रविचित्र वरणि नाहिंजाई ॥
.. रचि सदन बनाये । हरित पीत मणि श्वेतसुहाये ॥
त उज्ज्वल श्वेत अटारी । नीलत कमल घटाजनुकारी ॥
त कतहुं प्रसाद सतुंगा ।खचितअरुणमणिरचितउतंगा ॥
छवि उपमा तासु बखाने । देखत कौतुक देव भुलाने ॥
णिन रचि जाल बनाये । भूप रहन हित भवन सुहाये ॥
ानव यह रचना ठानी । जहँजहँ थलह तहांतहँपानी ॥
य द्वार मनमानि प्रतीती । करतप्रवेश मिलत तहँभीती ॥
य तहां उतंग देवाला । रच्योतहां शुभद्वार विशाला ॥
। नित्य सभा जहँ राजा । तेहि देखत ऐरावत लाजा ॥
अंतर विरच्यो शुचिधामा । तहँ रनिवास केर विश्रामा ॥
। भीर युत नृप दरबारा । को कहि तासु बखानै पारा ॥
हिंसत सिन्धुर बहुगाजत । निशिबासरदुन्दुभितहँवाजत॥
नृप तहँ साज बनाई । कहत बन्दिजन बिरदसुनाई ॥
० भीम पार्थ सहदेव नकुल बैठे कृष्णसुजान ।
पण्डितगणमण्डितरहत सबलसिंहचौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेअभिमन्युविवाहवर्णनोद्वादशोऽध्यायः १२ ॥
दो० सोम वंश नृप धर्म सुत शोभित शक्रसमान ।
चारिबन्धु सरि देवकी दुष्टदलन बलवान ॥
जलि जोरि जोरि युग पानी । कृष्णदेवतें विनय बखानी ॥
हँ तहँ परी विपति जबभारी । करि सुधिहरीतुरतबनवारी ॥
यासिन्धु सोइकरिय विचारा । मिलै बेगि जेहि देशहमारा ॥
ह हरि हरहु अशेष कलेशा । करहु दूरि प्रभुमोर अँदेशा ॥
न्ध पुत्र कीन्हों अपकारा । कपट यूपकरि मोहिं निकारा ॥
म ग्राम गज वाजि छिनाई । लहि सम्पदा सबै कुरुराई ॥
चो चीर दुशासन आनी । कीन्हि न कानिविकलभैरानी ॥
नबन्धु कहि द्रुपद कुमारी । राखु राखु बहु वार पुकारी ॥

विदुर गेह ते कुन्ती आई । मिलीसुतन आनँद ई ।
द्रुपद सुता ताके पद बन्दे । सब मिलिके सबजनआनन्दे ।
वनते चली घुरुका आये । निज माता कहँ संग लगाये ।
नगरराज गिरिते चलिआयो । काशिराज भूपति मनभायो ।
जरासन्ध पटना को राजा । आयोसुतन समेत समाजा ॥
शूरसेन कहँ दूत पठाये । सुनत संदेश वेगि तहँ आये ॥
धर्मपुत्र सब राज समाना । विविधअनुजसबबुद्धिनिधाना ॥

दो० शुभघटिकाशुभलगनगनि शुभबारहिं सोपाइ ।
रच्यो व्याह अभिमन्युको मंगलचार कराइ ॥
भाँवरि पारथ देखि कृत पांचो भाय हुलास ।
कस्योव्याह विधिवतसकल धौम्यसहितऋषिव्यास ॥
दोऊ कुलकीरीतिसों करि विवाह सुखदानि ।
वाजीगजरथहेममणि दीन्हों नृपसुखखानि ॥

भाट भले बिरदावलि गावत । सिंधुर वाजि घने नगपावत ॥
नृत्यत गुणी राग बहु साजत । तालपखाउझ आउझवाजत ॥
को वरणै सब आनँद संयुत । वासरह्नानिशि कौतुक अद्भुत ॥
भांवरि परतीं वेदन उच्चरि । दोऊ कुलकी रीति सबैकरि ॥
तेहि औसर विराट नरनाथा । दयो राखि कुश कन्याहाथा ॥
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हों । स्वस्तिबोलिअर्जुनसुतलीन्हों ॥
विविधभांति बाजध्वनि माची । जहँ तहँ वारमुखी बहुनाची ॥

दो० अभिमन्युकहँ दीन्ही सुता हरषे भूप विराट ।
धर्मपुत्र सुख पायके लसत अनंदित पाट ॥
बोलिमयासुरको रच्यो सुन्दर सदन बनाय ।
नृपति युधिष्ठिरयों कही अर्जुन निकटबुलाय ॥

सो० सुनि अर्जुन गुणग्राम मयदानव बोलो तुरत ।
धवलसँवारो धाम खचिखचिराचिरचिजन्मनिज ॥

मयदानव कहँ पार्थ बुलायो । रचहुधामयहकहिसमुझायो ॥

बांटि जो उनको देहैं। योगी ह्वै कपाल हम लेहैं ॥
भूप बांटि कत मोपै पावैं। जो वे नभभूतल फिरि आवैं ॥
कृष्णकह्यो सुनि मोर निहोरा। मानहु बचन होहि यशतोरा ॥
और भूमि जनि भूपति देहू। पांच ग्राम दीजे करि नेहू ॥

दो० अरकस्थल वरकस्थली एक चक्र पुनिदेहु।
नगरवरुणअरुहस्तिपुर औरदेश तुमलेहु ॥
सुईअग्र जितनी उठै सोकहि कबहुं न देहुँ।
पुनि पीछे भुवभावकरि प्रथमयुद्धकरिलेहुँ ॥

तुमहिं कहत यह कैसो आवत। जियतमोहिं धरणीको पावत ॥
पुनिहरिबचन जरत सबगाता। जियत सुनी यह अद्भुतबाता॥
दुर्योधन मुख बचन बिलोका। सुनि बोल्यो यादवकुलटीका ॥
ऐसी बात कहो जनि सपने। कुरुपतिअधिलेतशिरअपने॥
पाण्डव से तुम नहिं बरिऐहो। फिरि नरेश पाछे पछितैहो ॥
भूपतिनि देखु हिये महँ बूझी। तुमकहँ अबहिंपरतनहिंसूझी॥
मेटि जैहै तुम्हार यह तेहो। भूप भूमि देहो तुम देहो ॥
जेहिहि कोपि गदा जब पानी। गाजिहि भीमसेन रण आनी ॥
शंक सुनत कुरुदल भहराई। जिमिविगदेखिभेड़ समुदाई ॥
अर्जुनकोपि धनुष जब धरिहैं। कौरव मारि प्रलयकरिडरिहैं ॥
पार्थ बाण सहि सकै न कोई। नरकिन देव दैत्य जिन होई ॥
लेकर खड्ग नकुल बलधामा। अवगाहहिं सागर संग्रामा ॥
सहदेव युद्ध जुरे करि क्रोधा। तुव दलरोकि सकैको योधा ॥
कुलको कलह न त्यागिहिकोही। ऐसो भाव तजे अब तोही ॥
मंडत मान न बात अनैसी। है तुम्हरे मनमहँ नृप कैसी ॥

दो० पार्थ ध्वजापर बैठिके गरजे पवनकुमार।
धर्मराजके धर्मते होइहि नाश तुम्हार ॥
कृष्णउठेयहवचनकहि तिनकोयहसमुझाय।
भावी सो कैसे मिटै को करि सकै बचाव ॥

हम सब बैठि रहे शिरनाई। करि सहाय तुमलाज
दो० करि आयेहो करत हो सेवक सदा सहाय।
करी वन्दना कृष्णकी धर्मपुत्र भुवराय॥
द्वौ कर जोरि भूप अनुरागे। करतविनयकमलाप्रति
कच्छप बपु धरि सागर थाहन। मत्स्यरूप शंखासुर दा
वंदन मुनिजन सनक सनंदन। जयजयजयतुमजययदुन
शूकर रूप रदन धरणी धर। खलहिरण्याक्षहिपतितप्रा
भूतल खल दल दुष्ट निकंदन। जयजयजयतुमजययदुनं
नरहित तनुप्रहलादउबारण। हिरण्यकशिपुनखउदरविदा
सेवक कष्ट हरण जग वन्दन। जयजयजयतुमजययदुन
छलिबलिबांधि पतालपठावन। वामन वपुधरि भूतल आ
काटत सब माया दुखद्वन्दन। जयजयजयतुमजययदुन
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन। रघुकुलकमलदिनेशप्रका
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन। जयजयजयतुमजययदुन
कंस कुटिल असुरन भयकारी। केशी मर्दन अजिर विहा
पीतवसन तन चर्चित चंदन। जयजयजयतुमजययदुनं
बोध रूप धरणी पर धरिहौ। कलकी के दुष्टन संहरि
यहकहिनृपतिकीन्ह पदवन्दन। जयजयजयतुमजययदुनं
दो० विनय मानि के करिकृपा दुर्योधनपहँ जाव।
॥ समुझायोबहुविधि उन्हें। वचैगोतनकोघाव॥
विहँसि कृष्ण तबहूं उठिधाये। नगरहस्तिनापुर चलि आ
सुनि कुरुनन्दन अनुजपठाये। सभामध्य लै कृष्णहि आ
कह नरेश कित चरणचलायो। विहँसिकृष्णतबवचनसुना
धर्मराज तुम पास पठाये। गोत विरोधन मेटन आ
भूपति जग में यह यशलीजे। आधो देश बांटिके दी
आपन कुलहि कलंकलगावहु। कलह गोतको भूप बचावहु
दुर्योधन [illegible] अकुलाई। कैसे सकहु कलेश बचा

हे प्रकार शक्रहि मुनिबोधा । विदाकीन्ह बहुभांति प्रबोधा ॥
ने वराह वपु आपु बनाये । कौशिकअवधपुरीचलिआये ॥
ो वराह नृपति फुलवारी । दलफलमूलअशनकृतभारी ॥
ान घात सब वृक्ष ढहाये । सरवर पैठि जलज सबखाये ॥
ाइनि तोरि मिलायो कीचा । अतिरव करि गर्जा सरबीचा ॥
ालाकार भूप सन जाई । समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
ाराज यक आव बराहू । मूरतिवन्त सोह जनु राहू ॥
हिं सब उपवन कीन्हउजारी । खनितड़ाग कांदवकरिडारी ॥
निमहीप पुनि रिस उपजाई । चल्योतुरगचढ़िदलअधिकाई ॥
नरेश संग सुभट अनेका । चहुँदिशिजाय वाटिका छेका ॥
र नरेश कह भुजा उठाई । सुनहुश्रवण दे भट समुदाई ॥
ाहिदिशिजाइ निकरिवाराहा । त्यहिजारों तनु तेज कराहा ॥
ने वराह मन विस्मय आई । निकस्यो निकट भूप के जाई ॥
दो० जाकी दिशि है में कढ़ों करै भूप तेहि दाह ।
यहविचारिकै नृपनिकट निकरोआइवराह ॥
रन चल्यो भूप शर साजी । चल्योवराहमरुतगति भाजी ॥
व नरेश करि चपल तुरंगा । गयो अकेल न दूसर संगा ॥
म गहन द्विज रूप बनाई । दीन्ह अशीष मुनीश्वरआई ॥
ति विलोकिअचम्भवमाना । करिप्रणाम यहवचनवखाना ॥
ण मोरि भाग्य मुनिराया । दीन्हों दरश कीन बड़िदाया ॥
सुनिमुनिबोल्यो मुसक्याता । आयोंतमहिं श्रवणसुनिदाता ॥
ण करहु मनोरथ मोरा । बाढ़े सुयश जगत नृपतोरा ॥
ह नृप अस भाषो जनिमोरे । तुमकहँ कछु अदेय नाहिं मोरे ॥
वार मुनि वचन दृढ़ाई । नृपसन विप्णु शपथकरवाई ॥
गों राज पाट भण्डारा । तापर और कनक सौभारा ॥
कह्यो नृप पुर जबआये । गाधिराज सुत संग लगाये ॥
ो० दीन्ह नरेश मुनीशकहँ राज्य पाट भण्डार ।

नगर हस्तिनापुर तवँ कुन्ती पहुँची जाय ।
समाचारश्रीकृष्णजू सकलकह्योसमुझाय ॥
दुर्योधन मति परिहरी देत न पांचो ग्राम ।
देवेकीकहुकाचली श्रवण सुनत नहिं नाम ॥

दुर्योधन उर वाढ़ो गर्वा । कहत जीतिहों भारत स
सोसुनि कुन्ती अति दुखपावा । हरिदिशिदेखिनयनजलछा
मो सम जगत दुखी नहिंकोई । भयो न है आगे नहिं हो
कुन्ती दुखित देखि यदुराई । कहि हरिचन्द्रकथासमुझा
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी । धर्म्म रूप मदनावति रा
रोहिताश्व सुत भयो कुमारा । जनुऋतुराजलीन्हअवता
एक छत्र वसुधा नृप केरी । ऋधिसिधिरहंभवनजिमिचे
निन्नानवे यज्ञ नृप कीन्हा । सवई करण हेतचित दीन्ह
यह नरेश मन मनसा आई । करि शत यज्ञ होहुँ सुरराइ
सो सुधि सुनासीर कहुँपाई । भै शंका मुखगा कुम्हिलाई
उर न चैन अतिभयो अँदेशा । गाधिसुवन पहँ गयो सुरेशा

दो० विश्वामित्रहिसोंकही सुरपतिविपतिसुनाय ।
राखो चहो जो इन्द्रपद तौ कछुकरौउपाय ॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा । लेइ इन्द्रपद सुनहु मुनिन्दा
करिय उपाय महामुनि सोई । जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई
क्रतु अवधेश उपद्रव दावा । जो मुनीश तुमचहो बचावा
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा । करहुमोर तब मिटै अँदेशा
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो । हँसि सुरेशते बचन सुनायो
यदपिनहमहिंउचित सुनुराजा । करियअकारण परअपकाजा
तुमआगमन परो म्वाहिं भारा । करव शक्र हम काज तुम्हारा
सो उपाय हम करव सुरेशा । जाते नशै तुम्हार कलेशा ॥

दो० सत्य हीन हरिचन्द्रकरि करौंतुम्हारोकाज ।
इन्द्रपुरीका अवधको तुरत छड़ावोंराज ॥

मोल करन को कीन्ह प्रचारा। कह ऋषिकनक अर्द्धसौभारा॥
भार पचास स्वर्ण म्वहिं दीजे। बालक सहित वामयहलीजे॥
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सौ भारा। रानि सहित लै चलीकुमारा॥
वेश्या ते कर जोरि सयानी। बोली वचन दीन कै रानी॥
लीन्ह मोल तुम जीव हमारा। कौन काज हमकरव तुम्हारा॥
गणिके कह्यो रानि ते बानी। कारज सुनहु हमार सयानी॥
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई। दान पाइ जीविका चलाई॥
दो० परपुरुषनते प्रीतिकरि द्रव्य लाइये धाम।
हावभावकरि मनहरिय कीनदोयवशकाम॥
सुनि रानी मन भयो अँदेशा। मनमा सुमिरेउ देव दिनेशा॥
तुव कुलकी कुलवधू कहाई। गई लाज में जगत हँसाई॥
रहे धर्म्म स्वइ करिय उपाई। कै दयाल प्रभुकरिय सहाई॥
रवि मण्डल ते वहुकपिआये। बारमुखिनकहँ त्रास देखाये॥
गणिकन विकल विप्रसनजाई। कथाअलौकिकसकलसुनाई॥
आगो जो लिय द्रव्य हमारा। तुम यह लेहु पुत्रअरुदारा॥
बारमुखी इमि वचन सुनाये। सत्यकेतुद्विजतहँ चलिआये॥
तेन तब बूझेउ सकलप्रसंगा। सुनिदुखलह्योमहामुनिअंगा॥
कनक मँगाय दीन्ह मुनिज्ञानी। वेश्यन ते लीन्हों सुतरानी॥
दो० कन्याकरि राखी भवन करि सनेह मुनिराय।
द्विजपत्नीकहँप्रीतिकरि अधिकअधिकसरसाय॥
...कहँ लीन्हों मोल चँडारा। दीन्हों कनक अर्द्ध सो भारा॥
...लसेन रह त्यहिका नाऊं। लै हरिचन्द्रहि गा निजठाऊं॥
...ही दानवी सकल कहानी। सौंप्यो नृपकहँ घाट मशानी॥
...मृतक जो नर लै आवै। विना दण्ड कृतिकरन न पावै॥
... पंच वसन युग देई। करन देइ कृति जब लैलेई॥
...ने दण्ड सो लै नृप धीरा। घटभरि लेइ गंग को नीरा॥
...प्रति कालसेन के आगे। धरै जायनृप अति अनुरागे॥

विहँसि गाधि सुत तबकही स्वर्णदेहु सौ भार ॥

जो नहिं राय देहु तुम मोरा । नाशै सकल सत्य नृपतोरा
कह नरेश मैं सर्वसु दयऊ । रानी तनय मोर तनरहऊ
कह हरिचन्द्र वचन छलहानी । लीजै बेंचि मुनीश्वरज्ञानी
गाधिसुवन सुनिअतिसुखपाये । लै निज संग बनारस आये
तासु दिवस मगअन्न न पानी । कीन्हों नृप न नेकअरुरानी
अठयें दिवस गंग के तीरा । चहतपानजल विकलशरीरा
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई । बिना कनक जो तू जल खाई
होइहि सत्य धर्म तुव क्षारा । फिर न प्रतिग्रह करबतुम्हारा
सुनि नरेश मन अति दुखपाये । बैठि गंग तट शीश नवाये ।

दो० रोहिताश्व अति तृषित ह्वै तब थरहरो शरीर ।
मूर्च्छिपरे तनु विकल अति जह्नुसुताके तीर ॥

करतविलाप विकलअतिरानी । अंचल बोरि लैआई पानी ॥
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो । जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो ॥
स्वर्णदिये बिन जल मुखडारा । कुंवर वदन गा धर्म तुम्हारा ॥
सुनि रानीमन अतिदुखव्यापा । बैठि गंग तट करत विलापा ॥
रवि आकर्ष जप्यो मुनि राई । बारह कला तपे रवि आई ॥
भयो तेज कछु बरणि न जाई । रानी नृपति गिरेउ मुरछाई ॥
विनय कीन्ह नृप बारहिंबारा । तुम ते प्रकट्यो वंश हमारा ॥
सो तुम दया छांड़ि प्रभुदयऊ । सुनिनरेश प्रभुशीतलभयऊ ॥
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी । सहित कुंवरतनुतापबुझानी ॥
रविप्रसादतनु अतिबलभयऊ । क्षुधापियासत्रास मिटिगयऊ ॥
तब मुनि संग नरेश लवाई । बैठि राज मारग महँ आई ॥
बोलि सबन ते वचन सुनाये । विक्रय हेतु मनुज हमलाये ॥

दो० सबहिंसुनायमुनीशपुनि कहि इमि बारहिंबार ।
तीनि मनुज को मोल हम स्वर्णलेहिं सौभार ॥

रानिहि निरखि रूप अधिकाई । सुनि माता वेश्या तहँ आई ॥

विहँसि गाधि सुत तबकही स्वर्णदेहु सो भार॥
जो नहिं राय देहु तुम मोरा। नाशै सकल सत्य नृपतोर
कह नरेश मैं सर्व्वसु दयऊ। रानी तनय मोर तनरयऊ
कह हरिचन्द्र वचन छलहानी। लीजे बेंचि मुनीश्वरज्ञानी
गाधिसुवन सुनिअतिसुखपाये। ले निज संग बनारस आये
तासु दिवस मगअन्न न पानी। कीन्हों नृप न नेकअरुरानी
अठयें दिवस गंग के तीरा। चहतपानजल विकलशरीरा
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई। बिना कनक जो तू जल खाई
होइहि सत्य धर्म तुव क्षारा। फिर न प्रतिग्रह करबतुम्हारा
सुनि नरेश मन अति दुखपाये। बैठि गंग तट शीश नवाये

दो० रोहिताश्व अति तृषित ह्वै तब थरहरो शरीर।
मूर्च्छिपरे तनु विकल अति जह्नुसुताके तीर॥

करतविलाप विकलअतिरानी। अंचल बोरि लैआई पानी
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो। जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो
स्वर्णदिये बिन जल मुखडारा। कुंवर वदन गा धर्म तुम्हारा
सुनि रानीमन अतिदुखव्यापा। बैठि गंग तट करत विलापा
रवि आकर्ष जप्यो मुनि राई। बारह कला तपे रवि आई
भयो तेज कछु बरणि न जाई। रानी नृपति गिरेउ मुरझाई
विनय कीन्ह नृप बारहिंबारा। तुम ते प्रकट्यो बंश हमारा
सो तुम दया छांड़ि प्रभुदयऊ। सुनिनरेश प्रभुशीतलभयऊ
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी। सहित कुंवरतनुतापबुझानी
रविप्रसादतनु अतिबलभयऊ। क्षुधापियासत्रास मिटिगयऊ
तब मुनि संग नरेश लवाई। बैठि राज मारग महँ
बोलि सवन ते वचन सुनाये। विक्रय हेत

दो० सबहिंसुनायमुनीशपुनि कहि इमि
तीनि मनुज को मोल हम

रानिहि निरखि रूप अधिकाई। सुनि

नसन्न तब श्री भगवाना । भूपति कहँ दीन्हों वरदाना ॥
अब नृप करहु अवधपुरवासा । अन्तकाल आयहु ममपासा ॥
री कृपा हरि कुंवर जियाई । अन्तर आप भये सुरराई ॥
भुकी कृश नगर निज आये । अचलराज्य माता उन पाये ॥
हिं उनके दुखको कछुओरा । तिन देखत केतिक दुखतोरा ॥
व प्रसाद मिटिजैहै सोई । धीरज धरहु नीक अब होई ॥
हि प्रकार कुन्ती समुझाई । विदुर भवन गे संग लवाई ॥
रि भोजन तहँ शारँगपानी । कीन्हशयन सबराति सेरानी ॥

दो० प्रात होत श्रीकृष्णजू दुर्योधन के पास,
गयेफेरि हितसों सुबुधि कीन्हें वचन प्रकास ॥
कहो हमारो कीजिये पांच ग्राम दै देहु ।
बन्धु एकसो पांचसों निशिदिन बढ़ै सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के वचन सुने तेहिकाल ।
प्रतिउत्तरहरिसों कह्यो भये विलोचन लाल ॥
नितहरिशालै शालहरि कितहिशलावतआनि ।
करौंअपाण्डव भूमिसब धरों न कुलकी कानि ॥

सुनि वचन कृष्णनहिंभाये । ह्वै सक्रोध यहिभांति सुनाये ॥
पि भीम रणमें दल गाजहिं । सुनतनादकौरवदल भाजहिं ॥
ले गदायुत पवनकुमारा । को तापर डारै हथियारा ॥
देव नकुलरु पांडुकुमारा । तासम सकल कौन संसारा ॥
कोपहिं ले पाणि पिनाका । धीर न रहै सुनत रणहांका ॥
झतनहीं वचन सुनि मूढ़ा । परतसूझि नहिं गर्वअरूढ़ा ॥
हिन आवत चेत अभागे । समुझहिं नीच मूढ़महँलागे ॥

दो० बोले शकुनि सरोप ह्वै कहा नृपति सों जाय ।
कौनि कानि याकी करों बांधि लेहुसुखपाय ॥
दुखपायो भीषम विदुर विकलभये सबगात ।
चहत कियो अपनान सब बनैनहीं कछुवात ॥

कह्यो नामनृपसन त्यहिबागा। सुनिसुमहीपति पांयनलागा॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊं। मोरे कतहुँ गांव नहिं ठाउं
यहि विधि ताहि भूप समुझाई। पहुँचो प्रात घाट सो आ
दो० यहिविधि बीते कछु दिवस मुनि कै सर्प कराल
डस्योआनिपुनि नृपतनय प्राणतजे ततकाल॥
सत्यकेतु कुश समद हित वनकहँ कीन्ह पयान।
द्विज तरुणी लाक्षण गई करन गंग असनान॥
रानी निरखि शोच उपजावा। करत विलाप दुसहदुखपावा
अर्द्ध वसन ते कुंवर ओढ़ाये। अर्द्ध वसन निजदेह छिपाये
लैगइ तुरत गंग के तीरा। रुदनकरतअतिविकलशरीर
चाहत जल डारा त्यहिकाला। आयो भूप रूप चण्डाला
लखि मृदुकुंवर नयनजलमोचे। भयोदुसहदुखनृपअतिशोचे
स्वामि भक्ति सुधि भूपहिआई। तब रानी कहँ रह्यो रिसाई
दो० निठुर वचन बोल्यो तबहिं रानी सों नरनाह।
दण्डदियेबिनु जनिमृतक कीजै सरित प्रवाह॥
कह रानी गे भूलि भुवारा। रोहिताश्व यह तनयतुम्हारा॥
असकहि कीनविलाप कलापा। बोल्यो नृपतिसहितपरितापा॥
मैं हौं कालसेन को दासा। छांड़ि देहु मनते यह आसा॥
मुद्रा पंच वसन बिनु लीन्हे। मानों मैं न कोटिविधि कीन्हे॥
विप्र पाणि तुम बेंचि बहाई। यम नृप द्रव्यकहां हम पाई॥
वसन कुँवर को लेहु उतारी। लेहु बेंचि मम आमिष मारी॥
सुनि नरेशकहँ क्रोध न थम्भा। पकरिकेश बांध्यो लै खम्भा॥
मारन चल्यो खड्गगहि पाणी। तब यह भई गगनमहँ बाणी॥
दो० सुन राल्यो तन कष्टसहि बीति गये दिन मन्द।
केश तजो धीरज धरो धन्य धन्य हरिचन्द॥
असकहि प्रकट भये भगवाना। मांगुनृप असवचन बखाना॥
दे चरण नृप कण्ठ लगाये। रानी के बन्धन छुटवाये॥

प्रसन्न तत्र श्री भगवाना । भूपति कहँ दीन्हों वरदाना ॥
र नृप करहु अवधपुरवासा । अन्तकाल आयहु ममपासा ॥
री कृपा हरि कुंवर जियाई । अन्तर आप भये सुरराई ॥
भुकी कृपा नगर निज आये । अचलराज्य माता उन पाये ॥
हिं उनके दुखको कछुओरा । तिन देखत केतिक दुखतोरा ॥
ाव प्रसाद मिटिजैहै सोई । धीरज धरहु नीक अब होई ॥
हि प्रकार कुन्ती समुझाई । विदुर भवन गे संग लवाई ॥
रि भोजन तहँ शारँगपानी । कीन्हशयन सबराति सेरानी ॥

दो० प्रात होत श्रीकृष्णजू दुर्योधन के पास,
गयेफेरि हितसों सुबुधि कीन्हें वचन प्रकास ॥
कहो हमारो कीजिये पांच ग्राम दे देहु ।
बन्धु एकसो पांचसों निशिदिन बढ़े सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के वचन सुने तेहिकाल ।
प्रतिउत्तरहरिसों कह्यो भये विलोचन लाल ॥
नितहरिशाले शालहरि कितहिशलावतआनि ।
करौंअपाण्डव भूमिसब धरौं न कुलकी कानि ॥

सुनि वचन कृष्णनहिभाये । कै सक्रोध यहिभांति सुनाये ॥
पि भीम रणमें दल गाजहिं । सुनतनादकौरवदल भाजहिं ॥
त गदायुत पवनकुमारा । को तापर डारे हथियारा ॥
देव नकुलरु पांडुकुमारा । तासम सकल कौन संसारा ॥
कोपहिं ले पाणि पिनाका । धीर न रहे सुनत रणहांका ॥
मुझतनहीं वचनसुनि मूढ़ा । परतसूझि नहिं गर्वअरूढ़ा ॥
बहिन आवत चेत अभागे । समुझहिं नीच मूढ़महँलागे ॥

दो० बोले शकुनि सरोष ह्वै कह्यो नृपति सों जाय ।
कौनि कानि याकी करों बांधि लेहुसुखपाय ॥
दुखपायो भीषम विदुर विकलभये सबगात ।
चहत कियो अपमान सब बनैनहीं कछुबात ॥

कह्यो नामनृपसन त्यहियागा । सुनिसुमहीपति पांयनलागा ॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊं । मोरे कतहुँ गांव नहिं ठाऊं ॥
यहि विधि ताहि भूप समुझाई । पहुँचो प्रात घाट सो आई ॥
दो० यहिविधि बीते कछु दिवस मुनि ह्वै सर्प कराल ।
डस्योआनिपुनि नृपतनय प्राणतजे ततकाल ॥
सत्यकेतु कुश समद हित वनकहँ कीन्ह पयान ।
द्विज तरुणी तात्क्षण गई करन गंग असनान ॥
रानी निरखि शोच उपजावा । करत विलाप दुसहदुखपावा ॥
अर्द्ध वसन ते कुंवर ओढ़ाये । अर्द्ध वसन निजदेह छिपाये ॥
लैगइ तुरत गंग के तीरा । रुदनकरतअतिविकलशरीरा ॥
चाहत जल डारौं त्यहिकाला । आयो भूप रूप चण्डाला ॥
लखि मृदुकुंवर नयनजलमोचे । भयोदुसहदुखनृपअतिशोचे ॥
स्वामि भक्ति सुधि भूपहिआई । तब रानी कहँ रह्यो रिसाई ॥
दो० निठुर वचन बोल्यो तबहिं रानी सों नरनाह ।
दण्डदियेविनु जनिमृतक कीजै सरित प्रवाह ॥
कह रानी गे भूलि भुवारा । रोहिताश्व यह तनयतुम्हारा ॥
असकहि कीनविलाप कलापा । बोल्यो नृपतिसहितपरितापा ॥
मैं हौं कालसेन को दासा । छांड़ि देहु मनते यह आसा ॥
मुद्रा पंच वसन विनु लीन्हे । मानों मैं न कोटिविधि कीन्हे ॥
विप्र पाणि तुम बेंचि बहाई । अब नृप द्रव्यकहां हम पाई ॥
वसन कुँवर को लेहु उतारी । लेहु बेंचि मम आमिष मारी ॥
पुनि नरेशकहँ क्रोध न थम्भा । पकरिकेश बांध्यो लै खम्भा ॥
मारन चल्यो खड्गगहि पाणी । तब यह भई गगनमहँ बाणी ॥
दो० सुत राख्यो तन कष्टसहि बीति गये दिन मन्द ।
केश तजो धीरज धरो धन्य धन्य हरिचन्द ॥
असकहि प्रकट भयो भगवाना । मांगुभूप असवचन बखाना ॥
रे चरण नृप कण्ठ लगाये । रानी के बन्धन छुटवाये ॥



महाभारत उद्योगपर्व

सबलसिंहचौहानविरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणकी
रीतिपर दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है ॥

जिसमें

कौरव पाण्डवों का महाभारत करने के लिये अपने २
इष्टमित्रों को न्योता भेजकर बुलाना व युद्धकरने
का विचारादि कथा वर्णन है

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

आठवींबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
जनवरी सन् १९०२ ई० ॥

= मुल्य ६ पैसे

भीषम विदुर विकलप्रभुजानी । वदन पसारेउ
मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्डा । सम्भ्रमछायो चित्त
देख्यो गगन सूर्य शशितारा । देख्यो भूमि अकाश
भूधर सरितसिन्धुअरुकानन । देख्यो सुर सुरेश सहम
देख्यो शम्भु विरंचिमुनीशा । दानवदनुजसृष्टि सब दी
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा । जहँ तहँ मरे परे बलधा
कृप कृतवर्म्मा अश्वत्थामा । कुरुदल मध्य बचोयहसा
सात्यकि पञ्चबन्धु सुरत्राता । पाण्डव मध्य बचे ये सा
यहिविधिचरित कृष्णदरशाये । भीषम विदुरचरण शिरना

दो० यहि विधि दरशायो चरित भीषमको जगदीश ।
वचन प्रकाश्यो विदुरसों हरिपद नायो शीश ॥

खल दुर्योधन मर्म न जानत । शिषत्रिभुवनपतिकीनहिंमान
भूल्यो मूरुख नृपता गर्वा । कुल के धर्म तजे यहि सब
ह्वैहै सोइ जोलिख करतारा । कह भीषम यह बारहिंबार
कहमुनिसुनहु मुकुट वरधारी । शोच हरण सन्तनहितकारी
चले कृष्ण नृपको समुझाई । पहुँच्यो धर्मपुत्र पहँ आई
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये । बैठि कृष्ण यह वचन सुनाये
सूक्षममहि तुमको नहिं देता । उद्यम कीन्हों भारत हेत
बिना युद्ध महि कबहुँ न देहै । जो जीतै सोई सब लेहै
बार बार कह बात कन्हाई । बिना युद्ध कोने महि पाई

दो० वीर भोग ह्वै जीति रण कूरतजै कदराय ।
अस्त्रगहो भारत रचो लीजै सबैबचाय ॥
कृष्णकही सबके मते मन मानी यह बात ।
धर्मराज बन्धुन सहित भये प्रसन्नित गात ॥

इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्वत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
इति विराटपर्व समाप्तम् ॥



अथ उद्योगपर्व ॥

दोहा ॥

...हर गणपति गिरा सुरमुख पायनिपाग ।
सबलसिंह चौहान कहि भणित पर्व उद्योग ॥
... अपिराइ सुनहु कुरुकेतू । कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू ॥
... हरि धर्मराज पहँ आये । मिलतहृदय अतिआनँदछाये ॥
... चरण भीमादिक भाई । बैठे अति प्रसन्न यदुराई ॥
... सुधि पाइ विराट भुआरा । आये सभा सहित परिवारा ॥
... शंख कँवर दोउ साथा । आइ चरण परसे यदुनाथा ॥
... भूप मिलि भये सुखारे । गहि भुज निज समीप बैठारे ॥
...न समेत द्रुपद महराजा । धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा ॥
... काशिराज बैठे सभा शूरसेन नरनाह ।
जरासंधसुत सात्यकी नृपसत्र सहितउछाह ॥
...ली सुत पांचो वीरा । घटोत्कचअभिमन्यु रणधीरा ॥
... समीप बैठे नर नाथा । अर्जुन भीम जमलयुगसाथा ॥
...म्नअरु अनिरुद्ध कुमारा । जाम्बवतीसुतसाम्बजुझारा ॥
... यादव द्वादश जाती । सबपरिवार पुत्र अरु नाती ॥
... सब नृप सखा सुखारी । भोजवृष्णि अंधकगण भारी ॥
... समीप हल मूसर वारे । आसव पिये नयन रतनारे ॥



अथ उद्योगपर्व ॥

दोहा ॥

विधि हरिहर गणपति गिरा सुरमुख पाय नवाय ।
सबलसिंह चौहान कहि भणित पर्व उद्योग ॥
...अपिराइ सुनहु कुरुकेतू । कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू ॥
...ब हरि धर्मराज पहँ आये । मिलत हृदय अति आनँद छाये ॥
गहे चरण भीमादिक भाई । बैठे अति प्रसन्न यदुराई ॥
...सुधि पाइ विराट भुआरा । आये सभा सहित परिवारा ॥
...त्तर शंख कुँवर दोउ साथा । आइ चरण परशे यदुनाथा ॥
...ठे भूप मिलि भये सुखारे । गहि भुज निज समीप बैठारे ॥
...तन समेत द्रुपद महराजा । धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा ॥
दो० काशिराज बैठे सभा शूरसेन नरनाह ।
जरासंधसुत सात्यकी नृपसब सहितउछाह ॥
...चाली सुत पांचों वीरा । घटोत्कच अभिमन्यु रणधीरा ॥
...रि समीप बैठे नर नाथा । अर्जुन भीम जमलयुगसाथा ॥
...द्युम्नअरु अनिरुद्ध कुमारा । जाम्बवतीसुतसाम्बजुझारा ॥
...ठे यादव द्वादश जाती । सबपरिवार पुत्र अरु नाती ॥
...ठे सब नृप सखा सुखारी । भोजवृष्णि अंधकगणभारी ॥
... समीप हल मूसर धारे । आसव पिये नयन रतनारे ॥

नेक प्रकार की पुस्तकें इस यंत्रालयमें मुद्रितहुई हैं
तने पुराणहैं उनसे चुनकरकुछ पुस्तकें नीचे लिखीं

देवीभागवत भाषा क़ीमत ३) पु०

इसका उलथा पंडितमहेशदत्त सुकुलने किया है—इसमें मुख्य
जीके पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकार की शक्तियों
र उनके अवतार, मंत्र, तंत्र, यंत्र, कवच, कीलक, अर्गला,
माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और
रचरण का वर्णन, संध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि अतल्य तंत्र मं
है भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारण लोग भी समझ सके

लिंगपुराण क़ीमत ॥।)

सका उलथा छापेख़ाने के बहुत खर्चसे जयपुरनिवासि पंडित
वजीने भाषामें किया है जिससे अनेक प्रकार के इतिहास, सू
वंश का वर्णन, ग्रह नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव,
व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथा

विष्णुपुराणभाषा वार्त्तिक क़ीमत ॥।) पु०

सका पंडित महेशदत्त सुकुलने भाषान्तर कियाहै जिसमें ज
ति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल खगोल
शास्त्र, मन्वन्तर कथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन
बहुतसी कथायें संयुक्त हैं

विष्णुपुराण भाषा श्रीराजा अजीतसिंह
बैकुण्ठवासीकृत क़ीमत १।) पु०

इसको श्रीराजा प्रतापबहादुरसिंह तालुक़दार व आनरेरी म
सिटिंटप्रतापगढ़ने छपवायाहै इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा,
आदि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णितहै काग़ज़ सफ़ेद है

रथ ते धनु विद्या पाई। कीन्ह निपुण सब अस्त्रपढ़ाई॥
हेविधि रणजीतोयदुनायक। कौरवनिधन करनके लायक॥
नतवचनहलधरहि न भाये। क्रोधितनयनअरुणहोइआये॥
हिं न भावत मंत्र तुम्हारो। चहतसकलमिलिखेलबिगारो॥
ष्टराज के छोटे भ्राता। जानहु पांडु जगत विख्याता॥
द पुराण विदित सब काहू। होइ परंतु जेठ नरनाहू॥
जेठे को राजकुमारा। दुर्योधनहि राज्य अधिकारा॥
हुंचत नहिं पाण्डवको दावा। नाहक सबमिलि बैरुकरावा॥
दो० सुनेश्रवण बलदेव के मंत्र जबै यदुनाथ।
लागेकरन विवादतब निज भ्राताकेसाथ॥
रो प्रकट भये का वासा। मेटि कोसके पांडुसुतआसा॥
हिप्रकारहरिकहि समुझावा। सुनतबचनहलधरहिनभावा॥
हुलीक कछुकीन न दावा। प्रथमपितामहअंश न पावा॥
ज्य योग नहिं होत कनिष्टा। करवावत तुम कान्ह अरिष्टा॥
सि बोले तब शारँगपानी। सुनहु तात यक कथापुरानी॥
शंतनु ते प्रथम देवापी। वाहुलीक भे मध्य प्रतापी॥
खेउ ज्येष्ठ कुष्ठ तन चीन्हा। तातराज्य पितहि नहिंदीन्हा॥
हुलीक मातुल पहँ गयऊ। शांतनुनाम नृपति सोभयऊ॥
थम ब्याह गंगा ते कीन्हा। ताकेजन्म पितामह लीन्हा॥
ज्य विचित्रवीर्य कहँ दयऊ। भीष्मज्येष्ठराजा नहिं भयऊ॥
वेउ द्रुपद सुतहु जगतारण। अंशहीन भीषम केहिकारण॥
हारथी सन और न पूजा। जेहिंसमानजगभयउ न दूजा॥
लते कवन उठावत दावा। केहिकारण उनराज्य न पावा॥
दो० प्रकटो शांतनु गंगते महाबाहु बल खानि।
अंश न पायो वंशको कारण कहो बखानि॥
नि श्रीहरि आये इन बातन। सुनहु प्रपदसुत कथापुरातन॥
ागीरथी ब्याहि सुख पाये। करिकरार भवनहिं नृपल्याये॥

नील निचोल अभूषण साजे। प्रभुके दक्षिण ओर वि
जा कहँ शेष कहे संसारा। सो बलभद्र सहे
औरो देश देश के राजा। जुरे आनितहँ

दो० भूपवामदिशि द्रौपदी भूषण वसन उदोत।
मनहुँ प्रभाकरकी सभा जगरमगरद्युतिहोत॥

केहरि कटि मृगशावकनयनी। बोलीत्रिहँसिवचनपिकबयनी
दुर्योधन गृह भूप पठाये। कारज सकल नाथकरिआये
कह हरि वह एकोनहिंमानहि। तृणसमानतिहुँलोकहिजानी
कहे वचन हँसि शारँगपानी। विनायुद्धमहिमिलिहि न रानी
सोसुनि धर्मराज दुख पायउ। वासुदेव ते विनय सुनायउ
मानत सो न कुमारग गामी। अब उपाय कीजे का स्वामी
कही विहँसि तब शारँगपानी। सुनहु नरेश प्रेम सज्ञानी
बैठे द्रुपद विराट भुवारा। पूँछि मन्त्र तस करहु प्रचारा
जस कछु मतो कहैं सब लोगा। कहेउकृष्णतसकरियनियोगा

दो० वृद्धि वहिक्रम वृद्ध शुचि ज्ञानवान पञ्चाल।
धर्मशीलबलनृपकहे करियेयतन ततकाल॥

श्रेष्ठ वरिष्ठ भूप सबलायक। पितुसमान तुम्हरेहितदायक
इनहिं पूँछि करि हो जो काजा। होइहि सकल मनोरथ राजा
पञ्चो बैठि विराट भुवारा। इनते को हितचहत तुम्हारा
द्रुपद विराट कही यहबानी। सब जानत प्रभु अन्तर्यामी
अब प्रभु और न करहु विचारा। आयुध बांधि होहु असवारा
कोटिनविधि प्रभुयतन विचारे। मिले न महि कौरव विनमारे
सुनि यहबचन सात्यकी बोला। कहेनाथ इनबचन अमोला
मतहमार सुनि पावन वारी। जलेजियतकुरुपति अपकारी

दो० तबलग कुशल न पांडुसुत सुनिये दीनदयाल।
जबलग दुर्योधनजियत ग्रसत न वाकहँ काल॥

आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजे। मेरे सकल कौरव सुनिजीजे

रथ ते धनु विद्या पाई। कीन्ह निपुण सब अस्त्रपढ़ाई॥
हिविधि रणजीतोयदुनायक। कौरवनिधन करनके लायक॥
नतबचनहलधरहि न भाये। क्रोधितनयनअरुणहोइआये॥
हिं न भावत मंत्र तुम्हारो। चहतसकलमिलिखेलबिगारो॥
ष्टराज के छोटे भ्राता। जानहु पांडु जगत विख्याता॥
पुराण विदित सब काहू। होइ परंतु जेठ नरनाहू॥
जेठे को राजकुमारा। दुर्योधनहि राज्य अधिकारा॥
चित नहिं पाण्डवको दावा। नाहक सबमिलि वैरुकरावा॥
दो० सुनेश्रवण बलदेव के मंत्र जबै यदुनाथ।
लागेकरन विवादतब निज भ्राताकेसाथ॥
। प्रकट भये का बासा। मेटि कोसके पांडुसुतआसा॥
प्रकारहरिकहि समुझावा। सुनतबचनहलधरहिनभावा॥
लीक कलुकीन न दावा। प्रथमपितामहअंश न पावा॥
य योग नहिं होत कनिष्ठा। करवावत तुम कान्ह अरिष्टा॥
बोले तब शारँगपानी। सुनहु तात यक कथापुरानी॥
शंतनु ते प्रथम देवापी। वाहुलीक भे मध्य प्रतापी॥
उ ज्येष्ठ कुष्ठ तन चीन्हा। तातराज्य पितहि नहिंदीन्हा॥
लीक मातुल पहँ गयऊ। शांतनुनाम नृपति सोभयऊ॥
न ब्याह गंगा ते कीन्हा। ताकेजन्म पितामह लीन्हा॥
विचित्रवीर्य कहँ दयऊ। भीष्मज्येष्ठराजा नहिं भयऊ॥
वेद द्रुपद सुनहु जगतारण। अंशहीन भीषम केहिकारण॥
हारथी सन और न पूजा। जेहिंसमानजगभयउ न दूजा॥
लते कवन उड़ावत दावा। केहिकारण उनराज्य न पावा॥
दो० प्रकटे शांतनु गंगते महाबाहु बल खानि।
अंश न पायो वंशको कारण कहो बखानि॥
नि श्रीहरि थापे इन बातन। सुनहु श्रवदसुत कथापुरातन॥
गोरधी ब्याहि सुख पाये। कारिकरार भवनाहिं नृपजाये॥

बालक सप्त प्रथम उपजाये। तेइ नृप लै प्रवाह ...
भीषम जन्म जगत जबलीन्हा। बालविलोकि मोहनृपकी
कहेउ भूप गंगा सुनि लीजै। अबकीसुत मांगे मोहिंदीजै
कह सुरसरि नृप कीन्हकरारा। पहुंचावों बालक तुवधारा
तुमहिं भूप अब सुत प्रियलागे। यह करार कीन्हों मैं आगे
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना। निजप्रवाह हम करबपयाना
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै। जाहुँभूप मोहिं आज्ञा दीजै
करहु नृपति अब तजि संदेहा। राखहुहमहिं कि बालकयेहा
कहनरेशमोहिंशिशुप्रियलागत। जोरिपाणि तुमते यहमांगत
सुरसरि सुनि महीप मुखबानी। निजप्रवाहततकालसमानी
नारि विरह दुख भूपहिव्यापा। विकलरैनिदिनकीन्हविलापा
राज्य योग बीते कछु काला। भयो कुंवर दुखतजे भुवाला
परशुराम धनु विद्या दीन्हों। आपुसमान महारथ कीन्हों
करहिं गंगसुत राज्य प्रचारा। भूपद्योसप्रति रमत शिकारा

दो॰ घूमत भूप अखंड वन गयउ नदी के तीर।
देखि तहां कन्या नवल पहिरे भूषण चीर॥
कीधौं रति सम मेनका रंभा रूप समान।
विज्जुलतासी देखिछवि संभ्रम भूपभुलान॥

ठाढ़ नरेश नदी के तीरा। कामविवशअतिविकलशरीरा
हांकि अश्व चलिगे नृपआगे। पूछन बचन प्रेम सों लागे
केहि सुकृती की सुता सोहाई। कारण कवन नदी तट आई
तुम्हहिं देखि लोभेउ मनमोरा। को तुव पिता नाम का तोरा
सुता निषादराज की राजा। निशिदिनमोर नदीतट काजा
मीन राज ब्योहार हमारा। मत्स्योदरी नाम द्विज सारा
आवत ममतन कठिन कुबासा। देखि लोग दाबैं निज नासा
यहिप्रकार कछु दिवस बिताये। यहिमग ऋषय पराशरआये

दो॰ सरित तीर ठाढ़े भये तपोमूर्त्ति अभिराम।

मोहिंविलोक्योतरणिपर विकलभयोवशकाम ॥
हिंत्रिलोकिऋषिप्रेमअधीरा । भयो कामवश विकलशरीरा ॥
गीरति मुनिकरि बहुईड़ा । बोलीमैन भूपवश त्रीड़ा ॥
मुनि हमहिं देव ऋतुदाना । लेहु शाप की वज्र समाना ॥
पवक्त ऋषि को जब देखा । प्रति उत्तरमें दीन्ह बिशेखा ॥
तुम्हारि पुत्री ऋषिराई । मलिनरूप अरु देह गँवाई ॥
चज़ाति कृत अशन कुभोगा । नाहिंन नाथ तुम्हारे योगा ॥
पुरुष पितु शिषविन जोई । कुलटा नाम कहावै सोई ॥
मुनीश तुवहाथ बिकानी । छोड़यों लोकलाजकुलकानी ॥
गहिं त्रिलोकि राजअनुकूला । देखहु नाथ लोग दोउकूला ॥
तिकलंकलागी मुनिहमको ।दिनरातिनाथउचितनहिंतुमको॥

दो० है प्रसन्न तब ऋषिकहेउ त्यागहु तरुणि विषाद ।
तुव तन गंध कपूर की होइहि हमरे प्रसाद ॥

पिआशिषप्रसन्न चितभयऊ । छूटिविषाद शोकसब गयऊ ॥
शिसमान तनभयो प्रकासा । योजनभरि पूरेउ पुनिवासा ॥
जनभरि तन बहेउ सुगन्धा । कह्योनाम पुनियोजन गन्धा ॥
त्यचरित भाषेउ निजश्यामा । ताते सत्यवती तुव नामा ॥
हकरि कीन्हे ऋषय चरित्रा । भयउदिवसमहँरात्रिविचित्रा ॥
उ कुहिर दिनकर द्युतिनासा । रमितभयोमुनिसहितहुलासा ॥
जन भरि पूरयो पुनिवासा । तन सुगन्ध दुर्गन्ध विनासा ॥
शिते सरिसभयो अँधियारा । सूझन आपन हाथ पसारा ॥
इप्रसन्न तब आशिष दीन्हों । कन्यारूप सदा तेहिकीन्हों ॥
हि प्रकार मोहिं दे वरदाना । ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना ॥
ब ऋषीशनिज मारगगयऊ । भये प्रकाशकुहिरमिटिगयऊ ॥
नते भये व्यास ते पवना । प्रगटत वनको कीन्ह पयाना ॥
दो० सत्यवती भूपाल ते कह निजकथा प्रमान ।

भणितपर्व उद्योग यह सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते प्रथमोऽध्यायः १॥

काम विवश नृप बचन उचारे। सत्यवती चलु भवन हमारे॥
सब प्रकार तुव मम सुखदानी। तुम कहँले करिहौं पटरानी॥
करहु कवलनृप चलहुँ तुम्हारे। होइ महीपति पुत्र हमारे॥
तुव करार आवे केहि काजा। करहि कवलभीषमसुनुराजा॥
सुनि नरेश बहु दूत पठाये। गंगासुतहि बोलि लै आये॥
सत्यवती सुनि सकल प्रसंगा। कीन प्रणाम प्रसन्नित अंगा॥
चलहु पिता सँग मातु व दारा। सब प्रकार मैं दास तुम्हारा॥
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ। धनिपितुभक्तजगततुमभयऊ॥
करहु कवल हमते युवराजा। तनय हमार करै तव राजा॥
चलौं भवनतवतुव पितु संगा। देहु बीच जग पावनि गंगा॥

दो० धर्म धुरंधर धीर धर देवअंश अवतार।
तुमसम सत्यप्रतिज्ञ जग भये न होने हार॥

वचन पालि तुम राज्य न लेहौ। निश्चय मम पुत्रन को देहौ॥
तुम्हरे वंश प्रबल सुत होई। लेइ छिनाइ राज्य पुनि सोई॥
तब शंतनु भीषम प्रति बोले। हे सुत लेन नारि यह बोले॥
कीन्हे विन उपकार तुम्हारे। नहिंचलिहैंपुनि भवन हमारे॥
यहिविनमैंनजियउँ सुनुशावक। जारत मोहिंमदनविनपावक॥
शंतनु वचन शोक मम खोले। सुनतहि तव गंगासुत बोले॥
सुनहु पिता तुम मोर करारा। निरखहुं मैं न नयनभरिदारा॥
किमिकैहै सन्तन की साजा। करिहौं सत्यवती सुतराजा॥
मात पिता श्रीहरि गुरु आना। सत्यवती सुनु वचन प्रमाना॥
जैसे हम गंगा कहँ जानब। त्यहितेसरिसमातुतुहिंमानब॥
करि करार शुभ यान चढ़ाये। नगर हस्तिनापुर लै आये॥

...प्रकार निज लायकजानी। शंतनुनृप कीन्हेउ पटरानी॥
...त्रांगद विचित्र सुत जाके। भये देव सरिस नहिं ताके॥
...तजि नृप सुरपुरजवगयऊ। चित्रांगदहिराज्य पुनिभयऊ॥
...रिकन्दरमहँफिरत शिकारा। प्रबलसिंह ताको बन मारा॥
... दुखित भीष्म सुनिबाता। अतिशयबिकलभईपुनिमाता॥
...हेत धराधन सेन समाजू। दीन्ह विचित्रवीर्य्यकहँ राजू॥
...० आज्ञा लीन्हीं मातुकी भीषम अतिहरषाय।
... काशिराजकी लै सुता भ्राताब्याहिनि आय॥
... राज्य न भीषम लीन्हा। राज्यबिचित्रवीर्य्यकहँ दीन्हा॥
...न विवश भयउ नरनाहा। रमितरैनिदिनसहित उछाहा॥
...काज नृप को सब भूला। प्रतिदिन रहै नारिअनुकूला॥
...श वर्ष भवन ते राजा। कढ़ेउ न जान्यो दूसरकाजा॥
...सुत कृत राज्य प्रचारा। भूपदिवसनिशिरमित विहारा॥
...न रहेउतन नारि प्रसंगा। भयउ राजयक्ष्मा नृप अंगा॥
...उ प्राण राज तेहि रोगा। भये विकलजन त्यहिकेशोगा॥
...र्ती अतिकीन्ह विलापा। भीषम उरउपज्यो परितापा॥

धरि धीरज बैठे भवन दुखित नयनजलरोकि।
माता सों कीन्हों मतो वंश विहीन विलोकि॥

...सुनहु व्यास जो आवैं। कह भीषम वे वंश चलावैं॥
...त तुरत व्यासमुनिआये। अक्षमाल तन भस्म चढ़ाये॥
...ताप वार अति भूरे। शोभितनयन अरुणपुनिरूरे॥
...षम चरणन शिरनाये। सत्यवती पुनि कंठ लगाये॥
... सिंहासन बैठारे। विनय कीन्ह दुखहरो हमारे॥
...हीन बन्धु तुम भयऊ। भयो राजयक्ष्मा मरिगयऊ॥
...कृपाअपियअवतंशा। करिय प्रकटरानिनते वंशा॥
...तु की आज्ञा मानी। अन्तःपुर बैठे सुख मानी॥

कालिहहि कहेउ अम्बिका बोली। मुनिशय्या तुम जाहु अमोली॥
इनते सुत प्रकटो तुम जाई। बाढ़ै वंश राज्य अधिकाई॥
दो० कही अम्बिका मातु यह बात न मोते होय।
कुलटा कहि हैं लोगजग जाय धर्म सबखोय॥
पैहै व्यास विष्णु अवतारा। व्यापि रहो सगरे संसारा॥
तासु परस कीन्हे नहिं पापा। असमनसमुझितजीपरिताप॥
सत्यवती की आज्ञा मानी। ऋषिढिगगई अम्बिकारानी॥
व्यास तेज ते तन थहराई। बैठि सकुचवश शीशनवाई॥
जिमिहिमगतकमलीकुम्हिलानी। थकेबचन मुखआवनबानी॥
भयवश अंगअंग सब कांपी। सुरत करतलीन्हें मुख झांपी॥
गये व्यास माता के पासा। निकटबैठि यहबचन प्रकासा॥
दो० सहि न सकी मम तेज त्रिय लिये ढांकि दृगबार।
हैहै याके मातु सुतु अक्षविहीन कुमार॥
सत्यवती सुनि अतिदुखलहेऊ। पुनिपुनि वचनपुत्रसों कहेऊ॥
नयन विना राजा अधिकारी। होतनहीं सुत देखु विचारी॥
करहु प्रकट अम्बा ते वालक। सो कुरुवंश होय प्रतिपालक॥
व्यास मातु की आज्ञा मानी। अन्तःपुर बैठे पुनि आनी॥
कह अम्बा ते योजनगन्धा। होइअम्बिकाके सुत अन्धा॥
मुनि शय्या कहँ अब तुम जाहू। उपजै पुत्र होइ नरनाहू॥
आयसु मांगि गई मुनि तीरा। देखि तेज भयो पीत शरीरा॥
तब मुनीश आलिंगन कीन्हा। होय भूपसुत आशिषदीन्हा॥
यह कहि सत्यवती पहँ आये। समाचार सबकहि समुझाये॥
दो० सकल सुलक्षण होब सुत महाराज के योग।
पीतभई त्रिय देखि मोहिं होयपीत तन रोग॥
यहकहि वचन मातु के आगे। सुमिरण करन ब्रह्मको लागे॥
कह्यो मातुअब सुतसुनिलीजे। अपने मन विचार यह कीजे॥
यहिते अधिक न दूसर रोगा। अन्ध एक सुत यक युत रोगा॥

हु एकसुत अबकी वारा। विष्णु भक्त जाने संसारा॥
कहेउ व्यास माता सुनि लीजे। शय्या पठै अम्बिका दीजे॥
सत्यवती सुनि ताहि बोलाई। सुनत अम्बिका शीशडोलाई॥
दो० एक बार माता करौं वचनतुम्हार प्रमान।
बारमुखी सम सो त्रिया बारबारऋतुदान॥
सत्यवती कहि बालक काजा। तुम ऋतु करोछोड़िकेलाजा॥
व्यासुहिनिकट भली कहि आई। मुनि समीप परिचरी पठाई॥
भये रमित जानेउ मुनिरानी। निलजदेखि दासी पहिंचानी॥
आये मुनि माता के आगे। कथा समस्त कहनपुनिलागे॥
यातें होइहि प्रकट कुमारा। परम भक्त जानहिं संसारा॥
माता सत्य कहौं मैं तोहीं। पुनि छलकीन्हअम्बिकामोहीं॥
मोहिं विलोकि परम भयपाई। पठई और आप नहिं आई॥
निपट निलज्ज देख मैं सोई। काशिराजकी सुता न होई॥
दो० माता सों यह कहि चले मुनिमनको सुखपाइ।
भये अम्बिका के तनय धृतराष्ट्रक तनआइ॥
भे अम्बा के पाण्डुकुमारा। वंश विभूषण जग प्रतिपारा॥
दासी योनि विदुर अवतारा। विष्णुभक्त अरु परमउदारा॥
प्रथम अम्बिकाके सुतभयऊ। अन्धजानिके राज्य न दयऊ॥
भीषम बाह्लीक मत कीन्हा। अम्बासुतहि राज्यनहिंदीन्हा॥
पांडुहि सिंहासन बैठायो। तिलककियो शिरछत्रधरायो॥
अन्ययोग पुनि राजकुमारा। नाहिंन भ्रातजात अधिकारा॥
यहि प्रकारहरिकहि समुझावा। द्रुपद नरेश सुनत सुखपावा॥
पुनि बलदेव कही यह बानी। सुनहु बात यह शारँगपानी॥
भीषम द्रोण करण धनुधारी। दुर्य्योधन के आज्ञाकारी॥
सेनायुद्ध देइहि महि नाहीं। जीतिको सकै कृष्ण उनपाहीं॥
करण समान बली संसारा। नाहिंन प्रकट कौन करतारा॥
मै अपने मन में करि बूझा। कोहरि करिहि करणते जूझा॥

सुनतहि वचन नयन रतनारे। भये क्रोध नहिं रहत सँभा

दो० बोले हरि बलदेव ते भ्राता करहि विचार।
धर्मराज के अंशको कौन छँड़ावन हार॥
करों नाश कौरव सकल जो न देइनृपअंश।
हतों द्रोण भीषम करण वाहुलीकयुतवंश॥

तदपि बली कुरु युध संसारा। मोते रण नहिं तासु उबा
चक्रपाणि गहि मस्तक फारों। राज युधिष्ठिर को बैठा
यह करतूति नकरि दिखरावों। नहिं वसुदेव को तनयकहा
मिटै न अंश धर्म नृप केरा। गावै अयश जगत सबमे
का बल देखि सुनो बलभाई। करत करण की आपुबड़ा
अर्जुन भीमसेन बलदाई। नहिं त्रिभुवनइनकीसमता
अतिहठ हनूमान ते कीन्हा। सकेनजीति सखाकरिलीन्ह
कै किरात गिरि पर रणकीता। वनोवास जिन शंकर जीत
असुर सेवन्त कवच बलवाना। जाकेरण सुरपतिभयमान
सो अर्जुन पलमहँ संहारयो। इन्द्रहि इन्द्रासन बैठार्यो
जितबांधे शर सों सोपाना। ऐरावत धरणी जितआन

दो० वाणन कीन्हीं वाटनभ हाथी लियो उतारि।
कुन्ती सो पूजन कियो सजल भई गन्धारि॥
धनपति छांडो दण्ड लै जीते सब भूपाल।
पारथसो बलवानजग भयहु न कवनेकाल॥

जब विराटपुर कौरव घेरा। वेढ़ी गाय अहीरन टेर
भीषम द्रोण करण सब आये। अर्जुन एक सबन बिचलाये
एकएकसन मिलिमिलिलरेऊ। तब उन पारथको काकरेउ
वाणन मारि सकल विचलाये। फेरी धेनु नगर फिरि लाये
देव दैत्य दानव बलभारी। जहँलगिरचेसृष्टिविधिभार
तीनों लोक अस्त्र गहि आवै। पारथ सों रणजय नहिं पा
सहदेव दक्षिणकी जय कीन्हा। लंका दण्ड विभीषणलीन्ह

कुल वारुणी दिशि वलभारी। जीत्यो सिंधु तटी लघुभारी॥
मिसेन सब पूरब ओरा। निजभुजबलजीत्यो वरजोरा॥
कचक नाग बकासुर मारा। जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा॥
रि हिडम्ब हिडम्बी व्याही। वन्धुको जीति सकै रणमाही॥
ेन मारो कीचक सौ भाई। सकै वन्धुको अंश छडाई॥
मराज सरि को संसारा। तजेउन धर्म सहेउ दुखभारा॥
दो० भीम पार्थ कीन्हों सकल कौरवकुल संहार।
धर्मराज के शत्रुको मरत न लागी बार॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥
दो० प्रश्नबहुरि कुरुवंशमणि दीन्हीपदशिरनाइ।
कहऋषिजनमेजयसुनो कथाश्रवणमनलाइ॥
लदिशि देखि बहुरि हरिबोले। भ्राता सुनो कहतमें खोले॥
नहित चहत धर्मसुत केरा। जान्यहु परम शत्रु सो मेरा॥
ह बलदेव सुनहुहरिभ्राता। रचिरास्योयहकलहविधाता॥
म कहँ धर्मराज प्रिय जैसे। मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे॥
ो सात्विकी वीर वर होई। मम संग्राम करे शठ सोई॥
यह बात मतेकी भाई। कुरु पाण्डवकी प्रीति निकाई॥
हियहवचन विदापुनिभयऊ। बलचलिनगरद्वारके गयऊ॥
िनृप कह्यउ सुनहु वनवारी। कहेउ राम मतनीक विचारी॥
रत युद्ध कटिहै परिवारा। मोकहँजगकहिहै धिरकारा॥
हिं बन्धु वन्धु सन मारे। कलह नीक नहिं मंत्र हमारे॥
मेले भूमि अरु मिटै लड़ाई। सोई अब कीजे यदुराई॥
हेउ विहँसि तब बालकन्हाई। अरि पर दयापरम कदराई॥
ठि सबै सबको मत लीजे। मिले भूपमहिसो अब कीजे॥
हेउ नकुल यह मंत्रहमारा। सुनहुसकलमिलिकरहुविचारा॥
अब भ्रमन नृप सुनु हमपाहीं। बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं॥

भीमसेन अर्जुन मन भायउ। कहेउ बंधु भल मंत्र...
द्रुपद बिराट कहे मत नीका। तब बोलेउ यादव कुल...

दो० कही कृष्ण भूपाल ते सुनिये मंत्र हमार।
बिनदलसोंकछुबलनहीं बिदितसकलसंसार॥
जहँलग तुम्हरे अंशके भूमिभूप भुवराइ।
साजिनिजदलआवें सकल दीजै पत्रपठाइ॥

कह मुनि सुनहु वचन कुरुराई। कथा विचित्र श्रवण मन...
सुनिहरिवचन नृपति मनभायो। देश देश कहँ पत्र पठा...
पुनि हरि द्वारावती सिधायो। द्रुपदसेन हित निजपुर...
साजि दल देश देशके राजा। नृप बिराटपुर जुरो समा...
नगर चँदेरी के भूपाला। धृष्टकेतु आये तेहि...
अक्षौहिणी चमू यक संगा। हय गज रथ पदचर...
सब कवची खड्गी धनुधारी। सर्वे शूर महाबल...
उत्तर पुर बिराट नृप केरा। कीन्हे धर्मराय कहि...
अक्षौहिणी धर्म्म नृप केरी। भई नृपन की भीर घने...
ताही समय द्रुपद नृप आये। अक्षौहिणी सङ्ग निजला...
धृष्टद्युम्न पुत्र रण रंगी। चौंसठि नृपति द्रुपदकेसंग...
दुसर नृपति शिखंडी आये। भीपमवधहित बिधि...
चारि बन्धु पट सुत दश नाती। आयो अयुत द्रुपदकेजाती...
सर्वे महारथी बल भारी। सन्नाही खड्गी धनु धारी...

दो० शूर सेन आये तबै ले निज सेन गँभीर।
कवची खड्गी कुंडली धनुधारी सबबीर॥

जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ। सेन सहित आयेनृप तेऊ...
अक्षौहिणी एक संग लीन्हे। धर्मराज हित रण मनदीन्हे...
काशिराज की सेना आई। अरु आन नृपगण समुदाई...
बाहर निकसि बिराट भुवारा। उत्तर शंख सहित परिवारा...
अक्षौहिणी संग निज लीन्हे। डेरा धर्मराज ढिग कीन्हे...

गजरथ औ असवार पदाता। अक्षौहिणी जुरेउ दल साता॥
घटोत्कच निज साथ सिधायो। पांच कोटि राक्षस सँग लायो॥
भूप पंचनद के जे बासी। आये सेन सहित बलरासी॥
शृङ्गी सिन्धु कक्ष के राई। आये सकल समेत सहाई॥
चालिस सहस जुरे तहँ राजा। को बरणे नृप सेन समाजा॥
दो० बन्धुन युत बैठे सभा धर्म्मराज के रूप।
जुरे आइ त्यहि थलसबै देशदेश के भूप॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥
दो० जनमेजय मुनिते कह्यो कहौ कथामनलाइ।
सुधिपाई कुरुनाथ जब तब कसकीन्हउपाइ॥
गवरसुख कुरुपति सुधि पाई। जोरयोकटक युधिष्ठिर राई॥
व नरेश मन शंका आई। शकुनिकरणकहँलीन्हबोलाई॥
णी और दुशासन आये। बैठिसकल मिलि मंत्रदृढाये॥
योधन कहि श्रवण सुनाई। दूत बचन मुखपहँ सुधिपाई॥
नत अजात शत्रु दल जोरा। अक्षौहिणी सप्त घनघोरा॥
तह सचिव कीजे केहि भांती। भयवश परी नींदनहिंराती॥
ति यह उत्तर करणतबदीन्हा। नृपतुमशोच अकारथकीन्हा॥
१ बन्धु सात्विक यदुराई। अरु नरेश सब शत्रु सहाई॥
द बिराट सेनसजि आवे। मारा सकल जान नहिंपावे॥
दो० यम कुबेर बरुणेन्द्र में जीति सकों दिगपाल।
मातुप सोते को जुरे अभय होहु भूपाल॥
ने यह बचन भूपसुखपायो। साधुसाधुकरि हृदयलगायो॥
समान धर्म्म व्रतधारी। नहिंत्रिभुवन हमारहितकारी॥
मन बचन न जाने आना। मनकारज नहिंदुर्ल्लभमाना॥
जे न हितदायक जग तोसे। रहत सदा में करण भरोसे॥
दिन युद्ध परे कठिनाई। मित्र मित्रसुत करहिं सहाई॥

पाण्डव निधनकरणके लायक। बंधु सरिस मेरे ...
जब यहि भांति प्रशंस्यो ताहीं। बोल्योकरि विचार ...
॥ दो० कियो रंक ते राउतुम राखत मान हमार।
॥ ... तिलतिलतनकटिकटिगिरहिताकेप्रतिउपकार॥
स्वामिकाज लगि शीशसमर्प्यो। जुरे कालरण ताहि न ड...
जुरे युद्ध करणी नृप मेरी। देख्यो कहौं कहा बहुते...
करिअतिक्रोध शिलीमुख जोरों। शरसागर पाण्डव दलबो...
भूप न करिय शोक कछु जीमा। सकेंजीतिनहिं अर्जुनभीम...
रण महँ बांधि युधिष्ठिर राई। जयति पत्र देहौं लिखवा...
मेरे बल समान नहिं पारथ। सके न जीतिथके पुरुपार...
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो। तीक्षण बचन बदनते काढ़...
पारथ की सरि भट संसारा। भयोजगत नहिं होनेउहार...
॥ दो० कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु ऐसो को संसार।
॥ ... पारथशर अति कठिनहै सहै युद्धको भार॥
सुनहु भूप अब कथा पुरानी। पार्थ चरित में कहब बखानी...
प्रथम द्रोण अरुद्रुपद मिताई। सो प्रसंग नृप सुनुचितलाई...
जब बिराट गणनाथ छिनावा। हारिसमर नृप कानन आवा...
मिले पिता नृप यमुना तीरा। देखियुगल दृग भयोसनीरा...
गहिपदनृपप्रणाम तबकीन्हेउ। होहुअभयमुनिआशिपदीन्हेउ...
भरद्वाज अरु प्रपद मिताई। अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई...
द्रोण द्रुपद खेलें यक संगा। बढ़ी परस्पर प्रीति अभंगा...
कथा समस्त द्रुपद जब कह्यऊ। भयेक्रोध सुनि द्रोण न सह्यऊ...
॥ दो० कहेउ द्रोण सुनु पे द्रुपद बधि बिराटगणआजु।
॥ ... सकल देश पंचाल को तुमहिं करावों राजु॥
बधिबिराट तोहिं राज करावों। द्रोण नाम तब बिप्र कहावों...
हतौं शत्रु में एकै बाना। तो म्वहिं परशुरामकी आना...
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। ते अघमूल परहिं गे भारी

तकहि लीन्ह शरासनबाना। द्रुपद संग लै कीन्ह पयाना॥
उ भूप यह चलतो बारा। करो निधन जो शत्रु हमारा॥
यो राज बिप्र सुनु तोरा। पुनिमातव अरिजन्मनिहोरा॥
असकहिनगरनिकटचलिआये। पाणि शिलीमुखधनुषचढ़ाये॥
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये। ब्रह्म अस्त्र ते द्रोण जराये॥
द्रुपदहिं सिंहासन बैठारा। काढ़ेउतिलक छत्रशिरधारा॥
प्रदेश अर्पनो द्रोण सुनुराई। बसे कम्पिला सुखअधिकाई॥
मरे हेतु धेनु मुनि यांची। दयो नृपतिकरिबुद्धिपिशाची॥
त्र जानिकर शाप न दीन्हा। करेउननिधननगरतजिदीन्हा॥
दो० गजपुरको तब द्रोणमुनि कीन्हो तुरत पयान।
पहुँचे वासर सात महँ सबलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

दो० गेंद खेल खेलत सबै जुरे बालकन साथ।
तुमफेंकेउ तब रोकेऊ भीम ओड़िकै हाथ॥
उ गेंद कूप में गयेऊ। तुमसबमिलिविस्मयत्रशभयेऊ॥
समय द्रोण तहँ आयेउ। बालकरुदत देखिचुपकायेउ॥
धनुष शर द्रोण सँधानी। गेंद काढ़ि दीन्हे तू आनी॥
तुरत भीषम पहँ आये। सकलचरित बालकनसुनाये॥
पितामह मनअनुमानेउ। आयेद्रोण सत्य जियजानेउ॥
के मिले गङ्गसुत आई। सभा मध्य ले गयो लेवाई॥
पाय सिंहासन दीन्हा। चरणधोय चरणोदकलीन्हा॥
धेनु पुनि दीन्ह बिप्राऊ। दीन्हेउ नहरि पंचरातगांऊ॥
दो० जोरिपाणि कीन्ही बिनय भीषमपद शिरनाय।
बालकसौंपे बोलि सब कीजे निपुण पढ़ाय॥
सिखायनिपुणजबकीन्हा। तुमसबमिलिगुरुदक्षिणदीन्हा॥

अर्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ। सहस एक दश संयु
पदगहिबचन कह्यो यहसांचो। आयसुकरा चहा जे
कह अर्जुन आयसु जो दीजे। आज्ञा होइ नाथ सो
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा। कीजे सफल मनोरथ
द्रुपद मित्र कीन्हो अपमाना। ताते मांगत हों यह
बांधि चरण तर दावो आई। चुकेउ तात अभिमत
कुरु पाण्डव की मिली सहाई। घेर्यो नगर कम्पिल
सुनेउ द्रुपद अरि सेना आई। निकरेउ तुरत निशान

दो० चारिचमू द्वै मिलिगईं भयो घोर संग्राम
हयगजरथ लाखन परे सुभट कटे बहु नाम।

द्रुपद कर्ण ते सरस लड़ाई। महा युद्ध कीन्हेउ अ
शोणित बाण द्रुपद उरलागा। क्रोध अनलउरअन्तर
हन्यो कर्ण के चारिउ घोरा। असिनिकारिसारथिशि
विरथ देखि तवगे कुरुनायक। धनुष तानि छांड़े बहु
देखत युद्ध द्रुपद शर छांड़त। करते धनुष भूप तब
करिअतिक्रोधविशिखबहुत्याग्यो। भईविकल सेनासब
भीमसेन लज्जा जिय आयो। अर्जुनतेयहबचन सु
करिप्रण देन कहेउ तुम दाना। अबकरगुरुहितपंथम
भा पारथ उर क्रोध कराला। रिसबशभयेविलोचनप
अर्जुन कहन सूतते लागे। लेचलुहांकि बेगि रथ
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा। देवदत्त शंखध्वनि
गांडिव धनुष बहुरि टंकोरा। चौदहभुवन भयो रव
पुनि पारथ दीन्ह्यो शर जाला। लीन्हबांधि रणद्रुपदभ
पकरि द्रोण चरणन पर डारा। मित्रजानि मुनिनाहिंना
दीन्ह उठाय द्रोण पांचाला। सुनु अर्जुन करणी भूप

दो० शरसों बांधि बांधिनिज जीतेउ पवनकुमार।
भयो न ह्वैहैं कोउ अर्जुन सरि संसार॥

रथ कीन्ह अमानुष करणी । चितदैसुनहुकहत्र हम वरणी ॥
इन्द्रकील गिरि पर तपहेतू । गयो मन्त्र साधन वृषकेतू ॥
गहिथल धनुषबाणधरिदीन्हा । करिआचमन देहशुचिकीन्हा ॥
धरि उरध्यान पार्थ तपसाधत । करि व्रतमौनशम्भुआराधत ॥
एक चरण द्वै भुजा उठाये । शिवशिवरटतपरम हितलाये ॥
तप साधत वीते वहुकाला । भयउचरितयकसुनहुभुवाला ॥
प्रथमहिं भीम वकासुर मारा । तासुबंधु अतिशय वरिआरा ॥
पूर्व के वैर रोष वढ़ि आवा । धरि वराह तन मारनधावा ॥
तव पारथ समीप नियराना । सो चरित्र शंकर सव जाना ॥
गंगाधर पिनाकधर आये । गणगणपति सवसंगलगाये ॥
दो० धरि किरात तन हरचले लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरि मित्र की करन असुर संहार ॥
अर्जुन ढिग शूकर नियराना । शिवशर जोरि शरासन ताना ॥
करि अतिक्रोधअधम तममारा । आधोनिकसि रहो शरपारा ॥
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा । चला असुरमारन करिशोरा ॥
परेउ श्रवण शूकर वर वोला । सुनिरवह्टग किरीटशिरखोला ॥
आवत यक वराह अतितीछे । आयुध धृत किरातगणपीछे ॥
होइ सरोष लीन्हों तव चापा । शरसंधान कीन्ह करि दापा ॥
यहिविधि अर्जुन वाण प्रहारेउ । निजप्रवेशहरशरहिनिकारेउ ॥
कह शङ्कर यह मोर शिकारा । मारेउअधम न कीन्हविचारा ॥
दो० अरुणनयन भृकुटी कुटिल वोले पार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुववातनहिं रे रे अधमकिरात ॥
नीचजातिअतिअधम किराता । मूरखसमुझिन वोलत वाता ॥
मोते वचन कहत कटुवानी । अव तुव मृत्युआइ नियरानी ॥
अतिवल हीन न वल तनमाहीं । मानत अधम निहोरा नाहीं ॥
यहसुनि गणक्रोधित होइधाये । वाणननारि पार्थ विचलाये ॥
षण्मुख द्विरद वदन नहिंजीते । चले पराइ सकल भयभीते ॥

त्रिकलसकलतनशंभुडिहलावत।भागतशिवादिशिवचनसुनावत
भागे सब किरात गण भारी। त्रिन किरातपति भगेनहारी
सुनियहवचन शंभुहंसिदीन्हा। गहिपिनाकशायककरलीन्हा
धूरजटी बहु बाण पवांरे। अर्जुन काटि काटि महिडारे
पारथ शर काटें शूलीधर। भयोयुद्धअति त्रिकलपरस्पर
विजय वृहन्नल के संग्रामा। लरत न करत शंभु विश्रामा
तव चरित्र गौरीपति कीन्हो। अक्षयतूणके शरहरि लीन्हो
गांडिवधनुप विजय तबलीन्हा। करिअतिरोष प्रहारणकीन्हा
गंगाधर कीन्हेउ हुंकारा। फाटो धनुष भयो दुइ फारा

दो० तबे किरीटी क्रोधकरि कीन्हेउ खड्ग प्रहार।
तिलभरिकट्योनशंभुतन विफलभयो असिधार॥

अर्जुन मही डारि तरवारी। मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी
लरिविलगाहिंबहुरि पुनिलरहीं। नानाभांति दावँ दोउकरहीं
अर्जुन पद कहँ हाथ चलावा। चहत उमापति भूमिगिरावा
चरण परस कीन्हें जब हाथा। बरंबूहि बोल्यो गिरिनाथा
अवमोहिं अतिप्रसन्नजियजानू। मांगुतात अभिमत बरदानू
असकहिशिवनिजरूप देखावा। पंचवदन शशिअर्द्धसोहावा
जटा कलाप शीशपुनिगंगा। चढ़ी सकलतनभस्मअभंगा
हृदय कपाल माल विकराला। उठतत्रिपंच नयनमहँ ज्वाला
भुजंग हैं भूषण दिग्पट धारी। अर्द्ध अंग गिरिराज कुमारी
अभय एक कर यक बरदाना। एक पाणिमहँ शूल महाना

दो० एक पाणि डमरू लिये नीलकंठ भगवान।
बार बार कह पार्थ ते मांगु मांगु बरदान॥

जीते बिना युद्ध गिरिजापति। मैं बरदान न तुमते मांगति
बिन जीते रण मौलिमयंका। बरमांगो बड़ कुलहि कलंका
प्रथमहिं विजयपत्र लिखिदीजे। पुनि बर देहु कृपाअमुकीजे॥

पद सप्तकोटि हरिआना। ऐसे नहिं मांगों वर दाना॥
हारे सुत संग तुम्हारे। होइहो विजय प्रसाद हमारे॥
नि यह वचन पार्थ अनुरागे। अस्तुति करनजोरिकरलागे॥
यगिरिजापति जय कामारी। चतुर वदन सेवित भुजचारी॥
रद शेष चरित तुव गावत। निगमनेति कहिपार न पावत॥
रहिंवार शक्र सुत भाखा। निजप्रणटारि मोर प्रण राखा॥
सकहि परे चरण अकुलाई। पाहिपाहि प्रभुजन सुखदाई॥
ाधर त्रिशूलधर शंकर। दुष्टदलनपालन निजकिंकर॥
लकण्ठ सितकण्ठ शम्भुहर। महा काल कंकाल कृपाकर॥
दो॰ शृंगी शूली धूरजटि कुण्डलीश त्रिपुरारि।
वृषाकपर्दी मानहर मृत्युंजय कामारि॥
तिसदाशिव सब गुणरासी। काशीपति कैलास निवासी॥
यिह गिरामगन हरभयऊ। पारथको याविधि वरदयऊ॥
र्जुन सुनहु प्रसाद हमारे। नाशहोयँ सब शत्रु तुम्हारे॥
हैं सुफल सकल जे काजू। मिलिहै तुमहिं अकंटकराजू॥
कहि हरसब अस्त्रसिखायो। पुनिपशुपतिको भेदबतायो॥
पार्थ जब कठिन मशाना। तादिन शर कीजे संधाना॥
त प्रलय शत्रु दल होई। त्रिभुवन रोंकिसकै नहिं कोई॥
विधि अर्जुनको वरदयऊ। अन्तर्द्धान उमापति भयऊ॥
बलिष्ठ पुनि शिव वरदाना। कहहु भूपको पार्थ समाना॥
बचन इमि द्रोण कुमारा। समुझाये बहुभांति भुवारा॥
॰ गुरुबांधव मुख वचनसुनि मौनभयो महिपाल।
पुनि शकुनी बोलेउ बहुरि सबलसिंह उत्ताल॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
पंचमोऽध्यायः ५॥
॰ मंत्रहमार बिचारिकरि सुनुमणिसमुझिभुवार।
सबल शत्रु तुव धर्मसुत जोरेउ सैन अपार॥

जोरेउ धर्मराज निज पच्छी। तुमदलहीन बातनहिंअच्छी
अवलग भूप चेतनहिं कीन्हा। देशकाल कछु परतन चीन्ह
पठवो पत्र करहु चित चेता। आवहिं नृप सब सेनसमेत
तुम जानत हो भीम सुभाऊ। अवसर परे न चूकत दांउ
अरिदल युक्त आपुदल हीना। करि बैठे कछु कर्म्म अलीन
सुनहु सकल में कहत पुकारे। फिरिसँभरिहिनहिंनाथसँभारे
बोलहु सकल भूप अब राई। अबविलम्ब महँ कौनउपाई
बरपर चढ़े खेल महँ भीमा। डारउ अवनिक्रोधकरिजीमा
राखत सदा वैर जिय माने। लखि प्रताप तुव रहतडराने
जो बलहीन भीम करिपावे। भूप तुमहिं यमलोक पठावे

दो० निजकरणी नरपाल तुम देखहु चितहि बिचारि।
कसेहु जँजीरन सकलतन दियो गंग महँडारि॥

सो सुधि भूपहिये महँ भूली। अजहूं उठत हिये महँ शूली
पठवहु पत्र न करहु बिलम्बा। क्षितिपतिआवें सहितकुटुम्बा
हैं जेहिके जितनी नृप सामा। आवें साजि करन संग्रामा
खोलि पत्र सबकोलिखि दीजे। अबकछुभूप बिलम्ब न कीजे
सुनत नरेश परम सुख पाये। देश देश कहँ पत्र पठाये
श्रीपत्रिका दीन्ह सहिदानी। चलेउ राज कर आयसुमानी
सुनिकेनिदेश पुहुमिपति राजा। आये सकल समेत समाजा
आये मगह राज भगदत्ता। असी लक्ष जाके मदमत्ता
रथनपती अरु बाजि अनेका। अक्षौहिणी संग दल एका
गदा चर्म असि तूण सोहाये। महापिनाक रूप दरशाये
रङ्ग रङ्ग के सङ्ग पताका। अति उतंग जनु चुंबतिनाका
बाजत बाजन बिविध प्रकारा। पणव बेनु मुख शंख नगारा

दो० ऐरावत गज को सुत दीन्हो तेहि सुरपाल।
मन्दर ते उन्नत कछुक देह बिशाल कराल॥

चारिउ चरण स्रवत मद धारा। जनु झरनाजलबहत पहारा॥

दन्त विशाल श्वेत सुर भंगा। मानहुँ रजत शैलके शृंगा॥
कंचन मणिमय रुचिर अँबारी। गज मुक्ता झालरि शुभकारी॥
तापर मगहराज असवारी। देखि स्वरूप शत्रु भयकारी॥
नेवानवे संग ले राजा। चलेउसाजिनिजसेनसमाजा॥
युद्ध हेत सब साज बनाये। यहिप्रकार गजपुरकहँआये॥
पुनिआयो कलिङ्गदल साजी। अगणितरथपदातिअरुबाजी॥
सो बांधव अतिशय बलभारे। द्विरद लक्षबहु सँग मतवारे॥
द्वादश नृपति संग बलदाई। सेन विचित्र वरणिनहिंजाई॥
दीप सनाह पाणि दस्ताना। असी लक्ष लीन्हे धनुबाना॥
दो० पटहभेरिकरि शंखधुनि घुर्मतलाल निशान।
आयोसजिगजपुर कटक नृपकलिंगबलवान॥
नगर हस्तिनापुरी समीपा। निजनिजरुचिकृतसिविरमहीपा॥
आयो यमनराज त्यहि काला। एकविंश लीन्हे महिपाला॥
महाबली सब तेज तुरंगा। अक्षौहिणी अनी यक संगा॥
बड़े धनुष अरु कवच विशाला। नील वसन तन वेष कराला॥
हैं सब एक जाति के काली। अस्त्र शस्त्र धृत सेना आली॥
नील रंग के श्याम पताके। पवन लगे निर्तत नभ बांके॥
बाजत विपुल अरबी बाजा। चढ़ि आयो ले सेन समाजा॥
दो० अक्षौहिणी कलिंग की परी गंग के तीर।
तासु निकट कीन्हे सिविर यमनाधिपरणधीर॥
पुनि आयो तहँ सुरथ कुमारा। सिंधु नरेश वीर वरिआरा॥
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी। नाम जयद्रथ शिव वरदानी॥
त्रिभुवनविदित जान सब कोई। नृप दुर्योधन कर बहनोई॥
गजरथ बाजि पदाति अपारा। बाजत गोमुख शंख नगारा॥
जाके दलहि ध्वजा पँचरंगा। अक्षौहिणी एक पुनि संगा॥
कुण्डि वर्म तूणी धनु बाणा। धरे वीर सब चर्म कृपाणा॥
हस्ती रथ कोउ तुरंग सवारी। सत्त सहस्र नृप बल भारी॥

नगर हस्तिनापुर चलि आये। कियेसिविरनिजनिजमत
दो० निज निज रुचि डेरा करत प्रमुदित हिये भुवार
दुर्योधन आदर किये किये विविध सतकार।
सजि सजि सेन नरेश अनेका। आये शूर एक ते ए
यहि प्रकार आये सब भूपा। कीन्हसिविरसबनिजअनु
प्रथम दूत कुरुखेत पठाये। सुनिसुधि दनुजराजचलि
नाम अलंबुप वीर अभंगा। सात कोटि दानव दल सं
नाना वाहन आयुध धारी। मेचक वरण घटा जनु का
नाना विधि माया सब जाने। तृणसमान तिहुंलोकहिं
दानवराज द्विरद असवारी। गर्जतपुनिपुनिअतिबलभा
पितुकरमधुजविदितजग जासू। वलिसुतवानि पितामहता
निजभुजबल सुरगणसबजीते। रहत सुरेश जासु भय भी
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई। दल न होइ जनु पावस आ
श्यामघटा सम निशिचर धारी। विज्जुछटाअसिपाणिउधारि
सघन घटाविच पांति वलाकी। गर्जत रवसोहात अतिबांक
दो० गजघंटा भेरी पटह गरजत अति मनुजाद।
नगर हस्तिनापुर निकट भयो भयंकरनाद॥
कौतुक हेत विवुध गण आये। देखनको विमान नभ छाये
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधिपाई। वाहर मिलेउ नगरके आई
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा। कुशल पूँछि मन संशय मेटा
करि सन्मान अलंवुप केरा। पुनि महीप करवायो डेरा
सभामध्य फिरिगयउ कुमारा। भइ घड़ि भीर राज्यदरवारा
ताही समय शल्य नृप आये। अक्षौहिणी संग यकलाये
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई। कीन्हमंत्र सबसचिव बोलाई
बोलेउ शकुनि भरतकुलटीका। मोतेसुनिय मंत्र यह नीका।
दो० मिलियसपदिआगे निसरि करिबहुआदरभाय।

अमिलि यहै मंत्र दृढ़कीन्हा। आगेचलिकौरवपति लीन्हा॥
लतउभयअभिवादनकीन्ह्यो। तबकुरुनाथ निमंत्रणदीन्ह्यो॥
तुल चलहु हमारे धामा। आये लेन हेत संग्रामा॥
त के कृष्ण सहायक ऐहैं। ताकी सरिहम काह लगे हैं॥
तुल सुनु प्रसादबिन तोरे। होइँन सकल मनोरथ मोरे॥
निकै शल्य कही मृदुबानी। सुनहु नरेश परम सज्ञानी॥
मराज नाहिं मोहिं बोलाये। हम सुधिपाइ आपुते आये॥
मचलिप्रथमनिमंत्रण दीन्हा। मोहिंसहीप अपनकरिलीन्हा॥
म छांड़ो अैनेनकर संगा। सबते लरब भूप तुव संगा॥
दो० भीमपार्थ सहदेव पुनि नकुल सबनकर मोह।
त्यागे तुम्हरे हेत नृप धर्मराज ते छोह॥
जि नाते को नेह बिचारा। अब दीन्हे हम संगतुम्हारा॥
ब नृप धर्मराज पहँ जाइब। आतुरभेंटिसपदिपुनि आइब॥
हांराखि सब सेन समाजा। आवहु देखि युधिष्ठिरराजा॥
जपर राखि सेन सब बांकी। चला भूप चढ़ियानयकाकी॥
रघुरात रथ चक्र कराला। मृदुरव करत किंकिणीजाला॥
तेत संग फहरात पताके। पवन लगे निर्तत नभबांके॥
मेलेन बर्ष त्रयोदश बीती। दरश लालसाकीअतिप्रीती॥
लकितगात नयन जलछाये। यहि प्रकार बिराटपुर आये॥
दो० दरश लालसा उरअधिक कोकरिसकै बखान।
यहिबिधि आयो शल्य नृप सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
षष्ठोऽध्यायः ६॥
धर्मनरेश सभा सुधिपाई। द्वारपाल इमि जाइ जनाई॥
शल्य आगमनसुनि सुखपाये। लेन हेत नृप भीम पठाये॥
मरजाय अभिवादन कीन्हों। मातुलनिरखिआशिषदिदीन्हों॥
यतजि चले प्रथम अनुरागे। भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे॥

पुलकित गात नयन जलछाये । कुशलपूंछि तन ताप बुझाये
युगलप्रसन्नभये मिल जीमा । आयेसभा शल्यअरु भीम
आवत निकट धर्मसुत देखी । मिले प्रेमयुत हर्ष विशेख
कुशलपूंछि तन आनँद छाये । पुलकित नयनसजलछैआये
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ । मिलेउवहोरि सजलदृगतेऊ
तेहि अवसर पारथ तहँ आये । मातुल देखिचषन जलछाये
कीन्हप्रणाम निकटभये ठाढ़े । मिलिबहुरि अतिआनँदबाढ़े
अभिवादन तब करत नराटा । मिलेपार्थसुत द्रुपद विराटा
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा । भेंटत पुनिपुनि करत जुहारा
दो० सभामध्य नृप शल्य कहँ तब लेगयो भुवार ।
वहुप्रकार आदरकियो खान पान अधिकार ॥
शल्य नरेश कुशल बहुभांती । पूंछतनृपहिं जुड़ावत छाती
अहहतात विधिगतिबलवाना । वनबसिसहेउदुसहदुख नाना
तेरह वर्ष विपिन महँ बीती । कुरुनंदनयह कीन्ह अनीती
तात कीन्ह छलसभा बुलाई । कपट द्यूतकरि भूमि छुड़ाई
बहुअतिकीन्ह शकुनछलकारी । धर्म्म नरेश धर्म्म व्रतधारी
जबते तुम कहँ देश छुड़ावा । तबते हम दारुण दुखपावा
तुम्हरे विरह दिवस अरुराती । तलफतरह्यौंजरत नितछाती
गत तेरह संवत सुधि पाई । तुम्हँ देखि गयेनयन जुड़ाई

नतहिं धर्म्मराज हँसि बोले । मातुल सुनहु कहत में खोले ॥
श्रीधर्म्म कठिन नृप एहा । ताते त्यागहु तुम सन्देहा ॥
दो० दियो निमंत्रणयुद्धको उनलीन्हों अपनाय ।
कीन्हें और विचार अब क्षत्री धर्म नशाय ॥
न अब दुर्योधन के ओका । मातुल जाउतज्यो सबशोका ॥
न कौरव की कीन्ह गोहारी । अर्जुन कर्ण वैर है भारी ॥
मरभूमि दोनों बलधामा । जबजुरिकरहिं कठिनसंग्रामा ॥
पु कर्ण की निंदा कीजे । मांगत हों मांगे यह दीजे ॥
हे शल्य सुनिये भुवराई । कारण सकल कहो समुझाई ॥
दा किये कर्ण की राजा । यामें सुफल बनत तुवकाजा ॥
सुनि धर्मराज हँसिदीन्हा । ते उत्तर मातुल कहँ दीन्हा ॥
ज निंदा सुनि शत्रु प्रशंशा । घटिहैं शल्य कर्ण को अंशा ॥
दो० निजहीनी अरु शत्रुकी सुनत बड़ाई कान ।
रिसबशह्वैके कर्ण तब सूधे लगि है बान ॥
ह कहि धर्म्मराज समुझाये । एवमस्तु कहि शल्य सिधाये ॥
हर नगर भीम पहुँचाये । बिदाभये पुनि शीश नवाये ॥
अधीश नृप शल्य सुजाना । पुनिमतंगपुरगत बलवाना ॥
योधन आदर करि लीन्हा । प्रीतिसहितअभिवादनकीन्हा ॥
तम सदन सिविर करवाये । सुनहु भूपअब चरित सुहाये ॥
मर कौशिली को महिपाला । वृहद्बली आयोतिहिकाला ॥
ति दलचलतधरा पुनिहाली । सूर्यवंश की धरे प्रणाली ॥
नि कुरुनन्दन अनुज पठायो । आदर ते सब सिविरटरायो ॥

दो० बहु प्रकार सतकारकरि खान पान सन्मान ।
मिलतसिविरनितप्रति अधिकसबलसिंहचोहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

पुलकित गात नयन जलआये । कुशलपूंछि तन ताप बु
युगलप्रसन्नभये मिल जीमा । आयेसभा शल्यअरु
आवत निकट धर्मसुत देखी । मिले प्रेमयुत हर्ष वि
कुशलपूंछि तन आनँद छाये । पुलकित नयनसजलकै
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ । मिलेउबहोरि सजलह
तेहि अवसर पारथ तहँ आये । मातुल देखिचपन जल
कीन्हप्रणाम निकटभये ठाढ़े । मिलिबहुरि अति आनँद
अभिवादन तब करत नराटा । मिलेपार्थसुत द्रुपद वि
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा । भेंटत पुनिपुनि करत जु
दो० सभामध्य नृप शल्य कहँ तब लैगयो भुवार ।
बहुप्रकार आदरकियो खान पान अधिकार ॥
शल्य नरेश कशल बहुभांती । पूंछतनृपहिं जुड़ावत छ
अहहतात विधिगतिबलवाना । वनबसिसहेउदुसहदुख
तेरह वर्ष विपिन महँ बीती । कुरुनंदनयह कीन्ह अन
तात कीन्ह छलसभा बुलाई । कपट द्यूतकरि भूमि छु
बहुअतिकीन्ह शकुनछलकारी । धर्म्म नरेश धर्म्म व्रतध
जबते तुम कहँ देश छुड़ावा । तबते हम दारुण दुखप
तुम्हरे विरह दिवस अरुराती । तलफतरह्योंजरत नितछा
गत तेरह संवत सुधि पाई । तुम्हें देखि गयेनयन जुड़
दो० आयोंतुम्हरे मिलनको छलकीन्हे कुरुनाथ ।
दयो निमंत्रणयुद्धको करिलीन्हो निजहाथ ॥
या महँ धर्म्म अधर्म्म विचारी । कहोकरों ... ानि
वहां गये बिन धर्म्म नशाई । छांड़त तुमहिं परम
तुमते नहिं दूसर संसारा । जाननहार धर्म्म
तज्यो नधर्मसकलतजिदीन्हा । त्या...
तुम भगिनी सुत पांचो भाई । मोरे
कहो विचारि करों अब सोई । जा

दो० हरिपद पंकज ध्यानधरि ऋषय नयन जलपूरि।
कह मुनि जनमेजयसुनहु कथाअमियरसमूरि॥
नगर अवंती ते चलिआयो। भूप विन्द अनुविंद सुहा
लीन्हें संग चमू चतुरंगा। रथपदाति गजवाजि अभं
युधामन्यु अरु वीर तमोजा। आये सेन सहित कांबोज
राजा राजपुत्र वलवाना। आयेअमितकटकविधिना
सेना सहित उलूक नरेशा। पुनि गजपुरमहँ कीन्ह प्रवेश
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा। साठि सहस्र छत्रधर राज
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये। भ्राता सुनहु कृष्णनहिंआ
ताते तुम लै आवहु जाई। दरशपाइ गत विपति बुझा
अर्जुन नृपकी आज्ञा पाई। चले तुरंत चरण शिरना
वेगवंत जोते रथ बाजी। लायहु तुरत सारथी साजे
चले किरीटी अति हरषाई। चले जोवत मगवार न ला
सतयें दिवस गोमती तीरा। उतरि अन्हाये निर्म्मल नीर
दो० जल निर्म्मल गंभीर अति वनज विपुल बहुरंग।
मधुपमत्त गुंजत भ्रमत कलरव करत विहंग॥
आगे चलि द्वारावति देखी। मनमें भवन विचित्र विशेखी
कनकरचितमणिखचितदेवाला। अष्टद्वार पुर त्राण विशाला
अतिगँभीर जलयुत पदवाना। उठत तरंग पयोधि समाना
श्वेत रक्त मणि हरित बँधावा। परम अनूप रुचिरूपसुहावा
दक्षिण ओर समुद्र विराजा। पश्चिमदिशिरैवतगिरिराजा
कोटिन पुर महँ उड़त पतंगा। हंस मयूर कपोत विहंगा
निर्त्तत कोटिन केतु पताका। अतिउतंग जनुचुंबत नाका
कोटिन गज कुंतल ले धावैं। सरित घाट महँ नीर पियावैं
करत विहार द्विरद मतवारे। गिरिसम वपुष जूल ते कारे
कोटिन यान साहनी आवैं। नीर पियाइ नदी अन्हवावैं
दो० अतिउतंग पुरद्वारगुन मणिमयमंजुकेवार॥

कोटिन दरवानी खड़े लिये हाथ हथियार॥
टिन मणिमयरुचिर कँगूरा। अतिउतंग नभ परसतजूरा॥
म्बूनद मणिगणयुत आना। शोभित सुभग सुरेशसमाना॥
रंग रतन की भाशा। रविकरपरसत करतप्रकाशा॥
शोभा कुन्तीसुत देखत। जीवनजन्मसुफलकरिलेखत॥
हेनिधिपवँरिद्वार चलिआये। दरवानिनलखि शीशनवाये॥
बचन सुधि करत तुम्हारी। संध्या समय रहे वनवारी॥
क्मिणि मन्दिर ते कढ़िआई। सात्यकिसों इमिवचनसुनाई॥
ते युगल मास सुनुभाई। अर्जुनकी कछु सुधिनहिंपाई॥
तेवेगि विलम्ब न कीजे। लोचनलाहुनिरखिचलिलीजे॥
सकहिशयनभवनसनदीन्हा। अर्जुन सुनतहर्षमन कीन्हा॥
हे अवसर दुर्योधन आये। शयन किये यदुनन्दन पाये॥
के हृदय गर्व नहिं थोरा। बैठेउ जाइ शिरहने ओरा॥
ने पार्थ सोवत यदुनाथा। ठाढ़भये सन्मुख करिमाथा॥
दो॰ परसि चरण ठाढ़ेभये हरि पांयन की ओर।
हियेप्रीतिअतिमन विमल श्रीसुरराजकिशोर॥
ही समय जक्तपति जागे। देखेउ पारथ पांयन आगे॥
सप्रेम देखि वनवारी। मिलन हेतु द्वौ भुजा पसारी॥
र्जुन गहे चरण लपटाई। भुजगहि हरि लीन्हे उरलाई॥
शल प्रश्न पूंछेउ बहुभांती। पुनिपुनिमिलतजुड़ावतछाती॥
हेअवसर कुरुनन्दन आये। अभिवादनकहिआपजनाये॥
दुपति कुरुनाथहि पहिचाना। मिलेबहुतविधिकरिसन्माना॥
हिभुजले समीप बैठाये। पूंछेहु नृप केहि कारण आये॥
सि बोले दुर्योधन राजा। सुनहुकृष्ण आयहुँजेहिकाजा॥
दो॰ करोसहाय हमार तुम जो कीन्हो यह बोध।
बहुतकहा सुनते कहे जानतवंश विरोध॥
ति तजि अब पांडव संगा। तुमहरि होहु हमारे अंगा॥

क्षत्री धर्म्म सुनहु यदुराई। जाके भवन प्रथम जो
सो ताही को होइ सहायक। करहु विचार होइ जो ला
आयउँ भवनप्रथम में तुम्हरे। हे हरि होहु सहायक ह
सुनि यदुप तबोले मुसुक्याई। दल बल हीनयुधिष्ठिर
निजआगम कहआपु विशेखा। हम प्रथमहिं पारथको दे
वचन हमार भूप सुनि लीजे। करहु विचार वेगि सो
यह कहिकै हरि माया प्रेरी। वरवसजाय तासु मति
दो० चारिलक्ष गोपालगण वाहन अश्व समेत।
एकवार हमशस्त्र बिन कहो भूप को लेत॥
होत प्रथम छोटे को ऊरा। पाछे लेइ जेठ को
यह कहि विहँसे शारँगपानी। मुख देखत माया लपटा
ज्ञानभंग दुर्योधन भयऊ। हरिमुखनिरखिवचनयहकह
हेहरि नटवर वेष तुम्हारा। नाचत गावत ले पर दा
गजपुरसजि आये सब राजा। तिनमहँ कौन तुम्हारो का
ताते हरि सेना हम लीन्हेउ। तुमकहँहम अर्जुनकोदीन्हे
दो० कह्योकिरीटी विहँसि तब सुनियेयादवराइ।
आपु हमारे पग धरिय दल कोऊ ले जाइ॥
सुनिहरिगण गोपाल बोलाये। मणिमयकुण्डलमुकुटसोहा
मणिमय भूषणहार विराजत। जटितवसनतनशोभाछाज
मणिमय कवच वडे धनुधारी। शोभित मनहुँ वरात सुधा
कञ्चन मणिमयस्यंदन भारी। गजमुक्ताझालरि छविभार
सो दल दुर्योधन कहँ दीन्हा। करिसनमान विदाप्रभुकीन्ह
भयो प्रसन्न हिये महिपाला। चलेउ संग ले गणगोपाल
गयो वहोरि जहां बलदेवा। चरणपरसि विनयी बहुसेव
अर्जुन साथ जात यदुनाथा। चलहुसंगमबहिंकरहुसनाथ
इन पांडवको कीन्ह सहारा। सब प्रकार मैं दास तुम्हार
दो० भयेयुधिष्ठिरओरहरि सो जानत सब भेव।

मनसा वाचा कर्मणा मैं तुम्हारबलदेव॥
नसकहिपरेउचरणकुरुनायक। नाथकृपाकरि होहु सहायक॥
खत सदा भरोस तुम्हारा। तुमबिन कौनमोर रखवारा॥
लधर सुनेउ भूपकी वानी। बोले वचन दीनअति जानी॥
म इत हरि उत बात न नीकी। सुनहु कहौं तुम्हरे हितहीकी॥
हु सेन सँग मंत्र हमारा। होइसोइ जो लिखाकरतारा॥
नसकहि लक्षदीन सँग योधा। बिदाकीन्ह बहुभांतिप्रबोधा॥
र्योधन लै संग सिधाये। कृतवर्म्मा के मन्दिर आये॥
खत कृत नृप आसन दीन्हा। बहुप्रकार ते आदर कीन्हा॥
दो० बैठारे आसन विमल करि बहुविधि सतकार।
कुशलप्रश्न पूँछतनृपहि अति हित वारहिंवार॥
अहो भूप कछु आज्ञा दीजे। करिअनुकम्पकाजसोइकीजे॥
अतिशय कृपाकरी कुरुनाथा। तुवआगम मैं भयों सनाथा॥
ुनि दुर्योधन वचन सुनाये। सुनहुभूप जेहिकारण आये॥
ौ जानौ सब बात तुम्हारी। पांडव हमें वैर है भारी॥
नके साथ आपु वनवारी। तुम नृप करहुसहाय हमारी॥
ो सुनि कृतवर्म्मा तब बोले। धीरवीर अरु समर अडोले॥
प तुम्हार साथ हम दीन्हा। यहप्रणमैं निश्चयकरिकीन्हा॥
ह सुनिके सेना हँकराई। भयउ अरुढ़ निसानबजाई॥
ोन्हे साथ चमू चतुरंगा। अक्षौहिणी एक नृप संगा॥
ोन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा। करवायो तेहि सिविर नरेशा॥
न विचित्र देखि सुख माना। जीते युद्धशकुनि मन जाना॥
र्ण दुशासन बहुत अनन्दे। पुनिपुनि कुरुनन्दनपदबन्दे॥
ह सुधि धृतराष्ट्रक सुनिपाई। बहुअनन्द नाहिं हृदयसमाई॥
हां कृष्ण अर्जुन सँग लीन्हे। अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हे॥
क्मिणि सतभामादिक नारी। आई सुनिअर्जुन कहँभारी॥
ठि पार्थ सहित वनवारी। सतभामा तब चरण पखारी॥

जाम्बवती जल भाजन लाई । पानदान लक्ष्मणा लै आई
रुक्मिणि अतरदान करलीन्हें । सतभामा भोजनहित कीन्हे
यहि प्रकार आठो पटरानी । अतिहितकरतकृष्णप्रियजानी
दो० हरि समेत भोजन किये दियो रुक्मिणी पान ।
सतभामादिक नारि सब करत विविध सन्मान ॥
कुशल प्रश्न पूँछी सबन अति हित बारंबार ।
हैं अभिमनु नीके तहां सबके प्राण अधार ॥
सो सुधिपाइ देवकी आई । देखि युगलतन आनँद छाई
हरिअर्जुन उठिकीन्ह प्रणामा । दीन्ह अशीषहोइ मनकामा
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई । बोली बचन नयन जलछाई
तुमबिनरहेउ हियेअति शोका । तेरह वर्ष बादि अवलोका
सुनहु कृष्ण जो मंत्र हमारा । प्राणहुते मोहिंअधिकपियारा
तुमहिंत्यागिकहिंऔर न जाना । रक्षा तुम कीजे भगवाना
कहि असबचन देवकी रानी । अर्जुनकहँसौंप्यो गहिपानी
हरि उठि अर्जुन बार न लाये । बसुदेवहिके मँदिरचलिआये
दो० करिप्रणाम अर्जुन सहित कहेउकृष्ण सबभेव ।
दै अशीश आनन्द सों बिदा किये बसुदेव ॥
निकरि पवँरि ते बाहर आयो । तबश्रीहरि सात्यकी बुलायो
होहु तयार सेन साजि भाई । हेरत बाट युधिष्ठिर राई
सुनि सात्यकिनिजसेन हँकारी । आयुधबांधि लीन्हअसवारी
दारुक नाम सारथी साजी । स्यंदनभानु जानुलखिलाजी
सुग्रीवादिक हय मचिआई । भे अरूढ़ हरि शंख बजाई
भुज गहि अर्जुन संग चढ़ाये । पवन वेग रथ हांकि चलाये
गमनी संगचमू चतुरंगा । उठी धूरि छपि गयउ पतंगा
पारथ पूँछत बिबिध कहानी । कहत जात मग शारँगपानी
दो० पारथपूँछेउ जोरिकर कहिये श्रीभगवान ।

शत्रुविजयअरुमोरहित सबलसिंहचौहान॥
तेउद्योगपर्व्वसबलसिंहचौहानभाषाकृतेअष्टमोऽध्यायः८॥
उकृष्ण अब सुनु मतमोरा। यामों है अर्जुन हित तोरा॥
है सकलशत्रुकी नासा। मिलिहिराज्यतोहिंबिनहिंप्रयासा॥
के अंश मोर अवतारा। पालत सृजत हरत संसारा॥
मेरण करत शक्ति तुम सोई। पूरण सकल मनोरथ होई॥
मेरण कीन्ह शक्र फलपावा। जेहिप्रसाद सुरनाथ कहावा॥
धे कर्त्ता अरु हर संहर्त्ता। जासुप्रसाद विष्णुजगभर्त्ता॥
थ करत तासु को ध्याना। सब प्रकार होइहि कल्याना॥
जानहु सब मोर स्वरूपा। प्रकृति पुरुषहै एकस्वरूपा॥
हिं भेद जे नर अज्ञाना। परहिं नरकपावहिं दुखनाना॥
१० भयउ बोध अर्जुन कहेउ कहिये श्रीभगवान।
जेहिप्रकार ते कीजिये परमशक्तिको ध्यान॥
तुर जानेहु भगवाना। लागे कहन शक्तिको ध्याना॥
रा बसनअरु शक्तिकराला। पहिरे उर मुंडन के माला॥
ग अंग अहिभूषण नाना। शिवारूढ़ अरुवसतमशाना॥
केशा अरु वदन पसारे। जिह्वालसत दशन भयकारे॥
कसतअरुणनयनत्रैज्वाला। अष्टबाहु तनश्यामतमाला॥
घुर शब्द सहितघनघोरा। शिवानाद पूरित चहुं ओरा॥
एक कर एक कृपाना। यककर अभय एककर दाना॥
क पाणि मदिरा कर भाजन। एक पाणि शृंगीहितुबाजन॥
दो० एकहाथ में खड्ग धर यक शूली वर धार।
उठतप्रभा नभतेजकी रविशत कोटि अपार॥
हि प्रकार हरि भेद बतायो। अर्जुन नयन मूंदितवध्यायो॥
न्ह ध्यान क्षण एक बहोरी। अस्तुतिकरत दोउकरजोरी॥
यगिरिजा जयप्रणतपालिका। असुरराज मृगयुदजालिका॥
हिषमर्दिनी मातु कालिका। नितभक्तनकीविपतिघालिका॥

जयजयजय महिषासुर मर्द्दिनि । अजा कुजा [illegible]
शिवा शंभुघरणी शिवदूती । [illegible] जगसकलविभूत
चण्डमुण्डदलनी अरु चण्डी । ललितालसितरूपखलखंड
धूमावती सती तुव सीता । होहिंकामसबअरिगणजीत
रिपुखण्डन तुव नाम पुनीता । शीशहि जटाकंठ शुभगीत
तारा तरणि तारनी गंगा । त्रैपुर की त्रैताप त्रिभंग
कुला कुरू कुरु कुल महरानी । गिरा हरा जयजय श्रीवानि

दो० छिन्ना तू बगला मुखी वाराही जगमाय
चरण शरण जगदंबिका कीजै बेगिसहाय ॥
करौं राज्य राज्येश्वरी मातंगी दुखहानि ।
दंडदेदुष्ट विपातिके राखि लेहु जनजानि ॥

सांची दुखदलनी जय बाला । करहुकृपा अबहोहु दयाला
प्रकट्यो एक गगनथल ज्वाला । अस्तुति करै देवदिगपाला
व्योम गिरा यह भयो महाना । मांगु मांगु अर्जुन वरदाना
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई । बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई
शत्रु विजय अरु नृपकल्याना । मांगत मान देहु वरदाना
ह्वै प्रसन्न सुनि अर्जुन बानी । एवमस्तु कहि गई भवानी
तब दारुक हयहांकि चलायो । चले मरुत गति वारनलायो
सात्यकि चले कृष्ण रथ संगा । तिन्हि साथ चमू चतुरंगा
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा । कियेसिबिरतबसकलमहीपा
जहँजहँ कोटिन तनिनबितानां । जहँ तहँ बाजैं नौबतिखाना
गर्जत गज हिंसत बहु घोरा । हाहाकार शब्द चहुं ओरा
पुर विराट दल जुरेउ अपारा । नहिंकोउ काहु जाननहारा
होत नाद घरियार घनेरा । धुवांदेखि परखिय नृप डेरा

दो० अंध धुंध दल नृपनके परत न कतहुं जानि ।
रंग रंग झंडनके भूपन की पहिचानि ॥

सूतदारुक हरि रथहि चलावा । पवरि अगाल [illegible]

रपाल तव जाहिं जनाये । महाराज हरि अर्जुन आये ॥
हुत अनन्द भूप मन कीन्हों । बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों ॥
न्ह प्रणाम धरणि धरिमाथा । रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा ॥
र्जुन मिलेउ चरणगहिधाई । दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई ॥
ष्ण समेत सभा पुनि आई । बैठे अति प्रसन्न सुखपाई ॥
भु कहँ सिंहासन बैठारा । बहुविधि नृपकीन्हे सतकारा ॥
रण धोइ चरणोदक लीन्हा । पावन भवनसींचिजलकीन्हा ॥
हि अवसर भीमादिक भाई । परसे चरण कृष्ण के आई ॥
दो० प्रीति सहित यदुवंश मणि भेंटे हृदय लगाय ।
बैठारे सनमान करि हर्ष सहित सुख पाय ॥
इ करजोरि कृष्ण के आगे । बिनती करन धर्मसुत लागे ॥
प्रभु तुव करतूति महाना । थकेचारि श्रुति अंत नजाना ॥
हिमा अमित वेदजो गावत । नेतिनेति कहि नेति सुनावत ॥
हस बदन सो शेष बखानत । पुनिसोउकहतपारनाहिंजानत ॥
रद सनकादिक सुर नाना । बिधिनारद केहुँ पार न जाना ॥
व सामर्थ्य जानिसब पावा । बहुप्रकार कहि नेति सुनावा ॥
यपि निर्गुण वेद बखाना । जनहितसगुणहोतभगवाना ॥
मत्स्यरूप धरि वेद उधारयो । हे प्रभु तुम शङ्खासुरमारयो ॥
दो० हाटक दृग धरणी हरी सो ले गयो पताल ।
कीन्हविनयसुरब्योसनिशि भयोप्रकटततकाल ॥
रि बराह वपु श्री भगवाना । पैठि सिन्धुमहँ धरे विषाना ॥
अधम कनकलोचन तुममारा । कीन्हेउ बहुरिधरणिविस्तारा ॥
व्याकुलजन प्रहलादहि जानी । होइनरहरिमारयो अभिमानी ॥
हरणाकुश निज लोक पठावा । हरी बिपति हरिदासबचावा ॥
कमठ रूप धरि मन्दरलीन्हों । मथ्योपयोधिसुरनसुखदीन्हों ॥
मधु दे नाथ असुर बौरायो । कियेअसुरसुर सुधापिआयो ॥
है बामन अमरेश बचायो । बलिछलि बांधिपतालपठायो ॥

गये सभाते उठि तुरत बाहुलीक अकुलाय।
शकुनी कर्ण बहुत हरषाना। अतिराय सुख
कहेउ प्रातकामी ते बोली। मैं जीती नृपन
द्रुपदसुता पांडव की रानी। ताकहँ मोहिं
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी। अबतुम दासी
मैं अभिमत रूप पर तोरे। बैठहु आनि ज
सकलनरेश आनि त्यहिकहेउ। पाण्डवनाथ
रिसकरिकहेउ धीरधरि गाढ़ा। येरे अधम दु
हम कौरवपति के रिपु तोहूं। नीच सँभारि
तूशठ मोर प्रभाव न जाना।
यह सुनि भानमती रिसवाई। जानत नीच
सुनिअसवचन बहुत भयपावा। सूतबहुरि कु
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी। नाहिं आवत
दो० दुश्शासन ते बोलिकै कहेउ भूप रिस
गहिकै केश घसीटिकै तुम लै
यहिकी बात सकल मैं जानी। लावा सोन भीम
सुनत वचन दुश्शासन आवा। चलहु वेगितोहिं
यहिविधिवचनदुशासनकीन्हा। सुनुयदुनाथ
पूछति सत्य दुशासन चौंको। हारे प्रथम भूप
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा। भये दास नाहिं
हारो होय प्रथम मोहिं राजा। दासी होत न
सुनतदुशासन अतिरिसमानी। गहिकै केश
तब यदुनाथ मोहिं रिसलागी। कहेउबोइ मम
रजस्वला मैं चक्र पट धारी। मुंच मुंच रे
दो० सभामध्य बैठे सबै कौरव कुल
लियेजातमो करतअधम
कसरिस करत पति

नृप सुनहु कथा मनलाई। हरि सुधिपाइ द्रौपदी आई॥
चरण प्रेमयुत आनी। नयननीर मुख कढ़त न वानी॥
देखि कै रोवन लागी। विकल वचन शोकतेपागी॥
जब तुम यज्ञ कराई। द्वारावती गये यदुराई॥
जो भई अवस्था मेरी। सोअव सुनहु जानिनिजचेरी॥
देखि कुरुपतिहिनभावा। होइउदास निज मंदिरआवा॥
करण दुशासन आये। वैठि सवन मिलि मंत्र दृढ़ाये॥
बटोरि करि युद्ध दरेरा। लीजै राज्य पाण्डवन केरा॥
ति बुद्धिचक्षु यह आई। सकलकथातिनकहिसमुझाई॥
बिन समझे अज्ञानते तुम मानत मनरोष।
अत्रसुतकरहुबिरोधजनि उनकरकछुनहिंदोष॥
युद्ध न तुम वरिऐहौ। विना काज कत वैर बढ़ैहो॥
भूपतुम कहत विलोकी। हमरे मते मंत्र नहिं नीकी॥
दीन विभव करतारा। तुमहिंउचितनहिंकरवबिगारा॥
शकुनि तेज छलकारी। सुनहु भूप यह वात हमारी॥
हु जनि नृप अज्ञानी। हारिजीति कछुपरत न जानी॥
अक्ष विद्या निपुणाई। लेइय जीति खेलि प्रभुताई॥
ख्याल विरोध न होई। काढ़िय द्रव्य हीनकरि सोई॥
धृतराष्ट्रक मनभायो। द्यूतहेत उन नृपति वोलायो॥
रेश सहित परिवारा। सभय द्यूत को वर्णौं पारा॥
ांव शकुनी यह भाखे। जीतौ जीति लेउ नृप राखे॥
राज्य पाट भंडारा। हय गज रथ समेत परिवारा॥
भूपति धर्म विचारो। चारिउ वन्धु अपनपो हारो॥
कुनि अव जो कछुहोई। धरहु भूप हम जीतें सोई॥
प धरहु द्रौपदी रानी। जीतव तेह कही यह वानी॥
हि शकुनी पांसाडारे। जीतेउ कुरु धर्मसुत हारे॥
सभेदुखित भीषम विदुर द्रोण रहे शिरनाय।

॥ गये सभाते उठि तुरत बाहुलीक अकुलाय ॥
शकुनी कर्ण बहुत हरषाना। अतिशयसुख दुर्योधन मान
कहेउ प्रातकामी ते बोली। मैं जीती नृपनारि अमोल
द्रुपदसुता पांडव की रानी। ताकहँमोहिं मिलावहु आन
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी। अबतुम दासी भइउ हमार
मैं अभिमत रूप पर तोरे। बैठहु आनि जंघ पर मो
सकलनरेश आनि त्यहिकहेऊ। पाण्डवनाथ क्रोध उरदहे
रिसकरिकहेउ धीरधरि गाढ़ा। येरे अधम दूरि रहु ठाढ़
हम कौरवपति के रिपु तोहूं। नीच सँभारि न बोलतंतोह
तूशठ मोर प्रभाव न जाना। बोलतवचनसहितअभिमान
यह सुनि भानमती रिसवाई। जानत नीच मृत्यु तवआई
सुनिअसवचन बहुत भयपावा। सूतबहुरि कुरुपतिपहँआव
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी। नहिं आवत कौरवपतिरानी
दो॰ दुश्शासन ते बोलिकै कहेउ भूप रिसवाय।
॥ गहिकै केश घसीटिकै तुम लै आवहुजाय ॥
यहिकी बात सकल मैं जानी। लावा सोन भीम भयमानी
सुनत वचन दुश्शासन आवा। चलहु बेगितोहिं भूपबोलावा
यहिविधिवचनदुशासनकीन्हा। सुनुयदुनाथउतरुहम दीन्हा
पूछति सत्य दुशासन चौंको। हारे प्रथम भूप की मोंको
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा। भये दास नहिं नातहमारा
हारो होय प्रथम मोहिं राजा। दासी होत न मोको लाजा
सुनतदुशासन अतिरिसमानी। गहिकै केश सभामहँ आनी
तब यदुनाथ मोहिं रिसलागी। कहेउछोड़ ममकेश अभागी
रजस्वला मैं यक पट धारी। मुंच मुंच रे शठ अपकारी
दो॰ सभामध्य बैठे सबै कौरव कुल सरदार।
लियेजातमोकहँनिलज करतअधम अपकार ॥
कसरिस करत पतिन तोरिहारी। अब तुम दासी भई हमारी।

ारित केरि कवन वड़िलाजा । चलु बोलत दुर्योधन राजा ॥
मगतिदेखि सकल रनिवासू । करतविलाप ढरत दृगआंसू ॥
ो सुधि गंधारी सुनिपाई । करि विलाप पाछे उठि धाई ॥
टि बार न चीर सँभारा । हा पुत्री कहि करत पुकारा ॥
लगि काढ़ि भवनते रानी । तबलग नीचसभामहँ आनी ॥
मविदुर नाइ शिरलीन्हा । कृपअरु द्रोणशोचजियकीन्हा ॥
नी कर्ण बहुतसुख पावा । दुर्योधन यहि भांति सुनावा ॥
ो० दुश्शासन ते तब कह्यो दुर्योधन मुसक्याय ।
वस्त्रहीन करि जंघ पर बैठारो त्रियआय ॥
ियहवचनशकुनिहँसिदीन्हा । विकर्णदेखिक्रोधजियकीन्हा ॥
तनतोहिं कौरवकुलराजा । कहतविलोकिवचनतजिलाजा ॥
बन्धु त्रिय मातु समाना । बरणत आगम निगम पुराना ॥
मानि अब विनयहमारी । छांड़ि देहु अब द्रुपदकुमारी ॥
ीरति जग पूर्ण मयंका । जनितावहु नृपकुलहिकलंका ॥
विकर्ण यहिभांति बखाना । सुनतवचन तबकर्णरिसाना ॥
हिंन बैसतोरि मतलायक । जाहुभवन खेलहुधनुशायक ॥
यहवचन भवन के रहेऊ । दुश्शासनते तब नृप कहेऊ ॥
० नगिनिकरौतुमद्रौपदी निजकर बसन उतारि ।
बैठारो ले जंघ पर यह रुचि बन्धुहमारि ॥
न द्रोण रहे चुप साधी । पकरेसिवसनअधमअपराधी ॥
उ खैंचन चीर अभागी । भई विकल में रोवन लागी ॥
ातिदेखि पतिनदुखपावा । अश्रुपातकरि महि शिरनावा ॥
ाश भयउ दुखभारी । दीनबन्धु में तुम्हें पुकारी ॥
ादव पति हा दामोदर । हे माधव हे हलधर सोदर ॥
विन्द गिरिधर वनवारी । कृष्णकृष्णकहि शरणपुकारी ॥
मुरलीधर राधानायक । वासुदेव अब होहु सहायक ॥
बसन कुमारगगामी । राखहुलाज दयाकरि स्वामी ॥

नाथ बसन महँ आपुसमाने। रही लाज कौर
खेंचत वस्त्र दुशासन हारा। अम्बर के लाग।
यह चरित्र देखा सबकाहू। हाली धरा भयो दिग्दाहू
बिनघन आसमान घहराना। कौरवसभा सबहि भयमाना
भूप यज्ञशाला महँ आई। शिवाशब्द कीन्हो अधिकाई
बोलत रासभ श्वान कुमारा। गगन दुष्ट पक्षी गण क्षारा
खेंचत थकेउ दुशासनवासन। वसनछोड़िबैठ्योनिजआसन
शीशनाय नृप बैठ उदासा। छकितभये सबदेखि तमासा
दो० अंबरहीनविलोकि नृप बोलिसकेउ नहिं बयन।
रक्षाकीन्ही करिकृपा तुव प्रभु पंकज नयन॥
तजी लाज अर्जुन नकुल धर्मराज भय मानि।
सहादेव बोले कछुक भीमसेन बल खानि॥
कहत द्रौपदी करि करि रोसा। मोहिंनकुन्तिहिसुतनभरोसा
इनपतितनकछुपति न हमारी। तुम रक्षा कीन्ही बनवारी
पूँछेउ धृतराष्ट्रक संजय सों। होत कहा कहिये सो मोसों
अक्षिहीन कछु परत न जानी। सुनि संजय कछु कथावखानी
दुश्शासनहिं दीन्ह दुरिआई। करिप्रबोधम्बहिंनिकटबोलाई
कीन्हकृति मैं नहिं कछु जाना। मांगु मांगु पुत्री वरदाना
बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा। बार बार पुत्रन धिकारा
तेहि अवसर गन्धारी आई। देखिअनीति सुतन रिसवाई
कहेउ बिलोकिकर्म्मभ्रमत्यागी। परिहो नरक असाधुअभागी
दो० धृतराष्ट्रक अति प्रीति ते कहेउ मांगु वरदान।
दासभाव निज पांडुसुत मैं मांगों भगवान॥
वाहन अस्त्र पतिन के देहू। बिदाकरिय अबकरि नृपनेहू
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं। प्राण समान सुतातुव मोहीं
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्म्मा। छांड़िनिलोकलाजकुलधर्म्मा
धर्म्मराज दुर्योधन पोचन। कहत सत्य मोरे द्वै लोचन

ह संकोच जानो जिय मोरे। प्राणन अतिशयहं प्रियमोरे॥
पदसुता मम वचन प्रमाना। अबतुम मांगि लेहु वरदाना॥
व न मनोरथ पूजा आशा। यहिअन्तरपुनिवचनप्रकाशा॥
भिमत मिलो कृपा भयतोरे। तव प्रसाद होइहि सब मोरे॥
त्री लेइ तीन वरदाना। विप्र चारि मांगे नहिं आना॥
इ वैश्यस्य शूद्रकहि एका। मांगे और होइ अविवेका॥
दो० वाहन अस्त्र देवाइके विदाकीन्ह महिपाल।
परसिचरणनिजचढ़िरथन चलेभवनतेहिकाल॥
ौवल नाम शकुनि को भाई। मिल्यो पंथ महँ गयउलेवाई॥
ीति समेत सभा बैठायहु। बहुरि सार पांसा मँगवायहु॥
रजत रहेउ सकल परिवारा। मिटै न जो प्रभु होनेहारा॥
ीन्हो अक्ष बदी यह बाजू। द्वादश वर्ष तजै सो राजू॥
ेविन वास करि वर्ष बिताई। करैन अन्न अशन फलखाई॥
ष दिवस करि पुर अज्ञाता। करैनिवास जानि नहिं जाता॥
ीन्हे खोज बहुरि वनजावैं। काल बिताइ राज पुनि पावै॥
हेउ न कछुक भूपहरि ज्ञाना। धरो दांव कहि वचन प्रमाना॥
ीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी। दीन्हों डारि गये नृप हारी॥
दो० होइ उदास भूपाल तब बनकहँ कीन्हपयान।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोधकरि भीमसेन बलवान॥
ेन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी। आई सींचु दुशासन तोरी॥
ेहि कर केश गहे अभिमानी। गहे बसन नँगिआवन रानी॥
मा मांझ खलकानि न मानी। सो उखारि डारों तुव पानी॥
हुरि जंघ ठोंकी कुरुनाथा। तोरों जंघ गदा गहि हाथा॥
ीन्हु सकलनिजकाल बिताई। कृष्ण शपथ करिहोंसबआई॥
त्य वचन हरि सत्य हमारा। करिहों सब कौरव संहारा॥
र्जुन कही कर्ण के आगे। हँस्यो मोहिं सबते अमत्यागे॥
रन मारि जरजर तन तोरा। करिहों कृष्ण सत्य प्रणमोरा॥

सहदेवहु शकुनी तब बोले। विषधर मनहुँ विषे …

दो० द्यूत हराये नीचतोहिं करि छलको अधिकार।
होइहि मोरे करनते शकुनी मरण तुम्हार॥

बधों तोहिंनहिं अवधि बिताई। मोहिं युधिष्ठिर भूप …
येही भांति नकुल बनवारी। सभामध्य कीन्हों …
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे। कह्यो शल्य ते राजा …
हँसेउ मोहिंकछुकानि न मानी। करिबहुबारकितवअभिम…
बीते काल न तोकहँ मारी। तौ नहिं धनुषबाण करधा…
मोरे उर उपजा अति रोसा। प्रणकीन्हों कहिनाथ भरोस…
करिअस्नान रुधिर तुव धारा। बांधों तब दुश्शासन बा…
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई। उचित होइ तस करियउपा…
पुनि हम पंच पांडुसुत रानी। श्रीमुखभगिनीकहत बखानी…
तेइ तुम साक्षात भगवाना। पांडव हैं अतिशय बलवाना…
तिनहिं अछत यहहालहमारा। यथा अनाथ नाथ बिनदारा…
तेरह वर्ष न बांधे केशा। फिरत अजहुँ बिधवाके भेशा…

दो० सुन्यो द्रौपदी के वचन लोचन मोचतवारि।
कहोप्रतिज्ञा कीन्हसो होइहि सत्य तुम्हारि॥
[illegible] कहि भक्तिवश्य भगवान।

दो० द्यूत हराय नाचतहि ...
होइहि मोरे करनते शकुनी मरण तुम्हार ॥
घधों तोहिंनहिं अवधि बिताई । मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई ॥
येही भांति नकुल बनवारी । सभामध्य कीन्हों प्रणभारी ॥
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे । कह्यो शल्य ते राजा तैसे ॥
हँसेउ मोहिंकलुकानि न मानी । करिबहुबारकितवअभिमानी ॥
वाते काल न तोकहँ मारों । तौ नहिं धनुषबाण करधारों ॥
मोरे उर उपजा अति रोसा । प्रणकीन्हों कहिनाथ भरोसा ॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा । बांधों तव दुश्शासन बारा ॥
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई । उचित होइ तस करियउपाई ॥
पुनि हम पंच पांडुसुत रानी । श्रीमुखभगिनीकहत बखानी ॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना । पांडव हैं अतिशय बलवाना ॥
तिनहिं अछत यहहालहमारा । यथा अनाथ नाथ बिनदारा ॥
तेरह वर्ष न बांधे केशा । फिरत अजहुँ बिधवाके भेशा ॥
दो० सुन्यो द्रौपदी के बचन लोचन मोचतवारि ।
कहोप्रतिज्ञा कीन्हसो होइहि सत्य तुम्हारि ॥
सबलसिंह चौहान कहि भक्तिवश्य भगवान ।
बैठारो पुनि द्रौपदी करिबहुविधि सनमान ॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्व्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥
पूछेउ सुनि जनमेजय राई । कथा बिचित्र कहो मुनिराई ॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्तहमारा । कहिये नाथ सहित बिस्तारा ॥
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी । लागे कहन कथामुनि ज्ञानी ॥
तेहि अवसर आये सबराजा । कृष्ण सहित जहँभूपतिराजा ॥
नाइ नाइ शिर हरिहिं जोहारा । बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा ॥
ताही समय द्रुपद

देखिनृपहिं वसुदेव कुमारा। मिले बहुरि आसन बैठारा
परसे चरण विराट भुवाला। सनमाने तव दीनदयाला
कह्यो भूप सुनिये यदुराई। अब करिये प्रभुकौन उपाई
हे हरि यतन बतावहु सोई। जामहँ मोहिं परम हित होई
मोसमको जग ओर सभागी। अतिदुखसह्योबन्धुजेहिलागी
मोसम दुखी सुनहु भगवाना। भयो न भूपर भूपति आना।
जान्यो कृष्णभूप दुखपावा। कहि सुरराज कथासमुझावा।
दो० वृत्रासुरको बधन करि भये मुदित सुरराज।
घेर्यो हत्या आनितव छूट्यो राज समाज॥
विप्र वंश ताको अवतारा। सुनतकथा दुखमिटा अपारा॥
भग्यो असरनाथ दुखपाई। कमलनाल महँ रह्यो छिपाई॥
फिरि शतयज्ञ नहुषमहिपाला। लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला॥
सेवहिं सब सुरसहितसमाजा। सिंहासन बैठे नहुराजा॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा। सेवहिं मनुज देव मुनिसर्वा॥
रम्भादिक सुरतिय सब आवें। करें गान अरु नृत्य दिखावें॥
आवें सुरतिय करि शृंगारा। रमित रहें नृप करत विहारा॥
दो० यहिविधि राजसमाजते बीति गये कछुकाल।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु कथा कहौं भूपाल॥
सो सुधि पाइ सभीत परानी। गुरु गृह गई भागि इन्द्रानी॥
मांगेजीव यह विपति सुनाई। मैंप्रभु चरणशरण अबआई॥
यहिप्रकार मुनिधीरज दीन्हा। कीन्हीकृपा अभयपुनिकीन्हा॥
तबसुरगण सबसकल बोलाये। बांटिलेहु अघकहिसमुझाये॥
सबपर छिटिकि जाइ सबपापू। मिटे सुरेश केर परितापू॥
कीन्ही सब मिलि अंगीकारा। सब पर गयो पाप को भारा॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ। प्रथमज्वालहुतभुकमहँभयऊ॥
लीन्ह्यो वरुण भई जल काई। यहिप्रकार सब सुरसमुदाई॥
दो० [illegible] पाप विन पाकरी पूरि रह्यो सुख भूरि।

सहदेवहु शकुनी तब बोले। विषधर मनहुँ विषे रसखोले॥

॥दो०॥ द्यूत हराये नीचतोहिं करि छलको अधिकार।
होइहि मोरे करनते शकुनी मरण तुम्हार॥

अधों तोहिंनहिं अवधि बिताई। मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई॥
येही भांति नकुल बनवारी। सभामध्य कीन्हों प्रणभारी॥
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे। कह्यो शल्य ते राजा तैसे॥
हँसेउ मोहिंकछुकानि न मानी। करिवहुत्राकितवअभिमानी॥
बीते काल न तोकहँ मारौं। तौ नहिं धनुषबाण करधारौं॥
मोरे उर उपजा अति रोसा। प्रणकीन्हों कहिनाथ भरोसा॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा। बांधौं तब दुश्शासन बारा॥
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई। उचित होइ तस करियउपाई॥
पुनि हम पंच पांडुसुत रानी। श्रीमुखभगिनीकहत बखानी॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना। पांडव हैं अतिशय बलवाना॥
तिनहिं अछत यहहालहमारा। यथा अनाथ नाथ बिनदारा॥
तेरह वर्ष न बांधे केशा। फिरत अजहुँ विपशके भेशा॥

॥दो०॥ सुन्यो द्रौपदी के वचन लोचन मोचतवारि।
कह्योप्रतिज्ञा कीन्हसो होइहि सत्य तुम्हारि॥

सबलसिंह चौहान कहि भक्तिवश्य भगवान।
बैठारो पुनि द्रौपदी करिबहुविधि सनमान॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्व्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दशमोऽध्यायः॥ १०॥

पूछेउ सुनि जनमेजय राई। कथा विचित्र कहो मुनिराई॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्तहमारा। कहिये नाथ सहित विस्तारा॥
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी। लागे कहन कथामुनि ज्ञानी॥
तेहि अवसर आये सवराजा। कृष्ण सहित जहँभूपतिराजा॥
नाइ नाइ शिर हरिहि जोहारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥
ताही समय द्रुपद सहितहरिपद शिरनाय॥

देखिनृपहिं बसुदेव कुमारा। मिले बहुरि आसन बैठारा ॥
परसे चरण विराट भुवाला। सनमाने तब दीनदयाला ॥
कह्यो भूप सुनिये यदुराई। अब करिये प्रभुकौन उपाई ॥
हे हरि यतन बतावहु सोई। जामहँ मोहिं परम हित होई ॥
मोसमको जग और सभागी। अतिदुखसह्योबन्धुजेहिलागी॥
मोसम दुखी सुनहु भगवाना। भयो न भूपर भूपति आना ॥
जान्यो कृष्णभूप दुखपावा। कहि सुरराज कथासमुझावा ॥
दो० वृत्रासुरको वधन करि भये मुदित सुरराज।
घेरो हत्या आनितब छूट्यो राज समाज ॥
विप्र वंश ताको अवतारा। सुनतकथा दुखमिटा अपारा ॥
भग्यो अमरनाथ दुखपाई। कमलनाल महँ रह्यो छिपाई ॥
फिरि शतयज्ञ नहुषमहिपाला। लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला ॥
सेवहिं सब सुरसहितसमाजा। सिंहासन बैठे नहुराजा ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा। सेवहिं मनुज देव मुनिसर्वा ॥
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं। करैं गान अरु नृत्य दिखावैं ॥
आवैं सुरतिय करि शृंगारा। रमित रहैं नृप करत विहारा ॥
दो० यहिविधि राजसमाजते बीति गये कछुकाल।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु कथा कहौं भूपाल ॥
सो सुधि पाइ सभीत परानी। गुरु गृह गई भागि इन्द्रानी ॥
मार्गजीव यह विपति सुनाई। मैंप्रभु चरणशरण अबआई ॥
बहुप्रकार मुनिधीरज दीन्हा। कीन्हीकृपा अभयपुनिकीन्हा ॥
तबसुरगण सबसकल बोलाये। बांटिलेहु अघकहिसमुझाये ॥
सबपर छिटिकि जाइ सबपापू। मिटै सुरेश केर परितापू ॥
कीन्हो सब मिलि अंगीकारा। सब पर गयो पाप को भारा ॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ। प्रथमज्वालहुतभुकमहँभयऊ ॥
लीन्ह्यो वरुण भई जल काई। यहिप्रकार सब सुरसमुदाई ॥
दो० भयो पाप विन पाकरी पूरि रह्यो सुख भूरि।

पठये ढूँढ़न पायकहि गयो बिलोकत दूरि॥
पायक ढूँढ़ि फिरे सब देशा। मिले इन्द्रनहिं भयो अँदेशा॥
सर्व कथा सुरगुरुहि सुनाई। मिलें कतहुँ तब शचीपठाई॥
ढूँढ़त फिरत विकल इन्द्रानी। मगमहँ मिलेदेवऋषिज्ञानी॥
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई। कमलनालमहँ रह्यो छिपाई॥
इन्द्र भाग गिरिपर भयमाने। मानसरोवर इन्द्र छिपाने॥
सुनि नारद के वचन प्रमाना। गई शची तहँ रोदन ठाना॥
कीन्ह विलाप ताप तन भारी। बार बार कहि नाम पुकारी॥
सुनि सुरेश मन दुखअधिकाई। निकरि कमलते दीनदेखाई॥
तुमपर गुरु कीन्हो अनुरागा। दीन्हशापकरिसुरन विभागा॥
रह्यो न तवशिर अघलवलेशा। बोले सुरगुरु चलिय सुरेशा॥

दो॰ मोकहँ पठयो देवगुरु लावहु बेगि बोलाइ।
बचन मानि फुरगुरु बचन गयेइन्द्रहरषाइ॥

गुरुहि प्रणाम कीन्ह सुरराई। भे प्रसन्न मन आशिष पाई॥
बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा। मिले राज तब मिटे अँदेशा॥
मिलि राजाकहि गुरुसनमाने। दिवस पंचदश रहे छिपाने॥
धर्महीन करि नहुषहि राजा। तब पावहुतुम राज समाजा॥
यहि प्रकार सुरपति समुझाये। करिप्रबोधनिजभवन छिपाये॥
कह्यो कृष्णअवसुनहु भुवाला। भयो कामवश नहुमहिपाला॥
पठये दूत बोलावहु जाई। बड़अभिमानशची नहिं आई॥
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी। सुनत उतर दीन्हो इन्द्रानी॥

दो॰ जब चाहत सुरराज मोहिं बाहन चढ़त नवीन।
जाइ लवाइ सो मानते होइ मोर आधीन॥

तेहि गदी नहु आइ विराजा। जाइ लवाइ जहां सुरराजा॥
दूत जाय यह वचन उचारा। नहु नरेश मनकरत विचारा॥
कहि नवीनचढ़ि यानसिधावहु। शचीबोलाइभवनकहँ लावहु॥
देवन शारदा बोलाई। बैठि जीभ मति भूपभ्रमाई॥

शिविका पकरि विप्रगण लाये। कै अरूढ़ तब भूप सिधाये॥
द्विजन शाप दीन्हो करिशोका। परइधरणिखलतजिसुरलोका॥
पुण्यक्षीण होइ नहुमहिपाला। पस्यो धरापर सो ततकाला॥
अमरनाथ निज पायउ राजा। भयउबरिससबसाजसमाजा॥
तैसे तुम पैहो महिपाला। धरहु धीर बीते कछु काला॥
दो० सबलसिंह धीरजदियो करि प्रबोधमहिपाल।
लीन्हे बोलि नरेश तब मन्त्र हेतु त्यहिकाल॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
एकादशोऽध्यायः॥ ११॥
कहेउ भूप अब सकल नरेशा। निजनिजमतकीजियउपदेशा॥
नृपविराट कह यह मत मोरा। जबलगजियेशत्रु जग तोरा॥
मेलिहि राज्य नाहिं कोटिउपाई। करियभूपजस तुमहिंसोहाई॥
सुनत बचनकह द्रुपदकुमारा। सुनहुसकल मिलिमंत्रहमारा॥
पहुँचत दूत तुरत अब कोई। समुझावे कुरुपति नृपसोई॥
सुनत बचन हरि के मनभावा। द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा॥
अबतुम दुर्योधन पहँ जाई। नानाभांति कहेउ समुझाई॥
करि उपाय कीजे बुधिसोई। जामहँ विप्र भूप हित होई॥
पृथक् पृथक् कहिसबनसँदेशा। बिदाकीन्ह करिहरिउपदेशा॥
दो० अतिप्रसन्नद्विजराजमन कै शिविका असवार।
नगर हास्तिनापुर तबै जात न लागी बार॥
पहुँचे विप्र भूप के द्वारे। बोले बचन बोलि प्रतिहारे॥
धर्मराज हरि मोहिं पठायो। कहन सँदेश भूप ते आयो॥
तपापि सुनि जाइ जनावा। बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा॥
गयो सभा महँ द्रुपद पुरोधा। त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा॥
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा। बैठारो निज बोलि समीपा॥
आशिर्बाद विप्र तब दीन्हा। नृपसनमानबिबिधबिधिकीन्हा॥
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा। भीषम बाह्लीक महराजा॥

कृपरु शल्य जयदर्थ महीपा। बैठे जहँ कौरवकुलदीपा॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सो भाई। बैठे सभा सुवेष बनाई॥
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना। द्रोणपुत्र गुण ज्ञान निधाना॥
दो० भूरिश्रवा कलिङ्ग अरु मकरध्वजो महान।
बैठि सोबालकुमारतहँ अरुउलूकबलवान॥
विप्र सुनाइ कहा सब आगे। कहन सँदेश भूपते लागे॥
मोहिं पठायो धर्म्मनरेशा। चितदे सुनहु महीप सँदेशा॥
निकट बोलाइ धर्मसुत हमको। प्रथमकहेउअभिवादनतुमको॥
कहेउ बहोरि कृपानृपकीजे। बीती अवधि राज्य अबदीजे॥
किङ्कर जानि करिय अबदाया। हम तुम्हरे छांड़ो मति माया॥
तेरह वर्ष सहे दुख नाना। सोहरिकिहेउविपतिअवसाना॥
दुर्योधन कीन्ही अनरीती। तुम्हरीकृपाविपति अबबीती॥
मिटै कलह सोकरिय उपाई। तेहिविधि कही युधिष्ठिरराई॥
चलतीबार पार्थ मोहिं जाना। कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना॥
दो० मोते कहेउ सँदेश जो सो सुनिये देकान।
मेटोकुलको कलहअब तुम्हरे सबबुधिमान॥
कह्यो भीम मोहिं चलतीबारा। कहों जो आयसुहोइ तुम्हारा॥
कही बात जो राखों गोई। ताते पाप अधिकई होई॥
कहे न होइ दूत शिर दोषा। ताते सुनिय भूप तजि रोषा॥
हमतुम्हार अपराध न कीन्हा। करिछलतुमदारुणदुखदीन्हा॥
बीते कछुदिन तुम फल पैहो। समुझतअबतहिंमनपछितैहो॥
लैके गदा युद्ध जब करिहों। सो बांधव दुर्योधन मरिहों॥
कटैं बन्धु जब विधबा भेशा। तब करिहो चित चेत नरेशा॥
करहुँ निपात सेन तुव काटी। देहुँ मिलाइ मास अरु माटी॥
रक्त नदी तब बहहिं महाना। करणआदि कटिहैं भटनाना॥
उठे कवन्ध गिद्ध पल खैहैं। तब नरेश आधो हम पैहैं॥
दो० अबते चेतहु भूप तुम सुनिके बचन हमार।

समुझावे दुर्योधनहि वचन सवै परिवार ॥
कुल सँदेश सुनहु दे काना । बुद्धिचक्षु तुम अतिअज्ञाना ॥
श हमार समुझि नृप दीजे । अपने जियतकलंक न लीजे ॥
न देउ नृप अंश हमारा । होइहि युद्ध न लागी वारा ॥
लतीवार भूप सहदेवा । करि प्रणाम विनयी बहुसेवा ॥
ड़ो पिता हमारो मोहा । करिबहु दुर्योधनपर छोहा ॥
वयह समुझि परीमनमाहीं । उनके दुर्योधन हम नाहीं ॥
रे बालपन पांडु न देखे । तुम पितु हते हमारे लेखे ॥
म्हरे ईक्षत हम दुखपावा । करिछल शकुनी देश छुड़ावा ॥
दो० परी विपति वनवन फिरे सहे अशेष कलेश ।
समुझावहु दुर्योधनहि मेटहु सकल नरेश ॥
हिं बोलि वसुदेवकुमारा । तुमते कहेउ नरेश जोहारा ॥
कछु दीनबंधु भगवाना । कहेउ सँदेश सुनिय दे काना ॥
मते काह कहिय बहुतेरा । दीजे अंश युधिष्ठिर केरा ॥
थमहिं बहुप्रकार समुझावा । दुर्योधन के मनहिं न आवा ॥
ानत सो न बहुतअभिमाना । कालविवश सबज्ञानभुलाना ॥
ज्यो विवेक पाप प्रियलागा । उपज्यो हंसवंश जिमिकागा ॥
ीन्हे अयशसकल यशखोई । वांस वंश महँ भयो घमोई ॥
ौरव कुल यश पूर्ण मयंका । भा दुर्योधन तिनहिं कलंका ॥
दो० समुझावततुम अबहिं नहिं सबजानत सज्ञान ।
बहुरिकह्यो संदेश सब सुनहु भूप दे कान ॥
लत वार कह द्रुपद संदेशा । सुनत कृपाकरि कहत नरेशा ॥
अपने जियतकलंक न लावहु । कलह गोत्रको भूप बचावहु ॥
ृष्टद्युम्न ममसुत अरिखण्डी । अवलगुराखोवजि शिखण्डी ॥
ीजे संधि मिटे उतपाता । वढ़े भूप की कीरति दाता ॥
सिख देत जानि समवंधी । चक्षुहीन कछु बुद्धि न अंधी ॥
ागि उपाय करहु नृप सोई । संधिहोइजेहि कलह न होई ॥

दुर्योधन अरु पांडुकुमारा। जानहु हेतु समान हमारा
हमचाहत हैं तुम्हरे हित की। करहु बिचार होइ जो नीकी

दो० चलतिबिलोकि बोलाइमोहिं कह्योबिराटसँदेश।
सावधानहोइ लाइमन सो अब सुनहु नरेश॥

दुर्योधन कीन्हो अपकारा। धर्मराज कहँ देश निकारा
तुम्हरे योग न बात अलीका। देखहुसमुझि भरतकुलटीका
करहु होइ जो नीक बिचारा। यह नृप कहेउ बिराट भुवारा
बिप्र बचन सुनि भा उरदाहू। बिहँसि बचन बोला नरनाहू
बहुत विप्र कत बाद बढ़ावहु। पांडुसुतनकीकुशल सुनावहु
प्राण समान परमप्रिय जीके। हैं सब भ्रात जान ममनीके
दुर्योधन उनते छल कीन्हा। द्यूत खेलाइ राज्यहरिलीन्ह
करिकुबुद्धि यहिदीन निकारी। वनबसिसहेउबिपतिअतिभारी
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी। देखे रूप न इन्दु तमारी
वन बसिफिरी लाजसबत्यागी। कीनकुमतिममपुत्र अभागी

दो० अबहूं तजन कुचालनहिं कालबिवशकुरुनाथ।
अक्षिहीनअरुज्येष्ठतन मैं तनभयों अनाथ॥

सुनत विप्रनहिं मोरासिखावन। भयोपुलस्त्यबंश जिमिरावन
जैसे उग्रसेन सुत कंसू। प्रकट्यो कालनेमिकर अंसू
पितहि पकरि कारागृह डारे। तैसे यहु कछु बश न हमारे
जब ते धर्मराज वन गयऊ। तबते हमहिंदुसहदुखभयऊ
उनके बिरह दिवस अरु राती। तलफतरहतजरतनितछाती
दुर्योधनहि बहुत समुझावत। पै याके कछु मनहिं न आवत
अबहौं बहुतभांति समुझैहौं। अपने चलत मिलापकरैहौं
असकहि बुद्धिचक्षु समुझाये। द्विजप्रबोधि अंतःपुर आये
संजय संग पाणि पकराई। नृप भवन कहँ गयउ लवाई

दो० बैठारे पुनि सेज पर गंधारी दै पान।

सबलसिंहचौहानकहि करत विविधसनमान ॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

भीषम और हरि द्विज रह्यऊ। कह्योप्रणाम धर्मसुतकह्यऊ ॥
अब तुमते कछु कह्यउसँदेशा। सुनहुपितामहतजहुश्रँदेशा ॥
कुरुनन्दन कीनो अपकारा। सुनिशकुनीसिखदेशनिकारा ॥
रहे बिपिनबसि जाय उदासी। तुम्हरीकृपा विपति सबनासी ॥
मुयेपांडु हम सबते बालक। तबतुमहींकीन्हों प्रतिपालक ॥
रहत सदा तुव चख अनुकूले। भलेहिनाथ हमरी सुधिभूले ॥
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी। अनुचरजानिनफेरियआंखी ॥
सुनत बचन छाये जल कोये। करिसुधिविकलपितामहरोये ॥

दो० पुलकि गात गद्गदगिरा भरिआये जलनैन।
हैं नीके सब पांडुसुत तब बोलेउ द्विज बैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा। कुशलअबहिंलगपांडुकुमारा ॥
सुनि भीषम यह बचन उचारा। उनहीं कुल राखै करतारा ॥
धर्मराज निज राज्यहि पैहैं। निश्चय सबकौरव मिटिजैहैं ॥
दुर्योधनहि गर्व अति भारी। धर्म नरेश धर्म व्रतधारी ॥
सदा विश्वम्भर गर्वप्रहारी। धर्म क्षेमकर श्री बनवारी ॥
पांडव क्षेम मान विश्वासू। द्विज जानहु कौरवकुलनासू ॥
यहिविधि बचन विप्रते खोले। गंगासुत कुरुपति से बोले ॥
प्रभि बचन मम कलहबहावहु। करहुसंधिसबसिलिसुखपावहु ॥
सुने बचन लागो जिमि शायक। ह्वै सक्रोध बोले कुरुनायक ॥
तुमहिं न उचित पितामहऐसी। कहीसभा सत बात अनैसी ॥

दो० तुमहिं त्यागि मनबचन कहि हमनाहिं जानैं और।
उचित न कटुवाणी कहत कौरवकुल शिरमौर ॥

असकहि दुर्योधन दुख माना। उठि अपनेगृह कीन पयाना ॥
अपने भवन पितामह आयो। विप्र द्रोण ते बचन सुनायो ॥

कहे प्रणाम तुमहिं गुरुभूपा। कीन विनय कलुमति अनुरूपा
चतुर वेद धनु वेद निधाना। आचारजनहिं तुमहिंसमाना
हौ समर्थ प्रभु सबहिप्रकारा। शापदेन अरु बाण प्रहारा
देव अदेव जगत भयमानत। तवतपतेज सकलउरआनत
शशिसमकोटिनदिशनप्रकाशा। कुरुपाण्डव तुम्हरेसबदाशा
सब प्रकार जानत बुधिबोधन। तुमनहिंसमुझावत दुर्योधन
॥ दो० तपबल बुधिबल अस्त्रबल विद्याबल बलवाह।
॥ कर्मधर्म अरु ब्रह्मबल विदित जगत सबकाह॥
तुव बलको भरोस उर मोरे। की हरि और न जानत मोरे
यहसँदेश अरु पुनि पदबंदन। तुमते कहेउ पांडु के नंदन
सुनत बचन भे द्रोण सशोके। कमलनयनजल रहत न रोके
पुलकितगात कृपा अधिकाई। विविधभांति पूछी कुशलाई
शिष्य वर्ग हैं सकल हमारे। द्विजद्रोणिहुँते अधिकपियारे॥
धर्म शील निधि पांचो भाई। मोरे प्राणन ते अधिकाई॥
ताते उनकी कुशल बतावहु। मोरे जिय की ताप बुतावहु॥
कह द्विज हैं पांडव सब नीके। नाथ तुम्हार दास जगतीके॥
॥ दो० दुर्योधन काढ़ेउ विपिन देखरायो अति त्रास।
॥ रहत पांडुसुत कुशल हैं तव चरणन की आस॥
॥ मनसा वाचा कर्मणा नाथ तुम्हारो दास।
॥ मानतज्यों हरिको तुमहिं धर्म सहित विश्वास॥
कहियहवचन मौन द्विजभयऊ। उठिगुरुद्रोण भवनतेगयऊ॥
विप्र संग ले अश्वत्थामा। करवायो गृह निज विश्रामा॥
बहु विधि खान पान करवाई। शयन हेत शय्या विछवाई॥
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी। पूंछी कुशल पाण्डवन केरी॥
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके। प्राण अधार बंधु ममहीके॥
अभिमन्युसहितसकलपरिवारा। अरु आयो द्रौपदी कुमारा॥
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु। भिन्नभिन्नकहि वरणिसुनावहु॥

न हम को कछु कहेउ सँदेशा। सोद्विजकहनृपसहितकलेशा॥
दो॰ बड़ी विपति तेरह बरष सही भूप कुंतेव।
सो बीती हरि की कृपा हैं नीके सहदेव॥
यह कहि भूप नयन जल छाये। गदगद कंठबचन नहिंआये॥
देखी बहुत प्रीति अधिकाई। कुशल प्रश्न कहि विप्रसुनाई॥
पांडव सकल सहित सुतदारा। कुशलआजुलगसबपरिवारा॥
करहु यत्न कछु कहत पुकारे। यथाकुशल अबहाथतुम्हारे॥
अबते तुम भूपहि समुझावहु। कलह मेटिकै संधि करावहु॥
हेउ प्रणाम तुमहिं कुंतेवा। सुनत सँदेश कहो महिदेवा॥
म जानत जिमि अर्जुनभीमा। तैसे तुमहिं आजुलग जीमा॥
न भ्रातन बस विपति बँटाई। गुरु बांधव तुमसुधिबिसराई॥
नते सो कौरव जो कीन्हा। तुमहिंनउचितकृपातजिदीन्हा॥
हेउ द्रोणसुत द्विजसुनिलीजै। अपने मन विचार तुम कीजै॥
दो॰ खान पान सनमान दे सब प्रकार कुरुनाथ।
दास भाव मोते रहत करिलीन्हो निजहाथ॥
त महँ उनसन प्रीतिघनेरी। परवश भयो लाग नहिं मेरी॥
भल चहत पांडवन केरा। कौरव वशमम फिरत न फेरा॥
तकहि शयनकरन द्वउलागे। अबनृपसुनहु चरितजसआगे॥
भूप मन शोच अपारा। कह संजय ते बारहिं बारा॥
परत मोहिं बात न नीका। दुर्योधन की चली अलीका॥
सुनतश्रवणनहिं कछुउतपाती। परी न नींद शोकवश राती॥
भीम स्वभाव विदित सबकाहू। असकहि विकलभयोनरनाहू॥
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी। समुझावहुनिजसुतअपकारी॥
सुनि संजय पुनि तुरत पठाये। दुर्योधनहिं बोलि लै आये॥
रावण कुम्भकरण जिन मारा। सुरविजयी जानत संसारा॥
हयराज प्रचारि प्रचारी। काटेउ सहसबाहु बलभारी॥
दो॰ केशी कंस अघा बका मुष्टिक औ चाणूर।

धेनुक हति वृष पूतना। तृणावर्त खल क्रूर॥
माख्यो बालि बत्ससुर नीचा। सुभट ताडुका अरु मारीचा।
खरदूषण त्रिशिरादि कबंधा। विपिनविराध असुर कृतबंधा।
शंखचूड़ भस्मासुर मारा। राख्यो शम्भु विदित संसारा।
ते पाण्डव के भयो सहायक। जीतिको सकै तात रघुनायक॥
तिनते वैर किये भल नाहीं। संधिनीकि समुभो मनमाहीं॥
पुनि तुम्हरे हैं बंधु नजीकी। दीजै अंश बात यह नीकी॥
तुव पितु के लघु बन्धु भुवारा। भये पाण्डु जानत संसारा॥
धर्मराज कछु पाप न कीन्हा। छलकरिराज ताततुमलीन्हा॥
दो० उननहिं कीन्ह विरोधसुत नाकछु लियो तुम्हार।
छलकरि अक्ष खेलाइकै तें कीन्हों अपकार॥
आजहूं कहा हमारो कीजै। मिटै विरोध अंश दै दीजै॥
अतिहित गन्धारी की बानी। सुनी न श्रवणनेकुअभिमानी॥
धृतराष्ट्र बहुविधि समुभावा। कालबिबशकछुमनहिंनआवा॥
मातु पिताका वचन न माना। जसभावी तसउपज्यो ज्ञाना॥
भावीवश जानहु सब लोगा। भावीबश न होइ सब योगा॥
भावी सुमति कुमति उपराजै। हानि लाभ अरु बिजयपराजै॥
कह वैशम्पायन सुनु राजा। सुनि कुरुनाथ क्रोधउपराजा॥
हरि कहि परशुराम जगजाये। जीति पितामह बनहिं पठाये॥
दानव देव मनुज बल भारी। भीषम पद कोऊ नहिं टारी॥
जीति सकल रण बंधु विवाही। भ्रातरक्ष बिदितसबकाहीं॥
गुरू द्रोण दशहू दिशि जीते। सुर अरु असुरजासुभयभीते॥
जो हठि कर्ण करै संग्रामा। करिनहिंसकैविजयघनश्यामा॥
दो० कह्यो मातु के जोरिकर चुपकरिरहु अरगाइ।
तिलभरिदेउँ न जियतमहि सकैको टेकछुड़ाइ॥
असकहि अपनेभवन भुवाला। जात भयो राजा ततकाला॥
होतहि प्रात सभामहँ आयो। बुद्धिचक्षु द्विज बोलि पठायो॥

स्वर्ण पञ्चशत दीन्ह्यो दाना । कीन्हदान नृप करिसनमाना ॥
आजु कालिह महँ संजय ऐहैं । सत्य सँदेश यहां को लैहैं ॥
करि बहुयतन सुतन समुझाई । देहों तात मिलाप कराई ॥
कहि द्विजते यहिभांति सँदेशा । कीन्हबिदा यहिभांतिनरेशा ॥
कहत प्रात संजय को आवन । तिनके हाथ सँदेश पठावन ॥
दो॰ धृतराष्ट्र आशिष कह्यो ले पाण्डवको नाम ।
नृपसण्डली जोहारकरि हरिकोकह्यो प्रणाम ॥
यहि प्रकार कहि द्विजवरबाणी । भूपसहित सुनिशारँगपाणी ॥
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं । और विचारकही कछुनाहीं ॥
उत सगरी संजय पर राखी । हरिते कहत धर्मसुत भाखी ॥
तबहरि कहत छपी दिनचारी । आवें जो न करिय पुनिरारी ॥
बुद्धिमान पंचाल पुरोहित । इनते को चाहत तुम्हरोहित ॥
मेऊ गये न कछु करि आये । कारजरह्यो सँदेश न लाये ॥
इनते को जाई अब ज्ञानी । बिहँसिबिहँसिकहशारँगपानी ॥
सुनत बचन नृप द्रुपदलजाने । करी कृपा श्री हरि सनमाने ॥
दो॰ हरिपदपंकज नाइशिर निजनिज सिविर भुवाल ।
गये सकल प्रमुदित अधिक हियेराखि गोपाल ॥
इहां प्रात मतिदृग जब जागे । संजय बोलिकहन असलागे ॥
धर्मराज हरि पहँ तुम जाई । कह्योवचननिजमतिनिपुणाई ॥
कलहघटै ज्यहि सम्मति होई । बुद्धि बिचारि कह्यो तुमसोई ॥
मम दिशिते पूछेउ कुशलाता । प्रीति समेत मनोहर बाता ॥
बुद्धिमान कह तुमहिं सिखैये । करहुगहरु जनि तुम अबजैये ॥
सुनि संजय नायो पद शीशा । बिदाकीन्हनृपदीन्ह असीशा ॥
रथ आरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये । प्रमुदित धर्मराज पहँ आये ॥
देखि पाण्डुसुत सैन महाना । सुरपतिसरिस अचंभौ माना ॥
घण्टानाद मनुज रव नाना । होत कुलाहल सिंधु समाना ॥
पँवरिद्वार संजय तजि आये । शयन किये हरि अर्जुनपाये ॥

॥ दो० द्वारपाल भीतर भवन देखि सरोरुह नैन।
कनकपलँगअर्जुनसहित करतकृपानिधिशैन॥
दोऊ कर पुनि दोऊ पानी। चापत चरण द्रौपदी रानी॥
संजय को आगमन सुनावा। द्रुपदसुता हँसिबोलि पठावा॥
सुनि सँदेश अंतःपुर आये। प्रीतिसहितपुनिपद शिरनाये॥
हरुये चरण धरहु कह रानी। परें जागि जनि शार्ँगपानी॥
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे। अर्जुन सहितउठे रविनींदे॥
जीव बन्धु को रंग लजाये। दृग विलोकि संजय भयपाये॥
उग्र रूप देखत घनश्यामा। कंपिततन पुनिकरतप्रणामा॥
संजय दिशि देखा यदुबीरा। बोले घनइव गिरा गँभीरा॥
॥ दो० कह संजय दुर्योधनहि समुझावत तुम नाहिं।
सरोग्रहत सबमिलिशठहि समुझिपरीमनमाहिं॥
धर्मराज को देत न हींसा। अपने विभवकरतवलखीसा॥
मस्तक काटि सहित परिवारा। लेहों अंश बाँटि दुइ फारा॥
भूलो अधम करण बल पाई। वहिपापी सब कुमतिसिखाई॥
सके न जीति पार्थ के आगे। मरिहै नीच एक शर लागे॥
जो कदापि अर्जुन कदुराई। हनहुँ चक्रगहि शंभु दोहाई॥
सुनत वचन संजय भयमाना। करिप्रबोध अर्जुन सनमाना॥
हे यदुनाथ कृपा अब कीजै। अभयदान संजयकहँ दीजै॥
पारथ वचन मानि भगवाना। निज सेवककहँ संजय जाना॥
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी। बोले मधुर गिरा बनवारी॥
॥ दो० हरि अर्जुन संजय सहित चले युधिष्ठिर पास।
सबलसिंह हित सों करत मगमें वाग विलास॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते
त्रयोदशोऽध्यायः १३॥
कहमुनि जनमेजय सुनि लीजै। कथाअमियसमपानहि कीजै॥
धर्म सभा हरि पारथ आये। संजय सहित मोद मनछाये॥

मैराज आगे चलि लीन्हा। हरिहिसमेत दण्डवतकीन्हा
र्जुन धर्मराज पद बन्दे। बैठि सभाहरिसहित अनन्दे
हि अवसर संजय तहँ आये। करिविनती बहुपद शिरनाये
र्मराज निज निकट बोलाई। बूझत कुशल सनेह बढ़ाई
कुशलप्रश्न कहि कहत सँदेशा। ज्यहिप्रकार कहिदीन नरेशा
ानत अबहिं नाहिं दुर्योधन। समुझैहौं करिकै बुधिबोधन
ुमसुत चुपकि रहो दिनचारी। होइ मनभावती तुम्हारी
ोइ न कलह मिलाप कराई। देव तात तुव अंश देवाई
आशिषकहो कुशलपुनि बूझी। हैं नृपकीहति तुमहिंअबूझी
ेवत तुम कीन्हों बनवासा। उर न चैन नृप रहत उदासा
नितप्रति दुर्योधन की निन्दा। करत कहत यहुहै मतिमन्दा
ुमते कृपा रहत अधिकाई। चलनकहेउ निजनिकटबोलाई
आवहु तात देखिनिज आंखिन। मानत मैं न औरु हिंसाखिन

दो॰ भ्रात जान मम प्राण सम जानत सब संसार।
...सुनिशकुनी सिख नीच यहि काढ़े बिन अपकार॥

...दुर्योधन सति परिहरी बैठि अलीकनबीच।
...दृग विहीन मैं जरठ तत मानत बात न नीच॥

यदपि न मानत वश कुटिलाई। करवैहौं मिलाप बरिआई
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा। कहिहौसुतनकृपापुनि कीन्हा
निंत कलंक तेहि दोष तुम्हारा। करिकुबुद्धिबहिबिपिननिकारा
ो पर कृपा करत ब्रतधारी। सके तात को बात बिगारी
अबिधि सुततुम्हार कल्याना। करिहैं कृपासिन्धु भगवाना
न्धारी आशिष सुनि काना। कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना
तिव्रता पुनि मातु हमारी। गन्धारी जानत श्रुतिचारी
आशिष दीन्ह कृपाकरि भारी। सबप्रकार बिधि बात सुधारी

दो॰ गंधारी आशिष दियो बिबिध भांति सनमान।
...सुनु संजय कह धर्मसुत होइ हमार कल्यान॥

पूछो भीमसेन संजय से। कहेउसँदेश पिता कछु हमरे
पाप बुद्धि देखत को सीधे। सुतन नेह ममता महँ बीधे
विधिवत नृप जानत सब साधू। लीजे मोल न कछु अपराधू
तैसे मौन रहत दिन राती। हैपुनि अंध सकल कुलघाती
सिखै कुचालि वचन मृदुभाखी। पापमूल विधि दीन्ह न आँखी
है अति क्रूर सुभाव प्रपंची। भुलवत तुमहिं भूपअबवंची
आँधर आपु अक्ष बिन जाना। बहुपापी अब सकल जहाना
क्रूर वचन सुनि भूपति लरजे। रहउ चुपाइ भीम कहँ बरजे
हीन न कहिय बड़ेन कहँ भीमा। प्रातक बढ़त बिचारहु जीमा
पिता समान पिता को भाई। कहउ न कछु तुम रहउचुपाई
उन कहँ पुत्र लोभ अति जीते। मोह हमार तज्यो कबहीते
भूप बचन सुनि भीम चुपाने। बोले नकुल बीररस साने

दो॰ सुनुसञ्जय वह शठ अजहुँ देत न अंश हमार।
दुर्योधन होइ काल वश करत क्रूर अपकार॥

नहिंकछुकोउवाकहँसमुझावत। नाहक सबमिलिबैर बढ़ावत
फिरि पाछे सब तुम पछितैहो। बैरयुद्ध ते फेरि न लहिहौ
भीषम बिदित सत्य ब्रत धारी। त्यागेउराज्यलोभ अरुनारी
बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना। गतबिलोकिकहेसकलजहाना
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ। सबलायक जानतसबकोऊ
भूरिश्रवा बीरता माते। सकैं न युद्ध जीति सुर ताते
बाह्लीक की बढ़ि प्रभुताई। जीतिधरा जिन बाँह पुजाई
सभा मांझ शठ द्रुपद कुमारी। केशपकरिचह कीन्ह उघारी
दुर्योधन की बिभव बिलोकी। कुरुपाण्डवकोउसक्योनरोकी
कृप अरु द्रोण बड़े बलधामा। रहे चुपके तहँ अश्वत्थामा
समुझिपरी सम्मति सबही की। करणहुकही बात नहिं नीकी
एक एक जीतहिं संसारा। उनहिं निदरि पावतकोपारा
एको कोऊ भये न सङ्गी। समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी

स उनके तस सकल हमारे। पाप बुद्धि करि केहुन निवारे॥
पुनि सहदेव कहत सुन भ्राता। हैं हमरे रक्षक सुर त्राता॥
दो० नगन करन हित द्रौपदी कीन्हों सवन उपाय।
रही लाज पटना धव्यो कृतसहाय यदुराय॥
यदुनाथ हमारि सहायक। कहो कवन उत इनकेलायक॥
पुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी। कह संजय ते नयन तरेरी॥
लोचन के बल खल बौराना। धर्मराज कहँ तृणसमजाना॥
ाही भूल मीचु शठ केरी। संजय सत्य प्रतिज्ञा मेरी॥
ाडु सुतन को काज सुधरिहों। वंश नाश कौरव को करिहों॥
ो नहिं देइ युधिष्ठिर अंशू। रहे न धृतराष्ट्र को वंशू॥
ाते तुम संजय समुझावहु। धर्मराज को अंश देवावहु॥
ुनि संजय विनवै करजोरी। सुनहुनाथ यक विनती मोरी॥
दो० अरुण नयन भृकुटी कुटिल लखि हरिरूप कराल।
संजय शोच सँकोच वश विनवत श्री गोपाल॥
त कर्म ते वचन वखाना। मैं तुम्हार अनुचर भगवाना॥
संदेश नरेश पठायो। सत्यवचनवलितुमहिंसुनायो॥
रबजस कहब करों तस जाई। दोष हमार कवन यदुराई॥
रब न करब भूप के हाथा। असकहि प्रभुपदनायो माथा॥
रम चतुर संजय कहँ जाना। विहँसे कृपासिन्धु भगवाना॥
दिसराहि करी अतिदाया। प्रीतिसहितनिजनिकटबोलाया॥
ह सँदेश तात कहि दीजो। निज नरनाते भयमतिलीजो॥
ज्य युधिष्ठिर को तुम देहू। तजिअभिमानकलहकिनलेहू॥
ी ना सुनहु यह वचन हमारा। करहुँनिपात सकल परिवारा॥
दो० अंश युधिष्ठिर को तजहु मानहु वचन हमार।
अनहित होइ न तोरनृप बचै सकलपरिवार॥
समहि पुनि राजीवविलोचन। रहे चुपाइ दास दुखमोचन॥
भिषेन संजय के आगे। कहन सँदेश कौरवरिलागे॥

बैठि सभामहँ मारि चपेटा। फारों गाल बिदारों पेटा॥
दुर्योधन क्षण महँ संहारों। दुश्शासन के भुजा उखारों॥
कौरव जियत जान नहिं देहों। एको युद्ध भूमि जब ऐहें॥
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें। तबलगकुशलगदाकरलीन्हे॥
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा। भीमसेन जो बचन उचारा॥
दीन्हे अंश मिटे सब रारी। समुझो दिशिते कहेउहमारी॥
दो० समुझावहु निज तनय अब देइ अंश नरनाह।
तात तुमहिं हित होइगो अनहिततजुमनमाह॥
यह संदेश कह्यो तुम मोरा। यामें भूप होत हित तोरा॥
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे। जेहि भूप उभय दिशि सारे॥
ताते तात सो करिय उपाई। होइ संधि जेहि मिटे लड़ाई॥
धर्मराज कहि दीन्ह सँदेशा। भल जानेहु तसकरेहुनरेशा॥
देउ भूमि तब मिटे लड़ाई। बाढ़े भूप कीर्त्ति सुखदाई॥
असकहि संजय फेरि पठाई। रहो कृपण पद शीश नवाई॥
धर्मराज ते बिदा करायें। तबअरूढ़ होइ गजपुर आये॥
अंतःपुर जहँ बैठ नरेशा। गालवगण तहँ कीन्हप्रवेशा॥
करि प्रणाम पुनि आपज्ञनाये। सुनिमहीप निजनिकटबुलाये॥
कुशलप्रश्नअहिंसकलप्रतावहु। जो उनकह्यो सँदेशसुनावहु॥
दो० गात कम्प गहबर भये कहि न सकत कछु बैन।
जो कछु कह्यो सँदेश नृप पीतम पङ्कज नैन॥
धरिधीरज सञ्जय असभाषत। सुनहुभूप कछुगोइ न राखत॥
अब उनके नृप सेन अपारा। गजरथअरुपदादिअसवारा॥
चालिस सहस भूपजिन जोरा। अक्षौहिणी सप्त घनघोरा॥
नृपति बिराट द्रव्य समुदाई। दीन्हो द्रुपद राज्य यदुराई॥
बिभव बिलोकि धनेश लजाहीं। केहि पटतर दीजे कोउ नाहीं॥
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई। देखे बने न बरणि सिराई॥
दीन्हो एक द्विरद मगवन्ता। शङ्ख बरण सुन्दर चौदन्ता॥

तापर भूप करत असवारी। मन्दरसे उन्नत है भारी॥
न्धर्वन जे दीन्ह तुरङ्गा। चित्र विचित्र मनोहर अङ्गा॥
तुरंग नाकुल के घोरे। धावत चपलचलतशिरमोरे॥
नरुण बाजि सहदेव सोहाये। जीव बंधुको रंग लजाये॥
दो० भीमसेन के हय सुनहु चञ्चल चपल तुरंग।
वायुवेग मग अति चपल हरितसुआकेरंग॥
वेत वरण अर्जुन हय राजत। उच्चश्रवहु देखि मन लाजत॥
कुट समेत अमोलिक माला। करिअतिकृपादीन सुरपाला॥
दिति श्रवणके कुण्डलदोई। पहिराये जेहि मृत्यु न होई॥
क्षैतूण दीन्ह्यो जलनायक। घटइ न शरसाधेजेहि शायक॥
न पँचकर्म धनुष गण्डीवा। दीन्होअनल जगतकी सींवा॥
दत्त दीन्हे भगवाना। शङ्ख अनूपम सबजगजाना॥
सु महारव घोर प्रचण्डा। पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा॥
पर्वा की गदा विशाला। दीन्ह्यो भीम कहीनँदलाला॥
लहिकी वरणत तरवारी। दीन्ही अति प्रचण्डबनवारी॥
र नन्दिघोष रथ दीन्हा। अर्जुनकहँ निर्भयपुनिकीन्हा॥
० धर्मराज अब इन्द्रसम बिभव को सकेबखानि।
सुनहु भूप सन्देह नहिं जहँ श्रीपति सुखदानि॥
न कीन सखा हनुमाना। लङ्का विजयसकलजगजाना॥
धान होइ सुनहु नरेशा। अब पाण्डवको सुनो सँदेशा॥
करिदीन्ह्यो विपिन निकारी। दीजे अंश न कीजे रारी॥
। भूप भली जो जानो। अब न विलम्ब बेगिसोठानो॥
भांति कह्यो यदुराई। तजहु अंशनहिंरचहु लराई॥
हैं पकरि सुदर्शन पानी। कौरव कुलकी घालों हानी॥
अनीति करण बलसेती। तेहिकी बात नीच कहु केती॥
हहिं सबकौरवदल मरिहैं। राज्य युधिष्ठिर को बैठरिहैं॥
। अंश छांड़ि तुम देहू। तजिअभिमानअभयपदलेहू॥

दो० सत्य सत्य तुमते कहौं मैं उनकर सन्देश।
सुनिउपदेश जोचितचहे सो अब करहुनरेश॥
सञ्जय वचन सुनत उर दहेऊ। त्रिकल विशेषि भूप असकहे
मात पिता को करि अपमाना। कालविवशसिखसुनतनकान
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखी। समुझावहुँसवविधितुमसाख
बल विहीनते जरठ न आंखी। सुनततबचन पापअभिलाख
तृण समान मोकोशठ जानत। सुनतश्रवणएकौनहिं मानत
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई। सत्यनाथ कहि पद शिरनाई
सब जानत तुम ज्ञान अरूढा। पुनि कहिगयो गिरा यहगूढा
हमहूँ नाथ तुम्हार सिखाये। सब प्रकार कहि भेद बताये
भयो द्यूत तब तुमहिं न जाना। लक्ष भवन विनमत निर्माना
दो० तजिमनकी अवरेव अब समुझावहु कुरुनाथ।
रहत रैनि दिन मैं सदा नाथ तुम्हारे साथ॥
मेटहु कलह भूप सज्ञाना। जगभल कहै लहै कल्याना
होइ सुयश कीरति उजियारी। मिटै कलङ्क होइ सुखभारी
होइ प्रसन्न त्यागि नृप रञ्जय। असकहिभवनगयेपुनिसञ्जय
धृतराष्ट्र सबही के आगे। सुतकी करन धर्षणा लागे
कपट द्यूत रचि नीच निकारा। करण सीखते करिअपकारा
सौवल शकुनि कुमंत्र सिखावा। उनसह बन्धुविरोध करावा
सञ्जय बचन कहत हैं सांचो। सतनिय पुत्र एकसो पांचो
जो सब सम कत वैर करावत। संधि कराइ न कलह बढ़ावत
यह सम्भव तन बात अरूठी। तातनसमुझिपरत कछुझूठी
दीन्ह धराधन साज समाजा। तुम कीन्हे दुर्योधन राजा
भीषम विदुर तुम्हारइ अज्ञा। कृपअरुबाहुलीक तुव राज्ञा
द्रोणी द्रोण तुम्हारि सहायक। त्रिभुवनविजयकरन ईलायक
धरि कारागृह देहु बँधाई। दुर्योधनहि निडर पढ़िराई
निन्नानवे पुत्र बल भारी। तेइ नरेश तुव आज्ञाकारी

मेरे सुतहिं राज्य नृप दीजै। फिरि मन चहै बात सो कीजै॥
निनिठुर संजयमुख भासा। गयो जानि नृप भयो उदासा॥
दो॰ सवलसिंह चौहान कह वाक्य विलास बनाइ।
बोलेउ बिहँसि नरेश तब संजय को बहलाइ॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वेसवलसिंहचौहानभाषाकृते
चतुर्दशोऽध्यायः॥ १४॥
नमेजय सुनि मन अनुरागे। पूछै बहुरि ऋषै सों लागे॥
था अमृत रस मोहिं सुनाई। होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई॥
ब प्रभु कहो सहितविस्तारा। मिटै नाथ संदेह हमारा॥
इमुनि समुझिपरै अमत्यागे। चित्रविचित्रचरितजसआगे॥
तराष्ट्र मन अति संदेहा। कहत वचन संजय से एहा॥
अतिदाह नींद नहिंआवत। कलहदेखि मनशोचजनावत॥
एडुतनय मम सुत अपकारी। कुलमहँ होत मिटतनहिंरारी॥
कै देन मिले नहिं शीशा। यह नहिं देनकहतअवनीशा॥
प्रविचारि असमंजस मोही। दुर्योधनखल अतिकुलद्रोही॥
दो॰ संजय ते बोले बिलखि करि चितचेत भुवार।
भ्रात जिनावत तनै इत वाढ्यो कलह अपार॥
मार्म उभय प्रकार विचारा। ताते मन कछु थिर न हमारा॥
तुमसुतजाहु विलम्ब न लावहु। विदुर बोलाइ इहां ले आवहु॥
सुनि संजय उठि तुरतसिधाये। पलमहँ विदुरभवनकहँ आये॥
हृदयआसन पर ज्ञान अरूढ़ा। साधत योग वैठि गतिगूढ़ा॥
कुण्डलनी तजि मूल उठाये। निरखतपरम ज्योतिसुखपाये॥
सहस पत्रको कमल जो फूला। तापर पुनि हरिध्यान अमूला॥
इड़ा पिंगला दूनों श्वासा। साधत करत सुखमनावासा॥
नासा ऊपर करि अनुरूपा। निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा॥
रसना उलटि कंठ अवरोधी। सुधो कीन्ह कमल तन शोधी॥
मेरु दण्ड सम आसन लीन्हे। पुनि षटचक्र विदारण कीन्हे॥

दो० पापिनि साँपिनि दुःखगति करि रसना पुनिरोक।
पिअतसुधारस यतनयुत जेहितन रहतत्रिशोक॥
अंगन सहित योगगति साधी। करत ध्यान पुनिलाइसमाधी
तब संजय करि यतन जगावा। चलहुवेगि अबभूपबोलावा
अर्द्धनिशा सुनि आयसुपाये। विदुर वेगि पुनि मन्दिर आये
गांधारी अरु भूप अकंता। अभिवादन पुनिकीन्ह तुरंता
कहेउ नरेश विदुर इत आवहु। ममसमीप चिततपनिवुतावहु
संजय कह्यो सँदेशो जबते। मोकहँ नींद न आवत तबते
अब उपाय कहिये कछु भाई। बुधिविचारि ज्यहिबचेलराई
संजय सो सँदेश नृप पायउ। सो नरेशसबबरणि सुनायउ
दो० कहेउ विदुर तब भूपते तुवसुत वश अभिमान।
जोसिखवत मनमानिहित करतनसो कछुकान॥
देइअमिय कोउप्रीतिकरि त्यागिकरत विषपान।
दुर्योधन मति परिहरी विधिगति अतिवलवान॥
कुल नरेश को सब परिवारा। करहि नाश यह तोरकुमारा।
देखहु शठ हठ शील अभागी। प्रकटो यथा दारुते आगी।
हस्तीकुलहि न लागी वारा। एकहिसाथ करहि सब छारा।
शत कुमार गांधारी जाये। वेश्या पुनि युयुत्सु उपजाये॥
जब भये तनय एकशतएका। गर्दभ शब्द भयो अरु एका॥
श्वान शृगाल भयंकर बोला। कररत काग धरागइ डोला॥
भूप यज्ञ थल आनि शृगाली। करत फेकार क्रूर भयवाली॥
सुरज्ञानिन इमि वचन उचारा। कुलनाशक नृपतनयतुम्हारा॥
उपजेउ कहो हमारो कीजे। गाढ़ाखोदाय गाड़िअबदीजे॥
दो० पुत्रलोभते नहिं सुनेउ तब सब रहेउ चुपाइ।
होनी होइ सो होइ नृप को करिसके मिटाइ॥
कुलघालक नृप तनय तुम्हारा। जगमहँ प्रकटकीन्हकरतारा॥
बरजत बात करत चतुराई। अन्तर भूप अनीति सिखाई॥

कपट निपुण अरु परसन्तापी। हौ तुम नाथ जन्मके पापी॥
तुम्हरे मनकी जानन हारा। हे नरेश सब दास तुम्हारा॥
तुवभलचहत कहत असवानी। म्वहिंनरेश कछुलाभ न हानी॥
बेन पूछे मैं यहहू कहहूं। सहिदुखदुसह चुप्पपुनिरहहूं॥
दो० जो पूछा तो करो अब तजि मन की अवरेव।
अंश युधिष्ठिर को तजहु करि करुणा नरदेव॥
जानेउ राव मर्म सब जाना। विदुरभक्त विज्ञान निधाना॥
ो वहराइ कहत अस राजा। भ्राता सुनहुहिये जसभ्राजा॥
अब उपाय कछु बन्धुबतावत। शोचविवशकछुनींदन आवत॥
पाण्डुतनय ममतनय कुचाली। करतविरोध सुनहुगुणशाली॥
मिटहु कछु यतन बिचारी। सुनतविदुर मृदुगिराउचारी॥
पाण्डुसुतनकी कछु न अनीती। उनअपनेबल जो महिजीती॥
ाऊ देत न तनय तुम्हारा। मिटैकलहक्यहि भांतिभुवारा॥
ति पितामह अंश न देहू। जीति देहु करिये नृप नेहू॥
दो० लेहु सुयश मेटहु कलह करि करुणा तुम राइ।
ऐसे हीने पांडु सुत जो वै रहें चुपाइ॥
नहिं कालहु को भय मानत। तृणसमान तुव पुत्रन जानत॥
सहाय यदुनायक जाके। कस न होइँ निर्भय मनताके॥
ण भरोस मानि मनमाहीं। जीतत समर डरत कछुनाहीं॥
चलगमोहनिशा तुमशोचते। मनजानत उनकहँ हमप्रभुते॥
जेत प्रभू युधिष्ठिर भाई। त्यहि कारण नृप रचीलराई॥
यजत्र भीमसेन मत माखत। तबतबवरजिवरजिनृपराखत॥
ोधन कहँ नृप समुझाई। मिटै कलह सो करहु उपाई॥
महिपाल बात यह नीकी। तुम्हरे कहत परम हितहीकी॥
दो० मनसा वाचा कर्मणा करि चितचेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहिं अनहित वचेतुम्हार॥
जबलगि भीमसेन बलदाई। रचत युद्धनहिंतलहिं भलाई॥

रे नहिं सकै और कोऊकी । सम गति हम न भूप दोऊकी ॥
दो० दुर्योधन अति मानते श्रवण सुनत नहिंवात ।
परमचतुरगुणनिधिविदुर समुझिसमुझिपछितात ॥
होदेव तुम मति हरिलीन्ही । अतिकुबुद्धिकुरुनाथहिदीन्ही ॥
नि लाभ तुव वश में जाने । असकहिविदुरबहुतपछिताने ॥
तराष्ट्र मन शोच अपारा । कहत विदुरतें बारहिं बारा ॥
र्योधन अति कीन अनीती । सो मैं भलीभांति सबहीकी ॥
जय गिरा मानि विश्वासू । जानेउ बंधु भरत कुलनाशू ॥
न मदमत्त अधम अपकारी । कीन नगिनिशठद्रुपदकुमारी ॥
सुधिउनहिं बिसरिकिमिजैहै । दुर्योधन के आगे ऐहै ॥
बहुँनशठसमुझतसमुझावा । बिन कारण को बैर बढ़ावा ॥
बस्वाहिंसमुझिपरतमनमाहीं । बाढ्यो कलह बार कछुनाहीं ॥
दो० दुर्योधन के मन बढ़ेउ सुनहु विदुर अभिमान ।
सिखवत मैं बिधि कोटितें सोकछुकरत न कान ॥
तिगई यामिनि युगयामा । आवत नींद न मन विश्रामा ॥
रहु विचार यतन अब सोई । जाते बन्धु बोध मन होई ॥
मनिकल लखिमनदुखपावा । कीनबोध पुनिपद शिरनावा ॥
आवाहन करि विदुरबोलाने । सनकादिकविधिसुतचलिआये ॥
प प्रबोधि मन मोद बढ़ाये । पुनिमुनिसत्यलोक कहँआये ॥
जय पठवो बोलि सुयोधन । लागे भूप करन सब बोधन ॥
न्धारी अरु विदुर बुझावा । कालविवशकछुमनहिंनआवा ॥
बकहँ प्रीतिउतरु पुनिदीन्हा । गयोभवन सिखकाननकीन्हा ॥
दो० भानुमतीतब हँसिकह्यो कहिये नाथ हेवाल ।
गये वेगि पितु भवनते आये बहुरि भुवाल ॥
न्ध बधिर हठशील अनामी । क्रूरकुबुद्धि कृपणअरुकामी ॥
त प्रसत्त जरठ बश औरे । नीचप्रसङ्गी अरुमति भोरे ॥
से पितुको कहा न कीजे । पकरि ताहि कारागृह दीजे ॥

नीच प्रसंगी पिता हमारा। दासीसुतहिदीन्ह अधिका
कहत भूप जो विदुर सिखावत। ताते कछु मामननहिं आव
द्वै करजोरि कहत तब रानी। करि करुणाकरिये समवा
देखहु समुझि भरत कुलटीका। पितुनिदेश परिहरब न नी
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई। कहिकटुवचन न दीन्ह दुरा
भइ मनत्रास ग्रसित तबरानी। गई पराइ भवन भयमा
प्रातहिं यहां धर्मसुत जागे। हरिहि समोद जगावनला

दो० अस्ताचल हरनी रुचिर शृंग शृंग उतमंग।
खजुआवत सुखतेसुखी चूंचूं करत विहंग॥
करत प्रकटपुनिप्रातरवि बालकसहित उछाहु।
कूककपोतनकी मनहुँ प्राचीदिशि को राहु॥

अरुणचूड़ वर बोलन लागे। फूले कमल भ्रमर अनुरागे
चहत पक्षिगण तजन बसेरा। करत मधुरस्वर नाद घनेरा
चरन मानसर हंस सिधाये। उड़त हलावत परन सोहाये
सकुचे कुमुद उलूक निवासा। अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा
यथा अनीति सुराज नशाने। वंचक चोर सभीत छपाने
शशिद्युतिरहयो चरणगिरिआधी। जिमिनिर्बलनृपविगतउपाधी
रविभयमानि शरणतकिआवा। मनहुँप्रतीची शशिहिछिपावा।
तरुवरवास शिखण्डिन त्यागे। करि स्फुरव नित्तत सुखपागे।

दो० भयो प्रात अब करिकृपा जागे राजिव नैन।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट धर्मराजके बैन॥

तेहि अवसर बन्दीगण वागे। पुनि यदुवंश प्रशंसन लागे।
धर्मराय हरिपद शिरनाये। पुलकितगात नयनजलछाये॥
परमानन्द प्रेम उर आवा। प्रभुछविदेखिनिमेष न लावा॥
श्यामसजलघन सरिसशरीरा। दृग राजीव हरण जन पीरा॥
आनन इन्दु सहित मृदुहासा। लोलकपोल मनोहर नासा॥
खुलतदशनअतिद्युतिदरशाई। तड़ितप्रभाजेहिदेखि लजाई॥

सतभालभृकुटिश्रुतिकुंडल।जनुयुगरविअहिगहिशशिमंडल॥
रत बिचार सुयश यहलीजे। अमिअँचवाइ अमरपददीजे॥
बि रथ बंधन कहि करगाये। प्रति उपकारकरण जनुलाये॥
षभ कंध अरु कंबुक ग्रीवा। अति बिचित्र शोभाकी सीवा॥
िट मुकुट शिर सोह बिशाला। नवतुलसीदलगजमणिमाला॥

दो॰ भुजप्रलम्ब पतिकरकमल मुखउदारकेयूर।
उरविशाल रेखा उदर रिपुमर्दन जनशूर॥

टि केहरी उदर त्रयरेखा। कहिनसकैंछविकविशतशेखा॥
ाभि गँभीर देखि मतिधुमरी। मानहुँ तरणितनयजलकुमरी॥
ित बसनशोभित शुचिफेटा। सजलजलदजनुजटितलपेटा॥
घ पींड़नी नयन निहारे। उपमाकहिन सकत कविहारे॥
रिपदते प्रकटी पुनि गंगा। धरी शीश पर बैरि अनंगा॥
पद की उपमा का दीजे। जोकछुकहियसोअल्पगनीजे॥
ापशिला गोतम की नारी। जे पद परशि पलक में तारी॥
पदपद्म पखारि निषादू। भयोत्रिदितजगत्रिदितविषादू॥
पद पद्म चारि श्रुति गाये। चापत सिंधुसुता उर लाये॥
पद निरखि युधिष्ठिरराई। अति आनन्दन हृदयसमाई॥
स्तुतिकरतभरतजललोचन। जयरुक्मिणीरमणअघमोचन॥

दो॰ जय जय श्रीवृन्दा बिपिन वासी नाशी पाय।
अविनाशी गति देततुम दासनदेव दुराय॥

रण शरण कहिनाम पुकारत। ताके नहिंगुण दोष बिचारत॥
रण शरणकहिद्विरद सुनायो। त्यागयोगरुड़गगनपथधायो॥
हुँ पट पीत गिरी कहुँ माला। हरीत्रिपति पुनिदीनदयाला॥
ाहनिधनकरिशुभगति दीन्ही। तहँगजराज विनयबहुकीन्ही॥
ापकथा कहि दोष मिटावा। पुनिगजेन्द्र निजलोकपठावा॥
वरी नाम अपावन नारी। परी चरण कहिशरणपुकारी॥
पा दृष्टि देखी वनवारी। चढ़ि बिमान वैकुंठ सिधारी॥

कृपा निषादराज पर कीन्हा। भालुकीशनिजसमकरिलीन्हा॥
रावण बन्धु विभीषण नामा। कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा॥
करि करुणाहरिलीन्हविषादा। भक्त शिरोमणि भे प्रहलादा॥
अगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा। अविचलपदवीध्रुवकहँदीन्हा॥

दो॰ केशी हर कल्याण कर कृपासिंधु भगवान।
क्रूर कपूतन को सुगति कवनदेय बिनकान॥
बालमीकि उलटा जपे कह्यो आधही नाम।
सबलसिंहचौहानकहि कीन्हो आपु समान॥

इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

गणिकागीध अजामिलतारण। गोपीपति गोत्रास निवारण
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन। जनकसुतादुखदुसहविखण्डन
हरिजनहृदय पयोधि मराला। रहत विहारकरत सबकाला
गिरिवरधारी नाथ छबीला। नारायण श्रीकंत रँगीला
माखन चोर चतुर्भुज स्वामी। पद्म गदाधर अंतरयामी
ताते विनय मानि प्रभु मोरी। दुर्योधन गृह जाहु बहोरी
मानहिं सोन विवशअभिमाना। पुनरागमन करियभगवाना
करिबहुयतन ताहिसमुझावहु। अपनी दिशितेचूक न लावहु

दो॰ समुझावहु प्रभु विविधविधि जाइय अवतीवार।
होइहि होनेहार पुनि जो विधि लिखा लिलार॥

सुनियहबचन कृष्णहँसिदीन्हा। नीक विचार भूपतुमकीन्हा।
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ। बोलिय सकल भूप अपतेऊ॥
सब मिलि करहिं मंत्र उपदेशा। कहेउ कृष्णतसकरियनरेशा॥
सुनि नरेश सोइ बेगि बोलाये। भीमादिक भ्राता चलिआये॥
द्रुपद विराट और सब राजा। धर्मराज पहँ जुरेउ समाजा॥
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी। चलि आई जहँ शारँगपानी॥
कहहरिसुनहु सकल मनलाई। पठयत हमहिं युधिष्ठिराई॥

न्थि हेतु दुर्योधन भवनाहिं । कहिये मंत्ररहो जनिमौनाहिं ॥
नेजनिजमति निजराखोगोई । सबमिलिकहो करियअबसोई॥
दो० धर्मराज सुनि हरिबचन कही सबनते बात ।
कहिये मंत्र बिचारि कै कृष्णदेव उत जात ॥
डिबिचारिसकल मिलिभाखो । अबनिजमंत्र गोइनहिं राखो ॥
रियमिलाप कि कीजिय रारी । तीन बात अब कहों बिचारी ॥
हेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्मा । त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा ॥
आपाणि धरि द्रुपदकुमारी । सभामध्य चह कीन्ह उघारी ॥
मिरण तुमहिं दीनह्वै कीन्हो । दीनदयाल राखि तबलीन्हो ॥
क्ष सदन चलिहमहिं पठायो । अर्द्धरातिमहँ अनललगायो ॥
न्हेउ राखि तहां ते बाचे । हरिकीकृपा अलपनहिं आंचे ॥
षमोदक वहि नीचखवायो । रह्यउ न चेत जँजीरमँगायो॥
दो० कसेउलोह गुणसकलतन डारि दियो ततकाल ।
परेउँगंग की धार महँ ततक्षण गयो पताल ॥
यों भूमितल कछु सुधिनाहीं । छहरिगयो बिषसबतनमाहीं ॥
पलोक पहुँचे यदुराई । सुनिसुधिनागसुता तहँ आई ॥
सिनिआइकरि सोहिंतमासा । नाना भांति करें परिहासा ॥
षतन भरे खुलत नहिंनयना । कछुकछुसुनोंश्रवणपुटबयना ॥
स्तुति करें मोहिं लखिमोही । नागकुमारि कामवश भोही ॥
प सहित मम सुन्दरताई । वर्णत प्रीतिकरत अधिकाई ॥
रे कष्ट तन हरि हर ध्यावे । बड़े भाग ऐसे पति पावे ॥
सुता जाको ललचाहीं । नर नारी कथहि लेखे माहीं ॥
कोटक तनया सुनि बाता । आई मम समीप हरषाता ॥
मियसींचिमुखमोहिंजियायउ । जानिबिषयतनतापबुझायउ ॥
दो० सहरावत पदपाणिगहि करत प्रीति अधिकारि ।
अमितदेखि मोतन करत बारहिंबार बयारि ॥
मृगनयनी हिमकर बदनि पहिरे भूषण चीर ।

तननवीन कटिखीन अतिव्याप्यो कामशरीर॥
स्वहिं विलोकितनदशाविसारी। चित्रपुत्रिका की अनुहारी
मम गति कीन्ह बढ़ो अनुरागा। त्यागे लाज मनोभव जागा
देख्यो नागसुता गति लोगन। जाइजनायो तिनपुनि भोगन
नागसुता मानुष तनराची। भये सक्रोध बातसुनिसांची
गुणमंजरी मनुज पति लीन्हो। केहुं कर्कोटक से कहिदीन्हो
समुझि हिये यहबात अयोगी। चलासकोपिअरु णहगभोग
यहां कामबश छांड़ि विचारा। वरहु मोहिं कह बारहिंबा
मैं समुझाय कही वहि पाहीं। गुणमंजरी उचित असनाह
सुनि यह तोहिं निन्दसबलोगा। नागसुता नहिं मानुष योग

दो० योगमनुजवर तुमहिं नहिं देवयोनिमहँ व्याल।
काम विवश वरवसहिये पहिरायो जयमाल॥

क्रोधित व्यथा सर्प समुदाई। असनमोहिंतेहि थलमहँआई
कोउ फणएक उभय त्रयचारी। चपल जिह्वचपअतिरतनारी
पंच सप्त पट फण को सर्पा। कोउफणअष्टकरत अतिदर्पा
दश फण नाग पञ्चदश सोऊ। कोउ फणवीस तीसहै कोऊ
चालिसकोउ पचास फणयोगी। सत्तरिसाठि असीफणभोगी
शत फण एक पञ्चशत एका। नानाविधि फण सर्प अनेका
उगिलतविष अरु दृगरतनारे। आशी विष भारे तन कारे
धूमर लाल श्वेत रँग नागा। हरितपीतअरुत्रिविधविभागा
असिनिआइमोहिंरिसकरिभारी। देखिविकल भै नागकुमारी
त्यहि अवसर कर्कोटक आये। चञ्चल जिह्व बदन फैलाये

दो० श्यामवर्ण जनु जलद सम रसना चलत निहारि।
खुले दशन अवलोकिपुनि उपमा कहत विचारि॥

चपलजिह्वमुखविच अभिरामिनि। चमकतथिरतरहतजिमिदामिनि॥
श्यामवर्ण सित दशन विभांती। सघनघटामहँ जनु बगपांती॥
डरी मनहिं मन नागकुमारी। विनयकहेविधिविष्णु पुरारी॥

मा रमा हे शारद माता । विनयकरतरारूयोअहिवाता ॥
न सुमिरेउभइ हरण कृपाला । आयोसर्प गरुड़ कुलकाला ॥
हि देखि सब उरग पराने । जहँतहँगयेजात नहिं जाने ॥
कौतुक खगनाथ निहारी । बलभाथकित करतमनहारी ॥
ाण दान दे प्रथम बचाये । अबसंकोधक्यहिकारणआये ॥
दो० पक्षिराज बोले विहँसि सुनहु सर्प शिरताज ।
पाण्डव के सन्देह नहिं रक्षक श्री ब्रजराज ॥
ो यदुनाथ चराचर स्वामी । जगतविदितमैंत्यहिअनुगामी ॥
ो कुलकुशल चहो अहिराई । मिलि पाण्डव कहँ बैरबिहाई ॥
मत हमार मानि तुम लेहू । दुहिता भीमसेन कहँ देहू ॥
रुड़ बचनसुनि तजि सन्देहू । सुता बिवाहिदीन्ह करिनेहू ॥
णमंजरी सहित भगवन्ता । रह्यो शेष पुनि वर्ष प्रयन्ता ॥
पै दया करि तहँ पहुँचाये । गजपुर धर्म्मराजपहँ आये ॥
माचार सुनि परम अनन्दा । रक्षा तुमकीन्ही ब्रजचन्दा ॥
त्र हमार सुनिय यदुनायक । कुरुपतिनिधनकरनकेलायक ॥
दो० बिनकारण काटे बिपिन कीन्हेसिशठ अपकार ।
ताते कीजिय अवशिरण यह मत नाथ हमार ॥
भीम बचन सुनि पुनि सहदेवा । कही नाथ सुनिये जगदेवा ॥
उन हमार कीन्हो अपमाना । नाथ तुम्हार भेद सबजाना ॥
केशाकर्षण शठ अपकारी । सभा मध्यकरि द्रुपदकुमारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण के आगे । रंचक कानिन कीन्ह अभागे ॥
सो सुधि यदुनन्दन नहिंभूलत । सुमिरिसुमिरिअजहूंउरशूलत ॥
भूप बचन गजपुर कहँ जैये । हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये ॥
सोवत जागत शरण तुम्हारी । बनैसो करिय उचित बनवारी ॥
श्रुतिकीरति सोधाम सतायो । सन्तानिकमिलिबचनसुनायो ॥
युत प्रतिबिम्ब कृष्णके आगे । क्रोधितबचन कहनसबलागे ॥
द्रुपदसुता यहिखल अभिमानी । नाथतुम्हारि बातसबजानी ॥

॥ताते और विचार न करहू। अब प्रभु दुर्योधन
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो। सा[illegible] विराटराजप[illegible]
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना। [illegible] [illegible]कुमारा।
दो॰ धृष्टकेतु पटनेश मिलि सबन करो मत ठीक।
शूरसेन यहि विधिकह्यो और विचार न नीक॥
मैं हरि कहत आपने जीकी। है बिन युद्ध बातनहिं
धर्म्मराज वहि शठ अपमाने। तुम समेत निर्बल करिजा
और बातसबतजि घनश्यामा। ताते करिय अवशि संग्राम
कहत नाइ शिर बचन घटूका। सुनिये नाथ क्षमाकरिचूक
पाण्डव सहित अछत गोपाला। द्रुपदसुतापुनि फिरतबिह
दो॰ छलकरि दुर्योधन अधम काढ़ेसि हमहिं बिदेश।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी गहे दुशासन केश॥
तेरह वर्ष गईं हरि बीती। सुधिनलईकेहुँ निपटअनी
पाण्डव सबल जान संसारा। तुम ईश्वर बसुदेव कुमा
तिनतेकछु निसरेउ नहिंकाजा। भैबड़िलाज सुनहुब्रजराज
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ। द्रुपदसुताको शोक निवारै
कोटिहु यतन रहो जानि बरजे। गरजत देखि चराचर लरजे
धर्म्मराज तब क्रोध निवारो। कहिप्रिय बचन निकट बैठारो
सबलायक तुमको हम जानत। है बड़पाप गोतके मारत।
हे हरि सम्मत कहत पुकारे। होइ नाथ भलमंत्र हमारे॥
दो॰ सुने बचन नरपाल के द्रुपदसुता अकुलाइ।
बोलीहरिसों जोरिकर चरण कमल शिरनाइ॥
क्रूर शूर नाहिं भूप हमारा। जानत तुम यदुवंश कुमारा॥
गहिकै केश सभा शठ आनी। मानत सोन कछुक गिलानी॥
इन ते होत भली सो नारी। रोदन करत पुकारि पुकारी॥
नो कछुबोध हिये हरि होई। सभामध्य वहि खलनिदरोई॥
पुरुषाकार पांडुसुत नारी। इनके बल रोपत महिरारी॥

अभिमन्युआदि सप्तसुत मोरे। करिहैं विजय दास प्रभुतोरे॥
ममगतिदेखि लाज पञ्चालहिं। डरें न कछुनिडरें रणकालहिं॥
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे। भये कुण्ड ते संग हमारे॥
रण महँ लरें टरें नहिं टारे। करिहैं विजय प्रसाद तुम्हारे॥
युधामन्यु ममबन्धु तमोजा। नाम शिखण्डी नयनसरोजा॥
दो० ममगति देखि सलज्जसब करि हैं कठिन मशान।
असकहिके पुनि द्रौपदी सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
युधिष्ठिरश्रीकृष्णसम्वादोनामषोड़शोऽध्यायः॥ १६॥
कहेउ धनंजय सुनिये श्रीहरि। काढ़ेसि धर्मराज हीने करि॥
सब प्रकार जानत जगवन्दन। बलीबछलीअधमकुरुनन्दन॥
कपट अक्ष शकुनी निर्म्मायो। करि छल कीन्हें जूप हरायो॥
औरो छलकीन्ह्यसि भगवाना। सो चरित्र सुनिये दै काना॥
कुरु पांडव बालकसब भीरा। खेलत रहे गङ्गके तीरा॥
विषमोदक भीमहिं तहँ दीन्हो। तबते हमप्रतीतितजिदीन्हो॥
धर्मराज बन गयउ शिकारा। श्वानसंग युततुरँग सवारा॥
परमअकिंचन बिप्र बोलायो। विषमोदक तेहिहाथपठायो॥
वर्ण सप्तदश दीन अकोरा। पठयहुकरहु परमहिततोरा॥
मोदक धर्म्मराज कहँ दीजे। पठये हैं कुन्ती कहि दीजे॥
दो० अशन करायो यतनकरि कह्यो न नाम हमार।
करिविनती पठयेद्विजहिं जहँनृप फिरत शिकार॥
कह्योभेद न द्विज तहँ आयो। धर्म्मराजते आनि सुनायो॥
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी। मोदकतुमहिंदियो निजपानी॥
क्षुधितजानिके मोहि पठायो। करहुअशनअसकहिसमुझायो॥
बिपिन गहन बांधेउ नृप घोरा। बैठे विटप छाहँ घन घोरा॥
क्षुधित तृषाते विकल शरीरा। जानि निवासजलाश्रयतीरा॥
भोजन तुरत करन नृपलागा। बिपमाद्वहरि देखिद्विजभागा॥

त्राहित्राहि करि हृदय डराना । [illegible] जाना ॥
तृषावन्त नृप बिषकी पीरा । परे मूर्च्छि नहिंचेत शरीरा ॥
बिकलत्रिलोकि कृपाप्रभुकीन्हो । उदकपिआइत्रासहरिलीन्हो ॥

दो॰ निकसित तक्षण भूमिते जल भाजन युत हाथ ।
पान करायो हरि तृषा करी कृपा यदुनाथ ॥

जल पिआइ फेरे तन पानी । मिटी तृषा तन ताप बुझानी ॥
छलकरणी मैं तुमहिं सुनाई । बनकी सुनहु बात यदुराई ॥
बनकादेसि शठकरि अपकारा । निधनहेत नितकरे बिचारा ॥
दूत आय यह बात जनाई । बनमहँ निकट युधिष्ठिरराई ॥
परम दीन द्विज वेष बनाई । बसहिंबिपिन पर्णशालाछाई ॥
भोजनकबहुँ मिले कहुँ नाहीं । बसन मलिनजीरणतनमाहीं ॥
तेजहीन तनबिकल बिशेखी । आयोंनाथ आजु मैं देखी ॥
दूतबचनसुनिअतिसुखपाये । बिहँसिसचिवसबनिकटबोलाये ॥

दो॰ चरवर आयो सुनु सचिव धर्मराज कहँ देखि ।
कह्यो सेन ह्वैकै चलौ भोजन हीन बिशेखि ॥
कबहुँ खातहैं मूल फल कबहुँक अँचवत नीर ।
निर्बल भयो शरीर सब टूटी पर्णकुटीर ॥

सबमिलिचलोसेनसजिजाइय । मानभंग उनको करि आइय ॥
असकहिचलेउतुरतकुरुनायक । सेनसाजि कर्णादि सहायक ॥
पर्णकुटीढिग खलचलि आयो । सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो ॥
देखि अनीति सुरेश रिसाना । चलेउचित्रलयसाजिबिमाना ॥
शरनमारिदलदयाकुलकीन्ह्यासि दुर्योधनहिंबाँधिपुनिलीन्ह्यसि ॥
करि निबन्ध लैगयो अकासा । आरत शब्द करतमनत्रासा ॥
नृपति धनंजय आनि छुड़ायो । शरनमारि गन्धर्व भजायो ॥
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी । खलकोबात नाथ सब जानी ॥

दो॰ सहि न सकत मग एकक्षण रोवत द्रुपदकुमारि ।

करौ नाथ कुरुनाथ कहँ बाण शरासन धारि ॥
सकहि भयो त्रिलोचन राते । मोचत खुलत मनहुँ मदमाते ॥
भृकुटि अधर पुनि चाटत । फरकत जात दशन ते काटत ॥
अति अरुण कुटिल भइ भौंहैं श्वास लेत जिमि ब्याल रिसौंहैं ॥
विवश अर्जुन कहँ जानी । बरजत भूप कहत मृदुबानी ॥
पनी दिशि ते चूक न करहू । मानै जब न बन्धु तब लरहू ॥
ते अब श्रीकृष्ण पठाई । जाय उनहिं देवें समुझाई ॥
वह देइँ गाउँ दुइ चारी । रहउ चुपाइ नीकि नहिं रारी ॥
त वचन द्रौपदी रिसानी । हे नृप फेरि कही यह बानी ॥
गति देखि न आवत लाजा । निपट अनीति सुनहु ब्रजराजा ॥
दो॰ विकल विलोक्यो द्रौपदी करि प्रबोध यदुराय ।
जो तुम्हरे मन भावना सो हम करब उपाय ॥
विधि कहि यदुनाथ बुझाई । करि प्रबोध पुनि भवन पठाई ॥
सन विदा मांगि भगवाना । सात्यकि सहित चले चढ़ि याना ॥
वन चले नकुल हरि साथा । स्यन्दन की पटिका गहि हाथा ॥
नय करत निज विपति सुनावत । पुनि पुनि चरणकमल शिर नावत ॥
रेउ तात हरिमुख सुनि बानी । बोले नकुल ढरत दृगपानी ॥
गद कंठ गरे भरि आवा । ऊर्ध्वश्वास ले वचन सुनावा ॥
लपति अति कीन्ह अनीती । वर्ष त्रयोदश वनमहँ बीती ॥
पकरिकै शठ अभिमानी । द्रुपदसुता मंदिर ते आनी ॥
न कह्यो भीम मन रूठी । हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी ॥
दो॰ क्षत्री ह्वै प्रण आपई फिरि न करे ब्रजराज ।
विदित सकल संसारमहँ याते अधिक न लाज ॥
सामर्थ्य सुनिये भगवाना । करि रिस द्रुपदसुता प्रण ठाना ॥
शासन के रक्त नहाई । बांधब कच तब कृष्ण दोहाई ॥
न प्रण करिहैं निज रानी । सो दुख समुझि सुदर्शनपानी ॥
त नाथ मन मोर मलीना । धर्मराज पुनि राज विहीना ॥

तेहि दुखतेदुखअति भगवाना। सो अबकहौं सुनिय देकाना॥
वृद्ध मातु परघर प्रतिपालक। यथा अनाथहोतविनवालक॥
पंच पुत्र जेहि सब परिवारा। भ्रातजात तुमहरिअवतारा॥
सो कुंती ऐसो दुख पावत। हेहरिनेकु लाज नहिंआवत॥
अर्जुन कहेउ कर्णकहँ मारण। तेहिप्रण के रक्षकजगतारण॥
मंत्र हमार सुनिय यदुराई। मिटेकलंक सो करियउपाई॥
दो० हम देखत शठ द्रौपदी आनीसभा निशंक।
खंडिय अरिरणमंडिकरि तबयहमिटे कलंक॥
असकहिनकुलचरणशिरनावा। करि प्रबोधहरिकण्ठलगावा॥
बिहँसिबचन भाष्यो वनवारी। पूजी मन कामना तुम्हारी॥
मिटिहैं सबसामर्थ कलेशा। धरहुधीर तजिसकल अँदेशा॥
धर्मशीलको कबहुँ अकाजा। होयननकुल कहतब्रजराजा॥
पापिन को सुख स्वप्न समाना। जानहु तात नठीकठिकाना॥
वो अनीति रतनीति नजानत। तृणसमान त्रैलोकहि मानत॥
धर्म्मशील है भूप तुम्हारा। गति अलीकजानत संसारा॥
नीति निपुण ममभक्त प्रवीना। सुरमहिसुरगुरु पदमतिलीना॥
ऐसेन को नहिंहोत अकाजा। यहिविधिकरिप्रबोधब्रजराजा॥
अवविलम्ब नाहिं दिनदशवीते। करिहौं काज तात मन चीते॥
भये मुदित सुनि श्रीपति बानी। प्रीति प्रतीति न जायबखानी॥
दो० भयो विदा मन हर्ष अति पदगहि गोकुलचन्द।
करि प्रबोध फेरे नकुल सबलसिंह नँदनंद॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥
फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई। सात्यकि सहित चले यदुराई॥
नगर बारणवर्त्त बसेरा। कीन्हजाइ हरिजाइ अबेरा॥
हरि सुधिपाइ सकल पुरवासी। आये मिलन ज्ञान गुणरासी॥
विविधप्रकारकीन्ह सतकारा। जोरिजोरिकरहरिहिं जोहारा॥

बहुत भाँति कीन्हे प्रहुनाई। अति आनन्द न हृदयसमाई॥
तेहिनिशितहां शीलगुणधामा। सात्यकिसहितकीन्हविश्रामा॥
अरुण चूड़ अरुणोदय बोले। कमलविलोचनलोचनखोले॥
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो। दारुकवाजिसाजि रथलायो॥
गुरुजनसकलविदाहरि कीन्हो। भोर भये पुनि मारग लीन्हो॥
नाना भांति कहत इतिहासा। चलेजातमग सहित हुलासा॥

दो० पूछेउ सात्यकि जोरिकर सुनहु रुक्मिणीरौन।
भारत पद कुरुवंशको कहो सो कारण कौन॥

बोले विहँसि वचन यदुराई। पूरव कथा सुनहु तुम भाई॥
यहि कुल भयो भूप दुष्यंतू। शील सनेह सत्यनिधि सेतू॥
सो शकुन्तला विदित न काहीं। भूपतिविपिनमहँताहि विवाहीं॥
भरत नाम तिन सुत उपजायो। भारत सब शशिवंशकहायो॥
हँसि बोले सैनेश कुमारा। कहिये नाथ सहित विस्तारा॥
स्वल्प कहे मन बोध न होई। गुप्त कथाजनि राखो गोई॥
तब हरि चित्रविचित्रकहानी। लगे कहनसुनिसात्यकिवानी॥
सावधान मन थिर करि भाई। अबतुम सुनहु कथासुखदाई॥

दो० चन्द्र वंश महँ आइनृप प्रकट भयो दुष्यंत।
तिनकेगुण वर्णन करत कवि पण्डित शुचिसंत॥

जनु रचना निज विश्व सँवारी। रचि विरंचिताहिदे करतारी॥
काम कला अबलामन जानहिं। काल समान शत्रुकोमानहिं॥
प्रजाजानि मन पूरण लाहू। सदा उछाह करत सबकाहू॥
द्विजगण धर्म केर अवतारा। जानहिं हृदयअनन्दअपारा॥
कुलके वृद्ध स्वल्प सुजाने। सेवक सेवहिं नृपहिं डराने॥
जाके राज्य अनीति न होई। प्रजा प्रसन्न जानि सब कोई॥
साम दाम पुनि दंड विभेदा। करें भूप जिमि वरणे वेदा॥
अतिथि क्षुधारत्त की सुधिलेई। यथा योग याचक कहँ देई॥
मुनिसमबुधि विवेक जिमिहंसा। सुरसिहातकरि भूप प्रशंसा॥

॥ दो० कल्पवृक्ष समदान कहँ कीरति शशि अवदात ।
भानुसमानप्रतापजग अधिक अधिकसरसात ॥
राजसूय आदिक विधि नाना । कीन्हे भूप दये वहु दाना
करेअमित जिन यज्ञ अरंभन । पूरि रहे पुहुमी महँ खंभन
तासु तेज रवि उदय विलोके । नृपकिरीट सवकुमुदसशोके
रहत मौन कछुकहत सो नाहीं । तनसमीप जिमितनपरछाहीं
वंचक चोर उलूक समाना । हेरतमिले न ठीक ठिकाना
सुजन कमल फूले बहुभांती । खलमलीनजिमिउडुगणपांती
भये कोकनद वनिकविशोका । सुरपुरणविलसहिंनिजलोका
जीव बंधु सम मित्र सुखारे । फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे
दो० नृप कीरति पारद किधौं शारद मुक्ताहार ।
हिमगिरिकी कैलासकी किधौं देवसरिधार ॥
शारद चन्द्रकी चन्द्रिका मानहुँ करत प्रकास ।
धवलध्वजासी देवपुरि ऊपर करत विलास ॥
कुंद कलीसी कुमुद कलीसी । हाटक सी वगपांति भलीसी ।
क्षीर फेनु सी गंग रेनुसी । वासुकिसी सुरपतिकि धेनुसी ।
कामधेनुसी फटिक शिलासी । वेलासी करपूर विलासी ।
गणपतिसी हरसी गिरिजासी । कीरतिविशद नदीविरिजासी ॥
शांति सत्यसी संतवसनसी । उदधिउदधसीद्विरददशनसी ॥
को तुषार की तरणि तरंगा । किधौंविष्णुतन विशदकुरंगा ॥
नृपतिकीर्ति जनु श्वेतविताना । भरतखण्ड मण्डलमहँताना ॥
दान ज्ञान द्वौखंभ विभागे । नानासुत सिरसाकसिलागे ॥
सुधिकनात हरिभक्त चँदोवा । हिंसायुत परदा तहँ जोवा ॥
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा । गुण अनेक को वरणै पारा ॥
अपर कथा अव कहौं बुझाई । चितदै सुनहु श्रवणसुखदाई ॥
दो० कथा भूप दुष्यन्तकी भाषौं चित्र विचित्र ।
ज्यहिविधि भई शकुंतला सो अवसुनहुविचित्र ॥

विश्वामित्र महामुनि आये। करत विपिन तपध्यानलगाये॥
तहँ मेनका रूप गुण रासी। जात गगनपथ देव विलासी॥
भूषण बसन विभूषित अंगन। गावत राग वसन्त तरंगन॥
बीण बजावत ताल अभंगन। निर्त्तत गति संगीत उमंगन॥
फूलनको गजरा जु तरंगन। उठत सुगंध समीर प्रसंगन॥
मुखते मोल कपूर लवंगन। अलिगुंजतसँगअरगत्रसंगन॥
मुनि समीप उत्तरी सो आई। करिकलान समाधि जगाई॥
देखि मेनकहि विकल शरीरा। मुनिमनभयो मनोभवपीरा॥
बहुतबार लगि रह्यो निहारी। सुधि न रहीतनसुरतिविसारी॥
बीण बजाइ मधुरस्वर गावत। खेलतफाग गुलालउड़ावत॥

दो० मुनित्रिय ऋषितिय गाधिसुत निरखतबारहिंबार।
विकल युगल तन काम वश भूलो सबआचार॥

विश्वामित्र मनोभव जीता। वर्ष एक सम बासर वीता॥
भई निशा सोमुनि ढिगआनी। करिढिठाइ तनमहँ लपटानी॥
जंघ जंघ सों कटि कटि जोरी। उरसे उर मुनिमति भइथोरी॥
अधराधर ऊपर रद दीन्हा। करिचुम्बन आलिंगनकीन्हा॥
करिविपरीत सुरति बहुभांती। द्वादश मास गये जनुराती॥
भयेविकल तब मनसुधि आई। खोयो तप बहु कीन भोगाई॥
रतिकरिके मुनिवर पछिताने। त्यहि वनते कहुँ अनतपराने॥
भई सुता बीते नौ मासा। गईडारि सो सुरपति पासा॥
एक बार नहिं क्षीर पियाये। रोदन करत क्षुधा तन छाये॥
दीन शब्द सुनि मुनिवर आई। तृणशाला ले जाइ जिआई॥
मुनि उतंग कीन्हीं प्रतिपाला। भई तरुणि बीते कछु काला॥

दो० सबलसिंह चौहान कह हिरदय परम अनन्द।
दिनदिनद्युतियादीअधिक जिमिद्वितियाकोचन्द॥

इतिश्रीमहाभारतउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
अष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

तनसे निकसिज्योतिद्युतिभारी। फैलिरहीचहुँदिशिउजियारी॥
लाजसहितचपअरुणनुकीली। करुणामय सबभांतिछबीली
अंजन दे दृग रंजित कीन्हे। खंजनकी उपमा हरिलीन्हे
मृगनिजदृगपटतर नाहिं जाने। लाजमानिमन विपिनछिपाने
प्रियदृगकरतकमल करिकोऊ। मम मनमें भासितनाहिंसोऊ
कमलज फूल तज्यो तन ताहू। ऐसिज्योति मोहत सबकाहू
नासा सुभग अनूप सज्योती। जगमगात नथबेसरि मोती
नाक समीप मोद अधिकाई। गुरुकवि मंत्रकरत मनलाई
आनन सुभग चन्द्र मदहारी। अधरप्रवाललाल सुखकारी
भृकुटी बाम श्याम अहिछौना। शशिसमीपजनुरचेखिलौना।
कच मेचक तल श्रुति ताटंका। घनघमण्ड दामिनी दमंका।
अधरबीचद्युतिदशन बिभांती। जनु विद्रुम मुक्ताहल पांती।
करि न सकतकबिकण्ठलुनाई। फिरिनरच्योबिधिकरिनिपुणाई।
भुज मृणाल भूषण सब अंगा। देखि अनंग नारि मन भंगा।
अति उन्नति कठोर बक्षोजा। गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा।
कटिसूक्षमकुचअँगुली परना। नखअतिअरुणलालद्युतिहरना॥

दो० अतिसूक्षम मृदुउदरपुनि पुनिअमोलअभिराम।
उपमा कहत बिचारि जनु रच्यो दुलीची काम॥
जंघथम्भ सम कदलिके उन्नत सुभग नितम्ब।
अतिसुन्दर पिंडुरी लखे करत मदन आलम्ब॥

अम्बुज समकर पद अरुणारे। थिर न बुद्धि मोरवान निहारे॥
तन मन काम सरिसउजियारा। मनहुँ दीप ते दीपक बारा॥
एक समय यदुवन्त नरेशा। देखिचकित भे अदभुतभेशा॥
मृगया फिरत बिलोकत राजा। बिहरतविपिनकरततनसाजा॥
भयो कामबश ताहि बिलोकी। चितवतचकितनयनजलरोकी॥
देखि स्वरूप नराधिप फूले। जनुमनमथहि डोलकढ़ि भूले॥
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे। कबहुँ उरध मन कबहूँनीचे॥

रत बिचार नरेश सुजाना । प्रियवशभयो हरे विधिज्ञाना ॥
न्य अस्य जाति नहिंजाई । समुझिसमुझिनृपमनपछिताई ॥
ज कुमारिकी भूप किशोरी । मनमथविवश करीमति भोरी ॥
प्रसुता तव बात अयोगा । सुनि परन्तु हँसिहैं सबलोगा ॥
दो० भूप सुता जो होइ तव बनिआई सब बात ।
होइअगम्यतवर्नाकनहिंसमुझिसमुझिपछितात ॥
रसय हर्ष विवश नरनाहू । धरिधीरज मनकरत उछाहू ॥
अपने मनकी गति जानत । कबहुँ असतपथपदनहिंआनत ॥
त विधि रच्यउ मोरसंयोगा । योगत्यागि नहिंहोइ अयोगा ॥
मथ विवश भूपकहँ जानी । तव यह भई गगनपथबानी ॥
श्वामित्र मेनका नारी । भा विहार भइप्रकटकुमारी ॥
शकुन्तला सबगुण खानी । तुम नरेश होई यह रानी ॥
धिसुवन क्षत्रीकुल माहीं । जानत सब अयोग कछुनाहीं ॥
नि उतङ्क कीन्हा प्रतिपाला । गगनगिरासुनिमगन भुवाला ॥
किट गये नृप विवशअनंगा । प्रेम सहित करिचपल तुरंगा ॥
दो० पूछेउ नृप कित वन फिरत कापुनि नाम तुम्हार ।
सुता अलौकिक कौनकी मनवश करे हमार ॥
बोली बिहँसि शकुन्तला सुनिये भूप प्रसंग ।
तुम क्षत्री हम विप्र की सुता मनोहर अंग ॥
नि उत्तंग विदित सुखरासी । तासु सुतामैं विपिनविलासी ॥
गम सदा क्षत्रीकुल माहीं । बात अयोग उचितनृपनाहीं ॥
सु गिरा सुनि कह्यउनरेशा । जनिबोलहुअसवचनभदेशा ॥
धिसुत अत्रि विदित संसारा । भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा ॥
शिसुतबुध बुधसुतजगजाना । इला पुरूरव नाम बखाना ॥
यहि कुल भयो मोर अवतारा । सम संयोग हमार तुम्हारा ॥
जेमिरतिकाम शचीसुरनायक । जलदयथादामिनिसुखदायक ॥
तेमि संयोग हमार तुम्हारा । बुद्धि विचार रचेउ करतारा ॥

तव स्वरूप सुन्दर जलरासी । मगनहोत कुरुपार विलासी ॥
दो० तुमहिं विलोकत कुसुम धनु लिये कुसुम शरहाथ ।
तिलतिल तन जर्जर करेउ है सकोप रतिनाथ ॥
तव त्रिय रूप ठगोरी डारी । मंदहास जनु फांस पवारी
असिपुत्रिका कटाक्ष अमोला । करषत प्राण मंत्र मिठवोला
विषमोदक कपोल युग तोरे । निरखत छहरिगयो तन मोरे
अधर सुधारस मोहिं पियावउ । करिकरुणाअववेगिजियावउ
तुम विन में न जियउँ घटिकाहू । समुझतअवनवहुरिपतिताहू
मूरि विशल्य करन कुच तोरे । परसत मिटै विथा तव मोर ।
संजीवनी तोर सम्भोगा । रहै न काम जो नितमहँभोगा ।
है यह योगअवर कोउ नाहीं । ताते विनय करत तुम पाहीं ।
दो० नयन वयन तन मिलि रहो रही मिलन कहँ देह ।
सो मिलाइ असनेह ते त्यागहु सव सन्देह ॥
कहेउ उतंग सुता सुनु राजा । धीरज धरे सरै सव काजा ।
पितुआयसुविन यहवड़िहांसी । रहो चुपाइ जानि निजदासी ।
कह नृप और विचार न कीजे । अंगदान हितकरिमोहिंदीजे ।
नैनवैन मिलि मिलेउ सनेहा । यह अभिलाप मिले सवदेहा ।
सुनि सालज्ज उतंग किशोरी । वोली मधुर गिरा करजोरी ।
तनइत मनतुम्हरे मन साथा । करि सङ्कल्प रहत नरनाथा ॥
कछु दिनमें करि हैं जयमाला । वोलि पिता मुनिदेव भुवाला ॥
डारव सुमनमाल तव ग्रीवा । होइ विवाह रहै श्रुति सीवा ।
तुमकहँ देह देइ हम राखी । तजोशोच नृप सवमुरसाखी ॥
दो० रचेउ विरञ्चि विचारिकै मोर तुम्हार विवाह ।
तुम तजि काहुँ न आनपति वरहुँधीरनरनाह ॥
श्रीहरि हरगिरिजापति आना । वरहुँ तुमहिंकी त्यागहुँप्राना ॥
भजों न आनपुरुष तन छूटै । पितु निदेश तजि पीकजकूटै ॥
बूड़ौं वारि अनल तन जारी । वरौं तुमहिं की रहौं कुमारी ॥

सुनिप्रियवचनतुरँगातजिदीन्हा ॥ तहँ गन्धर्वब्याह करिलीन्हा ॥
काम विवश नृपज्ञान भुलाना ॥ आलिंगन कीन्हो विधिनाना ॥
शकुन्तला निज नाम वतावा । पुनिनृपगमनि भवनकहँआवा ॥
तब शकुन्तला मन्दिर आई ॥ दोहत भयो शोच अधिकाई ॥
सो चरित्र मुनिनायक जाना । जोकछुभयो सकलधरिध्याना ॥
पूंछेउ ऋषि सर्व कहि दीन्हा । जिमिगन्धर्व ब्याहनृप कीन्हा ॥
॥ दो॰ धीरज दियो शकुंतलै । उत्तम कुल नरनाह ।
॥ यामें सुता कलंक नहिं करिलीन्हो तुम व्याह ॥
ताके भयो भरत महिपाला । धर्मशील बलबुद्धि विशाला ॥
षोड़श वर्ष भयो नरपालक । खेलहिंविपिनरुयालसँगबालक ॥
महिष शृंगधरि कबहुँ उखारैं । कबहूँ अँगुलि व्यालमुखडारैं ॥
सिंह लूमधरि कबहुँ भ्रमावैं । द्विरदमतंगगहि दशननलावैं ॥
अदिति कुमार पुरंदर जैसे ॥ सुत शकुन्तला जायो तैसे ॥
अनसूया के यथा निशाकर ॥ कश्यपके जिमिभये प्रभाकर ॥
रविके मनु मनुतनय प्रियव्रत । तिमिशकुन्तलातनयधर्मव्रत ॥
तरणि समान तेज तनमाहीं । बलपटुतरिय बली कोउनाहीं ॥
धनुर्वेद मुनि ज्ञान पढ़ाई ॥ अस्त्रशास्त्रसिखिकरि निपुणाई ॥
राज्यनीति बहुभांति पढ़ायो । हयगयरथहिसो युद्धसिखायो ॥
दो॰ पढ़ो कि पुनि चटसारमहँ खेलन जाइ शिकार ।
सबलसिंह चौहान कहि सुनि मनमोदअपार ॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

राज्य योग सब लक्षण जानी । निकटबोलायकहतमुनिज्ञानी ॥
पितु तुम्हार शशिवंश नरेशा । नृप दुष्यंत सब जानत देशा ॥
अतिबलिष्ठ दुहिता सुत मोरा । सकल धरा मण्डल है तोरा ॥
भूपति रहे कृपा अभिलाखे । रहे सुरेश जासु रुख राखे ॥
तुम पितुसभाअलौकिकलीला । बसे दिगीशनकेर वकीला ॥

सोम वंशमहँ जन्म तुम्हारा । अत्रि गोत्र जाने संसारा ॥
इला पुरूरव पितामह नामा । तेज निधान शूर बलधामा ॥
पितु गृहचलहु करहुनिजराजू । सहित धरा धन सेनसमाजू ॥
पुनि बहिक्रम भूप बुढ़ाना । औरनसुत तुमकहँनहिंजाना ॥
चिंता विवश भयो नृप अंगा । प्रातहि तातचलहु मम संगा ॥
तुमहिं त्रिलोकिभूपसुखपाइहि । राज्यदेइ पुनिकाननजाइहि ॥
तपचर्या की करत विचारा । सुतहित विपिननजाइँभुवारा ॥
तुमहिंत्रिलोकित्यागिसत्रशूला । नृपतपकरहिंसहितअनुकूला ॥
॥ दो० प्रातहि सहित शकुंतला चलहु हमारेसाथ ।
सुखी करहु दुष्यंतकहँ होहु पुत्र नरनाथ ॥
असकहिपुनि मुनिसेवनलागे । उदित होत उदयकर जागे ।
सुत शकुंतला सहित पयाना । कीन्हकहा मुनिज्ञाननिधाना ।
आये चन्द्र बंश रजधानी । दरशनदीन्ह सभामहँआनी ।
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा । दीन्हअशीशमुनीशअकामा ॥
अर्घ देत आसन बैठारे । ह्वै प्रसन्न तब बचन उचारे ॥
सुनहु भूप यहु भरत कुमारा । तनय तुम्हार विदितसंसारा ॥
असकहि पुनिप्रणाम करवावा । प्रीतिसहित निजढिगबैठावा ॥
देखत भूप भरत की ओरा । अतिसुन्दरतनबयसकिशोरा ॥
दो० वृषभ कंध दीरघ भुजा दीरघ बक्ष विशाल ।
चन्द्रबदन कटिकेहरी कमल विलोचन लाल ॥
कछुशिशुता कछु तन तरुणाई । सहित बीरता कढ़त लोनाई ॥
तब शकुन्तला सभा मँझारी । आई तुरत दिशा तम हारी ॥
नृपहि देखि मनहीं मन माहीं । कीन्ह प्रणाम प्रकटकछुनाहीं ॥
देखत चकित सभा सब कोई । शची किधौं रंभा रति होई ॥
मंजुघोष मेनका घृतासी । विश्वमोहनी कुल की रासी ॥
प्रभा सरस शोभा तन जाके । नहिं तिलोक पटतरमहँ ताके ॥
जातनकी सुन्दरता ताकी । सलजहोत उरबशी बराकी ॥

कीरोहिणी किधौं अनुसेया। अरुन्धतीकी उदितजोन्हैया॥
दो० रहेमौन नहिं कहतकछु शोभाविपुल निहारि।
देखी भूप शकुंतला पहिंचानी निज नारि॥
कह नृप कौन कहां ते आई। बोली मधुर गिरा शिरनाई॥
करत हँसी की बिन पहिंचाने। पुरुतनाथ कि हमहिं भुलाने॥
भूली सुरति भई मति भोरी। मैं शकुंतला अनुचरि तोरी॥
दृग नीचे करि कहत सलाजा। बनमहँमिलीसमुभ्रमनराजा॥
जहां उतंग कैर पर्णशाला। परमगहनसुधिकरहु भुवाला॥
नदी पुनीत तरणितनया तट। सुन्दर सुखदछांहशीतलबट॥
नाम बताय भवन तुम आयो। करिप्रबोधमोहिं भवनपठायो॥
भरत जन्म की कथा सुनाई। तुम्हरे दर्शहेत इत आई॥
यह लालसा न दूसर काजा। छांडी बिपिन भूलसुधिराजा॥
दो० देखी सुनी न मैं कछू बिहँसि कही महिपाल।
सुनहुसभासदमिलिसकल नृपाकहतयहबाल॥
यह त्रिय रत्न पुरुष के लोभा। सानतमोहिं चहत निजशोभा॥
वारबधू की गति पहिंचानी। है कुलटा मनमें मैं जानी॥
सुनि शकुंतला कहमनमाखी। तब नरेश दीन्हों सुरसाखी॥
पतिव्रत जो छांडों में नाथा। तो तुम करौ खंड शतमाथा॥
अस कहि पतिव्रता रिसवाई। कहत सुरनते भुजा उठाई॥
सुनत श्रवण तुमदेत न साखी। कैहै तेज हीन बिन आंखी॥
सुनि यह पतिव्रता भय माना। भई गगन सुर गिराप्रमाना॥
नाम संयोग कलंक बिहीना। अतिपुनीत नृपनारि प्रवीना॥
भरत नाम यह तनय तुम्हारा। करहु भूप तुम अंगीकारा॥
दो० सुनहु नरेश शकुन्तला सब बिधि सम संयोग।
भइ सुर गिरा प्रमाण नभ सुनि हर्षे सब लोग॥
सकल सभासद निकटबोलाई। अति आनन्द न हृदय समाई॥
कहत सुनाइ सबन ते राजा। गगनगिरा सब सुनहुसमाजा॥

है शकुन्तला मम पटरानी । निश्चय भरत पुत्र सुखदानी ॥
लोक वेद ते नारि कुमारा । कीन्ह प्रथम नहिं अंगीकारा ॥
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने । तरुणत्रिया अरु सुतबिनजाने ॥
राख्यो गृह बड़िकीन्ह ढिठाई । अस बिचारि सुरगिरासुनाई ॥
प्रथमहिं भई बिपिनतभवानी । करि बिवाह तब कीन्ही रानी ॥

दो० अस कहि भूप शकुन्तला दीन्ही भवन पठाइ ।
बैठारे पुनि मोदते भरत समीप बोलाइ ॥

कहनरेश तब सुनहु उतंका । कहिये नाथ मिटै आशंका ॥
देवन सम संयोग बखाना । क्यहि प्रकारते मैं नहिं जाना ॥
मुनि उतंग मोदक अधिकाई । कथा प्रथममुनि बरणिसुनाई ॥
तुमशकुन्तलहिं मुनिवरभाखी । सुनहु भूप बिधिते प्रटसाखी ॥
एकै भांति प्रकट भय दोऊ । कथा बिचित्र सुनहु नृप सोऊ ॥
बिधि युत कुशजानत संसारा । प्रकट करे कुश नाम कुमारा ॥
तिनके गाधिराज बलखानी । अङ्गदेश कीन्हीं रजधानी ॥
कौशिकतनय कौशिकी नामा । तनयाविदित शीलगुणधामा ॥
काम बिपिन तपकीन्हमहाना । भई पुनीत नदी जगजाना ॥
कौशिकमुनि तनजानितअनंगा । भई सुता मेनका प्रसंगा ॥

दो० सोजगबिदितशकुन्तला सबबिधिससंयोग ।
भये तुम्हारे भूप अब अरध सिंहासन योग ॥

सुनहु कथा चित लाइ नरेशा । निजकुलकीसबत्यागिअँदेशा ॥
कीन्ह बिरञ्चि अत्रिसुतनामा । तपमूरति मुनिवरगुणधामा ॥
भे जग बिदित चन्द्रसुत ताके । निशितम रहत कंठतरजाके ॥
अमियमयी अरु सुरपतिभीता । धरो शीश शिवजानिपुनीता ॥
सत्तविंश त्रियजग उजियारी । अतिप्रियतिनहिंरोहिणीनारी ॥
तिनके सुत बुध बुद्धिनिधाना । भये सौम्यग्रह सबजगजाना ॥
इलापुरुरवा भयबुध बालक । अतिबलिष्ठश्रुतिपथप्रतिपालक ॥
भयो कामबश चेत न आवा । बिपिनफिरत उरबशीश्रमावा ॥

देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ ।बिसरी देह कामबश भयऊ ॥
हँसि द्रगशाइ बिलोचनि तीछे । चली पराइ चला नृपपीछे ॥
लागित शरीर तरिनि तरवारी । हा उरबशी पुकारि पुकारी ॥
दो० प्रकटहोइ कहुँ निकट होइ कबहुँ जाइँ द्रुमश्रोट।
कबहुँ दिखावत हासमृदु कबहुँकरतदृगचोट ॥
कबहुँक प्रकट होत त्रिय आगे । चले जात नृप पाछे लागे ॥
निकटबिलोकि गगन उड़िजाई । दूरि देखि पुनि देइदिखाई ॥
कबहुँ बाम दक्षिणदिशि पूरा । राग अलाप बजाइ तँबूरा ॥
यहि बिधि गगन बीचलैजाई । अमितनिहारिप्रीतिअधिकाई ॥
तिजवशजानि दया अति बाढ़ी । भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी ॥
करि बिनती नृप भवनलवाये । करिप्रसंग तुमको उपजाये ॥
यथा पुरुष तुम तिमि वहदारा । सबबिधिसमसंयोगतुम्हारा ॥
कहि यहिबिधि मुनिवरउत्तंगा । गये मण्डली मेटि असंगा ॥
दो० बानप्रस्थ बिचारि अब बिपिन गये ततकाल ।
लै निज हाथ शकुन्तला भरतभये महिपाल ॥
जिनको सुयश पयोनिधि पारा । गये उलंघि पहाड़ अपारा ॥
तिन पुरु नाम तनय उपराजा । भयोसकल पुहुमीपतिराजा ॥
नहुष नृपति तिनके बलदाई । लीन्हइन्द्रपद इन्द्र भगाई ॥
तिनके सुत पुनि भयो ययाती । तेज प्रताप बिदितसबभांती ॥
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा । नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा ॥
शुकसुता ज्येष्ठी देवयन्या । लघुत्रिय वृषपर्वाकी कन्या ॥
पुग पत्नी दश सुत उपजाये । तिनके भारतसकल कहाये ॥
कथाबिचित्र सुनत सुख पावा । पुनिसात्यकिहरिपदशिरनावा ॥
आगे चलि हस्तिनपुर देखी । चित्रितचित्रबिचित्र बिशेखी ॥
अति उतंग सोहत पुर फाटक । रचितकेवारद्वारमणि हाटक ॥
बसत लसतपुर द्युतिअधिकाई । जनु सुरनगर बासतहँ आई ॥
बसत तहां दुर्योधन पोचा । कहत इन्द्रसन मन संकोचा ॥

॥ दो॰ पुरजन देवी देव से पांडव गये विदेश।
॥ करतनहुषजनुइन्द्रपथ भोगिनिकारिसुरेश॥
नन्दन वन निन्दत वन आगा। रुचिर बापिका कूप तड़ागा
मन्दाकिनि सम सोहत गंगा। उपसा उठत अनूप तरंगा
वरण वरण पक्षी रव शोरा। वेदपढ़त जनु सुर दुहुँओरा।
शङ्करगिरि जनु रुचिरअटारी। चातुर चारु सहितगचढारी।
रंग रंग ध्वजपांति विभाती। मनहुँ सपक्ष शैल उतपाती॥
सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा। त्रिय नगरी शिरसुन्दरजूरा॥
खुले द्वार सोहत सुखरासी। सुरपुरसरिस करतजनुहासी॥
कोटिनगुड़ि उड़िउड़िगगराची। नगर नगारन कीधुनिमाची॥
॥ दो॰ पुरशोभाहरषन निरखि गयेनिकट भगवान।
॥ सबलसिंह चौहान कहि कोकरिसकै बखान॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
विंशोऽध्यायः॥ २०॥

दो॰ दारुक हांक्यो अश्व रथ सुमिरिमहेश गणेश।
॥ नगर हस्तिनापुर तबै कीन्हो तुरत प्रवेश॥
बनित मनोहर रूप विलोके। यकटक लखें नयन पलरो
हरि शोभा सागर सुखसारा। त्रियलोचनभखकरतविहा
गली बजार छतीसो कोसा। निरखतमुखचकोर जिमिसो
सात्यकिसहितअलोकिकवेखा। चले जात पुरवासिन देख
तरणितमीशकितरणिकिशोरा। की मधुमदन मनोहरजो
हरिहर काहि वरणत हैं कोऊ। नर नारायण हैं की दोउ
सात्यकिसहितसोह भगवन्ता। इन्द्रसहितजनु जातजयन्त
मारग महँ शोभा अधिकाई। मनहुँ राम लक्ष्मणदोउभा
दो॰ पीतवसन सुन्दर ललित कलित विभूषण गात।
फलित मनोरथ सबनके निरखत सुखसरसात॥
अनु शोभा बरणत नर नारी। निरखिनिरखितनदृशाबिसारी

छबि अमितरास कामशतकोटी । हरि पटतरिय घातयह छोटी ॥
प्रभु शोभा सागर अवगाहा । सुरनर मुनिकोउपावन थाहा ॥
कटक चिते परस्पर कहहीं । इनकी सरि येई जगअहहीं ॥
उपमा काहि देइ को योगा । कहत परस्पर सबपुरलोगा ॥
हरिसात्यकिकरिउभयविभागा । कोऊ कहत ज्ञान वैरागा ॥
जहँ प्रभु मोहनतन देखरायउ । मोहेसबतन सुधिबिसरायउ ॥
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढ़े । वर्णत कोउ नयन जल बाढ़े ॥

दो० मन हरिबश सरबस सहित बिसरिगईसुधि देह ।
प्रभु तनद्युति वर्णन करत पुरजन सहितसनेह ॥

कमलनयनकुण्डलहेकानन । अतिकमनीयकलानिधिआनन ॥
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा । उर बनमाल मनोहर हीरा ॥
किरीट मुकुट शिर ऊपर धारे । दाड़िमदशन अधर अरुणारे ॥
उन्नतभाल सुजन मनभावन । सुंदरलोल कपोल सुहावन ॥
वृषभकंध अरु दीरघ बाहू । बक्षविशाल सुखद सबकाहू ॥
पानपीठि उर भृगुपद रेखा । कटिकेहरि उदर त्रयरेखा ॥
पीताम्बर तापर कसि बांधे । श्यामजलद तन यज्ञपकांधे ॥
पद्मपाणि पद पदम अनूपा । अतिविशालदोउयदुकुलभूपा ॥
हरिहित्रिलोकि नागपुर नारी । कामविवश तनदशाबिसारी ॥
भूषण हीन न चीर सँभारा । निरखैं आइ लाजतजि दारा ॥

दो० दधि दूर्व्वा अक्षत अमल एलादिकभरिलाय ।
करैं सुमंगल विविध विधि मोहनराग सुनाय ॥

जात राज मारग प्रभु सोहे । पुरनरनारि देखि छविमोहे ॥
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा । कहि न सकैं कविशारदशेखा ॥
शारद शम्भु गणेश षडानन । वर्णत वृद्ध भये चतुरानन ॥
नारदादि कहुँ पार न पाये । त्रिविधभांति कहिनेतिसुनाये ॥
सुर सुरेश कहि पार न पावा । अवनृपसुनहुव्यासजसगावा ॥
प्रभुछबि बारिधिकोटि महाना । सीकरसमत्रिभुवनछबि नाना ॥

तदपि तासु उपमा सम नाहीं। तुमते कहत सुनी गुरुपा
सुनिये गिरा अमियरस बोरी। कौनप्रश्न पुनि नृपकरजो
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई। कहियकृपाकरि अबन्नापि
सुनि नृप वचन प्रीतिरस पागे। कथा बिचित्र कहनमुनिल
॥ दो० दोषहरणि सब सुखकरणि भारत कथा रसाल।
॥ जनमेजय चित दै सुनहु मिटै मोह जगजाल॥
भीषम बिदुर सुनी यह बाता। नगर प्रवेशकीन्ह जनत्रा
कृपअरु द्रोण सहितअनुरागे। करतप्रणाम लीन्हचलिअ
भीषम द्रोण देखि हरि आये। पुरजन सहित प्रेमउरछा
उतरे कृपासिंधु भगवाना। मिले बहुत कीन्हे सनमान
भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई। कुशल प्रश्न पूंछत यदुरा
नाथ कुशल देखतअबतुमको। हृदयलाय भेंटेउ प्रभुहमक
पतितउधारण बिरद सँभारा। भयो सकल अघदूरि हम
ताही समय बिदुर चलिआये। परे चरण तहिं उठत उठ
गहिभुज कृपासिन्धु भगवाना। लीन्हलायउरकरि सनमा
सुनहु बिदुर तुमअति बिज्ञानी। जिनकामुख देखत अघह
ज्ञान बिराग योगगति आनत। धर्म स्वरूप भक्तिरस जा
जीतेउ काम क्रोधमद लोभा। करि न सकै माया मनक्षो
हरिसेवक प्रहलाद समाना। बिधिसमबुद्धि बिबेकनिधा
रबिनन्दन समनीतिबिचारा। योगिनमहँ त्रिमिसनतकु
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता। अम्बरीषनृपसम शुचिसन
करि सन्मान कृष्ण बहुभांती। पुनिपुनि मिलतलगावतअ
बोलेउ बिदुर अकिञ्चन मीता। नामतुम्हार बिदितजनर्ह
बिरद तुम्हार निगम कहिगाई। निज दासनकहँ देतब
॥ दो० मोते को संसार महँ महाअधम मतुधार।
अधम उधारण नाम तुव सुनत होतउरधीर॥
भक्त बछल तुव नाम सुनि तब मनरहो डराय।

सुने पतित पावन विरद हर्ष न हृदय समाय ॥
प्रभु नाथ पाप हम कीन्हा। दासीयोनिजन्म विधिदीन्हा ॥
अघभाजन तहिं भजनतुम्हारा। केहिविधि नाथमोरनिस्तारा ॥
परम अधीन विरद मुखबानी। सुनिश्रीकृष्ण भक्तिरससानी ॥
कीन्ह प्रबोध नाथ विधिनाना। हृदयलाय कीन्हों सनमाना ॥
तुमहो विदुर धर्म्म अवतारा। परमभक्त अरु ज्ञानउदारा ॥
पुरबासिन अभिवन्दनकीन्हा। सौम्यरूप प्रभुदर्शन दीन्हा ॥
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला। पहिरे श्वेत द्विरद मणिमाला ॥
अंग अंग महँ भूषणभूरी। मृदुमुसक्यानिविलोकनिरूरी ॥
पीत बसन कलकुंडल कानन। अतिकमनीयसुधाधरआनन ॥
सात्विकिरूप लखे वनवारी। निरखिनिरखिजविहोतसुखारी ॥
भीषम द्रोण सहित यदुराई। भूप भवन कहँ चलेउलवाई ॥
दो॰ सुनी श्रवण आयो निकट पँवरिद्वार यदुराय।
लेन हेत कुरुनाथ तब दीन्हें अनुजपठाय ॥
बिकरण दुश्शासन बलधामा। दुर्मुख दुमुत द्विरदपुनिनामा ॥
निपट निकटजबआनिनिहारा। मदसमेत तिनकीन्हजोहारा ॥
दुर्योधन के बान्धव आये। तहँ प्रभु उग्र रूप दरशाये ॥
चक्र एक कर शारँग पाणी। एकपाणिमहँ निशितकृपाणी ॥
जैसे प्रलय काल महँ शंकर। अरुण नयनअरुवेषभयंकर ॥
रूप त्रिविक्रम समर महाना। कुरुगण देखिअचम्भवमाना ॥
रूपे दुर्योधन के भाई। हरिहिदेखि मुखगे कुम्हिलाई ॥
मगुण उनहिं कृष्ण देखरावा। भूपभेद केहुँ जानि न पावा ॥
मोहन रूप देखि नर नारी। लोक लाजतजि चलीपछारी ॥
सात्विकिरूप विदुर तहँ देखा। कहत नाइ मन हर्ष विशेखा ॥
प्रजा देखि प्रजा सुख पाये। भयेमुदितनिजनिजगृहआये ॥
यह चरित्र कीन्हों भगवाना। औरको भेद और नहिं जाना ॥
दो॰ जैसी जाकी भावना तेहि तैसो भगवान।

पल महँ दरशायो चरित मर्म न काहूजान ॥
पँवरि दुआर गये यदुनाथा। भीषम द्रोण बिदुर कृपसाथा।
द्विरद दुमत्त दुशासन संगा। दुर्मुख विकरण बीर अभंगा।
दुर्योधन को बिभव निहारा। इन्द्र सरिस को बरणै पारा।
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी। रक्षक तरुणपुरुष बलभारी।
दूसर दुर्योधन कर चेला। उमड़ेउ मनहुँ सिंधुतजिबेला।
ते सब शक्ति भुशुंडी लीन्हें। रक्षहिं द्वार सजगचितदीन्हें।
तिसरे द्वार करहिं बहु हूहा। कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा।
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा। रक्षक महा मल्ल बहु दक्षा।
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ सांगी। गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी॥
पंचम पँवरि द्वार हरि आये। विविध भांति तहँयंत्रलगाये॥
तीनि लक्ष भट मत्त सरावी। लीन्हेपाणि ज्वलितमरतावी॥
दो० द्रोण करण सम तूलके अयुत बीर बरियार।
गर्जि गदा गहि गर्वते ठाढ़े षष्ठम द्वार॥
सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा। केहरि से किरात कांबोजा॥
बिबिधन भांति अस्त्रकरमाहीं। जिनहिंदेखिसुरअसुरसकाहीं॥
बरणत बिरद बन्दिजन जूहा। वेतपाणि दरवानि समूहा॥
वेतपाणि तहँ जाय जनाये। मिलन हेत यदुनन्दनआये॥
लावहुकहि नृपआयसुदीन्हा। तेहिअवसर हरिदर्शनदीन्हा॥
प्रभुहिबिलोकिउठ्योकुरुनाथा। सौबल शकुनि कर्ण लै साथा॥
ताके हृदय गर्व अति भारी। गयोनिकटचलिहरिहिजोहारी॥
धनमदअन्धअधमअभिमानी। ज्ञानहीन कछुकानि न मानी॥
दो० उत्पति थिति नाशन करण विश्वभरण भगवान।
नर करि जानत ताहि खल सबलसिंह चौहान॥
महाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानकृतेएकविंशोऽध्यायः२१
कृष्ण समेत चला कुरु राजा। धृतराष्ट्र यहसकल समाजा॥
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हे। बांधव सब परिवारितकीन्हे॥

पयउ भूप पहँ बिदुर अगारी। कह्योजाय आवत बनवारी॥
कहतभूप कोउ मोहिं उठावहु। चलहुवेगिलेहरिहिमिलावहु॥
सञ्जय गहिकर नृपहिं उठायो। कृष्ण समीप तुरतमहुँ आयो॥
... कृपासिन्धु उरलाई। नृपआनँदअतिउर न समाई॥
कुशल प्रश्न पूँछत ब्रजराजहिं। गयो भूपलै सहितसमाजहिं॥
निज समीप हरि कहँ बैठारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥
दो॰ बाह्लीक भीषम करण द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैंधव शकुनि बैठे सभा निकेत॥
... अरु शल्य जानु सब कोऊ। भूरिश्रवा हलम्बुस दोऊ॥
पुत्र पौत्र भूपति के जेते। बैठे दुर्योधन ढिग तेते॥
बिन्दु निबिन्दु अवंती राजा। मगहराज तेहिसभाबिराजा॥
भूप कलिङ्ग और कृतवर्मा। नृपतिबृहद्बल सहित सुशर्मा॥
जयनराज शशिबिंदु नरेशा। नृपति सुलूक बनाइ सुवेशा॥
औरो देश देश के नायक। दुर्योधन के सकल सहायक॥
हरि आगमनसुनतसजिसाजा। धृतराष्ट्रकगृह जुरो समाजा॥
यथा योग्य बैठे नृप भारी। बिदुरसभा बिधिवत बैठारी॥
बैठे भूप सहित बनवारी। सञ्जय नृप के बैठ पछारी॥
दो॰ अस्थित अति आनन्द ते नृपसमीप घनश्याम।
हरिदक्षिणदिशिसात्यकी लखैत्रिलोकनिवाम॥
यदुनन्दन दिशि बारहिंबारा। निरखतबिदुरअनंदअपारा॥
... निमेष न यकटक ठाढे। मानहुँचित्रमांभलिखिकाढे॥
हरि छबि देखत चप अनुकूला। जनित सनेह देह सुधिभूली॥
क्षणक्षण प्रभुपद मञ्जु कपोला। अमंतबिदुरचितप्रेमहिंडोला॥
देखत होत न मन संतोखा। यथाअडोल खेलको धोखा॥
बिदुर दशा जब कृष्ण निहारी। करणहिंनिकट लीन्हबैठारी॥
... अरु द्रोणबिदुरदिशिदोऊ। देखि सप्रेम सराहत सोऊ॥
धन्य बिदुर बिज्ञान निधाना। नरतन पाइ भक्तरस जाना॥

काम क्रोध तजि सब संसारी । भजत सदा ...

दो० विषरसइव त्यागी विषय चरणकमल लौलाय ।
रहत शरण यदुनाथकी नाते नेह विहाय ॥

कृपादृष्टि प्रभु विदुर विलोकी । भरे मोद मन कहेउ विशोकी
हरि की देखि प्रीति अधिकाई । अति अनंद नहिंहियेसमाई
गात्रगण मन मोद अपारा । पुलकावली नयन जलधारा
देखत रूप चक्षु पल रोके । सुरसिहात तेहिभागविलोके
कह मुनीश यह कथा सुहाई । तुव हित हेत भूप मैं गाई
अव मैं कहब विचित्र कहानी । सावधान सुनु नृप सज्ञानी
सुनतरहत नहिं अघलवलेशा । शोक मोह भ्रम मिटै नरेशा
धृतराष्ट्र अति आदर कीन्हा । भोजन हेत उतरहरि दीन्हा

दो० प्रीतिनिरंचक तुमविषय नहिंहमरे आपांति ।
कौन हेत कीजै अशन सुनहु भूपतापांति ॥

कहेउ भूप सुनिये जगतारण । तुमतापांति कहोकेहिकारण
सुनिनृप वचनकहत हँसिकेशो । सुनहु भूप तब मिटै अँदेशो
हस्ती नाम भरत कुल जायो । नगर हस्तिनापुरी बसायो
तरणि सुता ते भयउ बिबाहू । तापत नाम विदित सबकाहू
तिन यह कौरव बंश चलायो । ताते तुम तापती कहायो
सुनि हरि वचन भेद सबजाना । धृतराष्ट्र मनमहँ सुखमाना
कथा अपर तब श्री मुख गाई । सुनिसुखलहो सभासमुदाई
अमृत सरस कृष्ण मुख वानी । भीष्मविदुर सुनतसुखमानी
कह वैशम्पायन सुनु राई । कथा विचित्र श्रवणसुखदाई

दो० वृद्धिचक्षु बोले बिहँसि । कहिये दीनदयाल ।
केहि विधिते तपतीवरी सुनिहस्तीमहिपाल ॥

केहि विधिते भाभूप मिलापू । ... उतप...
सुनिनृप वचन कृष्ण अनुरागे । कथा ...
रविमण्डल होइ जात वराकी । भये दिनेश काम ...

म बाण ताहू के लागा । रविदिशि देखिभयोअनुरागा ॥
। चरित्र सुरनायक जाना । दीन्हो शाप क्रोधउरआना ॥
धरिमानुषतनह्वै व्यभिचारिणि । वर्ष प्रयंत रहो अपकारिणि ॥
है मानुषी रूप सोइ दारा । रविमंडल महँ करत बिहारा ॥
गेच्यो शाप काल जब बीता । तहाँ गर्भपुनि सुरपतिमीता ॥
भई सुता कर्दम ऋषि जानी । सो उठाय निजआश्रमआनी ॥
गई सुरेश भवन पुनि बाला । कीन्हो मुनिकन्या प्रतिपाला ॥
शशिसमबढ़तकढ़तद्युतितनकी। जगरमगरजिमिदामिनिघनकी
धेरनरहतलखिमतिमुनिजनकी। होतलाजबशनारिअतनकी ॥
दो० तरणिप्रभातन शशिवदनि मृगनयनी कटिछीन ।
पीन पयोधर मधु अधर षोड़श वर्ष नवीन ॥
तेहि पटतर रंभादिक नाहीं । सुरी किन्नरी देखि लजाहीं ॥
तत स्वर्ण आभा तन जानी । तपनी नाम धरो मुनिज्ञानी ॥
हस्तीभूपति फिरत शिकारा । रविनन्दनिगइ विपिन बिहारा॥
औचक मिले पंथ महँ सोऊ । देखि परस्पर बरबस दोऊ ॥
राजकुँवर रविजा अवलोकी । देखत रूप दृगंचल रोकी ॥
तरुणवहिक्रम तरणिकिशोरी । दामिनि वर्ण देह अतिगोरी ॥
पहिरे तन शुचि वसन सुरंगा । मणिगणखचितविभूषणअंगा॥
इंदु वदनि मृगशावक नयनी । भृकुटीकुटिलविलोकिप्रवीनी ॥
लोल कपोल हँसनि मृदु बंका । दमकतश्रवण तड़िततटंका ॥
अधर प्रवाल लाल अरुणारे । अहिउपमालम्बितकचकारे ॥
दाड़िम दशन नासिका नीकी । देखत कीर तुंड मति फीकी ॥
कंबु कंठ अरु बाहुमृणाला । कोमलकलितकमलकरलाला॥
श्रीफल से कठोर वक्षोजा । गेंदखेल जनु रच्यउमनोजा ॥
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा । लचकतपुनिपुनिकचघुंघुवारा॥
शुभनितम्ब पुनि नाभिगँभीरा । देखि भूपमन मनसिजपीरा ॥
मनो मनोज कुसुम शरलीन्हा । बाणनमारिलक्षितलिकीन्हा ॥

दो० सुघर पेंडुरि पद कमल सूक्षम अँगुली बीश ।
कदलिपत्रसमपीठिपुनि जनु बिरचीजगदीश ॥
बीसअँगुलीकमलकर लसत बीसनखलाल ।
बीसकलाजनु भौमधरि करतप्रकाश विशाल ॥

राजकुँवर तन शोभा भारी । देखि कामवश तरणिकुमारी
वय किशोर तन सुन्दरताई । वरणि न जाइ देखिसनभाई
कीट मुकुट शिर ऊपर धारा । जगमगातमणिगण उजियारा
आननमनहुँशरदशशिमंडल । झलझलातकाननदोउकुंडल
भृकुटी कुटिललसतयहिताका । बिनगुणमनहुँमनोजपिनाका ।
नासा की उपमा कवि गावत । अतिविचित्रशुकतुंडलजावत ।
दृगकछुश्याम कछुकअरुणारे । सोहत जनु बंधूक अतिकारे ॥
सोहत कच मेचक मुखनेरे । अतिहितहेतुजनुशशि अहिघेरे ॥
वृषभ कंध युगबाहु विशाला । कम्बुककंठ द्विरद मणिमाला ॥
वक्ष विशाल नाभि गम्भीरा । कटि केहरि जंघा विस्तीरा ॥
अरुणचरणकरअरुणसोहाये । अमल कमल शोभा दर्शाये ॥

दो० मनसिजसरिससहीपसुत । रूपशीलगुणगेह ।
नखशिख देखि अशेषछवि तपती भई बिदेह ॥

देखि भूपसुत तरणिकिशोरी । जनित सनेह देह भै भोरी ॥
शीशफूल कानन ताटंका । अतिप्रकाशजनुबिज्जुदमंका ॥
मुक्तमाल उर मणिगण हारा । जनुकर निकर निशेषपसारा ॥
अंगनजटितललितकरभूषण । करत प्रकाशकमलपरपूषण ॥
दशो अंगुलिन महँ दश मुद्रा । चलत हलतब्राजत कटिछुद्रा ॥
आस पास विछिआ टोरवारे । पायँ पंजनी नेवर न्यारे ॥
वसन विभूपण बेस नवेली । पूंछत भूप बिलोकि अकेली ॥
की तुम राजसुता सुरकन्या । कवनहेतुकेहिफिरत अरन्या ॥
तुववश भयो प्राण अबमेरा । कवनिउँयतनफिरतनहिंफेरा ॥
ताते कहो हमारो कीजे । अब गन्धर्व ब्याहकरि लीजे ॥

तुमहिंविलोकिसदनधनुलीन्हो। शरनमारि जर्जर तनुकीन्हो॥
मूरि विशल्यकरन तुम देही। परसत मिटेव्यथा तन येही॥
दो० सुन्दरसरलशरीरतव जिमिमनसिजकीपास।
फँसो जाइ तावीच मन देखि मनोहरहास॥
तरणिसुता नृपसुत वशकीन्हा। नृपकिशोरतेहिचितहरिलीन्हा॥
निजवश रहो न कछु ताहू को। फेरे फिरत न मन वाहू को॥
दूनों तन मनोज वश भयऊ। तहँ गन्धर्व व्याह करि लयऊ॥
रह करतव कर्दमऋषि जानी। दीन्हीसोंपि नृपहि गहिपानी॥
ऋषि भूप तेहि निजगृह आनी। ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी॥
दो० हस्ती नृपके तनय कुरु पतिनी ते उपतीय।
तिनकेसुत शंतनुनृपति तेहिते तुम तपनीय॥
शंतनु सागर को अवतारा। भयो बड़ो तेजसी भुवारा॥
गंगासागर को भा संगम। तेहिते भीषम अविचलजंगम॥
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी। जबसुरसरि निजधारसमानी॥
ताको सत्यव्रती अस नामा। चित्रांगद सुत बल के धामा॥
चित्रवीर्य पुनि दूसर बेटा। भयो भूप संग्राम झपेटा॥
दो० चित्रवीर्य के पाण्डु नृप चित्रांगद के आप।
हौ एके कछु भेद नहिं ताते करहु मिलाप॥
येयह आपुसकी नहिं नीका। छांड़हु अवसववातअलीका॥
कलहतुम्हार न काहुहिभावत। ताते वार वार हम आवत॥
रिमुख हेरि कहत दुर्योधन। तुम आये इतकवनप्रयोजन॥
ह हरि हमें युधिष्ठिर राजा। पठयेतितुम्हरेढिग यहिकाजा॥
हितिकि हमकहँ जुवाहरायो। छलवलकरिकै वनहिंपठायो॥
गे बर्ष त्रयोदश बीती। अबहू तो तजि देहिंअनीती॥
अब कहा हमारो कीजै। आधी भूमि बांटि नृप दीजै॥
र बन बसि बहु सहे कलेशू। तेहिते तुमकहँ उचित नरेशू॥
जो नाहिं तुमहिं समिआई। तौ हम कहैं करो तुम राई॥

पञ्च ग्राम पाण्डव कहँ देहू। कलह निवारण होइ सनेहू॥
इंद्रप्रस्थ तिलप्रस्थ वरुणागर। वाराणसि हस्तीपुर आगर॥
इनके दिये मिटत है रारी। नातरु होइहि अनरथभारी॥
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना। नारायण में कौरव जाना॥
तेरे कहे देहु सब देशू। हमजो कहें करिय सो भेशू॥
सुई अग्र महि उठो जो जेतो। बिना युद्ध हौं देउँ न तेतो॥
ग्वाल बंश हो जाति के नीचा। परत आय राजन के बीचा॥
यह कहि कह्यो दुशासन भाई। करगहि याहिदेहु दुरिआई॥
कितो पकरि कारागृह दीजै। मिटै प्रपंच बात यह कीजै॥
वे हमते सरवरि कब करते। जो पै उनकर पक्ष न धरते॥
इनहीं के बल वे बरिआरा। यहु अहीर है बड़ा गवाँरा॥
नृप रुखलखि हरिअन्तर्यामी। भेअतिउग्र उरगअरिगामी॥
उठे तुरत तब शारँगपानी। कहितुवमृत्युनिकटनियरानी॥

दो० हरिसँग भारद्वाज सुत गंगासुत गांगेय।
बाह्लीकविकरणकरण चलेसंग उठितेय॥
करतबतकहीसबनते चलेजातघनश्याम।
राखिलोगसबद्वारपर गयोविदुरके धाम॥
श्वेत केश शिर शोभिये ओढ़ेश्वेतदुकूल।
देखो कुन्ती जायहरि सादरके समतूल॥

पितास्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा। आशिष दियो होयमनकामा॥
हरिहिबिलोकि नयनजलछाये। माथ सूंघि हरि कंठ लगाये॥
कुशल रहे बसुदेव कुमारा। मैं अनाथ के प्राण अधारा॥
बोले कमल नयन यह बाता। तुम्हरी कृपा परम कुशलाता॥
धर्म नरेश समेत कुटुम्बा। कह्यहुप्रणामसुनहु अबअम्बा॥
सुनि यहबचन भयो परितापा। लागी कुन्ती करन बिलापा॥
उरदुख दुसह बरतज्वरहोली। पुनि कुन्ती श्रीपतिसों बोली॥
सबकोउ कहत पंचसुत शूरा। हमरे जान भये अब कूरा॥

राज तजी सुत काम न आये । विदुर अन्नदै हमहिं जिआये ॥
अब तुमते कहियत वनवारी । तुमहूं छांड़ी सुरति हमारी ॥
पालन योग्य तिहूंपुर दारा । बाल पिता तरुणी भरतारा ॥
दो० वृद्ध बैस सुत चाहिये करहिं मातु प्रतिपाल ।
अपनो काटो कृष्ण हम विदुर अन्नतेकाल ॥
धर्मराज छांड़ी सब शर्मंहि । त्यागकीन्ह क्षत्रिनकेधर्महि ॥
नृप विराट की करि सेवकाई । राज तजी अरु लाजविहाई ॥
उदरपालिसुतदिवस वितावहिं । दुर्योधन भयमानि न आवहिं ॥
तिहि कथा यककहत बखाना । यद्यपि सबजानत भगवाना ॥
विदुला नाम एक क्षत्रानी । राजा शक्तिकेतु की रानी ॥
रहति नगर अवंती वासी । सबचरित्रहम कहतप्रकासी ॥
महिषमती भूप बलधामा । ताको चन्द्रसेन असनामा ॥
तेज दलसाजि निशानवजाई । घेरो नगर अवंती आई ॥
शक्तिकेतु तिसरे भूपाला । भयो युद्ध जूझे तेहिकाला ॥
लूट्यो नगर लगायो आगी । गर्भवती विदुला उठिभागी ॥
चली पराइ दुखित अधिकाई । दारानाम नगर चलिआई ॥
ब्रह्मदत्त तहँ रह्यो भुवाला । सबप्रकार कीन्हो प्रतिपाला ॥
दो० यद्यपिजानत सकलतुम तदपिकहों गोपाल ।
दुखतरुणीकहँ त्यहिनगर बीतिराये कछुकाल ॥
उपजो ताके सुत अभिरामा । ताको कृष्ण युद्धजितनामा ॥
बाढ़ विलोकि मातुसुखपावा । शशिसमबढ़तबारनहिंलावा ॥
दिनप्रति नगर बालकनसंगा । खेलत रहत विहंग पतंगा ॥
मातु पढ़ायो पुनि धनुवेदा । समरथदेखि तज्यो मनखेदा ॥
तहिं बोलाइ मातु उपदेशा । तुम पितु रह्यो उजेन नरेशा ॥
महिषमती भूप बध कीन्हा । राजतुम्हारछीनि तेहिलीन्हा ॥
अब सुत और न बादविचारहु । लेहु भूमि निज अरिकामारहु ॥
जबलगिमरत न तुवपितुघाती । तबलगि पुत्रजुड़ात न छाती ॥

शत्रु तुम्हार जियत संसारा। नाहक क्षत्रिवंश अवतारा॥
दो० कहउ भूपसुत मातुते सुनिये वचन प्रमान।
मैं दलवलअरुद्रव्यबिन अरिसँग सेनमहान॥
तासु मातु हरिकहत रिसानी। वालक ते वोली मृदुबानी॥
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा। ताते मन मानत तुम भर्मा॥
लड़े अकेल न मनभ्रम आने। कीट समान कोटिदल मानै॥
ताते तात तजो सब शोका। जीते सुयश मरे सुरलोका॥
मातुवचनते उठिरणकीन्हा। करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा॥
करिसाहस सोइभयउभुवाला। और कथा सुनु दीनदयाला॥
जैसे धर्मराज अवतारा। सोहरिसुनहु सकलव्यवहारा॥
भयो हमार भूप नरनाहू। दीन्हो दंड धरा सबकाहू॥
दो० शशिसमकीरति लिखिरही भानुसमान प्रताप।
देव बिटप समदान कहँ बलसुरेश जनुआप॥
राजकरहिं नृपसुख अधिकाई। बुद्धिचक्षु की फिरी दोहाई॥
सचिवविदुरअतिभयउसुजाना। धर्मशील विज्ञान निधाना॥
वाह्लीक गंगासुत दोऊ। अरिघाजक जानें सब कोऊ॥
आज्ञाभंग जीवन दिशिहोई। आनें बांधि होइकिन कोई॥
एकदिवसनिजसहित समाजा। सभामध्य नृप पांडुबिराजा॥
भीषम ते तब बचन उचारा। सुनहु मनोरथ सुभग हमारा॥
महिपर्यटन होत मन मोरा। होइ पिता जो आयसु तोरा॥
दो० हँसिबोले गांगेय तब जो इच्छा मनमाह।
सेनलेहु चतुरंगिनी शुभ कीजे नरनाह॥
भीषम की आज्ञा जब पाई। चल्यो भूपसँग दलसमुदाई॥
माद्रीसंगसहित न्वहिं लीन्हा। पटह बजाइगमनपुनिकीन्हा॥
पूरब दक्षिण पश्चिम देशा। जीति जीति लियदण्डनरेशा॥
जो कछुवस्तु जीति नृपपायो। बुद्धिचक्षु कहँ सकल पठायो॥
सेन समेत बजाइ निशाना। उत्तरदिशि नृप कीन्हपयाना॥

लै दण्ड भूप सब आये। द्वैपायन के शीश नवाये॥
थायोग्य सब ते नृप लीन्हा। तिनकहँअभयदानपुनिदीन्हा॥
तीन्हे संग चमू चतुरंगा। चढ़्यो भूमिगिरिशृंगउतंगा॥
रि दर्शन नारायण केरा। शैल हिमालय कीन्हे डेरा॥
हँ सबनृप परबर्तिया आये। दोऊपायन शीश नवाये॥
दो॰ जलसुन्दरअरु फल सुभग फूले कुसुमसुबास।
गिरिपरदेखि सुपास अति कीन्ह नरेश निवास॥
क दिवस मृगया कहँ राजा। गयो भूपसँग सुभटसमाजा॥
हँ ऋषि परम गहन यकरहई। कामविवशनिजतियसनकहई॥
ानध्यानतन सकल भुलाना। बासर महँ मांग्यो रतिदाना॥
ुनिद्विजवचनकहत तियसोई। रति दिन नाथ पशुनकोहोई॥
ह द्विज नारि मृगातनलीजै। हम मृगहोइ तुमतेरतिकीजै॥
ाम बाण तुम्हरे उर लागा। ज्ञान विवेक सकलतुमत्यागा॥
सकहि तुरत मृगीतनधारा। ह्वैमृगतवद्विज करत विहारा॥
तिको बचन तजै जो नारी। परइ नरक पावइ दुखभारी॥
दो॰ यहविचार द्विजत्रियकियो पियको वचनप्रमान।
गयो पांडु ततक्षण तहां सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
॥ द्वाविंशोऽध्यायः॥ २२॥
दो॰ कह कुन्ती गोपाल ते सुनिये दीनदयाल।
मृगविलोकिभूपालतब तज्योबाणततकाल॥
ागत बाण विकल ह्वै घूमी। मानुपरूप पर्यो द्विज भूमी॥
िरतहितुरतप्राणतजिदीन्हा। ऋषितरुणीआतिरोदनकीन्हा॥
ह्यो वचन करि क्रोधअपारा। ले मम शाप भूप चंडारा॥
सो रतिकरत मर्यो पति जैसे। तज्यो नरेश प्राण तुम तैसे॥
ायो सिविर मानि गिल्लानी। करे न सुरति भूप भयमानी॥
याहिविधिशापत्रिप्रतियदीन्हा। सो नरेश मोते कहि दीन्हा॥

भयो भूपउर नाथ वियोगा। बिदाकिये घरकहँ सबलोगा॥
दोउ तिय संग भये बनवासी। उदासीन जिमि फिरैंउदासी॥
परम गहनगिरिदेखत फिरहीं। जपतप योग नेम व्रतकरहीं॥
दो० चन्द्रभाग पर्वतगयो लै युवती युगसाथ।
विरची पर्णकुटी तहां कीन्ह वास नरनाथ॥
पावन मानसरोवर तीरा। करहिं महातप सुनु यदुबीरा
मास नन्दिनी करि असनाना। ऋषिसमाजनितसुनहिंपुरान
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं। होतअस्त रविअशनाकरहीं
एक दिवस पर्णशालहि आये। मोहिं विलोकि नयनजलछाये
मैं पूछा कयहि हेतु उदासा। तबनरेश इमिवचन प्रकासा
संतति हीन हवों मैं रानी। करहुँ नरतिहिशापभयमानी
तब श्रीपति मैं धीरज कीन्ह्यों। सिखयेमंत्रऋषयकहिदीन्ह्यों
सुर आकर्षण विद्याजानी। सुनत नरेश धीरतब आनी।
आज्ञा दीन्ह करो सुर जापू। तब मैं कह्यो भूप यह पापू॥
पतिव्रता परपति मन देई। सुकृत जाइ जग अपयशलेई॥
वेद पुराण विदित कह राजा। होइ दोष नहिं संतति काजा॥
तनसुख हेतु नारिजो करही। सुकृत नशाइ नरकसो परही॥
दो० सुरआकर्षण जपहुतुम ममअनुशासन मानि।
करहु वंशउद्धार अब तजिमनकी गिल्लानि॥
पति निदेश मेटो नहिं जाता। धर्माऽकर्ष जप्यो सुरत्राता॥
आवत धर्म न लागी वारा। दोहद भयो विदित संसारा॥
जादिन जन्म युधिष्ठिर लीन्हो। अतिउतसाहपांडुनृप कीन्हो॥
छाये नभ पथ गगन विमाना। सुरसुन्दरी करहिं कलगाना॥
शंख बजाइ दुन्दुभी दीन्हो। पुहुपमयी वसुधा सबकीन्हो॥
तबयह भयी गगनमहँ बानी। तुमसुतभयो भागवत रानी॥
धर्म स्वरूप भूप अति भारी। एकछत्र वसुधा अधिकारी॥
होइ बालक बजितम दानी। नारद सम होइ बिज्ञानी॥

हरि सेवक प्रह्लाद समाना। सुरपति सम होई बलवाना॥
दो॰ रविसुत सम जगनाथकह तेज तरणि को रूप।
जाके सम तिहुँलोक महँ होइ न औरो भूप॥
धर्मशील अतिकुल उजियारा। होइ अजीत शत्रु संसारा॥
याके राज अकाज न होइहि। होइनिश्चिंतप्रजासुखभोगिहि॥
कहिमृदुगिरा बोधकरि मोका। गयेविबुधसंत्रनिजनिजलोका॥
जूप व्यसन करि कर्म अलीना। गये धर्मसुत राज विहीना॥
यह हरि अद्भुत बात अनूठी। होइगइ गिरा सुरनकी झूठी॥
यहिप्रकार बहुकाल बितायो। नृपसमोद प्रणशालहिआयो॥
ताते बिहँसि कही नरपालक। अबतुमप्रकटकरहुयकबालक॥
बिना सहायक राज न होई। ताते चहिय भूप सुत दोई॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जगभाषा। पूरणकरहु मोरिअभिलाषा॥
यहिविधि नृपसंभाषण कीन्हा। सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा॥
दो॰ मैं नहिं आज्ञाकरिसकौं मानतहौं मन भीति।
उचित सिखावन नाथतुम यहकुलटनकीरीति॥
सुनि नरेश बोल्यो तब आपू। देवपरस कीन्हे नहिं पापू॥
वाकर्षण सब तुम जानहु। करिजप तप देवनकोआनहु॥
पवनमंत्र मैं सुमिरण कीन्हा। आइ प्रभंजन दर्शन दीन्हा॥
येरमित आनँदअति जीमा। दोहदउभयप्रगटभय भीमा॥
यो गगन सुर गिराप्रमाना। होइहिबालक अतिबलवाना॥
हार्वीर जानिहि संसारा। याते सब अरिकुल संहारा॥
रवसहित कुशल ना उनके। हरि भे वचन झूठ देवनके॥
हिविधि वर्षबीति यक गयऊ। तादिन नाथ चरित यहभयऊ॥
णकुटी ते उठेउ समोदा। लीन्हो भीमसेन कहँ गोदा॥
दो॰ जाइ बिलोक्यउ रुचिर यक चन्द्रभागकी शृंग।
तापर भई अरूढ़ मैं बालक लियो उछंग॥
ई बालधी सिंह फटकारे। गर्जत सम्मुख चला हमारे॥

मंसभीत तन सुधि बिसराई। परा भीम गिरिगोद बिहा
होइ सरोप केहरि की ओरा। चला निशंक करत खघोर
हाली धरा शिलागे फूटी। जहँ तहँ परे वृक्ष बहु टूटे
गर्जत भीम भयउ अति शोरा। गिरेउ सिंहमहि रहेउनजोर
देखि समीप वारनहिंलाग्यो। अतिसभीतपुनिसोउठिभाग्य
लक्ष भवन महँ खंभ उपारा। जरत बचाइलीन परिवारा
एक चक्र वकवदन विदारा। दैत्यहि एक विपिनमहँमारा
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा। असबलविदितभीम संसारा
सो सुधि भीमसेन कहँ भूली। की हरि भई बांह युगलूली
अवसुनि अतिकीचकसौभाई। मारेउ भीमवार नहिं लाई
जरासंध कीन्हो दुइ फारा। अतिबलवान न लागी बारा
दो० अति निलज्जभे पांडुसुत भई टेककी हानि।
अब आवतनहिं युद्धकहँ दुर्योधन भयमानि॥
पकरेउ केश दुशासन आनी। भई विकल पांडवकीरानी॥
सकेउ न देखिभयो मनमापा। तादिन भीमसेन प्रणभाषा॥
तुव शोणित अस्नान करावों। तादिनसुतत्रिय केश बँधावों॥
क्षत्री करै न प्रण प्रतिपाला। कहीनिलजत्यहिदीनदयाला॥
जियतदुशासनअरु कुरुराजा। वहुअतिअधसनआवतलाजा॥
अबलगिसुनत रहीसुत शूरा। वसुधा मध्य शब्द बहु पूरा॥
अब सुनियत अक्रूर अमानी। पूरि रही जगमहँ यह बानी॥
त्याग्योप्रणमन लाज न आई। भईकान्ह अब जगत हँसाई॥
दो० यद्यपि जानत नाथ तुम तीनिकाल व्यवहार।
तदपिकहत जेहिविधिभयो पारथको अवतार॥
मोते कही भूप यह बानी। वचन हमार सुनहु सुखदानी॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई। अब सो करिय मध्यसुत होई॥
सुनिनृपगिरा शीशधरिलीन्हा। सुनासीर आकर्षण कीन्हा॥
आवत शक्र न लागी वारा। दोहद भयो विदित संसारा॥

शुभदिनशुभघटिकाजवभयऊ । तादिन जन्मपार्थजगलयऊ ॥
सुरन सहित सुरनायक आयो । देखनको विमान नभ छायो ॥
विश्वावसु घटसुत गन्धर्वा । गावत विविधराग सुर सर्वा ॥
मंजुघोष मेनका घृताची । तोरहिं ताल तानगति नाची ॥
बाजहिं पटह शंख करनाला । वर्षहिं विवुध कल्पतरुमाला ॥
दो० विबुध नटी आई सकल करत सुमंगल गान ।
पूरिरहो आनंद जग सबलसिंह चौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृतेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

यहिविधि बीति यामयकगयऊ । मधुरगिरा नभमण्डल भयऊ ॥
होइहि बालक अति धनुधारी । परम धर्म श्रीहरि हितकारी ॥
ब्रजमहँ होइ कृष्ण अवतारा । सो याको होइहै रखवारा ॥
हम सब देवन के तारायण । ते दोऊ हैं नर नारायण ॥
नर अर्जुन नारायण यदुपति । ये दोऊ जानौं एकै गति ॥
कह्यो करण शूली यह नामा । गये अमरसवनिजनिजधामा ॥
सुवबललीन जगत महँपारथ । यह मेरोतन और अकारथ ॥
भयो न अमर वचन कछुसांचा । मुरेउ न कर्ण आजुलगवांचा ॥
देयो काढ़ि दुर्योधन राई । वनवनफिरतलाज नहिंआई ॥
सी सहै होइ जो हीना । हेबलिष्ठ अरु अस्त्र प्रवीना ॥
दो० गर्वकियो हनुमान से बांध्यो सागर वारि ।
वाणन कीन्हो वाट नभ हाथीलियोउतारि ॥
असुर नेताचकवचवध कीन्हा । धनपतिजीति दण्डलेलीन्हा ॥
के बन खाण्डीव गरेरा । नाश्यो गर्व पुरन्दर केरा ॥
पद नरेश स्वयम्वर मांही । भेदि मत्स्य द्रौपदी विवाही ॥
हकील रण शम्भु रिझायो । ह्वै प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो ॥
कलधरानिजबलबशकीन्हा । द्रुपदजीति गुरुदक्षिणदीन्हा ॥
। दैत्य मानव बल भारी । तुव प्रसाद जीते बनवारी ॥

गये साजि कौरव दल भारी। भीषम द्रोण करण बलभारी
तें अर्जुन बिराटपुर जीते। अबक्यहिकाजहोत भयभीते
क्यहिकारणअब वार लगाई। मिलि रणभूमि करे कदराई
कह कुन्ती सुनिये यदुराई। पारथ ते कहिये समुझाई
दुर्योधनभय मनहिं न आवत। अपने कुलहि कलंकलगावत
सिंहवंश महँ भयो सियारा। देखत तुमहिं नग्न भै दारा
क्षत्रिधर्म दीन्हो सब खोई। बांस वंशमहँ भयो घमोई
तुमअतिनिलजलाजसबत्यागा। उपजे हंसवंश जिमि कागा
शत्रु तुम्हार शीशपर गाजत। देखत नयन नेकनहिंलाजत
की तुम मरहुसकल बिषखाई। की आयुध धरि लेहु लराई
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा। तुमअतिनिलजनआवतलाजा

दो० कीयदुनायक जायतुम उनहिं कहो समुझाय।
करें युद्ध नत नाथ मैं मरों हलाहल खाय॥
यहिप्रकार कहि कृष्णते हृदय बहुत संताप।
सुधिकरिकुंती सुतनकी लागी करन बिलाप॥

कह्यो कृष्ण माता सुनिलीजै। दिनदश पांच धीरमनकीजै
बंधुन सहित धर्म नरपालक। आवतहैं कौरवकुल घालक
करि है युद्ध बिजय सबहीते। होइहैं काज सकल मन चीते
सुनिहरिवचन धीर मनआनी। लगीकहननिज प्रथमकहानी
ममसुत देखि हृदय अकुलाई। माद्री निकट भूप के आई
सुत न भये दारुण दुखब्यापा। नृपसमीपअतिकीन्हविलापा
कारण पूछि भूप दुखपावा। निकटबोलिम्वाहिंबचनसुनावा
बिप्र बधू की शाप सयानी। तुमकहकह्यो बातसबजानी
मोते कछु निसरी नहिं काजा। असकहिभयेसकलदिगराजा
करहु उपाय तोरि यह दासी। उपजै सुत पावै सुखरासी
तबहरिदुखित भये मैं जाना। धीरज दीन कीन सनमाना॥
आवाहनकरिअश्विनिकुमारा। आये धराणि न लागी बारा॥

बिबुधवयदमिलिंन्योमसिधायो। भयो गर्भ माद्री सुखपायो॥
दो० भे अनन्द भूपाल मन सुनहु देवके देव।
अतिविचित्र तबमाद्रिसुत भये नकुल सहदेव॥
एकदिनभयो चरित भगवाना। मुनि समाज नृपसुने पुराना॥
भोजन को मैं साज बनावा। रह्यो शेष दिन भूप न आवा॥
पहर भई नाथ मोहिंते। करते अशन भूप दिन बीते॥
माद्रीकरि शृँगार गिरिठाढ़ी। तनतेनिकसिज्योतिअतिबाढ़ी॥
लखिस्वरूप दिन नायक मोहे। भये न अस्त यान पर सोहे॥
भोजन कीन्ह भूप सुखपाई। मद्रसुता प्रणशालहि आई॥
होतहि अस्त ओट रविभयऊ। दीखनरेशशयननिशि गयऊ॥
कारण हमहिं महीपति पूछा। मैंकहिदीन्हसकल छलछूछा॥
दो० भावी कौनिउ यतनते मिटि न सकै यदुवीर।
कामविवश नरनाह ह्वै सके न मनधरिधीर॥
मोते कहेउ भूप बहु बेरा। माद्री विवश भयोमन मेरा॥
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई। सुनिश्रवणकछुमन नहिंआई॥
मद्रसुताते करि अनुरागा। परसत देह भूप तन त्यागा॥
माद्री सहितमोहिं दुखव्यापा। उच्चस्वरकरि कीन्ह विलापा॥
रोदन सुनत महामुनि आये। कोल किरात भील सबधाये॥
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी। आरत शब्द रहा तहँ पूरी॥
जेमुनि नृप के परम सनेहीं। ज्ञानकथा कहिधीरज देहीं॥
म्वहिं प्रबोधकरि चेत बहोरी। चितावनायसि काठ बटोरी॥
दो० जरनचली मैं भूपसँग पाछिलि प्रीति दृढ़ाय।
मद्रसुता तब विकलह्वै गहेचरण लपटाय॥
हमरे हेत भूप तन त्यागा। मोकलंक अरु पातकजागा॥
तुम्हरे पंचसुतन सम प्रीती। तसिहमरेनहिंनिपटअनीती॥
जो तुमरहौ करो प्रतिपालक। जौलगि पुत्रहोयँसबबालक॥
म्वहिं प्रबोधि लैकरि नृपअंगा। चढ़ी चितालै शीश उछंगा॥

त्यहि क्षणअन्यभूपकी भामिनि। प्रियके संगभई सह...
चढ़ि विमानपतिसँग सुरलोका। गई भई सो ...
जीवतरहिउ छांड़ि निज नेता। हमतजिलाजदुसहदुखहेत
सुतन त्यागिकृतजन्म खुवारी। तिनहरितजी वृद्ध महता
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा। करतयुद्ध नहिंमानि अँदेश
क्षत्री धर्म दूरि है याते। विरद सँभारि लरो सुतता
नाहिन हीन वंश अवतारा। भे कादर सुतमनहिं विचा
कुरुवंशिन कर अनुचर होई। अवलगयुद्ध सकात न सो
तुम शन्तनु नृपके कुलमाहीं। जासु युद्ध सुरअसुरसकाह
मातु पक्ष नहिंहीन तुम्हारा। है यदुवंश विदित संसार
शूरसेन के हो तुम नाती। तिनकोसुयशविदितसबभां
पुहुमी के राजा बहुजीते। बचे रहत अजहूं भय भीत
दो० मातुपक्ष पितुपक्ष अव विदित सकल संसार।
शूरवीर अरुधीरधर तुम सुत भयो लँड़ार।
कहाकृष्ण समुझायतुम यहसिख मानिहमारि॥
करहु राज्यतुमआपनो अवनिज वैरिनमारि॥
जोचुपरहो साधिनिजमौनहि।मिलहिनराज्यकरहुवनगमनहि
अरु सनाह त्याग करि देहू। भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू
कितौकरहुतुम मोरि सिखाई। मारहु शत्रु सरो मनुसाई
सीन लरहु कौरवसन आई। तो मैं मरहुं हलाहल खाइ
भीमहि कहेउ सँदेश हमारा। कस कादरभा जीव तुम्हारा
शूरवीर तुम्हरी जगलीका। लरतन सुततुमकरतननीका
सबतेमोहिं भरोस तुम्हारा। वलपौरुषकितगयउतुम्हारा
तुम विराटपुर बैठि लुकाने। मिलिहि भूमि नहिंपुत्रडेराने
दो० करत तपस्या चारियुग सबनरेश जेहिलागि।
दूरिबैठि सुतनारि इव राज्यदियो तुमत्यागि॥
रहे बैठि चुप लाज अकाजन। सिखीधनुषविद्या केहि काजन

दा युद्ध केहि काज न सीखा। सो प्रभावकछु नयन न दीखा॥
कहेउ सँदेश भूप के आगे। करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे॥
जो नहिं लरहु मानिडरहारेहु। नारिवचनकरिबनहिंसिधारेहु॥
सतहिं जियतपुत्रग्रहि लाजा। हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा॥
विराट हारेउ कुरुनायक। अबसुतनिफलभयेतुवशायक॥
हप्रथमप्रण सो बिसरावा। भूली वृद्ध मातु रण द्रावा॥
सुते बहुत तुम्हारी आसा। आवतसो न मानि अरित्रासा॥
व दैत्य गंधर्व बलभारी। तुवशर सहित सकैं धनुधारी॥
राज निज युद्ध हरायो। करि मद भंग दण्ड लै आयो॥
र्योधनहि तुम्हारी सरिकै। करहुयुद्ध निजप्रणसुधिकरिकै॥
दो० सोपौरुष भूलेउ नहीं करत युद्ध नाहिं आय।
क्षत्रि धर्म खोयो सकल दुर्योधन भय पाय॥
नहिं लरत देखिदुखमोरा। अर्जुन धनुष बाणधृगतोरा॥
विन आश पुत्र कदराने। कर्णत्राण भय मानि डेराने॥
रित्रियहँसहिंश्रवणसुनिवाता। मरे लाजवश कायर भ्राता॥
त्री धर्म नहीं तन माहीं। तुमअतिनिलजलाजमननाहीं॥
हो सँदेश नकुल सन जाई। जीरण मातु तात बिपखाई॥
ते सुत न और बरजोरा। जीत्यउनृप सबपश्चिमओरा॥
पौरुष तव नाहिं न जानत। तुमहूँ दुर्योधन भय मानत॥
नृपकरे धरती थहराई। लाज तजी अरु भूमि गँवाई॥
शील अतिशय बलदाई। सो तुम वृद्ध मातु बिसराई॥
कहँहरि अतिप्रिय सहदेऊ। भूले हमहिं विपति महँ तेऊ॥
हरि कह्यो हमार सँदेशा। करहु युद्धतजिसकलअँदेशा॥
लिहै राज्य सत्यमत येहा। कै है विजय न कछु संदेहा॥
दो० बहुअधर्म तुम धर्मरत गत विलोक मदमान।
कै है जय संशय नहीं सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

हि क्षणधन्यभूपकी भामिनि । प्रियके संगभई सहगामिनि
दि विमानपतिसँग सुरलोका । गई भई सो परमविशोक
वितरहिउ छांडि निज नेता । हमतजिलाजदुसहदुखहेता
तन लागिकृतजन्म खुवारी । तिनहरितजी वृद्ध महतारी
नराज ते कह्यो सँदेशा । करतयुद्ध नहिमानि अँदेशा
त्री धर्म दूरि है याते । विरद सँभारि लरो सुततातें
हिन हीन वंश अवतारा । मे कादर सुतमनहिं विचारा
हवंशिन कर अनुचर होई । अवलगयुद्ध सकात न सोई
शन्तनु नृपके कुलमाहीं । जासु युद्ध सुरअसुरसकाहीं
तु पक्ष नहिहीन तुम्हारा । है यदुवंश विदित संसारा
रसेन के हो तुम नाती । तिनकोसुयशविदितसबभांती
मी के राजा बहुजीते । बचे रहत अजहूं भय भीते
दो॰ मातुपक्ष पितुपक्ष अब विदित सकल संसार ।
शूरवीर अरुधीरधर तुम सुत भयो लेडार ।
कहाकृष्ण समुझायतुम यहसिख मानिहमारि ॥
करहु राज्यतुमआपनो अबनिज बैरिनमारि ॥
चुपरहो साधिनिजमौनाहि ।मिलहिनराज्यकरहुवनगमनहिं॥
ब सनाह त्याग करि देहू । भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू ॥
तोकरहुतुम मोरि सिखाई । मारहु शत्रु सरो मनुलाई ॥
त लरहु कौरवसन आई । तो मैं मरहुं हलाहल खाई ॥
महि कहेउ सँदेश हमारा । कस कादरभा जीव तुम्हारा ॥
वीर तुम्हरी जगलीका । लरतन सुततुमकरतननीका ॥
तमोहि भरोस तुम्हारा । बलपौरुषकितगयउतुम्हारा ॥
विराटपुर बैठि लुकाने । मिलिहि भूमि नहिपुत्रडेराने ॥
दो॰ करत तपस्या चारियुग सबनरेश जेहिलागि ।
दूरिबैठि सुतनारि इव राज्यदियो तुमत्यागि ॥
बैठि चुप लाज अकाजन । सिखीधनुषविद्या केहि काजन ॥

॥ युद्ध केहि काज न सीखा। सो प्रभावकछु नयन न दीखा॥
इ सँदेश भूप के आगे। करहु युद्ध आनि भ्रम त्यागे॥
नहिं लरहु मानिडरहारेहु। नारिवचनकरिवनहिंसिधारेहु॥
तौहिं जियत्रपुत्रग्रहि लाजा। हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा॥
विराट हरेउ कुरुनायक। अन्नसुतनिफलभयेतुत्रशायक॥
हप्रथमप्रण सो विसरावा। भूली वृद्ध मातु रण दावा॥
तें बहुत तुम्हारी आसा। आवतसो न मानि अरित्रासा॥
दैत्य गंधर्व बलभारी। तुवशर सहिन सके धनुधारी॥
राज। तिज युद्ध हरायो। करि मद भंग दण्ड लेआयो॥
योधनहि तुम्हारी सरिके। करहुयुद्ध निजप्रणसुधिकरिके॥
दो॰ सोपौरुष भूलेउ नहीं करत युद्ध नहिं आय।
क्षत्रि धर्म खोयो सकल दुर्योधन भय पाय॥
तहिं लरत देखिदुखमोरा। अर्जुन धनुष बाणधृगतोरा॥
विन आश पुत्र कदराने। कर्णत्राण भये मानि छपाने॥
रित्रियहँसहिंश्रवणसुनिबाता। मरे लाजबश कायर माता॥
त्री धर्म नहीं तन माहीं। तुमअतिनिलजलाजमननाहीं॥
हो सँदेश नकुल सनजाई। जीरण मातु तात विपखाई॥
म ते सुत न और वरजोरा। जीत्यउनृप सबपश्चिमओरा॥
लपौरुष तव नाहिं न जानत। तुमहूँ दुर्योधन भय मानत॥
तुपकरे धरती थहराई। लाज तजी अरु भूमि गँवाई॥
सुशील अतिशय बलदाई। सो तुम वृद्ध मातु बिसराई॥
कहँहरि अतिप्रिय सहदेऊ। भूले हमहिं विपति महँ तेऊ॥
म हरि कह्यो हमार सँदेशा। करहु युद्धतजिसकलअँदेशा॥
लिहि राज्य सत्यमत येहा। कै है विजय न कछु संदेहा॥
दो॰ बहुअधर्म तुम धर्मरत गत विलोक मदमान।
कै है जय संशय नहीं सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

यह तुम कह्यो द्रौपदीते हरि। कछु दिनरहोहियेधीरजधरि॥
पैहो राज्य साज तुम येहू। प्रभु की कृपा न कछु संदेहू॥
तुम प्रभु धर्मराज समुझाई। करहुयतन ज्यहिहोइ लड़ाई॥
सब जगकहत सुनतकहँखोटी। है विन युद्धबात अब छोटी॥
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा। कृपासिंधु तव धीरज दीन्हा॥
दिनदश धीर धरौ मन अम्बा। मरिहँकुरुपतिसहितकुटुम्बा॥
असकहिकृष्णविदापुनिकीन्हा। करतप्रणाम आशिषादीन्हा॥
दै अशीश कुन्ती सुखपाये। बाहर भवन दयानिधिआये॥
दो० पँवरि द्वारमें आयके रथ अरूढ़ यदुनाथ।
पुर बाहर लग लोगसब गये पठावन साथ॥
भीषम द्रोण विदा हरि कीन्हे। करिप्रणामनिजगृहमगलीन्हे
बाहुलीक त्रिकरन पुरलोगा। फिरे सकलहरिदीन्ह नियोगा
करत प्रणाम करण कहँ जानी। रथ बैठारि लीन गहिपानी
हँसिके कृष्ण कही यह भासा। सुनहु करण पूरब इतिहासा
शूरसेन नृप अतिबल भारे। भये पितामह विदितहमारे
कुंती नाम सुता उपजाई। सो तप हेत नदी तट आई
तहँवां दुर्वासा ऋषि आये। दैव अकर्षण मंत्र सिखाये
एक दिवस सुखता अधिकाई। मंत्र परीक्षा की मति आई
दो० बालभावके व्याजते नहिं कामना विचारि।
जपेउ अकर्षणमंत्रतब दीन्ह्यउ दरशतमारि॥
सहस्र किरणि तनतेज अपारा। भईविकल नहिं रह्योसँभारा
मूंद्यो नैन बैन नहिं आवा। कीन्हप्रभाकर निजमनभावा।
मूर्च्छा विगत नैन जब खोली। तब कुन्तीलज्जितहोइबोली।
यह सुरकीन्हनीकि नहिं बाता। भाकलंकयहि अबपितुमाता।
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई। याते तुमहिं कलंक न होई।
अंग भंग नहिं होइ तुम्हारा। ले तिय आशिर्वाद हमारा॥
भये दिवाकर अंतरध्याना। यह चरित्र काहू नहिंजाना॥

चढ़िविमान रविगगन सिधाये। दोहद भयउ गर्भ तुमआये॥
लज्जित मातु पिता भयमानी। भवन कोन महँ रहेलुकानी॥
चोरवत तुम कहँ कुन्ती जायो। डारि मँजूषा सहित वहायो॥
दो० प्रकट भये तुम गर्भ ते तन द्युति पुंज अपार।
धनुषवाण कुण्डलकवच सहितलीन्हअवतार॥
देखि तरणि सम तेज अपारा। दीन्ह वहाइ सरितकी धारा॥
वहत नदी तनतेज विराजा। जलते प्रकटमनहुँ दिनराजा॥
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा। वहत प्रवाह देखि तेहिंपावा॥
ताकी तरुणिरही विनवालक। लेगाभवन कीन्हप्रतिपालक॥
तुमहो धर्म्मराज के भाई। तजहु शत्रु सँग करहुसहाई॥
वचनहमार समुझिमन अपने। और विचारकरहुजनि सपने॥
सुनेउ श्रवण श्रीपतिमुखवाता। वोले वचन करणमुसक्याता॥
सुनी श्रवण तुमते जव वानी। निश्चयमातु प्रथमहमजानी॥
जानेउ धर्म्मराज हम भाई। भयो वहुतसुख कहा न जाई॥
क्षत्रीधर्म्म नाथ यह नाई। कौरव तजि पांडवपहँ जाई॥
सहित विवेक कहो हरिजोई। तुवशिषमानि करव हमसोई॥
चहो नाथ जो सत्य छड़ाई। सो हम करव न कोटि उपाई॥
यहकहिकरणमौनगहिरह्यऊ। तवयदुनाथ विहँसिइमिकह्यऊ॥
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा। षष्टम अंश द्रौपदी केरा॥
दो० पांचवन्धु सेवाकरहिं तुम्हरी सहित समाज।
चलहुकरणजहँ धर्मसुत अवहूजय महराज॥
सुनिहरिवचनकरणहँसिदीन्हा। नीकविचार नाथ तुमकीन्हा॥
जानहिं मोहिं युधिष्ठिर भाई। करें राज्यनहिं धर्म्म विहाई॥
वे हमको देहैं सब जवहीं। हमदेइवकुरुपतिकहँ तवहीं॥
यामें होइहि परम अकाजू। रहेउ न नाथ पांडु कुलराजू॥
और विचार करोजनि स्वामी। रहे चुपाइजानि अनुगामी॥
कह हरि कहेउ परनहित तोरा। चलहुकरणअनुनिमोरनिहोरा॥

तुम कुन्ती के जेठे बालक। करहु राज्य अरु कुलप्रतिपालक
तुम हरि कही सांचु सब सोई। ऐसे समय उचित नहिं होई
कुरु पांडवन बैर है भारी। मोरे बल रोपी उन रारी
मोहिं कुरुनाथ बंधु करि भाखा। अशन बसन कछु बीच न राखा
सहित धरा धन सेन समाजा। कीन्हेउ अंगकोश को राजा।

दो० पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों माने करि गुहदेह।
शीश समर्पण स्वामि सँग पूरुब मानि सनेह॥

औरो कृष्ण सुनौ मत मोरा। सो अब करिय दास सैं तोरा॥
पक्ष भूप दोउ ओर प्रतापी। तिन महँ पुण्यवान को पापी॥
समर कराय करिय प्रभु सोई। सुख गर्वा पावै सब कोई॥
अब तुम जाहु विलम्ब न लावहु। पांडव कटक साजि लै आवहु॥
श्रीहरि और न करहु विचारा। अब रण होय हमार तुम्हारा॥
अस कहि कर्ण बिदा पुनि मांगी। प्रभुपद परसि चलेउ अनुरागी॥
तउ तत चल मन हरि के साथा। पहुँचे कर्ण जहां कुरुनाथा॥
साम दाम भय भेद दिखाई। कही कर्ण के मनहिं न आई॥

दो० दारुक हाँके अश्व पुनि चले वेगि भगवान।
जाय युधिष्ठिर कटक महँ सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते श्रीकृष्णगमननाम पञ्चविंशोऽध्यायः॥ २५॥

कथा सकल मुनिवर णि सुनायो। जनमेजय नृप सुनि सुख पायो॥
छेवहु रि सहित अनुरागा। लगे कहन इमि सकल विभागा॥
कटक समीप कृष्ण जब आये। धर्मराज सुनि आतुर धाये॥
सब बंधुन मिलि कीन्ह प्रणामा। लइगे जहां भूप विश्रामा॥
अरघ देत आसन बैठारे। शीतल जल लै चरण पखारे॥
पूछेउ भूप कहा करि आये। वासुदेव हरि बचन सुनाये॥
कहहरि तेहि एको नहिं मानी। देन न कहत भूप अभिमानी॥
जिहि न और पतन ते राजा। कहहु युद्ध कीन दल साजा॥

दो॰ सुनत श्रवण नहिं बात कछु देवेकी नहिंचाह।
विनायुद्ध नहिं महिमिलौ कोटि यतन नरनाह॥
अ हमार भूप सुनि लीजे। साजो सेन विलम्ब न कीजे॥
इ निशंक अब करहु तयारी। है है विजयकहत गिरिधारी॥
सुभत कृष्ण वचनकछुहीमा। लरहु नरेश कही यह भीमा॥
अर्जुन कही भूप सुनि लीजे। सजि निजकटक दुंदुभीदीजे॥
रहु युद्ध यह मंत्र हमारा। होई सो जो लिखी करतारा॥
ले वचन नकुल मुसकाता। अब नृपलरौ न दूसरि बाता॥
ानत हमहिं दीनप्रतिपच्छी। रहाचुपाय बात नहिं अच्छी॥
अब जनिलरियडरियनरदेवा। बोले वचन नकुल सहदेवा॥
दो॰ नहिं मानत हरिके कहे भूले देखिसमाज।
लरहु न करहुविलम्बअब कही द्रुपदमहराज॥
कही सात्यकी सुंदरि बानी। विनसंग्राम क्षत्रियन हानी॥
ाते अवशि युद्ध अब कीजे। रिपुरणजीति देशसबलीजे॥
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो। सहितविराट शिखंडीभाख्यो॥
धर्मराज हरि मिलि ठहरावा। करब युद्ध यह मंत्र दृढ़ावा॥
तेहि अवसर निजसाजबनाये। भीष्मकपुत्र रुक्मतहँ आये॥
कुंडिनपुर नरेश बरिआरा। सो नृप वासुदेव को सारा॥
है लघु बंधु रुक्मिणी केरा। लीन्हे साथ कटक बहुतेरा॥
गजरथ पदचर विपुल तुरंगा। अक्षौहिणी एक पुनि संगा॥
दो॰ तेहि अवसर प्रापतभयो भूपति सभामँझार।
बैठारे पारथनिकट सबहि जोहारि जोहार॥
देखेउ धर्मराज की ओरा। बोले वचन गुमान न थोरा॥
जो आरत कै राखो मोहीं। भूप अशत्रु करों मैं तोहीं॥
बुद्धिचक्षु को नाम मिटावों। एक क्षत्र महिराज करावों॥
हमतें होउ भूप आधीना। करोंभूमि सब शत्रु विहीना॥
सुनत वचनमनभीम न भायो। कै सरोष यहिभांति सुनायो॥

रहत सदा हम कान्ह भरोसे । कीट समान गनें नर तोसे ॥
फिरि ऐसी जो बात विचारी । तोडारों पुनि जीभ निकारी ॥
मारों तोहिंन अधमअभिमानी । मानत कृष्ण देवकी कानी ॥
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी । ताते बची मृत्यु सुनुतोरी ॥
जस तें वचन भूप ते वागे । अस जो कहत हमारे आगे ॥
रुक्मिणि बंधु जोन तुम होते । मारि तुरत यमलोक पठोते ॥
छाँड़त कृष्ण देव के नाते । मुँह मसिलाय जाउउठिताते ॥
असकहि भीमसेन रिसवाई । भुजा पकरि के दीन्ह उठाई ॥
चला तुरत जिय लज्जापायो । दुर्योधन के भवन सिधायो ॥

दो० गये हस्तिनापुर सबै निज सेना ले साथ ।
अति आदर ते उठि मिले बैठारे कुरुनाथ ॥

बैठतही इमि वचन बखाने । जो कुरुपति तुम होउ डराने ॥
तौ हम होई तुम्हरे संगा । पाण्डव रण जीतों रणरंगा ॥
जो तुम होउ अधीन हमारे । करों काज कुरुनाथ तुम्हारे ॥
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई । कहिकटुवचनदीन्हदुरिआई ॥
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे । जीतिसके जगमहँ असकोरे ॥
गुरू द्रोण जो अस्त्र सँभारे । देव अदेव सकल रण हारे ॥
वृद्ध पितामह विदित हमारे । जिनसे परशुराम रण हारे ॥
ते भृगुनाथ विष्णु अवतारा । और को जीति सके संसारा ॥
मोरा बलकोउ थाह न पावत । ताहि मूढ़ तैं भरम देखावत ॥
बल तुम्हार हमरो सब जाना । जादिन कृष्ण बांधिके आना ॥
शीश मुण्डि कीन्हे अपमाना । बलिबड़ाइ दीन्हे जियदाना ॥
हरिपांडव के भयउ सहायक । तेऊ नहिं मोरेरण लायक ॥

दो० होइसक्रोध कुरुनाथतब दीन्हेउ ताहि उठाइ ।
अतिलज्जितहोइ नाइशिर गयोभवनसकुचाइ ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई । अबनृप सुनहु कथामनलाई ॥
गये कृष्ण पांडव घर जबते । भाअतिविकलकुरुपतितबते ॥

तेजहीन मन अति दुचिताई । शोचविवशनिशिनींदनआई ॥
प्रातहि होत द्रोण गृह आये । करिप्रणाम इमिवचनसुनाये ॥
पांडव हमहिं वैरु सरसाना । शरणतुम्हार भरोस न आना ॥
होइय आपु सहायक मोरे । अवमैं चरण शरण गुरुतोरे ॥
असकहि नयननीरभरिलीन्हा । सुनिकैद्रोणउतरु तेहिदीन्हा ॥
भरत वंश में जन्म तुम्हारा । सुयशतुम्हार विदित संसारा ॥
राज्यनीति महँ वहुत प्रवीना । करत भूपतुम कर्म्म मलीना ॥
कपट यूप कछु सत्य न हारे । तुमपांडव केहि हेत निकारे ॥
शकुनी मंत्र मानि छल कीन्हा । आप कृष्ण कहेअशनदीन्हा ॥

दो॰ आपुबली हैं पांडुसुत अरु सहाय भगवान ।
करहुभूप विधिकोटितुम जीति न सकहु मशान ॥
उनकोकछुअ न दोषनृप तुमअतिकीन्हअनीति ।
जहांधर्म तहँ कृष्ण हैं जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

वासुदेव हैं हरि अवतारा । उनहिं को जीतिसकै संसारा ॥
ते दयालु पाण्डव के जानो । कै हैं विजय सत्यकरि मानो ॥
भीषम आदि सकल रणधीरा । रण तीरथ महँ तजैं शरीरा ॥
जानो सब कौरव संहारे । हमहूं करण जाव रण मारे ॥
होइहि सुनि सबको मदभंगा । हमनृप करव तुम्हारो संगा ॥
हम मानत मनमें नहिं त्रासा । भये वृद्धनाहिं जीवन आसा ॥
होइ निश्चिन्त बैठु अब राजा । हमतनतजब तुम्हारे काजा ॥
जोइत तुम्हें बहुत कठिनाई । जुरे काल तो करों लराई ॥

दो॰ युद्ध जुरे पांडव सहित मैं रोकों घनश्याम ।
कोटि शपथ भृगुराम की करों घोर संग्राम ।

धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा । अबतुम अभयहोहुनरनाहा ॥
द्रौणी कही बंधु सुनिलीजे । भयत्यागहु मनधीरज कीजे ॥
तीन्यों लोक अस्त्रगहि आवे । मारों सकल जान नहिं पावे ॥
हम मन वच क्रम तोर सहाई । अबतुम अभयहोहुकुरुराई ॥

भीषम भवन गयउ तब राजा। द्रोणकर्णले सकल समाजा।
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा। गंगासुत आदरकरि लीन्हा।
करिप्रणाम कौरव कुलदीपा। सतिव्रत के बैठे सामीपा।
कह भीषम केहि कारण आये। सुनिमहीप तबबचन सुनाये।
बधु बैर शालत उर मोरे। आयों शरण पितामह तोरे।
दो० एकसबलतौ पांडुसुत औ सहाइ भगवान।
कहेउ भूपभीषमसुनहु तुमजानत वुधिवान॥
अब उनके दल जुरेअपारा। शूर एक ते एक जुझारा॥
पकोबचन श्रवणसुनि लीन्हा। हँसिगंगेय उतरु तब दीन्हा॥
न न करेव अपराध हमारा। तुम छलकरि परदेशनिसारा॥
कुनी करण कुबुद्धि सिखाई। खोयहु तुमहिंसुनहुकुरुराई॥
नि यदुनाथ बसीठी आये। मांगे पांच ग्राम नहिंपाये॥
म सब तुमहिंरहे समुझाई। सुनत नहींधौंकुमतिसिखाई॥
रण भरोस मानि मन राजा। करत अनीतिनशावतकाजा॥
हा हमार श्रवण सुनि कीजै। नीच जाति को मंत्र न लीजै॥
ह है करण जाति को हीना। तुमहिंसिखावत मंत्रअलीना॥
जातिअहीर अधम अभिमानी। सुनि कुरुनाथ रहेचुपमानी॥
चित न कछुउत्तरपुनिजानी। उठिगा भवन मानि गिलानी॥
दो० होइ सक्रोध बोले करण सुनहु बात कुरुनाथ।
जियत पितामह जबलगे तो न छुवौं धनुहाथ॥
इकहि वचनकरणउठिगयऊ। दुर्योधन मन बिस्मयभयऊ॥
व मलीनकुरुनायक चीन्हा। देखि पितामह धीरजदीन्हा॥
द्वसहित आपु घनश्यामा। जीति न सकहिं भूपसंग्रामा॥
रे मन कोप धनुष करधारों। सकलक्षितीशधरणि के मारों॥
नरेश मोरे रण लायक। करों निपात साधि धनुशायक॥
बिसदिन भृगुपतिरणकीन्हा। तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा॥
री नृपति स्वयम्बर ठाना। आये भूप भूमि के नाना॥

देव दैत्य नर तनु धरि आये। जीति युद्धमें सकल हराये॥
दो० धीर धरो चिन्ता तजो कीजै मन विश्राम।
अभयहोउ भूपाल अब को जीते संग्राम॥
राउ तुम्हारी ओर जो देखे नयन उघारि।
शत्रुभावकरि ताहिकी डारैं आंखि निकारि॥
पुनि यह बचन धीरता आनी। कृपकेभवन चलाअभिमानी॥
कृपाचार्य्य पद परशन कीन्हा। होइप्रसन्न तबआशिपदीन्हा॥
पूछेउ मुनि केहिकारण आये। समाचारकहि भूप सुनाये॥
कुरु, पांडवको कलह महाना। सोचरित्र तुम्हरा सब जाना॥
हम उनपर साजी अवधारी। भये सहायक श्री बनवारी॥
बूझिपरत नहिं मोहिं उबारा। अबमुनि एकभरोसतुम्हारा॥
असकहि लोचन बारि विमोचे। सुनतबचनमुनिमनमहँशोचे॥
नयन हमार भूप सुनि लीजे। शोकत्यागिकरि धीरज कीजे॥
तजब देह भारत रण एहा। तजब न तुमहिं तजो संदेहा॥
दो० यहि प्रकार सनमान करि कीन्हेविदा भुवार।
सबलसिंह चौहान कह गये करण के द्वार॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
दुर्योधनभीष्मसम्वादोनामपष्ठविंशोऽध्यायः॥ २६॥
दो० करण कुरुपति केर मत बर्णत बरहिं विभाग।
कहमुनि जनमेजयसुनहु कथासहित अनुराग॥
पवँरि दुवार भूप जब आये। समाचार प्रतिहार सुनाये॥
सुनत करणमनअतिअनुरागू। करतप्रणामलीन्हचलिआगू॥
देइ उपायन भवन ले आये। अति अनूप आसन बैठाये॥
जोरि पाणि पुनि आयसुमांगा। बोलेउराउ सहित अनुरागा॥
अनल सहाइ पवन कब यांचे। करैं सहाइ सखा ये सांचे॥
तुम ते और मित्र को मेरे। मैं रण रच्यउ मांह बलतेरे॥
जानत तुम गांगेय रुठाने। तासु बचनसुनि मित्र रिसाने॥

बालक जरठ वचन परतीती। तातनकरियकहतअसिनीती
बालापन महँ बहु बुधि होई। जरा जनित डारे सब खोई
ताते मित्र क्रोध तजि दीजै। उठिकै युद्ध शत्रु ते कीजै
दो० लरहुशत्रुसन क्रोधकरि लेहु धनुप शर हाथ।
तुवबलते मैं रचेउँरण विहँसि कही कुरुनाथ॥
सुनिकै करण चित्त सुखमाना। वार वार यह वचन वखाना
भूपति सत्यकहौं प्रण कीन्हे। तुमते उऋणनप्राणहुँ दीन्हे।
अब निशंक होइय भूपाला। तवहित मैं करिहौं शरजाला।
वरुण कुवेर इन्द्र यम आवें। ते मोते जय पत्र न पावें।
द्रुपद विराट भूप बहुतेरे। पाण्डव नहिं हमरी सरिकेरे॥
उन कहँ कृष्णदेव उपजावा। चहत बराबर युद्ध करावा॥
जबते भवन कूबरी डारी। बुद्धि विहीन भये बनवारी॥
मम बल जानत भूप कन्हाई। गईभूलिसुधिकुमति सिखाई॥
दो० नाथ पठाइय दूत कोउ धर्मराज पहँ जाइ।
करैं युद्ध की जाइँ वन उनहिं कहै समुझाइ॥
करणवचनसुनि नृप सुखपाये। वोलि उलूक उकील पठाये॥
पृथक् पृथक् कहिसवनसँदेशा। करहु युद्ध की छांड़हु देशा॥
सुनतसँदेश जो तुमनहिं आये। अव नहिं बचौ जीव दवराये॥
की अबवेगि आनि तुमलरहू। की वनजाहु अस्त्र परिहरहू॥
जो तुम मान भये भय पावत। तौ अवहम बिराटपुर आवत॥
यो संदेश उलूक सिधाये। धर्मराज की सेनहिं आये॥
पौंरि दुवार वेगि लै आये। द्वारपाल तव जाइ जनाये॥
नृप कुरुनाथ उकील पठाये। कहन सँदेश स्वामि पहँआये॥
तब उलूक इमि वचन सुनावा। धर्मराज सुनि निकटवोलावा॥
कहत सँदेश भूप को यांची। सो अबसुनहु बात सबसांची॥
दूतन केरि रीति असि होई। कहँ सँदेश सत्य सव सोई॥
अब नृप और विचार न कीजै। कीउठिलड़हु किवनमगलीजै॥

दो० करण भूप संदेश तुम सुनहु भूप दे कान।
कौरव पाण्डव भूमि सब छाड़ दशो दिशिवान॥
पाहि पुकारि शरण जब ऐहौ। तौ तुम जीव दान नृप पैहौ॥
जो भूलत हो कृष्ण भरोसे। तुम न बचहु दुर्योधनरोसे॥
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई। त्यहित्यागहुजो चहहुभलाई॥
जो उठिलड़हुबात नहिंमानहु। कृष्ण समेत मरेसब जानहु॥
सो सुनिभीमहिं पै रिसव्यापी। कहत संभारिवचननहिंपापी॥
मै हगअरुणखड्गकरलीन्हा। वरजेउकृष्णपाणिगहिलीन्हा॥
अवजयविजयसुनो सबबाता। करइन भूप दूत कर घाता॥
यदपि कहै कटुवचन उकीला। करै न क्रोध नरेश सुशीला॥
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी। गयो उलूकभागि भय मानी॥
दो० बोलिनिकटनृप धर्मसुत कहयोवचन समुझाइ।
दुर्योधनते यह कहो अब हम पहुँचे आइ॥
अब तुम मृषा न जानहुबाता। कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु भ्राता॥
निजपौरुष तुम करहु संभारा। कोटियतन नहिं होइ उबारा॥
अस कहि पठयो फेरि उलूका। चला हृदयउपजी अतिहूका॥
रथअरूढ़ होइ तुरत सिधाये। नगर हस्तिनापुर चलिआये॥
पँवरि दुवार तज्यो असवारी। गा दुर्योधन सभा मँझारी॥
भीषम द्रोण कर्ण सब राजा। सभामध्य कुरुनाथ विराजा॥
देखी राज मण्डली भारी। वैठेउसबहिं जोहारि जोहारी॥
कह नृप कहन संदेश पठाये। समाचार उनके कछु लाये॥
हँसि बोले तब वचन उलूका। कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका॥
हम आवत तुम होहु तयारा। करहुयुद्ध नहिं और विचारा॥
कालसभामहँतुमहिं सुनावत। होहुसचेत धर्म्मसुत आवत॥
दो० शपथ कीन्ह भगवान की यह उन कह्यो सँदेश।
प्रात होत अबआइहैं अब न विलम्ब नरेश॥
सुनहु संदेश न राखो गोई। करौभूप अब जो रुचिहोई॥

बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई। कहे वचनपुनि सबहिंसु
अब नृप धर्म्मराज मम नेरे। आवत कठिन काल के
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावों। मारिसकलयमलोक पठ
शरपिंजर करि भीम दबावों। मारि सकल पांडव त्रिचल
बांधि युधिष्ठिर करि मनुसाई। जयतिपत्र देहों लिख
सहिन सके पांडवममशायक। अवतुमअभयहोहुनरनाय
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई। अव सुनुअपरकथा कुरु
-दो० होत प्रात उठि धर्मसुत गये जहां यदुराय।
करहिंवन्दना जोरिकर चरण कमल शिरनाय॥
कही युधिष्ठिर, अब बनवारी। साजि कटकअवकरहुतयारी॥
चलत उलूक सुनहु भगवाना। प्रात होत कहिदीन पयाना॥
कृष्ण तुम्हारि शपथ हमखाई। अवविलम्बमहँअतिकठिनाई॥
पठे दिये चरवर बनवारी। कहेउ नृपनसनकरहुतयारी॥
निज निज सेन नरेशन साजी। उठे निशान दुन्दुभी बाजी॥
पलटनितान लदायो चारू। और लदायो सकलबजारू॥
अगणित ऊंट वृषभ शकटादी। खच्चर महिष चले लै लादी॥
सकल बस्तु कारीगर नाना। लै ले लादि चले निज वाना॥
गजरथवाजिसाजिशिविकाली। भये अरूढ़ मेदिनी हाली॥
दो० सहनाई अरु पणव घन ढोल ठोंकिभनकार।
पटह भेरि अरु धेनुमुख बाजे विविध प्रकार॥
बन्दी गण बोले विरद रही शंख ध्वनि पूरि।
द्विरद घण्ट बाजत घने भयो शब्द तहँ पूरि॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्व्वणिसवलसिंहचौहानभाषाकृते
सप्तविंशोऽध्यायः॥ २७॥
द्रुपद नरेश साजि सब याना। भयो अरूढ़ बजाय निशाना॥
धृष्टद्युम्न शिखंडी आवत। रथ अरूढ़ है शंख बजावत॥
युद्ध मान सेना सब साजे। पणव मृदंग भेरि बहु बाजे॥

द्विरद अरूढ़ बीर वरिआरा। चल्यो तमौजा द्रुपदकुमारा॥
पणव मृदंग भेरि बहु बाजे। भेअसवार नृपति दलगाजे॥
पुनिरथ साजिसात्यकी आयो। सेन संग निजशंख बजायो॥
सुतन समेत बिराट भुवारा। लैनिज कटक चले सरदारा॥
काशिराज सेना सँग लीन्ही। रथअरूढ़ कै दुन्दुभि दीन्ही॥
सूरसेन अपनो दल साजे। पहिरिसनाह सिंहसम गाजे॥
जरासंध सुत नृप सहदेऊ। लै निज कटक चलोपुनितेऊ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा। भे अरूढ़ बाजे पुनि बाजा॥

दो० साजे सकल नरेश पुनि गजरथ तुरँग पदात।
रथी महारथ गजरथी कटक क्षौहिणी सात॥

मेलिजुरिपवँरि द्वारजबआवा। धर्मराज निज द्विरद मँगावा॥
कुन्तल सजि लायो मयमत्ता। शंख वर्ण सुन्दर चौदन्ता॥
देखत रूप परम बिकरारा। चारिउचरण बहत मदधारा॥
कनकरचितमणिखचितश्रँगारी। गजमुक्ताझालरि छबिकारी॥
धर्मराज हरिपद शिर नाई। भयअरूढ़ प्रभु आयसु पाई॥
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे। करि अतिनाद नकीवन टेरे॥
भयो शोर बहुदिग्गज डोले। करिउदवाद वंदिजन बोले॥
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे। जहँ तहँ बिपुल नकीवपुकारे॥
होत महारव भयो अतंका। बाजि उठे दल में बहु डंका॥
भीमसेन अपनो रथ साजे। भये अरूढ़ बार बहु गाजे॥
पुनि पांचो द्रौपदी कुमारा। शंख बजाय भये असवारा॥

दो० मणिमय चित्र बिचित्र रथ भये नकुल असवार।
पांचकोटि यकसठ लिये साज्यो भीम कुमार॥

तब सहदेव कीन असवारी। अर्जुन लै साजे बनवारी॥
लै शंकर सनाह पहिरायो। इन्द्रदत्त शिर मुकुट बँधायो॥
अदिति श्रवणकुण्डल दोई। पहिरायो जेहि मृत्यु न होई॥
अक्षय तूण वरुण जो दीन्हा। सोइलेहरि पाछे दिगकीन्हा॥

हुतभुक दीन्हेउ धनुष गहाना। गांडिवनाम सकलजगजाना॥
सत पंच लागी हैं जामें। विद्युत्कोटि प्रभा है तामें॥
सो लै हरि अर्जुन कहँ दीन्हो। धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हो॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे। रण महँ शत्रु जाय तुममारे॥
पुनि दीन्हो प्रभु आशिष येहा। निश्चय विजय न कछुसंदेहा॥
अस कहि नंदिघोषरथ आना। सारथि रूप धरेउ भगवाना॥
श्वेत वरण लै चारो घोरे। तेहरि आनि यान महँ जोरे॥
करिअतिकृपाबारनहिं लायउ। पाणिपकरिहरिपार्थ चढ़ायउ॥
करि सारथी वेष बनवारी। जोतीं गहे पितांबर धारी॥
शीशमुकुट जनुतरणिअभंगा। चन्दन ते चर्चित सब अंगा॥
पीतबसन तनुश्यामसोहावन। मणियुतपीत विराजतपावन॥
कौस्तुभ कंठ रुचिरवनमाला। अंगद युत दो बाहुविशाला॥

दो० कमलनयनकुण्डलकलित ललितमधुरमुसकान।
कच कारे कटि केहरी कोटि काम हरमान॥
पाणिकल्पतरु पदकमल कमल बदन कमनीय।
केशी कंश कलेश हर कीन्ह कृपाकरि जीय॥
कर्यो सारथी वेष जब रथ हांक्यो भगवान।
पार्थ ध्वजापर बैठिकै तब गर्ज्यो हनुमान॥

है प्रसन्न बोले भगवाना। सुनहुयुधिष्ठिर बचनप्रमाना॥
मंत्र हमार भूप सुनि लीजे। व्यूह बनाय गमन पुनिकीजे॥
विरचि पिपीलव्यूह भगवाना। कीन्ह बजाय-निशान पयाना॥
अर्जुन रथ हांकेउ बनवारी। सकल सेनके भयो अगारी॥
युद्धमात पुनि दक्षिण ओरा। चले संग लै दल वन घोरा॥
सैनसहित दिशिवाम तमोजा। रथआरूढमनो अपरमनोजा॥
धृष्टद्युम्न अति बल धनुधारी। अर्जुन रथके चलेउ पछारी॥
नानाबस्तु लादि लै चारू। ता पीछे सब लोग बजारू॥
ताके दक्षिण भाग शिखंडी। लिये साथ निजसेन अखंडी॥

दल चतुरंग संग पुनि साजे । धृष्टकेतु दिशि वाम विराजे ॥
लिये धनुष कर शायक तीछे । सेन समेत सात्यकी पीछे ॥
दो० चलत कटक हालीधरा लागी रेणु अकास ।
॥ चलेनकुल सहदेव सँग लिये संग रनिवास ॥
दक्षिण दिशि द्रौपदी कुमारा । चले संग ले कटक अपारा ॥
घटउत्कच दल ले दिशि वामा । पांच कोटि राक्षसवलधामा ॥
अभिमन्युरथ पाछेपुनिआवत । लियेधनुष करवाण फिरावत ॥
अभिमन्यु संग वीर वरियारा । उत्तर शंख विराट कुमारा ॥
लीन्हे साथ सेन समुदाई । कीन्ह पयान निशान वजाई ॥
धर्मराज पुनि कीन्ह पयाना । वाजे दल गहगहे निशाना ॥
पणव धेनु मुख भेरि समूहा । वाजे शंख चले दल जूहा ॥
चालिस सहस छत्र धर राजा । चले संग ले सेन समाजा ॥
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी । भयउ अरूढ़ दुन्दुभी बाजी ॥
उठी धूरि गो छाय अकाशा । रवि अलोपपूरी सवआशा ॥
लेकर धनुष चले मुनि गाजत । नृप के दक्षिणभाग विराजत ॥
वायें ओर विराट भुवारा । कीन्ह पयान वजाय नगारा ॥
काशिराज नृप गज के पाछे । सेन समेत विराजत आछे ॥
दो० रथ अरूढ़ कर धनुपधरि शूरसेन महराज ।
॥ नृपगजके आगेचले ले निजसाज समाज ॥
पीछे अनी वृकोदर आवत । करत घोररव नादाफिरावत ॥
वाम पाणि लीन्हे कर वाली । भीमहिं चलत धरासवहाली ॥
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले । कमलनालअहिदिग्गजवोले ॥
कौतुक देखि चकित सुर डीठा । परेउभार कच्छप की पीठा ॥
रुद्र रव भीम वार वहु गाजे । रवि तुरंगतजि मारगभाजे ॥
सुर पुर भेदि भीम की हांका । परी जाय ध्रुवलोकप हांका ॥
चलीजात मग सेन अपारा । वाजत शंख मृदंग नगारा ॥
भाट भरत कुलविरदवखानत । सुनिसुनिशब्दशत्रुभयमानत ॥

दल बिलोकि मगहोत अतंका । रघुबर प्रथमगये जिमिलंका ॥
दो० गोमुख शंख निशान रव भेरि भूरि करनाल ।
गजघंटा गाजत सुभट सुरपुर शब्द कराल ॥
कम्पत शेष विकल भुजगेशा । उठी धूलि छपिगयो दिनेशा ॥
सुर विमान नभ ऊपर छायउ । सुमनवर्षिशुभसगुनजनायउ ॥
कह नृप तुमहरि अन्तरयामी । विजयउपायकहो अबस्वामी ॥
बोले बिहँसि बचन भगवाना । करहु नरेश शक्तिको ध्याना ॥
तासु प्रसाद विजय नृप होई । यह तजि और उपायनकोई ॥
सुनि हरिबचन भूप अनुरागे । करन ध्यान अम्बाको लागे ॥
करि आचमनमूंदि दृग लीन्हें । प्राणायाम वेदविधि कीन्हें ॥
करि अष्टांग सकल सुर साधी । करत ध्याननृपलागिसमाधी ॥
दो० मुक्त केश कर खड्ग धर मुंड माल दृग लाल ।
को सहाय मेरी करै बिन काली यहि काल ॥
उरग किंकिणी कटिलसै शवारूढ भुज चारि ।
हरन हमारे दुसह दुख हे त्रिपुरारि पियारि ॥
यहिविधिविनय भूपजबकीन्हा । कै प्रसीद तब दर्शन दीन्हा ॥
सानुकूल तब भई भवानी । बरंब्रूहि बोली हँसि बानी ॥
हे नरेश तुब हरिहि पियारे । मांगहुजो अभिलाष तुम्हारे ॥
सुनि प्रियगिराअमियरससानी । बोलेउ राउ जोरि युगपानी ॥
मिटे कलेश सुनी तब भाषा । दरश देखि पूजी अभिलाषा ॥
जानहु मातु मनोरथ मोरा । मैं का कहौं दास मैं तोरा ॥
तब यह कही अनुग्रह मोरे । ह्वै हैं सफल मनोरथतोरे ॥
धर्मराज कहँ दै बरदाना । भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना ॥
हरि नरेश मन सुख अधिकाई । कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
मग सरसरित सूखिगा पानी । पंक रेणु ह्वै गगन उड़ानी ॥
दो० चलेजात मग धर्मसुत लीन्हे दल निज साथ ।
पारथ रथ जोती गहे सारथि श्रीव्रजनाथ ॥

॥करत सिविर पुनि करतपयाना। तब कुरुदेश आय नियराना॥
बीच बीच मग करत बसेरा। कबहुं पतान होय कहुं डेरा॥
नगर बारुणावर्त्त समीपा। कीन्ह्यो सिविर पांडुकुलदीपा॥
जागे सकल निशा अवसाना। प्रातहोत पुनि कीन्ह पयाना॥
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा। गज आरूढ़ के चले नरेशा॥
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा। कीन्हे धर्मराज तहँ डेरा॥
अमल अमोल वितान तनाये। पटलकनातसहितछवि छाये॥
बाजत दल घरियार घनेरे। जहँ तहँ परे नृपनके डेरे॥
परो धर्म्मसुत सेन अखण्डा। परखहिंसिविरदेखिनिजभण्डा॥
॥ दो० धर्मराजकी पाइसुधि। कुन्ती पहुँची आय।
॥ देखिपुत्र अरु पुत्रतिय आनँद उर न समाय॥
धर्म्मराज पदवन्दन कीन्हा। होइप्रसन्न तब आशिषदीन्हा॥
बन्दत चरण नकुल सहदेऊ। पाइअशीष मुदितमनभयऊ॥
अर्जुन भीम आइ पद बन्दे। अभिमन्यु आशिषपाइअनन्दे॥
परसे चरण द्रौपदी रानी। उरलपटाइ लीन्हगहिपानी॥
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी। भीतर पलटि गई दुख मेटी॥
सुनि सब पुत्रवधू उठि धाई। परीचरण अति आनँदछाई॥
कुशल पूछिके कण्ठ लगाई। दीन्ह अशीष निकट बैठाई॥
अभिमन्यु आदि परे पगनाती। हृदय लगाइ जुड़ावतछाती॥
॥ दो० कुन्ती गोद समोद तब बैठारे सुत नन्द।
। सबलसिंह चौहानकह पूरिरह्यो आनन्द॥
इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानि
॥ भाषाकृतेअष्टविंशोऽध्यायः॥२८॥
कह ऋषि सुनु जनमेजयराई। कथा विचित्र श्रवणसुखदाई॥
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई। भयउ अरूढ़ निशान बजाई॥
भीषम करण द्रोण धनुधारी। साजी सेन भयंकर भारी॥
कृपाचार्य्य द्रौणि रण रंगा। लीन्हे संग चमू चतुरंगा॥

बाह्लीक लै कटक अपारा। भये अरूढ़ बजाइ नगारा॥
सोमदत्त सँग दल समुदाई। बाजत पटह शंख सहनाई॥
भूरिश्रवा सेन सब साजे। गंगाधर कम्बोज विराजे॥
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना। दुर्योधन सँग कीन्ह पयाना॥
शल्य नरेश हलंबुस साजे। पवन निशान शंख बहु बाजे॥
साज्यो पुनि कलिंग नरनाथा। लै नवलाख द्विरद पुनि साथा॥
॥ दो० रथ तुरंग बहु रंग के सेना साथ अनन्त।
॥ असी लक्ष गज लै चले महाराज भगदत्त॥
सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा। अति रणधीर वीर बलधामा॥
लेकर धनुष बजाइ नगारा। कौरव संग भयो असवारा॥
शकुनी औ विकरण रणरंगा। द्विरद दुमत्त दुशासन संगा॥
सौ बन्धव दुर्योधन केरे। भ्रातजात अरु तनय घनेरे॥
निजनिज रथनभये असवारा। बाजत गोमुख शंख नगारा॥
सेन समेत त्यागि सब धर्म्मा। द्विरद अरूढ़ चल्यउ कृतवर्म्मा॥
नृप उलूक वृषसेन भुवाला। चले संग लै कटक विशाला॥
नृप शशिबिन्दु चले दलसाजे। तुरंग अरूढ़ दमामे बाजे॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा। चले साथ लै सेन समाजा॥
अस्त्रनिपुणअरु अतिबलदाई। ज्येष्ठ मित्रविन्दा के भाई॥
कह हरि कथा भूप तुव जानी। अति प्रियकृष्णदेवकी रानी॥
तासु बंधु द्वौ अति बलदाई। दुर्योधन के भये सहाई॥
दो० साठि सहस नृप अस्त्र धर दै गहगहे निशान।
निज निजदल सँगलै चले गर्द लोपिगये भान॥
एकादश क्षोहिणि दल साथा। करतअकूतचल्यो कुरुनाथा॥
बाजे बाजन भांति अनेका। उठी धूरि रविमण्डल छेका॥
भा अँधियार जानिनिशि घोरा। बिछुरे चक्रवाक के जोरा॥
बाजत विपुल नृपन के डंका। हाली धरा परम आतंका॥
दलके भार धराधर डोले। बिरदावली भाट बहु बोले॥

सुनि सुनि नाद नकीबन केरा। खगमृगत्यागो आगिबसेरा॥
गजत विपुल सुभटमग जाहीं। अति आतंक होतदलमाहीं॥
पीत ध्वजा रथ पीत बिराजे। पीत धनुष पीते गुण साजे॥
पीत बरण चारोहैं घोरे। बसन बिचित्र पीत रँग बोरे॥
धनुष चिह्न ध्वजऊपरराजत। पीत वर्ण दल कर्ण विराजत॥
दो० श्वेत वर्ण तन बसनपुनि श्वेत धनुष अरु बान।
श्वेत केश रथ बाजिहैं श्वेत ध्वजा फहरान॥
ताल चिह्न ध्वज शोभापावत। लैदलश्वेत पितामहआवत॥
श्यामवर्णरथअधिक सोहावत। श्यामवर्णघोड़े छवि पावत॥
नील कंजरित धनु कर लीन्हे। नीलवर्ण तामें गुण दीन्हे॥
नीलरंग फहरात पताका। खड्गचिह्नतामें अतिबांका॥
नील निचोल विभूषण साजे। नील वर्ण दल द्रोण बिराजे॥
अरुणवरणदलसाजिसुशर्म्मा। अरुणवर्ण शोभितधनुकर्म्मा॥
अरुण चमर शोभित रथकेतू। चलेउसाजिकुरुपति जयहेतू॥
सिन्धुराज के तुरें हरेवा। अतिलाघवगतिमनहुँ परेवा॥
हरित केतु सोहत रथ ऊपर। हरित बसन छायो दलभूपर॥
कौरव सब कुरुनायक संगा। तिनके रथन ध्वजा पचरंगा॥
द्विरदचिह्ननृपस्यन्दन सोहत। अतिविचित्ररणकोमनमोहत॥
दो० निज निज रथन अरूढ़नृप सोह ध्वजा बहुरंग।
हरित पीत कोउश्याम सित राजत सुघर सुरंग॥
यहि प्रकार कौरवपति सेना। चलीजात उपमा कछु हैना॥
अति अगाध कछु अंतनजाना। प्रलयसिंधुकहिव्यासबखाना॥
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा। कौरव कटक टिका घन घोरा॥
तनवायो तहँ विपुल विताना। बजत घोर स्व नौबत खाना॥
गड़े केतु दल नानाकारा। बाजत पँवरि पँवरियरियारा॥
सिविरसिविरप्रतिसबबलधामा। कीन्हेउ खानपान विश्रामा॥
दोउ नरेश बहु खनक पठायउ। ऊंच नीच महिसुढबनायउ॥

करि सब भूमिगये यहि ताका। अटके जहांस्यन्दन चाका॥

॥ दो० ऊंचनीच खनि खनकगन कीन्हीं भूमिसमान।
॥ सबलसिंहचौहान कहि योजन सप्त प्रमान॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते
॥ एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

जनमेजय पूछत अनुरागे। पुनि मुनिकथा कहनसोलागे॥
करन हेतु कुलको सम्बोधन। आये व्यास जहां दुर्योधन॥
उठि प्रणाम कीन्हो तबराजा। आशिष दीन्हरहैं नृपलाजा॥
क्षत्री धर्म बढ़े तन भारी। जीवत छुटै न बानि तुम्हारी॥
असकहिव्यासबहुतसमुझावा। वंशवैर क्यहि काज बढ़ावा॥
सो अब भूप त्यागिकरि दीजे। कलहनीकनाहिं सम्मतकीजे॥
देहु अंश सुनि शीष हमारी। पांडव सबल होइ बड़ि रारी॥
बिनकारण कीन्हो अपकारा। लै कलंक तुमविपिननिकारा॥
समुझि परस्पर करहु मिताई। देहु अंश नृप मिटै लड़ाई॥
व्यासकही कछु चित्त न आनी। सुनतबिहँसिबोलाअभिमानी॥

॥ दो० द्रोण कर्ण भीषम प्रबल मोहित ये धनु धारि।
॥ देहुँ न भूमि मुनीश मैं करौं भयंकर रारि॥

जो कोटिन पांडव दल आवैं। सब गुरुद्रोण मारिबिचलावैं॥
लरैं पितामह जो करि क्रोधा। सकै रोकि रणको जग योधा॥
चलहिं सरोष करण धनु तानी। को रणरचहि महामुनिज्ञानी॥
सुनिनृपवचनजानि अभिमानी। कहव्यासमुनि प्रथमकहानी॥
पुर कंपिला देश पंचाला। प्रपद नाम तहँ भयो भुवाला॥
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा। द्रुपदनामत्यहिसुत उपजावा॥
बिद्या कारण भूप पठाये। अग्नि भेपके आश्रम आये॥
ऋषि के भवन बड़ी चटशारा। द्विजकुमार अरु राजकुमारा॥
प्राकृत देव वचन को भाखा। तातें तरिकिये नहिं राखा॥
भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा। पढ़हिं द्रोणतहँ बुद्धि उदारा॥

प्रपद पुत्र ते परी मिताई। एकहि संग पढ़े मन लाई॥
रह्यउन बीच प्रीति अतिबाढ़ी। नृप सुत कीन्हप्रतिज्ञा गाढ़ी॥
जब पाइब हम साज समाजू। आधा बांटि देहुं तोहिं राजू॥
यहि प्रकार बीते कछु काला। मरे प्रपद भे द्रुपद भुवाला॥
क्रियासकल द्रोण पढ़िलीन्हा। जाइमहावन पुनि तपकीन्हा॥
गौतम सुता द्रोण पुनि व्याही। कृपभगिनीजानत जगताही॥
ताके सुत भे अश्वत्थामा। जगतविदितगुणसबअभिरामा॥

दो० द्रोण द्रुपद भूपालते सुत हित मांगी गाइ।
नहिं दीन्हों अपमानकरि दियोतुरतदुरिआइ॥
जानत जग समरथहते मुनिवरउभयप्रकार।
दियोशापनहिं कोधकरि कियोनअस्त्रप्रहार॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये। नगरहस्तिनापुर चलिआये॥
गेंद काढ़ि बालकन देखावा। सुनिभीषमनिजनिकटबोलावा॥
चरण परस कीन्हों सनमाना। दीन्हों धेनु धरा मणि नाना॥
सौंपो पुनि कौरव कुल केतू। बालक सब धनु विद्या हेतू॥
अर्जुन ते मानत अति प्रीती। अस्त्रसिखायो अद्भुत रीती॥
अस्त्रसिखाय निपुणपुनिकीन्हो। भीषम जाय परीक्षा लीन्हो॥
तुंग विशाल एक वट भूपर। कृतमा भार धरा ताऊपर॥
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो। भेद हेत सब शिष्यबोलायो॥

दो० गुरु अनुशासन मानि तब जुरे सबै यक साथ।
कटि निषंग करवालकसि चले धनुषधरिहाथ॥

भीषम द्रोण विदुर तहँ ठाढ़े। द्रोण समीप मोद मनबाढ़े॥
जायप्रणामसबन मिलिकीन्हा। चिरंजीवकहि आशिष दीन्हा॥
पंगति बांधि ठाढ़ गुरुकीन्हा। हनहु लक्षयह आशिषदीन्हा॥
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपहि। देखत पुत्र पक्षि के रूपहि॥
देखत वृक्ष माहँ की नाहीं। सुनियहवचनकह्योगुरु पाहीं॥
सब देखत बोले कुरुराजा। कहिअपितुमतेतरहिनकाजा॥

पुनि मुनि धर्मराज ते पूंछा । उनकहिदीन सकलद्रुमजूंछा ॥
सब देखतहों सुनि यह बानी । सरिहि न काममहामुनिज्ञानी ॥
सकल शिष्य पूंछे यहि भांती । कहोबातनहिं गुरुहिं सोहाती ॥
पुनि पूंछी मुनि अर्जुन पाहीं । देखत हमहिं कहहु उनपाहीं ॥
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत । दृष्टिलगाय तुण्ड कहँ देखत ॥

दो० पार्थ वचन सुनि द्रोण गुरु बोले गिरा प्रमान ।
तुम ते निसरी काज सुत करहु विशिख सन्धान ॥

सुनि अर्जुन छांड़े तब बाना । कटी तुण्ड सबही सुखमाना ॥
अति अनन्द भीषम उरछायो । साधुसाधु कहि कण्ठलगायो ॥
तुमसबमिलिगुरुदक्षिणादीन्हेउ । अर्जुनद्रव्यद्रोण नाहिंलीन्हेउ ॥
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना । लावहु बांधि देहु यह दाना ॥
गुरुशासन अपने शिर धारा । नृपहिजीति चरणनतर डारा ॥
देखि द्रोण तब दीन छुड़ाई । गयो नरेश भवन खिसिआई ॥
श्रीहत भयो तेज तन नाहीं । नृपप्रणकीन्हो यह मनमाहीं ॥
मोते बैर द्रोण उपजावा । शिष्य हाथ अपमान करावा ॥
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना । करवावों ताको अपमाना ॥
बोलि लीन बहु बिप्र समाजा । कीन अरम्भ यज्ञकर राजा ॥
वेद ऋचा पढ़ि बिप्र अनन्ता । कीन यज्ञ पुनि वर्ष प्रयन्ता ॥
है प्रसन्न सुरनायक आये । सिद्धकाजकहि भवनसिधाये ॥

दो० प्रथम प्रकट भइ द्रौपदी उपमा कहत बनैन ।
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते कढ़ो पुत्र जनु मैन ॥
शीश मुकुट कुंडल कवच लिये धनुष शरहाथ ।
द्रोणनिधन हितनिर्मयो कमलयोनिकुरुनाथ ॥

भीषम निधन हेत संसारा । भयो शिखण्डी को अवतारा ॥
काशिराज त्रैसुता सयानी । भीषम जीति स्वयम्बर आनी ॥
नाम अम्बिका सबगुणरासी । अम्बानाम रूप कमलासी ॥
युगल विचित्रवीर्य कहँ ब्याहीं । अम्बालिका न ब्याहचोताही ॥

नयन सनीर, गरे भरिआवा । बोली बचन शोच उपजावा ॥
गंगासुत, तुमहीं हरि आनी । मोको अब लीजे गहि पानी ॥
सुनि भीषम बोले यह बानी । राजसुता तुव बात न जानी ॥
मात, पिता, सन कौन करारा । देखौं मैं न नयन भरि दारा ॥
परशुराम जहँ पुरुष अनादी । भा सनशोक गई फिरि आदी ॥
कही कथा पुनि रोदन कीन्हा । है दयाल तिन धीरज दीन्हा ॥
॥ दो० आज्ञा भंग न करि सकै भीषम शिष्य हमार ।
॥ तोको सौंपों पानि गहि यह मुनि कीन करार ॥
प्रात होत मन परम अनन्दन । लै नृप सुता चले भृगुनन्दन ॥
पुरी हस्तिना को चलि आये । भीषम देखि चरण शिर नाये ॥
आदर ते पुनि भवन लवाये । अति पुनीत आसन बैठाये ॥
आवतहीं इमि बचन सुनायो । सुनहु पुत्र जा कारण आयो ॥
की याको लीजे गहि पानी । कारण रचिय कही यहबानी ॥
मो सम कौन भयो जग अत्री । इकइस बार हने सब क्षत्री ॥
कोउ कोउ बचे तारिके बोले । सुनि सक्रोध गंगासुत बोले ॥
क्षत्री वंश बैर भरि लेहौं । समर हराय जान तब देहौं ॥
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई । कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई ॥
॥ दो० द्वन्द्व युद्ध तहँ अति भयो शर छूटे पुनि बाम ।
॥ गुरू शिष्य सम्मित करो तेइस दिन संग्राम ॥
तब भीषम करि क्रोध अपारा । कठिनबाण धनुतानि प्रहारा ॥
बाम पार्श्व लागेउ जवशायक । रथते विकलगिरेउभृगुनायक ॥
उठे सँभारि कीन संधाना । भीषम के मारे बहु बाना ॥
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनिमारी । परेउ गंगासुत भूमि दुखारी ॥
शक्ति घात लागी अति पीरा । सुधिनरही कछुविकलशरीरा ॥
ताही समय सकल वसुआये । पाणि पकरि गांगेय उठाये ॥
हौ अष्टम वसु को अवतारा । तुमपीड़ितनहिंकरहु सँभारा ॥
असकहि गयो सतवसु जबहीं । रथ आरूढ़ गंगासुत तबहीं ॥

दो० ब्रह्म अस्त्र संधानि करि कीन्हो तुरत प्रहार।
छिटकी ज्योति अकाश महँ चले करत हुङ्कार॥
भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा। चलेउ अकाश भयो उजियारा॥
भय शिथिल आयो द्यौ धरणी। युद्ध कियो करि अद्भुत करणी॥
जामदग्नि निज शक्ति प्रहारी। भयो अघात शब्द अतिभारी॥
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे। ग्रीषम के प्रचण्ड रवि जैसे॥
लागी हृदय परत नहिं सूझी। महिगिरिपरो सारथी जूझी॥
जोती छूटि स्ववश होइ बाजी। चले पलटि स्यन्दन लै भाजी॥
रथ अरूढ़ ह्वै कृप करि गंगा। गही बाँह लै फिरे तुरंगा॥
होइहि विजय पुत्र सुनि लीजै। होइ निश्चिन्त युद्ध अब कीजै॥
यह कहिकै स्यन्दन पलटाई। भृगुनन्दन के सम्मुख लाई॥
चतुर्विंश दिन युद्ध महाना। अब नृप कहौं सुनो दै काना॥
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा। करहिं निवारण विविध प्रकारा॥
नारायण शर भीषम लीन्हा। पढ़िकै मंत्र फोंकपर दीन्हा॥
दो० तब सकोप भृगुराम होइ लीन्हो पशुपति बान।
अतिलाघवदृग अरुणकरि कीन्हो धनुपसँधान॥
छिटकी ज्योति भयो उजियारा। नभ पथ चले करत सुलकारा॥
अस्त्र शस्त्र ते भयो निवारण। तब लागेउ तीक्षण शर मारण॥
नील बाण भीषम फटकारा। भृगुपति के मस्तक महँ मारा॥
रहेउ न धीर भई अतिपीरा। गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा॥
भीषम देखि बहुत पछिताने। धाये उतरि छत्र शिरताने॥
कहत न बनै नयन जल बाढ़े। मुखपर छत्र छाँह कियठाढ़े॥
उठहु न नाथ गंगसुत बोले। सुनि भृगुराम युगल दृग खोले॥
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा। भीषम कहँ बहुबार प्रशंसा॥
तुमसम कोउ गुरु भक्त न आना। अब सुत मांगि लेहु बरदाना॥
मांगत हौं मांगे यह दीजै। रथ चढ़िलेहु कृपा पुनि कीजै॥
दो० परशुराम अरु गंग सुत चढ़े रथन पर जाइ।

धनुषबाण पुनिकरगहे, निज निज शंखबजाइ ॥
त्यहिअवसरमरीचिऋषिआये। गहिकर परशुराम समुझाये॥
अब तुम तात तजो यह काजे। शिष्य पुत्र ते नीक पराजे॥
भीषम ते बोले ऋषि राजा। गुरु ते रण जीते बड़िलाजा॥
ताते युद्ध त्याग करिदीजै। है मत नीक भवनमग लीजै॥
सुनि शुभ गिरा गङ्गसुतबोले। कहे नाथ तुम वचन अमोले॥
क्षत्री समर बिमुख होजाई। लोक अयश परलोक नशाई॥
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहों। अपने कुलहि कलङ्क नलैहों॥
परशुराम हैं हरि अवतारा। जीते भूमि भूप बहु बारा॥
अर्जुन भुज गहि पानि कुठारा। काटे सुयश विदित संसारा॥
यकइस बार भूप बिन कीन्हीं। धरा सकल विप्रनकहँदीन्ही॥
दो० ताते प्रथमहिं नाथ तुम उनहिं देउ पलटाय।
तबलगि मैं नहिं रण तजों कीन्हे कोटि उपाय॥
असकहि सवन गङ्गसुतभयऊ। पुनिमुनिपरशुरामपहँ गयऊ॥
गहि जोतीकर बाजि फिरायो। बहुबुझाय स्यन्दनपलटायो॥
चले निरखि भृगुनन्दन जाना। हर्षि गंगसुत कीन्ह पयाना॥
विनय वचन बहुभांति सुनाये। करिप्रणाम अपनेथलआये॥
भैनिराश तब राजकिशोरी। चिता बनायो काठ बटोरी॥
सुरसरिनिकट मांगिवर लीन्हा। भीषम निधनहेतु प्रणकीन्हा॥
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी। द्रुपदपुत्र तेहि भयो शिखण्डी॥
करण निधनहित सुनहुभुवारा। है जग पारथ को अवतारा॥
तुम्हरी मीचु भीम के हाथा। है निश्चय जानहु कुरुनाथा॥
दो० मृषा होय नहिं तुव वचन जानिपरी अब सोय।
भावी कोन्यिउ यतनते मेटि सकै नहिं कोय॥
तुम जानत भवतव्यता कह नृप वारहिबार।
करब युद्ध होइहि सोई जोविधि लिखा लिलार॥
सुनत व्यास उठिकीन्हपयाना। भावी चित्त प्रबल हमजाना॥

सुमिरत मन हरि ध्यानलगाये। नगर हस्तिनापुर चलिआये
धृतराष्ट्र आदर करि लीन्हा। दण्डप्रणाम बार बहु कीन्हा
गहि पद भूप व्याससे बूझा। होइहिसम्मति की अबजूझा
कह मुनिहोइहि विकललराई। बोल्यो राउ बहुरि शिर नाई
मैं जानौं जेहि सब संग्रामा। करिउपायसोइ सैन्यश्रकामा
दिव्य दृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा। ये कहिहैं तुमते रण चीन्हा
जो होई संग्राम तमासा। असकहिगये विपिनऋषिव्यासा।

॥ दो० वैशम्पायनकर चरित समभायो सब भूप।
सबलसिंह चौहानकह निजबलके अनुरूप॥

॥ इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते त्रिंशोऽध्यायः॥ ३०॥

दो० कह मुनि जनमेजयसुनहु निज कुलकेगुणगाथ।
बोलि सकलमंत्री निकट करत मंत्र कुरुनाथ॥

कहहु सचिव काकरिय बिचारा। वैरी धर्मराज बरिआरा॥
लागत हम सकलमत फीका। शकुनी कह्यो मंत्र अवनीका॥
इहै मंत्र करण पुनि दीन्हा। चहिये शत्रु संग रणकीन्हा॥
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ। सबन बैठि दृढ़ मंत्र ठहायउ॥
इहाँ कृष्ण लै सकल समाजा। अर्जुन भीम धर्मसुत राजा॥
द्रुपद विराट आदि भटभारी। पूछत सबहिं मंत्र बनवारी॥
बुद्धिमान हौ तुम सब भूपा। कहौमंत्र निजनिज अनुरूपा॥
तब इमि कहेउविराट भुआरा। सुनहु मंत्र बसुदेव कुमारा॥
और बिचार कौन यहि माहीं। विनायुद्ध मिलिहै महि नाहीं॥

दो० कही द्रुपद नरनाह तब सुनिये श्रीब्रजनाथ।
और बिचार न कीजिये करहु युद्ध कर साज॥

कही सात्यकीसुनिये श्रीमति। मिलिहिनभूमियुद्धविनुयदुपति॥
ताते कीजै अवशि लराई। शत्रु जीति महिलेव छुड़ाई॥
नीक मंत्र सात्यकी बिचारा। कह्यो नकुल यह बारहिबारा॥

कुन्ती कह्यो मंत्र सुनि लीजै। करिअरिनिधनराजनिजकीजै॥
हे यदुनाथ सहायक तोरे। ह्वै है विजय पुत्र मत मोरे॥
सहदेव दीन्हो मत येहा। कीजे रण त्यागो संदेहा॥
धर्मराज कीन्हे रण करणी। जीतो शत्रु मिलै निजधरणी॥
दुर्योधन कीन्हो अभिमाना। समुझायोहरि बात न माना॥
बिना युद्ध कैसे महि देहै। अब नृप त्याग करो संदेहै॥
दो॰ भीमसेन यहि विधि कहेउ विहँसि कृष्णते वैन।
विना युद्ध नहिं महि मिलै पीतम पंकज नैन॥
अब देख्यो पुरुषारथ मोरा। कारिहौं वहुत कहतहौं थोरा॥
सम्मुख दुर्योधन सन लरऊं। रुण्डमुण्डमय मेदिनिकरऊं॥
सुनहु भूप कौरव विन मारे। नहिं आइहि सन्तोष हमारे॥
दुर्योधन जीतौं रण माहीं। कृष्णकृपाकछु तिजवलनाहीं॥
तातै और विचार न करहू। अबभयत्यागिभूपतुमलरहू॥
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा। करहुयुद्ध सवछांड़ि अँदेशा॥
भीषम युद्ध भयउ शिरहमरे। करिहौंनिधनविजयाहिततुम्हरे॥
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला। करहु युद्ध जनिडरहुभुवाला॥
मैं आदौ अब द्रोण लड़ाई। मारौ करौ महा प्रभुताई॥
काशिराज दीन्हे मत येहा। लड़हु नरेश तजहु संदेहा॥
भये सहायक श्री वनवारी। निश्चयविजयनहारितुम्हारी॥
दो॰ धर्मराज बोले विहँसि सुनिये दीनदयाल।
जाके शिर तुव कर कमल ताहिन जीते काल॥
दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा। छांड़े लोकलाज अरु धर्मा॥
तृण समान तिहुं लोकहिजानी। कीन्हेसि नग्नद्रौपदी रानी॥
वढ़िहि पाप मारे रण भाई। मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई॥
मंत्र हमार नाथ सुनि लीजे। कीजे संधि युद्ध जनि कीजे॥
कीजे निधन यदपि अपराधी। जो वहु बांटि देयमहिआधी॥
फरकत अधर द्रौपदी बोली। हे हरि धर्मराज मति डोली॥

पीय ब्राह्मणों की उत्पत्ति, होनेवाले राजाओंका राज्यसमय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदान विधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगानेका फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्य आदि वर्णन कियेगये हैं ॥

शिवपुराण भाषा कीमत ४॥)

इसका पंडित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दी भाषामें अनुवाद किया है इसमें शिवजी के निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजा चरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, कार्यपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्म माहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदिमें छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त की गई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड कीमत ।≈)

पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुर निवासीकी भाषा है इसमें सेतुबन्धका माहात्म्य वहांके सब तीर्थोंका वैभव, महालयश्राद्धका माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेवका वर्णन इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा कीमत ।)॥

जिसको पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्डसे देशभाषा में रचा जिसमें अनेकप्रकारके इतिहास और सम्पूर्ण व्रतोंके माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत कीमत ५)

इसके भाषाटीकाकार श्रीअंगदशास्त्रीजी ने अक्षर अक्षरके अर्थ को ललित व्रजबोली में रचना किया है यह टीका ऐसा मनोहर हुआ है कि जिसकी सहायता से थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छी तरह से समझ सक्ता है यह पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के पास रहना चाहिये क्योंकि भागवत बड़ी कठिन पुराण है बिना ऐसे उत्तम भाषा टीका के सब को श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल बीच में और भाषा टीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से यत्नसे छपा है कागज चिकना है और छापा पत्थर है ॥

उत्तम कागज चार टाइप की लिखाई बड़ी साफी की कीमत ७)

करौं अकौरव भूमि सब छत्र धरौं तव शीश ।
वचै न खल शंकर शपथ शत शिवा अज ईश ॥
भयो मुदित मन धर्मसुत सुनि हरिगिराप्रमान ।
भणितपर्व उद्योग इमि सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

इति उद्योगपर्व समाप्तः

पीय ब्राह्मणों की उत्पत्ति, होनेवाले राजाओंका राज्यसमय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदान विधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगानेका फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्यआदि वर्णन कियेगये हैं ॥

शिवपुराण भाषा कीमत ॥)

इसका पंडित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दी भाषामें अनुवाद किया है इसमें शिवजी के निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजा चरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, कार्य्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्षभस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल खगोल व आदिमें छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त की गई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड कीमत ।=)

पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुर निवासीका भाषा है इसमें सेतुबन्धका माहात्म्य वहांके सब तीर्थोंका वैभव, महालयश्राद्धका माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेवजी का वर्णन इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा कीमत ।)॥

जिसको पंडित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्डसे देशभाषा में रचा जिसमें अनेकप्रकारके इतिहास और सम्पूर्ण व्रतोंके माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत कीमत ४)

इसके भाषाटीकाको श्रीमंगरशास्त्रीजी ने अक्षर अक्षर के अर्थ को कठिन [illegible] से रचना किया है यह टीका ऐसा मनोहर हुआ है कि जिसकी सुगमता से थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छी तरह से समझ सकता है पर उत्तम प्रत्येक विद्वान् के पास रखनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ी कठिन पुस्तक है बिना ऐसे उत्तम भाषाटीका के सब को इसका अर्थ नहीं समझ पड़ता है इसकर मूल श्लोकों और भाषा टीका को ऊपर रख कर अत्यन्त शुद्धता से प्रबन्ध छपा है कागज चिकना है और छापा साफ है ॥

[illegible] मोटे टाइप की [illegible] की कीमत ७)

[illegible]

बृहन्नारदीयपुराण क़ीमत ।)≡

पंडित देवीसहायशर्मा नारनौलनिवासीकृत भाषाहै–जिसमें श्रीनारदजी और सनत्कुमारसम्वाद द्वारा श्रद्धाभक्तिनिरूपण, भगवद्भक्तिमाहात्म्य वर्णन उत्तम तीर्थोंका निरूपण सगरवंशी सौदास राजाकीकथा, श्रीगंगाजी की उत्पत्ति, राजावलिका वृत्तान्त, दानविधि का निरूपण, व्रतों और श्राद्धों का विधान, तिथिनिर्णय, प्रायश्चित्तविधान, यमसार्गका निरूपण, संसार के दुःखों का कथन, मोक्षोपाय वर्णन, वेदमाली और तिस के पुत्र यज्ञमाली वा सुमाली की कथा और विष्णुजी के चरणोदक का माहात्म्य इत्यादि कथा वर्णित हैं॥

सुखसागर क़ीमत ७) पु०

सुखसागरों का तर्जुमा पंजाब के रहनेवाले बाबू मक्खनलालजी ने कियाहै इस सुखसागरमें बहुतही मोटेहरूफ काग़ज सफ़ेद और अत्यंतही उम्दा तसवीरें इत्यादि सब सामान है कि जिसकी तारीफ़ नहीं होसक्ती देखनेही से हाल मालूम होगा॥

गणेशपुराण भाषा क़ीमत २॥) पु०

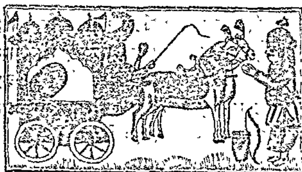
इसको मुंशीनवलकिशोरजीकी आज्ञानुसार नारनौलनिवासी पंडित देवीसहायजीने संस्कृतसे श्लोक २ का देशभाषामें उल्थाकियाहै॥ इसमें गणेशजीका सम्पूर्ण चरित्र विस्तारपूर्वक व औरभी अनेकविषयवर्णितहैं॥

श्रीवाराहपुराणपूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध क़ीमत १) पु०

जिसका जयपुर निवासि पंडित माधवप्रसादजीने मुंशीनवलकिशोरजीके व्यय से संस्कृत से देवनागरी में भाषा किया और पंडित दुर्गाप्रसाद और पंडित सरयूप्रसादजीने शुद्धकियाहै इसमें श्रीभगवान् वाराहअवतार ने धरती से चौबीसहजार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्धहोने के लिये इतिहाससंयुक्त कथायें वर्णन की हैं॥

गरुड़पुराण क़ीमत ।)=॥

इस में ३४अध्याय प्रेतकल्पके बीचमें मूल और नीचे ऊपर भाषा टीका रखकर छापेगये हैं जिसमें सम्पूर्ण प्रेतहीकाकर्म्महै और प्रेतहीकी सम्पूर्ण षोडशी सापिंडन शान्ति वृषोत्सर्गइत्यादि क्रियाभी विस्तारपूर्वक वर्णितहैं



महाभारत

सबलसिंहविरचित॥

जिसमें

भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा पर्व हैं॥

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणकी रीति पर दोहा चौपाई में वर्णित है

जिसमें

कौरव पांडव के घोरयुद्ध में अठारह अक्षौहिणी सेनाका नाश यह द्रौणि करके पाण्डव पञ्च पुत्रवध और दर्प शोक से दुर्योधन प्राणत्याग आदि अनेक कथा वर्णन कीगई हैं

आर्य्यावर्त्तनिवासि भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

चौदहवींबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापीगई

सन् १९०८ ई०॥

बृहन्नारदीयपुराण क़ीमत ।)≡

पंडित देवीसहायशर्मा नारनौलनिवासीकृत भाषा है—जिसमें श्रीनारदजी और सनत्कुमारसम्वाद द्वारा श्रद्धाभक्तिनिरूपण, रम्य वर्णन उत्तम तीर्थों का निरूपण सगरवंशी सौदास राजाकी कथा, गंगाजी की उत्पत्ति, राजावलिका वृत्तान्त, दानविधि का और श्राद्धों का विधान, तिथिनिर्णय, प्रायश्चित्तविधान, यमसागर का निरूपण, संसार के दुःखों का कथन, मोक्षोपाय वर्णन, वेदमाली और तिस के पुत्र यज्ञमाली वा सुमाली की कथा और विष्णुजी के चरणोदक का माहात्म्य इत्यादि कथा वर्णित हैं॥

सुखसागर क़ीमत ७) पु०

सुखसागरों का तर्जुमा पंजाब के रहनेवाले बाबू मक्खनलालजी किया है इस सुखसागरमें बहुतही मोटेहरूफ़ क़ाग़ज़ सफ़ेद और अत्यन्त उम्दा तसवीरें इत्यादि सब सामान है कि जिसकी तारीफ़ नहीं देखने [illegible] ल मालूम होगा॥

गणेशपुराण भाषा क़ीमत ७॥) पु०



अथ भीष्मपर्व ॥

गुरु गोविंद के चरण मनैये । ज्यहि प्रसाद उत्तम गतिपैये ॥
के प्रणाम रघुपति के पांयन । चारिवेद जाके गुण गायन ॥
अवधनाथ सीतापति सुन्दर । दीनबन्धु रघुवंश पुरन्दर ॥
शिवसनकादिक अंत न पावें । नरमुखते केहिविधि यशगावें ॥
शुक शारद नारद से पाठक । हनूमान गावें गुण नाटक ॥
बालमीकि रामायण करता । राम चरित्र पापको हरता ॥
अष्टादश पुराण श्री भारत । भाष्यो व्यासज्ञान पुरुषारथ ॥
॥ दो० पाराशरते जन्म है व्यासदेव ऋषिराज ।
॥ यामुखभारतप्रकटभो करिकुलकोसिरताज ॥
गुरु गणेश शारद के पांयन । करों प्रणाम होहु सुखदायन ॥
महिमा निगम कहत नहिं आवै । शेष सहस मुखते गुणगावै ॥
सम्वत सत्रह से अट्ठारहि । पुनितातिथि मंगलकेवारहि ॥
माघ मास में कथा विचारी । औरंगशाह दिलीपतिभारी ॥
सब पुराण पारायण भारथ । यामहँकुरुपाण्डवपुरुषारथ ॥
व्यासदेव भवभार निवारण । भारतरचो जगत के तारण ॥
॥ दो० योग युद्ध रस मंत्रणा भारत मों है सर्व ।
॥ सबलसिंहचौहान कह भाषा भीषमपर्व ॥
नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये । पंचग्राम मांगन प्रभु आये ॥
दुर्योधन सुनि के हठ गहेऊ । सूची अग्र देन नहिं कहेऊ ॥
कहि हरि चले तीनि सब लेहें । अर्ज्जुन भीम शाक तबदेहें ॥

गयो आपु जहँ धर्म नरेशव । इतकी कथा कही सब केशव
मांगे पांच ग्राम नहिं पाये । गर्व वचन कुरुनाथ सुनाये
हित की बात छांड़ि सब दीजे । पहिरि सनाह युद्ध अबकीजे
सुनेउ युधिष्ठिर विग्रह मान्यो । विग्रह भयो उचित मैं जान्यो
अहो कृष्ण संतन सुखदायक । हमनाहिं युद्ध करनके लायक

दो० भीषम द्रोण करणकृप लक्ष छत्रधर साथ ।
तासोंयुद्ध खेतचढ़ि किमिजीतहिं यदुनाथ ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे । अपनो राज देत को मांगे
साहस के रणको मन लैये । मारिहि रिपुहि देश तब पैये
द्रुपद विराट आदि क्षत्रीगन । हम सारथि पारथ के स्यंदन
अर्जुन भीम देहु रण को मन । जीतहु युद्ध कही जगवंदन
अर्जुन कही युधिष्ठिर राजहि । अबबिलंबकीजे केहिकाजहि
भीमसेन यहिभांति बखानेउ । कृष्ण कही मेरे मन मानेउ
कीजे युद्ध भयानक भारथ । अब देखो मेरो पुरुषारथ
दुर्योधन सो बंधु सँहारों । भीषम करण खेतचढ़िमारों
आपु सहाय जगत के तारण । शोच नरेश करो केहिकारण

दो० सभा मध्य रक्षाकरयो द्रुपदसुता की लाज ।
कौरव दल तृणसमगनों जोसहायब्रजराज ॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन । साजहुसैन कहेउ माधवसन
नृपकी आज्ञा श्री हरि पायो । साजत सैन विलम्बनलायो
द्रुपद विराट शंख रथ साजे । पहिरि सनाह सिंहसमगाजे
धृष्टद्युम्न रथ पर चढ़ि आयो । जाके शिर हरि मुकुटबँधायो
कंचन रथ सहदेव सुहाये । तेज तुरंग नकुल चढ़िआये
लोह चक्र जो हरि निर्मायो । भीमसेन चढ़ि शोभा पायो
पहिरिसनाह खड्गकटि बांधे । गदा लिये कर शारँगकांधे
[illegible] सम भीम भयंकर । अक्षय ढाल गहे लै शंकर
[illegible] सुन्दर उत्तम स्यंदन । अभिमनु चढ़े सहाआनन्द

शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर। जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर॥
धृष्टकेतु कीन्ही असवारी। काशीराज महा बलभारी॥
पंचकुमार द्रौपदी जाये। हर्षित चले सुवेष बनाये॥
चले शिखण्डी रणके शूरा। साजे सैन महाबल पूरा॥

दो॰ हीरामणि चामर लगे श्वेत वरण गजराज।
दण्डछत्रधरि शीशपर कियो युधिष्ठिरसाज॥

कंचन मणिमय बनी अमारी। तेहिपरनृपतिकीन्हअसवारी॥
पारथकहँ यदुनाथ बनायो। निज करलै सनाह पहिरायो॥
मणिमयकुण्डलमुकुटविराजत। बांधे अस्त्र मनोहर छाजत॥
करगहि धनुषबाण बहु साजें। अक्षय त्रोण देखि रिपुभाजें॥
नन्दिघोषरथ कीन्हेउ मण्डित। शोभानिरखिहोतरिपुखण्डित॥
औ अनेक कुंजर हैं माते। दन्त विशाल क्रोध तें ताते॥
तिनके नयन परीं अँधियारी। ठाढ़े जो हालत बलभारी॥
लीला चारि तुरंग लगायो। जाको वेग पवन नहिं पायो॥
हनूमान ध्वज ऊपर आयो। ज्यहिबलसे सबलंकजुड़ायो॥
कृष्णचरण कीन्हेउ तब वन्दन। पारथजाइ चढ़े निजस्यंदन॥
श्रीहरि निरखि बहुतसुखपायो। आपु सारथी वेष बनायो॥

दो॰ आपुकृष्णजोतो गहेउ अर्जुन पुलकित गात।
हांकत हय हिय हर्ष तें पीताम्बर फहरात॥

पांचो बंधु करी असवारी। कुंती तब आरती उतारी॥
भांतिअनेकशकुनशुभकीन्हेउ। सुतनसौंपि हरिकेकरदीन्हेउ॥
ममअनाथ के पांचो बालक। प्रभुरणमेंकीन्हेउप्रतिपालक॥
कही कृष्ण तुमभवन सिधारहु। जयहोइहिजियशोचनिवारहु॥
यहकहि गमन आपुहरिकीन्हो। आनन्दित शंखध्वनिकीन्हो॥
गजपर सरस दमामे बोलत। शब्दअघातशेष शिरडोलत॥
ढाक ढोल औ भेरी बाजत। सहनाई में मारू राजत॥
करिके बम्ब चले तब राजन। अरु अघात बाजेबहुबाजन॥

सत्त क्षौहिणी फौज सँवारी। चालिस सहस छत्रके धारी॥
तीनि कोटि कुंजर मतवारे। पंचकोटि रथ सरस सँवारे॥
वीस कोटि असवार महावल। तीसकोटि सब लेखो पैदल॥

दो० कुरुक्षेत्र आये सकल जहां युद्धको ठाट।
विप्रवेद ध्वनि पढ़तहं बोलत मागधभाट॥

अब यह कथा चली शुभ आगे। कुरुपतिसाजकरनदललागे॥
भीषम द्रोण करण कृप आये। भूरिश्रवा वृषसेन सुहाये॥
सोमदत्त कृतवरमा अत्री। बाहुलीक अशुथामा क्षत्री॥
है भगदत्त नृपति को साथी। योजन पांच तासु को हाथी॥
चले अलम्बुष दानवराजन। शकुनीशल्य कियोरणकोमन॥
औ शशिविन्दु नरेश महावल। चले कलिंग लियेकुंजरदल॥
हैं नवलाख महावल हाथी। सौ बान्धव कलिंग के साथी॥
आये गमन महावल भारी। तेज तुरंग करी असवारी॥
तव सारथि नृप रथ लै आये। कंचन के चाके निर्म्माये॥
गजमुक्ता की झालरि सोहै। मानुष कह शंकर मनमोहै॥
लाल प्रवाल जड़ित वहुमणी। जगमगात हीरन की कणी॥
आनि तुरंग तेज रथ जोरे। पवन वेग दुइ चारिउघोरे॥
चढ़े साजि दुर्य्योधन नीके। संपति देखि इन्द्रमन फीके॥

दो० दुश्शासन रथ साजियो सोभाइन लै साथ।
साठि सहस नृप छत्रधर चढ़े साजि कुरुनाथ॥

औ अनेक कुंजर हैं माते। दन्त विशाल क्रोध ते ताते॥
तिनके नयन परीं अँधियारी। ठाढ़े जो हालत वल भारी॥
कंचनरथ अति दिव्य अनूपा। जाहि देखि मोहत सुरभूपा॥
दिव्य अनूपम झालरि सोहै। गजमुक्ता देखत मन मोहै॥
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर। देखत शोचन लाग पुरन्दर॥
रथको ठाट भूमि सब मण्डित। हयपदाति धाये रणपण्डित॥
कुरुसागर के व्यास बखानेउ। अतिअघातकोउअंतनजानेउ॥

भानुमती आरति ले आयो । कियोशकुन शुभमंगलगायो ॥
भयो बम्ब वेरख फहराने । प्रलय काल जनुघनघहराने ॥
धूरि धुंधि महँ रवि नहिं सूझै । ध्वजघनसघनपवनआरुझै ॥
डोली अनी शेष शिर थाकेउ । भूमि चली पर्वत सब कांपेउ ॥
दो० दशन बराहन हदरहे दबी कमठकी पीठि ।
दिग्गजकरहिंचिकारसब दिगपतिचकितदीठि ॥
कुरुक्षेत्र कौरवपति आये । तब भीषम कछु वचनसुनाये ॥
द्रोण आपु शारँग करे गहिये । सावधान होइ रण में रहिये ॥
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ । सबआगे अचरजकरिलेखेउ ॥
नृप मन महँ तब मंत्र बिचारी । तुरत तजी गजकी असवारी ॥
आपु पयादे चले नरेशू । अर्ज्जुनकह देखियहपिकेशू ॥
शत्रुसेन मों कीन्हेउ गमनाहिं । आनन्दित जैसे चलभवनाहिं ॥
जो कुरुनाथ बांधि के राखे । कीजै कहा भीम यह भाखे ॥
जौन बुद्धि के पांसा खेले । वहै बुद्धि कै चले अकेले ॥
बिन आज्ञा कैसे सँग जैये । विना गये पाछे पछितैये ॥
कही कृष्ण अब चुपकरिरहिये । नृपकी कठिनकथानहिंकहिये ॥
धर्मराज धर्म हित जानत । शत्रु मित्र समताकरिमानत ॥
यामों यहै मंत्र को कारण । कहौ आपु यह त्रास निवारण ॥
सब सेना मिलि थिरकै रहिये । देखहु खड़े कछू नहिं कहिये ॥
दो० कुरुदल सब चकित भये कहैं परस्पर बैन ।
मिलो बिचारो दीन कै देखि भयानकसैन ॥
आपु युधिष्ठिर भीषम दरशो । छांडो रथ गंगासुत हरषो ॥
आतुर चरण वन्द तब कीन्हो । हँसिभीषमअंकमभरिलीन्हो ॥
सदा होहि कल्याण तुम्हारो । जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
धर्मराज यहि भांति बखानत । हमतो तुमहिं पाण्डुकेमानत ॥
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक । तबतुमहीकीन्हो प्रतिपालक ॥
कपटपांस करि बनहिं पठाये । तेरह बर्ष महा दुख पाये ॥

धर्मराज । कीन्हो असवारी। श्वेत गयंद महाबल धारी॥
॥ दो० सिंहनाद वीरन कस्यो भयो भयानक शोर।
॥ दिशा दशौ पूरित भई ज्यों घुमरे घन घोर॥
पारथ कही सुनहु जगवन्दन। द्वैदल मध्य राखिये स्यन्दन॥
सुनिकै कृष्ण हांकि रथ दीन्हो। मध्य भूमि लै ठाढ़ो कीन्हो॥
पारथआनिसवहि दिशि देखेउ। सव के अग्र पितामह लेखेउ॥
श्वेतवरण रथ सरस सुहायो। श्वेत वरण तन शोभापायो॥
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे। श्वेत वरण हैं चारिउ घोरे॥
गुरु द्रोण रथ श्याम सुहायो। श्याम वरण घोड़े छविपायो॥
कृपाचार्य को अर्जुन देख्यो। मनमहँअतिविस्मयकरिलेख्यो॥
देख्यो दुर्योधन सो भाई। धवल छत्र शिर शोभा पाई॥
सिंधुराज देख्यो बहनोई। मामा शल्य जान सब कोई॥
॥ दो० गुरु पितामह बंधु सुत देख्यो सब परिवार।
॥ इन्हेंमारि जय का करै दीन्हो धनु शर डार॥
कही कृष्ण पारथ सुनि लीजे। क्षत्री धर्म त्याग नहिं कीजे॥
रण देखे क्षत्री जो डरहीं। अन्तकाल सो नरकहिपरहीं॥
प्रथम क्रोधकरि रणमें आयहु। अब यह ज्ञान कहांते पायहु॥
गहहु अस्त्र कर युद्ध सँवारहु। छांड़हु शोच शत्रु संहारहु॥
बालक युवा वृद्धता आवै। अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै॥
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि। जो सिरजै सोई संहारहि॥
काल वश्य है सब संसारा। यामें कछु नहिं दोष तुम्हारा॥
क्षत्री के साहस ते कामहिं। कीजै युद्ध होइ यश जामहिं॥
॥ दो० दान मरण रण शूरता क्षत्री धर्म प्रमान।
॥ पारथ अस्त्रहि गहोकहि सबलसिंह चौहान॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वितीयोऽध्यायः २॥
अर्जुनकहेउ सुनहुजगतारण। गोत्र वद्ध कीजे केहिकारण॥
बाढ़े पाप पुण्य सब नाशहि। पावैं अन्त अधोगतित्रासहि॥

गुरुपरिवारबधों केहिकाजहि। जैहों वनहिं छोड़िके राजहि॥
अर्जुन को माधव समुझायो। चारि वेद को सार सुनायो॥
मात पिता सुत बन्धु कहावे। अंतकाल नहिं साथ सिधावे॥
अपनो धर्म कर्म पै साथी। सुखसम्पति झूठो सबसाथी॥
जो वन जाय तपस्या करिहौ। अन्त भये जगमें अवतरिहौ॥
दान अनेक यज्ञ जो करहीं। स्वर्गभोगकरिमहिअवतरहीं॥
ताते जन्म मरण नहिं छूटै। अचलनहोहिं कोटिशत कूटै॥
पुण्य पाप दोउ जब नाशहिं। तब पावहिं मेरे पुर वासहिं॥
दो॰ पुण्य पाप बांधो जगत को काटन समरत्थ।
निर्मल ज्ञान विवेकता के मन अपने हत्थ॥
मन भौ भुक्ति मुक्ति नर पावै। मन के चले कर्म गति आवै॥
सब इन्द्रिन मों है मननायक। बंधन मुक्ति देन के लायक॥
जाके हृदय दया के वासहिं। ताके धर्म सदा परकाशहिं॥
जहँलगि जीव जगतमें अहई। सबके हृदय वास मम रहई॥
नदिन मध्य गंगा कहँ जानहु। तरुनमध्य अश्वत्थबखानहु॥
ब्रह्मऋषिन में नारद जानहु। कपिलदेव सिद्धन मों मानहु॥
गजन माहिं ऐरावत देखो। उच्चैःश्रव हय मध्य विशेखो॥
सामवेद वेदन महँ गनई। साधुन में शंकर सब भनई॥
नरन माहिं राजा के राखित। देवन माहिं इंद्र मम भाषित॥
सर्पन मध्य वासुकी कहिये। नागन महँ अनन्तमों रहिये॥
दो॰ ग्रहन माहिं रवि हमअहैं तेज अग्निमो जान।
नारिन महँ रम्भा अहैं गुण सात्यकी प्रमान॥
चारिवरण महँ जो अवतरिहौ। जो कुलधर्म सोई सबकरिहौ॥
ताते कर्म लागि सब करिये। केवल नाम हमारे धरिये॥
कहौं कहां लगि ज्ञान बुझावैं। मृतकसैन सब नैन दिखावैं॥
पारथ कही सुनहु हो केशव। नयनलखौं तो मिटै अँदेशव॥
दिव्य दृष्टि अर्जुन तब पायउ। मुखमें सबब्रह्माण्ड दिखायउ॥

मेघावरण शीश आकाशहि । रविशशिनयनकियेपरकाशहि ॥
मुख भौ अग्नि शारदा रसना । कंध रुद्र तारागण दशना ॥
इंद्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ । नाभी सिंधु देखि मन मोहेउ ॥
पृष्ठ अष्ट वसु शोभा पायउ । जंघदशो दिशिपाल सुहायउ ॥
चरणविष्णु रोमावलितरुगन । अस्थि पहार वेदश्रुतिहेमन ॥
धरणी मांस नदी नख लेखेउ । महा विराट रूप यह देखेउ ॥

दो० मुख विस्तारेउ कृष्ण तब पारथ देखेउ नैन ।
जूझे सब सैना मृतक रण में कीन्हें शैन ॥

सर्व मृतक पारथ जब देखेउ । अपनेजियअचरजकरिलेखेउ ॥
त्रसित भयो तन कंप जनायो । मूंदेउ नैन वचन नहिं आयो ॥
अर्जुनकाहिं त्रसित करिजाना । कठिनरूप छांड़ेउ भगवाना ॥
अर्जुन अब युग नैन उघारो । सखारूप मम त्रास निवारो ॥
तब पारथ देखेउ बनवारी । जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
अर्जुन तब कमलापति आगे । अस्तुतिकरन जोरिकर लागे ॥
तुम प्रभु तीनिलोक के करता । दाता जन्म प्राण के हरता ॥
अब संशय प्रभु मिटीहमारी । करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी ॥
यहकहि धनुपहाथकरिलीन्हेउ । देवदत्त शंखध्वनि कीन्हेउ ॥
दोउदल सिंहनाद करिआयो । युद्धभूमि में शोभा पायो ॥

दो० दोउ दल बाजन बजे गर्जे सिंह समान ।
क्षत्री गण रण हांक दे साधे शारँग बान ॥

भयो कुलाहल दल में भारी । आगे भये महा धनुधारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये । शंखध्वनि करिनाद सुनाये ॥
सुनि के भीमसेन तब धायउ । मानहुं काल देह धरि आयउ ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये । भीषम के सन्मुख ह्वै लरिये ॥
तबहिं धनंजय धनु करगहेऊ । आगे ह्वै भीषम रान कहेऊ ॥
करिप्रणाम सायक द्वय छेंडउ । गंगासुत बांचहि शर छेंड़ ॥
भीषम कहेउ सुनहुजगतारण । सारथि भयो भक्त के कारण ॥

पांडव धन्य धन्य ये पारथ। जाके रथपर श्रीपति सारथ॥
यह कहिकै रणको मन लायो। महारथी सब युद्ध मचायो॥
भीमसेन दुश्शासन क्षत्री। दोऊ जुरे महाबल अत्री॥
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे। क्रोधितबाण चलावनलागे॥
नकुल और जयदर्थ सुहावें। क्रोधवंत दोउ युद्ध मचावें॥
दो० शकुनी अरु सहदेव रण भिरे प्रचारि प्रचारि।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों कियो भयंकर मारि॥
भूरिश्रवा सात्यकी संगहि। कृतवर्मा विराट रण रंगहि॥
भगदत्तहि क्रोधित जबजान्यो। द्रुपद नरेश आपु रणठान्यो॥
सोमदत्त उतरा रण मंड्यो। बाणनते रिपुसैन विहंड्यो॥
कृपाचार्य सन्मुख ह्वै धाये। तिनसों काशिराज रण पाये॥
घटउत्कच कीन्ह्यो संधानहिं। जुरे अलम्बु तेज रणधामहिं॥
नृप शशिबिन्दु शंख संग्रामहिं। क्रोधितलगे चलावनबाणहिं॥
तब द्रोणी निजकरधनुशरगहि। जुरे शिखंडी ते रण रंगहि॥
कुरुदल में वृषसेन सुहाये। तिनते चेतिकरण रणलाये॥
जुरे वीरसब लै शारँग शर। होनलगी अतिमारु परस्पर॥
दोऊ दल कीन्हेउ संधानहिं। क्रोधितलगे चलावनबानहिं॥
शततेसहस सहस ते लाखन। बरषें बाण सकैको भाखन॥
दो० दोउदल वीरन रणरचे जलद बुंद समबान।
महा भयानक युद्ध कह सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥
अर्जुन सों भीपम पुरुपारथ। कीन्ह्योप्रलयभयानकभारथ॥
क्रुदित चले चलावत बानहिं। विंशतिशरमारयोहनुमानहिं॥
महावीर रण दोउ समानहिं। कृष्णशरीरहन्यो दशबानहिं॥
सहस बाण भीषम करलीन्ह्यो। ताते मारु पारथहि दीन्ह्यो॥
अष्ट विशिख क्रुदित ह्वै जोरे। घायलकिय रथचारिउघोरे॥
और लक्ष शर क्रोधित मारा। बहे प्रवाह रुधिरके धारा॥

सप्त वाणते ध्वजा निशानहिं। वाणन ते सेना घमसानहिं॥
कृष्णअंगदशविशिखसुमारयो। तबअर्जुन शरधनुपसुधारयो॥
पष्टि वाण भीपम उर मारा। मानहुँ वज्रपात फटकारा॥
सप्तवाणहनि ध्वजानिशानहिं। सारथिउरमारयो दशवानहिं॥
चंचल अश्व रहे रथ जोरे। घायल भे रथ चारिउ घोरे॥
अर्जुन वाण चमू पर मारयो। हयगजरथ पदाति संहारयो॥
दो०. क्रोधवन्त अर्जुन भयो कीन्ह्यो लघुसंधान।
जलथल भारतभूमिसब शरछायोअसमान॥
एकै शर पारथ संधानहिं। गुणमेंधरत होहिं दशवानहिं॥
चलत होहिंशत लगेसहस्रन। यहिप्रकारकियो सैननिकंदन॥
जब पारथ बहुकटक संहारयो। भीपमअपनो तेजसँभारयो॥
लघु संधान लगे शरवर्पन। जूझै सैन सहस्र सहस्रन॥
दोउ सुभटअतिसमर जुझारा। वरषहिंवाण मनो जलधारा॥
भीषम अग्निवाण संधान्यो। लखिपांडवदल शंकामान्यो॥
प्रकटो अग्निवाण ते ऐसो। प्रलयकाल वड़वानलजैसो॥
प्रकटी शिखा सहस्र सहस्रन। पांडवदल लागे जारनतन॥
जब पांडव सैना अकुलान्यो। वरुण वाण अर्जुन संधान्यो॥
वरुण विशिखते वरष्यो पानी। निमिषएकमहँ अग्निवुतानी॥
रणमें मेघ घुमरि कै आयो। महा वृष्टि वरपा झरिलायो॥
वसन सनाह भीजि तनलागे। परभींजे शर चलत न आगे॥
दो० पवन अस्त्र भीषमगह्यो सूख्यो नीरतुरंत।
हयपदाति रथउड़त हैं मतवारे मैमंत॥
ऐसी तेज समीर चलाई। मानहुंघरी प्रलयकी आई॥
नागविशिख तब फल्गु प्रहारा। सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा॥
फनकाढ़े अजगर सब धावहिं। लीलहिं सैन विलंबनलावहिं॥
विषकेतेज कटकव्याकुलअति। भीपमशरसंधान्यो खगपति॥
गरुड़ देखि सब सर्प पराने। भये ' जात नहिं जाने॥

तीक्षण पंचबाण कर लीन्ह्यो। तेशरचोट शीशपर दीन्ह्यो॥
अर्जुनइमिअतिविशिखचलायो। शरसों भीषमको रथ छायो॥
गंगतनय हँसि विशिख पँवारे। पारथ शर बीचहि कर डारे॥
कृष्ण देव रथ हांकि चलायो। भीषम के सम्मुख पहुंचायो॥

दो० अर्जुनरथ आयो निकट भीषम देखेउ नैन।
क्रोधवंत शर साधिकै कह्यो कृष्णसों बैन॥

दीनबंधु संतन सुखदायक। पारथ नाहिं मेरे रण लायक॥
पांडु वंश के रक्षा कारण। सारथि आप जगतके तारण॥
आपुसो दृढ़ जोती करगहिये। मारतहां तीक्षण शर सहिये॥
ऐसो शर भीषम संधान्यो। देव लोक सब शंका मान्यो॥
कम्पत है पांडव दल ऐसो। कदलीपात मरुतलगि जैसो॥
दिगपालन देखत भय मानी। वसुधाशायक निरखिसकानी॥
जो शर परशुराम ते पायो। क्रुद्धित ह्वै सोइ बाणचलायो॥
छूटत बाण शब्द भयो भारी। दशदिशिअतिकीन्हिउजियारी॥
कहउकृष्ण अर्जुन सुनि लीजे। सावधान रणको मन दीजे॥
जब पारथ सुरपुर पगुधारयो। देवकाज सब दैत्य सँहारयो॥
तब सुरपति शिरमुकुटबँधायो। तहां किरीटी नवशर पायो॥

दो० हँसि दीन्हो सुरनाथ तब पारथ लीजे बान।
महाकष्ट रणमहँ परे तब कीन्ह्यो संधान॥

स्वइशरपाणिविजयनरलीन्ह्यो। पढ़िकै मंत्र फोंक शरदीन्ह्यो॥
जिष्णुकुद्धहोइ विशिख चलायो॥आवतबाण सोकाटिखसायो॥
काट्योशर श्रीपति सुखमान्यो। तब अर्जुनबहुभांतिबखान्यो॥
अहो पितामह धनु दृढ़ धरिये। सावधान मोते रण करिये॥
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ। कीन्ह्यो महाभयानकभारथ॥
पांडवदल भीषम बहु मारयो। भीमसेन तब आप सँभारयो॥
रथते उतरि गदा गहि धायो। कौरव दल में युद्ध मचायो॥
गदा घाव गजकोशिरफोरयो। सहितमुशुण्डिदशनसबतोरयो॥

कोपि गदा रथ ऊपर मारै। सहित रथी सारथी संहारै।
हय पदाति आगे जो पावै। भीमसेन तेहि मारि गिरावै।
रथहि पकरि रथ ऊपर मारै। गहि गयंद गज ऊपर डारै।
आरत लगे जात लोटत गज। लागे धुका उताइलगतसज॥

दो० कौरव दल त्रासित भयो धरै न कोऊ धीर।
सहसा के रण में जुरे एक बार शतवीर॥

दै करि हांक कियो दृढ़ ठानहिं। सबै रथिन मिलि मारबानहिं॥
काल समान तेज रण छूटे। वज्र शरीर लागि सब टूटे॥
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये। मारि सबै यमलोक पठाये॥
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारे। जे अभिरे ते सकल पछारे॥
कौरव दलहि प्राणभयकीन्ह्यो। क्रोधितद्रोण हांकतबदीन्ह्यो॥
रहु रहु अरे वृकोदर ठाढ़ो। सैना बधि तेरो मन बाढ़ो॥
यह कहि धनुनराच दृढ़धार्‌यो। भीमअंगदशविशिखप्रहार्‌यो॥
गुरूद्रोण अगणित शरमार्‌यो। तबनिजरथहिभीमपगुधार्‌यो॥
भीषम ते अर्जुन संग्रामहिं। दोऊ जुरे खेत जय कामहिं॥
पारथ जब लगि भीम निहार्‌यो। दशसहस्ररथभीष्महिमार्‌यो॥
तब भीषम जय शंख बजायो। संध्यालखिनिजरथहिघुमायो॥
फिरिकैसुभटकियो जबगवनहिं। पांडव गये आपने भवनहिं॥
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो। रणमो भीषम को प्रणरह्यो॥
दश सहस्र मार्‌यो रथ नीके। पांडव गये युद्ध में फीके॥
सैन सकल कीन्हेउ विश्रामहिं। धर्मराज आये निज धामहिं॥

॥ दो० अस्त्रखोलि धरणी धर्‌यो टोप सनाह उतारि।
॥ श्रमनाश्यो असनान करि जेवें सहित मुरारि॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई। आजु युद्ध केहि की प्रभुताई॥
कह्यो कृष्ण भीषमरणमण्डयो। दशसहस्ररथ क्षणमेंखण्ड्यो॥
प्रात शंख कीजै सेनापति। कुरुदल अर्जुनसंहारहुअति॥
कह्यो द्रौपदी सुनिये केशव। मेरे मन यह बड़ो अँदेशव॥

जोपै शंख भीष्मते लरिहैं। अर्जुन भीमसेन का करिहैं॥
कही कृष्ण यामें है कारण। शत्रु सेन कीजे संहारण॥
प्रात होत दोऊ दल साजहिं। शब्द अघात दमामेवाजहिं॥
श्रीहरि कह विराट सुनुभूपति। शंखहि कीजे आजुचमूपति॥
सुनि विराटकह आनंदितमन। जो आज्ञा कीजे जगवंदन॥
मैं कुल में सपुत्र सुत जायो। भारत सेनापती कहायो॥
धर्मराज श्रीपति के आगे। बांधन मुकुटशंखशिर लागे॥

दो० कह्योशंख करजोरिके सुनि लीजे सुखधाम।
तुम समान सारथिभये भीषम ते संग्राम॥

पारथ रथी आपु प्रभु सारथ। भीषमकियो सरस पुरुषारथ॥
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो। समता युद्ध होइ रण कैसो॥
जो श्रीपति सम सारथि पावों। मारि सबै कौरव विचलावों॥
कह्योकृष्ण सात्यकि सुनिलीजे। आजआप सारथि प्रणकीजे॥
वैठि शंखरथ जोती धरिये। भीषम के सन्मुख रण करिये॥
प्रभु आज्ञा सात्यकि तबपायो। आपु सारथी वेष बनायो॥
चारि तुरंग आनि रथ जोरे। घूंघटसहित चलत मुखमोरे॥
बांध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि। राजयुधिष्ठिरके पुनिपदगहि॥
तब विराट के पद सोइलाग्यो। कृष्णचरणपरस्योअनुराग्यो॥
कियो सात्यकी को पग वंदन। चढ्योजाइ रथ परमानंदन॥
नन्दिघोष अर्जुन असवारी। जोती गहे पिताम्बर धारी॥
भीम सहित सेना सबसाज्यो। सिंहनाद करि रण में गाज्यो॥

दो० सबके आगे शंखरथ सोधेकर धनुबान।
सबलसिंह चौहानकह भारतके संग्राम॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषातेचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

कुरुदल साज करनसब लागे। राजा कहेउ पितामह आगे॥
आजु भल यहिविधित धरिये। कृष्णसहित अर्जुनवध करिये॥
भीषम कही युद्धको चलिये। शोच कहा है हे सब भजिये॥

महा गँभीर कियो दलसाजन। बाजन लगे युद्ध के बाजन
कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल। देखत हांक दियो दोउदल
भीषमअतिअचरजकरिलेख्यो। बांध्यो मुकुट शंखशिरदेख्यो
तब सात्यकि रथहांकिचलायो। भीषमके सन्मुख पहुँचायो
शंख प्रथम दश बाण चलायो। ते शर भीषम काटि गिरायो
हँसि भीषम दश शायक जोरे। ते शर शंख बीचही तोरे
कोपिकुंवर शतबाण प्रहारयो। भीषमके उरमध्य सोमारयो
शर लागत भीषम रिसबाढ़्यो। शोणितशर तूणीरते काढ़्यो
काल समान बाण सब छूटें। भेदि सनाह अंगमें फूटें

दो० क्रोधवन्त भीषम भये कीन्हो लघु संधान।
सरसरिता सात्यकिभये कुंवरअंग बहुवान॥

नृप बिराटसुत तेज सँभारयो। षष्टिबाण भीषम उर मारयो
भीषम शंख लरे रण अंगन। दोउदल बहुकियो निकंदन
गजसों गज चौदन्त लराई। रथी रथी सों मारु मचाई
जुरे आइ असवार महाबल। लगेपदातिपदातिन करिबल
महारथी रथ हांकि चलायो। कौरवकटक मध्य तब आयो
तब अर्जुन कोदण्ड सुधारयो। क्रुद्धितह्वै बहुविशिखप्रहारयो
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो। क्षण में अर्जुन मारि गिरायो
रुण्ड मुण्ड वसुधा में तोप्यो। सूभिनपरयोमांसमहिरोप्यो

दो० घोरयुद्ध कपिध्वज कियो सेना वध्यो अनंत।
गजरथहयपदचरगिरे कहूं शीश कहुँदंत॥

अर्जुन बध्यो सेन यहिरूपहि। देखिक्रोध उपज्यो तबभूपहि
दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो। छत्र छांह रबि दृष्टि छपायो
नन्दिघोष रथ राजन घेरयो। मारु मारु दुर्योधन टेरयो
दुश्शासन सब राजन लीन्हे। बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हे
चहूं ओर बर्षत शर कैसे। भादों बुंद सघन घन जैसे
नन्दिघोष रथ शरते छायो। अर्जुनकृष्णदृष्टि नहिंआयो

ारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे। अन्तरिक्षही सब शर तोरे॥
ारु सहस्र राजा वध कीन्हो। शंखध्वनि अर्जुनतबदीन्हो॥
ाणिमय मुकुट जरायन जरे। शीश सहित वसुधा में परे॥
हां जहां अर्जुनरणताक्यो। तहां तहां माधव रथ हांक्यो॥
ौर अनेक निशितशरमारयो। युत चौरासितुरगमहिपारयो॥
ीन्ह धनंजय सेन सुखंडित। नरके शीश मेदिनी मंडित॥
दो० यहिविधि पारथ रणरच्यो कहि न सकै कविबैन।
रथ हांकत हैं हांकदै प्रीतम पंकज नैन॥
सिंहनाद दुश्शासन कीन्ह्यो। क्रुद्धितधनुषफोंकशरदीन्ह्यो॥
सप्तबाण पारथ उर मारयो। एकबाण यहिभांति प्रहारयो॥
सारथि शीशकाटि महिडारयो। कृष्णअंग दशबाण प्रहारयो॥
रथ ते दुश्शासन महिआयो। देखि विरथ दुर्योधन धायो॥
तबकुरुनाथ धनुषशरलीन्ह्यो। महामारु कपिध्वजपरदीन्ह्यो॥
सुनिकै शोर वृकोदर धायो। द्रोणजाय बीचहि अटकायो॥
भीषम कही द्रोण रणरंगहि। जुरे धनंजयकुरुपति संगहि॥
आप शंखसन समर जो कीजै। हम पारथ पर शायक दीजै॥
जाह्नविसुत यहकहि लघुधायो। शर वर्षा पारथ पर लायो॥
दुर्योधन को पाछे घाल्यो। आगे रथ गंगासुत चाल्यो॥
सिंहनाद करि हांक जनायो। रहुअर्जुन भीपमअबआयो॥
दो० अवलों जो सेनावध्यो हां न रह्यो यहिठौर।
तो पारथ बलजानिबो जो दल वधिहो और॥
कोटिन अर्जुन करहुं सँहारण। कृष्णसहायबचौ त्यहिकारण॥
अर्जुन सुनि क्रुद्धितपरिजिरच्यऊ। दृढ़होइधनुपबाणकरधरच्यऊ॥
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेरयो। जबतुम सब विराटपुरघेरयो॥
तादिन में सबको बल जान्यो। गोधन सब फेरिग्रह आन्यो॥
बड़े अहहु बड़ वचन न कहहू। दृढ़ ह्वै धनुप बाण करगहहू॥
अह कहिकै लागे शर वपन। शतते सहस सहससहस्रन॥

अपर चरित्र सुनहु मनलाई। शंख द्रोण जहँ करत लड़ाई
एकहि एक क्रोध ते मारत। आव्रत वाण वाण ते टारत
अमित युद्ध दुर्योधन देख्यो। अपनेजियअचरजकरिलेख्यो
शंखकुँवरअतिविशिखपँवारयो। रथके चारिउ अश्वसँहारयो
कियो सारथी को शिर खंडित। पुत्र विराट महारण मंडित

दो॰ द्रोण अपररथपर चढ़यो कछुलज्जा कछुक्रोध।
महारथी देखत सकल वालकपर अतरोध॥

जवलग द्रोण आपु संभारयो। तनयविराट सैन्यवहुमारयो
कौरव दल बहु शंख निपातो। गुरु तव भयो क्रोधतेतातो
रहुरे शंख ठाढ़ रण रंगहि। एकै शर कृत जीवन भंगहि
दूजो वाण करौं संधानहि। तो म्वहिंपरशुरामकीआनहि
यह कहि ब्रह्मअस्त्रकरलीन्ह्यो। पढ़िकै मंत्रफोंकशर दीन्ह्यो
शरको तेज अकाशहि व्याप्यो। सुरनर नाग देखिकै कांप्यो
छिटक्यो किरणि वाण ते कैसे। ग्रीषमऋतु प्रचंड रवि जैसे
देखि त्रास सात्यकि जियवाढ़ो। द्रोणतोणते जब शर काढ़ो
कहहुकुंवर तव रथहि फिरावो। अर्जुन के पीछे पहुंचावो
शंखकह्यो अस्थिर ह्वै रहिये। क्षत्रिधर्मकिमिजियनहिंगहिये

दो॰ वांध्यो मुकुट जु कृष्ण कर भारत के रणखेत।
द्विजसों पृष्ठि दिखायकै तनु राखों केहिहेत॥

कार्मुक द्रोण श्रवणलगितान्यो। छूटत वाण शब्द घहरान्यो
वाण प्रताप अग्निवहुवाढ़यो। वड़वानलमनोदधितेकाढ़यो
सततात भयो अगिन ऊँचाई। चौदह ताल रह्योचकलाई
देखेउ ब्रह्मअस्त्र ढिग आवत। सात्यकिबहुरिकुंवरसमुझावत
फेरों रथ सुनु वचन वावरो। काह मरत विनकाज रावरो
रथ समेत यहिविधि जरिजैहो। खोजतकतहुं अस्थिनहिंपैहो
जो मेरो रथ फेरहु भाई। कृष्णचरण युग कोटिदुहाई
गुरुहति द्विजहतिपापसुपावहु। जो सात्यकिरथकेरिभगावहु

जन्म भये ते मृत्यु न छूटै। सो सपूत जगमें यश लूटै॥
रणते भागि भवन जब जैबो। क्षत्रिनमोंकिमि वदनदिखैबो॥
कुंवर लग्यो जल बाण चलावन। ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन॥
रण में द्रोण अधर्म विचारयो। त्राहि त्राहि सबदेव पुकारयो॥

दो०। सुरगणसब यहि विधिकहैं द्रोण अधर्मविचार।
बालक ते रण ठानिकै ब्रह्म सों अस्त्र प्रहार॥

अस्त्र तेज सब अंगहि व्याप्यो। सहिततुरंग सात्यकीकांप्यो॥
तब सात्यकि रथफेरि चलायो। कुंवर कूदि धरणी पर आयो॥
सन्मुख रह्यो नेकु नहिं मुरो। ब्रह्म अस्त्र मों ठाढ़े जरो॥
दोऊ दल पेखत हैं नयनहिं। साधुशंखभाष्यो सबवयनहिं॥
भस्म भयो मन नेकु न मोरो। भाजो सात्यकि लै सबघोरो॥
देखत है दल शंख जरायो। फिरि कै द्रोण त्रोणशर आयो॥
द्रोण आपु जय शंख बजायो। सुनि कै धृष्टद्युम्न मनलायो॥
रे गुरु द्रोण ज्ञान कर हीनो। करि अधर्म खोयो पन तीनो॥
है कै विप्र अस्त्र जे बांध्यो। बालक पर ब्रह्मास्त्र साध्यो॥
अब सो ते संग्राम विचारहु। अहो विप्र पहिले शरमारहु॥
सुनि गुरु द्रोण क्रोध ते जाग्यो। तीक्षणबाण चलावन लाग्यो॥
कुंवर सबै वे बाण सँभारयो। द्रोणललाट तीनिशरमारयो॥

दो०। ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय पारथ देख्यो नैन।
तौलगिभीषमबधि गये दशसहस्र रथसैन॥

भीषम शंख दयो जय हेतू। सुनिकैशब्दफिरयो कुरुकेतू॥
सब मिलि गये आपने धामहिं। दोऊदल कीन्ह्योविश्रामहिं॥
अब यह कथा चली जो आगे। भोजन पान करन सबलागे॥
बोलि बादि धर बादि धरायो। कोउ शायकमहँ सानकरायो॥
कोउ निषंगमहँ शायक पोखत। चाराचारु तबलकोउदेखत॥
कोउस्यन्दनमहँ साजलगावत। कोउ शक्ति सनाह बनावत॥
धर्मराज माधव सँग लीन्हे। गमन विराट भवनशुभकीन्हे॥

अहोनृपति मन शोच निवारहु। क्षत्रिधर्म निजहृदयविचारहु॥
कह्यो विराट सुनहु नृपनायक। जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक॥
धर्मराज के काजहि आयो। शोचकहा बहुते सुख पायो॥
॥ दो० धर्मराज बंधुन सहित साथ लिये घनश्याम।
भोजन को बैठे सकल द्रुपदसुता के धाम॥
षटरस भोजन आनि बनाये। जेंवत भीम महासुख पाये॥
द्रुपदसुताकछु वचन उचास्यो। आजुयुद्धकेहिभांति सँवास्यो॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन बल भारी। मारे सहस छत्र के धारी॥
द्रोण अधर्म युद्ध मन लायो। ब्रह्म अस्त्र ते शंख जरायो॥
धर्मराज कह सुनहु मुरारी। ममउरयहसंशय अतिभारी॥
दशसहस्त्ररथ नित क्रम जूझै। भीषम ते जय मोहिंनसूझै॥
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये। वनकीकथाआपु सुधिकरिये॥
दुर्व्वासा कुरुनाथ पठायो। अर्द्धरात्रि पर्णशाला आयो॥
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे। भोजन आय द्वार कै मांगे॥
क्षुधावन्त हम भोजन दीजे। नाहित ब्रह्मशाप अब लीजे॥
॥ दो० भोजन दीजे कवन विधि एक अन्न नहिं भौन।
ब्रह्म शाप के त्रास ते सबै रहे कै मौन॥
तब मैं कह्यो ऋषियसुनिलीजे। आप जाय अस्नानहिंकीजे॥
मैं भोजन कर साज बनावों। आवहु तुरत सबन बैठावों॥
छलकरि मैं ऋषिको छिन टारो। बहुतत्रासजियसभ्य विचारो॥
प्रभु यहि समय दयाअबकरिये। नाहिंत ब्रह्मशाप मों जरिये॥
सब मिलिकृष्णचरणयुगध्याये। सुमिरतही तुरन्त प्रभुआये॥
करि प्रणाम बहुते सुख पायो। क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो॥
तब मैं कह्यों अन्न नहिं लेशव। भोजन काह दीजिये केशव॥
रंधन को भाजन प्रभु देख्यो। तामें शाक कना यक पेख्यो॥
तब घनश्याम शाक वह खायो। मुनिगण केर उदरभरिआयो॥
कोउ उदर निजपाणि अमावहिं। कोऊ पत्रन्ह सेज बनावहिं॥

काढ़ुको दूधधोव तबआवहिं। मंत्रअगस्त्यकोऊमनलावहिं॥
भीमसेनतबजायबुलायहु। द्विजगणचलहुगहरुकिमिलायहु॥

दो० दुर्वासा यहिविधि कह्यो नाहित भक्त विनाश।
सबलसिंहचौहान कह चरण कमलकी आश॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपंचमोऽध्यायः॥५॥

आये कृष्ण साधु सुखदायक। पांडुवंश के सदा सहायक॥
दुर्वासा कह सुनहु वृकोदर। व्याप्योकृष्ण सबनकेओदर॥
जैसो हम याचज्ञा लायो। अपनो कियो आपुते पायो॥
यह कहिकैसब द्विजगण भागे। आये भीम कृष्ण के आगे॥
हँसि प्रभुद्वारावति पगुधाखो। वे चरित्र नृप चित्तविसाखो॥
यहसुधि सबविसरीकेहिकारण। कहांशोचजहँत्रास निवारण॥
द्रुपदसुतायहिभांतिवखान्यो। सुनियदुपतिअतिशयसुखमान्यो॥
कौरव कटक समर महँ आये। धनुकरशर निषंग कटिलाये॥
प्रात प्रभात सजे कुरुकेतू। बजे निशान युद्ध के हेतू॥
सिंहनादकरि शब्द सुनायो। पाण्डवसकलआजिरणआयो॥
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ। वीरनधनुप फोंक शर दयऊ॥

दो० रथगज पदचर नृपतिसब करनलगे रणघोर।
महारथी सेनापती भिरे जोरसों जोर॥

मांदु खोलि दये अँधियारी। धाये गज पर्वत से भारी॥
मार्दे घटा घेरे जनु आयो। गजन युद्ध चौदन्त मचायो॥
रणबुंदभरि रथिकर बल के। शायक खड्ग दामिनी दमके॥
भैरिके नाद भीम तब धायो। भयोशब्द जनुघन घहरायो॥
करी शैलह उपर सब टूटहिं। वज्रपात अर्जुन शर छूटहिं॥
भीषमखड्ग मान्योशरखंडित। भीषमरथ हांक्यो परचंडित॥
दिघोष के सन्मुख आयो। बाण वृष्टि अर्जुन पर लायो॥
रथ ते शर काटि निवारयो। पंचाशेशिखभीषमन उरमारयो॥
गतशिशिख कोदंडरथावृयो। तीक्षणशर निषंग ते काढ़यो॥

महा भयंकर देवगज होत, घाव नहिंवार ॥
तब भगदत्त निकर शरडारयो। क्षत्री विपुलसमरमहिमारयो
रथ अनेक गज गहिफटकारे। ऊपर शर भगदत्त जो मारे
व्याकुलसैन्य त्रसित होइभागे। दवेते सकल परे जय आगे
शत नरेश तेहि ठाहर जूझे। चले न लाज पंक आरूझे
गजरथअरु असवार सहस्रन। धर्मराज हित मृत्यु भयेरन
कायर सकल जीव लै भाजे। तब भगदत्त समर महिगाजे
सिंहनाद करि हांक सुनायो। है कोउसुभटजोसंमुखआयो
पांडुवंश सब मारि गिरावों। एक छत्र कुरुनाथ करावों
तब अपनो पुरुषारथ लेखों। अर्जुन कृष्ण नयन जब देखो
धर्मराज के संमुख आयो। अर्जुन को माधव समुझायो
दो० अर्जुन अब देखत कहा धर्मराज पर भीर।
चलहुजाइ उतरणकरिय रथहांको यदुबीर ॥
सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ। जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ
करिटंकोर धनुप कर लीन्ह्यो। अर्जुन आइहांकरणदीन्ह्यो
गज के जोर सैन्य सब मारे। परेहु आय अब घातहमारे
अबछांड़हु जीवनकी आशाहि। गजसमेत जैहो यमपासहि
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो। अर्जुन मैं खोजतत्वहिं रह्यो
भली भई विधि कीन्ही भेंटाहि। जैहो आजु काल के पेटहि
सुनि अर्जुन धनुशायक लायो। क्रोधित ह्वै अतिबाण चलायो
कुण्डकेशअसि विशिखचलाये। गज समेत भगदत्तहि छाये
तब भगदत्त बाण सब काटे। क्रुद्धित ह्वै सब शायक पाटे
षष्टि बाण मारेउ अर्जुन तन। असीनराचहन्योश्यामहिघन
सहस बाण मारयो हनुमानहिं। पंचबाणते ध्वजा निशानहिं
अष्ट विशिखअश्वन उरलागे। थकितभयोरथचलतन आगे
तबचार विंशति विजयनमारयो। नृप को चाप छांडि कै डारयो
पुनि पारथ कीन्ह्यो संधानहिं। शक्तिबीच मारयो दशबानहि

निष्फलभयो शक्ति जबजान्यो। लैकर चाप विशिख संधान्यो॥
क्रुद्धित नृप मास्यो तीक्षणशर। घायल भये आपु धरणीधर॥
गजहि पेलि अर्जुन पर आयो। ऊपर ते बहु शर झरिलायो॥
गज समेटि के फेंक्यो स्यन्दन। अर्जुनकहीं कहीं जगवन्दन॥
तीक्षणवाण घाव उरदीन्ह्यो। अर्जुनकृष्णविमोहितकीन्ह्यो॥
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी। हनूमान रथ रक्षाकारी॥

दो० हमपारथ अरु रथ सहित तुमरक्षक हनुमान।
यह कहिके मोहित भये भक्त हेतु भगवान॥

अर्जुन कृष्ण मोह जब पायो। तब भगदत्त क्रोधकरि धायो॥
गज के पांयन ते रथ तोरौं। ठोकर ते अर्जुन शिर फोरौं॥
हनुमान हँसि वचन सुनायो। नृप यह मंत्र अकारथलायो॥
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक। ऐरावत नहिं तूरन लायक॥
यमअरुइन्द्रवरुण जोआवहिं। तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं॥
पुष्टि लँगूर सबै रथ दीन्ह्यो। धायो मत्तहस्ति रिसकीन्ह्यो॥
क्रुद्धित ह्वै नृपधनुष सँभारयो। लक्षवाण हनुमानहिंमारयो॥
बलतेज सानित शरछूट्यो। वज्र शरीर लागि सब टूट्यो॥
दोउ दंत गहि पेलेउ बलके। कछुकढीलदीन्ह्योकपिछलके॥
सधनीच दंत जब धस्यो। तब हनुमानलँगूरहि कस्यो॥
लंगूर दशन दोउ टूटे। तब गज महा कष्टते छूटे॥
खेरदशन चकित सब कोऊ। शोणित वहै रदनकर दोऊ॥

दो० हरि जागे अर्जुन उठे हाथ धनुष लै वान।
पंच लंगूर समेटिके रथछाँड़्यो हनुमान॥

तुभगदत्तकह्यो यह पारथ। तुमकीन्ह्योअतिशयपुरुषारथ॥
अब मेरो प्रण नृप सुनिलीजे। एक बाण कुंजर बध कीजे॥
जो शर संधान जो करऊं। नहिंकोदण्ड बहुरिकरधरऊं॥
ो यहबाणगजहि सम्भास्यो। क्षत्री धर्म आजुते हास्यो॥
ब भगदत्त कह्यो यहकारन। मैं यहप्रणकीन्ह्यो अपनेमन॥

जो यहशर गजराज गिरावै। मेरो अयशसकलजग गावै॥
कृष्णकही अर्जुन सुनि लीजै। अब अपनो प्रणरक्षाकीजै॥
पारथ ब्रह्मबाण संधान्यो। श्रवण प्रर्यंत शरासनतान्यो॥
कुंभस्थल तकि मारत भयऊ। भेदिशीशशरनिकसिसोगयऊ॥
छूट्यउप्राण गिरनगज चह्यो। तब भगदत्त जंघसों गह्यो॥
राख्यो साधिभुकननाहिं पायो। बाणवृष्टि अर्जुनपर लायो॥
गजहिदेखिजियशोचविचारयो। पारथ धनुष हाथते डारयो॥
दो० कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु प्राण तज्यो गजराज।
राख्यो है भगदत्त गहि अबतजों केहिकाज॥
सुनतविजयनरधनुशरलीन्ह्यो। क्रुद्धितह्वैसंधानसो कीन्ह्यो॥
अर्द्धचन्द्र शर अर्जुन छण्ड्यो। नृपको शीश कंधते खण्ड्यो॥
मृतक गयंदसहित नृप परेऊ। झलकतमुकुटजरायनजरेऊ॥
अर्जुनरण कीन्ह्यो यहकरणी। योजनतीनिपरयोगजधरणी॥
हर्षित भये देखि जगतारण। धरि यह देहभक्तके कारण॥
पाण्डवसेन देखि सुखपायो। फिरिकैसकलसमरमहिआयो॥
हर्षित वचन युधिष्ठिरभाख्यो। अर्जुनरण अपनोप्रणराख्यो॥
रुण्डमुण्ड वसुधा अवछायो। रणमें रुधिरनदी बहिआयो॥
भूत पिशाच योगिनी गावहिं। विकटरूप भैरवगणधावहिं॥
श्रीहरि कही चलो अब पारथ। भीषमसों कीजै पुरुषारथ॥
कृष्णदेव रथहाकि चलायो। तब भीषम जयशंखबजायो॥
दो० दशसहस्र रथ मारिकै चले आपने धाम।
सबलसिंह चौहानकहि भारत के संग्राम॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपष्ठोऽध्यायः ६॥
पाँचोबन्धु कृष्णसंग लीन्ह्यो। सेनसमेतगमनगृहकीन्ह्यो॥
तब कुरुराज भवननिज आयो। सकलसेन विश्रामकरायो॥
आप गमन अंतःपुरकीन्ह्यो। भानुमतीआदरकरिलीन्ह्यो॥
चमर छत्र सब लिये सहेली। मणिमय भूषण रूपगहेली॥

नृपहिं सिंहासन लै बैठाखो। रानी तब आरती उताखो॥
उत्तम नीर सुगन्ध सवाँखो। सखिन आयतबचरणपखाखो॥
तैल सुगन्ध राज तन लायो। कनककलश अस्नानकरायो॥
भूषण बसन अंग पहिरायो। अमृतभोजन सरिसज्यँवायो॥
कंचन मणिमय भवन सवाँरी। हीरा रत्न करत उजियारी॥
ताबिच गजमणि झालरिजोरे। देखत धनद कहहिं हमथोरे॥
बहुत भाँतिके सेज सवाँरी। पय फेना सम आनँदकारी॥
शयन करन भूपति पगुधाखो। नृत्यनि मंगल गानउचाखो॥
आगिलिकथाकहनमनलायो। यदुपतिसहितसकलगृहआयो॥

दो० अशन करन बैठे सकल द्रुपदसुता के जाय।
धर्मराज पूछत भये बचन सुनहु यदुराय॥

हनूमान रथ आपु सँभाखो। तबपारथ भगदत्तहि माखो॥
दश सरस्र रथ भीपम मारे। नित क्रमसों नहिं एको वारे॥
भीपमरहत कुशलतहिं देख्यो। बंधुविरोध कठिन करिलेख्यो॥
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशो। केहिकारणजियकरहुअंदेशो॥
जो हरिचरण कमल मनलावे। सो जगमें कलेश नहिं पावे॥
सदा भक्त की रक्षा कारण। दीनबंधु कीन्ह्यो तनधारण॥
जब प्रह्लाद खंभ में कह्यो। नरहरिरूप तहां प्रभु गह्यो॥
असुर फारि यमलोक पठायो। भक्त शीश पर छत्र धरायो॥
ते प्रभु सदा रहत तुम संगहि। कारण कौन करहुमनभंगहि॥
करिभोजन शयनहि मनलायो। प्रात होत रण साज बनायो॥

दो० दल चतुरंग सुसंग ले सब नृप तेजनिधान।
भीमसेन आगेभयो किये हृदय अभिमान॥

कौरव साजि समर महि आये। दूह मारि दोउ दल धाये॥
शर अनेक बर्पन रण लागे। धावहिं वीर क्रोध ते पागे॥
सायक घाव करत अति चाँड़े। उअरहिंगिरहिंतिमितत्तछाँड़े॥
असवारहिअसवारप्रहारहिं। पकरिदंतुगदयोद्धअसिमारहिं॥

रथी रथी सों कीन्ह्यो जोरहि । दन्ती सौं दन्ती रणघोरहि ॥
सन्मुख जुरे सगरअति पंडित । दोउदलमारुमारुधुनिमंडित ॥
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा । घाल्यो घाव महाबल भीरा ॥
क्षत्रीअतिपौरुष निजकरिकर । कीन्ह्यो भारत प्रलयभयंकर ॥
वासुदेव स्यन्दनहि चलायो । गंगातनय के सन्मुख आयो ॥
दोऊ सुभट मिले अतियुद्धहि । शरछांड़नलाग्योअतिक्रुद्धहि ॥
कर कोदण्ड वृकोदर लीन्ह्यो । वाणवृष्टिअरिऊपर कीन्ह्यो ॥
यहि प्रकार बहुविशिख पवांरे । सहसन वीर. समरमहिपारे ॥
कुरुपतिकह्यो सुशर्मा धावहु । पांडव सेनहि मारि गिरावहु ॥
दो॰ दशसहस्त्ररथसंगलै कीन्ह्यो तुरतपयान ।
सिंहनादकियसमरमहिसाधेउशारँगवान ॥
क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण । पांडव दल कृत बहु संहारण ॥
गिरा गँभीर सो भीमसुनायो । स्यन्दनत्यागिगदागहिधायो ॥
तबहिं सुशर्माशरधनुलीन्ह्यो । भीमअंगशतशरक्षतकीन्ह्यो ॥
दशसहस्त्र स्यंदन रथआयो । दशदशशरतिनसबनचलायो ॥
लक्ष विशिख वेधे जब तनमें । तबहिं वृकोदर क्रुद्धेउमनमें ॥
गदाघाव यहिविधिते मार्यो । दुइसै रथ चूरण करिडार्यो ॥
सहित रथी सारथी न देखत । मांस मृत्तिकासमूभे लेखत ॥
अरुबहुस्यन्दनपदनतेतोर्यो । करतलहतिबहुमौलिसोफोर्यो ॥
गहि बहुभीमचलायो स्यंदन । यहिप्रकारकियसेननिकंदन ॥
भीमसेन वज्रकटक संहार्यो । नृपतिसुशर्माआपु सँभार्यो ॥
दो॰ कोपित भये नरेश अति कीन्ह्योशरसंधान ।
हृदय वृकोदर के हन्यो एकबार दशबान ॥
घायलभयो सह्यो सबबानहि । क्रुधितगदागहिकियोपयानहि ॥
करिके नाद सुगदा प्रहार्यो । कूदिसुशर्मा आपु सँभार्यो ॥
भाग्यो तुरत तज्यो रणरंगहि । सारथिसहितकियोरथभंग ॥
बहुधाभीमनागत देहिकामहिं । सन्मुखजुरो करो संग्रामहिं ॥

भूरिश्रवा क्रोध करि धायो । सिंहनाद करि हांकसुनायो ॥
भीमसेन अस्थिर होइ रहिये । मारतहीं तीक्ष्णशर सहिये ॥
तब सारथि ले रथ पहुँचायो । भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
भूरिश्रवा बाण दश डारयो । तेशर भीमसोंकाटिनिवारयो ॥
दोउ वीर सन्धान्यो धनुकर । क्रुद्धितलगे चलावन बहुशर ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु संगहि । दोउ मटमच्योमहारणरंगहि ॥
शल्य नरेश सात्यकी योधहि । कृतवर्मा विराट रण क्रोधहि ॥
दो० द्रोणी अरु अभिमन्युरण कठिन बजायोमार ।
बाण बुंद वर्षत सघन जिमि श्रावण जलधार ॥
नृपजयद्रथरुनकुलकृतमारहिं ।कठिनअस्त्रदोउसुभटसँमारहिं॥
घटउत्कच क्रुद्धित है धायो । सप्ततालं बहु वृक्ष चलायो ॥
लेपपाण शिर ऊपर डारहि । यहिविधिबहुतकटकसंहारहि॥
सकलपदाति पकरिके खायो । गजहि समेटि पेट पहुँचायो ॥
कुरुपति कह्यो अलम्बुधावहु । दैत्य दैत्य तुम युद्धमचावहु ॥
सप्त कोटि राक्षस ले संगहि । धायो धनुकरधरि रणरंगहि ॥
दनुजराज शतविशिखचलायो । शर सों भीमपुत्र रथछायो ॥
मुद्गर लयो तज्योतबस्यंदन । धायो उतरि हिडंबीनंदन ॥
लयो गदाकर दानवराजहि । सन्मुखजुरयो युद्धके काजहि॥
मुद्गर गदासु दोऊ प्रहारहिं । एकहियक क्रुद्धित ह्वै मारहिं ॥
दो० नृपति अलंबू भीम सुत भयो सुघोर विरुद्ध ।
विकट भयंकर रूपधरि कियो युद्ध अतिक्रुद्ध ॥
गदाघाव जब तनमों लागत । शब्द अघातमहारणछाजत ॥
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने । अटके मल्लयुद्ध अरुझाने ॥
दंत दंत नख नखन प्रहारहिं । गहि केश मुष्टिक सों मारहिं ॥
मेघघटा सम अंग सोहाये । क्रुद्धितदशन बिज्जुचमकाये ॥
अरुण नयन सोहत हैं कैसे । प्रातहि उदय दिवाकर जैसे ॥
रथके खंभ शीश पर मारहिं । पकरि शुंड कुंभस्थलफारहिं ॥

महा युद्ध अति अद्भुत करणी। कियो महाभय भारतधरणी॥
भीमतनय तब तेज संभाखो। दनुजराजगहि केशपछाखो॥
तब दनुजेश धरणिपर गिखो। महाअचलमानहुं महिपखो॥
तासु हृदय पुनि चरण प्रहारा। मुखते चली रुधिरकी धारा॥
दो० सबलसिंहचौहान कहि असुरन्हकीन्हो खेत।
भैरव भूत पिशाच गण नाचत योगिन प्रेत॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥
तब भीषम शारँग कर लीन्हो। बाण वृष्टि अर्जुनपर कीन्हो॥
कृष्ण शरीर विशिखदशवेध्यो। हनूमान विंशति तनशोध्यो॥
पारथ के शर शोणित छूट्यो। काटिसनाह भीष्मउरफूट्यो॥
पांच बाण मनमोहन माखो। सहस पैग पाछे रथ टाखो॥
भीषमकह्यो सुनहुजगन्नायक। अर्जुनयाहिपुरुपारथलायक॥
अब अपनो रथ रक्षा कीजै। कमलनयन जोतीकरलीजै॥
यह कहिकै तीक्षण शरमाखो। रथको पैग तीनिशत टाखो॥
नंदिघोष रथ श्रीजगवंदन। पारथ सहित पवनके नंदन॥
लग्यो बाण रथ पीछे आयो। साधुबचन यदुनाथ सुनायो॥
जीवन सफल गंगसुत तेरो। बाण घात रथ डोल्योमेरो॥
दो० श्रीहरि तुरँग संभारिकै लै आयो तेहि ठौर।
तौलगिभीषम बधिगये दशसहस्र रथ और॥
हर्षित ह्वै जय शंख बजायो। तब सारथि रथफेरि चलायो॥
सकलसुभट निजधामसिधाये। किये जाय विश्राम सुहाये॥
धर्मराज सँग लिये सब भाई। सहितगोविंद भवननिजजाई॥
अमृत भोजन सरस बनाये। जेंवत भीम बहुत सचुपाये॥
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे। कोमलबचन कहनकछुलागे॥
भीषम सरिस रच्यो पुरुपारथ। केहिविधियुद्ध जीतिये भारथ॥
धर्मराज तब भये दुखारे। तब कुंती कछु बचन उचारे॥
सब संसार कहत परतक्षक। पांडु वंश के माधव रक्षक॥

वितुम सकलरहे यकभवनहिं । खेलनकाबालकसवगवनहिं ॥
मि ओर दुर्योधन संगहि । सदाविषादकरत मनभंगहि ॥
द्धिचक्षु तवहमहिं बुलायो । मधुरवचन कहिकैसमभायो ॥
दो० दुर्योधन अरुभीमसों बनत नहीं यक ठौर ।
तातें वसियें अनत है रचि देहों गृहऔर ॥
र्योधन अरु करण बुलायो । शकुनीसहित मंत्र ठहरायो ॥
थवइ बोलायदयो धनदानहिं । लाखभवनकरिये निर्मानहिं ॥
गर वारुणा महल उठायो । लाखसाज मंदिर सवलायो ॥
ाख कोट सव ईंट सँवार्यो । देकरि लक्ष सघन वैठार्यो ॥
द्धिचक्षु कह विदुरसिधावहु । अपनेनैनन देखितुमआवहु ॥
पआज्ञामाथेकरि लीन्ह्यो । चढ़िवरवाजिगमनशुभकीन्ह्यो ॥
आइउतरि देख्यो सवधामहिं । लाग्यो सकललाहकोकामहिं ॥
थवइन ते तव पूछन लागे । यहवृत्तांत कहहु मम आगे ॥
यहसुनि थवई कहतसुभयऊ । दुर्योधन मोहिं आयसुदयऊ ॥
लाखभवन कीजो निर्मानहिं । गुप्तरूप पांडव नहिंजानहिं ॥
विदुर वात मन में अनुमानत । पापी दुर्योधन जग जानत ॥
दो० देख्यो सुन्यो न जगतमें लक्ष भवन निर्मान ।
दुर्योधन रचना रची पाण्डव मुये निदान ॥
चुपकरि रहो पांडुसुत मरेऊ । हत्या करन वीर नृप चहेऊ ॥
रत्न मुद्रिका करते लीन्ह्यो । थवई वोलिहस्तकरिदीन्ह्यो ॥
अव यकसुरंगकरहु निर्मानहिं । जैसे दुर्योधन नहिं जानहिं ॥
सुनिके वढ़ई द्वार वनायो । ता ऊपर यकखम्भ लगायो ॥
विदुरगयो धृतराष्ट्र के आगे । उत्तमभवन कहनअसलागे ॥
द्विजवोलाय शुभदिवस धरायो । गृहप्रवेश हम सवमनलायो ॥
भीषम द्रोण साथ करि दीन्हे । यज्ञहोम वहु-विधिते कीन्हे ॥
संध्याजानि किये सवगवनहिं । सुतनसमेत रहे हमभवनहिं ॥
भाषा एकपांडु तेहि नामहिं । सदाभ्रमे मृगया के कामहिं ॥

मृगन मारि काननते ल्यावे। विक्रयमांससों सुतनजियावे
एक दिवस आहेर सिधायो। देखन एक जन्तु नहिं पायो
शोचवढ़ो जियभयो निराशहि। बालकसत्रविधिपरे उपासहि
दो० मृगी एक देखी तवहिं गर्भ सों दिननप्रमाण।
हर्षितहोइ व्याधाचल्यो साध्यो शारँग बाण॥
पश्चिमदिशा जाल दे आयो। उत्तरदिशिसोंअनललगायो
पूरवदिशा श्वान दृढ़ कीन्ह्यो। दक्षिणदिशाफोंकशरदीन्ह्यो
चहुंदिशि मृगी देखिके आयो। कौनिउदिशि निर्वाह नपायो
पश्चिमगये जाल में परिये। उत्तर गये अग्नि में जरिये
पूरव गमनें श्वान पछारे। दक्षिणगये वधिक मोहिंमारे
प्रसवकालस्वइ निकटहिआयो। उदरमध्यस्वइ व्यथाजनायो
करुणा करै मृगी यह भाखे। दीनबंधु बिनको स्वहिंराखे
तृणवन चरों करों जल पाना। अपनो मांस वैर सवजाना
अहो कृष्ण संतन सुखकारी। दयासिंधु मैं शरण तुम्हारी
अब तुमदयाकरहु जगनायक। यहिअवसरप्रभुहोहुसहायक
दो० घूमत है मन भवँर में सुखकी नदी अथाह।
चहूंओर संकटपरयो हरिके हाथ निवाह॥
जबयहिभांति मृगी अकुलानी। दीनबंधु यह रचना ठानी॥
वन में मेघ घुमरि करि आयो। बरषिनीर तवअनलबुतायो॥
पवन तेज सवजाल उड़ायो। श्वानहिझपटिव्याघ्रलेखायो॥
तड़प्यो वज्रव्याध शिर पर्यो। चहूंओर प्रभु रक्षा कर्यो॥
दीनदयालराखि तेहिं लीन्ह्यो। सुखतेमृगीप्रसवतवकीन्ह्यो॥
बधिक जवै आयोनहिं भवनहिं। सुतसमेतनारीकियो गवनहिं॥
द्विज भोजन तव सुनिकै धायो। मोते तब याचञा लायो॥
पंच पुत्र तब देख्यो नयनहिं। शवरी ते तव पूछेहुवयनहिं॥
कहानाम तुममोहिं सुनावहु। क्यहिउद्यमतुमदिवसगवांवहु॥
कुंतीनाम मोहिं द्विज राख्यो। स्वामिनाम पांडु तिनभाख्यो॥

सुतको नाम युधिष्ठिर अहई। दूजो भीमसेन यह कहई॥
तीजो अर्जुन सरिस सोहायो। नकुल और सहदेवकहायो॥
दो० तब मैं हर्षित भई वहु बैस सखी सुनुवात।
पति सुत एकै नाम हैं हम तुम भयो सँघात॥
उत्तम भोजन सरिस जेंवायो। सुतन समेत सेज बैठायो॥
शकुनीसुत उलका तेहिनामहि। दुर्योधन ऐसे यहि कामहि॥
मध्य द्वार में अनल लगायो। दृढ़ करि वज्रकपाट दिवायो॥
पसरी अग्नि लक्ष भिहलाने। वाढ़योधूम सकल अकुलाने॥
चुइ के लाख देहमों परई। उधिरेत्वचा वह्नि सब जरई॥
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी। दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी॥
कही भीम क्रुद्धित सहदेवहि। तैं नीके जानत है भेवहि॥
हँसि सहदेव कह्यो यहवानी। भले ठौर पूछेहु सज्ञानी॥
भीम कीजिये कहा हमारो। वलते यह गहिखम्भउखारो॥
विदुरसुरँग कीन्ह्यो निर्मानहिं। धर्मशरीर नीति सब जानहिं॥
भीमसेन गहि खम्भ उखारो। देख्यो उत्तम पंथ सवाँरो॥
दो० वहिमारग सब मिलिधसे आतुर कीन्ह्योगौन।
गदा भूलि आये तहां भीम गयो फिरि भौन॥
लै कर गदा चलन जब ताक्यो। धरिकैदेहअग्नि तबहांक्यो॥
सप्तजिह्व देखत भय पायो। भीमसेन तब विनयसुनायो॥
आपु समान तीनिसो देहों। भाषतसत्य समय जब पैहों॥
द्वारावति महँ रहे वनवारी। सुखशय्यासँगरुक्मिणिप्यारी॥
ताति समीर अंग में लागी। भीष्मकसुता नींदसों जागी॥
अहो नाथ यह कारण कहिये। शय्या अग्निआंचते दहिये॥
हँसि प्रभुकह्यो मौनह्वै रहिये। गुप्तबात काहुहि नहिंकहिये॥
लाख भवन कुरुनाथ सवाँर्यो। पांडुतनयहम जरतउवार्यो॥
अनलआंच अपनेतनुलीन्ह्यो। उनसबको निवाहकरदीन्ह्यो॥
कृष्ण सहायक चितमें धरहू। हेसुत शोचकाजक्यहिकरहू॥

दो० जरत उबार्यो वह्नि ते सदा भक्तकी लाज।
सबलसिंह चौहानकह शोचकरहुक्यहिकाज॥
करिभोजनशयनहिंमनदीन्ह्यो। प्रातहोत रणउद्यम कीन्ह्यो
पहिरि सनाह खड्गकटिबांध्यो। हर्षितवदनचल्योशरसाध्यो
दोऊदल रण भूमिहि आये। हांक मारि पायक गणधाये
रहुरहुकहि कृपाणतब खोलहिं। मारतहांकपदादि सुडोलहिं
बजे निशान भयो आघाता। कोउनहिंसुन केहूकरिबाता
पेलि गयंद महाउत आये। पर्वत मनहुं भूमि पर धाये
असवारहिं असवार सँभारहिं। सम्मुखजुरेखड्गशिरभारहिं
रथी रथी सों युद्ध लगायो। क्रुद्धितह्वै बहुबाण चलायो
क्षत्री सकल करहिं संग्रामहिं। जूझहिंस्वामि धर्मके कामहिं
कुरुक्षेत्र में प्राण गवांवहिं। चढ़िविमानसुरलोकसिधावहिं
नन्दिघोष श्रीपति रथ चाल्यो। डोलीधरणि शेषशिरहाल्यो
दो० भीषम सों अर्जुन जुरे कीन्ह्यो धनु टंकोर।
दोऊ दल चकितभये जनु घुमरो घनघोर॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥
भीषमसों अर्जुन यह भाख्यो। चारिदिवसअपनोप्रणराख्यो
दशसहस्र नितक्रम रथमारयो। दैकर शंख भवन पगधारयो।
यहिविधिकरों धनुषकरधारण। सकहु न आजु सेन संहारण॥
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ। कीजे जो सो है पुरुषारथ॥
साखी आपु अहैं यदुनंदन। दशसहस्ररथ करों निकंदन॥
यह कहि धनुषहाथ दृढ़ठान्यो। पंचविशिष शायकसंधान्यो॥
निशितविशिख गंगासुतमारयो। अर्जुनते शरकाटि निवारयो॥
शायकविंश विजयनर जोरयो। शन्तनुसुतश्रीचह्निरारतोरयो॥
दोउनअत्यातिविशिखप्रहारहिं। जिमिजलधरबरषतजलधारहिं॥
बहुत युद्ध रण समता जान्यो। पारथ अग्निबाण संधान्यो॥
दो० प्रकटि अग्नि बारन चली झपटत लपट कराल।

गजरथ हयपदचर जरत कौरव कटक विहाल ॥
भीषमवरुणबाण करलीन्ह्यो। ताते अग्निनिवारणकीन्ह्यो॥
पांडव दल बूड़त सब जान्यो। अर्जुन पवन बाण संधान्यो॥
पवन तेज सब नीर सुखायो। ध्वजा टूटि धरणी परआयो॥
भीषम तज्यो सर्प के बानहिं। नागनमरुतकियोतवपानहिं॥
धाय डसैं सब विषधर कारे। यहिविधि बहुत सैन्य संहारे॥
अर्जुन बरही बाण चलाये। मोरन पकरि सर्प सब खाये॥
भीषम अंधकार शर छाजे। देखत सकल पक्षिगणभाजे॥
अंधकार भो कछु न सूझै। अपनोपर कोऊ नहिं बूझै॥
हितअरुअहितदेखिमहिपावहिं। हांकमारिकरआपुजनावहिं॥
गजरथहयपदाति सबधावहिं। अभिरहिंगिरहिंपंथनहिंपावहिं॥
पांडव सैन्य देखि नहिं पायो। तव पारथ रविबाण चलायो॥
भानुतेज कीन्ह्यो तमनाशहि। पांडव दल पायो परकाशहि॥

दो० मार्तण्ड मण्डल उयो देखत अतिहि प्रचण्ड।
तबअर्जुन यहिविधिदियो भीषम बाहुकोदण्ड॥

गंगासुत क्रुद्धित भयो मनमें। शर मार्यो पारथउर रनमें॥
अष्टबाण तब यहि विधिजोरे। घायलकिय रथचारिउ घोरे॥
सत्त बिशिख मार्यो हनुमंतहि। सत्तरिशर वेध्योभगवंतहि॥
बिंशति शर रथ ऊपर मार्यो। चाके चारि धरणिमें डार्यो॥
सेतुजन्ह प्रभुअश्वहि मार्यो। महा कष्टते रथहि निकार्यो॥
अर्ज्जुन देखिक्रोधजिय बाढ्यो। तीक्षणशर निषंगते काढ्यो॥
भीषम के उर मध्य प्रहारा। बहे प्रवाह रुधिर की धारा॥
चारि बाण छूटे अति पायल। ताते भये अश्व रथ घायल॥
अग्निबाण सारथि पर लायो। एकबाण ते ध्वजा गिरायो॥
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्यो। भीषमकोपिहांकिरथदीन्ह्यो॥

दो० अर्जुनरण अस्थिर रहो रक्षा कीजे सेन।
आपु सदद जोतीगह्यो पीतम पंकज नैन॥

होत प्रभात दोउदल सज्जित। शब्दअघातदमामसुत्रज्जित॥
भांति भांति वैरख फहराने। राजहंस जिमिगगन उड़ाने॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये। क्षत्री सकल क्रोधकरि धाये॥
महारथी सब वड़े धनुर्द्धर। सम्मुखजुरे गहेकर धनुशर॥
ऐसे विशिख दृष्टि शर कियऊ। शरके छांहभानु छिपिगयऊ॥
कोउ भट शैल शूल परिहारहिं। कोऊ खड्ग शीशपरमारहिं॥
गदा अपरमुद्गरकरलीन्ह्यो। ताते मारु भयंकर कीन्ह्यो॥
कोउ भूप गहि खंजन चोखे। वाहत जहांरहत नहिं मोखे॥
तब सहदेवखड्गनिजकरधरि। धर्मराजहितहततसैन्यअरि॥
छत्रसमेत वीर सुतअन्धहि। भृकुटीसहितकाटगजकन्धहि॥
दो०, यहिविधिते सहदेवरण कीन्हेउ गीधमशान।
धायो शकुनी नाद करि साधेकर धनुवान॥
लघुसंधान विशिखत्रयमारयो। तेसहदेव फेरि परतारयो॥
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी। लागेकरन युद्धअति भारी॥
सप्त नराच निशितकरलीन्हेउ। तेशर विद्धिमौलिपरकीन्हेउ॥
जयद्रथ नृपरु नकुलते भारथ। द्वौ भट करत महापुरुषारथ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो। तिनसों धृष्टद्युम्न रणलायो॥
द्विभट सरस लागे शर मारन। जूझे सैन्य सहस्र अपारन॥
द्रोण आप रथ हांकि चलायो। श्यामध्वजा रण शोभापायो॥
वर्षहिं वाण सके को भाषन। पांडव दल जूझे तवलाखन॥
यहिविधिकृतवहुसैन्य निकंदन। आगे भये सुभद्रा नंदन॥
गुरुके चरण प्रणाम जनायो। एक वार शत वाण चलायो॥
सहस विशिख औरो करलीन्हे। ताते निकर सैन्य बध कीन्हे॥
दो० अभिमनुरण यहिविधि कियो सैनावध्योअनंत।
मारेउ तीक्षण वाण ते मतवारे मयमंत॥
द्रोणसुगुरुनिज तेजसँभारयो। अभिमन्युउरविंशतिशरमारयो॥
अर्जुन सुत कृत शरसंधानहि। द्रोणललाटहन्यो दशबानहि॥

यहिविधिकरतसमरअतिकरणी। अंग भेदि शर फूटत धरणी ॥
महारथी सब अपने घातहि। क्रोधित करनलगे शरपातहि॥
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े। हांक देत हरि हांकत घोड़े ॥
सुंदर श्याम शरीर सुहावा। पीत वसन तन शोभा पावा॥
नंदिघोष रथ श्रीपति सारथ। भीषम कह्योसुनहुहो पारथ ॥
अौसर पंच कियो संग्रामहिं। सबमिलिकुशलगयेतुमधामहिं॥
होइहै आजु महाबल भारथ। पारथ समुझि करो पुरुषारथ॥
कृष्ण देव रणको चित दीजे। पाण्डु वंशकी रक्षा कीजे ॥

दो० यहकहि भीषम क्रुद्धके छांड्यो तीक्षणबान।
अर्जुनहरिघायलभये सहित बाजि हनुमान॥

चारि विशिखयहिभांतिपवाँख्यो। नंदिघोष हयघोष सुकाख्यो॥
क्रुद्धि विजयनरधनुकरलीन्ह्यो। बाणवृष्टि भीषमपरकीन्ह्यो॥
असी बाण उर मध्य सुवेध्यो। अष्टविशिखअश्वनतनशोध्यो॥
दश शर सारथिके उर दयऊ। शायक पंचकेतु ध्वजहयऊ॥
कोटि विशिख सेनापर छोड़ेउ। हयगजगिरेअमितरथतोरेउ॥
गंगासुत शर बर्षत कोप्यो। पांडवचमू शरन सों तोप्यो॥
जूझे सुभट गिरेरण ओकहि। चढ़ेविमान चले सुरलोकहि॥
जयमाला सुरकन्या डारहिं। उत्तम रूप सुवेष सवाँरहिं॥
यहि विधि गिरे वीरसबजेते। स्वर्ग भोग सुख पायो तेते॥
भीषमकीन्ह्यो सैन निकंदन। क्रुद्धित भयो पांडुको नंदन॥

दो० अर्जुनकर कोदण्ड गह रणमें यहि व्यवहार।
कुरुसेना मरिमरि पर्‌यो छरछांड्यो संसार॥

महायुद्ध करि सके न बरणी। लक्षण सुभटखसेहति धरणी॥
उठहिंकबंध शीशबिनुधावहिं। खड्गपाणिगहिमारण आवहिं॥
यहिबिधिकीन्ह्योसमरभयंकर। मुंडमाल बहु लीन्ह्यो शंकर॥
भीषम कह्यो धनंजय सुनहू। अब मेरो पुरुषारथ गुनहू॥
ऐपदकहिनारायणशर लीन्ह्यो। पढिकैमंत्र फांक शर दीन्ह्यो॥

अर्जुनसुनतक्रोधजियकीन्ह्यो । यहिविधितेप्रतिउत्तरदीन्ह्यो॥
तरु शाखा शाखा पर डोलत । मर्कटभूंठसमुझिनहिंबोलत ॥
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत । तिनको में नीको करि जानत॥
किये रहे शारँग कर धारण । कपि पषाणढाये क्यहिकारण॥
दो० शरते शारँग बांधिके जाइ सके नहिं पार ।
करतबड़ाईरामकी कहिये कौन विचार ॥
हनूमान यहि भांति बखानत । अधमकिरातरामनहिंजानत॥
जिन मारेउ रावण दशकन्धर । कुम्भकरण जिनबध्योधनुर्द्धर॥
वालि मारि सुग्रीव नेवाजा । लंकाकियो विभीषण राजा ॥
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे । दलको भार सही शर कैसे॥
अर्जुन कह निजतेज सँभारों । तब संसारहि पार उतारों॥
बांध बांधिके मोहिं देखावहु । तोपे प्राणदान तुम पावहु॥
पवन तनय इमि वचनसुनाये । दोऊ वीर सिंधु तट आये॥
जैसे मधुमाखी गण छाये । यहिविधि पारथबाण चलाये॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांट्यो । शत योजन बाणनते पाट्यो॥
हनूमान मन विस्मय मान्यो । नहिंकिरात अपने उरआन्यो॥
हैकोई यह वीर महाबल । कपटरूपकीन्ह्यो मोते छल॥
दो० मोरे भारते शरचलैं तो त्वहिंबधों निदान ।
भाररहे दृढ़ सिंधुमें करि निज सखा प्रमान॥
अर्जुन कहा बांध जो टूटे । तो मेरी परतिज्ञा छूटे ॥
क्षणक रह्यो यहि भांति जनायो । हनूमान उत्तर दिशि धायो ॥
रोम रोम में शैल सुबांधे । कलुकअग्र कलुलन्हिोकांधे ॥
यहिविधिरूपभयंकरकीन्ह्यो ।धरणिअकाशपरतनहिंचीन्ह्यो॥
रवि छपिगयो भई अँधियारी । योजन सहस देह बिस्तारी ॥
अर्जुन अन्धकार जबदेख्यो ।अपनेजियअचरजकरिलेख्यो॥
धुंधि मिट्यो तनदेखन पायो । रविमण्डल में शीशलगायो ॥
रूप भयंकर देखि डेराग्यो । सूखेप्राणविकल अकुलान्यो ॥

ौनकुवुद्धिमोहिं विधिदीन्हयो। हनूमान ते सरवरिकीन्हयो॥
रमभक्त जग में वलभारी। जाके प्रभु रघुपति धनुधारी॥
जेमि पिपीलिकहि परकै आवै। परे दीप महँ प्राण गँवावै॥

दो० पारथ अव आतुरभयो देखि भयानक कीश।
सुमिरणकीन्हेउ ज्ञानकरि तुमराखहुजगदीश॥

ीनवन्धु संतन सुखदायक। यहिअवसरप्रभुहोहुसहायक॥
ोहरितव अपने मन जान्यो। परमभक्त दोऊ अरुभान्यो॥
ूनूभार वसुधा नाहिं सहई। शरको वांध कहौ किमिरहई॥
ो हनुमान जीतिकरि पावहिं। पारथको यमलोक पठावहिं॥
ृपासिन्धु यह रच्यो उपाई। जाते रहैं दोऊ सरसाई॥
कमठरूप जलभीतर कीन्हयो। शरके हेठ पृष्ठ प्रभुदीन्हयो॥
अरे शवर सुनु वचन हमारो। धरत चरण अव वांधसँभारो॥
अर्जुन तवसहसाकरि भास्यो। जाहु निशंक वांध मैं रास्यो॥
ुनिहनुमतअतिक्रुद्धितभयऊ। आय पांव शर ऊपरदयऊ॥
दवी पृष्ठि हरि कपिके भारहि। मुखतेचली रुधिरकी धारहि॥

दो० अरुणवर्ण सागर निरखि कीन्हो हनूविचार।
ऐसो को संसार मों सहै मोर जो भार॥

ज्ञानदृष्टि धरि ध्यान लगायो। शर के तरे देखि प्रभु पायो॥
कूदि हनूतट कियो पयानो। त्राहित्राहि यह भेदन जानो॥
मै पशुमूढ़ अकर्महिकीन्हयो। हरिकेशीशचरणनिजदीन्हयो॥
कामरूप छांड़यो वनवारी। आपु भये तव शारँग धारी॥
हनुमत सों प्रभु कहनसोलागे। दोऊभक्त तुम परम सभागे॥
प्रीति विचारहु छांड़हु रोषहि। क्षमाकरहु पारथ के दोषहि॥
यहिविधिहरिमिलापकरिदीन्हयो। आपुगमनद्वारावतिकीन्हयो॥
हम ले आयो सुमन घनेरो। सवदिन प्रभुरास्यो प्रणमेरो॥
अर्जुनकहयो युधिष्ठिर राजहिं। आपुशोचकीजे केहि काजहिं॥
दद है के रण को मन लैये। मारि शत्रु यमलोक पठैये॥

दो० मन वच क्रम जो हरि भजे तजे औरकी आश।
सबलसिंह चौहानकह नाहिंन भक्त विनाश ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

प्रात होत कीन्ह्यो असवारी। साजे सैन्य महा बल भारी॥
दोउकटक बहु बाजन बाजत। गहेअस्त्र क्षत्री गलगाजत॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये। मारु मारु करिसन्मुखआये॥
चतुरंगिणि सेना रण जूट्यो। क्रुद्धितअमितविशिखसबछूट्यो॥
शैलत्रिशूलअरुशक्तिनमारहिं। मुद्गरगदा शीश पर डारहिं॥
कोउ तहँ भयेकटारिनमारहिं। गिरतअंतमहि गिरेकरारहिं॥
शर धारा गजदंतहिं लागे। चिनगी उठिबहु पावकजागे॥
पायक हाथ खड्ग ले फेरत। मारत मारु मारु धुनिटेरत॥
दोऊ कटक लगे संग्रामहिं। कुरुपतिधर्मराज के कामहिं॥
मूशल घाव मारि शिरफोरहिं। जूझि परेमुख नेकु न मोरहिं॥

दो० सैनासबयहिविधि लरै करै भयंकर मारि।
महारथी रण हांकदे भिरे प्रचारि प्रचारि॥

महाबीर अतिबल शरशोधहिं। हृदय खंडि धरणी शरवेधहिं॥
भीमसेन बहुविशिख पँवार्यो। छादितशरभारत महिकार्यो॥
लखिकलिंग क्रोधितहोइधायो। महा मत्त गज लक्षणआयो॥
सो बांधव कलिंग के साथी। औ नवलाख महाबल हाथी॥
भीमहिं घेरि सकलशरमारहिं। शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं॥
लागत क्षत अतिकोपबढ़ायो। रथते उतरि गदागहिधायो॥
गदाघावगज मस्तक फार्यो। पांयन ते अनेकरथ तोर्यो॥
नृपकलिंगकीन्ह्यो दृढ़ठानहिं। भीम अंग मारेउदशबानहिं॥
अपरविशिखत्रयअतिबलकीन्ह्यो।तेशरविद्धशीशपरदीन्ह्यो॥
भीमसेन परतिज्ञा भाषत। रेकलिंगअबको तोहिंराखत॥
गदापवन ते सबहिं उड़ायो। सेनसहित सबनभ पहुँचायो॥
रे नवलक्ष संग तव हाथी। सकल करों तारागण साथी॥

दो० भीमसेनहै नाम मम जग परतज्ञ प्रमान।
यहमिथ्यानहिंजानिबो कोटिश्रानभगवान॥
अपनो तेज कृष्ण तव दयऊ। भीम अंगप्रविशतसोभयऊ॥
अरु वनवास पवनगण छाये। गदा बैठि निज भावजनाये॥
आये भीम गदा कर फेरत। उड़े गयन्द महो तड़ गेरत॥
सैनको तेज अकाश समाने। ज्यों बबूर के पत्र उड़ाने॥
कुंजर सबै गगन मों लागे। कौतुक छोड़ि देव सब भागे॥
योजन एक सैन जो खायो। गदा पवन ते सेन उड़ायो॥
कौरवदल देखत दुख मान्यो। कालसमानभीमको जान्यो॥
करिशुण्ड गज मत्त चलाये। ते कुंजर लंका पहुँचाये॥
भिरे कनक कोटिशिरफूट्यो। सहितभुशुंडदशनसबटूट्यो॥
बहुतक परे सिन्धु के धारहिं। पकरिमत्स्यसबकराहिंअहारहिं॥
रवि मण्डल मो जो पहुँचायो। अजहूंफिरतगिरननहिंपायो॥
दो० भीम भयंकर गजघने, फेंके यहिव्यवहार।
भारतके संग्राम में कियो सिन्धुके पार॥
देखत द्रोण क्रोध तब कीन्ह्यो। रहुरहुभीमहांकतब दीन्ह्यो॥
सहसबाण उरमध्यसो मारयो। शरते तन जर्जर करिडारयो॥
शायक छूटे जात न जाने। कवचभेदि शर अंग समाने॥
धनु संधान द्रोणशरमारयो। अपनेरथहि भीमपगुधारयो॥
तकरिधनुदश साधेउ शायक। द्रोणशरीर हनेउ बलशायक॥
नकुलहि और जयद्रथभारथ। दोउ रच्यो सरस पुरुषारथ॥
शकुनी अरु सहदेव लराई। महायुद्ध कीन्हयो प्रभुताई॥
द्रोणपुत्र अभिमन्युसंग्रामहिं। सरसविशिखछांड़तरणधामहिं॥
ऐसे शर क्रुद्धित ह्वै जोरहिं। मनुज कहा पर्वत कहँफोरहिं॥
दो० षष्टिबाणअभिमनुहते कीन्ह्यो स्यन्दनभंग।
ध्वजा सहित बेसारथी मारे चारि तुरंग॥
कीन्ह्यो अपररथहि असवारी। सहस बाण जोरे धनुधारी॥

अर्जुनतनयविशिखअसजोरयो।
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहिं। जुरे वीर अपने जय कामहिं
वासुदेव रथ कियो पयानो। भीषम के सन्मुख लै ठाने
दोऊ वीर महा धनुधारी। लागे करन भयानक भारी
दिव्यबाण अर्जुन तब मार्यो। सहस पैग पाछे रथ टार्यो
भीषम कह्यो धनंजय सुनिये। अब मेरो पुरुषारथ गुनिये

दो० श्रवण मूलआकर्षिधनु हन्योविशिखसमरत्थ।
तीनि पैंग पाछे कियो नन्दिघोष सो रत्थ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो। साधुवचन यदुनाथ सुनायो
अर्जुन कह सुनिये गिरिधारी। मम उर यह संशयहै भारी
ममयहिविधिनिजविशिखचलायो। सहसपैगरथकोबिचलायो।
तीनि पैग मेरो रथ आयो। साधुवचनकेहि काजसुनायो।
हँसि भाष्यो तब शारँगपानी। पारथतुमयह चरितनजानी।
ज्योंसबविबुध गगनमोंअहहीं। ते सब नन्दिघोष महँरहहीं।
मेरु समान भार हनुमानहिं। जगन्नाथकरिमोहिं बखानहिं॥
ऐसो रथ शर टार्यो पारथ। भीषम धन्यधन्य पुरुषारथ॥
अर्ज्जुनसुनतसत्य करिजान्यो। महा क्रुद्धह्वै कार्मुक तान्यो॥
धाये बाण तेज अति पायल। ताते भे गंगासुत घायल॥
अष्ट बाण ते हत्यो तुरंगहिं। पुनित्रयविशिखसारथीअंगहिं॥

दो० कोटि बाण अर्जुनतज्यो कीन्हो लघुसंधान।
चारिलक्षचतुरंगदल जूझेउ लागत बान॥

अर्जुनयहिविधिअतिबलकर्यो। भीषमकोपि धनुपकरधर्यो॥
असी बाण अर्ज्जुन उरमार्यो। गजरथहय पदाति संहार्यो॥
यहिविधि करहि युद्धकी करणी। जूझहिं वीरपरहिंरणधरणी॥
भीषम कियो सरिस प्रभुताई। नरके शीश मेदिनी छाई॥
एकविशिख यहिविधितेजार्यो। ताते पारथको गुणतोर्यो॥
तबकपिध्वजनिजधनुगुणदीन्ह्यो। पारथहर्षिधनुपकरलीन्ह्यो॥

गासुत तब समय विचाख्यो। दशसहस्र स्यंदन तब माख्यो॥
दो० शंखध्वनि करिकै चले सकल आपने धाम।
सबल सिंह चौहान कह भारत के संग्राम॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेद्वादशोऽध्यायः १२॥
पने भवन सबै मिलि आये। दुर्योधन तब भीष्म बोलाये॥
नहु पितामह वचन कहोंवर। तुमते कोउनहिं बड़ोधनुर्द्धर॥
तदिवस रणकृतजयहितयह। पांडवक्षेमसहितगयेनिजगृह॥
ह कलंक नहिं मिटै तुम्हारो। जो न प्रातदल पांडवमारो॥
लत क्रोध तन भीषमबाढ़्यो। तीक्षणशर निषंगते काढ़्यो॥
हाकाल शर नाम कहावै। इन्द्र वज्र नहिं पटुतर पावै॥
हि शरते पांडव दल मारों। तबअपने भवनहिं पगुधारों॥
र्योधन सुनिकै सुख मान्यो। जीत्यो युद्ध चित्तमें जान्यो॥
म्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो। तामहँवास पितामह कीन्ह्यो॥
र्मराज बंधुन सँग गयऊ। युतकमलापतिनिजगृहगयऊ॥
दो० सभामध्य बैठे सकल द्रुपद विराट नरेश।
मधुर वचनसहदेवते कहेउआपु हृषिकेश॥
ात युद्ध होइहै केहि रूपहि। मंत्री कहहु भेदसब भूपहि॥
सि सहदेव कही सुनुस्वामी। तुम जानतसब अन्तर्यामी॥
हाकाल शर भीषम राख्यो। पांडव बध प्रतिज्ञा भाख्यो॥
ाहिवस्यो गयोनहिं धामहिं। समुझिकीजियेश्रीहरिकामहिं॥
ुनतयुधिष्ठिर विस्मय मान्यो। बंधुनसहितमुये यह जान्यो॥
कहोकृष्ण नृप शोच न करिये। मेरोमंत्र चित्त निज धरिये॥
अर्जुन को मेरे सँग दीजे। छलकरि महाकाल शरलीजे॥
ब नृप कह यह बड़ो अंदेशो। किमि तुम बहुरार पैहोकेशो॥
कमलनयन नृपको समझायो। जबतुमसबबनबास सिधायो॥
काम्यकवन पर्णशाला आये। दूतआनि कुरुनाथ जनाये॥
दो० पांडवबनमों हैं निकट वचन सुनो कुरुनाथ।

सकलकटकसँगलेचलो भीष्मद्रोणनिजसाथ॥
गोधन धन देखन मनलायो। यहे आगमन सबहिं सुनायो॥
सुरगण सब जान्यो यहकारण। कुरुपतिजातपाण्डवनमारण॥
सुरपति कह्यो चित्ररथधावहु। दुर्योधनहि बांधिले आवहु॥
आज्ञाले चढ़ि चलो विमानहिं। कटिनिषंग लीन्हो धनुबानहिं॥
गंध्रव राय आइ तब हांक्यो। चकृतसबहिंगगनमुखताक्यो॥
यहिविधि बाण बुंद झरिलायो। मारि सबै सेना बिचलायो॥
अतितीक्षण गंध्रव शरलाग्यो।धनुगुणकट्यो करणतबभाग्यो॥
नागफांस शरयहिविधिसांध्यो। बलते गहि दुर्योधन बांध्यो॥
दो॰ अपने रथकरि ले चल्यो गगनपंथ मो गौन।
त्राहि त्राहि टेरयो विकल सुन्यो युधिष्ठिरवैन॥
यह तोहे दुर्योधन भ्राता। अपकारी गंध्रबलिये जाता॥
अर्ज्जुन कर कोदंडहि धरिये। बंधनमुक्त बंधुको करिये॥
भीम कही नृप चुपकरि रहिये। भूलिबातक्यहिकारणकहिये॥
गंध्रव कियो हमारहि कामहिं। चलहु राजकीजे सुखधामहिं॥
धर्म्मराज कह सुनिये पारथ। आज्ञामानि करहुपुरुपारथ॥
यहसुनि अर्जुनधनुकरलीन्ह्यो। शायकवृष्टिअकाशहिकीन्ह्यो॥
शरते रथरोक्यो दिविधामहि। गंध्रव उरमारयो दशबानहि॥
मनहिं बिचार चित्ररथकीन्ह्यो। दुर्योधनहिं डारि तब दीन्ह्यो॥
पारथ तब इमि शायक साध्यो। भूमि अकाश बाणते बांध्यो॥
दुर्योधन शरपर चलिआयो। धर्म्मराज को दर्शन पायो॥
दो॰ लज्जितह्वै यहिविधि कह्यो अर्जुन राख्योप्रान।
जो इच्छा सो मांगिये कहत सुवचन प्रमान॥
पारथ कही सत्यदृढ़ कीजे। समय परे मांगे वर दीजे॥
कुरुपति कहआजुइ वरलीजे। अर्जुन को मेरे सँग दीजे॥
हरिअर्जुनकीन्ह्यो तबगवनहि। आये दुर्योधन के भवनहि॥
...योकृष्ण हम बाहर रहिये। सुनहु किरीटी यह मतकहिये॥

मांगि नृपसों लैआवहु। तवभीषम पहँआपुसिधावहु॥
अर्जुन आयो नृप द्वारे। कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे॥
न सुनि तुरत बोलायो। अंतःपुरमहँ कपिध्वजआयो॥
र करि आसन बैठारे। कहहु बंधुकयहिकाम सिधारे॥
न कह कुरुपति के आगे। पावहुँ आजु पूर्ववर मांगे॥
दान मणि भूपति दीजे। अपनी सत्य पालनो कीजे॥
गोविंद सुनत सुखपायो। दीन्ह्योमुकुटगहरुनहिंलायो॥
दो० मुकुटबांधिपारथ चले भीषम के अस्थान।
देखत उठि आदरकियो दुर्योधन के जान॥
मकह्योजानिकुरुराजहि। आपुगमनकीन्ह्योकयहिकाजहि॥
ा महाकाल शर दीजे। निजकरहम पांडव वधकीजे॥
भीषम दीन्ह्योतअवानहिं। प्रातयुद्ध कीन्ह्यो संधानहिं॥
वंत ह्वै अर्जुन लयऊ। यहिअवसरप्रगटतप्रभुभयऊ॥
णहि देखिभयो छलजान्यो। गंगासुतयहिभांतिवखान्यो॥
प्रभु तुम पांडवके स्वारथ। मेरोप्रणकिमिकियो अकारथ॥
रत में यश नेक न पायो। नितप्रतितुमपारथहिंवचायो॥
विसनकादिक अंतनजान्यो। तुमपाण्डवके हाथ विकान्यो॥
कि हेतु केशव मन भायो। विनाभक्ति प्रभुको नहिंपायो॥
ो कृष्ण भीषमके आगे। यशपैहौ रण सरस सभागे॥
दो० अपनो प्रण में हारिके तव प्रण करौंनिदान।
भक्तिविवशलखिप्रकटकहसवलसिंहचोहान॥
ति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥
पम सुनि जियमें सुखपायो। पारथ धर्मराज पहँ आयो॥
मिवातकमुखस्वातोंवरण्यो। वाणदेखि पांडव दलहरण्यो॥
ोधन सुनिके दुख मान्यो। प्रातहोत रणकियो
तहोइ पांडव दल साजहि। भेरि दुन्दुभी मारू
चतुरंग साजिके आयो। युद्ध भूमि में शोभा

सकलकटकसँगलेचलो भीष्मद्रोणनिजसाथ॥
गोधन धन देखन मनलायो। यहै आगमन सबहिं सुनायो
सुरगण सब जान्यो यहकारण। कुरुपतिजातपाण्डवनमारण
सुरपति कह्यो चित्ररथधावहु। दुर्योधनहि बांधिले आवहु
आज्ञाले चढ़ि चलो विमानहिं। कटिनिषंग लीन्हो धनुबानहिं
गंध्रव राय आइ तब हांक्यो। चकृतसबहिंगगनमुखताक्यो
यहिविधि बाण बुंद झरिलायो। मारि सबै सेना विचलायो॥
अतितीक्षण गंध्रव शरलाग्यो।धनुगुणकट्यो करणतबभाग्यो॥
नागफांस शरयहिविधिसांध्यो। बलते गहि दुर्योधन बांध्यो॥
दो० अपने रथकरि ले चल्यो गगनपंथ मो गौन।
त्राहि त्राहि टेरयो विकल सुन्यो युधिष्ठिरबैन॥
यह तोहै दुर्योधन भ्राता। अपकारी गंध्रवलिये जात
अर्ज्जुन कर कोदंडहि धरिये। बंधनमुक्त बंधुको करिये
भीम कही नृप चुपकरि रहिये। भूलिबातक्यहिकारणकहिये
गंध्रव कियो हमारहि कामहिं। चलहु राजकीजै सुखधामहिं
धर्म्मराज कह सुनिये पारथ। आज्ञामानि करहुपुरुपारथ
यहसुनि अर्जुनधनुकरलीन्ह्यो। शायकवृष्टिअकाशहिकीन्ह्यो
शरते रथरोक्यो दिविधामहि। गंध्रव उरमारयो दशबानहि।
मनहिं विचार चित्ररथकीन्ह्यो। दुर्योधनहिं डारि तब दीन्ह्यो।
पारथ तब इमि शायक साध्यो। भूमि अकाश बाणते बांध्यो॥
दुर्योधन शरपर चलिआयो। धर्म्मराज को दर्शन पायो॥
दो० लज्जितह्वै यहिविधि कह्यो अर्जुन राख्योप्रान।
जो इच्छा सो मांगिये कहत सुबचन प्रमान॥
पारथ कही सत्यदृढ़ कीजै। समय परे मांगे बर दीजै॥
कुरुपति कहआजुइ बरलीजै। अर्जुन को मेरे सँग दीजै॥
हरिअर्जुनकीन्ह्योतबगवनहि। आये दुर्योधन के भवनहि॥
कह्योकृष्ण हम बाहर रहिये। सुनहु किरीटी यह मतकहिये॥

कुट माँगि नृपसों लेआवहु। तवभीषम पहँआपुसिधावहु॥
व अर्जुन आयो नृप द्वारे। कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे॥
र्योधन सुनि तुरत बोलायो। अंतःपुरमहँ कपिध्वजआयो॥
आदर करि आसन बैठारे। कहहु बंधुक्यहिकाम सिधारे॥
र्जुन कह कुरुपति के आगे। पावहुँ आजु पूर्ववर माँगे॥
कुट दान मणि भूपति दीजे। अपनी सत्य पालनो कीजे॥
न गोविंद सुनत सुखपायो। दीन्ह्योमुकुटगहरुनहिंलायो॥

दो० मुकुटबांधिपारथ चले भीषम के अस्थान।
देखत उठि आदरकियो दुर्योधन के जान॥

ीषमकह्योजानिकुरुराजहि। आपुगमनकीन्ह्योक्यहिकाजहि॥
ांगि महाकाल शर दीजे। निजकरहम पांडव वधकीजे॥
सिभीषम दीन्ह्योतबबानहिं। प्रातयुद्ध कीन्ह्यो संधानहिं॥
र्वत ह्वै अर्जुन लयऊ। यहिअवसरप्रगटतप्रभुभयऊ॥
ष्णहिं देखिभयो छलजान्यो। गंगासुतयहिभांतिवखान्यो॥
प्रभु तुम पांडवके स्वारथ। मेरोप्रणकिमिकियो अकारथ॥
ारत में यश नेक न पायो। नितप्रतितुमपारथहिंबचायो॥
ावसनकादिक अंतनजान्यो। तुमपाण्डवके हाथ बिकान्यो॥
ाक्ति हेतु केशव मन भायो। विनाभक्ति प्रभुको नहिंपायो॥
ह्यो कृष्ण भीषमके आगे। यशपैहो रण सरस सभागे॥

दो० अपनो प्रण में हारिके तव प्रण करौंनिदान।
भक्तिविवशलखिप्रकटकहसवलसिंहचौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

ीषम सुनि जियमें सुखपायो। पारथ धर्मराज पहँ आयो॥
जिमिचातकमुखस्वातीवरष्यो। वाणदेखि पांडव दलहरष्यो॥
र्योधन सुनिके दुख मान्यो। प्रातहोत रणकियो पयानो॥
र्षितहोइ पांडव दल साजहिं। भेरि दुन्दुभी मारू बाजहिं॥
ल चतुरंग साजिके आयो। युद्ध भूमि में शोभा पायो॥

प्रथमपेलिदीन्ह्यो गजमत्तहि। गज रिपुदंति भयो चौदंतहि॥
पदचर धाये बहुधा दमके। फेरत फरी खड्गकर चमके॥
चढ़े तुरंग शेल करलीन्ह्यो। महामारु असवारनकीन्ह्यो॥
मारत शूल सजोवा टूटहिं। वाहत घाव खड्ग शिरफूटहिं॥
मुरे न लरे खेत मो ठाढ़े। महाशूर सब जिय के गाढ़े॥
रथी रथी करिवे रण लागे। चलत न एक एक के आगे॥

दो० महारथी रण हांकदै करहिं युद्ध यहिरूप।
जोर जोर अरुझे सबै भिरे भूपसों भूप॥

सहस लाख कोटिनशर छूट्यो। वाणन वाण वीचहीं टूट्यो॥
यहि विधि युद्धकरै रणसरसैं। बहुविधिवाण वुन्दसम बरसैं॥
काढ़हिं धनुष क्रोध कै रणमें। वाहे शेल हांक दै रणमें॥
रथते उतरि गदा ले धावहिं। आगे परहिसो मारिगिरावहिं॥
तोमर फरसा कोड प्रहारहिं। शक्तिशेल मुद्गरकर मारहिं॥
जूझिगिरे भारत रण धावहिं। आनंदित चढ़िचलेविमानहिं॥
अर्जुन रथ हांक्यो कंसारी। जोती गहे पिताम्बर धारी॥
श्यामशरीर कमलदललोचन। सदाभक्तकर शोच विमोचन॥
नंदिघोष रथ आगे आयो। तब भीपम यहिभांतिजनायो॥
मुकुटबांधि कीन्हो मोसों छल। आजु जानिबो पारथ को बल॥
जो हरि के कर अस्त्र गहावौं। तो शंतनुसुत जगत कहावौं॥

दो० धर्मराज कुरुपति सुन्यो भीपम भाष्यो बैन।
आजु गहावौं अस्त्र हरि देखत दूनौं सैन॥

गंगागर्भ जन्म जो लीन्ह्यों। तौ यहप्रण भारतमें कीन्ह्यों॥
प्रभु को प्रण टारौं परतच्छ। आजुकरौं अपनो प्रणरच्छ॥
यहिविधि वाणवुंद झरिलायो। शोणित नदी अपार वहायो॥
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावौं। तौ मैं वास अधोगति पावौं॥
कठिनवाण शारंगगुण जोर्यो। शरसागर पांडवदल बोर्यो॥
भीपम यादि प्रतिज्ञा ठान्यो। [illegible] हरिमान्यो॥

यह सुनि देवलोक सब धाये। कौतुकको विमान सबछाये ॥
प्रथम कियो हे प्रणजगतारण। हमनहिंकरैं धनुषकरधारण ॥
प्रभु पारथ को सारथि अहई। भीषम अस्त्र गहावनकहई ॥
यह चरित्र देखतसब मुनिगण। रणमों आजरहै काको प्रण ॥

दो॰ भीषम तब यहिविधि कह्यो करिहौंयुद्धअनन्त।
पारथ रण अस्थिर रहौ सारथि श्रीभगवन्त ॥

यह कहि लगेचलावन शायक। दोऊभट रणमहँ सबलायक ॥
अर्जुन बाण हाथ ते छूटहिं। मानहुँ वज्र गगन ते टूटहिं ॥
लघु संधान कियो तब पारथ। निजशायक छायो सबभारथ ॥
दशदिशि सबबाणनमय सूझै। निजपर नाहिंन कोऊ बूझै ॥
यहिविधि शर आकाशमेंछायो। रविमंडल देखन नहिं पायो ॥
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ्यो। तीक्षण शर निषंगतेकाढ्यो ॥
ऐसे सबल बाण गुण जोरे। क्षण महँ अर्जुन के शर तोरे ॥
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो। पांडव दल बाणनते तोप्यो ॥
वीर सकलशर छांह समाने। दृष्टि न परत जात नहिं जाने ॥
कुद्धितयहिविधिकृतसंधानहिं। जलथलसूझिपरतसबबानहिं ॥

दो॰ महा घोर संग्राम मों अर्जुन धनु सन्धान।
सबशरकाटेनिमिषमोंतमखण्ड्योजिमिभान ॥

अर्जुन पाणि निशित शरछूटत। भेद सनाह वपुष महँ फूटत ॥
सारथि उर शत शायक मारे। विंशतिविशिख केतुध्वजपारे ॥
अश्वनतनु यहिविधिशरलागे। थकितभयेपगचलतनआगे ॥
लक्ष नराच कटक परडारो। तेशर चोटमौलि अनुसारो ॥
तब भीषम निजतेज सँभार्यो। सहसबाण अर्जुन उरमार्यो ॥
कोटिविशिखलाग्योहनुमानहिं। पट्टिनराचहन्यो भगवानहिं ॥
गंगतनय शर अपर सुजोरे। घायल नंदिघोष के घोरे ॥
शर अनेक सेना पर प्रेरो। पांडव कटक हत्यो बहुतेरो ॥

दो॰ सहस एक राजा गिर्यो सेन सुवध्यो अनन्त।

अरुण वरण सब देखिये खेलत मनहुँ वसन्त ॥
भीषम अमित तेजमहिसाच्यो । रुंड मुंड महिभारत साच्यो ॥
महाशूर रण जूझत घायल । मनहुँनाद मोहे करसायल ॥
यहिविधिकृतअतिरणभयकारी । अर्जुन सों तब कह्योमुरारी ॥
अब अपनो दल रक्षन कीजे । दृढ़ ह्वै शर कोदंडहि लीजे ॥
सुनिपारथ लीन्ह्योकरधनुशर । प्रातसमयजनुउदयदिवाकर ॥
अति क्रुद्धित ह्वै कृतसंधानहिं । हृदयताकि मार्‍यो बहुबानहिं ॥
भेदि सनाह अंग में लाग्यो । क्रोधअनलउर अंतरजाग्यो ॥
भीषमविशिखनिशितअतिछूट्यो । अर्जुनवपुपभेदिके फूट्यो ॥
घायल भयो सह्यो सब वानहिं । ब्रह्मअस्त्र तबकृतसंधानहिं ॥
बाण उदोत तेज महि छायो । देवलोकलखिअतिभयपायो ॥
दो० पारथ अतिशय बल कियो कृष्ण अस्त्र सन्धान ।
चलत तेज अति उदित कृत मनहुँ दूसरो भान ॥
कौरवदल अति देखि सकान्यो । भीषम ब्रह्मअस्त्र संधान्यो ॥
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण । तबलाग्योतीक्षणशर मारण ॥
अयुत बाण हनुमंतहि मार्‍यो । गरुड़ध्वजतनुसहसप्रहार्‍यो ॥
अर्जुन अंग बाण बहु मार्‍यो । शरते तनुझांझरकरिडार्‍यो ॥
साहितवाजिस्यंदनकरिघायल । थकितभयेपदचलतनपायल ॥
भीषम बाणवृष्टि अति लायो । नंदिघोष रथ शर ते छायो ॥
तीक्षणबाण श्याम उर मार्‍यो । पीतवसनरँग अरुणसँवार्‍यो ॥
क्रुद्धित जलजनयन रतनारे । चक्रपाणि कर चक्र सँवारे ॥
रथ ते उतरि चले नारायन । धाये आप उघारे पायन ॥
सजलश्यामघन अंग सुहायो । मर्कतमणिपटुतर नहिंपायो ॥
मकराकृत कुण्डल मन मोहे । डोलतझलक कपोलनसोहे ॥
दो० गहे चक्रधर चक्र कर चक्रत चाहत खेत ।
चंचल धावति वरण की भीषम के प्रण हेत ॥
करमें चक्र सुदर्शन राजत । कोटिभानुद्युति सरिसविराजत ॥

श्रमजलरुधिरचलतयकसंगहि। शोभितअंगअनूपम रंगहि॥
विश्वम्भर कुद्धित ह्वै धायो। भूमिचली फणशेप उठायो॥
यहिविधिप्रभुआतुरकियगवनहिं फहरतपीतवस्त्रलगिपवनहिं॥
गिस्यो छूटि ऊपर रण धरणी। कवि पै छविकछुजातनवरणी॥
कौरव दल देखत सब डरप्यो। मानहुँबाजविहँगपरफरक्यो॥
तब अर्जुन छांड्योनिजस्यंदन। धाइ जाइ पकस्यो जगवंदन॥
अहोनाथ, अस्थिर है रहिये। आपुअस्त्रक्यहिकारणगहिये॥
मोतेअघकह भयो जगतारण। करगहिचक्रचल्योतुममारण॥
यहइ अयश जगत में पायो। प्रभुकर भीषमअस्त्र गहायो॥

दो० प्रभु अपनो प्रण टारिके कियो मोर अपमान।
भीषम प्रण स्वारथ कियो भक्तवश्य भगवान॥

चरणकमलगहि पारथ फेस्यो। देखि एष्ठ गंगासुत टेस्यो॥
साधु साधु श्रीपति बनवारी। सदा भक्त प्रण रक्षाकारी॥
धनुपड़ारिकरकियोप्रणामहिं। अस्तुतिकरनलगेघनश्यामहिं॥
तब भीषमयहिविधिते भास्यो। दीनवन्धु मेरो प्रण रास्यो॥
विप्र सुदामा दारिद भंजन। भक्तवश्य गोपिन मन रंजन॥
गणिकाव्याधगीध गजतारण। गोरक्षक गोवर्द्धन धारण॥
ध्रुवको अचलकियो परतक्षक। द्रुपदसुता की लज्जारक्षक॥
महाकष्ट प्रहलाद उबास्यो। निकसिखम्भदनुजेशहिमास्यो॥
रावण कुल समेत वध कीन्ह्यो। लंकाराज्य विभीषण दीन्ह्यो॥
शाप शिला गौतम की नारी। परसतचरण अहल्या तारी॥

दो० ब्रह्मा शंकर देवमुनि करत चरण निज ध्यान।
सबलसिंह चौहान कह भीषम कियो बखान॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

जय वृन्दावन विपिन विहारी। श्रीपति श्रीधर श्रीबनवारी॥
चढ़े आइ हरि पारथ स्यंदन। जोती गहे आपु जगवंदन॥
अर्जुन कोपि धनुषकरलीन्ह्यो। इन्द्रअस्त्र संधानहिं कीन्ह्यो॥

कौरवदल सम्मुख जो पायो। क्षणमें अर्जुन मारि गिरायो॥
महायुद्ध कीन्ह्यो नर रूपहि। मार्‍योसमर पंचशतभूपहि॥
सोहत मुकुट न अति मणिपूरी। लोटत धरणि शीशतभूरी॥
लागत उर अर्जुन के बानहिं। कुरुदलरणमरिखसोनिदानहिं॥
गंगासुत धनु क्रुद्धित लयऊ। गुड़ाकेशपरशर भरिकियऊ॥
यहिविधिलगे हननशरतीक्षण। पांडवदलसहसनगिरेमहिरण
दशसहस्त्ररथ भीष्म निखंड्यो। भवनचलतशंखध्वनिमंड्यो
दो० कुरु पांडव फिरिके चले आये निज अस्थान।
धर्मराज बन्धुन सहित संगलिये घनश्याम॥
भोजन को सबही मनलायो। द्रुपदसुतायहि भांतिज्यँवायो
धर्मराज दुर्योधन भूपहि। आजुयुद्धकीन्ह्योक्यहिरूपहि
तबपारथ यहिभांति बखानहिं। हरिमेरो कीन्ह्यो अपमानहिं
रणमें भीषम को प्रण रह्यो। दीनबन्धु रण अस्त्रहिगह्यो।
द्रुपदसुता यहिभांति बखान्यो। पारथतुमयह भेदन जान्यो।
सदा भक्त प्रभु रक्षा कारण। ब्रह्मरूप कीन्ह्यो प्रभुधारण।
शिवसनकादिक अंत न पायो। शवरी के जूठे फल खायो।
महिमाअगम अगोचर मोहन। डोलत सदा भक्त के गोहन।
बलिराजा हनुमान सयाने। चरणकमलमनमधुपलोभाने।
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ। भीषमजन्म भक्तमयस्वारथ॥
दो० धन्य धन्य ते साधु तनु भजत साँवरे अंग।
सुखदुखसम्पति बिपतिमें होतनहींचितभंग॥
सुनिमाधव अतिशयसुखपायो। करिभोजनशयनहिंमनलायो॥
होत प्रभात सजे दो अनी। बजतदमाम भई ध्वनिघनी॥
बीर सकल रणधरणिहिं आये। बँधे अखकर धनु शरलाये॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये। महाशूर सन्मुख ह्वै आये॥
धनुशर कृत संधानहिं। क्रुद्धितलगे पँवारन बानहिं॥
पेजि महाबत दीन्ह्यो। आगेपरेताहि यम लीन्ह्यो॥

महावीर सब विरद सुबांधे । अरुझे ठांव ठांव रण कांधे ॥
दलचतुरंग करत रण घोरहि । मंडे समर जोरसों जोरहि ॥
तेज तुरंग नकुल त्यहि राज्यो । अतिभयदायक संगरसाज्यो ॥
महारथी बहु शर हत करहीं । सहससहसभटरणमहिपरहीं ॥
भीषम पर अर्जुन रण साजी । हांक देत हरि हांकत बाजी ॥
जीतीगहे पतित के पावन । वर्षतशर मानहुँ जल सावन ॥

दो० पारथ कर कोदण्डगहि छायो विशिख अपार ।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे पदचर विविध प्रकार ॥

तब भीषम निजकरधनुलायो । अतिशयसरिसनराचचलायो ॥
तीक्षण बाण प्रहारन करई । पांडव दल बहु भट संहरई ॥
भीषम उर निज तेज सुधारयो । सहस नरेश युद्ध महिमारयो ॥
बीर सबै लागे शर मारन । तब आये कौते हथियारन ॥
शूल गदा मुद्गरनप्रहारहिं । सन्मुखआयखड्गशिरझारहिं ॥
अभिरहिं सुभटकटारिनमारहिं । पकरिकेशरणचपरि पछारहिं ॥
द्रोण करणकुरुपति के साथहि । यहिविधिलेरैंअस्त्रगहिहाथहि ॥
इतते तबहिं वृकोदर धायो । गदा घाव बहुमारि गिरायो ॥
बहुतक मींजि पांव ते डारयो । बहुतकगहिअवनीपरडारयो ॥
अरु बहुस्यंदन चूरण कीन्हेउ । हयगजफेंकिव्योमपथदीन्हेउ ॥

दो० घोरयुद्ध यहिविधि कियो भीम भयंकर रूप ।
सहित सेन रणमें बधेउ प्रबल तीनिशतभूप ॥

नंदिघोष हांकत जगवंदन । अर्जुनकीन्हेउसैननिकन्दन ॥
तीक्षण बाण क्रुद्ध कै मारयो । तीनि सहस्रनृपतिसंहारयो ॥
मरिभटपरयो धरणि सबछायो । रणमें रुधिरनदी बहिआयो ॥
शोणितनदी जातिनहिं वरणी । मनअथाह हमका वैतरणी ॥
भीमसेन गजराज सँहारे । परे समर सब भये करारे ॥
धवल छत्र चमकत हैं कैसे । बाढ़त नदी फेन जल जैसे ॥
चक्री झलक मीनसम चमकें । कठिनढालकच्छपसमदमकें ॥

केश स्यवार सरिस अरुझाने। मृतक तुरंग ग्राह सम जाने॥
कटेभुशुंडि सरिस छवि पाई। मनहुँ भूमि जलमें उतराई॥
रुधिर नदी यहि रूप भयङ्कर। नाचत महा मगन ह्वै शङ्कर॥
दो० भैरव भूत पिशाचगण योगिन मंगलचार।
अंत्रलपेटहिं कंठमें सरिस विराजत हार॥
कोउ गजमुक्ता ले आवहिं। एक एकके श्रुति पहिरावहिं॥
नृत्यत भूत पिशाच सयाने। रुधिर मांससबखाइ अघाने॥
जंबुक गण आनन्दित धावहिं। मांसखाइ मनमें सचुपावहिं॥
गगन उड़हिं पक्षीगण जेते। रणमें भये तृप्त मन तेते॥
घायल मग्न सुभये रुधिरसरि। उठेसँभरिपुनिशोकसिंधुपरि॥
शूरन शीशकुंडि लै आवहिं। पीवहिंरुधिर योगिनीगावहिं॥
उठिकवंध धावहिं पुनिमाथहि। मारनआवखड्गगहिहाथहि॥
भीषम सों अर्जुन बलभारी। कीन्हेउअतिभारतभयकारी॥
अरुणवदन देखतदिनभूल्यउ। जिमिबसंतकिंशुकतरुफूल्यउ॥
भूत पिशाच सुब्याह विचारहिं। धरहिंटोपशिर मौरसँवारहिं॥
दो० सबलसिंह चौहानकह अर्जुन कृत रणखेत।
गावत चौंसठि योगिनी नाचत हैं सब प्रेत॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेपंचदशोऽध्यायः १५॥
गोधन मंडल मंडप छायो। जंबुक सकल बराती आयो॥
यहिविधिकरतकोलाहलभारी। भैरव सहित देहिं करतारी॥
तब पारथ संधान्यउ धनुशर। गंगासुत मारेउ उरशतशर॥
अरुअतिनिशितअमितशरडाव्यो। रथकोध्वजापताकाकाव्यो॥
तब भीषम दृढ़करधृतधनुशर। होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर॥
दशशायकअर्जुनतन साध्यो। सप्तविशिखयदुपतिअवराध्यो॥
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो। नंदिघोष हय रथक्षतसाध्यो॥
लाग्यउ पष्टिविशिखहनुमंतहि। दशसहस्र रथतवहतवंतहि॥
दे जय शंख चल्यो गंगासुत। पांडवदलसबचले भवनउत॥

ोधन सब सेना लीन्हे। अपने भवनगवन तब कीन्हे॥
दो॰ धर्मराज फिरिके चल्यो आगे कमलाकंत।
सबलसिंहचौहानकह महिमाअगमअनंत॥
रे विश्राम अस्त्र सब खोले। नृपतियुधिष्ठिर माधव बोले॥
जे सकल भोजनके कामहिं। बैठे द्रुपदसुता के धामहिं॥
राज अति वचन सुनाये। कंस निकंदन प्रभुहि जनाये॥
दिन भयो महाबल भारथ। भीषम खेत सरिसपुरुषारथ॥
सहस्त्ररथ नितक्रम मारहिं। अरु अनेक सेना संहारहिं॥
यो कृष्ण अबकीजे गमना। चलिजैये भीषम के भवना॥
तुम अरु पारथसँग लीजे। गंगासुत के दरशन कीजे॥
हिं जाइ मृत्युको कारण। यहिविधिकहतभये जगतारण॥
र्जुन सहित चले तब केशो। निशाकाल उठि चले नरेशो॥
ये तुरत गंगसुत द्वारहि। धायकह्योयहिविधिप्रतिहारहिं॥
दो॰ गंगासुत चितदै सुनो कह्यो जोरि युगहाथ।
धर्मराज द्वारेखड़े हरि अर्जुन हैं साथ॥
ने भीषम आतुर होइधाये। कृष्णदरश आनन्दित पाये॥
राज अभिवन्दन कीन्हा। हँसिभीषमअंकमभरिलीन्हा॥
र पांडुसुत कुशल तुम्हारो। जीतहु युद्ध शत्रु संहारो॥
क सहित हरिकेपद परश्यो। वदन चंद्र आनन्दितदरश्यो॥
दर करि आसन बैठाखो। शीतलजलसोंचरणपखाखो॥
षमकह्यो युधिष्ठिरराजहि। आपुगमनकीन्ह्यो केहिकाजहि॥
राज यहि भांति जनायो। वनवन फिरत महादुखपायो॥
वसीठ यदुनाथ पठायो। पांच ग्राम मांगे नहिं पायो॥
हरिरच्यो युद्ध यहभारथ। नवदिन कियेआपु पुरुपारथ॥
सहस्त्ररथ नितक्रममाखो। सेन अनेक समर संहाखो॥
दो॰ आपु युद्ध यहि विधिकखो तोहमछांड़ी आस।
पंचबंधु सँग द्रौपदी फिरि जैबो बनवास॥

सुनिभीषम यहिभांतिबखान्यो । धर्मराज यह बात न जा
जाके सदा सहायक हरि हैं । सो रणमों निश्चयजयकर्
जहांधर्म तहँ कृष्ण सो आवैं । जहां कृष्ण तहँई जय प
यहसुनि कह पांडवदल केतू । आपु युद्ध कीजे केहि हे
जो हमको जय दीन्हो चहिये । अपनी मृत्यु आपु ते कहि
तब गंगासुत हँसिकै कहई । जबलगि अस्त्रगहे हम रह
इन्द्र आदि जो रणमों आवहिं । म्वहितेजयतिपत्रनहिंपाव
तुमतेकहों सुनो यह कारण । सन्मुख अर्जुन सकै न मार
होतप्रात यहिविधिते लरिये । आगे आनि शिखंडी करिये
द्रुपद कुमार अग्रजब ऐहहिं । धनुषडारि हम बदनदुरैहहि

दो० कन्याते भयो पुरुपतन जानत हैं सबलोग ।
ताते बदन न देखिहौं प्रथम तज्यो तियभोग ॥

सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये । जब हम अस्त्र डारिकै रहिये
और वीर के शर नहिं फूटहिं । परसत अंग समर शरटूटहिं
अर्जुन किये शिखंडी ओटाहिं । मेरे उर करि हैं शर चोटा
यहि विधिते भीपम समझायो । सुनिकै धर्मराज सुख पाय
कीन प्रणाम चलनजब चह्यो । तब भीपम माधवसन कह्य
दीनबंधु पारथ के स्वारथ । मेरोवल तुम करत अकारथ
हे प्रभु तीनिलोक के स्वामी । सब जीवन के अंतर्यामि
अर्जुन धन्य जगत यशछायो । हरिसे सखा सहजहीं पायो
यह कहिकै तबकीन्ह्यो गवना । धर्मराज आये निज भवना
भीपमकह्यो मृत्युकोकारण । सुनिहरपितभयोअधमउधारण

दो० धर्मराज पारथ सहित हरपित पंकज नैन ।
अमृतभोजनसरिसकरिसबमिलिकीन्ह्योसैन ॥

प्रात होत कीन्हे असवारी । साजे सैन महाबल भारी
दोउदल अतिक्रुद्धित साजहिं । शब्द अघात दमामे बाजहिं
टाकटोक अपनी गतिबोलहिं । मारत हांक पदाति गुबोलहिं

कोटिन गज साजे मतवारे। बाजत घंटा चमर सँवारे॥
चले सुभट सब अस्त्रन धारे। क्रुद्धित भये सैन्य ते न्यारे॥
रणमों करहिं शत्रुको अंतहि। छनता देखि देहि भुवदंतहि॥
सारथि रथ जोतत हय चोखे। इंद्रविमान परत हैं धोखे॥
ध्वजा तुरंग सहस फहराने। चलत तेज बांके घहराने॥
तेज तुरंग वीर सब चढ़यो। मानहुं बिधिअपनेकरगढ़यो॥
पांवर लगे सरिस छबिराजत। तबलअपरगजगाहविराजत॥
पदचर करत कोलाहल धाये। खड्ग हस्त लै शोभा पाये॥
समर भूमि केहरि सम गाजे। युद्धभूमि में सरिस बिराजे॥

दो० कुरु पांडव चतुरंगदल जुरेआनि कुरुखेत।
क्षत्रीगण सब हांकदै शारँगगह्यो सचेत॥

सेन गँभीर कहत नहिं आवै। कहैजो कविसोअपयश पावे॥
क्रुद्धित वीर लगे शर बर्षन। शतते सहस सहसते कर्पन॥
कुंजर पेलि महावत दीन्ह्यो। महा मारु मयमंतहिकीन्ह्यो॥
ऐसे ऐसे क्रोधित गजधावहिं। आगेपरहिंसो मारिगिरावहिं॥
महारथी सब मारहिं अत्री। ध्वजा पताका काटहिं क्षत्री॥
बरषत बाण कहतको बैनहिं। लक्षण वीर समरकृतसैनहिं॥
दोउदल कीन्ह्यो रण घोरहि। परे भीम दुश्शासन जोरहि॥
विंशतिशर दुश्शासनलीन्ह्यो। भीमअंग शरभेदनकीन्ह्यो॥
क्रुद्धित भयो पवन के नंदन। धायो उतरि छांड़िकेस्यंदन॥
लेकर गदा कोपि करि धायो। हांकमारि दुश्शासन आयो॥

दो० दोउभट यहिविधि भिरयो भारतभूमि प्रमान।
कौतुक देखत देवगण हरषित चढ़ विमान॥

मारत गदा कोपकरि तन में। लागतघावशब्द जिमिघनमें॥
शोभित रुधिर अंगमें कैसे। ऋतुबसंत किंशुक तरुजैसे॥
भीमसेन तब तेज सँभारयो। हांकिगदाउरमध्यसो मारयो॥
दुश्शासन तन मोह जनायो। अपने रथहि वृकोदरआयो॥

देखि द्रोण गुरु शर संधान्यो । भीम अंग शायक ठहरान्यो
तीक्षण बाण षष्टि गुण जोरे । घायल किये सारथी घोरे
पंच बाण ते तोरयो स्यन्दन । आगे भयो सुभद्रानन्दन
अभिमन्युहाथ तेजशरछूट्यो । भेदि सनाह अंग में फूट्यो
एक बार सारथि शिरखंड्यो । चारिवि शिखहयहतिरणमंड्यो
कीन्ह्यो विरथ द्रोण से क्षत्री । अर्जुन पुत्र महाबल अत्री

दो० द्रोणअपरस्यंदन चढ्यो लीन्ह्योचाप सँभारि ।
सबलसिंह चौहान कह भई भयानक मारि ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

भीषमदेव कहन यह लागे । सारथि रथहि चलावहुआगे
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ । तिनते रण कीजे पुरुपारथ
यह कहिके हांक्यो रथ जबहीं । असगुनभयेबहुतविधितबहीं
बोलत काक भयंकर बानी । बिना मेघ वर्षत है पानी
गीध निकर कर ऊपर छायो । जंबुक अपनो भाव देखायो
उगिलहिंखड्गछांड़िकेखापहिं । रथकेखम्भ पवनबिनकांपहिं
यह असगुन जबदेख्योनैनहिं । कुरुदलकहनलगे सबबैनहिं ॥
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो । यहिविधिते कबहूंनहिं देख्यो ॥
सारथि कहे गंगसुत आगे । असगुनहोनबहुतविधिलागे ॥
भीषम बिहँसि कही यह बानी । अहोमूढ़ यहबात न जानी ॥

दो० पारथ के सारथि अहैं निरखहु श्रीभगवंत ।
असगुनकछु नहिं करिसकै सन्मुख कमलाकंत ॥

यहकहि भीषमरथहि चलायो । डोली धरणि शेष शिरनायो ॥
सिंहनाद करि हांक सुनायो । मानहुं जलद घटा घहरायो ॥
क्रोधित ह्वै शारँग कर गह्यो । नमित वचन नरहरितेकह्यो ॥
सावधान हरि जोती गहिये । पारथ की रक्षामहँ रहिये ॥
यहकहि बाण सहस्र प्रहास्यो । अर्जुनके उरमध्यसो मास्यो ॥
२५ान अंगहतकीन्ह्यो । विंशतिशरहनुमंतहि दीन्ह्यो ॥

अपरचारिशरधनुगुण दृढ़किय। धाये नंदिघोष तुरगनदिय॥
त्र अर्जुनलीन्ह्यो कर धनुशर। युद्ध परस्पर होत भयंकर॥
ोऊ भट अरुझे रण धरणी। क्रुद्धितशरछांड़तअतिकरणी॥

दो० यहिविधिते अर्जुन जुटे गंगतनय के युद्ध।
जलथलभारतभूमिनभ शरपूरित कृतयुद्ध॥

ाणतजतअतिशययहिकरणी। जिमिजलधरजलवृष्टिसुवरणी॥
हस वाण पारथ गुण मोखे। तुरगनहरिहांकतअतिचोखे॥
ीक्षण वाण पांडुसुत डारयो। भीपम अंतरिक्षहति पारयो॥
अपरपष्टिशर कार्मुकधारयो। ते सब अश्वन के तनमारयो॥
ागे असीशर कपि के अंगन। सत्तरिशर मारयो यदुनंदन॥
यामअंगशोणितछवि छाजत। पीतवरणरँगअरुणविराजत॥
ोतीगह्यो धन्यअति चापल। वर्षतशरश्रावणजिमिघनजल॥
यहिविधि ते शर वरषा कियो। शरके छांह भानु छपिगयो॥
ंदिघोष रथ माधव सारथ। वाणवृष्टि ते छायो भारथ॥
ीषम यहिप्रकार वलकीन्ह्यो। तबअर्जुनधनुकरदृढ़लीन्ह्यो॥
श्रीहरि कह्यो सुनहु हो पारथ। सहि न जाइ भीपमकोभारथ॥

दो० हांके पगनहिं चलत हय शर छाये सब अंग।
भीपम के संग्राम ते रणमें अचल तुरंग॥

अर्जुन जियविस्मयकरि मान्यो। महाक्रुद्धहोइ निजधनुतान्यो॥
देवअस्त्र पारथ तन डाट्यो। गंगासुत बीचहि ते काट्यो॥
अपर विशिखतीक्ष्णकरधारयो। ते शर पारथके शिरमारयो॥
अर्जुनसहित भये घायलहरि। तुरंगथकेनचलतलघुगतिकरि॥
वरषत वाण वरणि को कहई। पांडवदललक्ष्मणगतिलहई॥
श्रीपति कह्यो सुनहुहो पारथ। रचहु उपाय तजो पुरुपारथ॥
यह कहिके हरि शंख वजायो। सुनिकेनाम शिखण्डीआयो॥
अर्जुनसों हरि कहनसों लागे। रणमें करहु शिखण्डी आगे॥
ताके होइ शारँग कर धरिये। यहिविधिते भीपमवधकरिये॥

अर्जुन कह्यो सुनहु वृषकेतू। कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू॥
जबहिं शिखण्डी आगे आयो। भीषमधनुष डारि शिरनायो॥
दो० बिना अस्त्र लज्जित वदन हेरत नीचे नैन।
अस्थिरहोय रथपररह्यो कह्यो कृष्णसों बैन॥
दीनबंधु पांडव हित कारण। कपटयुद्धकरि चाहहु मारण
अर्जुनकिये शिखण्डी ओटहि। भीषमडरकीन्ह्यो शरचोटहि
पारथवाण कुलिशसम छूटहिं। कवचभेदि भीषमतनफूटहिं
गंगासुत यहि विधिते कह्यो। पैशर नहीं शिखण्डी गह्यो
शर मारत अर्जुन मम हिये। यहविचार कीन्ह्यो चितदिये
घायल भे कांपत तनु कैसे। शिशिर कालमें गोधन जैसे।
तब पारथ कृत पुनि संधानहिं। हृदयताकिकरि मारयोबानहिं।
चरणकमलमनकीन्ह्योध्यानहिं। रसना रटत कृष्णके नामहिं।
रोम रोम यहि विधि शर मारा। बहै प्रबाह रुधिर की धारा॥
तीक्षण अपरविशिखकरधरयो। तेशर कठिन मौलिपरपरयो॥
दो० भीषमको बल थकितभो मारत अर्जुन तीर।
तिलभरि देह न देखिये भांझरभयो शरीर॥
रथते गिरे गंगसुत धरणी। जगमहँरही सदा यह करणी॥
देखत सब कौरवगण धाये। हाहा शब्दाघात सुनाये॥
द्रोण करण दुश्शासन अत्री। धनुषडारि रोवहिं सब क्षत्री॥
करुणा करत कहत यहबैनहिं। अहोपितामह राखहुसैनहिं॥
कुरुपतितबछांड्योनिजस्यंदन। आये जहँ गंगा के नंदन॥
सेनापति कै मुकुट बँधायो। आपु कृष्णकर अस्त्रगहायो॥
जीति स्वयम्बर कन्यालीन्ह्यो। दोउबन्धुब्याह करिदीन्ह्यो॥
परशुराम ते युद्ध बिचारयो। उठिकै बाण धनुपकरधारयो॥
रोदनकरि [illegible]भांति बखानत। विधि चरित्रकोउनहिंजानत॥
मोरे [illegible] बडे [illegible]। पांडवसहित जीतिहीं केशो॥
[illegible]। यह सब दोष हमारे कर्महिं॥

दो० भीषम घेरे खेतमा रोवत सबै नरेश।
सबलसिंहचौहानकहचल्योआपुहपिकेश ॥
इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेसप्तदशोऽध्यायः॥ १७ ॥
धर्मराज माधव सँग लीन्ह्यो। रथतेउतरिगमनतबकीन्ह्यो ॥
अर्जुन और भीम सब राजा। चले पितामहदेखन काजा ॥
यहि अवसर गंगासुत बोले। सुंदर अधर मनोहर डोले ॥
शरशय्या सब अंग बिराजे। लटकत शीश भूमिपर राजे ॥
कुरुपति कहो हमारो कीजे। उत्तम भांति शिरहनो दीजे ॥
कोमल तूल पटम्बर भरखऊ। आनितुरतशिरहानो धरखऊ ॥
तब भीषम भाष्यो यह बानी। दुर्योधन तुम बात न जानी ॥
अर्जुन समय बिचारहु मनमें। उचित शिरहनो दीजे तनमें ॥
सुनिअर्जुनशारँगकर लीन्ह्यो। तीनिबाण संधारण कीन्ह्यो ॥
सन्मुख ह्वै ललाट महँ मार्यो। भेदिशीशशरनिकरिसोपार्यो॥
दो० फोंक बेधि शरपार होइ गइयो भूमिमें बान।
यहिबिधि शरशय्या दियो भारतके परधान ॥
धर्मराज बहु रोदन कीन्हो। भीषमसों कछु कहवे लीन्हो ॥
केवल दुर्योधन के पापहि। परशुरामदीन्हो रणशापहि ॥
ताते भयो मृत्यु को कारण। सन्मुखदरशकरहुजगतारण ॥
हँसि भीषम यहिभांति बखानी। साधु नरेश परम सज्ञानी ॥
दक्षिणायन रबिघातक कहिये। तातें शरशय्या में रहिये ॥
उत्तरायण रबि होइ हैं जबहीं। करिहों देहत्यागनिजतबहीं ॥
तबलगि क्षत्रिनको बलपेखहिं। भारतयुद्धनयन निजदेखहिं ॥
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं। भीषमकछु भाष्यो उपदेशहिं ॥
अजहुँ कीजिये कहा हमारो। कुरुपांडवमिलिप्रीतिबिचारो॥
बांटि राज्य लीजे दोउ भाई। बसुधा भोगकरहु सुखपाई ॥
दो० बिग्रह कुलको अंतहै अजहुँ कीजिये प्रीति।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं जहांकृष्ण तहँजीति ॥

जाके सखा आपु जगतारण । तासोंयुद्धकरहु क्यहिकार
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो । यहप्रणमैं अपने मनगह्यं
सुईश्वय महिदेव न औरहि । करों युद्ध भारत रण ठौरहि
यह सुनिकै भीषम यह कही । हरिकी शरण जाइये सही
जोरणको कुरुपति मनलावहु । करणवीरशिरमुकुट बँधावहु
द्रोण करण सेना अधिकारी । अर्जुनके समान धनुधारी
पारथनहिं जीतहिं अपने वल । जोनहिंकृष्णकरहिंरणमें छल।
जहँ भीषम शरशय्यालीन्ह्यो । तंबू एक खड़ो करिदीन्ह्यो ॥
गंगासुत कीन्हो जव भवनहिं । धर्मराज आयेतव भवनहिं ॥

दो० पांडवदल आनंद मन जीति चले मैदान ।
अर्जुन के रथ सारथी सुंदर श्रीभगवान ॥

धेनुसहस्र दिये जो दानहिं । जोफलसवतीरथअस्नान
जो फल होइ साधु के दरशे । जो फल शम्भुनाथके पर
जो फल व्रत एकादशि कीन्हे । जो फल होइ भूमिके दी
जो फल रणमें प्राण गँवाये । जो फल होइ ब्रह्मके ध्या
जो फल कोटिन विप्र जेंवाये । सो फल भारत सुने सुना
व्यासदेव भारत के कर्त्ता । बाढ़े पुण्य पापके ह

दो० रामसिंह गोविंद हरि कीजे सदा वखान ।
भाषा भीषमपर्व कह सवलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषासवलसिंहचौहानविरचिते
भीष्मार्जुनयुद्धवर्णनोनामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥



अथद्रोणपर्व ॥

॥ गुरुचरण दण्डवतकरिये । जेहिप्रसाद भवसागरतरिये ॥
न्दौं, रामचरण रघुनन्दन । महावीर दशकन्ध निकन्दन ॥
रिघबाहु कमल दल लोचन । गणिकाव्याधअहल्यामोचन॥
यासदेव कलियुग अघहरता । चारि वेद श्री भारत करता ॥
ोता जनमेजय गुणसागर । महावीर कुरुवंश उजागर ॥
शम्पायन ऋषिवर ज्ञानी । वक्ता महा सुधारस बानी ॥
ग्रह शत सत्ताइस जाने । गनिसम्वत यहिभांतिबखाने॥
नि बुधवार घरी शुभ जाने । जादिन लंका राम पयाने ॥
ुक्ल पक्ष आश्विन को मासा । दशमीतिथिकरियंथप्रकासा ॥
त्तम नगर सुरचना छाजा । भूपति मित्रसेन तहँ राजा ॥

दो० रघुपतिचरण मनाइकै व्यासदेव धरिध्यान ।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ सबलसिंह चौहान ॥

ब भीषम शरशय्यालीन्हेउ । दुर्योधनमनबहुदुख कीन्हेउ ॥
अब काको सेनापति कीजे । जाके बल भारत करिलीजै ॥
हीं करण राजा सुनि लीजे । जो मोकहँ सेनापति कीजे ॥
अर्जुन भीम खेत महँ मारों । सेना सहित न एक उबारों ॥
ो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला । नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला ॥
र्य्यपुत्र सेनापति करिहौ । ताके बल पांडव सों लरिहौ ॥

मोरे शिर जो मुकुट बँधैये। अबहीं जयतिपत्र नृप पैये॥
सोसुनि करण क्रोधयुतभयऊ। कम्पितअधरकहनकछुलयऊ॥
क्षणमहँ तो कहँ सकों सँहारण। हौ गुरुपुत्र सहौं तेहिकारण॥
यहसुनिनयनअरुणहोइआयउ। लैकरखड्गकहनमनलायउ॥
दो० अरथ रथी भीषम गनो कुल हीनो जग जान।
सेनापति तोकहँ किये क्षत्रिन को अपमान॥
क्रोधितकरण खड्गलै धायउ। पकरिबांह राजा समुझायउ॥
अहोमित्र अब समय विचारो। तजिके कलह शत्रु संहारो॥
सब मिलि यहै मंत्र ठहरैये। कहो जाइ तेहि मुकुट बँधैये॥
कह्यो करण राजासुनिलीजे। सेनापति गुरुद्रोणहिं कीजे॥
महारथी अरु अस्त्रहि जानत। कुरु पाण्डव दोउदलमानत॥
सुनि शकुनी के मनमों भायउ। साधुकरणहित बातसुनायउ॥
जयद्रथ कृपरु शल्यतै भाखो। दलकर भार द्रोणशिर राखो॥
जब जानी सबके मन माने। दुर्योधन सुनि आपु बखाने॥
गुरू होहु सेनाकर रक्षक। भारत युद्ध करौ परतक्षक॥
यहकहिआनिमुकुटशिरदीन्हेउ। बहुविधिविप्रवेदधुनिकीन्हेउ॥
दो० कही द्रोण राजा सुनो कोटि आनि प्रशुराम।
पांच दिवस भारत रचौं करौं घोर संग्राम॥
जो कोटिन पाण्डवदल आवें। मारों सबहिं जान नहिं पावें॥
जो अर्जुनहिं जुदा करि पावों। बांधि युधिष्ठिर नृप लैआवों॥
जबगुरुद्रोणकहै असलीन्हेउ। दुर्योधन प्रतिउत्तर दीन्हेउ॥
जो आपुहिरणको मन लाये। कोटिनअर्जुन मारि गिराये॥
तुमसों सबहिं सीखिये शायक। पारथ कहा भये यहि लायक॥
हँसिके द्रोण कही यह बानी। राजा तुम यह बात न जानी॥
महारथी जगमों है पारथ। नन्दिघोषरथ श्रीपतिसारथ॥
धनुगाण्डीवअगिनिजेहिदीन्हे। अक्षयत्रोण वरुणसों लीन्हे॥
सात वर्ष सुरपुरहि सिधाये। देवअस्त्र सब सिखिकै आये॥

पुर बिराट रण कियो भयंकर। बनोवास महँ जीतो शंकर॥

दो० शरसों सागर बांधि के जीतिलियो हनुमान।
सुरपुर नरपुर नागपुर नहिं पारथहिं समान॥

ताते यह उपाय चित धरिये। पारथ बिलगकटकते करिये॥
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजे। यहिकामंहिं आज्ञामोहिंदीजे॥
परन करत पारथ संग्रामा। लै जैहों अपने निजधामा॥
चौदह सहस रथी धनुधारी। वंश प्रकाशन के अधिकारी॥
जो अर्जुन कहँ पीठि दिखावें। हमसबवास अधोगति पावें॥
यहसुनि दुर्योधन सुख मान्यो। अपने परम हितूके जान्यो॥
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवां। पांडव दलमहँ पारथजहँवां॥
हरि अर्जुन बैठे यक संगा। कहत कथा भीषम रण रंगा॥
यहि अंतर इन दर्शन दीन्ह्यो। पारथ उठिसम्भाषनकीन्ह्यो॥
आदर के आसन बैठायो। भूप सुशर्मा वचन सुनायो॥

दो० परन करत पारथ तुम्हें युद्ध करन के हेत।
करहु और जो चित्तमहँ शपथ कृष्णकी देत॥

पारथ कोपवन्त तब कह्यो। हांकतमोहिंकहसिधनुगह्यो॥
मानोपरन काल्हि रण करिहौ। ह्वै पतंग दीपक महँ परिहौ॥
यह सुनि भूप सुशर्मा आये। कुरुपतिसों सबबातजनाये॥
प्रातहोत दोऊ दल साजे। शब्द अघात दमामे बाजे॥
गज काळे पर्वत से भारी। पांवजँजीर नयन अँधियारी॥
रथपर रथी सरिस छबिबर्नी। जगमगात हीरन की कर्नी॥
अरु अनेक असवारमहाबल। उदधिसमानपियादनके दल॥
दुर्योधन अस कहिबे लागे। सेनापति द्रोणहि के आगे॥
सबमिलि एकमतो ह्वै लरिये। बलसों बांधि युधिष्ठिरधरिये॥
पांडव दल आये मेदाना। तब पारथ यहिभांतिबखाना॥

दो० आयसु हमरो सुनियसब अबहमकरहिं पयान।
सावधान क्षत्री सबै लरहु द्रोण मेदान॥

धर्मराय सुनिये कहिपारथ । रणमों द्रोणसरिसपुरुषारथ ॥
तीनिलोक जो अस्त्रहि धरई । गुरु द्रोण सबको वशकरई ॥
धनुविद्याभृगुपतिजेहिदीन्ह्यो । आपुसमान महारथिकीन्ह्यो ॥
भये द्रोण गुरु सेना रक्षक । महा युद्ध होई परतक्षक ॥
भीमादिक क्षत्री तेहि कहिये । सावधान नृपके सँग रहिये ॥
शूरसेन हैं वडो धनुर्द्धर । जौलों रहे गहे शारँग शर ॥
तौलगि नृप रणको मनदीजे । नातरु गवन भवनको कीजे ॥
हम अब जाहिं युद्ध के कारण । शेषप्रकागण करहिंसँहारण ॥

दो० अस कहिके पारथ चले सारथि श्रीभगवान ।
दश योजन दक्षिण दिशा समर केर मैदान ॥

नंदिघोष रथ देखन आये । सेना सहित सुशर्म्मा धाये ।
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे । वाण वृष्टि पारथ पर कीन्हे ॥
तव अर्ज्जुन मारे तीक्ष्णशर । होनलगी अतिमारुपरस्पर ॥
शेषप्रकागण के शरछूटहिं । मानहु वज्र गगनते टूटहिं ॥
अर्जुन सों लोहा उत वाजो । इतहि द्रोणगुरु सेनासाजो ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांधे । युगल तुणीर विराजतकांधे ॥
शीश टोप हाथन दस्ताने । जनुवानरगणसों अनुमाने ॥
बख्तर झलकैं जोसन राजैं । जिरह मेषलीसरिस विराजैं ॥
चौसा चारु आनि कै दीन्हे । गदालयो साजहि दृढ़कीन्हे ॥
भूरिश्रवा करण सम क्षत्री । कृतवर्म्मा अश्वत्थामा अत्री ॥

दो० कोऊ कांचन रथ चढ़े कोऊ चपल तुरंग ।
दुर्योधन रथ साजिकै शतभाइन लैसंग ॥

श्याम तुरंग द्रोण रथ जोरे । पवन वेग वे चारिउ घोरे ॥
जानत हैं सारथि के मनकी । बढ़तचलततकिआयसुतनकी ॥
पाखर करी समे छवि छाजे । हंस ग्रीष्म उल्लास विराजे ॥
चारिउचरण नालकी चमकनि । ज्यों घनमँद मिनिसीदमकनि ॥
आगे कुंजर शोभा पाये । प्राविट मेघ भूमि पर आये ॥

मर ढरत चौरासी बाजत। श्वेतदशनअतिसरिसबिराजत॥
रत फरी खड्ग करचमकत। पगके भार मेदिनी धमकत॥
पाछे असवारन को दल। शैल सांग करलियेमहाबल॥
टिन रथी महाबल भारी। क्षत्री शूर बड़े धनुधारी॥
दो० महारथी सबसाथ लै कीन्हों द्रोण पयान।
दुर्योधन राजा चले गरद लोपिगे भान॥
डव दल आये मैदानहिं। आगे भीम गहे धनुबानहिं॥
ज़र सों कुंजर ले जोरहिं। दशनघावमुख नेकु न मोरहिं॥
किर अरु वृषोरसों मारहिं। गहिकरशुण्डरथहि फटकारहिं॥
दर सों पैदर अरुभाने। महावीर सब बांधे बाने॥
सवारहि असवारप्रचारहिं। सन्मुखजुरतखड्गशिरभारहिं॥
कर धनुष रथी रण मंडे। बाणनते अरिसैन्य विहंडे॥
ागे द्रोण पेलि रथ आये। कृपा करण क्रोधित ह्वै धाये॥
रिश्रवा अलंबुस क्षत्री। जान्यो कृतवर्मा से अत्री॥
ीमसेन औ द्रोणहि भारथ। महायुद्ध कीन्हो पुरुषारथ॥
रिश्रवा सात्यकिहि दोऊ। लड़त हारि मानतनहिं कोऊ॥
दो० करणसाथ अभिमन्युभिर कीन्हेउ शरसंधान।
द्रुपद राउ जयदथ सों महाभूरि मैदान॥
पसों नकुल करहिं संग्रामा। दोऊ वीर युद्ध जय कामा॥
प विराट सुशर्मा क्षत्री। उतर कुमार अलंबुस अत्री॥
ष्टद्युम्न कृतवर्मा संगा। शकुनी सहदेवहि रणरंगा॥
ामदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर। जुरेशिखण्डिगहे शारँग शर॥
टउत्कच कीन्हो रण ठाना। शल्य नरेश संग मैदाना॥
ाशिराज जंभन को भारथ। कीन्ही खेत महा पुरुषारथ॥
चि कुमार द्रौपदिहि जाये। ते शशिविंदु युद्धअरुझाये॥
ार जोर अरुझे सब जबहीं। धायो कोपिद्रोण गुरु तबहीं॥
तिप्रचण्ड धनुशरकरलीन्हे। तीक्षण बाण फोंकशरदीन्हे॥

दो० पेलि फौज आये तहां जहां धर्म सों राज।
सबलसिंह चौहानकह द्रोण कियो यहकाज ॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १

सेना सहित द्रोण जब आये। धर्मराज कहँ देखन प
परी भीर राजा पर जाने। शूरसेन तब शारँग त
धर्मराज कहँ पाछे घाल्यो। क्रोधवन्त आगे रथ चाल
बहुविधि बाणवृन्द झरिलाये। तीन सहसरथ मारि गिर
बहुरि अनेक चलाये साँगी। कुंजर गिरे सहित चौरा
हय पैदल जो आगे पाये। शूरसेन सब मारि गिरा
अटकी अनी देखि जब पाये। तब गुरु द्रोण क्रोधके धा
आठबाण तीक्षण कर लीन्हे। ते शर चोट शीशपर की
शूरसेन शर सबहि सँभारे। बाण पचीस द्रोण उर मा
महावीर दोउ बड़े धनुर्द्धर। होनलागि तबमारु परस्प

दो० शूरसेन नृप द्रोणसों भयो जोर मैदान।
जलथलभारतभूमि सब शरछायो असमान ॥

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे। रथके चारि अश्व सँहा
सारथि युद्धखेत महँ आये। रथते उतरि शेल ले बा
तबहिं शेल नृप करते छूट्यो। लाग्यो बाण खीचते टूट
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे। क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शरमा
टूटि शीश धरणी पर पर्यो। झलकतमुकुटजरायनज
शूरसेन जूझे मैदाना। धर्मराय लीन्हो धनु बा
दश शर भूप क्रोधकरि छांटे। ते गुरु द्रोण बीचहीं का
लगेद्रोणगुरु मनहिं बिचारन। धर्मराय बधिये केहि कार
रुधिर परे बसुधा सब जरई। अर्जुनसुने प्रलय पुनि क
तातें गहि बंधन अब कीजे। दुर्योधन आगे करिदीजे

दो० असगुनि धाये द्रोण गुरु नागपाशलै हाथ।
धर्मराय रथतजि भजे रहा न कोउ साथ ॥

ए राजा कहँ लीन्हे। डारहि पाश चित्तमहँ कीन्हे॥
यह कथा तहांचलिआई। पारथ सों जहँ होतलड़ाई॥
तेन कीन्हो शर संधाना। तवश्रीहरि यहवात वखाना॥
न मेरो जिय गहवरयो। धर्मराज पर संकट परयो॥
हु वाण गहरु केहिकाजा। वांधत द्रोण युधिष्ठिर राजा॥
न नयन अरुणकै आये। मनव्यापक शरतुरतचलाये॥
हुबाण विलम्ब न लावहु। संकटते धर्मजहि छुटावहु॥
गुरु करपाश उठाये। तेहि अंतर पारथ शरआये॥
उदोत होत है कैसे। प्रलयकाल वड़वानल जैसे॥
क्रके भेदन शर करयो। नागपाश धरणी गिरिपरयो॥
दो० दश शर लाग्यो द्रोणउर भेदन कीन्हो अंग।
रथ सारथि चूरण किये जूझे चारि तुरंग॥
नि वाण द्रोण जव लेखो। गरुड़ पक्ष शर माथे पेखो॥
क फोंक लागे वहु दामा। अंकित है पारथ को नामा॥
त वाण जानिगुरुमनमों। पारथफिरिआयो यहिरनमों॥
हें द्रोणफिरि कीन्होंगवना। धर्मराज पहुँचे निजभवना॥
व दल जो खेतहि पाये। चल्योचल्योकरिअर्जुनआये॥
द्रोण लीन्हे सब सैना। कुरुपतिनिरखिकह्योतबवैना॥
राय कहँ वांधन धाये। काहगुरु फिरिके तुम आये॥
तब द्रोण कहे मनलाये। असे हते अर्जुन शर आये॥
नि शरते चित्त न धरयो। करते पाश भूमिगिरिपरयो॥
या जानि किये तव गवना। कुरुपाण्डवआयेफिरिभवना॥
दो० उभय सेन कुरु पाण्डव सबआये निजधाम।
अर्जुन सावकाश नहिं राति दिवस संग्राम॥
पति तबहिं द्रोणपहँआये। बैठि बात यहिभांति जनाये॥
के गुरु तुम वीर महाबल। पांडव नाशकहा करिवेछल॥
आपुहि रणको मन दीजे। क्षणहिं पांचपांडववध कीजे॥

कीजै कहा कहतु यहबातन। राजा सुनिये कथा पुरात
जो कीन्ही है अर्जुन करणी। ऐसो वीर न दूसर धर
द्रुपद नरेश स्वयम्बर ठानो। लक्ष नरेश वरण के आ
हम सब गये हुते तब साथा। हलधर हते सहितयदुनाथ
यहि विधि राजायंत्र बनाये। नभमहँ कांचनमीनलगा
नयन बनी हीरन की कनी। कोइक्षत्रिनकी रही न मन
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो। वीरहु कहांगये बल आष्यो

॥ दो० जो कोऊ भेदनकरै मीन नयन महँबान।
॥ यहकन्या सोईबरै कहत वचन परमान॥

सब क्षत्री सुनि मौनहिं गह्यो। पारथ वीर सभामहँ रह्यो
ह्वैद्विजरूपकोउनहिं चीन्ह्यो। शरअरुधनुषकरणसोंलीन्ह्यो
धरिकै पांव खड्ग गहि बाना। खैंचिधनुष तबकिय संधाना
तुमसबमिलि मिथ्याकै भाष्यो। दीनबंधुपारथ प्रणराष्यो
करण धनुषबल कोउ न पूजो। सुरपतिधनुषदियो तबदूजो
बहुरि धनुष लै शर संधाना। माख्यो मीन नयनतकिबाना
गिरेहु कराह अनत नहिं गयो। तब सबके प्रतीति जियभयो
भूषण बसन बिचित्र सँवारे। द्रुपदसुता जयमालहि डारे
कन्या निरखिलोभ चित आये। तुम शकुनी कहँ दूत पठाये॥

॥ दो० धन अनेक द्विज लीजिये विप्रवंशकुरु ब्याह।
॥ द्रुपदसुता कन्यारतन कुरुपति कीन्हो चाह॥

क्रोधवन्त होइ पारथ भाख्यो। शकुनीवधउँकवनतोहिराखे
भानुमती रानी स्वहिं दीजै। सम्पति सब कुबेर की लीजै
सो सुनि भूप क्रोध तुमकीन्हो। करणआदिकहँआज्ञादीन्हो
पुनिसुनिकै क्षत्री सब धाये। पारथ एक सबै बिचलाये
जरासन्ध होते बल माहीं। कोऊ छुइ न सको है बाहीं
हमसबमिलिकै अस्त्रहिगह्यो। पै काहू सन खेत न रह्यो
क्षत्री सब गये वीरज खोई। बानावरि नहिं पूज्यो कोई

दुर्योधन तब कहिबे लीन्हों। गुरुसन विनयजोरिकरकीन्हों॥
आपुहि इहां काज चितदीजे। पांडव सबहिं मारि यशलीजे॥
कह्यो द्रोण राजा सों बचना। काल्हि प्रातकीजे यह रचना॥

दो० चक्रव्यूह निर्माणकरि करहु युद्ध यहरूप।
विन पारथयह जगतमों भेद न जानहिंभूप॥

दिशा मध्य महँ गढ़ निर्मावा। जाको अंत कोउ नहिंपावा॥
सात खेल देखत मन भाये। चक्रांकित बहु व्यूह बनाये॥
सात द्वार तामहँ निर्मावा। दलवल सहित भूपसुखपावा॥
प्रथम द्रोण जयद्रथकहँ राखो। सेन अनेक जातनहिं भाखो॥
दूजो द्वार द्रोण सम अत्री। साथ अनेक महाबल क्षत्री॥
तीजो घोर करणदृढ़ कीन्ह्यो। रथी समूह साथमहँ लीन्ह्यो॥
चौथे कृपा लिये बहु संगा। पँचयें द्रोण पुत्र रण रंगा॥
छठयें घोर वीर बहु अहई। भूरिश्रवा आपु तहँ रहई॥
सतयें घोर कुरुपतिहि साजो। शतबांधव नृप संग विराजो॥
तीनि सहस राजा नृप साथा। सावधान अत्री गहि हाथा॥

दो० सातद्वारको दृढ़कियो चक्रव्यूह करिसाज।
कुरुपति पठये दूततब जहां धर्मसों राज॥

दूत जाइ ठाढ़ो भो द्वारा। जाइजनावहु कहि प्रतिहारा॥
द्वारपाल जब जाय जनाये। धर्मराज तेहि निकट बुलाये॥
आय दूत नावा तब माथा। लाग्यो कहन जोरि के हाथा॥
चक्रव्यूह रचि द्रोण बनाये। ता कारण नृप मोहिंपठाये॥
उठिके व्यूह भेद नृप कीजे। नातरुजयातिपत्र लिखिदीजे॥
जो नाहिं लरो रहो गहिमवना। हारो युद्ध करो बन गवना॥
यहकहि दूत तुरत चलिआये। धर्मराज सब बीर बुलाये॥
सबसों नृप यहिभांति बखानो। चक्रव्यूहरण तुम कोउजानो॥
जो कोई जानत तो कहिये। व्यूहभेद अब कीन्हो चहिये॥
जो नाहिं भेद व्यूह को जानो। युद्ध हारि गृह करो पयानो॥

दो० यह सुनिके सबमिलिकही धर्मरायसोंबैन।
चक्रव्यूहरण नहिं सुनो काहु न देखोनैन॥
जब बीरन यहि भांति जनाये। सुनिके धर्मराज दुख पा
हरि रचना यह कीन्ह्यो भारथ। सब उद्यम अबभयोअकार
चारिबन्धु सेना सब संगा। पारथ बिना भयो रण भंग
भाष्यो भूप देखि सहदेवा। जानत कोउ व्यूह का भेव
सो सुनिके सहदेव बखानी। तीनि बिना चौथो नहिंजानं
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई। की प्रद्युम्न यह जान लराई
भूप युधिष्ठिर कहिबे लीन्हें। सिंशुपकागणमोहिं दुखदीनं
भूप सुशर्म्मा द्रोण पठाये। छलके अर्जुन को अटकाये
जब राजा हिय शोक जनाये। सभामध्य अभिमनुतबआये
दोउकरजोरि कहा तब राजहिं। आपुशोचकीजे केहिकाजहिं
दो० चक्रव्यूह रचि द्रोणगुरु कियोचहतसंग्राम।
आजु दिवसपारथनहीं भयोविधाताबाम॥
अभिमनु कही सुनो तुमराजा। अबबिलम्ब कीजेकेहिकाजा।
व्यूह भेद में जानत अहऊं। सो वृत्तान्त आपुते कहऊं॥
छहों द्वार भेदन कर ज्ञाना। सतवांद्वार भेद नहिं जाना॥
यम अरु इन्द्र वरुणजो रक्षक। छहों द्वार तोरौं परतक्षक॥
सतवां द्वार भेद नहिं जाना। सुनिराजा यहिभांति बखाना॥
भीमादिक कोउ भेद न पाये। व्यूह युद्ध केहितुमहिंसिखाये॥
अभिमनु कही भूप के पासा। कीन्हें जबहिं गर्भ हम बासा॥
प्रसव काल माता दुखपाई। तबहिं पिता यह व्यूह सुनाई॥
पारथ कही सुभद्रा आगे। गर्भ मांझ सुनिबे हम लागे॥
छठों द्वारको भेद बखाना। सोहम सब अपनेजियजाना॥
दो० सातों द्वारकेकहतहीं हम लीन्हें अवतार।
गीत नाद आनन्दते मगन भये परिवार॥
ताते श्पर भेद नहिं पाये। सत्यबचन नृप तुम्हैं सुनाये॥

न्हिं कवनविधि आज्ञा दीजे। व्यूह युद्ध वीरन ते कीजे॥
न्द्रह वर्ष वीर सुकुमारा। तुम हमसबके प्राण अधारा॥
सुनिअभिमनुयहिभांतिवखाना। नृपहमकहँबालककरिजाना॥
अर्जुन पुत्र सहोद्रा नंदन। आजुकरों नृपसेन निकंदन॥
द्रोण कर्ण सब वीर घनेरे। आजु देखिहहु भुजबलमेरे॥
मारि सबै सरदार गिरावों। तब अर्जुन को पुत्र कहावों॥
बांधों भुजबल बली पुरंदर। सेना उदधि होइकिमिमंदर॥
यहिविधि बाणवृन्दभरिलेहों। शोणित नदी अथाह बहेहों॥
सोचकरत नृप आपुअकारथ। अब देखो मेरो पुरुषारथ॥
दो० भीमसेन ऐसी कही राजा सुनहु विचार।
छहोंद्वार भेदनकहेउ सतवांमोशिरभार॥
मंत्री सबहि अस्त्र गहिहाथा। पेलिजाहिं अभिमनुकेसाथा॥
सतवां द्वार पलक महँ मारों। गदा घावसों पर्वत फोरों॥
भीमसेन यहि भांति बखाने। सो सुनि धर्मराय मनमाने॥
साजेउ सेन दमामा बाजे। बांधे अस्त्र वीरगण गाजे॥
भांति भांति बैरख फहराने। सुर विमानको खोज उड़ाने॥
आगे कुंजर शोभा पाये। सावन मेघ उनै जनु आये॥
चारों पाट बहत मदधारा। जिमिझरना जलबह पहारा॥
श्वेत दशन कविकिये विचारा। कज्जलगिरिजनुगंगकिधारा॥
अंकुशलगे चलतगजठनकत। ठोकरपांवलगत हयहनकत॥
स्यनन मों दीन्हीं अँधियारी। देखत रूप शत्रु भयकारी॥
दो० तुंगस्थल अतिक्रोधमें राजत ऊर्ध्व भुशुंड।
भूमि भ्रमे पर्वत मनहुँ भये भुंड के भुंड॥
तेहि पीछे पैदल दल राजे। विविध अस्त्रकरमाहँ विराजे॥
चले अश्व असवार फँदावत। नृत्यकरत मानहुँ नटआवत॥
चले सारथी सब रथ हांकत। युद्ध हेत क्षत्री रण डांकत॥
सेन सहित योजित रथआये। चक्रव्यूह जहँ द्रोण बनाये॥

सुनअभिमनु पारथनहिंआयो। व्यूह भेद कहँ तुमहिं पठायो
अभिमनुसुनिप्रतिउत्तरदीन्ह्यो। बालककरितुमहमकहँचीन्ह्यो
दृढ़ के गहहु व्यूह द्वारो थल। बूझि देखिहो बालकको बल
व्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो। कोपिकरण तब वाणचलायो
सहस वाण अर्जुनसुत छांट्यो। सबशर अन्तरिक्ष महँकाट्यो
तासे कीन्हो सेन निकन्दन। क्रोधित भये देव रविनन्दन
तीक्षण वाण करण गुण जोरे। सो अभिमनु सबबीचहितोरे
दिव्यवाण अभिमन्यु चलायो। भूमिअकाशदशहुँदिशिछायो
देखिअनीक सबहिं भ्रमभयऊ। तो लगि व्यूह भेदिके गयऊ

दो० पेलि द्वार भीतर गयो जात न लागी बार।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ कृपाचार्य्य सरदार॥

आये अभिमनु सबहिं पुकारे। कृपाचार्य्य तब धनुष सँभारे
महा युद्ध कीन्हयो पुरुपारथ। तेहिक्षणभयो अनेकनभारथ
पुनिअनेक सैनाबध कीन्ह्यो। रुण्डमुण्डकछुजातनचीन्ह्यो
कृपाचार्य्य क्रोधित शर जोरे। ते अभिमनु बीचहिसबतोरे
अपर पांच शर मास्यो लै जब। चेतन रह्यो भयो घायलतब
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो। द्रोण पुत्र तब देखन पायो
करधनुशर गहिके कत आवत। मारुमारुकहि हांकसुनावत
अश्वत्थामा लीन्हेउ शरकर। जलधरसमलागेउबर्षहिंशर
क्रोधित होइ सहोद्रा नन्दन। क्षणमहँकीन्हो सैननिकन्दन

दो० अर्ज्जुन सुत अरु द्रोणसुत परो आनिजब जोर।
रणकरकश दोऊ सरस भयो युद्ध अतिघोर॥

तब अभिमन्यु कीन्ह संधाना। हृदयताकि मास्यो दशबाना
एक वाण याविधि तें छूट्यो। काटो धनुप सहितगुणटूट्यो
औरो साठि सहस शर मारे। तिन वाणन सबसेन सँहारे
जबलगि द्रोणी धनुप चढ़ाये। पेलिद्वारअभिमनु तब आये
पँचवां द्वार पेलि जब गयऊ। छठयें द्वार उपस्थित भयऊ

अभिमनु जब आगे हांकोरथ। भूरिश्रवा आइ रोंकेउपथ॥
याविधि बाण वुंद झरिलायो। रथसमेत अभिमन्युछिपायो॥
इन्द्रअस्त्र अभिमनुतबछांड्यो। सबशरनिमिषएकमहँकाट्यो॥
बाण काटि शर किये प्रकाशा। जिमिप्रचंडरविउयोअकाशा॥
दो० सहसबाणयहिविधिहनो रह्योनतनुमेंचेत।
पेलिद्वार भीतर गयो जीति नरेशन खेत॥
सतयें द्वार आइ अरुझान्यो। जासु प्रवेश भेदनहिंजान्यो॥
दुर्योधन सेना सँग भारी। तीस सहस नृप छत्रकेधारी॥
ते सब वीर आनि के घेरे। मारु मारु दुर्योधन टेरे॥
रथ पर शर वर्षत हैं कैसे। मन्दर शीश वृष्टिजल जैसे॥
महारथी सब मेघ समाना। वर्षत बाण वुन्द अनुमाना॥
धनु टंकोर मेघ की गर्जनि। खड्गछटादामिनिकीतर्जनि॥
शक्ति शूल वीरन कर छूटत। मानहुँ वज्र गगन ते टूटत॥
महामारु क्षत्रिन जब कियऊ। तबअभिमन्युक्रोधतनुभयऊ॥
जोशर अर्जुन आपु सिखाये। तीनिबाण सोइ कुँवरचलाये॥
दो० सब शर काटे निमिष महँ सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन कानन सखा समेत॥
सम्मुख सेन दृष्टि जो आई। क्षणमहँअभिमनुमारिगिराई॥
फौज मध्य अभिमनु हैं कैसे। मृगदल महा केशरी जैसे॥
हय गज रथ पैदर संहारे। भूप अनेक खेत महँ मारे॥
सुनिके शोर द्रोण कृप धाये। कर्ण समेत वीर सब आये॥
सबमिलि वेरिलगे शरमारन। एक वीर इत उतै हजारन॥
सारथि कही कुंवर सों वचना। युद्ध अधर्म्म द्रोणकीरचना॥
एक एक ते उचित लड़ाई। यह अनीति हम देखी भाई॥
इत अभिमनु है एकजुझारा। उत आये लाखन मरदारा॥
चहुँदिशिबाणवुंदझरिलावहिं। कहोकवनिदिशिरथहिचलावहिं॥
पुनिअभिमनुभाष्यउयहवानी। सारथि तुमयह बात न जानी॥

दो॰ चक्रव्यूह भीतर परे शत्रुहि कीजे नाश।
आनिपरीशिरआपने छांडुविरानीआश॥
नुसारथि अवशोच न करिये। सन्मुखसबयोधनसों लां
राक कृत्य तुम रथहि घुमेये। चहूँ ओर हम बाण चले
ारथि रथ हांको तब बांको। जैसेचलत कुम्हारकोचा
ोण कर्ण जेतक हैं आगे। शतशतबाण सबनके ला
ारथि तनु दश दशशर मारे। द्वै द्वै शर आसन परिहां
ांच पांच शर हस्ति विदारे। एक एक शर पैदल मां
र्जुन सुत याविधि शरखाचो। घायलसबहि एकनहिंबाच
ाधवन्त होइ कुरुपति धाये। सब वीरन सों वचन सुनाये
लक एक करत संग्रामा। तुमसबको पाल्यों केहिकाम
दो॰ सब मिलिमारो घेरिरथ गहरु करहु केहिकाज।
शिशुहोइ सेनावधत है आवत तुम्हें न लाज॥
ने के द्रोण कहन असलागे। दुर्योधन भूपति के आगे
अर्जुनसुत बड़ा धनुर्द्धर। जबलगि धनुधरहै याकेकर
ारथी जो कोटिन आवें। यहिते जयति पत्र नहिंपावें।
ुनसम अभिमनुधनुधारी। प्रलय समय जैसे त्रिपुरारी।
ो द्रोण दुर्योधन राजहि। पक्षी युद्धजाति किमिबाजहि॥
अनेक जो मारन आवें। एकसिंह की सरि नहिं पावें॥
वाको धनु काटत कोई। तो रणमें अभिमनु वधहोई॥
सुनि के क्षत्री सब धाये। करणादिकआगे चलिआये॥
मध्य अभिमनु है कैसे। क्षीर सिन्धु महँ मन्दर जैसे॥
ो॰ अर्जुन सुत अति क्रोधके छांड़े तीक्षण बान।
या विधि सेना वधकिये जिमिलंका हनुमान॥
मिलि एक मतो के धाये। रथहि घेरिचहुँदिशि ते आये॥
क कोटि बाण सों मारे। शेल शूल मुद्गर परिहारे॥
ार कृष्णराय सों पाये। तीनिबाणसोइ कुंवरचलाये॥

तातें अस्त्र भये क्षय कैसे। तिमिर जाइ देखत रविजैसे॥
जूझि गिरे कुंजरमतवारे। रथ सारथि अश्वन संहारे॥
अभिमनुकीन्ही है यह करणी। रुण्डमुण्डतोपी सब धरणी॥
देखत कर्ण क्रोध जियकीन्हे। दैकर हांक धनुष कर लीन्हे॥
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा। अभिमनुजारि करेउधरिछारा॥
जरतअग्निचलिभातवजारन। प्रकटीं शिखाहजार हजारन॥
तबअभिमनुजलबाणचलाये। क्षणभीतरसब अग्निबुझाये॥
दो० अग्नि बुतायो नीरसों बाढ़ी जलकी धार।
कौरवदलबूड़नलगे चहुँदिशि परीपुकार॥
रविसुत मारुत बाणचलायो। पवन तेज सब नीर सुखायो॥
अभिमनुतज्यो सर्पकर बाना। नागन कियो पवन सबपाना॥
डसिधाये तब बिषधर कारे। याबिधि बहुत सेन संहारे॥
बरहि बाण तबकरण चलाये। मोरनपकरि सर्प सब खाये॥
अभिमनु क्रोधवन्तहोइरनमें। मारे बाण कर्ण के तनमें॥
अपर साठिशर छांड़े पायल। ताते भये द्रोणगुरु घायल॥
कृपके हृदय बाण दश मारे। असी बाण द्रोणहि परिहारे॥
अपर पांच शर भालुकछूटे। भूरिश्रवा हृदय महँ टूटे॥
ताते धनुष पन्थ सुत अत्री। मोहित भे दुश्शासन क्षत्री॥
मारे बाण काल के आके। काटे रथ के ध्वजा पताके॥
दो० सातलक्ष चतुरंग दल जूझि गिरे मैदान।
जिमिवर्षतजलधरजलहि इमि वर्षततेबान॥
अभिमनु कीन्हो सेन निकंदन। क्रोधितभये थ्यापुरविनंदन॥
पांच बाण तीक्षण कर लीन्हे। ते शर चोट शीशपर दीन्हे॥
घाव लाग अभिमनु रिसबाढ़े। तीक्षणशर निषंग ते काढ़े॥
दै गुण फोंक बाण परिहारे। चारिउ तुरँग सारथी मारे॥
बिरथ भये कर्णहि जब जाने। तब गुरु द्रोण शरासन ताने॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये। अश्वत्थाम कृपा तब आये॥

दुश्शासन सब बंधुन लीन्हे। महामारु अभिमनु सों की
रथी महारथि पैदल हाथी। अभिमनु एक न दूजो सा
कर्ण वीर रथ पर चढ़ि आये। सबमिलि
दो० उत सेना सरदार सब इत अर्जुन सुत एक।
सबै वीर घायल किये अभिमनु राखी टेक॥
कुरुपतितबहिंक्रोधअतिकीन्हे। मारु मारु कै आज्ञादी
सुनि कै कर्ण बाण कर लीन्हे। पढ़िके मंत्र फोंकशर दी
जो शर परशुराम ते पाये। क्रोधित ह्वै सो बाण चला
देके हांक बाण तब छांटे। करते धनुष कुंवर को का
टूटो धनुष कुंवर तब डारे। करगहिशक्ति तबहिं परिहा
तब अभिमनु अस कहाबुझाई। देखि तुम्हारि अधर्मलरा
तुम हम ऊपर बाणहिं छांटे। बीचहि कर्ण धनुषममका
यह कहि कुंवर शक्ति परिहारे। कर्णहिं हृदय ताकि कै मारे
मूर्च्छित किये कर्ण ते क्षत्री। अर्जुन पुत्र महाबल अत्री
बिनु धनुपाणि कुंवर को पाये। घेरिबीर सब निकटहिआये
दो० अभिमनुघेरे आय सब मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगगणके यूथमहँ डरत न केहरिएक॥
लैके शूल कियो परिहारा। वीर अनेक खेत महँ मारा
जूझी अनी भभरि कै भागे। हँसिकैद्रोण कहन असलागे
धन्यधन्यअभिमनु गुणसागर। सब क्षत्रिनमहँ बड़ोउजागर
धन्य सहोद्रा जग में जाई। ऐसे वीर जठर जनमाई
धन्य धन्य जग में पितु पारथ। अभिमनुधन्यधन्यपुरुपारथ
एक वीर लाखन दल मारे। अरु अनेक राजा संहारे।
धनु काटे शंका नहिं मनमों। रुधिरप्रवाहचलतसबतनमों।
यहि अन्तर बोले कुरु राजा। धनुपनाहिंभाजतकेहिकाजा।
एक वीर को सबै डरत हैं। घेरि क्यों न रथधाइ धरतहैं।
बालक देखु करी यह करणी। सेना जूझि परी सब धरणी।

दो० दुर्योधन या विधि कह्यो कर्ण द्रोण सों बैन।
वालक सब सेनावधी तुम सब देखत नैन॥
ह कहिकै दुर्योधन आये। शब्द वीर आगे ह्वै धाये॥
त्री घेरो अभिमनु रण मों। मानहुँरविआच्छादितघनमों॥
कै खड्ग फरी गहि हाथा। काट्यो वहुक्षत्रिन को माथा॥
भिमनु धाइ खड्गपरिहारा। सम्मुख ज्याहिपावैत्यहिमारा॥
रिश्रवा वाण दश छांटे। कुँवर हाथको खड्गहि काटे॥
तिवाण सारथि उर मारे। आठ वाण ते अश्व सँहारे॥
ारथि जूझि गिरे मैदाना। अभिमनुवीरचित्तअनुमाना॥
हि अंतर सेना सब धाये। मारु मारु कै मारन आये॥
थको खैंचि कुँवर कर लीन्हे। ताते मारु भयानक कीन्हे॥
भिमनु कोपि खम्भपरिहारे। यक यक घाव वीर सबमारे॥
दो० अर्जुनसुत इमिमारु किय महावीर परचण्ड।
रूपभयानक देखियतु जिमि यमलीन्हेदण्ड॥
ोधित होइ चहूंदिशि धाये। मारि सबै सेना बिचलाये॥
हिविधिकिये भयानक भारथ। साहसधन्य धन्य पुरुषारथ॥
सो मारु खम्भ सों कीन्हे। दशसहस्र राजा वध लीन्हे॥
ारि सबै राजा बिचलाये। करलै गदा कुरुपति धाये॥
ातबान्धव नृप संगहि आये। अरु अनेक राजा मिलिधाये॥
हुंदिशि महारथी सब घेरे। क्षत्री सबै वीर वहुतेरे॥
ाना अस्त्र सबहिं परिहारे। निकट न जाहिं दूरि ते मारे॥
ुर्योधन कहुँ देखन पाये। गहे खम्भ अभिमनुतवधाये॥
ुरे वीर क्षत्री वहुतेरे। खम्भ घाव ते वचेउ घनेरे॥
सब नरेश के निकटहि आये। द्रोण गुरू दशवाण चलाये॥
दो० गुरु द्रोण अति क्रोध कै मारे वाण अचूक।
कुंवर हाथको खम्भतब काटि कियेदुइ टूक॥
खम्भकटे अभिमनु भे कैसे। मणिबिनुफणिकभिकलजगजैसे॥

क्रोधित भयं सहोदा नंदनु । चरणघात के तोरेउ सोधनु
रथते कूदि कुंवर कर लीन्हे । चकाउठाय रणहिशुभकीन्हे
चका कुंवर कर शोभित कैसे । हरिकर चक्र सुदर्शन जैसे
रुधिर प्रवाह चलत सब अंगा । महाशूर मन नेकु न भंगा
गहिके चका चहूं दिशि धावै । जेहि पावै तेहि मारि गिरावै
दुर्योधन पर चका चलाये । गदा रोपि कुरुनाथ बचाये
क्षत्री घेरि लगे शर मारन । जुरे आइ केते हथियारन
दुश्शासन सुत गदा प्रहारे । अभिमनु के शिर ऊपर मारे
जूझे कुंवर परे तब धरणी । जगमहँ रही सदायहकरणी

दो० धन्य धन्य सब कोउ कहे कुँवर रह्यो मैदान ।
पै गुरु द्रोणमलीनमुख कहे वचन परिमान ॥

गुरू द्रोण यहि भांति बखाने । हर्षि नरेश सबै सुख माने
अभिमनु मरण सुनैगो पारथ । करिहै महा भयानक भारथ
इन्द्र वरुण यम होयँ सहायक । कइनहिंअर्जुनजितिबेलायक
भीमादिक यह युद्ध विचारे । पै जयदर्थ सबहि शर मारे
क्रोधित भये पाण्डुके नंदन । फेंको सिंधुराज को स्यंदन
गिरे दूरि उठि निकटहि आये । भीम उपर शतबाण चलाये
धर्मराय तब कीन्ह दरेरा । पै जयदर्थ मारि मुख फेरा
ले अनीक सब कुरुपति धाये । जहँजयदर्थ लरत तहँआये
कौरव दल जय शंख बजाये । अभिमनुगिरेभूमि सुनिपाये
धर्मराइ सुनि मौनहि गहेऊ । सन्ध्या भयो युद्ध तब रहेऊ

दो० कुरु पांडव फिरिकैचल्यो भयो युद्ध को शेश ।
भीमादिक क्षत्री सबै रोवत धर्म नरेश ॥

हाहा अभिमनु अभिमनु भाखेउ । देखे बिनाप्राण किमिराखेउ
सुत सपूत तासों नहि पायो । अर्जुनकोकिमिवदन देखायो
रोवत भीम नकुल अरु मंत्री । सेना सबै महाबल क्षत्री
रोवत सबै भवन कहँ आये । ऊर्ध्वबाहु केशादि छिटकाये

अभिमनु कहिके सबै पुकारत। दोऊ हाथ शीश पै मारत॥
अन्तःपुर पहुंची यह बानी। श्रवणन सुनी सहोद्रा रानी॥
कुंती सुनत महा दुख पाई। रोदन करत शूल उरछाई॥
सुनत सहोद्रा जननी कैसे। बिना जीव कठपुतरी जैसे॥
बहत प्रवाह नयनको पानी। हिमऋतुमनोकमलकुँभिलानी॥
हाहा पुत्र परम सुखकारी। सुंदर मुख पै मैं बलिहारी॥

दो० पुत्र शोच श्रवणनसुनत धरणीपरी अचेत।
नयननीरकज्जलसहित मनोतिलांजलिदेत॥

जो तुम्हरे पितु होते संगा। तुमसों को जीतत रण रंगा॥
कुंती सहित द्रौपदी रानी। बहत प्रवाह नयन भरिपानी॥
करुणा करहि ठोंकिकै माथा। रत्नगये पैये नहिं हाथा॥
यह सुधि सुनि वैराट कुमारी। बारह वर्ष वयस सुकुमारी॥
पति जूझै रण सुनिकै मखो। मानहुं शोकसमुद्रहि पखो॥
कहां गयो प्रीतम सुखदायक। चक्रव्यूह के भेदन लायक॥
जूझे खेत जगत यश लीन्हे। जयमाला सुरकन्यन दीन्हे॥
तुम सुरपुर विलसहु सुकुमारा। म्वहिंअनाथको नाथबिसारा॥
हेस्वामी म्वहिं दरशन दीजे। नातरु संग आपने लीजे॥
पांच मास मम भये बिवाहा। विधियहिसमयबिछोहानाहा॥

दो० लग्न व्यास गनिथापेऊ दाता त्रिय वैराट।
अर्जुनसुतवरकृष्णहित विधिदुखलिखाललाट॥

यह सुनि रोइउठीं दुख बानी। कुंती सहित द्रौपदी रानी॥
ठोंकि ललाट कर्म विधि सोये। सुनि दुख पशु पक्षी सब रोये॥
करुणा कर सब रानिन जाई। उत अर्जुन ने रची उपाई॥
पारथ यूह अस्त्र परिहारे। रणमा संशपकागण मारे॥
जयकरि कहि कीजे हरिगवना। हांको रथ जैये त्रियभवना॥
आजु चित्त कछु चंचल मेरे। ताते उपजत शोच घनेरे॥
बाम आंखि बायां भुज फरके। जियअकुलातबहुतहियदरके॥

श्रीहरिसुनि यहिभांति बखानो। मोरहुजियं अबहैअकुलानो
की गुरु द्रोण सूभक्षत कखो। धर्मराय पर संकट पखो
सब जानत हैं अन्तरयामी। अभिमनुमरणकहोनहिंस्वामी
दो० हांको रथ माधव तबहिं धाये चपल तुरंग।
अशकुन देखो पंथ महँ भा पारथ मनभंग॥
आतुर कै चलि आये तहँवां। रोदनकरत भूमिपतिजहँवां
चलत प्रवाह अश्रु हैं नयना। अर्जुन कही कृष्णसोंबयना
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव। नहिंजानतविधिकीन्होकाधव
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां। रोदन करत सबै हैं जहँवां।
अभिमनुनाहिं सभामहँ देख्यो। जूझ्यो पुत्र सत्यकरि लेख्यो।
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना। अभिमनुकहाँनदेखहुँनयना।
धर्मराज सब बात सुनाई। अकथकथाविधिकीप्रभुताई।
चक्राव्यूह गुरु द्रोण बनाये। दुर्योधन कहि दूत पठाये।
भेदहु व्यूह आनिकै लरिये। नातौ हारि गवन बन करिये।
सो सुनिकै हम बहु दुखकीन्हेउ। सबक्षत्रिनको आज्ञादीन्हेउ।
दो० व्यूह भेद जानहिं नहीं कहहिं सबहिं परिमान।
सब क्षत्री हिय हारिगे अभिमनु लीन्हो पान॥
बहुत भांति मैं कहिसमुझायो। अभिमनुकेसहुमनहिंनआयो॥
छहों द्वार तोरों सतिभावा। सतवां को रण मोहिंनआवा॥
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ। सतवां द्वार भार मम गहेऊ॥
सो सुनि कै साजी हम सयना। चक्राव्यूह देखत तब नयना॥
देखत सबहि अचम्भव भयऊ। अभिमनुव्यूह भेदिकैगयऊ॥
भीमादिक क्षत्री सब धाये। पै जयदर्थ सबहिं अटकाये॥
छहो द्वार सुत पेलि कै गयऊ। सतयें द्वार महारण भयऊ॥
सो सब काहुन देखो नयना। जूझेउ पुत्र सुनेउ यहबयना॥
यहसुनि अर्जुन मूर्छितभयऊ। रोइकै कृष्ण अंकमहँलयऊ॥
अर्जुन कृष्ण विकल होइ रोये। पुत्र शोक चाहत जियखोये॥

दो॰ अर्जुन भाष्यो भीम सों प्राण कि कीन्हे गौन।
सुतहिं जुझायो खेतमहँ तुम सब आयो भौन॥
चौदहवर्ष वैस अतिवारा। द्रोण कर्ण के युद्ध विचारा॥
याही समय होत हम साथा। वधे घेरि सुतमनहुँ अनाथा॥
सुंदर रूप मनोहर आनन। खण्डखण्डवीरन कियेवानन॥
करुणा कै पारथ यह भाखें। पुत्र बिना हम प्राण न राखें॥
सुनु हो वीर महाधनु धारी। तुमपर प्राण करों बलिहारी॥
हम जीवत तुम जीवत रनमों। यहै शोच आवत है मनमों॥
धर्मराय के कामहिं आयो। हमहिंछांड़ि तुमकहांसिधायो॥
क्षत्री सबै वीर सरदारा। सबहि कुशलजूझे तुमवारा॥
भीमसेन बहुते गल गाजे। सुते जुझाय खेततजि भाजे॥
सुनि कै भीम कहन अस लागे। लज्जावन्त क्रोध सों पागे॥
दो॰ सब मिलिकै भारतरचो राज्य भोग के हेत।
अब रोवत बिलखतकहा जबसुतजूझेउ खेत॥
जो मैं होतिउँ सुत के साथा। सैनसहितबधतिउँ कुरुनाथा॥
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै। चलहु गवन अन्तःपुरकीजै॥
अर्जुन कही सुनो हो माधव। अबउतजाइ कीजियेकाधव॥
आपुजाहिं हरि हम नहिं जैहं। रानिन में का वदन दिखैहैं॥
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये। बहिन सहोद्रा देखन पाये॥
धाइ सहोद्रा चरणन लागी। हे माधव हम परम अभागी॥
श्रीहरि तुम कीन्हे प्रतिपालक। भारथजूझिगयो ममबालक॥
अर्जुन से पितु मातुल केशव। रणजूझे सुत बड़ो अँदेशव॥
करुणा करै सहोद्रा लागी। बिकल बिकल शोकतेपागी॥
दो॰ वधू उतरि आई तहां गहे कृष्ण के पाइ।
आज्ञादीजै जाहिं हम पति सँग यादवराइ॥
तेरे गर्भ बाल भाषो गनि। कुरुपांडवको वंश शिरोमनि॥
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी। एक क्षत्र बसुधा अधिकारी॥

अंग विभूति वसन मृगछाला । चन्द्र ललाट गरे शिरमाल
शीश जटा महँ गंग विराजत । लोचन तीनि मनोहर भ्राजत
दो० शंकर देख्यो कृष्ण कहँ उपजो चित्त अनन्द ।
विहँसि वदन पूछन लगे शरदश्याममुखचन्द ॥
करि आदर आसन बैठारे । कहो आपु केहि काज सिधारे
हँसि हरि कही सुनहु गंगाधर । तुम दीन्हो जयदर्थहि कोबर
अभिमनु जूझि गिरे भारतरण । ता कारण पारथ कीन्हो प्रण
कालिह वधों नहिं सिंधुनरेशहि । तो मैं अग्नि में करों प्रवेशहि
पारथही अब या वर दीजे । कालिह बधहि जयदर्थहि कीजे
शंकर कही दीन्ह वर पारथ । बांधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ
जाको सखा आपु श्रीकेशव । जय करिहो रणकौन अँदेशव
लेकर धनुष बतावव बाना । यहि विधि ते कीजहि संधाना
लै अर्जुन माधव गृह आये । समाचार सब कुरुपति पाये
अर्जुन प्रण कीन्हेउ यहि कारण । कालिह चहत जयदर्थहि मारण
दो० जो न बधों जयदर्थहि करहुँ अग्नि परवेश ।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये सुधि सब सुनी नरेश ॥
सुनि जयदर्थ महा भयमानी । इतइ रहब मरण निज जानी
कुरुपति पहँ कीन्हो तब गवना । कही जात हम अपने भवना
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै । को सन्मुख ह्वै तिन सन लरिहै
तेहि कारण भवनहिं बसि कीजै । शंकर शरण जाइ कै लीजै
सो सुनि कै कुरुनाथ बखाना । भवनहिं जाजिय मम अपमाना
हम सब तव रक्षा रण करिहैं । कर्णादिक लै आगे लरिहैं
सब मिलिकै करिये पुरुषारथ । कैसे तुमहिं वधैगो पारथ
भागि गये पुनि अमर न होइहो । क्षत्रिन मध्य लाज बहु पैहो
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं । सांझ समय तब अर्जुन मरिहैं
पारथ मरे युद्ध हम जीते । तुम रहिहहु नियमागत भीते
दो० मनरति है द्रोण गुरु रण करिहैं तोहिं ।

सांझभये अर्जुनमरहिंविधिजयदीन्होमोहिं ॥
ते अब हम तुमसों कहिये । करिसहसाअस्थिरकैलहिये ॥
ंधुराज तब बोले बयना । कहूं न ऐसो देखेहुं नयना ॥
ारथ कोप धनुष जबधरिहै । कोसमरथजो सन्मुखलरिहै ॥
ब विराटपुर गोधन हरेऊ । अर्जुन एक सबै वशकरेऊ ॥
ोहिं ते कहेउ यहै त्रिपुरारी । पारथसमनहिं कोउधनुधारी॥
ठिकै करण कही परतक्षक । कालिहदिवसहम होबेरक्षक ॥
ब जयदर्थ कहा समुझाई । सबको बल हमजानतभाई ॥
ो गुरुद्रोण बांह गहिराखें । रक्षा करहिं पैज करि भाखें ॥
ो में रहों सुनो नृप बयना । नतरु जाइहोंअपनेअयना ॥
ुरुपतिकही सबहिमिलिजैये । जाय द्रोण सों बात जनैये ॥
दो० यह कहिकै सब मिलि चले गये द्रोणकेभौन ।
आदर कै आसनदिये किमिनृप कीन्हेउगौन ॥
ो सुनि कै दुर्योधन कहेऊ।अर्जुनप्रणकीन्हेउअसअहेऊ॥
ाल्हिदिवस जयदर्थहि मारों । नाहिंतोदेह अगिनिमहँजारों ॥
ो गुरुद्रोण होहु तुम रक्षक । दृढ़कै बांह गहो परतक्षक ॥
ाल्हिदिवस जयदर्थ बचैये । पारथ मरत युद्ध जय पैये ॥
ह सुनि द्रोण कहे तबलीन्हे । अब मनअपने मंत्रणकीन्हे ॥
सो व्यूह करों निर्म्माना । जाको भेद कोउ नहिं जाना ॥
ब आगे होइहैं हम रक्षक । देखो को आवत परतक्षक ॥
ो कोटिन अर्जुनचलिआवें । तौ मोते नहिं द्वार छुड़ावें ॥
ाल्हिकरौंयहिविधिपुरुपारथ । कृपण समेत जीतिये पारथ ॥
हिविधि बाणवृन्द भरिलाई । पाण्डवसेन मारि बिचलाई ॥
दो० या प्रण में तुमते करहुँ सुनहु बचन परमान ।
पारथ अन्त न पावहीं करों व्यूह निर्मान ॥
ही द्रोण अब साजहु सेना । रचत व्यूह अब देखो नैना ॥
ीन्हेउ बंब दमामा बाजे । सुनिकै सबहि भूपगण गाजे ॥

सारथि रथ जोते हय चोखे। इन्द्र विमान परतहिं धोखे॥
चढ़े अश्व असवार महाबल। उदधिसमानपियादनकोदल॥
सब जुरिके आये मैदाना। कीन्हे द्रोण व्यूह निर्माना॥
विकटव्यूह अतिनिकटबनाये। जाको अन्त कहूं नहिंपाये॥
कमलव्यूहतेहि मध्यहि फेरेउ। शतदलकोव्यूहहितेहिघेरेउ॥
कमल व्यूह महँ व्युह बहुतेरे। ते सब रहेउ अस्त्र गहिघेरे॥
आपु द्रोण राखो हे चक्रहि। सोमदत्त बल समताशक्रहि॥
दो० बाहुलीक गंधार नृप दोउ बाजि रहि ताहि।
करण मध्य अस्थलरहो सबहि सराहत जाहि॥
अग्रभाग गुरु द्रोण विराजत। पहिरिसनाहसिंहसमगाजत॥
कमल मध्यमहँ जयद्रथराखो। महाविकट बलजातनभाखो॥
षट योजन रचि व्यूह बनाई। योजन तीनि बनी चौड़ाई॥
आठ क्षोहिणी दल सब राखे। है समूह दल जात न भाखे॥
कहौं क्षोहिणी दलपरिमाना। यहितें बुधकरिहैं अनुमाना॥
रथपर एकरथी छबिपावै। तहि पाछे पचास गजधावै॥
गज पाछे शतशत असवारा। बन महँ करत शत्रुसंहारा॥
एक एक असवारन पाछे। शतशतपैदलआवत आछे॥
इतनो होय रथी त्यहिकहिये। शूरबीर कोई रण लहिये॥
ऐसो रथी पांचशत आये। ताकी सेना एक कहाये॥
दो० ऐसो दल सेना जुरी प्रतिनी कहिये ताहि।
दश प्रतिनी जुरिके चले यही वाहिनी आहि॥
ऐसे दल बाहिनि जुरिआई। एक क्षोहिणी फौज कहाई॥
आठ क्षोहिणी दल परिमाना। कीन्हो व्यूह निकट निर्माना॥
गहिके धनुष द्रोण गुरुकह्यो। सब क्षत्री दृढ़ के थलगह्यो॥
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये। अर्जुनसों कीन्होरण चहिये॥
अरुण उदय पांडव दलसाजे। शब्द अघात दमामे बाजे॥
स्वकर रथहि जोते बनवारी। चढ़े आइ पारथ धनुधारी॥

पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हे। दोउ तुणीर कसिकैदृढ़कीन्हे ॥
शिरपर मुकुट मनोहर नीको। भाल उदित हरिमंदिरटीको ॥
यज्ञोपवीत विराजत कांधे। पीताम्बर कटि कसिकैबांधे ॥
सुन्दर श्याम शरीर विराजत। कुंडल कान मनोहर छाजत ॥
दो० ब्रह्मा शंकर देव मुनि नहिं पायो ज्यहि अन्त।
भक्त हेतु जोती गहे महिमा अगम अनन्त ॥
धर्मराय मैदानहि आये। तब श्रीपतियहवचनसुनाये ॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये। लै सेना इतही अब रहिये ॥
जो सब मिलि रणको उरभैये। व्यूह भेद को अंत न पैये ॥
अर्जुन रथी संग हम सारथ। देखो नृप नयनन पुरुषारथ ॥
धर्मराय कछु कहिवे लीन्हे। अर्जुन सौंपि कृष्णको दीन्हे ॥
तीनिलोक भाषत परतक्षक। पाण्डु वंश के माधव रक्षक ॥
पारथ वीर अहैं हम सारथ। कहा शोच करिये पुरुषारथ ॥
अस कहिकै माधव रथ हांको। गर्जत नन्दिघोष के चाको ॥
ध्वजा उपर हनुमंत छविपाये। चंचल पवन अश्वगतिधाये ॥
पहुँचोनिकट व्यूह जब पेख्यो। अतिअगाधदलपरतनलेख्यो॥
दो० अर्जुन देख्यो द्रोण तब संग कोउ नहिं सैन।
क्रोधित शर संधानि कै कह्यो कृष्ण सों बैन ॥
हे श्रीपति तुम अन्तरयामी। मेरो प्रण यह सुन्योनस्वामी ॥
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं। व्यूह द्वार में जान न पावैं ॥
श्रीपति कही धरहु धनु पारथ। देखत कहा करहु पुरुषारथ ॥
अर्जुन गुरुहि कीन्ह परणामा। आशिषदीन्ह होयमनकामा ॥
द्रोण प्रथम कीन्ह्यो संधाना। एकहि वार तजे दोउ बाना ॥
गुरु अरुशिष्य करतरणसरसे। दोउदिशिबाणवृन्दसमबरसे ॥
साठि बाण अर्जुन तन मारे। कृष्ण अंग दशबाण प्रहारे ॥
सहस बाण लागे हनुमानहिं। लघुसंधान तजतगुरुबानहिं ॥
दो० अर्जुन वर्षत बाण इमि जिमि सावनजलधार।

सघनसैन भेदन करत निकरि जात शर पार ॥
तबगुरुद्रोणक्रोधजियकीन्ह्यो । महामारु पारथपर दीन्ह्यो
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे । शरते पग ठहरात न घोरे
दोऊ बीर भिरे मैदाना । सरसनिरसकहिजात न बाना
इन्द्र अस्त्र पारथ तब कीन्हेउ । पढ़िकै मन्त्र फोंकशर दीन्हेउ
छूटत बाण शब्द घहरानेउ । अचरजकैसबहींजियजानेउ
हँसिकै द्रोण किये संधाना । तजेउस्वामिकार्त्तिककरबाना
ताते इन्द्र अस्त्र छविकीन्हेउ । तबपारथयमअस्त्रहि लीन्हेउ
मृत्युक अस्त्र द्रोण परिहारेउ । तब यमअस्त्रहि पारथमारेउ
अस्त्रअस्त्र सों कीन्ह निवारण । तब लागे तीक्षणशरमारण
पारथ बाण कीन्ह संधाना । इतगुरुद्रोण सरस मैदाना

दो० कही द्रोण अर्जुन सुनो द्वार न छांडों आज ।
दीनबन्धु पारथ सहित समुझि कीजिये काज ॥

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ । गुरुसोंहोइन सकै पुरुषारथ
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो । व्यूह भेद अजहूं नहिंपायो
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं । भेदि व्यूह जयदर्थहि मारहिं
अर्जुन कही उतै होइ जैये । रणमों कैसे पीठि दिखैये
माधव कही न जानत पारथ । भूलिबात यह कहौअकारथ
कहा न कीजै अपने काजा । द्विज गुरुते भाजेतहिं लाजा
असकहिकै हरिरथहि चलायो । द्रोणहितजिअंतरहोइ आयो
लैताजन हरिअश्वन मारेउ । दै करि हांक व्यूह पर डारेउ
बहुतक पारथ मारि गिरायो । कछुरथचाक कृष्ण कचरायो
कछुहय धका उलटि कै डारेउ । ताजनबात्र कृष्णकछु मारेउ

दो० नन्दिघोष रथ जाइ कै व्यूह किये परवेश ।
चहुं ओर शर वर्षहीं क्षत्री सबै नरेश ॥

सैन नृप रथ धावत कैसे । बोहित चलत सिन्धुमहँ जैसे
अर्जुन कीन्हेउ शर संधाना । मारन लगे कोपकरि बाना

अगणितकीन्हेउसेन निकन्दन। नंदिघोष हांकत जगवन्दन॥
वीर अनेक आनि के घेरहिं। मारहिं मारुमारु कहि टेरहिं॥
अर्ज्जुन वीर कृष्ण से सारथ। लागे करन सरस पुरुषारथ॥
रथ पर लाग शूल शर वर्षै। युद्ध देखि पारथ मन हर्षै॥
वीर अनेक अस्त्र परिहारे। खड्ग घाव रथ ऊपर मारे॥
अर्जुन कोपि चलायो बाना। योजन एक कियो मैदाना॥
नंदिघोष हांकत बनवारी। जोती गहे पिताम्बर धारी॥
योजन एक किये रथ आगे। धर्मराय तब कहिवे लागे॥
दो० धनुटँकोर ध्वनि सुनिपरत कहाहोत धौं आहि।
हरि अर्जुन सुधिलेनको अब पठवौं मैं काहि॥
कह्यो नरेश सात्यकी जैये। सुधि लैकै मोपर फिरि ऐये॥
नृप आज्ञा माथे धरि लीन्हेउ। रणकोगमनसात्यकीकीन्हेउ॥
तब सात्यकि देखेउ परतक्षक। द्वारहि व्यूह द्रोणगुरुरक्षक॥
जबसात्यकिअतिनिकटहिआये। हँसिकै द्रोण कहन मनलाये॥
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा। निश्चय भयो कालकोखावा॥
यह सुनि क्रोध भये बहुनाना। एक वार मारे शत वाना॥
ते सब शर गुरु वीचहि काटे। पांचबाण तिन फिरिकै छांटे॥
द्रोण सात्यकी भा रण रंगा। दूनौं वीर महाबल अंगा॥
दोऊ सरस रचेउ पुरुपारथ। कीन्हेउ महाभयानकभारथ॥
द्रोण गुरू या विधि शर जोरे। व्यूह द्वार ठहरात न घोरे॥
दो० हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब सुनुसात्यकि अज्ञान।
बाहर होइ अर्जुन गयो तुम चाहत इतजान॥
यम अरु इन्द्र बरुणजो आवैं। व्यूह द्वार होइ जान न पावैं॥
सुनि सात्यकी किये पद वंदन। बेखटके हांकेउ तब स्यंदन॥
जौन पंथ पारथ शुभ कीन्हेउ। चक्रलीकमारग धरिलीन्हेउ॥
जाइ व्यूह कीन्हा परवेशा। रण महँ जीते बहुत नरेशा॥
महूं ओर क्षत्री शर मारत। नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत॥

जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना । चले सात्यकी मारत बान
लरत सात्यकी आयउ तहँवां । भूरिश्रवा भूप हे जहँ
दोऊ वीर भिरे मैदाना । क्रोधित लाग चलावनबान
आयो रथ अति निकटहिजाने । भूरिश्रवा आनि लपटा
रथते उतरि परे दोउ धरणी । मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहुकरण

दो० भूरिश्रवा महाबल बर दीन्हो तेहि ईश ।
गहे केशतेहि खड्गले काटन चाहतशीश ॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हे । शशिचलायघात नहिंकीन्
ताते घात नहीं बनि आई । इहां कृष्ण अर्जुनहिं चेता
भूरिश्रवा खड्ग गहि हाथा । काटत आहि सात्यकीमाथ
मन व्यापक शर अर्जुन छांटे । खड्गसमेत बाहु तेहि काे
उठि युयुधान खड्ग जबलीन्हे । भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे
बधि नरेश अपने रथ आवा । हांकि तुरँग आगेपथआव
विक्रम युद्ध करत पुरुषारथ । पहुंचोजाइ लरत जहँपार
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये । भलभये सात्यकि तुमआये
अर्जुन युद्ध करत परतक्षक । नंदिघोष पाछे तुम रक्ष
अस कहि रथ हांकेउ बनवारी । दल मारत अर्जुन धनुधारी

दो० एकै शर अर्जुन हनै गुणजोरत दश बाण ।
छूटतही शत होतहै बधत सहस परिमाण ॥

यहि विधिते सेना संहारे । सन्मुख वीर जुरेते मारे
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर । सौ हैं जुरे गहे शारँग शर
रहुरहु करि कीन्हो संधाना । अर्जुन उर मारे दशबाना
कृष्ण अंग दश बाण प्रहारे । बीसबाण हनुमानहिं मारे
सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ । क्रोधित ह्वै जोरे शरपारथ
पढ़ि रवि मंत्र बाण सब छांटे । सोमदत्त को शीशहि काटे
मुकुट समेत परो शिर धरणी । अर्जुनरण कीन्हीं यहकरणी
बाह्लीक गंधार महारथ । सेन समेत करत पुरुषारथ

प कौमोद धनुषकर लीन्हे । महाभार्थ पारथ पर कीन्हे ॥
हुँदिशि ते लागे शर मारन । वहुतक जुरे कुन्तहथियारन ॥
दो० शर वर्षत हैं वीर सब शक्तिखड्गकी धार ।
शूल गदा मुद्गर घने चहूँ ओरकी मार ॥
ना सबै आनि रथ घेरे । मारुमारुकहि चहुँदिशिटेरे ॥
पारथ मन नेकु न भंगा । शर संधान करत रण रंगा ॥
र्जुन बधतसेन यहि रूपहि । प्रलय होत जैसे जल भूपहि ॥
ाखन दल कीन्हे शर खंडित । रुंडमुंड धरणीसब मंडित ॥
रे आइ सब बीर महाबल । पलभरि पारथनहिं पावतकल ॥
हिविधि करत घोर संग्रामा । जूझिगिरे कुरुपतिके कामा ॥
रथ बरित करत निकन्दन । नंदि घोष हांकत जगवन्दन ॥
ो दल अर्जुन मारिगिराये । लोथिनपरहरिरथहि चलाये ॥
ाविधिसघनफौज अतिभारी । प्रभु सारथि पारथ धनुधारी ॥
हारथी सबबाण चलावहिं । नंदिघोष रथ छांह छिपावहिं ॥
दो० कठिनअस्त्र आवतजबहिंजाहिनरिपुबचिजाइ ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर अर्जुन अंग बचाइ ॥
प काम्बोज कठिनशर मारे । कृष्ण अंग शत बाण प्रहारे ॥
याम शरीर रुधिर छविपाये । पीतवसन तनुअरुणसुहाये ॥
ोधवंत अर्जुन शर छांटे । शायक मोदके शीशहि काटे ॥
ंकित अश्व जगत के तारन । हर्षि वीर लागे शर मारन ॥
हुतक आनि रथहि लपटाने । महाशूर सब बांधे बाने ॥
दिघोष रथ राजन घेरे । सावधान अर्जुन हरिटेरे ॥
हु विशाल कृष्ण परिहारत । अभिरत ताजनतासों मारत ॥
निअनेक शर अर्जुन छांटत । रुंड मुंड वसुधा सब पाटत ॥
ाविधि होत युद्ध की करणी । महामारु कछुजाइ न बरणी ॥
ष पाछे सात्यकि हैं रक्षक । वीर अनेक बचे परतक्षक ॥
दो० याविधि अर्जुनरण करत होत घोर संग्राम ।

हांकदेतहयहांकहीं सारथि श्रीघनश्याम॥
या विधि अर्जुन करतमसाना। भारत अवनि करत मैदा
जोती गह्यो पतित के पावन। थके तुरंग सकें नहिं धाव
अश्व कियो चाहतजलपाना। पारथ सों हरि आपु बखा
दोइ प्रहर दुइ ऊर्ध्वहि भयऊ। तृषित तुरंग तेज घटिग
अर्जुन कहा न करौ अँदेशव। जल उपाय करिहैं हमकेश
असकहि पारथ करि संधाना। भूमि निरखि के मारयोबा
भेदि पताल गयउशर तहँवां। भोगावलि गंगा हैं जहँ
याविधिते शायक परिहारा। निकरी फूटि गंग के धा
ताते भयो सरोवर ऐसो। निर्मल नीर सुधा को जैसे
पारथ कह्यो कृष्ण सुनि लीजे। रथते तुरंग खोलि जलदी
दो॰ अस्त्रघाव क्षत्रीकरत अभिरत वीर अनंत।
केहिविधितेजलदीजिये भाषैं श्रीभगवंत॥
अर्जुन कोपि किये संधाना। मार्‌यो सेन कियो मैदा
तब पारथ शर पंजर छाये। अर्द्ध नीर शर ओट छिपा
ताते वीर निकट नहिं आयो। नंदिघोष नहिं देखन पाय
तब अर्जुन भाषेउ भगवानहिं। खोलहुअश्वकरहिंजलपान
श्रीहरि सुनिकै जोती छोरे। किये पानजल चारिउ घो
स्वकर नाथ अश्वनको धोये। फरकन लगे सबै श्रमखो
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे। मिश्रितकरिमिश्रिततेहिदी
और दवा प्रभु आपु खवाये। होइ बलवंत भये सचुपा
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे। गंगोदक झारी भरि लीन
चारिउ तुरँग आनि रथजोरे। चंचल चपल दिनन के थो
दो॰ कुरुदल सबै अनन्द सों करन लगे जलपान।
धन्य धन्य पारथजगत पारिखल करतबखान॥

शर पंजर ते मार
मह

पल तुरंग हांकि रथ दीन्हे। पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे॥
अर्जुन बाण गिरत दल ऐसो। प्रबलपवन कदलीबनजैसो॥
हिबिधिलरतशंकनाहिंमनमों। रुधिरप्रवाहचलतसबतनमों॥
रन अंग देखि दृग भूले। जिमिबसंत किंशुकतरुफूले॥
अरुण बरण शोणितलपिटाने। खेलत मनहुं अबीरनसाने॥
लि फौज रथ याबिधिधावत। जिमिमैनाकधरणिपरआवत॥
या बिधिते रथ हांकत केशव। धर्मराज इत करत अँदेशव॥
खबरि हेतु सात्यकी पठाये। सुधि लेकै अजहूं नहिं आये॥

दो० भीमसेन तुम जाहु अब हरि अर्जुनके ठौर।
उत चाहत सुधि लेनको बीर न देखों और॥

साहस के बांधव शुभ कीजे। अर्जुनखबरिआनिम्बहिंदीजे॥
पहर अढ़ाई दिन भा आई। अबलों जिनके खबरिनपाई॥
नृप आज्ञा माथेपर लीन्हे। रणको भीमसेन शुभ कीन्हे॥
व्यूहद्वार जब रथ पहुँचाये। द्रोणगुरू देखन तब पाये॥
क्रोधवंत शारँग कर लीन्हे। तेशर गुरुबीचहिं क्षयकीन्हे॥
अपर पांच शर मारे पायल। ताते किये अश्व रथ घायल॥
हँसि गुरुद्रोण कही यहबानी। सब दिनभीम परमअज्ञानी॥
नंदिघोष रथ हरिसम सारथ। सके न द्वार जान यह पारथ॥
यहि मारग ह्वै जान न पैहौ। पारथ गये तितहि ह्वै जैहौ॥

दो० भीमसेन अतिक्रोधकरि कहे द्रोणसों बैन।
द्वारपेलिअबजातहौं तुमदेखतबधिसैन॥

अर्जुन के धोखे जनि रहिये। सावधान होइ शारँग गहिये॥
याता उतरि छांडिके स्यंदन। मनमें सुमिरे श्रीजगबंदन॥
लघु संधान द्रोण गुरु मारत। बायें अंग भीम सब टारत॥
प्रबल तेज शोणित शरछूटत। बज्र शरीर लागि सब टूटत॥
जाइ गदा रथ हेठ लगाये। लै भुजबलगुरुसहितउठाये॥
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ। गिरेउ न बीचकोशदुइगयऊ॥

हाँकदेतहयहांकहीं सारथि श्रीघनश्याम॥
या विधि अर्जुन करतमसाना। भारत अवनि
जोती गह्यो पतित के पावन। थके तुरंग सकें नहिं
अश्व कियो चाहतजलपाना। पारथ सों हरि आपु व
होइ प्रहर दुइ ऊर्ध्वहि भयऊ। तृषित तुरंग तेज
अर्जुन कहा न करो अँदेशाव। जल उपा करिहे
असकहि पारथ करि संधाना। भूमि निरखि के मारो
भेदि पताल गयउशर तहँवां। भोगावलि गंगा हैं ज
याविधिते शायक परिहारा। निकरी फूटि गंग के
ताते भयो सरोवर ऐसो। निर्मल नीर सुधा को
पारथ कही कृष्ण सुनि लीजे। रथते तुरंग खोलि जल
दो॰ अस्त्रघाव क्षत्रीकरत अभिरत वीर अनंत।
केहिविधितेजलदीजिये भाषि श्रीभगवंत॥
अर्जुन कोपि किये संधाना। मारयो सेन कियो मैद
तब पारथ शर पंजर छाये। अर्द्ध नीर शर ओट बि
ताते वीर निकट नहिं आयो। नंदिघोष नहिं देखन प
तब अर्जुन भाषेउ भगवानहिं। खोलहुअश्वकरहिंजलपा
श्रीहरि सुनिके जोती छोरे। किये पानजल चारिउ घ
स्वकर नाथ अश्वनको धोये। फरकन लगे सबै श्रमखे
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे। मिश्रितकरिमिश्रिततेहिंदि
और दवा प्रभु आपु खवाये। होइ बलवंत भये सचुपा
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे। गंगोदक भारी भरि लीन
चारिउ तुरँग आनि रथजोरे। चंचल चपल दिनन के थो
दो॰ कुरुदल सबै अनन्द सों करन लगे जलपान।
धन्य धन्य पारथजगत अरिदल करतमखान॥
शर पंजर ते भारत भागे। चहुँओर शर वर्षन लाग
महाशूर जो आगे आवत। क्षणमहँ अर्जुनमारि गिरावत

ल तुरंग हांकि रथ दीन्हे। पुनि पारथ बाणावलिकीन्हे॥
र्जुन बाण गिरत दल ऐसो। प्रबलपवन कदलीवनजैसो॥
हेविधिलरतशंकनाहिंमनमों। रुधिरप्रवाहचलतसबतनमों॥
न अंग देखि दृग भूले। जिमिबसंत किंशुकतरु फूले॥
रुण बरण शोणितलपिटाने। खेलत मनहुं अबीरनसाने॥
ने फौज रथ याविधिधावत। जिमिमैनाकधरणिपरआवत॥
विधिते रथ हांकत केशव। धर्मराज इत करत अँदेशव॥
रि हेतु सात्यकी पठाये। सुधि लैके अजहूं नहिं आये॥

दो॰ भीमसेन तुम जाहु अब हरि अर्जुनके ठौर।
उत चाहत सुधि लेनको बीर न देखों और॥

हस के बांधव शुभ कीजे। अर्जुनखबरिआनिम्वाहिंदीजै॥
र अढ़ाई दिन भा आई। अबलों जिनके खबरिनपाई॥
। आज्ञा माथेपर लीन्हे। रणको भीमसेन शुभ कीन्हे॥
हद्वार जब रथ पहुँचाये। द्रोणगुरू देखन तब पाये॥
धवंत शारँग कर लीन्हे। तेशर गुरुबीचहिं क्षयकीन्हे॥
पर पांच शर मारे पायल। ताते किये अश्व रथ घायल॥
ते गुरुद्रोण कही यहबानी। सब दिनभीम परमअज्ञानी॥
देघोष रथ हरिसम सारथ। सके न द्वार जान यह पारथ॥
है मारग ह्वै जान न पैहौ। पारथ गये तितहि ह्वै जैहौ॥

दो॰ भीमसेन अतिक्रोधकरि कहे द्रोणसों बैन।
द्वारपेलिअबजातहों तुमदेखतबधिसैन॥

र्जुन के धोखे जनि रहिये। सावधान होइ शारँग गहिये॥
बा उतरि छांड़िके स्यंदन। मनमें सुमिरे श्रीजगवंदन॥
नुसंधान द्रोण गुरु मारत। बायें अंग भीम सब टारत॥
ल तेज शोणित शरछूटत। वज्र शरीर लागि सब टूटत॥
इ गदा रथ हेठ लगाये। ले भुजबलगुरुसहितउठाये॥
ण समेत फेंकि रथ दयऊ। गिरेउन बीचकोशदुइगयऊ॥

गिस्यो भूमि टूट्योतव स्यंदन। अश्व सारथी भयो निकंदन।
उठिके द्रोण पयादे धाये। तबलगि भीम व्यूहमहँ आये॥
चहुँदिशि गदाकोपिपरिहारे। सन्मुख ज्यहि पाये तेहिमारे॥
गज मारे अनेक मय कीन्हे। बहुतक फेंकिगगनमहँदीन्हे॥
दो० बहुतक मारे चरणते बहुमुष्टिका प्रहार।
भीमसेन सेनासबै यहिविधि कीन सँहार॥
रथ ते रथ गज सों गज मारे। पकरि अश्व पर अश्वप्रहारे॥
सन्मुख आय वीर शर जोरत। गदाघाव तिनको शिरफोरत॥
यहिविधि कीन्हे सेन निकंदन। हय गजमत्ततोर बहुस्यंदन॥
लैकर गदा क्रोध करि धाये। वीरन मारत बार न लाये॥
हांक मारि के गदा प्रहारे। एकवार सहसन दल मारे॥
यहिविधि लरत चलेपरतक्षक। पहुँचे जाय कर्ण तहँ रक्षक॥
देख्यो कर्ण वृकोदर आये। रहुरहु कहिगुणधनुषचढ़ाये॥
आवत कहा और के धोखे। असकहि बाण चलायो चोखे॥
भीम अंग मारे शर जबहीं। हांक मारिके धायो तबहीं॥
दो० रथ सारथि चूरण कियो जूभेचारि तुरंग।
गज अनेक मारनलगे रच्यो भीमरणरंग॥
अर्जुन कही भीम प्रभु आवत। युद्ध करतहैं हांक सुनावत॥
श्रीहरि कही दूरिअति पारथ। योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ॥
करण अपर रथहीचढ़ि आये। क्रोधित ह्वै बहुबाण चलाये॥
लाग्यो घाव भीम के तन में। अधिकक्रोधउपज्योतबमनमें॥
लैकर गदा कोपि परिहारे। चारि तुरंग सारथी मारे॥
चक्र सहित टूटो तब स्यन्दन। आतुरभागि चलेरविनन्दन॥
[illegible] भयारी। [illegible]मुख [illegible] वीर धनधारी॥

दो० कर्ण धनुर्द्धर अति प्रबल याविधिमारे बान।
भीम अंग झांझर सबै मोहि गिरे मैदान॥
श्रमजल रुधिर अंगमहँ बह्यो। गजलोथिन के बीचहि रह्यो
मूर्च्छित भये पाण्डु के नन्दन। कर्ण वीर हांक्यो तबस्यन्दन
हे दूरि अति निकटहि आये। धनुष अंगतन खोदि जगाये
उठो भीम कीजे रण करणी। मोहित कहापर्यो है धरणी
बाहु बहुत सोवहु निजधामा। रणमहँ काह तुम्हारो कामा
जीवदान मैं ताते दीन्ह्यो। कुन्तीमातु मांगि के लीन्ह्यो
यह कहि कर्ण चले पुनिआगे। भीमसेन मूर्च्छा तब जागे
शीतलपवन परस तन कीन्हे। श्रम भा दूरि गदाकरलीन्हे
अपनो बल तब भीम सँभारो। सेना पेलि अग्रपग धारो
याविधिचल्यो करतपुरुषारथ। कृष्णसमेत लरतजहँ पारथ
दो० भीमसेन कहँ हांक दे मैं पहुँच्यों अब आय।
पारथतुम निरखतकहा बधो सेनमनलाय॥
भीम सात्यकी पाछे आवत। आगे नंदिघोष रथ धावत
भीमसेन राजन संहारे। पुनिसात्यकी अमितदलमारे
हांके तुरँग पतित के पावन। रुधिरनदीअतिबढ़ीभयावन
मत्तगयंद भिरे हैं कैसे। दोऊ ओर कगारक जैसे
बार सेवार सरस अरुझाने। फेन समान जो पग उतराने
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं। ढालमनहुंकच्छपसमदमकहिं
फटे शीशधर बखतर राजें। मनहुँ ग्राहजलमाहिं विराजें
याविधि कीन्हेउ खेत भयंकर। नाचत मुंड लिये हैं शंकर
भूत बेताल पिशाच सयाने। रुधिरमांस सवखाइअघाने
दो० योगिनि खप्पर भरत हैं काक कंककी भीर।
गीध शृगाल अनन्दसों बोलत सरितातीर॥
याहिविधितें कीन्हेउ रणभारथ। पारथ करत जहांपुरुपारथ।
महाबीर कोटिन शर मारत। बाणन ते अर्जुन संहारत।

यहि विधि होत महारणशरसे। अस्त्र समूह बुंद सम बरसे
सबै शूर सरदार महाबल। पलभरिनहिंपारथपावतकल
अर्जुन हाथ वाण जो छूटत। सेनाबेधि धरणि महँ फूटत
धर्मराय कुरुपति के सैनहि। हितअनहितरविदेखतनैनहि
चक्रवाक पाण्डवदल जानत।समउलूककुरुदलनिशिमानत
बध जयदर्थ पाण्डुदल भावत। कौरवदल सबचहतबचावत
दो० व्यासदेव उपमाकही दोऊ दलहि विचारि।
अर्जुनप्रणजयदर्थबध बालअप्रौढ़ानारि॥
आतुर ह्वे अर्जुन शरछांटत। वीर अनेकन के शिरकाटत॥
महा युद्ध अद्भुत पुरुषारथ। हांकदेत हांकत रथ सारथ॥
वाहुलीक कृतबर्मा अत्री। सन्मुख आनि जुरे सबक्षत्री॥
मारु मारु कै सब रण टेरे। चहुँदिशि नंदिघोष रथ घेरे॥
अश्वत्थाम कृपा तब आये। सब मिलिबाणबुंदझरिलाये॥
सेन अनेक अस्त्र परिहारत। सांग शूल मुद्गर सों मारत॥
यहिविधि होत महारण भारी। हरि सारथि पारथ धनुधारी॥
श्री हरि तब अपने मन जाने। पहर दिवस बाकी अनुमाने॥
जो सब दिवस बीति कै जैहै। सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै॥
जो अर्जुन निजप्राण गवांवा। मेरो अयश सबै जग गावा॥
दो० पांडव मेरे परम धन पारथ प्राण समान।
अर्जुनकेहिविधिराखियेकरतशोचभगवान॥
श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु। बड़े होइकै सूर्य छिपावहु॥
हरि आज्ञा माथे धरिलीन्हा। तबरवि ओटसुदर्शनकीन्हा॥
गगन दिवस तकितेजनिहारी। भई सांझ कुरुसेनपुकारी॥
प्रमुदित ह्वे कौमुदी प्रकाशा। पांडवदल सब भयोनिराशा॥
सन्ध्या देखि थकित भे पारथ। डारेउ धनुष तजेउपुरुषारथ॥
पारथ धनुष डारि जबदीन्हे। मिटो युद्ध सब के मन चीन्हे॥
दुर्योधन आनँद ह्वे धाये। सेन समूह सबै पलटाये॥

तब पारथ यहिभांति वखाना। कुरुपतिकरहुचित्तअनुमाना॥
सुनिके दुर्योधन मन हर्षेउ। जिमिचातकजलस्वातीवर्षेउ॥
कुरुपतिकी आज्ञा जब पायो। शतबंधुनमिलिचितावनायो॥
दो० चिताचढ़न अर्जुन चल्यउ कहेउकृष्णसमुझाय।
धनुषबाण लेकर चढ़ेउ क्षत्री धर्म्म न जाय॥
हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ। लेकर धनुष चितापरचढ़ेऊ॥
कुरुपति तब निरखनकोलागे। कहीशकुनिजयदर्थहि आगे॥
तुव कारण मारेउँ सब सैना। पारथ मरण देखिये नैना॥
याते और न है सुख कोई। देखत नयन शत्रु क्षय होई॥
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं। श्रीहरि गगन तकायोतबहीं॥
कर्पि सुदर्शन तब ढिग आये। रविप्रकाशभा दिवसलखाये॥
चकृत सवहिं अचंभा माने। तब श्रीहरि पारथहिंवखाने॥
अर्जुनगहरुकरतक्यहिकाजा। देखत तुमहिं सिन्धुके राजा॥
तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना। कंठ ताकि के मारेउ वाना॥
जूझे शीश परनमहि चह्यऊ। तब अर्जुनसोंमाधवकह्यऊ॥
दो० अंतरिक्षशिरले चलहु सुनहु वचन परिमान।
द्रोणपर्वभाषा रच्यो सबल सिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना। लेशरशीशचल्यउअसमाना॥
हरिअर्जुन रथपर चढ़ि धाये। शरलागत शिर गिरननपाये॥
पहुँचायो शिर पारथ वाणन। जहां सुरथ तपसाधत कानन॥
धर्योध्यान अंजलिकरसाधत। पुत्र हेतु शंकर अवराधत॥
कही कृष्ण अर्जुन सों ऐसो। वाके हाथ परत शिर जैसो॥
यहि विधिते अर्जुन शर मारे। नृप के हाथशीश ले डारे॥
छूटे ध्यान चितामन कीन्हेउ। मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ॥
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं। माथो सुरथ फाटिगा तबहीं॥
छूटे प्राण गिर्यो तब धरणी। कहिन जातिविधिकीयहकरणी॥

अर्जुन देखि भये भ्रम भारी। यह चरित्र कहिये बनवारी॥
दो० शीश गिरो वाके करहि भूमिसों दीन्हेउ डारि।
प्राण तज्यो क्यहिकारण हमसों कहियमुरारि॥
कथा पुरातन श्रीहरि कह्यऊ। सुरथ नाम राजा यह रह्यऊ॥
सिंधूराज महा बल भारी। क्षत्री प्रबल वीर धनु धारी॥
राजभोग इन बहुविधिकीन्हा। पुनि तपहेतु जायमनदीन्हा॥
शंकर की पूजा अवराधे। सेवा करि गौरी व्रत साधे॥
भयो प्रसन्न कहेउ गंगाधर। जो इच्छा मांगहु सोई बर॥
दीजे पुत्र सुरथ यह कह्यऊ। मरैन अमरसदाजगरह्यऊ॥
सुनिके शंकर कहा बुझाई। अमर छांडि मांगो बरभाई॥
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी। यह बर दीजै अंतर्यामी॥
जो वाको शिर करहुँ निपाता। तुरत मरै तब ताकत ताता॥
एवमस्तु कहि शिवबर दीन्हे। तब जयदर्थ जन्मजग लीन्हे॥
दो० दिनादिन सुत बाढ़नलग्यो गयो महारथ वीर।
शिव पूजा संतत करत श्रीसुरसरि के तीर॥
दुर्योधन की बहिनि दुसाला। कै विवाह दीन्हेउ जयमाला॥
जब भारत रणको पगदीन्हेउ। सुरथ जाइ तप वनमें कीन्हेउ॥
सुत के कुशल तपस्या करई। इनहिं कहै जयदर्थ सो मरई॥
ता कारण इनको शिरल्याये। ताहि मारिकै तुम्हें बचाये॥
यहिविधिसवमाधवकहिदीन्हो। हांकोरथभवनहिंशुभकीन्हो॥
धर्म्मराय सेना सब लीन्हे। पारथ पंथ चितैचित दीन्हे॥
यहि अन्तर रथ देखन पाये। सबहिं कहेहरि अर्जुन आये॥
पारथ तब नृपके पग परसे। आनन्दित सबके मन हरसे॥
धर्मराय माधव सों भेंटे। त्रिविध ताप तनुकीसब मेटे॥
हरिमाप्यउप्रणराख्यउ पारथ। बधि जयदर्थ कियोपुरुपारथ॥
दो० धर्मराय भाषन लग्यो श्रीहरिसोंयह बैन।
पारथप्रण रक्षा सदा तुमहीं पंकज नैन॥

हैं जहँ गाढ़परयो परतक्षक। सबदिन तहांभये तुमरक्षक॥
ख भवन कुरुनाथ बनाये। जरततहांप्रभु तुमहिं बचाये॥
ाै पास सबदिन बनवारी। द्रुपदसुताकी लाजनिवारी॥
न में दुर्वासा छल कीन्हेउ। हेजगदीशराखितुमलीन्हेउ॥
द के हेतु त्रिभीपण आये। मारतप्रभु तुमहमहिंबचाये॥
व कौरव विष भोजन दीन्हे। तहँहुं आप रक्षातब कीन्हे॥
नमों तृषित भये बनवारी। कर उठायदीन्हेउ तुमभारी॥
निबंधु मोरे हित काजा। चरण धोइ बैठारेउ राजा॥
ारायण शर भीपम मार्यो। मरतभीमप्रभुतुमहिंउबार्यो॥
नुमत सों हठपारथ कीन्हेउ। दीनदयालराखितुमलीन्हेउ॥
दो० पारथ प्रण रक्षक सदा श्रीबर दीनदयाल।
जाके तुम से सारथी ताहि न जीते काल॥
ो जो चरण तुम्हारे ध्यावे। संकट मों प्रभु सबहिंबचावे॥
ह ग्रहीत प्रभुसुमिरणकीन्हे। धायेत्वरितराखित्यहिलीन्हे॥
णप्रहलाद राखि बिनकारण। नरहरिरूपधरो जगतारण॥
वकहँ अटलकरेउ सबऊपर। विद्यमान विभीषण भूपर॥
क्ति वश्य भीपम प्रण कारण। रणमहँअस्त्रगह्योजगतारण॥
मिराय यहि भांति बखाने। श्रीपतिसुनतबहुतसुखमाने॥
योंधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ। आज युद्धपारथप्रणरहयऊ॥
म सब भये न कोऊ रक्षक। बधिजयदर्थगयो परतक्षक॥
ा सुनिद्रोण कहन असलागे। सत्य वचन राजा के आगे॥
लत अर्जुनसक्यउ न मारण। रच्यो उपाय जगतकेतारण॥
दो० रविअस्थित निशिकेगई छलकीन्ह्योभगवान।
भक्त परण राख्यो कही सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वपंचमोऽध्यायः ५॥
भवराजा जिय शोच न करिये। आजुयुद्धनिशिकालहिलरिये॥
साजी सेन विलम्ब न लाये। रथप्रति सबहि मशालबराये॥

रथ प्रति चारि अश्वप्रतिदोई। यहिविधिसाजकिये सब
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे। इतदिशिभीमपाण्डुदल
वरतमशाल ज्योति उजियारी। शोभा मानहुं वरत स
सुवरण शीश मुकुट छविछाजे। मोर मनहुं वर शीशवि
सुंदरि हाथ आरती लीन्हे। सुर कन्यन व्याहनमनद
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे। वीरन धनुपफोंक मनदी
गज सों गज रथ सों रथजोरे। पैदल सों पैदल रण
यहि विधि लरत जोरसों जोरे। महा शूर मन नेकुन

दो० अर्जुन लीन्ह्यो धनुपकर कीन्हो शर संधान।
श्रीमुनिसोंकरउदितछवि रथहांको भगवान॥

पांडवदल अनेक रण मारे। तव गुरु द्रोणवाण परिह
अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना। कुरुदल जूझिगिरेउमैदा
निशाकालमहँ अतिपुरुषारथ। द्रुउदलकीन्हेउअतिशयभार
शकुनी ते सहदेव लराई। महा युद्ध कीन्हेउ प्रभुता
जुरे भीम दुश्शासन साथा। दोऊ सबल गदा लै हाथ
नकुल भिरे कृतवर्मा क्षत्री। कृपाचार्यअरुसात्यकिअत्र
जरासंध सुत द्रोणी संगा। दोऊ मचे महा रणरंग
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा। दोऊ लरत आपुजयकाज
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ। वाणनसों छायो सब भारथ
अंधकार भा निशिअँधियारी। चमकतअस्त्र होतउजियारी

दो० सुनियत धनुटंकोरअति निरखत अस्त्रउदोत।
हांक देत क्षत्रीसबहिं निशा युद्धइमि होत॥

द्रुपद नरेश द्रोणगुरु साथा। खड्गलेइगुरु काट्यउमाथा
गिरेउ द्रुपद धरणीमहँ जबहीं। पाछेको गुरुजान्यउ तबहीं
धोखे मित्र वध्यो हम रन में। उपज्यो शोच द्रोणके मनमें
महारथी करि एक न लागे। चलहिं न एक एकके आगे।
सूझिनपरत सघनअँधियारी। आगे परत जात सो मारी।

मुकुट अनेक धरणिमहँ परेऊ। झलकतज्योतिजरायनजरेऊ॥
गुरु द्रोण सबहीते कह्यो। निशिको युद्ध अचेतोरह्यो॥
दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यो। गुरुद्रोणमन में दुखकीन्ह्यो॥
यहिविधिकहासोकुरुपतिराजा। गुरुशोच कीजे क्यहिकाजा॥
अंधकार निशि गये न चीन्हे। अपने हाथ मित्र बधकीन्हे॥
दो० दुर्योधन भाषन लगे कहो गुरुहि समुझाय।
द्रुपदमित्रक्यहिविधिभये सुनिसंदेहनशाय॥
द्रोण गुरू आये यहि बातन। हे नरेश सुनु कथा पुरातन॥
तप कारण बन में हम आये। यमुना मज्जन करनसिधाये॥
द्रुपद देखि कीन्हो परणामा। आशिषदीन्ह होहुमनकामा॥
तब हमकहा कौन तुम अहहू। कौनबर्ण क्यहिआश्रमरहहू॥
राजाद्रुपद अहे मम नामा। विधिवशतजिआयेनिजधाम॥
लिये किरातन राज हमारे। हारे युद्ध बने पगु धारे॥
रानी अरु मंत्री ले साथा। आये बनहिं अस्त्रनहिंहाथा॥
हम भाषो राजा सुनिलीजे। मेरे साथ गमन अब कीजे॥
बधि किरात तुमकहँ बैठावों। द्रोणनाम तबजगत कहावों॥
कही द्रुपद सोइ बड़ा धनुर्द्धर। जूझी सैन्यसकल जाकेबल॥
दो० क्षत्री है जुरिनाहिं सके तुम द्विज कोमल अंग।
धनुविद्याजानत नहीं किमिकरिहो रण रंग॥
तब हम याविधिबचन सुनाये। ज्यहिप्रकार धनु विद्यापाये॥
परशुराम तब यज्ञ विचारे। मुनिसबसुनत तुरतपगुधारे॥
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा। लेसब विप्रभवनशुभकीन्हा॥
बच्यो न कछू सबै उन दयऊ। तब हमजायउपस्थितभयऊ॥
परशुराम यह वचन सुनाये। अवसर गये विप्र तुमआये॥
बच्योकमंडलु और कुशासन। धनुषबाणकर एकन आसन॥
तब हम कही सुनो हे स्वामी। तुम जानत सब अंतरयामी॥
बहुत भांति दारिद्र सताये। तब हम तुम्हें ताकिकेआये॥

यकइस बार निक्षत्रिन कीन्हें। धरती धनु विप्रनकहँ दीन्हे
कही नारितुम वेगि सिधावो। परशुराम ते धनले आवे

दो० आशाकरि आये हते पैविधिकीन्ह निरास।
कर्म्महीन जो जगतमों भवन कुबेरउपास॥

भृगुपति चित्त दया ह्वै आई। निकटबोलि म्वहिं बैनसुना
धनु विद्या चाहहु तौ लीजै। दुखीविप्रत्वहिं विमुखनकीं
यहकहि धनुविद्या म्वहिंदीन्हे। पुनिसबअस्त्र समर्पणकीन्हे
परशुराम दीन्हे धनु शायक। तीनिलोकके जीतन लायक
जब सबभेद द्रुपद सुनिलीन्हो। आनँदसहित मित्रताकीन्हे
जो आपुहि किरात बध कीजै। आधो राज्य बांटिके लीजै
लैद्रुपदहि प्रणशालहि आये। फलअरुमूल अहारकराये
प्रात होत लीन्हे धनु बाना। द्रुपदद्रोणमिलिकीन्हपयाना
सुनि किरात सब आतुरधाये। तीनिकोटि सेना जुरि आ
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनिलीजे। आये शत्रु युद्ध अबकीजे

दो० ब्रह्म अस्त्र संधानि कै हम कीन्हो परिहार।
तीनिकोटिचतुरंगदल जारिकीन्ह सबछार॥

द्रुपदहि सिंहासन बैठाये। तिलकदेइ शिरछत्र धरा
भाषो द्रुपद मित्र सुनि लीजे। आधो राज्य भोग अबकीजे
रहे राज्य अस्थिर तब पासा। हम तप हेतु जात बनवास
असकहिहमप्रणशालहि आये। मुनिसमाजसँग तपमनला
विधिवश पुत्र जन्म जगलीन्हे। अश्वत्थाम नामत्यहि कीन्हे
मुनिकुँवरनसँगखेलत डोलत। बात मधुर अमीसमबोल
सब मिलि कहयोदूधहम पाये। सुनिसो पुत्र मातुपहँ आ
बालक कही दूध अब दीजे। माता कही कहा अब कीजे
तंडुल हुते भवन महँ थोरे। शिलाते बांटि नीरते घो
भरो द्रोण द्रोणिका दीन्हे। हर्षवंत ह्वै पानहि कीन्हे

दो० हर्षवंत खेलत चलो। मैराकरि अपमान।

निरखिनारिरोवनलगी जियमोंभईगलान॥
तहिअंतर हम भवनहिं आये। रोवत देखि महा दुखपाये॥
तियलागी करसों शिर मारन। हम पूंछीरोवत क्यहिकारन॥
दूध स्वादु मम पुत्र न जानत। उज्ज्वलनीर दूधकरि मानत॥
हमभाषो जनि होहु निरासा। चलहु तुरत द्रोपदके पासा॥
देखि नगर आनंदित भयऊ। तबचलिभूपतिद्वारहिगयऊ॥
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो। कहो कि जायमित्रनृपआयो॥
सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा। राजा मित्र खड़े तव द्वारा॥
द्विजअति दुखितवसनतनुफाटे। सुनत द्रुपद प्रतिहारनडाटे॥
द्विज संग्रह है वड़ो अपावन। दूरि करो पावै नहिं आवन॥
यहसुनि द्वारपाल सब धाये। खेदिदिये हम जानन पाये॥

दो० शापदियेहम क्रोधकरि जानिपरम विपरीति।
धनमदतेअपमानकरिअतिउदासचितथीति॥

पुरी हस्तिना तब हम आये। तुम बालक खेलन मनलाये॥
कूपहि परो गेंद जब जाने। तुमसब शोच चित्तअनुमाने॥
सिद्धवाण संधानहिं कीन्हे। गेंद उठाय हाथ तब दीन्हे॥
तुमसब देखिअचम्भव भयऊ। लयो गेंद भीषमपहँ गयऊ॥
सुनत चित्त भीषम अनुमाने। आये द्रोण सत्य हम जाने॥
आदरकरि निजगृह ले आयो। चरण धोय आसन बैठायो॥
धेनु अनेक बहुत विधि दीन्हे। पांचक गांव समर्पण कीन्हे॥
मेरे संग रहो सुख पैहो। बालक सबले अस्त्र सिखैहो॥
सिखये अस्त्रनिपुणसब कीन्हे। सब मिलिकैगुरुदक्षिणदीन्हे॥
पारथ ते कछु बाणहि लीन्हे। यहै बात याचना कीन्हे॥

दो० द्रुपदमित्रमेरोरहे तिन कीन्हो अपमान।
विधि चरणनतरडारिये मांगतहोंयहदान॥

अर्जुन जाइ किये तहँ भारथ। महायुद्ध कीन्हे पुरुषारथ॥
यहि विधिते पारथ शर सांध्यो। नागफांसमहँ द्रुपदहिबांध्यो॥

मम चरणन तर बांधि के डारे। गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे।
तवहम छांड़िद्रुपद कहँ दीन्हा। मित्र जानिके भाषण कीन्हा।
यहिविधि मित्रद्रुपद सुनुराजा। मारेउँ आजु तुम्हारे काजा॥
सव मिलिके आये निजधामा। दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा॥
होत प्रात कुरु पांडव साजे। कीन्हेउ वम्ब दमामा बाजे॥
वेगि अनी आये मैदाना। क्षत्री लगे चलावन बाना॥
दल चतुरंग चले सव आगे। नंदिघोष हांकन हरि लागे॥
अर्जुन कीन्हें सेन निपाता। कुरुपतिकही द्रोणसों वाता॥
दो० हम अर्जुन सम्मुख लरें यह इच्छा मनमाह।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु कोचलिहैनरनाह॥
पढ़ि नारायण कवचहि दीन्हे। रामकवच त्यहि ऊपरकीन्हे॥
भाष्योद्रोण भूप अव लरिये। सन्मुख अर्जुन ते रणकरिये॥
दृढ़ कै धनुषवाण कर धरिये। शत्रुनिपाति राज्यपुनिकरिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना। हृदय ताकिके मारेउ बाना॥
निष्फल भये वाण सव टूटे। कवच प्रताप अंग नहिं फूटे॥
अर्जुन देखि क्रोध जियकीन्हे। तीक्षण वाण दिव्यकरलीन्हे॥
मारेउ दुर्योधन के अंगा। भेदन भये वचे सव अंगा॥
तव पारथ यहि भांति वखाने। अहो नाथ यहभेद न जाने॥
सुनिश्रीपतियहिभांति वुझाये। कवच भेदनृप द्रोण वताये॥
दो० द्रोणकवचपढ़िकै दये वाण न फूटतअंग।
ताकारणपारथ सुनहु होतसकल शरभंग॥
भेद जानिके शर परिहारे। चारिउ तुरँग सारथी मारे॥
विरथ भयो दुर्योधन जाना। तव गुरुद्रोण वाण संधाना॥
पांच वाण पारथ उर मारे। कृष्ण अंग दश वाण प्रहारे॥
अदवन तनु मारे दशवाना। सहस वाण मारे हनुमाना॥
पारथ कोपि गहे शारँगकर। होनलागिअति मारुपरस्पर॥
तव अर्जुन ऐसे शर जोड़े। मारेउ रथ के चारिउ घोड़े॥

अपर और रथ किये सवारी । अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी ॥
महारथी सब हतें धनुर्द्धर । कठिनयुद्ध कीन्हेतेहिअवसर ॥
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ । सन्मुखरचो शैलसों भारथ ॥
क्षत्री सकल करत संग्रामा । कुरुपति धर्मराज के कामा ॥
दो० वाणवृष्टि अतिहोतितव शूलशक्ति परिहार ।
मुद्गर तोमर फरीकर गदाखड्गकी मार ॥
सबहिंअस्त्र क्षत्री परिहारहिं ।सन्मुखज्यहिपावहिंत्यहिमारहिं॥
यहि विधि युद्ध करै मनलाये । लै कर गदा भीम तब धाये ॥
गज अनेक मारे तरवारा । रथी अश्व पैदल संहारा ॥
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना । भीम अंग मारे दश बाना ॥
रथचढ़ि भीम धनुषकरलीन्हे । वाणवृष्टि त्यहिदलपरकीन्हे ॥
धृष्टद्युम्न दुश्शासन क्षत्री । दोऊ जुरे महा बल अत्री ॥
कृपाचार्य कीन्हे संधाना । फिरे नकुलत्यहिसन मैदाना ॥
काशीराज द्रोण रण मंडे । वाणन ते रिपु सेन विहंडे ॥
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ । वाणन ते आये सब भारथ ॥
द्रोणी अंग तीनि शरमारे । चारि वाण अश्वन परिहारे ॥
दो० क्रोधवंत द्रोणी भये कीन्हेउ शर सन्धान ।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो सबलसिंह चौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वषष्ठोऽध्यायः ६ ॥
संध्या जानि किये विश्रामा । दोऊदल आये निज धामा ॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लागे । मनमलीन मोहन के आगे ॥
चौदह दिवस भये रण भारथ । भीषमद्रोण सरिस पुरुषारथ ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे । तब भीषम शरशय्या लीन्हे ॥
गुरु कीन्ह सब सेन सँहारण । अब उपायकहिये जगतारण॥
श्रीहरि आपु कहन असलागे । राजा धर्मराज के आगे ॥
कालिह्प्रात याविधि रणकीजे । आज्ञा नृपति भीमको दीजे ॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं । आपुद्रोणमरिहैं बिन मारहिं ॥

मम चरणन तर बांधि के डारे। गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे॥
तबहम छांड़िद्रुपद कहँ दीन्हा। मित्र जानिके भाषण कीन्हा॥
यहिविधि मित्रद्रुपद सुनुराजा। मारेउँ आजु तुम्हारे काजा॥
सब मिलिके आये निजधामा। दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा॥
होत प्रात कुरु पांडव साजे। कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे॥
बेगि अनी आये मैदाना। क्षत्री लगे चलावन बाना॥
दल चतुरंग चले सब आगे। नंदिघोष हांकन हरि लागे॥
अर्जुन कीन्हें सेन निपाता। कुरुपतिकही द्रोणसों बाता॥

दो० हम अर्जुन सम्मुख लरें यह इच्छा मनमाह।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु कोचलिहैतरनाह॥

पढ़ि नारायण कवचहि दीन्हे। रामकवच त्यहि ऊपरकीन्हे॥
भाष्योद्रोण भूप अब लरिये। सन्मुख अर्जुन ते रणकरिये॥
दृढ़ कै धनुषबाण कर धरिये। शत्रुनिपाति राज्यपुनिकरिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना। हृदय ताकिके मारेउ बाना॥
निष्फल भये बाण सब टूटे। कवच प्रताप अंग नहिं फूटे॥
अर्जुन देखि क्रोध जियकीन्हे। तीक्षण बाण दिव्यकरलीन्हे॥
मारेउ दुर्योधन के अंगा। भेदन भये बचे सब अंगा॥
तब पारथ यहि भांति बखाने। अहो नाथ यहभेद न जाने॥
सुनिश्रीपतियहिभांति बुझाये। कवच भेदनृप द्रोण बताये॥

दो० द्रोणकवचपढ़िके दये बाण न फूटतअंग।
ताकारणपारथ सुनहु होतसकल शरभंग॥

भेद जानिके शर परिहारे। चारिउ तुरँग सारथी मारे॥
बिरथ भयो दुर्योधन जाना। तब गुरुद्रोण बाण संधाना॥
पांच बाण पारथ उर मारे। कृष्ण अंग दश बाण प्रहारे॥
अश्वन तनु मारे दशबाना। सहस बाण मारे हनुमाना॥
पारथ कोपि गहे शारंगकर। होनलागिअति मारुपरस्पर॥
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े। मारेउ रथ के चारिउ घोड़े॥

अपर और रथ किये सवारी। अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी॥
महारथी सब हतें धनुर्द्धर। कठिनयुद्ध कीन्हेतेहिअवसर॥
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ। सन्मुखरचो शैलसों भारथ॥
क्षत्री सकल करत संग्रामा। कुरुपति धर्मराज के कामा॥
दो० वाणवृष्टि अतिहोतितब शूलशक्ति परिहार।
मुद्गर तोमर फरीकर गदाखड्गकी मार॥
सबहिंअस्त्र क्षत्री परिहारहिं। सन्मुखज्यहिपावहिंत्यहिमारहिं॥
यहि विधि युद्ध करे मनलाये। ले कर गदा भीम तब धाये॥
गज अनेक मारे तरवारा। रथी अश्व पैदल संहारा॥
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना। भीम अंग मारे दश बाना॥
रथचढ़ि भीम धनुषकरलीन्हे। वाणवृष्टि त्यहिदलपरकीन्हे॥
धृष्टद्युम्न दुश्शासन क्षत्री। दोऊ जुरे महा बल अत्री॥
कृपाचार्य कीन्हे संधाना। फिरे नकुलत्यहिसन मैदाना॥
काशीराज द्रोण रण मंडे। बाणन ते रिपु सेन विहंडे॥
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ। बाणन ते छाये सब भारथ॥
द्रोणी अंग तीनि शर मारे। चारि बाण अश्वन परिहारे॥
दो० क्रोधवंत द्रोणी भये कीन्हेउ शर सन्धान।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्वषष्ठोऽध्यायः ६॥
संध्या जानि किये विश्रामा। दोऊदल आये निज धामा॥
नृप युधिष्ठिर कहिबे लागे। मनमलीन मोहन के आगे॥
चौदह दिवस भये रण भारथ। भीषमद्रोण सरिस पुरुषारथ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे। तब भीषम शरशय्या लीन्हे॥
गुरु कीन्ह सब सेन सँहारण। अब उपायकहिये जगतारण॥
श्रीहरि आपु कहन असलागे। राजा धर्मराज के आगे॥
कालिहप्रात यहिविधि रणकीजे। आज्ञा नृपति भीमको दीजे॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं। आपुद्रोणमरिहैं विन मारहिं॥

मम चरणन तर बांधि के डारे। गुरुदक्षिणा सों आपु उबारे॥
तबहम छांड़िद्रुपद कहँ दीन्हा। मित्र जानिके भाषण कीन्हा॥
यहिविधि मित्रद्रुपद सुनुराजा। मारेउँ आजु तुम्हारे काजा॥
सब मिलिके आये निजधामा। दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा॥
होत प्रात कुरु पांडव साजे। कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे॥
बेगि अनी आये मैदाना। क्षत्री लगे चलावन बाना॥
दल चतुरंग चले सब आगे। नंदिघोष हांकन हरि लागे॥
अर्जुन कीन्हे सेन निपाता। कुरुपतिकही द्रोणसों बाता॥
दो० हम अर्जुन सम्मुख लरें यह इच्छा मनमाह।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु कोचलिहैनरनाह॥
पढ़ि नारायण कवचहि दीन्हे। रामकवच त्यहि ऊपरकीन्हे॥
भाष्योद्रोण भूप अब लरिये। सन्मुख अर्जुन ते रणकरिये॥
दृढ़ के धनुषबाण कर धरिये। शत्रुनिपाति राज्यपुनिकरिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना। हृदय ताकिके मारेउ बाना॥
निष्फल भये बाण सब टूटे। कवच प्रताप अंग नहिं फूटे॥
अर्जुन देखि क्रोध जियकीन्हे। तीक्षण बाण दिव्यकरलीन्हे॥
मारेउ दुर्योधन के अंगा। भेदन भये बचे सब अंगा॥
तब पारथ यहि भांति बखाने। अहो नाथ यहभेद न जाने॥
सुनिश्रीपतियहिभांति बुझाये। कवच भेदनृप द्रोण बताये॥
दो० द्रोणकवचपढ़िके दये बाण न फूटतअंग।
ताकारणपारथ सुनहु होतसकल शरभंग॥
भेद जानिके शर परिहारे। चारिउ तुरँग सारथी मारे॥
बिरथ भयो दुर्योधन जाना। तब गुरुद्रोण बाण संधाना॥
पांच बाण पारथ उर मारे। कृष्ण अंग दश बाण प्रहारे॥
अश्वन तनु मारे दशबाना। सहस बाण मारे हनुमाना॥
पारथ कोपि गहे शारँगकर। होनलागिअति मारुपरस्पर॥
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े। मारेउ रथ के चारिउ घोड़े॥

पांडव दल जूझे घने शर छाये असमान ॥
र्जुन बाण वृष्टि भरिलाये। कौरव दल बहु मारिगिराये॥
रम्भ खेत जोर सों जोरा। लागे करन महा रण घोरा॥
ल सांगि मुद्गर परिहारे। सम्मुखजाइ खड्ग शिरभारे॥
तल भये कटारन जोरहिं। जूझिजायँमुखनेकु न मोरहिं॥
हां जहां अर्जुन मन धावत। तहांतहां हरि रथपहुँचावत॥
ारथि भये भक्तके कारण। करिताजनहांकतजगतारण॥
रथ करते जे शर छूटत। श्रृंग भेदि धरणीमहँ फूटत॥
रु द्रोण उतबाण चलावत। श्वेतश्यामरथ शोभा पावत॥
र्जुन कोपि किये संधाना। द्रोण अंग मारे शत बाना॥
रु द्रोण शर कोपि प्रहारे। सो शर पारथ के उर मारे॥
दो० तीस बाण अश्वन हने लक्षवाण हनुमान।
पीतांवर तन अरुणकरि महावीर बलवान॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय सरपे। गुरुपर लागि बाणबहुवरपे॥
ारथ द्रोण करत पुरुपारथ। बलसमदोउ करतमहभारथ॥
ोऊदल महँ लोहा बाजत। सिंहनाद क्षत्री गण गाजत॥
अर्जुन द्रोण सरस शर छांटत। बाणन ते वसुधा सबपाटत॥
ारशर भिरत होत चिग्धारा। योगिनि हाँकदेत करिहारा॥
थ ते उतरि भीम तब धाये। गदा घाव सब वीर गिराये॥
कृतवर्मा राजा सँग साथी। अश्वत्थाम नाम त्यहिहाथी॥
भीम उपर कुञ्जर जब धावा। बीचहिं अर्जुनमारिगिरावा॥
द्रोण पुत्र कीन्हों सन्धाना। क्रोधित भीम जुरे मैदाना॥
गुरुसुतलग्यो कठिनशरमारन। पांडवदल रणगिरिउहजारन॥
दो० भीमसेन अति क्रोधके गहिउठाय के रत्थ।
द्रोणसुतहिं फेंक्यउतबहिं महावीर समरत्थ॥
तीनि शतहिं योजन परिवेशा। विचिवश्यगयउ उड़ेउसोदेशा॥
भुवनेश्वर शंकर अस्थाना। अमरहुतेउनहिंत्यागेउप्राना॥

कह्यो भीम, सुनिये जगवंदन। द्रोणपुत्र फेंको गहिस्यंदन
यहिविधिकहिभूपहि समुझाई। शयन किये निद्रा तब आई
होत प्रात कीन्ही असवारी। कुरुपांडव साज्यो दलभारी
दो॰ वम्बदमामा होत हैं अरु वैरख फहरात।
क्रोधवंत रिससों भरे वीरचले सब जात॥
महा मत्त कुंजर वहु आवत। कंबुमनहुँ घनशब्द सुनावत
उड़िके गरद लागि असमानू। सूझिनपरत अलोप्यउभानू
हरित अरुण वैरख फहराने। उपमा इन्द्रधनुष समजाने
दोऊ दल अति शोभा पावत। हिंसत तुरँग जु पैदल धावत॥
धनु टंकोर घोर धुनि राजे। उभयफौजमहँ मारु विराजे॥
क्षत्री सकल करन रण लागे। अर्जुन द्रोण करण के आगे॥
श्वेत वर्ण पारथ रथ राजे। श्याम वर्ण रथ द्रोण बिराजे॥
हांक देत हांकत जगतारण। सारथि भये भक्तके कारण॥
अर्जुन द्रोण सरिसपुरुषारथ। दल चतुरंग भयानक भारथ॥
दो॰ दोउदलवीरन रण रच्येउ कहिनसकहिं कविबैन।
शरसमूह छाये गगन रविनाहिं सूझत नैन॥
कुंजर भिरत करत रण घोरा। होइ चौदन्त जोर सों जोरा॥
रथी रथी सों सरस लराई। छूटत बाण बुंद की नाईं॥
अश्व अश्व ले सम्मुख जोरहिं। शूलघाव सों बखतर फोरहिं॥
पैदल ते पैदल रण घोरा। अरु भे सबहिं जोरसे जोरा॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे। तोमर गदा खड्ग सों मारे॥
जूझि गिरहिं भारत मैदाना। सुरपुरगवनहिं चढे बिमाना॥
यहिविधि कराहिं युद्धकी करणी। रुंडमुंड पाटे सब धरणी॥
भूत बिताल योगिनी गावहिं। जंबुक अपनोभावदिखावहिं॥
उड़हिं काक अंत्रहि ले कैसे। टूटे डोरि चंग गति जैसे॥
यहि विधि होतभयानक भारथ। क्षत्री सबै करत पुरुषारथ॥
क्रोधके मारेउ तीक्ष्ण बान।

ही समय अब आयो पारथ। मुये द्रोण जीते हम भारथ॥
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों वचना। करत सदातुम मिथ्यारचना॥
दो० भूप युधिष्ठिर बूझिकै तबत्यागहिं हम प्रान।
मिथ्याकहत न धर्मसुत सदावचन परिमान॥
जबहिं द्रोण यह वचन सुनाये। तब हरि धर्मराय ढिग आये॥
तबहिं द्रोण राजा के आगे। कर उठाइ कै पूछन लागे॥
सत्यवचनतुमसबदिनभाष्यउ। हमदृढ़ता तुम ऊपर राख्यउ॥
भीम सुत तुम देखे नैना। हे नृप सत्य कहो यह बैना॥
श्रीहरि कहीं भूप कहि दीजे। अपने काज कहा नहिं कीजे॥
कहीं भूप सुनिये जगतारण। मिथ्यावचनकहहुक्यहिकारण॥
सात द्वीप संपति जो दीजे। तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजे॥
तब श्रीहरि असकहा बखानी। क्यहि कारण तुमभारतठानी॥
जबहिं भूपपांसा मन लाये। तब यह धर्म विचारन आये॥
राजा द्रुपद सुता पट रानी। गहिकर केश सभामहँआनी॥
दो० दुश्शासन अंचल गहे हरण चीरके काल।
तब यह धर्म कहां रहे भाष्यो दीनदयाल॥
तुमजब लाज छांड़िकै दीन्हेउ। द्रुपदसुताममसुमिरणकीन्हेउ॥
वातें बिसरीं क्यहि कारण। यहिविधिकहीजगतकेतारण॥
लाप भवन कुरुनाथ बनाये। अर्द्धरात्रिमहँ अनल लगाये॥
विदुर खम्भ को मारग लयऊ। तब तब धर्म कहां नृपगयऊ॥
जब भीमहिं विषभोजनदीन्हेउ। सुरसरिबोरिगमनघरकीन्हेउ॥
र पाताल कोन गहिगयऊ। तब यह धर्म कहां तब रह्यऊ॥
कृष्ण वचन नृपके मन आये। तबद्रोणहिं याविधिसमुझाये॥
अश्वत्थामा हत रण भयऊ। कहिनरकी कुंजर कहिदयऊ॥
आधे वचन द्रोण सुनिपाये। आधे महँ हरि शंख बजाये॥
सुनि कै द्रोण सत्यकरि जानो। अपनोमरण हृदयमहँ आनो॥
दो० यहि अंतरमहँ सतऋषि गगनपंथमहँ आय।

चूरण भये सहित रथ सारथ। लाग्योधकत्याग्यो पुरुषार
शंकर त्वरित नीर लेधाये। वदनसींचिके विप्र वचा
अर्जुन द्रोण सरिसरणमाच्यउ। जूझे घने अल्प दलवाच्य
सब सेना यहि भांति वखाना। जूझे द्रोणपुत्र मैदा
निजसेना सों द्रोण वखानत। कितसुतगयोकहहुतुमजान
सब मिलि कहं गुरू सों वैना। लरत भीमसों देख्यो नैन
की भाजो की जूझो रनमां। यहकछुजानि परेउनहिंमन
दो० कही द्रोण तब भीम सों जुरो हुतो तुम संग।
कहा भयो सुत कितगयो कहो सांच रणरंग॥
भाषो भीम गदा परिहारे। रथ समेत चूरण करि डा
सुनिके द्रोण चित्त अकुलाने। मिथ्या वात भीमकी जा
कह्यो द्रोण सों पारथ वैना। वध्यो भीम देख्यों में नैन
अर्जुन वचन सुनत मन ऊवो। करुणासिंधु वीच जिय डू
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना। पूर्व आपदा विधि निर्मा
अर्जुन के मन भयो अंदेशव। केहिविधि यापद पाईकेशव
श्री हरि कही सुनहु हो पारथ। अकथकथाविधिकीपुरुषार
तप साधत जव वनमहँ हते। मुनि सबके आश्रम यकमते
दो० मुनि कुमार क्रीड़ा करत सब मिलि एके संग।
उद्दालक सुत कह्यउ तब देखहु मेरो रंग॥
वाघ समान शब्द जो कीन्हा। ऋषिनारिनकहँवहुभयदीन्ह
वोलत द्रोण कूदि ढिग आवा। शब्द वेधि इन वाणचलावा
मुख लाग्योशर विधिकीकरणी। छूटे प्राण परेउ तब धरणी
सब बालक मिलि शोरमचायो। सुनिकेसकल विप्रगणधायो
द्रोणआइ देख्यो शिशु मर्यो। अपने चित्त शोच वहुकर्यो
क्रोधवंत उद्दालक भयऊ। द्रोणहिंनिरखिशापतवदयऊ
पुत्र शोक हा त्यागत प्राना। तुम ऐसे मरिहो रण ठाना।
यहिविधिशाप द्रोण कहँ दीन्हा। तवद्विजप्राणत्यागसोकीन्हा।

ह्वउ करजोरे शम्भु के आगे। यहिविधिविनयकरनतबलागे॥
फेंको रणते भीम भयंकर। प्राणदान दीन्हेउ मोहिंशंकर॥
यहिविधि वरदीजैम्वहिंस्वामी। होहुं जगत में मनसागामी॥
आजु राति पहुँचों कुरुखेता। कुरु पांडव जहँ सेन समेता॥
शंकर कही विलम्ब न लेहो। एक पहर महँ जाइ तुलेहो॥
पहर एक महँ आयो तहँवाँ। दलसमेत कुरुपतिरहजहँवाँ॥

दो० दुर्योधन भाषनलग्यो द्रोणी सुनिये बात।
आजुयुद्ध जूझे गुरु धृष्टद्युम्न असिघात॥

सो सुनि द्रोणी कीन्ह्यउक्रोधा। पांडव सहित वधों सबयोधा॥
धृष्टद्युम्न मारों मैदाना। तब पितहिं देहों जलदाना॥
यह सब कथा यहांतक रह्यो। धर्मराय उत हरिसों कह्यो॥
तुम आज्ञा में मिथ्या कह्यो। इहै शोच मेरे मन रह्यो॥
मिथ्या दोष रहो हे माधव। नहिंजानोंकरिहें विधिकाधव॥
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानी। धर्म कि गति सूक्ष्मयहजानी॥
मिथ्या करिके स्वर्ग सिधाये। शांति कहीते नरकहि पाये॥
समय विचारि बात जो कहिये। अंतकालमहँ ते सुखलहिये॥
धर्मराय परशंसा कीन्हा। हरिसों कथा सुपूंछे लीन्हा॥
तब श्रीहरि यहकह्यउबुझाई। नृप हरिचंद राज जब पाई॥

दो० सत्यधर्मपथ नेमव्रत सबहि चलत संसार।
साहभवन मूसनगयो गहो चोर को उवार॥

लेकेनृप आगे त्यहि कीन्हा। वधहुतुरत यह आज्ञा दीन्हा॥
तब कोटवार मारिबे लाग्यो। बंधन तोरि चोरसम भाग्यो॥
ऋषि आश्रमकेनिकटहिआवा। देख्यो लता सघनद्रुमछावा॥
चोर दूत नृप देखन नैना। यहिविधि छिपेउइहांमनुहैना॥
आइ गयो सब पाछे लागे। कह्योजोरिकर ऋषिकेआगे॥
चोर एक भागो इत आवा। सत्यकह्योमुनि जो लखिपावा॥
तब ऋषिकह्यो सत्यपह बैना। लता ओट में देख्यो नैना॥

भरद्वाज मुनि साथले द्रोणहिकहावुझाय ॥
तुम ऋषिवंश महा अभिमानी। क्षत्री धर्म करत
अस्त्रघाव जो प्राण गँवावहु। तौ तुमस्वर्गवास
मुनि सब देखि दंडवत कीन्हे। तबकरजोरि कहनकछुली
तुम आज्ञा माथे पर लीजे। ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब क
धरो धनुष भारी कर लीन्हो। कैआचमन देह शुचिकी
अंगन्यासकरि नासहिगह्यऊ। धरिकरध्यान मौनह्वै रह्य
यहि अन्तर विराट नृप आये। सिंहनाद कै हांक सुन
द्रोण सँभारि अस्त्र कर गहहू। मारतहौं तीक्षणशर सह
सुनिकै द्रोण क्रोधजियकीन्हा। ध्यानछांड़ि शारँगकरली

दो० दिव्यवाण संधानिकै किये द्रोण परिहार।
मुकुटसहितशिरटूटिकैपरयोधरणिविकरार ॥

भाषो ऋषिन द्रोण के आगे। छांड़िध्यान तुम लरिवेला
दोउकरजोरि द्रोणतब कह्यऊ। वरिहांक सुनि ज्ञान न रह्य
ताते मैं विराट बध कीन्हे। यह कहि वहुरिनीरकरली
करि अस्नान ध्यानदृढ़ साधो। परमज्योति मनमों अवरा
खंचीपवन ऊर्ध्वगति ध्याये। ब्रह्मरंध्र भेदन कहँ आ
निसरो पवन ऊर्ध्वगति भयऊ। हरि अर्जुनदेखन को गय
भरद्वाज ऋषि सत्तक जेते। ब्रह्मलोक सँग पहुँचे ते
भारत मन क्षत्री तब लाये। धृष्टद्युम्न क्रोधित होइ धा
रथते उतरि खड्ग ले हाथा। मारो जाय द्रोण को मा
शीश समेत परो तन धरणी। द्रुपदपुत्रकीन्हेउ यह करण

दो० पाण्डवदल जयजयकरत जीतिखड़ेमैदान।
कौरवदलहिं मलीनमन ज्योंसंध्याकोभान ॥

तब रथ हांकि करणचलिआये। आगे ह्वै सेना अटका
संध्या जानि कीन्ह तब गवना। कुरु पांडवआये फिरिभवन
आगे कथा कहन मन लायउ। अश्वत्थाम कछु चेत न पा

दो० सोसुनिविप्र अनन्दकै करि रंधन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं खायो एकहि साथ ॥

परशुराम तब क्रोधनिवारेउ । उठिकै अपने भवनसिधारेउ ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये । अन्त विप्र बैकुण्ठ सिधाये ॥
संशय धर्म्म भूप के कारण । यहिविधिआपकहीजगतारण॥
श्रीमाधव यह आप बखाने । भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने ॥
कही कृष्ण राजा सुनिलीजै । प्रात होत रण उद्यम कीजै ॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ । पन्द्रहदिवस वीतिगा भारथ ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं । कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं ॥
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक । महा मारु करि हैं परतक्षक ॥
सुरपति शक्तिलई यहिकारण । कर्ण वीर अर्जुन के मारण ॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै । वज्र शक्ति सों कौन बचै है ॥

दो० धर्मराय यहिविधिकही सुनिये श्रीभगवान ।
पांडव संकट परहिं जब तुम रक्षक परधान ॥

दीनबंधु जाके रथ सारथ । मारिसकै को रणमहँ पारथ ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण । मेरेबल तुमहीं जगतारण ॥
यहसुनिकृष्णबहुतसुख मान्यो । नृपकहँ परम हितूकै जान्यो ॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये । करि आदर आसन बैठाये ॥
तुम बल यह भारत हमठाना । मृत्युशेष आयो नियराना ॥
मुकुट बांधि सेनापति हूजै । अर्जुन रण समतानहिंदूजै ॥
नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ । पांडव सैन्य वधों रणभारथ ॥
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि । निश्चय अर्जुनबंधुसँहारहि ॥
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये । सेनापति करिमुकुट बँधाये ॥

दो० पांडव के रक्षक सदा भक्त वश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते द्रोणाऽर्जुनयुद्धद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

इति द्रोणपर्वसमाप्तम् ॥

लै कोटवार बांधि तेहिटखो। तब नृप चोर केर वधकर
यह अपराध ऋषय शिरपखो। अन्तकालनरकहि थलकर
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी। समयजानि के बोलियवा

दो० सत्यवचन सों भाषि के परोनरक अतिघोर।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ नृपवध कीन्हे चोर॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई। श्रीमाधव यह कथा सुना
परशुराम त्रेता अवतारा। क्षत्रिनमारि उतारेउ भार
पिता वैर कारण व्रत लीन्हे। इकइस बार निक्षत्रक कीन्हे
भूप सुवाहु वधो वल भारी। पुर हस्तिना केर अधिकारी
भूप मारि सेना सब जीते। भागे युग कुमार भयभीते
भृगुपति तिनके पाछे धाये। विप्रभवनमहँ बालक आये
महात्रासतब वदन सुखाने। हिमऋतुमनहुँकमलकुम्हिलाने॥
द्विजके चरण गिरे दुउ बालक। शरणागत कीजे प्रतिपालक॥
परशुराम त्यहि अंतर आये। महाक्रोध करिहांक सुनाये॥
बालकबेगि निकरिनाहिंआवत। नहिंतौयहिघर आगिलगावत॥

दो० समय होय तबविप्रवर परे चरण तब आय।
स्वामी यह कारणकहा आपुहिआयो धाय॥

क्षत्री के बालक दुइ आये। तेरे भवन देखि हम पाये॥
देहु निकारि तुरत वध करऊं। तव अपनेभवनाहिंअनुसरऊं॥
दुइ बालक मेरे घर अहईं। हैंद्विज जाति पढ़तइतरहईं॥
परशुरामकहि बालक लावहु। तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु॥
विप्रकही चलिये अब भवना। अभिअंतरकहँ कीजै गवना॥
जबद्विज अभिअंतर लै आयो। दुउबालकतबआनिदिखायो॥
परशुराम देखत अनुमाना। क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना॥
मिथ्या कहो विप्र क्यहिकारण। हैं क्षत्री दीजै म्वहिंमारण॥
कोटि शपथ के विप्रबखाना। द्विजबालकहम निश्चय जाना॥
रंधन करि बालक के हाथा। भोजन करहु विप्र इनसाथा॥

दो० सोसुनिविप्र अनन्दके करि रंधन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं खायो एकहि साथ ॥
परशुराम तब क्रोधनिवारेउ । उठिके अपने भवनसिधारेउ ॥
मिथ्या कहिके जाति गँवाये । अन्त विप्र बैकुण्ठ सिधाये ॥
संशय धर्म्म भूप के कारण । यहिविधिआपकहीजगतारण॥
श्रीमाधव यह आप बखाने । भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने ॥
कही कृष्ण राजा सुनिलीजे । प्रात होत रण उद्यम कीजे ॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ । पन्द्रहादिवस बीतिगा भारथ ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं । कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं ॥
जयदिन कर्ण सेन के रक्षक । महा मारु करि हैं परतक्षक ॥
सुरपति शक्तिलई यहिकारण । कर्ण वीर अर्जुन के मारण ॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै । वज्र शक्ति सों कौन बचै है ॥
दो० धर्मराय यहिविधिकही सुनिये श्रीभगवान ।
पांडव संकट परहिं जब तुम रक्षक परधान ॥
दीनबंधु जाके रथ सारथ । मारिसके को रणमहँ पारथ ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण । मेरेबल तुमहीं जगतारण ॥
यहसुनिकृष्णबहुतसुख मान्यो । नृपकहँ परम हितूके जान्यो ॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये । करि आदर आसन बैठाये ॥
तुम बल यह भारत हमठाना । मृत्युशेष आयो नियराना ॥
मुकुट बांधि सेनापति हूजे । अर्जुन रण समतानहिंदूजे ॥
नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ । पांडव सैन्य बधों रणभारथ ॥
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि । निश्चय अर्जुनबंधुसँहारहि ॥
सुनिके दुर्योधन सुख पाये । सेनापति करिमुकुट बँधाये ॥
दो० पांडव के रक्षक सदा भक्त वश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
द्रोणाऽर्जुनयुद्धद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥
इति द्रोणपर्वसमाप्तम् ॥

लै कोटवार बांधि तेहिटरयो। तव नृप चोर केर बधकरयो॥
यह अपराध ऋषय शिरपरयो। अन्तकालनरकहि थलकरयो॥
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी। समयजानि के बोलियवानी॥
दो० सत्यवचन सों भाषि के परेनरक अतिघोर।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ नृपवध कीन्हे चोर॥
मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई। श्रीमाधव यह कथा सुनाई॥
परशुराम त्रेता अवतारा। क्षत्रिनमारि उतारेउ भारा॥
पिता बैर कारण व्रत लीन्हे। इकइस वार निक्षत्रक कीन्हे॥
भूप सुबाहु वधो बल भारी। पुर हस्तिना केर अधिकारी॥
भूप मारि सेना सब जीते। भागे युग कुमार भयभीते॥
भृगुपति तिनके पाछे धाये। विप्रभवनमहँ बालक आये॥
महात्रासतव वदन सुखाने। हिमऋतुमनहुंकमलकुम्हिलाने॥
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक। शरणागत कीजे प्रतिपालक॥
परशुराम त्यहि अंतर आये। महाक्रोध करिहांक सुनाये॥
बालकवेगि निकरिनाहिंआवत। नहिंतोयहिघरआगिलगावत॥
दो० सभय होय तवविप्रवर परे चरण तव आय।
स्वामी यह कारणकहा आपुहिआयो धाय॥
क्षत्री के बालक दुइ आये। तेरे भवन देखि हम पाये॥
देहु निकारि तुरत वध करऊं। तव अपनेभवनहिंअनुसरऊं॥
दुइ बालक मेरे घर अहईं। हंद्विज जाति पढ़तइतरहईं॥
परशुरामकहि बालक लावहु। तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु॥
विप्रकही चलिये अब भवना। अभिअंतरकहँ कीजे गवना॥
जवद्विज अभिअंतर लै आयो। द्वउबालकतवआनिदिखायो॥
परशुराम देखत अनुमाना। क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना॥
मिथ्या कहो विप्र क्यहिकारण। हैं क्षत्री दीजै म्वहिंमारण॥
कोटि शपथ कै विप्रवखाना। द्विजबालकहम निश्चय जाना॥
रंधन करि बालक के हाथा। भोजन करहु विप्र इनसाथा॥

दो० सोसुनिविप्र अनन्दकै करि रंधन शिशुहाथ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं खायो एकहि साथ॥

परशुराम तब क्रोधनिवारेउ। उठिकै अपने भवनसिधारेउ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये। अन्त विप्र बैकुण्ठ सिधाये॥
संशय धर्म्म भूप के कारण। यहिविधिआपकहीजगतारण॥
श्रीमाधव यह आप बखाने। भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने॥
कही कृष्ण राजा सुनिलीजै। प्रात होत रण उद्यम कीजै॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ। पन्द्रहदिवस वीतिगा भारथ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं। कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं॥
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक। महा मारु करि हैं परतक्षक॥
सुरपति शक्तिलई यहिकारण। कर्ण वीर अर्जुन के मारण॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै। वज्र शक्ति सों कौन बचै है॥

दो० धर्मराय यहिविधिकही सुनिये श्रीभगवान।
पांडव संकट परहिं जब तुम रक्षक परधान॥

दीनबंधु जाके रथ सारथ। मारिसकै को रणमहँ पारथ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण। मेरेबल तुमहीं जगतारण॥
यहसुनिकृष्णबहुतसुख मान्यो। नृपकहँ परम हितूकै जान्यो॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये। करि आदर आसन बैठाये॥
तुम बल यह भारत हमठाना। मृत्युशेष आयो नियराना॥
मुकुट बांधि सेनापति हूजै। अर्जुन रण समतानहिंदूजै॥
तप देख्यो मेरो पुरुषारथ। पांडव सैन्य बधों रणभारथ॥
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि। निश्चय अर्जुनबंधुसँहारहि॥
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये। सेनापति करिमुकुट बँधाये॥

दो० पांडव के रक्षक सदा भक्त वश्य भगवान।
द्रोणपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
द्रोणाऽर्जुनयुद्धद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

इति द्रोणपर्वसमाप्तम्॥

लै कोटवार बांधि तेहिदस्यो। तब नृप चोर केर वधकस्यो
यह अपराध अपय शिरपस्यो। अन्तकालनरकहि थलकस्यो
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी। समयजानि के बोलियवानी

दो० सत्यवचन सों भाषि के परोनरक अतिवोर।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ नृपवध कीन्हे चोर॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई। श्रीमाधव यह कथा सुनाई
परशुराम त्रेता अवतारा। क्षत्रिनमारि उतारेउ भारा।
पिता वैर कारण ब्रत लीन्हे। इकइस वार निक्षत्रक कीन्हे।
भूप सुबाहु बधो बल भारी। पुर हस्तिना केर अधिकारी।
भूप मारि सेना सब जीते। भागे युग कुमार भयभीते।
भृगुपति तिनके पाछे धाये। विप्रभवनमहँ बालक आये॥
महात्रासतब वदन सुखाने। हिमऋतुमनहुँकमलकुम्हिलाने॥
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक। शरणागत कीजे प्रतिपालक॥
परशुराम त्यहि अंतर आये। महाक्रोध करिहांक सुनाये॥
बालकवेगि निकरिनाहिंआवत। नहिंतौयहिघरआगिलगावत॥

दो० सभय होय तवविप्रवर परे चरण तब आय।
स्वामी यह कारणकहा आपुहिआयो धाय॥

क्षत्री के बालक दुइ आये। तेरे भवन देखि हम पाये॥
देहु निकारि तुरत बध करऊं। तब अपनेभवनहिंअनुसरऊं॥
दुइ बालक मेरे घर अहईं। हैंद्विज जाति पढ़तइतरहईं॥
परशुरामकहि बालक लावहु। तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु॥
विप्रकही चलिये अब भवना। अभिअंतरकहँ कीजे गवना॥
जबद्विज अभिअंतर लै आयो। द्वउबालकतबआनिदिखायो॥
परशुराम देखत अनुमाना। क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना॥
मिथ्या कहो विप्र क्यहिकारण। हैं क्षत्री दीजे म्वहिंमारण॥
कोटि शपथ के विप्रबखाना। द्विजबालकहम निश्चयजाना॥
रंधन करि बालक के हाथा। भोजन करहु विप्र इनसाथा॥

दो॰ सोसुनिविप्र अनन्दके करि रंधन शिशुहाथ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं खायो एकहि साथ॥
परशुराम तब क्रोधनिवारेउ। उठिके अपने भवनसिधारेउ॥
मिथ्या कहिके जाति गँवाये। अन्त विप्र बैकुण्ठ सिधाये॥
संशय धर्म्म भूप के कारण। यहिविधिआपकहीजगतारण॥
श्रीमाधव यह आप बखाने। भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने॥
कही कृष्ण राजा सुनिलीजे। प्रात होत रण उद्यम कीजे॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ। पन्द्रहदिवस बीतिगा भारथ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं। कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं॥
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक। महा मारु करि हैं परतक्षक॥
सुरपति शक्तिलई यहिकारण। कर्ण वीर अर्जुन के मारण॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै। वज्र शक्ति सों कौन बचै है॥
दो॰ धर्मराय यहिविधिकही सुनिये श्रीभगवान।
पांडव संकट परहिं जब तुम रक्षक परधान॥
दीनबंधु जाके रथ सारथ। मारिसके को रणमहँ पारथ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण। मेरेबल तुमहीं जगतारण॥
यहसुनिकृष्णबहुतसुख मान्यो। नृपकहँ परम हितूके जान्यो॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये। करि आदर आसन बैठाये॥
तुम बल यह भारत हमठाना। मृत्युशेष आयो नियराना॥
मुकुट बांधि सेनापति हूजे। अर्जुन रण समतानहिंदूजे॥
नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ। पांडव सैन्य वधों रणभारथ॥
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि। निश्चय अर्जुनबंधुसँहारहि॥
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये। सेनापति करिमुकुट बँधाये॥
दो॰ पांडव के रक्षक सदा भक्त वश्य भगवान।
द्रोणपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
द्रोणाऽर्जुनयुद्धद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥
इति द्रोणपर्वसमाप्तम्॥

ले कोटवार बांधि तेहिटस्यो। तब नृप चोर केर वधकस्यो
यह अपराध ऋपय शिरपस्यो। अन्तकालनरकहि थलकस्यो
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी। समयजानि के बोलियबानी

दो० सत्यवचन सों भाषि के परोनरक अतिघोर।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ नृपवध कीन्हे चोर॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई। श्रीमाधव यह कथा सुनाई
परशुराम त्रेता अवतारा। क्षत्रिनमारि उतारेउ भारा
पिता बैर कारण व्रत लीन्हे। इकइस वार निक्षत्रक कीन्हे
भूप सुबाहु बधो बल भारी। पुर हस्तिना केर अधिकारी
भूप मारि सेना सब जीते। भागे युग कुमार भयभीते
भृगुपति तिनके पाछे धाये। विप्रभवनमहँ बालक आये
महात्रासतब वदन सुखाने। हिमऋतुमनहुँकमलकुम्हिलाने
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक। शरणागत कीजे प्रतिपालक॥
परशुराम त्यहि अंतर आये। महाक्रोध करिहांक सुनाये॥
बालकबेगि निकरिनाहिंआवत। नहिंतौयहिघरआगिलगावत॥

दो० सभय होय तबबिप्रवर परे चरण तब आय।
स्वामी यह कारणकहा आपुहिआयो धाय॥

क्षत्री के बालक दुइ आये। तेरे भवन देखि हम पाये॥
देहु निकारि तुरत वध करऊं। तब अपनेभवनहिंअनुसरऊं॥
दुइ बालक मेरे घर अहई। हैंद्विज जाति पढ़तइतरहई॥
परशुरामकहि बालक लावहु। तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु॥
विप्रकही चलिये अब भवना। अभिअंतरकहँ कीजै गवना॥
जबद्विज अभिअंतर ले आयो। द्वउबालकतबआनिदिखायो॥
परशुराम देखत अनुमाना। क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना॥
मिथ्या कहो विप्र क्यहिकारण। हैं क्षत्री दीजे म्वहिंमारण॥
कोटि शपथ के विप्रबखाना। द्विजबालकहम निश्चय जाना॥
रंधन करि बालक के हाथा। भोजन करहु विप्र इनसाथा॥

दो॰ सोसुनिविप्र अनन्दके करि रंधन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं खायो एकहि साथ ॥
रशुराम तब क्रोधनिवारेउ । उठिके अपने भवनसिधारेउ ॥
ध्या कहिके जाति गँवाये । अन्त विप्र वैकुण्ठ सिधाये ॥
शय धर्म्म भूप के कारण । यहिविधिआपकहीजगतारण॥
ामाधव यह आप बखाने । भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने ॥
ही कृष्ण राजा सुनिलीजे । प्रात होत रण उद्यम कीजे ॥
षम द्रोण किये पुरुषारथ । पन्द्रहादिवस बीतिगा भारथ ॥
ठिन युद्ध आगे नृप करिहैं । कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं ॥
यदिन कर्ण सेन के रक्षक । महा मारु करि हैं परतक्षक ॥
रपति शक्तिलई यहिकारण । कर्ण वीर अर्जुन के मारण ॥
ो अर्जुन कहँ देखन पैहे । वज्र शक्ति सों कौन बचै है ॥
दो॰ धर्मराय यहिविधिकही सुनिये श्रीभगवान ।
पांडव संकट परहिं जब तुम रक्षक परधान ॥
निबंधु जाके रथ सारथ । मारिसके को रणमहँ पारथ ॥
रुपति जरत सेनबल कारण । मेरेबल तुमहीं जगतारण ॥
हसुनिकृष्णबहुतसुख मान्यो । नृपकहँ परम हितूके जान्यो ॥
योधन तब कर्ण बोलाये । करि आदर आसन बैठाये ॥
म बल यह भारत हमठाना । मृत्युशेष आयो नियराना ॥
कुट बांधि सेनापति हूजे । अर्जुन रण समतानहिंदूजे ॥
प देख्यो मेरो पुरुषारथ । पांडव सैन्य बधो रणभारथ ॥
ानि दिवस मोरे शिर भारहि । निश्चय अर्जुनबंधुसँहारहि ॥
निके दुर्योधन सुख पाये । सेनापति करिमुकुट बँधाये ॥
दो॰ पांडव के रक्षक सदा भक्त वश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते
द्रोणाऽर्जुनयुद्धबद्रोणवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥
इति द्रोणपर्वसमाप्तम् ॥



अथ कर्णपर्व ।

थमहिंकरिगुरु चरण प्रणामा । जाते होहिंसिद्धि सवकामा ॥
ंदौं रामचन्द्र गुणसागर । सीतापति रघुवंश उजागर ॥
हिमाअगम और नहिंजाना । परम भक्त जानत हनुमाना ॥
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा । तिथिपंचम यहकथाप्रकासा ॥
संवत सत्रह शत चौवीशा । नौरँगशाह दिलीपति ईशा ॥

दो० रघुपति चरण मनाइ के व्यासदेव धरिध्यान ।
कर्ण पर्व भाषा रचेउ सवल सिंह चौहान ॥

गुरू द्रोण जूझे मैदाना । दुर्योधन तव आपु वखाना ॥
द्रौणी कर्ण शल्य सव अत्री । अरु अनेक वैठे हैं क्षत्री ॥
अव काके शिर मुकुट वँधेये । जाते जयति पत्र रण पैये ॥
द्रौणी कहा भूप सुनि लीजे । आपु शोच केहिकारणकीजे ॥
कै मेरे शिर दीजे भारा । नातरु कर्णकरहु सरदारा ॥
रवि सुत कर्ण महावल भारी । अर्जुन के समान धनुधारी ॥
तव राजा यहि भांति वखाना । गुरुसुतवचनकह्यो परमाना ॥
शकुनी शल्य दुशासन भाखो । दल को भार कर्ण पर राखो ॥
कही कर्ण कुरुनाथ भुवारा । जो सौंपत मेरे शिर भारा ॥
करिके युद्ध पाण्डवन मारहुं । सेना सहित न एक उवारहुं ॥
अर्जुन सहितएकगुणभारथ । मनगामी श्री पति हैं सारथ ॥
कृष्ण समान सारथी पावों । कोदिन अर्जुन मारिगिरावों ॥

दो॰ शकुनी कह्यो बिचारिकै दुर्योधन सों वैन।
शल्य सारथी कृष्णसम और न देखो नैन ॥

मामा शल्य रचहु पुरुपारथ । कर्णरथहि होवहु तुमसारथ॥
कही शल्य नृप लोग न थोरे । कर्णरथहि हमहांकहिं घोरे॥
कुरुपति कही शल्य सुनुराजा । कहा न कीजतु अपनो काजा॥
सारथि होहुहमारे स्वारथ । कृष्ण समेत जीतिये पारथ॥
करगहि नृप बहुभांति बुझाये । शल्यहि लिये कर्ण पहँ आये॥
कृष्ण समान सारथी लीजै । रणमहँ सवपांडव बधकीजै॥
सुनिकै कर्ण अनंदहि छाये । धाइ शल्य कहँ कंठ लगाये॥
शल्य नरेश सारथी मेरो । अब अर्जुनसम बधों घनेरो॥
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ । एकते एकसरिस नहिं कोऊ॥
बिप्रन सकल वेदध्वनिकीन्हे । मुकुट नरेश कर्णशिर दीन्हे॥
सब दिन मेरो मित्र भरोसव । अर्जुन सहित जीतिहैं केशव॥

दो॰ सेनापति कर्णहिं किये मुकुट बांधिकै शीश ।
धर्मराय सों इतकहत सत्यसिंधु जगदीश ॥

अबअनर्थ उपजा अति भारी । रविसुत कुरुसेनाअधिकारी॥
लिये बोलि सहदेवहि आये । सब मिलिमंत्रविचारन लाये॥
कही कृष्ण कुन्ती पहँ जैये । पांचौ बाण मांगि ले ऐये॥
जेशर परशुराम तेहि दीन्हे । अर्जुन बधन प्रतिज्ञा कीन्हे॥
नितप्रति वह पूजतहै बाना । पारथ पर करिहै संधाना॥
तब हमहूँ नाहिं सकैं वचावन । यहि विधिकहीपतितकेपावन॥
हम नाके जानतहैं भेवा । की पूंछहु मंत्री सहदेवा॥
की कुन्ती जानति है तनमों । पाप धर्म दोऊ हैं मन मों॥
द्रौणी कर्ण बिलंब न लइहै । माता जानि त्वरितसो दइहै॥
सुनि कुन्ती उठिकीन्हेउगवना । आई त्वरित कर्ण के भवना॥
उठिकै कर्ण किये परणामा । मातुगमन कीन्हे केहिकामा॥
सुनिकुन्ती यह बात जनाई । अर्जुन कर्ण सहोदर भाई॥

दो० जेठे धर्मज पुत्र तिन लह्यो राजको भार ।
जन्मे मेरे उदर महँ आये यहि संसार ॥
सुनिके कर्ण कही यह बाता । क्षत्री धर्म कठिन है माता ॥
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक । अबतुम कही हमारे बालक ॥
अशन बसन बहुभांति बड़ाई । दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई ।
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल । ऐसे समय कहा कीजे छल ।
सात द्वीप इंद्रासन पावों । तौयहिसमयनचित्त डोलावों ।
तब कुंती मांग्यो सो बाना । कर्णदीन्ह मनभयनहिंआना ।
जे दिनकर दीन्ह्यों ते बाना । माता को दीन्हों करिदाना ।
कर्ण भये सेनापति भाई । इंद्रलोक महँ परी अवाई ।
सुनिकेइंद्र चितहि दुख मानो । अब अर्जुनकोभयो निदानो ।
सुत सनेह हित तुरत सिधाये । चढ़िविमान कुरुखेतहिआये ।
रथ ते उतरि द्वार पगुधारे । कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ।
द्रौणी तब तहँ आय जनायो । देव नाथ द्वारे पर आयो ।
आतुर चल्यो बहुत सुखमाना । अपनो जन्मसुफलकरिजाना
परदक्षिणा प्रणाम जनाये । चरण रेणु ले माथ लगाये
आजु सुफल दिनभयो हमारा । देवनाथ द्वारे पगु धारा
तुम तौ तीन लोक के स्वामी । कहियजानि आपनअनुगामी
सहस नयन तब कहा विचारी । सुनहु करण यह बातहमारी
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो । हमहूँ कछु मांगनको आयो
कहौं सत्य जो मांगे दीजे । तब तुम ते याचज्ञा कीजे

दो० कही कर्ण आनंद सों कियो सत्य यह जान ।
नाहिंन कीन्हा जन्मभरि दीजे तनधनप्रान ॥
मेरो कर्म सबन सों भारी । जोसुरपतिभयोआयभिखारी
मांगो तुरत गहरु जनि लावहु । जो इच्छाकरिहौ स्वइपावहु
दाता हौ सब लोक बखाना । कुण्डल कवच दीजियदाना
जन्मसमय जो दिनकर दीन्हा । ते हम अब याचज्ञा कीन्हा

सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो। ताल छोरिकै कवचहि काढ़्यो॥
हँसिकै कर्ण इंद्र कर दीन्ह्यो। साधुसाधु सब देवन कीन्ह्यो॥
देवराज तब बाहर आये। चढ़ि विमान चलिबे मन लाये॥
अति अटको धरणी रथ जोरे। हांकि थके मातलि सो घोरे॥
चकित ह्वै तब कह्यो पुरंदर। अचल विमान भयो ज्यों मंदर॥
तब मातलि यहि भांति बखाना। पापभार नहिं चलत विमाना॥
सुर राजा याचज्ञा लायो। भयो पाप रथ चलै न पायो॥
धन्य कर्ण जग में यश पायो। जिन सुरपति को हाथ बँदायो॥
दो० कह मातलि तब इंद्रसों वचन सुनो परिमान।
कर्णहि हाथ उठाइये जाहि अकाश विमान॥
सुनिकै इंद्र कर्ण पहँ आये। धन्यधन्य कहि वचन सुनाये॥
मांगहु वर जो इच्छा होई। तव समान दाता नहिं कोई॥
सुनिकै कर्ण कहै मन लाये। आखर चारि न गुरु पढ़ाये॥
नाहिं न पढ़े ज्ञान मो अपने। कहूं कह्यो कबहूं नहिं सपने॥
कही इंद्र यह हठहि तुम्हारो। निष्फल दर्शन होइ हमारो॥
मांगहु वर तुम को कछु दीजै। तब हम गमन अमरपुर कीजै॥
कही कर्ण मांगहुँ नाहिं मुखते। लियो चहहु तौ देहौं सुखते॥
निकरहिं प्राण देह बरु छांडै। कबहुं न कर्ण हाथ को वाडै॥
कह्यो इंद्र जब दानहिं दीजै। विप्रमुखहिं कछु आशिष लीजै॥
परशुराम धनु विया दीन्हे। तब तुम चरण परशिकै लीन्हे॥
कहयो इंद्र यह नीति विचारो। सुनो कर्ण यक वचन हमारो॥
क्षत्री होइ दान जो लेई। ता कहँ दोष कोउ नहिं देई॥
दो० कर्ण अस्त्र गहि लीजिये विदित वेद यह बैन।
भाष्यो व्यास विचारिकै जहां देन तहँ लैन॥
कही कर्ण जो अति हठ कीजै। वज्र शक्ति म्वहिं मांगि दीजै॥
सुनिकै इंद्र शक्ति तब दीन्हें। बहुरि वचन यह कहि बैलीन्हे॥
वज्र शक्ति जानत संसारा। यह तो है तिज अस्त्र हमारा॥

कर्ण वीर जो यहै चलैहो। ताहि मारि मेरे कर ऐहो॥
चढ़े जाइ रथ कीन्ह्यो गवना। आये धर्मराय के भवना॥
राजा देखि दण्डवत कीन्हा। हृदय लगाय शक्तवलीन्हा॥
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये। कुण्डलकवच मांगिहमलाये॥
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई। कवचभेद भेदहि नहिंकोई॥
ना कारण दोऊ हम लीन्हे। तेहिते वज्रशक्ति नहिंदीन्हे॥
अर्जुन कर्ण वैर है भारी। तुम रक्षा करिहो वनवारी॥
कहि सुरसाइँ गमन तव कीन्हे। धर्मराय सेनहिं मन दीन्हे॥
गातहोत दोऊ दल साजे। शब्द अघात बाजने बाजे॥
दो० गज काछे हय पाखरहि जोते सारथि रत्थ।
पहिरिसजोदल अस्त्रलै चढ़े वीर समरत्थ॥
शील नरेश आपु रथ साजे। पहिरिसनाह कर्णदल गाजे॥
द्रोणी वीर दुशासन चढ्यो। अरुअनेकवीरनमनबढ्यो॥
शकुनी कृतवर्मा से क्षत्री। दुर्मुख द्विरद महाबल अत्री॥
दुर्योधन रथ सोहै कैसे। इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
ाहिविधि चढ़े साजि सब सेना। कहो कर्ण राजा सों बैना॥
क्षयद्रोण है अर्जुन बांधे। घटत नाहिं कोटिनशरसांधे॥
र रथ जो शर पहुँचैहो। रणमहँ विजयपत्र तबपैहो॥
जा कहो धरो जनि धोखा। दोऊहाथ चलतशर चोखा॥
ाहजार हाथिन पर लादे। चित्रितसबहि एकनहिंसादे॥
ाहजार भरि ऊंट लदाये। दशहजार गाड़िन भरवाये॥
ासहजार कहारन दीन्हे। चलेसाथसबहिंगिनलीन्हे॥
नकफोंक अतितीक्षणधारा। गीध पक्ष ते सबहिं सवांरा॥
दो० कुरुपति चले साजिदल सेना सिंधुसमान
कर्ण तेज इमि देखिये मनहुं दूसरो भान॥
रत पीत वैरख फहराने। अरुणश्यामरंगसबुजसोहाने॥
हिविधि ते कीन्हेउदलसाजा। बाजन लाग युद्धके बाजा॥

सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़्यो । तालछोरिकै कव...
हँसिकै कर्ण इंद्र कर दीन्ह्यो । साधुसाधु सब दे...
देवराज तब बाहर आये । चढ़िविमान चालिबेमनला
अति अटको धरणी रथ जोरे । हांकि थके मातलि सो घो
चक्रित ह्वै तब कह्यो पुरंदर । अचल विमानभयोज्योंमंद
तब मातलि यहिभांति बखाना । पापभार नहिंचलत विमान
सुर राज़ा याचङ्गा लायो । भयो पाप रथ चले न पाय
धन्य कर्ण जग में यश पायो । जिनसुरपतिको हाथवँदाय
दो० कह मातलि तब इंद्रसों बचनसुनो परिमान ।
कर्णहि हाथ उठाइये जाहि अकाश विमान ॥
सुनिकै इंद्र कर्ण पहँ आये । धन्यधन्यकहि बचनसुनाये॥
मांगहु वर जो इच्छा होई । तव समान दाता नहिंकोई॥
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये । आखर चारि न गुरुपढ़ाये॥
नाहिंन पढ़े ज्ञान मो अपने । कहूं कह्यो कबहूं नहिंसपने॥
कह्यो इंद्र यह हठहि तुम्हारो । निष्फल दर्शन होइ हमारो॥
मांगहु वर तुम को कछु दीजे । तबहमगमन अमरपुरकीजे
कह्यो कर्ण मांगहुँ नाहिं मुखते । लियो चहहु तो देहों सुखते॥
निकराहिं प्राण देह वरु छांडे । कबहुं न कर्ण हाथ को वाड़े॥
कह्यो इंद्र जब दानहिं दीजे । विप्रमुखहिंकछुआशिषलीजे॥
परशराम धन विद्या दीन्हे । तबतमचरण परशिकै लीन्हे॥

[illegible]नी सहदेवहि संग्रामा। जुरे वीर अपने जय कामा॥
[illegible]लहि कृतवर्मा सों भारथ। दोऊ सबलरच्यउ पुरुपारथ॥
[illegible]पति धर्मराइ तव सरसे। छूटे वाण बूंद सम बरसे॥
उत्कचाहिं द्विरद संग्रामा। कुरुपति धर्मराइ के कामा॥
[illegible] सांगि मुद्गर परिहारे। कोऊ गदा कोपि शिर मारे॥
[illegible]ग कटार उवाहहिं चोखे। लागत जहां रहतनहिं धोखे॥
[illegible] पाश साजि शिर मेले। अरस परसकरि आगे पेले॥
[illegible] कर्ण ते सरस लराई। महा युद्ध कीन्हे प्रभुताई॥
[illegible] बीर ऐसे शर जोड़े। मारे रथके चारिउ घोड़े॥
[illegible]रथ भये भीमहिं जव जाने। धृष्टद्युम्न तब शारँग ताने॥
[illegible]हि बिधि सरस वाण संधाने। कुरुदलकेशर छाँह छिपाने॥
[illegible]रथहु भीम घात बनिआये। लैकर गदा क्रोधकरि धाये॥

दो० कर मुष्टिका प्रहार ते मारेउ सेन अनंत।
गदा घाव लोटत परे मतवारे मयमंत॥

[illegible]लि द्विरदआगे चलिआयउ। भीम उपर शतवाणचलायउ॥
[illegible]रद संग आये शत भाई। ते सब वाण वृष्टि झरिलाई॥
[illegible]माहिं घेरि लगे शर मारन। इत अकेल उतवीर हजारन॥
[illegible]रद आइ मुद्गर परिहारे। भीमसेन बायें कर मारे॥
[illegible]गरद शीश परो तब धरणी। देखी सबन भीमकी करणी॥
[illegible]हहिगिरतसबैमिलिधायउ। शूलशेल सबवाण चलायउ॥
[illegible]हुतक आनि गदा परिहारे। बहुतकआनिखड्गशिरझारे॥
[illegible]धित भीम भयो अतिताते। शतवन्धहु महँ वीस निपाते॥
[illegible] वीर ऐसे शर जोरे। धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे॥
[illegible]ल्य सारथी रथ पहुंचावा। रहुरे भीम कर्ण अब आवा॥
यह कहिके मारे तीक्षण शर। घायल ह्वै के फिरे वृकोदर॥

दो० पांडव दल जूझे घने लगत कर्ण के बान।
धर्मराय यह देखिके कीन्हे शर संधान॥

करगहि धनु कीन्हें संधाना । कर्ण अंग मारे दश
अपर बीस शर पायल छूटे । ते सब शरहु हृदयमहँ
हँसिके कर्ण बाण दश लीन्हे । भूप अंग शर भेदन कीन्हे
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई । तुम मोसों रण रची लराई
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ । मेरे बल समान है पारथ
शल्य सारथी कर्ण चेताये । बांधो नृपति घात भलपाये
जो लगि धर्मराय लै आये । जयतिपत्र भारत महँ पाये
नागफांसको उद्यम कीन्हे । धर्मराइ खगपति शर लीन्हे
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ । धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयंकर । मुंडमाल कीन्हेउ गर शंकर
द्रौणी सों अर्जुन पुरुषारथ । कीन्हो महा भयंकर भारथ
सहस बाण द्रोणी तब छांटे । आवत बीचहि पारथ काटे

दो० अर्जुन द्रौणी रणमचो छूटत बाण अनंत ।
हयरथ पैदल गिरत हैं मतवारे मयमंत ॥

दूनों दल महँ परी लराई । संध्या काल आइ नियराई
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना । आपुयुद्ध कहँ करहुपयाना
माया युद्ध करिय यहि रूपा । मारोमिलि कौरवपति भूपा
करत प्रणाम असुर सब धाये । कुरुसेना के ऊपर आये
गगन पंथ कीन्ही अँधियारी । बरषहिंबाण मनहुँघनभारी
वृक्ष अनेक गगन ते छूटत । लागत शिला सेनाशिरफूटत
यहिविधिमारु भयानक कीन्हे । अंधकारकछु जात न चीन्हे
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा । कोउ न रहेउ काहु के साथा
अपने मन सांचो करिजानेउ । प्रलयकालअबआयतुलानेउ
दुर्योधन तब आपु पुकारे । कहां कर्ण हैं मित्र हमारे
मारहु असुर बिलंब न लावहु । संकट ते अब मोहिंबचावहु

दो० कर्ण कही राजा सुनहु बधहुं असुर जो आज ।
बजू शक्ति मेरे अहै राखेउँ अर्जुन काज ॥

करगहि धनु कीन्हें संधाना। कर्ण अंग मारे दश बाना॥
अपर बीस शर पायल छूटे। ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे॥
हँसिके कर्ण बाण दश लीन्हे। भूप अंग शर भेदन कीन्हे॥
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई। तुम मोसों रण रची लराई॥
तुमते कहा कराहिं पुरुषारथ। मेरे बल समान है पारथ॥
शल्य सारथी कर्ण चेताये। बांधो नृपति घात भलपाये॥
जो लगि धर्मराय लै आये। जयतिपत्र भारत महँ पाये॥
नागफांसको उद्यम कीन्हे। धर्मराइ खगपति शर लीन्हे॥
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ। धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ॥
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयंकर। मुंडमाल कीन्हेउ गर शंकर॥
द्रोणी सों अर्जुन पुरुषारथ। कीन्हो महा भयंकर भारथ॥
सहस बाण द्रोणी तब छांटे। आवत बीचहि पारथ काटे॥

दो० अर्जुन द्रोणी रणमचो छूटत बाण अनंत।
हयरथ पैदल गिरत हैं मतवारे मयमंत॥

दुनों दल महँ परी लराई। संध्या काल आइ नियराई॥
घटोत्कचहिं तब कृष्णबलाना। आपुयुद्ध कहँ करहु पयाना॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा। मारोनिशि कौरवपति भूपा॥
करत प्रयाण असुर सब धाये। कुरुसेना के ऊपर आये॥
गगन पंथ कीन्हीं अँधियारी। बरषाहि बाण मनोघन भारी॥
दस अनेक गगन ते छूटन। लागत शिला सेनशिर टूटन॥

आजुराति अस्थिर ह्वै रहिये। सबमिलिके धीरजमनगहिये॥
राजाकही कर्ण सों ऐसो। अहो मित्र बोलत हो कैसो॥
जो सबमिलि अर्जुनकहँमरिये। अर्जुनमारि काल्हिकाकरिये॥
सांग शूल मुद्गर परिहारत। वृक्ष पषाण शीश पर डारत॥
अबजनि गहरु करो तुमभाई। मारिअसुर कहँ देहु गिराई॥
कर्ण पुकारि कही यह बानी। राजातुम तो बात न जानी॥
अहैं कृष्ण पारथ के रक्षक। तिनउपाय कीन्हेउपरतक्षक॥
मृत्यु बिना कोऊ नाहिं मरहीं। भये मृत्यु को रक्षा करहीं॥
धीरज धरहु करहु मन गाढ़ा। मैं अब धनुष लिये करठाढ़ा॥
बज्र शक्ति ते असुरन मारहुँ। काल्हि युद्ध अर्जुन संहारहुँ॥
अर्जुन मारि जीतिहों भारथ। कुरुपतिकरहुँतुम्हारोस्वारथ॥
राजा कही मतिहि बौरानी। आजुहिंमरे काल्हिको जानी॥
दो०। कर्ण कही विधिकी रचित टारिसकै सो कौन।
मारतहौं अब असुरकहँ रहैं सबै होइ मौन॥
यहकहि वज्र शक्ति करलीन्हे। सहसनयनको सुमिरणकीन्हे॥
मारि असुरको कर्णचलायउ। छिटकीज्योतिप्रकाशहिआयउ॥
लागी शक्ति असुर उर कैसे। लगतवज्रगिरिवर गिरिजैसे॥
पर्यो भूमितल असुरभयंकर। मुंडमाल लीन्हेउ सोशंकर॥
गई शक्ति सुरपति के हाथा। बहुत अनन्दभये जगनाथा॥
साधु कर्ण सेना सब भाखे। ऐसे समय कवन केहिराखे॥
उभय सैन्य अपने गृहआयहु। सबमिलिखानपानमनलायहु॥
रोदन करे हिडम्बी कैसे। बिछुरी गाय बच्छ सों जैसे॥
भीमसेन करुणा बहुकीन्हे। कृष्णदेव कछु कहिबेलीन्हे॥
करुणा करहु कछू नाहिं होई। जगमहँ अमरभये नहिंकोई॥
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गवांये। आपु मरे अर्जुनहि बचाये॥
भीमसेन अब साहस करिये। अपनो प्रण रक्षा मनधरिये॥
दो०। क्षत्री होय प्रणको धरै करै तत्त्वपरमान।

करगहि धनु कीन्हें संधाना। कर्ण अंग मारे दश बान
अपर बीस शर पायल छूटे। ते सब शरहु हृदयमहँ फू
हँसिके कर्ण बाण दश लीन्हे। भूप अंग शर भेदन कीन्हे
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई। तुम मोसों रण रची लराई
तुमते कहा कराहिं पुरुषारथ। मेरे बल समान है पारथ
शल्य सारथी कर्ण चेताये। बांधो नृपति घात भलपाये
जो लगि धर्मराय ले आये। जयतिपत्र भारत महँ पाये
नागफांसको उद्यम कीन्हे। धर्मराइ खगपति शर लीन्हे
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ। धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयंकर। मुंडमाल कीन्हेउ गर शंकर
द्रोणी सों अर्जुन पुरुषारथ। कीन्हो महा भयंकर भारथ।
सहस बाण द्रोणी तब छांटे। आवत बीचहि पारथ काटे।

दो० अर्जुन द्रोणी रणमचो छूटत बाण अनंत।
हयरथ पैदल गिरत हैं मतवारे मयमंत॥

दूनों दल महँ परी लराई। संध्या काल आइ नियराई॥
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना। आपुयुद्ध कहँ करहुपयाना॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा। मारोमिलि कौरवपति भूपा॥
करत प्रणाम असुर सब धाये। कुरुसेना के ऊपर आये॥
गगन पंथ कीन्हीं अँधियारी। बरषहिंबाण मनहुँघनभारी॥
वृक्ष अनेक गगन ते छूटत। लागत शिला सेनशिरफूटत॥
यहिबिधिमारु भयानक कीन्हे। अंधकारकछु जात न चीन्हे॥
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा। कोउ न रहेउ काहु के साथा॥
अपने मन सांचो करिजानेउ। प्रलयकालअबआयतुलानेउ॥
दुर्योधन तब आपु पुकारे। कहां कर्ण हैं मित्र हमारे॥
मारहु असुर बिलंब न लावहु। संकट ते अब मोहिंछुड़ावहु॥

दो० कर्ण कही राजा सुनहु बधहु असुर जो आज।
शक्ति मेरे अहै राखउँ अर्जुन काज॥

माजुराति अस्थिर ह्वै रहिये। सबमिलिके धीरजमनगहिये॥
ाजाकही कर्ण सों ऐसो। अहो मित्र बोलत हो कैसो॥
ो सबमिलि अर्जुनकहँमरिये। अर्जुनमारि काल्हिकाकरिये॥
ांग शूल मुद्गर परिहारत। वृक्ष पषाण शीश पर डारत॥
त्रजानि गहरु करो तुमभाई। मारिअसुर कहँ देहु गिराई॥
र्ण पुकारि कही यह बानी। राजातुम तो बात न जानी॥
हँ कृष्ण पारथ के रक्षक। तिनउपाय कीन्हेउपरतक्षक॥
त्यु बिना कोऊ नहिं मरही। भये मृत्यु को रक्षा करही॥
ीरज धरहु करहु मन गाढ़ा। मैं अब धनुष लिये करठाढ़ा॥
जू शक्ति ले असुरन मारहुँ। काल्हि युद्ध अर्जुन संहारहुँ॥
अर्जुन मारि जीतिहों भारथ। कुरुपतिकरहुँतुम्हारोस्वारथ॥
ाजा कही मतिहि बौरानी। आजुहिंमरे काल्हिको जानी॥

दो० कर्ण कही विधिकी रचित टारिसकै सो कौन।
मारतहौं अब असुरकहँ रहैं सबै होइ मौन॥

हकहि वज्र शक्ति करलीन्हे। सहसनयनको सुमिरणकीन्हे॥
ारि असुरको कर्णचलायउ। छिटकीज्योतिअकाशहिआयउ॥
ागी शक्ति असुर उर कैसे। लगतवज्रगिरिवर गिरिजैसे॥
रयो भूमितल असुरभयंकर। मुंडमाल लीन्हेउ शंकर॥
इ शक्ति सुरपति के हाथा। बहुत अनन्दभये जगनाथा॥
ध्रु कर्ण सेना सब भाखे। ऐसे समय कवन केहिराखे॥
उभय सैन्य अपने गृहआयहु। सबमिलिखानपानमनलायहु॥
रोदन करे हिडम्बी कैसे। बिछुरी गाय बच्छ सों जैसे॥
भीमसेन करुणा बहुकीन्हे। कृष्णदेव कछु कहिबेलीन्हे॥
करुणा करहु कछू नहिं होई। जगमहँ अमरभये नहिंकोई॥
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गवांये। आपु मरे अर्जुनहि बचाये॥
भीमसेन अब मातम करिये। अपनो प्रण रक्षा मनधरिये॥

॥ कर्ण पर्व भाषा रच्यो सबलसिंह चौहान ॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वद्वितीयोऽध्यायः

अथ दश वर्ष छूटभा देशहि । द्रुपदसुता नहिं ब...
जब यह बात कही बनवारी । छूटो शोक क्रोध भा...
घायल धर्मराय दुख पावा । अर्जुनसों यह बच...
धृग अर्जुन धृग धनुशर तोरे । कर्ण बाण झरझर...
सो सुनि अर्जुन क्रोधहिपायउ । करगहिकेयदुनाथ...
सेना सबहि शयन मन दीन्हे । प्रात होत रण उद्यम...
कीन्हे बम्ब दमामे बाजे । सावधान क्षत्री सब...
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे । विप्रन बोलिदान बहु...
पहिरि सनाह किये रणसाजैं । चहुँ दिशिभेरि दुन्दुभी...
माथे मुकुट विराजत कैसे । सूर्य्य प्रकाशप्रकाशहिं...
शल्य सारथी जोते घोरे । चंचल चपल दिनन के थोरे ॥
खोदत महि फहरात हैं ठाढ़े । मानहुँ सिन्धु मथन के काढ़े ॥

दो॰ पाखर लाल लगाइके पुनि बाँधे गजगाह ।
चढ़े कर्ण गज कोपिकै मनलरिबेकी चाह ॥

दुर्योधन कीन्हे असवारी । साजी सेन महाबल भारी ।
भई बम्ब बैरख फहराने । चले वीर सब बाँधे बाने ॥
पांडव के दल बाजन बाजे । नन्दिघोपरथ श्रीपति साजे ॥
पहिरि सनाह खड्गकटिबांधे । अक्षय तूण विराजत कांधे ॥
करगहि धनुष चढ़े रथ पारथ । जोती गहे कृष्ण से सार...
धर्मराय कीन्हे असवारी । आगे भये भीम धनुधारी
दल चतुरङ्ग रंग करि आई । युध भूमि महँ शोभा पाई
... महाबल ... अधिकारी । गिरे गयन्द युद्ध भा भारी
... चतुरङ्ग करत रथ घोरा । ... सबै जोर सों जोरा
... रथहि चलावहु । अर्जुनके सन्मुख पहुँचावहु ।
... आजु खेत महँ पारथ । देखहुँ ... मार पुरुषारथ ॥

हँसि कै शल्य कही यह वानी। रविनन्दन यह वात न जानी॥
॥ दो० हंस काग जैसी भई तैसी भई निदान।
अवहिं कर्ण बलदेखिवो भारत के मैदान॥
क्रोधित ह्वै तव कर्ण वखाने। हंस काग को भेद न जाने॥
भाषो शल्य कर्ण सुन वीरा। एक दिवस सरिवरके तीरा॥
राज हंस सब चले उड़ाई। सिंधु पार महँ बनी चराई॥
तिनसों काग कही अस वानी। हमकहँ साथलेहु खगज्ञानी॥
कही हंस तुम जाइ न पैहो। मरिहौ बूड़ि पारनहिंलहिहौ॥
कही कागगति सवहि उड़ैहौं। तुमसव साथ पार हम जैहौं॥
यह कहि चले हंस के संगा। कोश चारि लै उपज्यो रंगा॥
थको काग तव ढिगहो आयो। बूड़त हौं यह वचन सुनायो॥
कहीहंस सुधि अवहिं भुलानी। अव काहे बूड़त जड़ ज्ञानी॥
सुनिकै हंस निकट तव आयो। पीठिउपर तव काग चढ़ायो॥
फेरि वहुरि लाये यहि पारा। राख्यो काग नींवकी डारा॥
सिंधु पार सव गयो उड़ाई। यह चरित्र हम देख्यो भाई॥
॥ दो० शरसों सागर वांधिकै जिन जीते हनुमान।
शरपञ्जररथ राखिकरि तिनसों तुमहिंसमान॥
जव विराटको गोधन गह्यऊ। तादिनकर्ण कहांतुम रह्यऊ॥
क्रोधित कह्यो कर्ण यह वैना। देखहु आजु युद्ध तुम नैना॥
हाँको रथहि विलम्ब न लाओ। अर्जुनके सम्मुख पहुँचाओ॥
सुनिकै शल्य तेज रथहांको। पवन लगे फहरात पताको॥
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे। बाणवृष्टि करिवे मनदीन्हे॥
कह तव कर्ण भीम तुमअहहू। अर्जुन कहां सो मोसन कहहू॥
यह कहत अर्जुन तव आये। नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये॥
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो। दुश्शासन सों युद्ध विचारो॥
आजु कर्ण सों हमहिं लराई। पुरुपारथ देखो सव भाई॥
[illegible] । लागे मरम चलावन बानी॥

॥ कर्ण पर्व भाषा रच्यो सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

त्रय दश वर्ष छूटभा देशहि । द्रुपदसुता नहिं बांधेकेशहि ॥
जब यह वात कही बनवारी । छूटो शोक क्रोध भा भारी ॥
घायल धर्मराय दुख पावा । अर्जुनसों यह वचनसुनावा ॥
धृग अर्जुन धृग धनुशर तोरे । कर्ण वाण झरझर तनमोरे ॥
सो सुनि अर्जुन क्रोधहिपायउ । करगहिकेयदुनाथ बुझायउ ॥
सेना सबहि शयन मन दीन्हे । प्रात होत रण उद्यम कीन्हे ॥
कीन्हे वम्ब दमामे वाजे । सावधान क्षत्री सब गाजे ॥
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे । विप्रन बोलिदान बहु दीन्हे ॥
पहिरि सनाह किये रणसाजैं । चहुँ दिशिभेरि दुन्दुभी बाजैं ॥
माथे मुकुट विराजत कैसे । सूर्य प्रकाशअकाशहिं जैसे ॥
शल्य सारथी जोते घोरे । चंचल चपल दिनन केथोरे ॥
खोदत महि फहरात हैं ठाढ़े । मानहुँ सिन्धु मथन के काढ़े

दो० पाखर लाल लगाइके पुनि बाँधे गजग्राह ।
चढ़े कर्ण गज कोपिकै मनलरिवेकी चाह ॥

दुर्योधन कीन्हे असवारी । साजी सेन महाबल भारी
भई वम्ब वैरख फहराने । चले वीर सब बाँधे बाने
पांडव के दल वाजन वाजे । नन्दिघोपरथ श्रीपति साजे
पहिरि सनाह खड्गकटिवांधे । अक्षय तूण विराजत कांधे
करगहि धनुप चढ़े रथ पारथ । जोती गहे कृष्ण से सारथ ।
धर्मराय कीन्हे असवारी । आगे भये भीम धनुधारी ।
दल चतुरङ्ग रंग करि आई । युध भूमि महँ शोभा पाई ।
मूर्ख महाउत लइ अधिकारी । भिरे गयन्द युद्ध भा भारी ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा । उरभे सबै जोर सों जोरा ॥
[illegible] रथहि चलावहु । अर्जुनके सन्मुख पहुँचावहु ॥
भाज सेत मों पारथ । देख्यायरूप मोर पुरुषारथ ॥

सि के शल्य कही यह बानी। रविनन्दन यह बात न जानी॥
दो० हंस काग जैसी भई तैसी भई निदान।
अबहिं कर्ण बलदेखिवो भारत के मैदान॥
ोधित ह्वै तब कर्ण बखाने। हंस काग को भेद न जाने॥
ाषो शल्य कर्ण सुन वीरा। एक दिवस सरिवरके तीरा॥
जि हंस सब चले उड़ाई। सिंधु पार महँ बनी चराई॥
तनसों काग कही अस बानी। हमकहँ साथलेहु खगज्ञानी॥
ही हंस तुम जाइ न पैहो। मरिहौ बूड़ि पारनहिंलहिहौ॥
ही कागगति सबहि उड़ैहौं। तुमसब साथ पार हम जैहौं॥
ह कहि चले हंस के संगा। कोश चारि लें उपज्यो रंगा॥
को काग तब ढिगहो आयो। बूड़त हौं यह वचन सुनायो॥
हीहंस सुधि अबहिं भुलानी। अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी॥
नके हंस निकट तब आयो। पीठिउपर तब काग चढ़ायो॥
रि बहुरि लाये यहि पारा। राख्यो काग नींबकी डारा॥
धु पार सब गयो उड़ाई। यह चरित्र हम देख्यो भाई॥
दो० शरसों सागर बांधिके जिन जीते हनुमान।
शरपञ्जररथ राखिकरि तिनसों तुमहिंसमान॥
न विराटको गोधन गह्यऊ। तादिनकर्ण कहांतुम रह्यऊ॥
धित कह्यो कर्ण यह बैना। देखहु आजु युद्ध तुम नैना॥
को रथहि विलम्ब न लाओ। अर्जुनके सम्मुख पहुंचाओ॥
नके शल्य तेज रथहांको। पवन लगे फहरात पताको॥
मसेन आगे ह्वै लीन्हे। बाणवृष्टि करिके मनदीन्हे॥
तब कर्ण भीम तुमअहहू। अर्जुन कहां सो मोसन कहहू॥
कहत अर्जुन तब आये। नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये॥
न्यो अर्जुन भीम सिधारो। दुश्शासन सों युद्ध विचारो॥
जु कर्ण सों हमहिं लराई। पुरुषारथ देखो सब भाई॥

कर्ण वीर ऐसे शर जोरे। आवत वाण वीचहीं
दोऊ वीर वाण सन्धाना। शर के छांह छिपाये भा
दो० अरस परस दोऊ प्रवल कीन्ह्यो शर संधान।
अन्धकारभा दिवसमों सूझि परहिं नहिंभान॥
चले वाणकवि सकहिंनभाषन। शतसोंसहससहससोंलाख
नंदिघोष हांकत वनवारी। शल्यसारथी उत अधिका
अर्जुनकर्ण करत मन जितको। कृष्णशल्यहांकतरथ तितक
अग्निवाण अर्जुन कर लीन्हे। पढ़िकैमंत्र फोंक गुणदीन्हे
चले वाण कौरव दल जारन। प्रकटीं शिखा हजारहजारन
देखि कर्ण जल वाण चलाये। चणभीतर सवअग्निवुताये
जलकी धार सेन विकलाने। पवन वाण अर्जुन संधाने
परम वेगि ताते जेहि ताका। टुटनलगे सव ध्वजापताका।
छांड़े कर्ण सर्प के वाना। नागन कीन्ह पवन सवपाना।
तव अर्जुन खग वाण चलाई। मोरन पकरि सर्प सव खाई॥
दोऊ वीर चलावत हैं शर। वलसमान सो वली धनुर्द्ध
धरणी जल अरु स्वर्गपताला। वाण मारि सूखे सरि ताल
दो० पक्षी उड़त गगन महँ ताको दिशाअधार।
देवन देखत युद्ध कछु शर छायो संसार॥
कोटिन अर्व खर्व शर छांव्यो। दोऊ दल वाणन ते पाव्यो
कुरु पाण्डव दल सव भरमाये। अर्जुन कर्ण न देखन पाये
दोऊ वीर सरस पुरुषारथ। कीन्हे महा भयानक भारथ।
चुंचुक कही कर्ण के आगे। अव मोकहँ सन्धान सभागे।
लीलोंकृष्ण सहित रथपारथ। अव देखहु मेरो पुरुषारथ॥
सो सुनि कर्ण वीर सन्धाना। चुंचुकसहित त्याग तवबाना॥
कही कर्ण अर्जुन संहारहु। आजुजानिवो तेजतुम्हारहु॥
हांक क वाण चलाये। चुंचुक प्रकट देह धरिआये॥
भावा। भादोंघटा उमड़ि जनु आवा॥

रबि बाढ़ि लाग्यो असमाना। फणके छाँह छिपाये भाना॥
दो० रवि अक्षत निशि ह्वैगई अर्जुन भाषे बैन।
अंधकार कस देखिये कहिये राजिव नैन॥
ब श्रीहरि आये यहि बातन। पारथ सुनिये कथा पुरातन॥
ब पांडव वन दाहन कीन्हा। सारथिहोइ जोतीहमलीन्हा॥
र पंजर छाये तुम कानन। शत योजन घेरे तुम बानन॥
ादिन रथ ऐसो मैं हांका। घुमिरतमनहुँकुम्हारकोचाका॥
ग मृग पशुजारतदवकानन। बाहरहोय न बचत है बानन॥
र्मि नाम नागिनि जब जानी। तेजवंत आकाश उड़ानी॥
ब तुम बेगवंत शर छाँटे। नागिनि गई पूंछत्यहिकाटे॥
को सुत यह चुंचुक नामा। बसै पताल शेष के धामा॥
रकोटक को पुत्र कहावा। बैरलेन भारत मों आवा॥
र्ण के त्रोण रहत है तबसों। कीन्हो युद्ध अरंभन जबसों॥
ब अर्जुन यह भेदहि जाने। क्रोधित बाण कीन्ह संधाने॥
र्जुन क्रोध लगे शरमारन। शतते सहस सहस्र हजारन॥
दो० अर्जुन मारत कोपिकै नाहिंन फूटत अंग।
चुंचुक के फण लागिकै होत बाणसबभंग॥
जैत क्रोध सर्प ते कैसा। प्रलयकाल बोलत घनजैसा॥
चुक कही सुनो हो पारथ। लीलत अहौं करोपुरुपारथ॥
इ कहि बदन किये बिस्तारा। मनहुँउदरनहिंअहहिपनारा॥
शर अर्जुन के करछूटत। गड़े न नेकु लागिसब टूटत॥
डव दल देखत भय माने। धर्मराइ अचरज करि जाने॥
देघोष रथ लीले लीन्हेउ। हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ॥
पति देखि महा भय पायो। हनूमान सों ऐस जनायो॥
बहु रथ सो जाइ पताला। यहिबिधिबंचितकीजियब्याल॥
पर बल कीन्हेउ हनुमाना। रथगड़ि गयो पतालसमाना॥
चुक के मुख पीत पताका। पवन लगे डोलत है बाका॥

टारो रविसुत बाणते महावीर समरत्थ ॥

ह सुनि बाण लगे परिहारन । जूभी सेना वीर हजारन ॥
र्ण कोपि भालुक शर लीन्हे । तेशर चोट शीश पर कीन्हे ॥
ष्ण अंग शतबाण प्रहारे । सहस बाण हनुमानहिं मारे ॥
याम शरीर रुधिर छविछाये । पीत बसन तन शोभा पाये ॥
प्रर्जुन को तन झांझर कीन्हे । क्रोधित भये एकशर लीन्हे ॥
र्ण के हृदय ताकिके मारयो । भेदिकैअंगनिसरिशरपारयो ॥
ाण सहस्र शल्य उर दीन्हे । घायलकरितनझाँझरकीन्हे ॥
प्ररुण बरण देखत तन भूले । मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले ॥
ाहिविधि कीन्ह्यो बाण दरेरो । दशहू दिशा दोउ रथ घेरो ॥
ोउ रथ यहिविधि छवि पाये । पर्वत मनहुँ भूमि पर आये ॥
ही कर्ण अर्जुन सुनि लीजे । सावधान मोते रण कीजे ॥
प्रब यहिविधिते बाण चलायो । काटो शीशविलम्ब न लायो ॥

दो॰ मारतहौं अब गहरुनहिं कह्यो करण यह बैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु प्रियतम पंकज नैन ॥

ह कहि नीलबाण कर लीन्हे । जो शर ऋषिदुर्वासा दीन्हे ॥
ष्ण देव रणको मनदीजे । अब पारथ की रक्षा कीजे ॥
ोधित बाण किये संधाना । देखिशल्ययहिभांति बखाना ॥
ाके रक्षक श्री जगत्राता । ताको करण कीन्हचहैघाता ॥
दय ताकि मारेउ तब बाना । पलटि न करहुफेरि संधाना ॥
हकहि धनुषकरणलगितानां । कर्ण हाथ छूट्यो तब बाना ॥
न्तरिक्ष शर आवत कैसे । छूटे बज्र इन्द्र कर जैसे ॥
र्जुन लगे कठिन शर मारण । पै न सके यहबाण निवारण ॥
ायो बाण कंठ तकि जबहीं । नन्दिघोष दाबेउ प्रभुतबहीं ॥
टिक अश्वरथहिदिग आयो । कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो ॥
कुट काटि शर बेधेउ धरणी । जगमें रही सदा यहकरणी ॥
न्य कृष्ण पांडव सन भाखा । दीनदयाल पारथहिं राखा ॥

हांक मारिके भुजा उपारे। रुधिर द्रौपदी के शिर डारे
शिरसों परत रुधिर की धारा। द्रुपदसुता तब बाँधेउ बारा
अरुण वरण तन सोहत कैसे। असुर-युद्धमहँ देवी जैसे
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी। अर्जुन करण रचेउ रणभारी
दो० शरवर्षत हर्षत दोऊ हांकतरथ भगवान।
कर्णपर्व भाषारचेउ सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः॥३॥
दोउ बीरहिं मेघ समाना। वर्षत वाणवृंद अनुमाना।
घन घहरात घहर रथ चाके। वकपांती सम श्वेत पताके।
ऐसे वाण गगन मों धावहिं। शर रोकत शरपंथ न पावहिं॥
कुरु पांडव दल नाहिंन सूझै। अपन पराइ कोई नहिं बूझै॥
गजअरुशकटहजारनधावहिं। करणकेरथहि बाणपहुँचावहिं॥
दो० अर्जुन कर्णहिंरणमच्यो जलदवृन्दसमवान।
सरसनिरसकहि जातनहिं रह्योमांडिमैदान॥
कर्ण पांचशर भालुक लीन्हे। लघु संधान किरीटिन कीन्हे॥
दोऊ सारथि रथहि चलावत। बोहितमनहुं सिंधुमहँ धावत॥
जूझी सेन लगे तीक्षण शर। होनलागि अतिमारुपरस्पर॥
अर्जुन कर्ण करत रण करणी। रुण्ड मुण्डमंड्योसवधरणी॥
अर्जुन वाण कोपि परिहार्‍यो। सहस पैग पाछे रथ टार्‍यो
देखिकर्ण तव शर संधाना। मार्‍यो नंदिघोष तकिवाना
पैग अढ़ाई पाछे टार्‍यो। साधु कर्ण यदुनाथ पुकार्‍यो
सुफल जन्म जगजीवन तेरा। वाण घात डोलत रथ मेरा।
अर्जुन कही सुनहु जगतारण। साधुवचनभाष्योक्यहिकारण
सहसपैग हमरथहि चलायो। पैग अढ़ाई मम रथ आयो।
तब श्रीपति बोले यह वानी। अर्जुन तुम यह भेद न जानी।
[illegible] रथ मेरु समाना। ध्वजपर परमभार हनुमाना॥
दो० महा विश्वंभर रूपधारि हांकत हैं यहरथ।

टारो रविसुत बाणते महावीर समरत्थ॥
ह सुनि बाण लगे परिहारन। जूझी सेना वीर हजारन॥
र्ण कोपि भालुक शर लीन्हे। तेशर चोट शीश पर कीन्हे॥
र्ण अंग शतत्राण प्रहारे। सहस बाण हनुमानहिं मारे॥
याम शरीर रुधिर छविछाये। पीत वसन तन शोभा पाये॥
र्जुन को तन झांझर कीन्हे। क्रोधित भये एकशर लीन्हे॥
र्ण के हृदय ताकिके मारयो। भेदिकेअंगनिसरिशरपारयो॥
ण सहस शल्य उर दीन्हे। घायलकरितनझाँझरकीन्हे॥
रुण वरण देखत तन भूले। मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले॥
हिविधि कीन्ह्यो बाण दरेरो। दशहू दिशा दोउ रथ घेरो॥
ऊ रथ यहिविधि छवि पाये। पर्वत मनहुँ भूमि पर आये॥
ही कर्ण अर्जुन सुनि लीजे। सावधान मोते रण कीजे॥
व यहिविधिते बाण चलायो। काटो शीशविलम्ब न लायो॥
दो० मारतहीं अब गहरु नहिं कह्यो करण यह बैन।
सारथि है रक्षा करहु प्रियतम पंकज नैन॥
ह कहि नीलबाण कर लीन्हे। जो शर ऋषिदुर्वासा दीन्हे॥
र्ण देव रणको मनदीजे। अब पारथ की रक्षा कीजे॥
धित बाण किये संधाना। देखिशल्ययहिभांति बखाना॥
के रक्षक श्री जगत्राता। ताको करण कीन्हचहेघाता॥
दय ताकि मारेउ तब बाना। पलटि न करहुंफेरि संधाना॥
हकहि धनुपकरणलगिताना। कर्ण हाथ छूट्यो तब बाना॥
न्तरिक्ष शर आवत कैसे। छूटे वज्र इन्द्र कर जैसे॥
र्जुन लगे कठिन शर मारण। पै न सके यहबाण निवारण॥
ायो बाण कंठ तकि जबहीं। नन्दिघोष दाबेउ प्रभुतबहीं॥
टिक अश्वरथहिढिग आयो। कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो॥
कुट काटि शर बेधेउ धरणी। जगमें रही सदा यहकरणी॥
ब कृष्ण पांडव सन भाखा। दीनदयाल पारथहि राखा॥

दो० जाके सारथि चक्रधर मारि सकै तेहि कौन।
अर्जुन के रक्षकसदा श्रीपति राधारौन॥

हाँक देत हांकत हरि घोरे। अर्जुन [illegible]
दोऊ वीर वाण परिहारे। एकहि एक क्रोध ते
शर अनेक वरषत हैं कैसे। श्रावण मेघ महाझरि
पक्षी गगन उड़न नाहिं पावत। शर लागतधरणीपर आव
अरुणवरणआये सँगआवाहिं। शर समूह ते पन्थन पावा
ऐसे लाग चलावन वाना। शर पंजर छाये असमान
जूझी सेना पन्थ न पावहिं। लोथिनपररथहांकिचलावहि
गरजत नन्दिघोष के चाके। पवन वेग फहरात पताके
शल्य सारथी रथहि चलावा। नन्दिघोष सम्मुख पहुँचावा
अर्जुन करण जुरे हैं कैसे। रघुपति सों रावणरण जैसे
इकते एक महा वल भारी। वरण शूर दोऊ धनुधारी।
महा युद्ध अद्भुत पुरुषारथ। रणसमवलीकरणअरुपारथ॥

दो० अर्जुनकरणहिंरणमच्यो छूटततीक्षणवान।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन भाजे छांड़िविमान॥

शल्यहि कही करण तव ऐसो। चाकभूमिपर सैनाहिं जैसो॥
जेहि दिन में विराट पुर घेरी। वैठी गाइ अहीरन टेरी॥
तव सहदेव बुद्धि उपराजो। खुरदे बांधि आपुउठिभाजो॥
लाठी छांड़ि वहुत विधि मारो। अचलगाइतनटरतनटारो॥
मैथुनि नाम गाय यक रहेऊ। क्रोधित कै असमोसनकहेऊ॥
जैसे अचल भयो तन मोरा। रथ अटके भारथ में तोरा॥
चाके चारि ग्रसैं जव धरणी। तवनवनै कछु तोसों करणी॥
यह सुधि मेरे मन में आई। सावधान हांको रथ भाई॥
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी। चाकछुवैनाहिं पावतधरणी॥
अर्जुन करण करत संग्रामा। पलभरिनाहिं पावतविश्रामा॥
देवम[illegible]दिशि परिहारहिं। एकहि एक क्रोधकरि मारहिं॥

गजरथ पैदल जूझे लाषन। महा मारुकोउसकै न भाषन॥
दो० नदी भयंकर रुधिर की गजन करारे जान।
भरत मांसजलफेनसम लहरीचमकें वान॥
ढाल मनहुँ कच्छप उतराने। वार सेवार सरिसअरुभाने॥
बख्तर सहित परे धर जेते। ग्राह समान देखियत तेते॥
गज भुशुंडि टूटे कस जाने। मनहुं सूसि जलमें उतराने॥
चक्रत फरी लसत हैं कैसे। रुचिर पत्र पुरइनि के जैसे॥
शूर शीश देखत दिग भूले। जैसे कमल सहस दल फूले॥
मांस बहुतसम सरस सोहावा। नावचलतजिमिरथउतरावा॥
परि जँजीर जल शोभापावहिं। धीवरमनहुंजाल छिटकावहिं॥
भूत प्रेत करते असनाना। योगिनि मनहुं करें सोपाना॥
जम्बुक गीधकाकगण आवहिं। मांसखाहिं मनमोलचुकावहिं॥
नंदी चढ़ि डोलत हैं शंकर। मुंडमाल गर रूप भयंकर॥
गज शुंडहिलैयोगिनि आवहिं। दे मुखबिचकरतालबजावहिं॥
नाचि कबंध देहिं करतारी। कौतुकरचिरणभूमिहिं भारी॥
दो० आंत लपेटे गजचरण किये पखाउज साज।
भैरव गण या विधि फिरत खेतभयंकरलाज॥
यहि विधि युद्ध भयंकर भारी। दोऊ भिरे खेत परचारी॥
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे। भोरहिं उदितदिवाकर जैसे॥
करण वीर ऐसे शर जोरे। घायल नंदिघोप के घोरे॥
तीक्षण वाण कृष्ण उरदीन्हे। हनूमान तन जर्जर कीन्हे॥
तब अर्जुन कीन्हे संधाना। करण हृदयतकिमारेउ वाना॥
घायल किये शल्य से सारथि। एकतें एक सरिस पुरुपारथि॥
वाणहिं त्यागत यहिव्यवहारा। जिमि वरपा वरपे जलधारा॥
रविमण्डलमहँ शब्दसुनावहिं। करणमारि अर्जुनयश पावहिं॥
सुरपति कही जीति हैं पारथ। मारो करण करहु पुरुपारथ॥
यहि विधि कहहिं देवगणवानी। सुनिके शल्य अचंभव मानी॥

कोऊ कहूं लरो नहि ऐसो। अर्जुन करण भयो रण जैसो॥
रुधिर प्रवाह चले सब अंगा। महाशूर मन नेकु न भंगा॥
दो० घोरयुद्ध यहिविधि करत दोऊ बीर समान।
शल्य सारथी करणरथ पारथरथ भगवान॥
भीमसेन कीन्ही बहु करणी। परे बीर लोटत सब धरणी॥
गजते गज हयते हय मारे। रथहि पकरि रथऊपरडारे॥
सम्मुख जुरे गिरेगण जेते। गगन पन्थकहँ फेंकत तेते॥
जे अभिरे ते सबै पछारे। बहुतक मींजि चरण ते डारे॥
लागे बीर गदा सों मारण। दुर्योधन के बंधु सँहारण॥
ते सब बहुरि कठिन शर मारे। मुद्गर गदा शूल परिहारे॥
भूमि परे पर भीम न डरपे। मनहुँ बाज पक्षिनपर झरपे॥
क्रोधित भये पांडु के नन्दन। यहिविधिकीन्हेसैन निकंदन॥
तब अर्जुन छांड़े शर पायल। शल्यसहितरविनंदनघायल।
करण बाण ऐसे परिहारे। अर्जुन हृदय ताकिके मारे॥
कही कृष्ण सुनिये अब पारथ। प्रणकहँसुमिरिकरहुपुरुषारथ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे। हांकत पद ठहरात न घोरे॥
दो० अर्जुन करणहिं रणमचेउ उपमा और न तासु।
मारत शरके अग्र ते उड़त गगन महँ मासु॥
सखा साथ धरणी के ऊपर। ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर॥
होनहार सो होय निदाना। विधि चरित्र कोऊनहिं जाना॥
भाषो शल्य कर्ण सों ऐसा। अटको चाकचलत रथकैसा॥
सुनिके कर्ण कियो दृढ़ ठाना। मारो नंदिघोष तकि बाना॥
सहस बाण अश्वन उर मारे। थकित भये पगटरत न टारे॥
असी बाण मारेहु हनुमानहिं। शर अनेक घाले भगवानहिं॥
तीनि बाण पारथ उर मारे। नंदिघोष रथ टरत न टारे॥
कृष्णदेव हांको रथ बांको। जैसे फिरत कुम्हारको चाको॥
चहूं ओर शर वर्षत कैसे। भाद्र वृष्टि मंदर पर जैसे॥

हिदिशि अर्जुनको रथ धावै। तेहिदिशिकर्णवाणझरिलावै॥
टत वाण कर्ण के करसों। नंदिघोष रथ घेरेउ शरसों॥
क देत हांकत रथघोरे। अर्जुन कठिन वाण गुणजोरे॥
दो० मारयोपारथ क्रोधकरि चल्योवाण परचंड।
कर्ण धनुर्द्धर श्री प्रवल काटि किये शतखंड॥
स्वनशल्य वहुतविधि हांको। छूटत नाहिं भूमित्ते चाको॥
दे कर्ण रथते ढिग आये। गहिचाकातेहि चहत उठाये॥
र्ण वीर कीन्ह्यो वल भारी। अर्जुनसों भाष्यो वनवारी॥
हु वाणगहरु जनिलावहु। कर्णशीश अवमारि गिरावहु॥
थ कही उचित नहिंहोई। विना अस्त्रनहिं मारहि कोई॥
अधरम करिये केहिकारण। यहसुनिकही जगतकेतारण॥
व्यूह महँ अभिमन्यु मारे। तादिन कर्ण न धर्म विचारे॥
जु धर्म तुम शोचो पारथ। तौभारत रण किये अकारथ॥
नी दिये वाण सो लीजे। अर्जुन करण बधनतेहिकीजे॥
हुतुरत गहरुजनि लावहु। वहुरि न ऐसो अवसरपावहु॥
उठाइ करिहै धनु धारण। तवअर्जुनतुमसकियनमारण॥
अर्जुन कीन्हे संधाना। श्रवण प्रयंत शरासन ताना॥
दो० दीन्हे हांक प्रचारिकै चलो वजूसम वान।
कर्णपर्व भाषा रच्यो सवलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेकर्णपर्वचतुर्थोऽध्यायः ४॥
यो वाण कर्ण के कैसे। इन्द्र वज्र पर्वत पर जैसे॥
शीश परा तव धरणी। जगमें रहीसदा यह करणी॥
आपु जयशंख बजायो। पांडव सैन्य देखि सुखपायो॥
इन्द्र तव आज्ञा दीन्हा। पुष्प वृष्टि सव देवन कीन्हा॥
जयशब्दगगनमहँ वोल्यो। चढ़िविमान आनंदितडोल्यो॥
उ कर्ण जगतयश पायो। निसरोरथ महिऊपर आयो॥
चक्र धरणि ते जवहीं। फेरयोशल्य हांकि रथतवहीं॥

छूंछो रथ दुर्योधन देखा। जूझेउ करण सत्यकरिलेख
बिचलिसेन कौरवपति जान्यो। आगे ह्वैके शारँग तान्यो
शरसों मारु भयंकर दीन्हे। सेना सबै निवारण कीन्हे
संध्याजानि किये तब गवना। दुउ सेना आईं तब भवन
असअहमितिअर्जुनमनकीन्हे। कर्णमारि जगमें यश लीन्हे
दो० महावीर रविसुत निरखि कही कृष्ण यहबात।
अर्जुन सुनिये श्रवण दै पटजन किये निपात॥
परशुराम जब शापहि दीन्हे। कुण्डल कवच पुरंदर लीन्हे
तुम हम धरणी कुंती माता। छहउजनेमिलिकीन्हनिपाता
अर्जुन कही सुनहु जगतारण। भृगुपतिशापदियोक्यहिकारण
तब श्रीहरिआये यहि बातन। पारथ सुनिये कथा पुरातन
रतननर्ष व्याकरण पढ़ायो। भृगुपति पहँ पढ़िवेकोआयो
कटिमें मूंज मेखला बांधे। कीन्हे तिलक जनेऊ कांधे।
निकट जाय परणाम जनाये। कौन जाति कहँवां ते आये।
मैंहौं बिप्र श्रवण सुनि लीजै। आये पढ़न अनुग्रह कीजै॥
विद्या सोपहँ आय घनेरो। पढ़िये जो मन आवै तेरो॥
तब भाष्यो धनुविद्या दीजै। बालकजानि कृपाम्वहिं कीजै॥
धनुविद्या सिखइयमुनिज्ञानी। करण चतुर्दशिआयतुलानी॥
दो० धनुष बाणले हाथ महँ करन चले अस्नान।
खरी तुरतलै आयहु पाछे शिष्य सुजान॥
आगे चलत वृक्ष यक देखा। फूले फूल कदम्ब अशेखा॥
परशुराम हँसि शारँग साधो। मार्यो फूल कटो तब आधो॥
एक शरहि यहिभांति चलायो। कटे सबै नहिं एक बचायो।
परशुराम जलतीरहि गयऊ। पाछे कर्ण वृक्षतर अयऊ।
आधो फूल लाग है ऊपर। आधो कटो परो है भूपर॥
मनहिं कही मैं बाण चलावों। आधो है त्यहिमारि गिरावों॥
भूपर खरी धरै जो कोई। बाढ़ै दोष पवित्र न होई॥

लाये तब कनक कटोरा। ले धनु बाण हाथ गुण जोरा॥
यहि विधि ते कीन्हो संधाना। कट्यो फूल सब एकहिबाना॥
बायें हाथ धनुष शर लीन्हे। दहिने हाथ कटोरा कीन्हे॥
आये परशुराम के पासहि। खरो लगाय पढ़े सो आसहि॥
करिअस्नान ध्यान तब कीन्हे। चले तुरत भवनहिं मनदीन्हे॥

दो० आये वृक्ष कदम्बतर देखिरहे होइ मौन।
आधो सब हम काटिगे आधो काटो कौन॥

सुनिके कर्ण कही यह बानी। आधो काटो मैं अभिमानी॥
परशुराम मन माहिं विचारी। भयो सपूत सिद्धि धनुधारी॥
यहि विधिते कछु दिवसगवाँयो। एक दिवस निद्रा मनलायो॥
आलसभयो शयनतब कीन्हा। कर्णजंघ ऊपर शिर दीन्हा॥
वज्र कीट कीरा जो रह्यऊ। जटासोंनिकसिजंघसोगह्यऊ॥
देउ जंघ निकरि तब पारा। तासों चली रुधिर की धारा॥
तो रुधिर अंग सों लागा। उठ्योचौंकिभृगुनायक जागा॥
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो। लाग्यो वज्र कीट यह जान्यो॥
धि अजहूं नाहीं त्यहि केरी। कहुरे शिष्य जाति का तेरी॥
तो विप्र कहां ते आयो। विनु डोलेजिन जंघ छेदायो॥
त्री जाति अहो मैं जाना। छल काहेक कीन्हों अज्ञाना॥
या दे विनाश का कीजे। वरअरु शाप एकसँग दीजे॥

दो० पांच बाण मैं देतहों जौलों रहि हैं हत्थ।
अजय होहि संसार मों जीते तो समरत्थ॥

जब यह बाण शत्रु कर जैहे। तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहे॥
बर अरु शाप दोउ जब जाने। सो सुनि कर्ण अनुग्रहमाने॥
अर्जुन के जिय संशय रह्यऊ। ता कारण या माधवकह्यऊ॥
धर्मराय तब बात जनाई। मेरे जिय कस संशय आई॥
विप्र जानिकै विद्या दीन्हयउ। क्षत्रीजानिशापकिमिकीन्हयउ॥
या विधि कही जगत के तारण। धर्मराय सुनिये यह कारण॥

।षिगुरुरच्यउमहारणभारत । चौविसादिवसरच्योपुरुषारथ ॥
न आइ बीच कर दीन्हा । तब कन्याकछुकहिबे लीन्हा ॥
गतीर शुचि चिता बनाई । देखत सबहि जरत हौं भाई ॥
त्री होइ लेहौं अवतारा । तब भीषमको करहुँ सँहारा ॥
स कहिके निज देहै जारों । जन्म शिखण्डी भीषम मारों ॥
सों परशुराम प्रण कीन्ह्यो । क्षत्री को विद्या नहिं दीन्ह्यो ॥
निके धर्मराय सुखमाना । सत्यबचन भाष्यो भगवाना ॥

दो॰ जहां धर्म तहँ कृष्णहैं जहँ हरि बिजय प्रमान।
कर्ण पर्व भाषा रच्यउ सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वसबलसिंहचौहानभाषाविरचिते
कर्णार्जुनयुद्धकर्णबधवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

इतिकर्णपर्व समाप्त ॥





अथ शल्यपर्व ॥

जय गुरुचरणनचितदीजे । रघुपतिपद अभिवंदनकीजे ॥
रद चरण करहुं परणामा । वन्दों बालमीकि गुणग्रामा ॥
त सत्रह से जग जाना । त्यहि ऊपर चौबीस बखाना ॥
र्तिक मास पक्ष उजियारा । दशमीतिथिको कथाउचारा ॥
ग शाह दिलीसुल्ताना । प्रबल प्रतापजगत सबज़ाना ॥
दो० व्यासदेव पद वंदिके जा मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत सबल सिंह चौहान ।
भि कर्ण जगत यश पाये । दुर्योधन यह वचनसुनाये ॥
हा मित्र परम सुखदायक । महायुद्ध करिबे के लायक ॥
म पाये निज क्षत्री धर्मा । यह सब दोष हमारे कर्मा ॥
लसों अर्जुन सके न मारण । छलकरि वधेजगतकेतारण ॥
ब काको सेनापति कीजे । जाके बल भारत यशलीजे ॥
तवर्मा तब कह्यो विचारी । राजा सुनिये विनय हमारी ॥
ब पांडव निज देशहि आये । करि बसीठ यदुनाथ पठाये ॥
ंच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ । हठकरिके भारततुमकीन्हेउ ॥
बकरुणा कीजे क्यहिकाजा । साहस सदा चाहिये राजा ॥
दा धर्म अपने मन राखउ । सत्यछांडिमिथ्यानहिंभाखउ ॥
ाह्मण गउन की रक्षा करहीं । परधन परनारी नहिं हरहीं ॥
सुतसम प्रजाकरो प्रतिपालक । ज्योंजननी पाले निजबालक ॥



अथ शल्यपर्व ॥

जय जय गुरुचरणनचितदीजे । रघुपतिपद अभिवंदनकीजे ॥
शारद चरण करहुं परणामा । वन्दों बालमीकि गुणग्रामा ॥
संवत सत्रह सै जग जाना । त्यहि ऊपर चौवीस बखाना ॥
कार्तिक मास पक्ष उजियारा । दशमीतिथिको कथाउचारा ॥
औरँग शाह दिलीसुलताना । प्रवल प्रतापजगत सवजाना ॥
दो० व्यासदेव पद वंदिके जा मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत सवल सिंह चौहान ।
जूझे कर्ण जगत यश पाये । दुर्योधन यह वचनसुनाये ॥
कहा मित्र परम सुखदायक । महायुद्ध करिवे के लायक ॥
रण पाये निज क्षत्री धर्मा । यह सब दोप हमारे कर्मा ॥
छलसों अर्जुन सके न मारण । छलकरि वधेजगतकेतारण ॥
अब काको सेनापति कीजे । जाके वल भारत यशलीजे ॥
कृतवर्मा तब कह्यो विचारी । राजा सुनिये विनय हमारी ॥
जब पांडव निज देशहि आये । करि वसीठ यदुनाथ, पठाये ॥
पांच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ । हठकरिके भारततुमकीन्हेउ ॥
अबकरुणा कीजे क्यहिकाजा । साहस सदा चाहिये राजा ॥
सदा धर्म अपने मन राखउ । सत्यवादिमिथ्यानहिंभाखउ ॥
ब्राह्मण गउन की रक्षा करहीं । परधन परनारी नहिं हरहीं ॥
सुतसम प्रजाकरो प्रतिपालक । ज्योंजननी पाले निजबालक ॥



अथ शल्यपर्व ॥

जय जय गुरुचरणनचितदीजे । रघुपतिपद अभिवंदनकीजे ॥
शारद चरण करहुं परणामा । वन्दों वाल्मीकि गुणग्रामा ॥
संवत सत्रह सै जग जाना । त्यहि ऊपर चौबीस वखाना ॥
कार्तिक मास पक्ष उजियारा । दशमीतिथिको कथाउचारा ॥
नौरँग शाह दिलीसुलताना । प्रवल प्रतापजगत सवजाना ॥
दो० व्यासदेव पद वंदिके जा मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत सवल सिंह चौहान ।
जूझे कर्ण जगत यश पाये । दुर्योधन यह वचनसुनाये ॥
हाहा मित्र परम सुखदायक । महायुद्ध करिवे के लायक ॥
तुम पाये निज क्षत्री धर्मा । यह सव दोष हमारे कर्मा ॥
वलसों अर्जुन सके न मारण । छलकरि वधेजगतकेतारण ॥
अव काको सेनापति कीजे । जाके वल भारत यशलीजे ॥
कृतवर्मा तव कह्यो विचारी । राजा सुनिये विनय हमारी ॥
जव पांडव निज देशहि आये । करि वसीठ यदुनाथ पठाये ॥
पांच ग्राम मांगे नहिं दीन्हेउ । हठकरिके भारततुमकीन्हेउ ॥
अवकरुणा कीजे क्यहिकाजा । साहस सदा चाहिये राजा ॥
सदा धर्म अपने मन राखउ । सत्यछांदि मिथ्यानहिंभाखउ ॥
ब्राह्मण गऊन की रक्षा करहीं । परधन परनारी नहिं हरहीं ॥
सुतसम प्रजाकरो प्रतिपालक । ज्योंजननी पाले निजबालक ॥

दो०. कुरुपति चले साजिदल सेनासिंधु समान।
हय रथ पैदल चलेबहु गर्दलोपिगे भान॥
[illegible]राय कीन्ही असवारी। पारथ रथ जोते बनवारी॥
[illegible]र्जुन अंग सनाह विराजे। अक्षयत्रोण गांडिवसो भ्राजे॥
[illegible]ढ़े कोपि रथ भीम भयंकर। प्रलयकालमहँ जैसे शंकर॥
[illegible]ढ़ि तुरंग पर नकुलस्वहाये। धर्मराय कहँ शीश नवाये॥
[illegible]न रथ सहदेव विराजे। करअसुफरी सरिसशरछाजे॥
[illegible]ष्टद्युम्न क्षत्री गण राजे। चढ़े तुरंग वीर सब गाजे॥
[illegible]जअरूढ़ अगणितबलभारी। जिनके नयन परी अँधियारी॥
[illegible]हिरि सनाह महावत चढ़े। मानहुं विधि अपने करगढ़े॥
[illegible]धवंत जानत रण घोरा। छायालखि देखहिंभुजओरा॥
[illegible]पमान पैदल रण चांड़े। फरी लेइ चमकावतखांड़े॥
[illegible]ांगि शूल लीन्हे कोउकर। कोउ मुगदरलेकोउ धनुर्द्धर॥
दो० धर्मराययहिविधिचल्यो दलबलकीन्होसाज।
पारथ रथ जोती गहे सारथि श्रीव्रजराज॥
[illegible]नसाजि कुरु खेतहिं आये। दुउ दल वीरन शोभा पाये॥
[illegible] निशान बाजने बाजे। होत शब्द मानहु घनगाजे॥
[illegible] गज हींसत हैं घोरे। आगे होयँ शूर रण जोरे॥
[illegible]हिं पेलि देहिं मयमन्ता। क्रोधित जुरे फिरि चौदन्ता॥
[illegible] रथी शर वर्षन लागे। कोप अनलउरअन्तरजागे॥
[illegible]सो अनी जुरे असवारा। मुगदर गदाशेल परिहारा॥
[illegible] मारिके पैदल धाये। महायुद्ध करिबे मन लाये॥
[illegible]विधि लरतकरतघनघोरा। मंडउ खेत जोर सों भोरा॥
[illegible] शल्य हांकि रथआये। वाण वृष्टि रथ ऊपर लाये॥
[illegible] अनेक बर्षत हैं कैसे। जलद मनहुंश्रवणमहँजैसे॥
[illegible] श्रीपति पहुंचायो। अ[illegible] [illegible]रिलायो॥
[illegible] करत संग्रामा [illegible]॥

दो॰ सदादान सन्मानकरि तजो न शीलस्वभाव।
शरणागत रक्षा करत देश प्राण वरु जाव॥
मातु पिता की सेवा करई। आज्ञा तासु शीश पर धरै
कृतवर्मायहिविधि कहिदीन्हेउ। तव शकुनीकछुकहिवेलीन्हे
शोचकरतनृप काहअकारथ। अर्जुन तोहिंरचहुं महभारथ
कृपाचार्य द्रोणी सम अत्री। हमहूं हैं कृतवर्मा क्षत्री
शल्य नरेश अहे वल भारी। क्षत्री महावीर धनु धारी
मुकुट बाँधि कीजे सरदारा। दीजे भूप शल्य शिर भारा
सुनिके कुरुपति आनँद पाये। मुकुट शल्यके शीश बँधाये
विप्रन आइ वेदध्वनि भाख्यउ। आगेकलश नीरभरिराख्यउ
बहुत भाँति शकुनी शुभकीन्हे। दुर्योधन कछु कहिवे लीन्हे
शल्य नरेश आपु यश लीजे। रण पांचों पांडव वधकीजे
भीषम प्रथम गिरे मैदाना। द्रोण गुरू को भयो निदाना॥
दो॰ सैन सहोदर सब गिरे गिरे कर्ण से मित्र।
शल्य पांडवन जीतिहैं ऐसी नृप के चित्र॥
कही शल्य देखहु पुरुषारथ। मारि पांडवन जीतहुँ भारथ॥
महायुद्ध करिहौं परतक्षक। पै अर्जुन रथ श्रीपति रक्षक॥
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना। रविके उदय साजि सबसैना॥
कृपाचार्य अश्वथामा साज्यउ। भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ॥
कृतवर्मा कीन्हेउ असवारी। सैन अनेक वीर धनुधारी॥
अस्त्र बाँधिशकुनीतव आयउ। चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ॥
कुरुपति रथ साजो है कैसे। इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
चंचल चपल आनि रथ जोरे। पवन वेग सों चारिउ घोरे॥
ध्वजा पताका बाँधेउ बाना। बहुत भाँति बैरख फहराना॥
गज पाछे पर्वत सम भारी। पांव जँजीर नैन अँधियारी॥
चारिहु पाट बहत मद धारा। ज्यों झरना झर बहे पनारा॥
अति उतंग देखत छबिपावत। मनहुँमेघ धरणी पर आवत॥

दो० कुरुपति चले साजिदल सेनासिंधु समान।
हय रथ पैदल चलेवहु गर्दलोपिगे भान॥
धर्मराय कीन्ही असवारी। पारथ रथ जोते वनवारी॥
अर्जुन अंग सनाह विराजे। अक्षयत्रोण गांडिवसो भ्राजे॥
चढ़े कोपि रथ भीम भयंकर। प्रलयकालमहँ जैसे शंकर॥
चढ़ि तुरंग पर नकुलस्वहाये। धर्मराय कहँ शीश नवाये॥
कंचन रथ सहदेव विराजे। करअसुफरी सरिसशरछाजे॥
धृष्टद्युम्न क्षत्री गण राजे। चढ़े तुरंग वीर सब गाजे॥
गजअरूढ़ अगणितबलभारी। जिनके नयन परी अँधियारी॥
पहिरि सनाह महावत चढ़े। मानहुं विधि अपने करगढ़े॥
क्रोधवंत जानत रण घोरा। छायालखि देखहिंभुजओरा॥
कोपमान पैदल रण चांड़े। फरी लेइ चमकावतखांड़े॥
सांगि शूल लीन्हे कोउकर। कोउ मुगदरलेकोउ धनुर्दर॥
दो० धर्मराययहिविधिचल्यो दलबलकीन्होसाज।
पारथ रथ जोती गहे सारथि श्रीव्रजराज॥
तनसाजि कुरु खेतहि आये। दुउ दल वीरन शोभा पाये॥
दुन्द्र निशान बाजने बाजे। होत शब्द मानहु घनगाजे॥
चिहकत गज हींसत हैं घोरे। आगे होयँ शूर रण जोरे॥
मग्नहि पेलि देहिं मयमन्ता। क्रोधित जुरें फिरें चौदन्ता॥
रथी रथी शर वर्षन लागे। कोप अनलउरअन्तरजागे॥
समसी अनी जुरे असवारा। मुगदर गदाशेल परिहारा॥
हांक मारिके पैदल धाये। महायुद्ध करिवे मन लाये॥
यहिविधि लरतकरतघनघोरा। मंडेउ खेत जोर सों भोरा॥
आगे शल्य हांकि रथआये। बाण वृष्टि रथ ऊपर लाये॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे। जलद मनहुंश्रावणमहँजैसे॥
नंदिघोष श्रीपति पहुंचायो। अर्जुन बाण वृंद झरिलायो॥
दोर्ष भीम करत संग्रामा। दोऊ जुरे खेत जय कामा॥

दो० कृतवर्मा अरु नकुल सों भिरेखेत परिचारु।
शकुनी रण सहदेव सों भई भयंकर मारु॥
कृपाचार्य कीन्ह्यो पुरुपारथ। धृष्टद्युम्न सों मंड्यो भारथ
कुरुपति धर्मराय रण सरसे। छूटत बाण बुंद सम बरसे
दुउदल महा बाजने बाजे। करहिं युद्ध क्षत्री गण गाजे
यहिबिधिसरिस लरावतबाना। जूझे वीर गिरे मैदाना
शल्य हाथ तक्षिण शर छूटे। सेन वेधि धरणी महँ फूटे
अर्जुन के बाणन के मारे। कुरुदल लोटे परे निनारे
परे शूर महि लोटतकैसे। लागत पवन पाकफल जैसे
क्षत्री सदा अस्त्र परिहारहिं। एकहिएक क्रोधकरि मारहिं
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे। घायल नंदिघोष के घोरे
सहस बाण मारे हनुमानहिं। असी बाण ते श्रीभगवानहिं
अर्जुन अंग बाण बहु मारे। शरते तन जरजर कैडारे
तव पारथ कीन्हेउ संधाना। शल्य अंग मारे बहुबाना।

दो० आठ बाणते रथ हन्यो तुरग अंग शरवीश।
एक बाण यहबिधिचल्योकट्यो सारथीशीश॥
शल्यहि भयो क्रोध अतिभारी। करेउ अवर रथपर असवारी॥
यहिबिधि बाण बुंद झरिलाये। पांडवदल बहु मारि गिराये॥
अर्जुन त्यागि बाण यहि रूपा। प्रलय काल जैसे यम भूपा॥
कुरुदल पारथ किये निपाता। जानत सबै युद्ध की बाता॥
ऐसे बाण क्रोधकरिजोरे। मानुष कहाशेष शिरफोरे॥
शल्य कोपि लागे शर मारन। जूझे सेन हजार हजारन॥
भीमसेन द्रौणी ते भारथ। दोऊ जुरे सरिस पुरुपारथ॥
मारे बाण क्रोध ते पागे। चल्यउ न एक एक के आगे॥
सत्तरि बाण भीम उर लागे। क्रोधवान उर अंतर जागे॥
किये भीम तव लघु संधाना। गुरुसुतअंग हने शतबाना॥
दोऊ वीर करत घमसाना। जर जर भये लगे तनबाना॥

अथवंत यहिविधि शरछांव्यो। भारत भूमि बाण ते पाट्यो॥
दो० यहिविधि कीन्हेउ युद्धबहु दोऊवीर समान।
सात लक्ष चतुरंगदल जूझि गिरे मैदान॥
अर्द्धचन्द्र शर द्रौणी छांट्यो। धनुगुण भीमसेनको काट्यो॥
करते धनुप डारिमहि दीन्ह्यो। रथते उतरि गदाकरलीन्ह्यो॥
देकरि हांक वृकोदर धाये। मानहुं काल देह धरि आये॥
द्रौणी कोपि बहुत शर मारे। बायें अंग भीम सब टारे॥
क्रोधित भये गदा परिहारे। बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे॥
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे। सेना बधन भीम मन दीन्हे॥
धर्मराय दुर्योधन सारन। बरषें बाण मनो घन आवन॥
दोऊ भूप छत्र के धारी। महा शूर क्षत्री अधिकारी॥
मालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे। ते शर चोट शीश परकीन्हे॥
दुर्योधन कीन्हेउ संधाना। धर्मराय उर मारेउ बाना॥
क्षत्री सबै करत रण सरसे। चहुंदिशि बाणवृन्दसे बरसे॥
कृतवर्मा सन नकुल लराई। महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई॥
दो० अर्जुन शल्यहि रणमचो रथ चाके घहरात।
हांकत हरिरथ हांकदे पीताम्बर फहरात॥
श्याम शरीर जगत मनमोहे। कुंडल झलक कपोलनसोहे॥
श्रम जल बुंद बदनपर कैसे। मरकत मणि मुक्ताहल जैसे॥
सारथि रूप धरो बनवारी। भक्त हेतु पांडव हितकारी॥
कही कृष्ण अर्जुन सों बैना। चितधरि करो शल्यसनसैना॥
पुनिअर्जुन लागे शर मारन। जूझी फौज हजार हजारन॥
शल्य नरेश पांडुदल मारत। जैसे अग्नि सघनवन जारत॥
वीरन हाथ तेज शर छूटत। भेदि सनाह अंग महँ फूटत॥
महामत्त लाखन गज धावत। आगेपरत सो मारिगिरावत॥
पकर पुनिवखेरिसों मारत। बहुतक छेदि दंतसों टारत॥
बहुत लपेटि शुंड सों लीन्हे। डारि चरणतर चूरण कीन्हे॥

तोरि शीश फेंकत हैं कैसे । पाके ताल गिरहिं महिजैसे ॥
अति उतंग देखत भयकारी । यहिविधि बहुतकसेनसँहारी ॥

दो० पांडवदल जूझे घने भई भयंकर मारि ।
लेकर गदा हांकदे धाये भीम प्रचारि ॥

गदा घाव कुंजर संहारेउ । तातें वदन फोरिके डारेउ ॥
दशन पकरिके जेगज हटकेउ । गहिकरशुंडधरणिमहँपटकेउ ॥
फेंके पैदल जात न जाने । ज्यों बकुलाको पंख उड़ाने ॥
यहिविधिकीन्ह्यो सेननिकंदन । दौरे देखि द्रोणगुरुनंदन ॥
क्रोधित ह्वै कीन्हे संधाना । भीमअंग मारे शत बाना ॥
तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हे । ते शर घाव शीश पर दीन्हे ॥
भीमसेन तव धनुष सँभारे । द्रौणी अंग बाण दश मारे ॥
यहिविधि दोउयुद्ध अरुझाने । अरुणावरण शोणितलपटाने ॥
शकुनी कही भूपसों बाता । कुरुपति सुनो युद्धकी घाता ॥
दोउ दल अटके अरुझाने । महायुद्धकछुजात न जाने ॥

दो० अब आज्ञा म्वहिंदीजिये लैधावों कछु सेन ।
बेड़े होइ अरिपर परें आपु देखिये नैन ॥

कुरुपति सुनिके आज्ञा दीन्हे । अपनी अनी साथ के लीन्हे ॥
दश सहस्र कुंजर मतवारे । तीनिसहसरथसरिस सँवारे ॥
साठिसहस असवार महाबल । डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल ॥
क्रोधवंत होइ शकुनी धाये । विदरि होइ पाछे कहँ आये ॥
पैठे पेलि फौज महँ कैसे । गंगा मिलीं सिंधु महँ जैसे ॥
शल्य खड्ग मुद्गरफटकारहिं । शरते वीर शैल बहुमारहिं ॥
मारे बहु पांडव दल बीरा । भरकींअनी धरहिं नहिंधीरा ॥
शकुनी रची युद्धकी करणी । जूझी सेन परी सब धरणी ॥
भयो शोर दल बेरख डोले । दगा दगा पांडव दल बोले ॥
छूटे बाण सके को मापन । पांडव दल जूझे तब लाखन ॥
महाशूर रण पलटि सँभारे । मारु मारु कै सबनपुकारे ॥

मरैं न एक एकके आगे। उरभे सबै क्रोध तें पागे॥

दो० यहि विधि शकुनी सैनकी जूझी फौज अनंत।
पारथ अब निरखतकहा भाष्यउ कमलाकंत॥

नन्दिघोष फेरे बनवारी। भयेअघात शब्द अधिकारी॥
तब अर्जुन शर छांड़त कैसे। प्रलय काल घन बरषतजैसे॥
हय गजरथ कीन्हेउ बहुखंडित। रुंड मुंड धरणी महँ मंडित॥
यहि विधिकीन्हेउ सैननिकंदन। हांक देत हांकत जगवंदन॥
तब शकुनी कीन्हे संधाना। अर्जुन उर मारे शत बाना॥
कृष्ण अंग बहु बाण प्रहारे। बीस बाण अश्वन उर मारे॥
तब पारथ तीक्षण शर छांटे। मारे अश्व धनुष गुण काटे॥
सेना बधि अर्जुन रण गाजे। चढ़ि तुरंग पर शकुनीभाजे॥
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं। पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं॥
यहि विधिते अर्जुन धनु खांचे। जूभे सकल एक नहिं बांचे॥
विरथ भये आये तव तुमपैं। मंत्र एक नृप सुनिये हमपैं॥

दो० धनुधारी अर्जुन सरिस जीति सकै नहिंकोइ।
कोता ह्वै सबमिलिजुराहिं होनी होइसुहोइ॥

कुरुपति के मनमें तब आई। कहा शल्यसों बूझौ जाई॥
उरभे शल्य युद्ध के घाता। शकुनी आयकही तब बाता॥
शरते अर्जुन सकहिं न मारन। अबलरिये कोताहथियारन॥
यहि विधि कीन्हे क्षत्री धर्महिं। हारि जीति राजाके कर्महिं॥
सेवक धर्म कराहि प्रतिपालहिं। होई अंतलिखा जो भालहिं॥
शकुनी शल्य लगे यहिबाता। उतपारथ दलकरत निपाता॥
शल्य नरेश क्रोध कै धाये। धर्मराय के सन्मुख आये॥
भाष्यो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं। धर्मयुद्ध करिये केहि रूपहिं॥
छांड़िउ धनुषबाण की करणी। रथहि छांड़ि धाये सबधरणी॥
सत्रह दिवस भयो रणभारथ। भीषम द्रोणकरण पुरुपारथ॥
आजु युद्ध मेरे शिर भारा। उतरि खरह्वकोता हथियारा॥

भूप शल्य भाष्यो यह बानी। धर्मराज बोलेउ सह
दो० भूप युधिष्ठिरक्रोधकरि कहेउ वचन परिमान।
शल्य पर्व भाषा रचत सबलसिंह चौहान॥
इतिश्रीमहाभारतेभाषाकृतेशल्यपर्वप्रथमोऽध्यायः १
लरहु शल्यजस आवहि मनमें। निजकर आजु मारिहौं
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ। रथते उतरिवचनयहभा
रथहि छांडि उतरे सब धरणी। धर्मयुद्ध कीन्ह्यो यह कर
धर्मराय त्यागी असवारी। उतरे भूमि क्रोध करि भ
दोऊ दल छांडे निज स्यंदन। नंदिघोष बैठे जग बंद
अर्जुन उतरि खड्ग लै हाथा। धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हे सा
नृप आगे सहदेव विराजे। बांधे अस्त्र फरीकर सा
भीमसेन गहि गदा फिरावत। नकुल शेलकर शोभापाव
उतरे सबहिं युद्ध के शूरा। क्षत्री धर्म महाबल पू
कुरुपति उतरि रथहिते आये। गहेअस्त्र कर शोभा पा
महावीर सब बांधे बाना। अटके ठौर ठौर मैदा
दो० दोऊ दल यहिविधि जुरे कठिन बजाये सार।
मुद्गर गदा शेल कर छूटत खड्ग कि धार॥
लागत खड्ग घाव शिर फूटे। बाहत शेल सजोइल द
मुद्गर धरत करत चकचूरन। जूझिगिरे धर केतिक शूर
फिरि खड्ग सहदेव सँभारत। कौरव दल बहुते रणमार
ऐसे हनत खड्ग कर साधे। टूटिपरहिं हयगय गिरिका
क्रोधितशकुनि खड्ग परिहारे। शिरकाटत सहदेव सँभा
हँसि सहदेव कहा यह बानी। सुनुमंत्री शकुनी अभिमान
तेरेहि मंत्र भये सब नासा। करहुँआजतोहियमपुर बास
दोऊ वीर भिरेउ रण चांडे। उधरत तजि बचावत ला
तब सहदेव घात करि पाये। मारि खड्गशिरकाटिगिराय
कुंडल परेउ शिरधरणी। महामोह कछु जात न बरणी

भीमसेन कर गदा सँभारे। एकै घाव वीरसब मारे॥
कुरुपति आय कियोपुरुषारथ। मारेउ सैनकियो रणभारथ॥
दो॰ गदाहाथ मणिमयलिये करतकोपि परिहार।
हयगज रथ चूरण किये सेना वीसहजार॥
गुथत शूर कटारिन मारहिं। पकरिकेशगहिभूमि पछारहिं॥
यहि विधि महायुद्ध रण होई। पाछे पांव धरहिं नहिं कोई॥
गुरु शिखंडी द्रोणी संगा। महा युद्ध कीन्हे रणरंगा॥
क्रोधित खड्गघाव परिहारहिं। दोऊ वीर ढालपर टारहिं॥
कुरुसुत क्रोधितझोंभरभारो। कटो शीश कै परेउ नियारो॥
अर्जुन गह्यउ खड्ग तबहाथा। काटे बहुक्षत्रिन के माथा॥
कहूं शीश कहुँपरे अधर धर। खड्गसहित कहुँपरे कटेकर॥
कोऊ युद्ध करत रण करणी। कोऊ कटे अधरधर धरणी॥
गे शल्य महि परे कराहत। कोऊखड्ग कोपि शिरवाहत॥
कहूं देखियत गजको शुण्डा। कहूंमुण्ड कहुँलखियेरुण्डा॥
कहूं कबंध धरणि पर धावत। शीशपरेमहि जयजयगावत॥
जर शीश रुधिर की धारा। जनु गेरू रँग श्रवत पहारा॥
दो॰ कुन्त फरी तोमर गहे लरत शूर परचारि।
मारत वीरनक्रोधके निसरत पंजर फारि॥
न सबहि लोटत लपटाने। खेलत फागु अवीरन साने॥
रत शेल सजोइल फूटत। रुधिरधार पिचिकासमछूटत॥
इहिबिधिखेलत चांचरिरनमें। महाशूर शंका नहिं मन में॥
प्रद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी। कौरवदल लोटत सबधरणी॥
कृतवर्मा तब आपु सँभारे। पांडवदल बहुते संहारे॥
कोऊ बाहत खंजर धोपा। कोउ मारतमुद्गरकरिकोपा॥
भीमसेन गज बहुत सँहारे। जो अभिरे तेहि सबहिंपछारे॥
कोऊ मारुकै सबमिलि भाषत। महावीर सब लोहुन चाखत॥
भिरत भिरत जरत मैदाना। क्रोधित सबै शंक नहिंमाना॥

यहि विधिसों जोरत रणरंगा । करत भोग सुरकन्यन संगा ॥
दो० दोउवीर दल इमि लरत जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत देवगण हर्षित चढ़े विमान ॥
रहत खेत महँ शूर न कैसे । देखत भोर तारगण जैसे
धर्म्मराय तब कहा विचारी । सुनो शल्य हित बातहमारी
अब हमसों तुमसों है जोरा । चढ़िरथ कीजे धनु टंकोरा
बाजा भीम खेत महँ खांड़ो । धर्म्मयुद्ध मोते रण चांड़ो
तब रथपर कीन्ह्यो असवारी । धनुषबाणकर गह्यो सँभारी
कही शल्य अस्थिरअबरहिये । मारतहों तीक्षण शरसहिये
यह कहि शल्य बाण दश छांटे । धर्म्मपुत्र त्यहि बीचहिकाटे
सात बाण भालुक नृपलीन्हे । ते शरचोट शल्य पर कीन्हे
दोऊ वीर बाण परिहारहिं । एकहिं एक क्रोधके मारहिं
कोपि शल्य यमअस्त्रहि लीन्हे । पढ़िके मंत्र फोंक शर दीन्हे
हांक मारिके बाण प्रहारहिं । इत नृप इन्द्र बाणसों मारहि ॥
तीसर बाण युधिष्ठिर छांटे । नृपको धनुषबाण गुणकाटे ॥
दो० डारि धनुष कर शूललै घालो घाव प्रचण्ड ।
सात बाणते धर्म्मसुत काटिकियो शतखण्ड ॥
दोऊ वीर क्रोध ते पागे । अशकुनहोनबहुतविधिलागे ॥
दिशा धुंधि भयकारक भारी । रविअदृश्यबहुफिकरासियारी ॥
जंबुकगणबोलत रथ आगे । रुधिर बुंद नभ बरषनलागे ॥
बैठे काक भयंकर बोलत । भूमिमलीअहिपति शिरडोलत ॥
झंझर पवन बहे अतिभारी । उलकापात होत भयकारी ॥
गीधन आय शल्य रथ छाये । ध्वजाटूटि धरणी पर आये ॥
भये अघात शब्द घहराने । अचरज करि सब काहू माने ॥
भूप युधिष्ठिर हांके दीन्हो । क्रोधित शक्ति हाथके लीन्हो ॥
मारत हों अब शल्य सँभारो । आजु जानिबो तेज हमारो ॥
क्रोधित शल्य खड्गकरलीन्हे । शक्ति घाव राजा तब कीन्हे ॥

छूटत शक्ति शब्द भयो भारी। दशोंदिशाकीन्ह्यो उजियारी॥
वज्र समान शक्ति जब आई। कुरुपतिदेखि महाभय पाई॥
॥ दो० धर्मप्रबल सुतधर्म को कीन्हो शक्ति प्रहार।
ढालफोरि कर छेदिकै हृदय भेदिगा पार॥
जूझि शल्य परे तब धरणी। धर्मराज कीन्ही यह करणी॥
धर्मतनय जब शल्यहि मारो। सबदेवन जयजयति पुकारो॥
भीमसेन बल आपु सँभारी। ज्यहिपायो त्यहिसबै सँहारी॥
द्रोणि कृपा कृतवर्मा भाजे। जीति युद्ध पांडव दलगाजे॥
अंध धुंध भा खेत भयंकर। नाचत महा मगन मनशंकर॥
भूप युधिष्ठिर भाष्यो बैना। अंधकार नहिं सूझत नैना॥
कृष्ण समेत कियो तब गवना। चले धर्मसुत अपने भवना॥
दुर्योधन तब शोचत मनमें। कोऊ साथ रह्यो नहिंसँगमें॥
कीजैकाह कवनि दिशि जैये। बाढ़ो रुधिर पंथ नहिं पैये॥
सात तालभा रुधिर उँचाई। हयगजभापत वरणि न जाई॥
तुरग तुरंग कहत नहिं आवै। रतनाकर की पटतर पावै॥
बहे जात लोहित मँझधारा। कवनि भांति जैये अवपारा॥
दो० पृथ्वीपति दुर्योधन लक्ष छत्रधर साथ।
लक्ष्मीजाकेकंधपरत्याहिविधिकीन्हअनाथ॥
तब नृप मनमें कीन्ह विचारा। पैरिरुधिर जैये अब पारा॥
अस्त्र सनाह खोलि सब डारे। लैकर गदा भूप पगु धारे॥
यहिबिधि भारत किये महारन। एक लोथ पर परे हजारन॥
वार पार ढिग आव न जाहीं। रुधिरनदी अतिभई अथाहीं॥
पैरत भूप शंक नहिं मन में। जात लोथ अभिरतहै तनमें॥
जबहुँ केश चरणन अरुझावैं। पैरत जात पार नहिं पावैं॥
जहां द्रोण गाड़ो जय खम्भा। अभिरेभूप गहो तब थम्भा॥
गहिकै खम्भ किये विश्रामा। जीवशोच पहुँचा किमिधामा॥
पकरहिं लोथ वहुत मँझधारा। बूड़िजात सबसहत न भार

विधिवश एकलोथ तबगह्यो । बूडो नहीं भार तिनसह्यो ॥
चलो लोथगहि रोहित हेलत । अभिरत मृत्यु गदासोंठेलत ॥
बहुत कष्ट सों उतरे पारा । तब अपने मनकियोबिचारा ॥
दो० कौनबीरकी लोथ यह कियमनमाहँ निदान ।
शल्यपर्व या बिधि कही सबलसिंहचौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते शल्यपर्वणि
[illegible]बधवर्णननामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

इति शल्यपर्वसमाप्तम् ॥



अथ गदापर्व।

गदा पर्व अब करत बखाना। दुर्योधन मन में अनुमाना॥
अंधकार भो गयो न चीन्हा। मुकुट ज्योति मुखदेखेलीन्हा॥
लषण कुमार चीन्हि जब पाये। करुणा करत भूप मन लाये॥
जूझे पुत्र हमारे काजा। कहिहैंकहाभवनप्रतिराजा॥
ऐसे सुत सपूत संसारा। मुयहुसमय म्वहिंपारउतारा॥
रोय कह्यो दुर्योधन राजा। विधिविरुद्धकीन्होयहकाजा॥
पहि विधि लोथ डारि जो जैहैं। जंबुक काक गीध गण खैहैं॥
अग्नि देन अवसर नाहिं पाये। कह्यो मृत्तिका दे करि जाये॥
गदा घाव धरणी पर मारो। भयो गढ़ा तब लोथहिं डारो॥
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो। जंबुक काक न पावहिं जैसो॥
महा शोच करि कीन्हो गवना। पहुंचे जाइ सुकुरुपतिभवना॥
अंतःपुर कीन्हे परवेशा। रानी चकित देखि यहवेशा॥

दो०. एकवसनबूड़े रुधिर अरुणवरण सब अंग।
गदाहाथ शिर मुकुट है और न कोऊ संग॥

रानी रोय ठोंकि कै माथा।जिर्नाथेधिर्कीन्ह्योहमर्हिअनाथा॥
आदर करि आसन बैठाई। धोइ रुधिर वस्तरपहिराई॥
दुर्योधन भाष्यो सब बचना। ज्यहिविधि भईयुद्धरचना॥
सुनि रानी बोली अह बानी। मेरी बात नाथ नाहिं मानी॥

भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी। जूझेउ खेत सबहिंबलभारी॥
गिरे शल्यसुत बंधु गिराये। खेत छांड़ि काहे तुम आये॥
जैये तहां जहां पितु आवै। जौलों खोज भीम नहिं पावै॥
कछुकआनि मिष्टान्न जेंवाये। दीन्हपान कछुविनय सुनाये॥
अबयहिसमय भूप सुनिलीजे। साहस छोंड़ि शोचनहिंकीजे॥
चारिहु युग ऐसी चलि आई। कर्म लिखा सो मेटि न जाई॥
दुर्योधन सुनि कीन्यो गवना। आये त्वरित पिताके भवना॥
चरण परसि ठाढ़े भे आगे। कौरवपति सों कहिवे लागे॥

दो० दुर्योधन सब-विधि-कही-जूझिगिरे सबखेत।
अब उपाय का कीजिये बूझतहौं सो हेत॥

सुनत शोच धृतराष्ट्रककीन्हो। करिकरुणाकछुकहिबोलीन्हो॥
विधि परपंचजानि नहिं जाई। व्यास सरोवर रहो छिपाई॥
गांधारी भाष्यो तब बैना। देखों पुत्र खोलि खहिं नैना।
जबते पति देखो मैं आँधो। तबते नैन पटी हम बाँधी।
बसन राखि सुत आगे आयो। पाछे व्यास सरोवर जायो।
एक बसन सों जंघ छिपाये। दुर्योधन तब आगे आये॥
पटी खोलि गांधारी हेरी। हे सुत बात न राख्यो मेरी॥
वज्र शरीर भयो सुत तोरा। उबरा जंघ दोष नहिं मोरा॥
असकहि पटी नैन महँ दीन्हे। करुणासहितविदासुतकीन्हे॥
चलि निशंक दुर्योधन कैसा। परमहंस छांड़त गृह जैसा॥
मातु पिता छांड़ि निय भवना। लेकर गदा पंथ कहँ गवना॥
तके सरोवर नृप तहँ आये। फूले कमल सुवास सुहाये॥

दो० चक्रवाक सारस युगल निर्मल जल गम्भीर।
मधुकर गण डोलत सदा बहु मरालकी भीर॥

पिछले पांव धसो जल राजा। पांडव खोज मेटिबे काजा॥
चहिविधिचित्रचित्तनीरतकि आये। झलकतमुकुटदेखि वेदिपाये॥
जलथंभन विधा कर कैसे। बैठो जाइ शयन महँ जैसे॥

लक्ष्मीकृपा बहुतविधि कीन्ही । कनकपलँग सोवनकहँदीन्ही ॥
दुर्योधन कीन्हे विश्रामा । पांडु गये सब अपने धामा ॥
जयकरिविजयभवनकहँकीन्ही । कुंती हाथ आरती लीन्ही ॥
रण महँ इन मारे कुरुनाथा । करे आरती तेहि निजहाथा ॥
कही भीम सब बंधु सँहारे । दुर्योधन कहँ मैं नहिं मारे ॥
धर्म पुत्र कह भो रण घोरा । मोसन परेउ शल्यसों जोरा ॥
अर्जुन कही मातु सों बैना । कुरुपतिहमनहिं देख्यो नैना ॥
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा । तब कुंती बूझा सहदेवा ॥
मंत्री मंत्र विचारत मन में । कुरुपतिबच्योकिजूझ्योरनमें॥

दो० हाथ जोरि सहदेव कह मातुसुनहु यह बैन ।
जीवत है दुर्योधन गिरत न देख्यो नैन ॥

कुंती कही सुनहु हरि पारथ । तुम भारथरणकियोअकारथ ॥
कुशल गये दुर्योधन धामा । तो सेना मारे केहि कामा ॥
पांचो बन्धु कृष्ण सँग धाये । दुर्योधनहिं बधे यश पाये ॥
तब कुंती यह बात जनाई । कही कृष्ण मेरे मन आई ॥
पांडव तबहिं चले हरि साथा । खोजत खोज फिरे कुरुनाथा ॥
अंधकार भा जात न चीन्हा । बारि मशाल हाथ के लीन्हा ॥
जूझे वीर खेत मों परे । झलके मुकुट जरायन जरे ॥
कहूं मुंड कहुं देखे रुण्डा । कहूं गयंद परे कहुं शुण्डा ॥
कहू तुरंगम परे अरध खर । कहूंचरण कहुं परे विकरकर ॥
रुधिरपानकरि योगिनिनाचहिं । जंबुककाकलोथि बहुखाचहिं ॥
कुरुपति खोजकरत नहिंपावत । देखो पंथ ब्याध इकआवत ॥
भीमसेन पूछे तब बयना । दुर्योधन को देख्यो नयना ॥

दो० कही ब्याध करजोरिके भीमसेन सों बात ।
वीर एक दख्यो हतो ब्यास सरोवर जात ॥

गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये । वीर एक हम देखन पाये ॥
सुनी भीम मन महँ अनुमाने । निश्चय के दुर्योधन जाने

पांचो पंथ कृष्ण सँग आवत। आगे व्यास पंथ दिखरा
व्यास सरोवर निकटहिं आये। चरण चिह्न तहँ देखन पा
भरतपांव दुर्योधन जहँवां। फूलतकरणबराणिमहँ तहँ
विधि विरोध काहू नाहिं होई। लक्षण भयो कुलक्षण सो
यहिविधिखोजकरत चलिआये। व्यास सरोवर देखन पा
अगम गँभीर सरोवर कैसो। उठे तरंग तरंगिनि जैसो
कृष्णदेव तव आप बखानत। जलथंभन नीको नृपजानत
धर्मराज को भा अंदेशव। जलमहँकछुवलचलेनकेशव
अव उपाय करिये प्रभु कैसो। अवहीं निकरै कुरुपति जैसो

दो॰ महावीर दुर्योधन कहँ आपु भगवान।
अवहीं निकरतनीरसों भीमहांकसुनिकान॥

भीमसेन आये तव तीरा। दिये हांक दुर्योधन वीरा
निकरो नृप बूड़ो केहि काजा। कुरुवंशहि लावत हौ लाजा
सुन ते हांक क्रोध कै भारी। उठिकर गदा गहो सम्भारी
पकरि बांह लक्ष्मी बैठाई। पुनि राजाको बहुत बुझाई
जलसों निकरियुद्धमति करिये। मेरोकहा चित्तमहँ धरिये
दूजी हांक भीम जब दीन्हो। कटुकबचनकहिवेबहु लीन्हो
सुत बांधव रणसवहिं जुझायो। आपु भागिकै जीवबचायो
मानि गोविंद धरायो नामा। जलमों आनिछिप्योकेहिकामा
भीम हांक सुनि कुरुपति कैसो। द्रुमदावा लागीपुनि जैसो॥
गहिकरगदा उठन जव चह्यो। आगे ह्वै कमला कर गह्यो॥
अस्थिर रहो सुनो मम बैना। कालिह देहुं संपति सों सेना॥
दिवस अठारह भई लराई। तीनिलोक फिरि कै हम आई॥

दो॰ तासमलक्षणवंतनाहिं फरयो कंध जेहिवास।
तीनिलोकमहँ ढूंढिकै फिरि आइउँ तव पास॥

कालिह दिवस जो तेरे मनमें। जीति सकै नहिं पांडव रन में॥
ताकारण सुनु तोसों कहिये। धीरह्वै जलमहँ रहिये॥

नके नृप कमला के वयना। पौढ़ि पलँगपरकीन्हेउशयना॥
जी हांक भीम जब मारो। निकरुनिकरुकुरुनाथपुकारो॥
डत हो कत क्षत्री धर्मा। होइहहि सोइ लिखाजोकर्मा॥
हागर्व तुम सबदिन कीन्ह्यो। निकरतनहींभाजिजललीन्ह्यो॥
क जीवन जल में है तेरो। इतनी बात अंगवत मेरो॥
प्ते वलते गनत न आना। अब काहेतुम तजत गुमाना॥
रहु गदा फाटि जल जैहै। गहिके केश अबहिं लै ऐहै॥
नत वचन दुर्योधन जस्यो। वरत अग्निमानहु घृतपस्यो॥
धितउठि कौरवपति जबहीं। गही वाहँ कमलापुनितबहीं॥
धु वैर को सकहि निहारी। पांयनठेलि लक्षिमी डारी॥

दो॰ गदापाणि दुर्योधन ऊपर पहुंच्यो आइ।
धर्मराज तब दौरिके मिले हृदयमहँ लाइ॥

में युधिष्ठिर के मन आई। चलि सिंहासन बैठिय भाई॥
ब मिलिहमसेवा तव करि हैं। आज्ञा सदा शीशपर धरिहैं॥
च गाँव अजहूं मोहिं दीजे। अपनो छत्र सिंहासन लीजे॥
हसुनि दुर्योधन हँसि भाखे। धर्मराज तुम धर्महिं राखे॥
से समय न छांड़ौं टेका। करिहौं आजु एकको एका॥
ई अग्र देहौं नहिं दाना। करहु युद्ध भारत मैदाना॥
र्मराज कह सुनिये भाई। तेरे मन ऐसी जो आई॥
उ बंधु अब हमसों लीजे। तीनि तीनि समता रणकीजे॥
सि दुर्योधन भाष्यो बानी। भाई तुम यह बात न जानी॥
र्जुन भीम लेउँ जो दोऊ। बांधत तुम्हें न राखत कोऊ॥
र्मराज तब कहा सुभाई। एक एक ते उचित लराई॥
र्योधन बोले परिमाना। राजा राजहिं युद्ध समाना॥

दो॰ कह्योकृष्ण कुरुनाथसों यहहै उचित विचार।
लरौ भीमसों खेत महँ जय देइहि करतार॥

र्योधन क्रोधित ह्वै भाष्यो। कबते भीम छत्र शिरराख्यो॥

कही कृष्ण तुमें बात न पाई । चारिहुयुगहियाहिचलिआई
भुज बल ते बसुधा कर भोगा । ज्ञानी है सुकराहि पुनि योगा
भीम महाबल जीते भारथ । लइ राज अपने पुरुषारथ
तब भीमहिं राजा करि लेखो । धर्मराज नावहिं शिरदेखो
पांचहु बंधु कृष्ण मुख ताके । सबदिन रहत भरोसे जाके
धर्मराज जब शीश नवैहें । पल में भीमसेन जरि जैहें
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो । लेहरिवंश भीमकहँदीन्ह्यो
कृष्णादेव यह रचना ठाना । ताको दुर्योधन नहिं जाना
श्रीपति कही विलंब न लावहु । धर्मराज अब शीश नवावहु
भीम बगल हरिवंशहि राखो । सो तकिधर्मयुधिष्ठिरभाखो॥
भूप भीम कहँ शीश नवायो । जयधुनिकरिहरिशंखबजायो॥

दो० दुर्योधन कह भीमसों क्रोधवंत है नैन ।
गदा युद्ध हमतुम करहिं सबमिलि देखैंनैन ॥

गहिके गदा दोउ भे ठाढ़े । क्रोध अनलउर अन्तरबाढ़े
मंडलफिरहिं घातदोउताकहिं । कोउ कोउकहँयतननपावहिं
रोंकत गदा गदा सों टारत । एकहि एक क्रोध के मारत
गदा प्रहार शब्द भा कैसे । छूटत बज्र इन्द्र कर जैसे
सरस निरखि कहिजातनकाहू । पण्डित गदा युद्ध बल बाहू
धावत गदा हांक दे हांकत । पद के भार मेदिनी कांपत
कुरुपतिभाष्यो भीम सँभारो । आजु जानिबो तेज हमारो
कही भीम अब जानत भाई । गजमारि जनिकरहुबड़ाई
मोते आजु परयो है कामा । देखो को जीते संग्रामा॥

दो० दुर्योधन तब क्रोधके घाल्यो घाव प्रचंड ।
गदारोंकि सम्भारिके भीम महा बलबंड ॥

कोपि भीम तब गदा प्रहारा । महावीर कुरुनाथ सँभारा॥
दोऊ बीर जोरते झरपत । महाबीर मन नेकु न डरपत॥
यहिबिधि करत युद्धको करणी । भूमिपाल बोलति है धरणी॥

महामत्त तन उरभ्यो दोऊ । प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ ॥
गदा गदा सों लागत जबहीं । निकरत अग्निभभूकातबहीं ॥
गदा हाथ रण शोभा पावत । पक्ष सहित पर्वत जनुधावत ॥
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे । सतयुग-महँबलि आँध्योजैसे ॥
चढ़े विमान देवगण देखत । अपनेमनअचरजकरिलेखत ॥
गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे । कुंकुमअरु कज्जलगिरिजैसे ॥
कलबलकरतभीमफिरिआवत । गदा पवन ते पक्षि उड़ावत ॥
जुरे भीम दुर्योधन कैसे । प्रद्युम्नहिं शंबर रण जैसे ॥
॥ दो० अयुत नाग बल दुहुँन के महावीर परचंड ।
मारत गदा जु कोपिकै ज्यों टूटत यमदंड ॥
लागत गदा दोउ के तनमें । धमकत घाव शब्दजनघनमें ॥
चंचल चपलफिरत दोउ बांको । घूमत मनहुँ कुम्हारकोचाको ॥
दोऊ वीर युद्ध मन लाये । तीरथ फिरि बलभद्रहि आये ॥
देखो तहां महारण घोरा । परे भीम दुर्योधन जोरा ॥
हलधर विहँसि कही यहवाता । कुरुपतिसहित गदाकेघाता ॥
बल कछु अधिक भीमके तनमें । हारजीत नाहिं देखत मनमें ॥
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई । केहि कारण अबरचहुलराई ॥
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन । कोउनसकहि काहुको मारन ॥
अजहुं दूनहूं प्रीति विचारहु । जो मानहु हितवचन हमारहु ॥
युद्ध घात दोउ अरुझाने । हलधरवचन हृदयनहिंआने ॥
कहि बलभद्र कियोतबगवना । कुरुक्षेत्र परिरक्षक कवना ॥
कृष्ण भीम कहँ जंघ बताई । निरखिवृकोदर घात लगाई ॥
॥ दो० भीमसेन तब क्रोधकै मास्यो घाव बचाय ।
दोउजंघ भंगनभयो पस्यो धरणिपरआय ॥
गिरि कुरुपति धरणी में ऐसे । काटत मूल परत द्रुम जैसे ॥
पूर्व बैर मनमहँ सुधि आई । भीमसेन तब लात उठाई ॥
हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा । रहहु भीमकहिवे असलीन्हा ॥

अष्टादश क्षौहिणी भुवारा । मनत गोविंद जानुसवसारा ॥
कृष्ण सहित भाष्यो सवराजा । चरणप्रहारकरतक्यहिकाजा ॥
करते चरण समेटन कीन्ह्यो । बैठ सँभारिकहे तव लीन्ह्यो ॥
क्षत्री धर्म्म न भीम विचारयो । गदा घाव जंघन पर मारयो ॥
कही भीम दुर्योधन वीराहिं । जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं ॥
तादिन में सवसों प्रण भाष्यों । तोरयो जंघ प्रतिज्ञा राष्यों ॥
श्रीपति कही कुरूपति राजाहिं । जव हम गये वसीठीकाजाहिं ॥
तादिन मेरो कहा न कीन्हा । कटुक वचन मोसेकहि दीन्हा ॥
सेना संपति सकल गँवायो । ज्याहिक्षणकरगहिमोहिंउठायो ॥

दो० दुर्योधन कह कृष्णसों मैंहों जंतु समान ।
हमें लगावत दोष अब तुम प्रेरक भगवान ॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी । मोहिं दोष नहिं अन्तर्यामी ॥
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना । धर्म्मराज तव आपु वखाना ॥
कुरुपति कही वचन परमाना । सुनिमाधव तव कीन्हपयाना ॥
पांचों वन्धु कृष्ण संग लीन्हे । भारत जीति भवनशुभकीन्हे ॥
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो । दीनदयाल भक्तप्रण राखो ॥
अस कहिके आरती सवाँरी । प्रथम कृष्ण के शीश उतारी ॥
धर्मराज सों माधव भाखो । मेरो मंत्र सदा तुम राखो ॥
मो कहँ मति ऐसी वनि आई । चलो साथ तुम पांचों भाई ॥
आजुराति वसिये नहिं भवना । नन्दिघोष चढ़ि कीजे गवना ॥
असकहि पांचो वन्धु चढ़ाये । योजन एक भवन तजिआये ॥
अर्जुन हृदय शोच भा भारी । का रचना यह कीन्ह मुरारी ॥
सुमिरण शम्भुनाथ कर कीन्हा । शंकर आय दरश तवदीन्हा ॥

दो० श्रीहरिभाष्योशम्भुसन हमसवकीन्होगौन ।
आजु राति द्वारे रहो द्वारपाल के भौन ॥

गंगाधर भाष्यो परतक्षक । आजु द्वार रहिहैं हम रक्षक ॥
जो विधि रची होय पुनि सोई । द्वारे जान न पावै कोई ॥

ते पाण्डव माधव पगु धारे। शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे॥
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी। गिरे भूप यह हिय महँ जानी॥
मध्य प्रहर निशि आयो तहँवां। जंघ भंग दुर्योधन जहँवां॥
बैठे कर सों गदा फिरावत। जंबुकगीध निकटनहिंआवत॥
गुरुसुत दूरिहिते कहि कारण। अमरसदासककोउन मारण॥
अजहूं कहा हमारो कीजै। पांडव मारिजगत यशलीजै॥
सुनि बोले तब द्रोणी ऐसा। राजा बिनु रण कीजै कैसा॥
शीश रुधिर लै टीका कीन्हा। मैं राजा तुमकहँ करिदीन्हा॥
मारि पांडवन पांचो भाई। वसुधा भोगकरहु तुमजाई॥

दो० गुरु सुत भाषा क्रोध के दुर्योधन सों बैन।
मारिपांडवन शीश लै आनिदेखावहु नैन॥

ऐसो कहि पुनि आयो तहँवाँ। कृपाचार्य कृतवर्मा जहँवाँ॥
तासों बचन कहे अस लीन्हो। दुर्योधन राजाम्वहिं कीन्हो॥
प्रोजन मोरि सहायजो कीजै। पाण्डवमारिराज्य अवकीजै॥
उत्तर तीनों मनहिं विचारत। एक उलूककाक बहु मारत॥
द्रोणी कहे देखिये नैना। बूझै शत्रुहि को बल रैना॥
चलो त्वरित जाइययहिकारण। दिवस नाशको पांडवमारण॥
यह कहिके तीनों जन आये। द्वारे दरश शंभु के पाये॥
गूढ़ चहुंफेर शूल हे रक्षक। दरवाजे शंकर परतक्षक॥
कृतवर्मा तब कह्यो विचारी। जात कहाँ ठाढ़े त्रिपुरारी॥
द्रोणी कहा रहहु तुम रक्षक। जेहों निकट होइ परतक्षक॥
अस कहिके शंकर ढिगआये। के प्रणाम तब गालबजाये॥
तब कृपालु हर भाष्यउ बानी। मांगो वर द्रोणी वड ज्ञानी॥

दो० द्रोणपुत्र यहि विधिकही भीतर दीजै जान।
गदा पर्व भाषा रच्यउ सबलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः १॥

शम्भुनाथ बोल्यो यह बचना। मनमें समुझिकृष्णकीरचना॥

द्वारें मारग जान न पैहो। गढ़हि फांदिके भीतर जैहो॥
कह्यो द्रोण शंकर सों ऐसो। फिरतशूलत्यागहिम्बहिं कैसो॥
काढ़ि भस्म शंकर तब दीन्हा। जाहि शूल तें रक्षा कीन्हा॥
के प्रणाम तब तुरत सिधाये। फांदो गढ़ भीतर तब आये॥
प्रथम गये द्रोणी चलितहँवाँ। कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवाँ॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे। व्याध कुरंग धरत हैं जैसे॥
लैकै खड्ग कंठ मों धरिहहु। काटिहौं शीश विलंबनकरिहहु॥
कनक पलँग पर कीन्हे शैना। पांच पुत्र तब देख्यो नैना॥
पांचौ बंधुके पांचौ जाये। रूप समान भेदनहिं पाये
खड्ग घाव तब द्रोणी कीन्हे। पांचौ शीश वामकर लीन्हे
यहि अन्तर दासी सब जागीं। हाहा शब्द पुकारन लागीं

दो० जागि उठ्यो रनिवाससब टेरत करुणा बैन।
द्रोण पुत्र कर खड्गलै लागनिपातन सैन॥

चौंकि उठे पुनि सब अकुलाने। आपुस में बहुते अरुझाने
अन्धकार नहिं सूझै नैना। मारु मारु करि भाषे बैना
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते। कृतवर्मा करि मारे तेते
अन्धकार महँ कछुनहिं सूझत। अपनपरार कोउनहिंबूझत।
गढ़ भीतर द्रोणी संहारे। निकरि चले कृतवर्मा मारे।
भारत माहिं बचे हैं जेते। निशा युद्ध महँ जूझे तेते।
निकरि द्रोण सुत बाहर आये। कृप कृतवर्मा देखन पाये।
मारि पाण्डवन कीन्ह्यो काजा। चलिये शीश देखाइयराजा॥
बैठे खेत कुरुपति जहँवाँ। तीनिउबीर गये चलितहँवाँ॥
द्रोणी कही नृपति सों बाता। पांचहु पाण्डवकीन्ह निपाता॥
हर्षवन्त होई राजा भाख्यो। मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो॥
धरे आनि शिर नृपति आगे। मुकुट ज्योतिसों देखनलागे॥

दो० पांच बन्धु के पांच सुत नृप निहारे नैन।
विस्मयकै गुरुतिकह्यो द्रोण पुत्रसों बैन॥

करुणा करि भाष्यो तब राजा । बालकबधकीन्ह्योक्यहिकाजा ॥
मस्तकते लै हृदय भुवारा । वंश नाश कीन्हे हत्यारा ॥
असकहि प्राणतजे नृप जबहीं । भय उपजो द्रोणीजियतबहीं ॥
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो । द्रुपदसुताके पुत्र सँहारो ॥
कृतवर्मा जब चित्त विचारा । द्वारावती तुरत पगुधारा ॥
भे आतुर द्रोणी चले तहँवां । उत्तर नर नारायण जहँवां ॥
उदय प्रभात सूर्य्य भे जबहीं । लै पाण्डव हरि आवे तबहीं ॥
देखे सबै सैन संहारे । पांचौ पुत्र तेऊ गे मारे ॥
करुणा करहि द्रौपदी सरसे । आंशु नीर नैननसों बरसे ॥
अर्जुन देखि अचम्भव माना । द्रुपदसुता यहिभांति बखाना ॥
करुणा करि पांचाली भाखी । अब घटप्राण जाहिं ना राखी ॥
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे । अनुचरसहित सैन सबमारे ॥
द्रोणिहि बांधि तुरतही दीजे । नातरु प्राणत्याग हम कीजे ॥

दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो हांको रथ भगवान ।
बांधि लै आवों द्रोणसुत यह प्रण कियेनिदान ॥ ७८

यह सुनि रथ हांको बनवारी । क्रोध शोक पारथ धनुधारी ॥
ज्यहि पथ द्रोणी किये पयाना । ता पथ रथ हांको भगवाना ॥
सुनि रथशब्द द्रोणि उततांके । जात कहां अर्जुन तब हांके ॥
सोवत पांचौ बालक मारे । भाजजात सुनु तिमि हत्यारे ॥
सुनि द्रोणी अपने मन जाना । आयुआनिअवसमयनिदाना ॥
जाको भेद न अर्जुन जाने । सोई बाण करे सन्धाने ॥
यह सुनि शृंगी अस्त्रहि लीन्हे । पढ़िकेमन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
सुरगण देखि सबै भय माना । प्रलयभये सबही मनजाना ॥
पाण्डव वंश न एक उबारों । अर्जुनसहित आजु सबमारों ॥
हांक मारि द्रोणी शर छांटे । भूमि अकाश अग्निते पाटे ॥
छूट्यो बाण तेजसों कैसे । प्रलय अनलमहँधावहिंजैसे ॥
अर्जुन निरखि अचम्भवमाना । श्रीपतिसों यहिभांतिबखाना ॥

प्रजाटोग सबकरहिं अनन्दा । जिमिचकोरपावहिंनिशिचन्दा ॥

दो० दत्तपुत्र मन्त्री भये पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंह चौहानकह भक्तिवश्य भगवान ॥

भारत कथा सुने मनलाई । ताके निकट पाप नहिं जाई ॥
जो फल सब तीरथ असनाना । जोफल कोटिन कन्यादाना ॥
जोफल होइ शरण के राखे । जोफल सदा सत्यके भाखे ॥
जोफल हो परमारथ कीन्हे । जोफल पिण्ड गयाके दीन्हे ॥
जोफल रणमां प्राण गवाँये । सोफल है यह कथा सुनाये ॥

दो० भारत सुने अनेकफल मोसे कहो न जाय ।
अनायास बैकुण्ठलहि दरश देहिं यदुराय ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते गदायुद्धवर्णनन्नामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

इतिगदापर्वसमाप्तम् ॥

भविष्यपुराण क़ी० १=)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासीकृत भाषा है-इस में पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णोंके धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, होनेवाले राजाओं का राज्यसमय, गर्भिणी धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्यआदि वर्णन किये गये हैं ॥

शिवपुराण भाषा क़ी० ३॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दीभाषा में भाषानुवाद कियाहै इसमें शिवजीके निर्गुण व सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काम्युपाख्यान, शतरुद्रीखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त की गई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड क़ी० ।=)

पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी का भाषा है इसमें सेतुबन्ध का माहात्म्य वहां के सब तीर्थों का वैभव, महालयश्राद्ध का माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेव का वर्णन इत्यादि बहुत सी कथायेंहैं ॥

ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क़ी० ।)॥

जिसको पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देश भाषा में रचा जिस में अनेक प्रकार के इतिहास और सम्पूर्णव्रतों के माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

बारहोस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ी० ४) पु०

इसके भाषा टीका को श्रीअंबरस्वामीजी ने प्रकार प्रकार के छन्दों की ललित व्रजबोलीमें रचना किया है यह टीका ऐसा मनोहर हुआ है कि जिसकी सहायता से थोड़ा भी जानने वाला भागवत को भलीप्रकार से समझ सकता है यह पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुस्तक है बिना ऐसे सरल भाषा टीका के सब को [illegible] नहीं समझ पड़ता है इसका मूल बीच में और भाषा टीका [illegible] ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से [illegible] छपाई [illegible] दिखाई है [illegible] छापा प्रस्तर है ॥

महाभारत

सौप्तिक और ऐषिकपर्व

सबलसिंह चौहान विरचित

अर्थात् श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण की रीतिपर दोहा चौपाई में सरलता पूर्वक वर्णित है

सोतेहुए द्रौपदी के पांचो पुत्रों को अश्वत्थामाने मारडाला तदनन्तर पाण्डवों पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया इत्यादि कथा वर्णित है

सम्पूर्ण भारतनिवासाकांक्षि विद्यानुरागियों के उपकारार्थ

चौथीबार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई,) के छापेखाने में छपी
सन् १९०२ ई०॥

श्रीगणेशायनमः॥

अथ महाभार

सौप्तिकपर्व।

शम्भुनाथ बोल्यो यह वचना। मनमेंसमुझि कृष्णकीरचना॥
द्वारे मारग जान न पैहो। गढ़हि फांदि के भीतरजैहो॥
कह्यो द्रोणि शङ्कर सों ऐसो। फिरतशूलत्यागहिम्वहिकैसो॥
कादि भस्म शङ्कर तब दीन्हा। जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा॥
के प्रणाम तब तुरत सिधाये। फांदो गढ़ भीतर तब आये॥
प्रथम गये द्रोणीचलि तहँवां। कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवां॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे। व्याध कुरंग धरत हैं जैसे॥
लैके खड्ग कंठ मों धरिहहु। कटिहोशीशविलंवनकरिहहु॥
कनक पलँग पर कीन्हे शैना। पांच पुत्र तब देख्यो नैना।
पांच वन्धुके पांचो जाये। रूप समान भेद नहिं पाये।
खड्ग घाव तब द्रोणी कीन्हे। पांचौ शीश बामकर लीन्हे।
यहि अन्तर दासी सब जागीं। हाहा शब्द पुकारन लागीं।

दो० जागि उठ्यो रनिवास सब टेरत करुणा वैन।
द्रोण पुत्र कर खड्ग ले लाग निपातन सैन॥

चौंकिउठे पुनि सब अकुलाने। आपुस में वहुते अरुझाने।
अन्धकार नहिं सूझे नैना। मारु मारु करि भाषैं वैना।
भागि निकरि गढ़ वाहर जेते। कृतवर्मा करि मारे तेते।
अन्धकारमहँ कछुनहिं सूझत। अपनपरार कोउ नाहिं बूझत।
गढ़ भीतर द्रोणी संहारे। निकरि चले कृतवर्मा मारे।
भारत माहि बचे हैं जेते। निशा युद्ध महँ जूझे तेते।
निकरि द्रोण सुत बाहर आये। कृप कृतवर्मा देखन पाये।

मारि पाण्डव कीन्ह्यो काजा । चलिये शीश देखाइय राजा ॥
बैठे खेत कुरूपति जहँवां । तीनिउ वीर गये चलितहँवां ॥
द्रौणी कही नृपति सों वाता । पांचहुपाण्डवकीन्ह निपाता ॥
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो । मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो ॥
धरे आनि शिर भूपति आगे । मुकुट ज्योतिसों देखनलागे ॥
दो० पांच बन्धु के पांच सुत भूप निहारे नैन ।
विस्मयकरि भूपति कही द्रोणपुत्र सों वैन ॥
करुणा करि भाष्यो तब राजा । बालकवधकीन्ह्योक्यहिकाजा ॥
मूकभये दुख हृदय भुवारा । वश बार कीन्हे हत्यारा ॥
असकहि प्राणतजे नृप जबहीं । भयउपजोद्रौणी जियतबहीं ॥
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो । द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो ॥
कृतवर्मा जब चित्त विचारा । द्वारावती तुरत पगुधारा ॥
भे आतुर द्रौणी चले तहँवां । उत्तर नरनारायण जहँवां ॥
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं । लै पाण्डव हरि आये तबहीं ॥
देखे सबै सैन्य संहारे । पांचों पुत्र तेउ गे मारे ॥
करुणा करहि द्रौपदी सरसे । आंसु नीर नैनन सों बरसे ॥
अर्जुन देखि अचम्भव माता । द्रुपदसुता यहिभांति बखाना ॥
करुणाकरि पांचाली भाखी । अवघटप्राण जाहिं ना राखी ॥
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे । अनुचर सहित सैन सबमारे ॥
द्रोणिहिं बांधि तुरतही दीजे । नातरु प्राणत्याग हम कीजे ॥
दो० क्रोधवन्त अर्जुन भयो हाँको रथ भगवान ।
बांधिलै आवों द्रोणसुत यहप्रण किये निदान ॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेसौप्तिकपर्वानुक्रमणिकाकथनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥

इति

अथ महाभारत

ऐपिकपर्व।

यह सुनि रथ हांको बनवारी। क्रोध शोक पारथ धनुधारी॥
ज्याहि पथ द्रोणी किये पयाना। तापथ रथ हांको भगवाना॥
सुनि रथशब्द द्रोणि उततांके। जात कहां अर्जुन तब हांके॥
सोवत पांचो बालक मारे। भाजजात सुनु किमि हत्यारे॥
सुनि द्रौणी अपने मन जाना। आयुआनि अवसमयनिदाना॥
जाको भेद न अर्जुन जाने। सोई बाण करे संधाने॥
यह सुनि शृंगी आसहि लीन्हे। पढिके मन्त्र फोंक शर दीन्हे॥
सुरगण देखि सबै भयमाना। प्रलय भये सबही मनजाना॥
पाण्डव बंश न एक उबारो। अर्जुनसहित आजसबमारो॥
हांक मारि द्रोणी शर छांटे। भूमि अकाश अग्नितें पाटे॥
छूट्यो बाण तेज सों कैसे। प्रलयअनलमहं धावहिं जैसे॥
अर्जुननिरखि अचम्भव माना। श्रीपतिसों यहिभांतिबखाना॥

॥दो० पारथ कही बिचारिकै सुनु देवन के देव।
॥ कौन नाम है बाणको बूझि परै नहिं भेव॥

तब श्रीहरि यहिभांति बखाने। यहशर अर्जुन तुम नहिंजाने॥
गुरु द्रोण वंचित तोहिं कीन्हे। पुत्र जानि वाको शर दीन्हे॥
त्याग किये यह शृंगी बाना। तीनिलोक जाको भयमाना॥
श्रीपति कहो सुदर्शन धावहु। पाण्डु बंश तुमजायबचावहु॥
सात बाण तब अर्जुन मारे। महाप्रबल शर टरत न टारे॥
बाण प्रताप सबन भय पाये। नन्दिघोषतजि यदुपतिधाये॥
बदन पसारि लीन्ह भगवाना। महाबाण हरिउदर समाना॥
सहितयुधिष्ठिर सबहिं बचाये। गर्भ परीक्षित जरे न पाये॥
नागपाश तब पारथ लीन्हे। क्रोधितद्रोणिहिं बन्धनकीन्हे॥
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे। चले तुरन्त भवन पगुधारे॥

करुणा करति द्रौपदी नारी। आय गये पारथ धनुधारी॥
अश्वत्थामहिं कीन्हे ठाढ़ा। छूटे केश कुबन्धन गाढ़ा॥
दो० तनुप्रस्वेदविगलितवदन चितवनि नीचेनैन।
भीमसेन कर खड्ग लै क्रोधित बोले बैन॥
अरे मूढ़ काटौं अब शीशा। द्रौपदि सुतन बैर लै ईशा॥
द्रौपदि देखि दयाचित आई। तब माधवसन भाष्योगाई॥
विप्र वधेकर दूषण भारी। बन्धन छोड़ि देहु बनवारी॥
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं। द्विजहत्या परलोक नशैहौं॥
सो सुनि हरि बहुतै सुखमाना। धन्य द्रौपदी आपु बखाना॥
शीशचीरि श्रीहरि मणिलीन्हे। पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हे॥
भारत रणमहँ सब हैं जेते। सद्गति कीन्हि धर्मसुत तेते॥
पांच बन्धु श्रीपति सँगलाये। देखे बुन्दिचक्षु पहँ आये॥
बुन्दिचक्षु कछु कहिवे लागे। सबै कृष्ण पाण्डव के आगे॥
सब मिलि भीमसराहत तोको। अंकमालिका दीजिय मोको॥
हरिरचना के वृकोदर कीन्ह्यो। लोहक भीम आगु लैदीन्ह्यो॥
अन्धभूप तब भुजा पसारे। मिलत समय चूरणकरिडारे॥
भाष्यो भीम अहेबल भारी। तुम रक्षा कीन्हे बनवारी॥
दो० गंधारी सबही मिले मधुर बैन जो भाखि।
बहुतभांति परबोधिकरि समाधान करिराखि॥
राजहि कहि गंधारी रानी। हरिरचना कीन्हो यह जानी॥
दिवसअठारह भा यहिभारथ। यकशतपुत्र सहितरथपारथ॥
सो संहार सकल हरि कीन्हा। तेफल लेहि शाप हमदीन्हा॥
हलधरसहित सकल परिवारा। एकदिवस सब होइसँहारा॥
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा। हँसेकृष्ण रिस नेकु न कीन्हा॥
पुरी हस्तिना कीन्ह्यउ गौना। व्यासदेव भाष्यो यह रौना॥
पुरमें बन्दनवार बँधाये। अति आनँदमय शोभापाये॥
नट नाचत गायन सब गावत। वेद पुराणहिं विप्र सुनावत॥

कनक कलश गंगाजल धरयो । व्यासदेव घट आगे करयो ॥
द्रुपदसुता अरु धर्म नरेशहिं । गांठिजोरिकीन्ह्योअभिषेकहि॥
उत्तम वसन आनि पहिराये । श्रीपति सिंहासन बैठाये ॥
दो० दीन्ह्यो मुकुट शीशपर मनहुँ उदितभे भान ।
जयजय भाष्यो देवगण छाये बैठो आन ॥
यदुपतितिलकआपुकरलीन्ह्यो । व्यासदेवध्वनिवेदहि कीन्ह्यो ।
भीमसेन तब चामर ढारो । अर्जुन छत्र शीशपर धारो ॥
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो । दीनबन्धु अपनो प्रणराखो ॥
भारत तुम जीत्यो जगतारण । कृपाकरीस्वहिंजगतउधारण ॥
प्रभुतुम तीनिलोकके स्वामी । जीव जन्तु सब के उरगामी ॥
विप्र सुदामा दारिद भंजन । केशी कंस अघासुर गंजन ॥
यहसुनिकै श्रीपति सुखमान्यो । धर्मराय सों आपु बखान्यो ॥
तुम हो धन्य धर्म अवतारा । परमभगत जानत संसारा ॥
यहि अन्तर पुरवासी आये । दिये भेंट अरु शीश नवाये ॥
सब संसार सुखी भा भारी । राजा धर्मराज अधिकारी ॥
प्रजालोग सबकरहिं अनन्दा । जिमिचकोरपावहिंनिशिचंदा ॥
दो० द्रुपदपुत्र मन्त्री भये पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंह चौहान कह भक्तिवश्य भगवान ॥
भारत कथा सुनै मनलाई । ताके निकट पाप नहिंजाई ॥
जोफल सब तीरथ असनाना । जोफल कोटिन कन्यादाना ॥
जोफल होइ शरण के राखे । जोफल सदासत्य के भाखे ॥
जो फल हो परमारथ कीन्हे । जो फल पिण्ड गयाके दीन्हे ॥
जो फल रणमां प्राण गँवाये । सो फल है यह कथा सुनाये ॥
दो० भारत सुने अनेक फल मोसे कहा न जाय ।
अनायास बैकुंठलहि दरश देहि यदुराय ॥
इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाविरचिते
ऐषिककथासमाप्तः ॥



महाभारत

स्त्रीपर्व्व

सबलसिंह चौहान् विरचित

जो

सत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणकी रीतिपर
दोहा चौपाई में सरलतासे वर्णित है ॥

जिसमें

दुर्योधनादि सौपुत्रों का मरनासुन धृतराष्ट्रका दुःखित होकर
व्यासादि महापुरुषोंकोज्ञानदेना, पुनः गान्धारी सहित सम्पूर्ण
वधुओंका विलाप, कुरुक्षेत्रमें तनिवीरोंको वधे हुयेदेख शोचि-
तहोना व उन वीरोंकरके धर्मदेना, गान्धारीकोश्रीकृष्णचन्द्रादि
भाइयोंको क्षमाकराना, [illegible]
रानियोंकामहाविलाप, धृतराष्ट्रकरके श्रीकृष्णचार, पुनःयुधि-
ष्ठिरादि करकेमृतकर्मकरना, व धर्मनका भानु होना॥
विरक्तहोकर व्यासादि मुनियों का ज्ञानोपदेश
देनाभांतिरूप वर्णितहै ॥

को

सम्पूर्णभारतेविद्याकांक्षिरसिकानुरागियों के उपकारार्थ

[illegible]

लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
[illegible]

[illegible]



अथस्त्रीपर्व ॥

दो० जन्मेजय ते कहतहैं वैशम्पयन बखान ।
स्त्रीपर्व भाषा रची सबलसिंह चौहान ॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी । जाते होइ पाप की हानी ॥
संजय देख्यो मरे भुवारा । विस्मयमान्यो मनहिंमँभारा ॥
जाइ तबै धृतराष्ट्र के आगे । पुत्र मरण विस्मयअनुरागे ॥
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता । मानो परी बज्रकी घाता ॥
रोदन करि तब अन्धभुवारा । हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा ॥
दुर्योधन सुत रण संहारा । सबौ पुत्र जे हते हमारा ॥
एकभीम सब रण महँ मारी । काकीन्हेउ करतार खरारी ॥
हा हा पुत्र पुत्र करि राई । रोवै कुरुभूपति दुख पाई ॥

दो० दुश्शासन अरु कुरुनृपति सौबन्धवले संग ।
जूझे रणमहँ सबदल भयो चित्तमहँ भंग ॥

हा हा भीषम पित्र हमारा । हाय द्रोण हा करण भुवारा ॥
जो जो गुणहे पुत्र तुम्हारा । सो सुमिरे तन जरत हमारा ॥
हे सुत शोक महा संसारा । कत गुण सुमिरौभूप तुम्हारा ॥
राज पाट सब परा तुम्हारा । कनक पलँग के सोवन हारा ॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ । परा सुदेश सकलभुइँ गांऊ ॥
यथा काल सुत शोगहि पाये । बाम विधाता भा दुखदाये ॥
कर्म दोष दुख लिखे हमारा । सो अक्षर को मेटनहारा ॥

परिचर्या करिबो हम काही। पुत्र शोक हिरदय मां आही॥
वृद्ध अवस्था विधि दुखदाना। जैसे पक्षी पंख विहीना॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा। का रचना कीन्हों करतारा॥
दो० विनानयनतनुज्यों अहै वासर ज्योंविनु भानु।
चन्द्रविना जिमि रैनिहै दीपक विनु गृह जानु॥
त्यों विन पुत्र वंश है ऐसा। कुल को नाम नाशभा तैसा॥
परशुराम नारद समुझाये। सुत के मनते बात न भाये॥
हमें छांड़ि सुत कहां सिधाये। गर्ब्बवन्त ह्वै प्राण गँवाये॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी। जीवन आश नहीं अबमेरी॥
भीषम करण और भगदन्ता। द्रोणगुरू को भयो निहन्ता॥
महा विलाप अन्ध नृप करई। संजय तबै बात अनुसरई॥
राजा शोच तजो तुम याते। अबतुम सुनो ज्ञानकी बातें॥
राजा अहो परम सज्ञाना। जानो सबै सहस्र पुराना॥
जन्म मृत्यु दूनों सख्याता। दूनो रहैं पिण्ड महँ ताता॥
जन्म मृत्यु माया ते धारण। समुझोमन रोवतकेहिकारण॥
दो० जन्म मृत्यु माया सबै रोवतहो केहि काज।
संजय तहँ समुझावहीं अन्ध वृद्ध कुरुराज॥
संजय नाम हते एक राजा। पुत्र शोक ते भयो अकाजा॥
सुत हित चाहत प्राण गवांये। तब नारद मुनि जाइबुझाये॥
जीवन मरण लोक दुखजाना। कर्म्म फलित प्रापतपरमाना॥
सब माया जानो तुम नरपति। केवल सबै कर्म्मकीयहगति॥
पुत्रहि केर समुझिमन दोषा। हृदय माहिं करिये संतोषा॥
काहूकेर वचन नहिं माना। साधनवचनसुन्यो नहिंकाना॥
दुश्शासन मंत्री सब जाना। ताते मंत्र गने नहिं आना॥
शकुनी करण मंत्र परमाना। काहू केर कहा नहिंमाना॥
भीषम केर वचन नहिं राखे। वहुते नीति धर्म उन भाखे॥
गन्धारी के वचन न माना। तेहि अपराध तजेतिन प्राना॥

दो० सदा पाप मनमें बसै नाहिंन धर्म विचार।
सोई पाप ते भूप सुनु जूझे पुत्र तुम्हार॥

व्यास केरि वाणी नहिं मानी। अतिशय अहंकार मतिठानी॥
वहुत प्रकार कृष्ण समुझाये। पै विरोध वाके मन भाये॥
क्षत्री सब कीन्हें क्षयजानी। कृष्ण केरि वाचा नहिं मानी॥
तुमनृपसुतबशकछुनहिंकह्यऊ। पाप ते पुत्र नाश के भयऊ॥
ताते शोक तजहु तुम राई। वहुत प्रकार मंत्र समुझाई॥
सुनत कछू अधीर भा राजा। महा शोक पुत्रन के काजा॥
छांड़े भूप उर्द्ध कर श्वासा। पुत्र शोकते भयो उदासा॥
रोवै धीर धरै नहिं राई। तवहिंविदुरराजहि समुझाई॥
सुनिकै वचन धीर भयोराजा। कीन्हेउ शोक पुत्रके काजा॥
उठो नरेश शोच नहिं करिये। मेरे वचन हृदय में धरिये॥
काल वश्य है सब संसारा। तीन लोक वशमृत्यु भुवारा॥

दो० जानै योग्य अयोग्यतब जानै सब संसार।
महावीर क्षत्री जिते सबै होत संहार॥

वृद्धज्वान अरु बालक आहीं। राजा प्रजा जिते जगमाहीं॥
सबही मृत्यु सत्य प्रचराना। जानहु राजा परमतिधाना॥
सुनिनृपवात विदुर मुखजबहीं। भयो मौन धृतराष्ट्रकतबहीं॥
तबहूं होत हृदय नहिं धीरा। मूर्च्छितभये अन्धनृप वीरा॥
तबहिं व्याससंजय यक साथा। विदुर सहित बोधे नरनाथा॥
शीतल नीर वदन में दीन्हा। तबहीं हृदय चेतनृप कीन्हा॥
यहि प्रकार तब चेत जनाये। रोदन करत कहत मनलाये॥
धृग यह जीवन जक्त हमारा। पुत्र सुशोक सहै को पारा॥
महा विलाप धीरनहिं धरहीं। पुत्र शोक पुनिपुनि उरकरहीं॥
वारवार रोवत है राई। हाहा पुत्र परम सुखदाई॥

दो० धृतराष्ट्रक रोवै तहां पुत्र शोक कर हेत।
क्षणएक होत सचेत नृप क्षणयक होत अचेत॥

बहुविधि व्यास कहत समुभाई। तबहूँ धीर धरत नहिं राई॥
विदुर और संजय समुभावें। काहुकि बात हृदयनहिंआवें॥
महा शोक करि रोदन करहीं। पुत्रनाम पुनि पुनि उच्चरहीं॥
तबहिंव्यास मुनिकहसमुभाई। मंत्र हमार सुनो हो राई॥
रोदन केहिहित करहु भुआरा। यह सब देखन को उपकारा॥
मैंएकसमय इन्द्रपुर गयऊं। नारदआदिमुनिनसँगलयऊं॥
तिहि अवसर वसुधा तहँजाई। विविसुरपतिसों कह्योबुझाई॥
कहो देव मेरो उद्धारा। मम ऊपर भवभार अपारा॥
पूर्व विष्णु जे दैत्य सँहारा। ते सब भयो क्षत्रि अवतारा॥
भारी पाप सहे नहिं पारा। यहै निवेदन सभा मँभारा॥
रोदनकरि धरणी तब कहई। सकल देवता साखी अहई॥
दो० तहांविष्णुहँसिकैकहेउ सुनुभुवबचन हमार।
मनचिंता त्यागन करो हमटरिहैं भुवभार॥
निज वंश देवता जेते। जक्तमाहिं जन्मे लै तेते॥
कुरुक्षेत्र भारत संचारा। तहां होय सबको संहारा॥
गहु पुहुमि अपने अस्थाना। देव विचारि कहो भगवाना॥
सुधा मृत्युलोक कहँ आई। तबहिं विचार करें यदुराई॥
दुर्योधन पुत्र तुम्हारा। कलियुग केर अहे अवतारा॥
हाक्रोध चंचल है अंगा। सोकलियुग आवसुकरिभंगा॥
विधव अरु करण भुआरा। भारत हेत भयो अवतारा॥
सब कथा कही तुव पासा। भयो युद्ध तेरो सुत नासा॥
कारण सब भयो सँहारा। शोक तजहु अबअंधभुवारा॥
सबकीहें अंध भुवारा। पृथ्वी केर उतारेउ भारा॥
दो० यहि प्रकारतेव्यास तब कहेउ बहुतसमुभाय।
धर्म रूपतुम अंध नृप त्यागहु शोक उपाय॥
धर्मस्वरूप युधिष्ठिर राजा। ताते होय तुम्हारो काजा॥
पांचो बन्धव पाण्डु कुमारा। सोजानो शत पुत्र हमारा॥

वे पांचो तुव सेवा करिहैं। आज्ञा तोरिसदाशिर धरिहैं
मोरेवचन सत्य सुनु राजा। तुम्हरेक्रोधते पाण्डुअकाजा।
राखहु नृपति आपने पासा। दास भाव मनकरे हुलासा।
पांडव केर करौ कल्याना। सुनि तव राजा करै वखाना।
व्यास मुनीश्वर अग्र विधाना। सुनौ सवै तुम अव दैकाना।
पुत्र शोक तनु जरै हमारा। धीरज धरौ सो कौनप्रकारा।
तौ तुव हेतु वात हम माना। पुत्र शोक त्यागे हम जाना।
यहिप्रकार शांतन नृपभयऊ। तवहिंव्यासऋषिपतिपहितगयऊ॥
शीतल जल राजा को दीन्हा। व्यासवचनसुनिधीरजकीन्हा॥

दो० राजा को समुझाइकै भयो मुनि अन्तर्द्धान।
व्यास वचनते अन्धकहँ मनमें उपजे ज्ञान॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासवलसिंहकृतेव्यासअन्ध शोकनिवारणोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

सुनु राजा तव संजय कहई। दोउकरजोरि चरणगहिरहई।
कछुक निवेदन अहै हमारा। आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा।
गन्धारी कहँ वात सुनावो। अन्तःपुरमें खवरि जनावो।
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा। मूर्च्छितगात भूमिपरकासा।
तवहीं विदुर उठायो राजहि। रोदन काह करो वे काजहि।
तवधृतराष्ट्र कह्यउ समुझाई। आनु विदुर सव स्त्री जाई॥
वधुन समेत संग गन्धारी। सवलावहु यह कहा विचारी॥
चलो संग तुमहूँ हम जैहैं। सवहीको अवहीं लै ऐहैं॥
यह कहि रथहि चढ़े तवराजा। चले वधुनके आनहि काजा॥
गये तुरत तव महल मँझारा। महा शोकते अन्ध भुवारा॥

दो० महा दुखित रोदन करत अन्तःपुरहु प्रवेश।
सव सुनि कुरुदीन मई सवकुन सुना संदेश॥

रोदन करत भयो आवाजा। मानो परा मन की वाजा॥

नर पुर रुदन नगर में ठयऊ। नर नारी सब रोवत भयऊ॥
आंखिन जे देखी नहिं नारी। परी भूमि लोटैं सुकुमारी॥
बिकलवन्त रोवें सब नारी। छूटे केश न देह सँभारी॥
एक एक पट पहिरे अहई। राजवधू स्त्री जे रहई॥
घरते बाहर चलीं पुकारी। विकल सबै कुरुक्षेत्रसिधारी॥
गृह ते चलीं पुकारत जाई। मनहुं सिंहिनी पतिनगँवाई॥
एक को गहे एक धरि रोवै। एक को हाथ हाथ परजोवै॥
कन्या पुत्र गोदते डारहिं। परी भूमिमें सबहिं पुकारहिं॥
कंचन पुतरी मनहुं सँभारी। रोवत लोटत भूमिमँझारी॥

दो० आरत नाद नगर महँ सबै वधू अनाथ।
सबै वधू तहँ रोवतीं धरे हाथ पर हाथ॥

सासु श्वशुर सब एकहि साथा। रोवहिं सबै धुनैं महि माथा॥
चलि चलितनगरकेबाहर तहँवां। भयो युद्धकुरुखेतहि जहँवां॥
सहित अंध नृप औ गन्धारी। आई सब कुरुखेतहि भारी॥
धृतराष्ट्रक तब देखन पाये। तीनहु वीरन वचन सुनाये॥
कृप कृतवर्मा द्रोण कुमारा। महा प्रवल तीनों सरदारा॥
राजाते रोवत यह कहई। वचन न आवनयनजलबहई॥
महा युद्ध कीन्हेउ कुरुराजन। वचेनकोउ सुनिये महराजन॥
हमतीनों भारत में रहेऊ। राजा सुनहु सत्य हमकहेऊ॥
तीनों तब बोधत गन्धारी। तजो शोच सुनि बात हमारी॥
नाना तुम्हें क्रोध में राई। तबहिं लोहकर भीम बनाई॥
क्रोध तजो राजा परमाना। पाण्डव तनय पुत्रकरिजाना॥
तिनिजके दुख देखु विचारी। तुम्हरे पुत्र दीन्ह दुखभारी॥
व्यास बिदुर भीषम समुझाये। बहुप्रकार हमताहि बुझाये॥
बहू केर कहा नहिंमाना। हठकर कीन्हेउ रण मैदाना॥
तुमसब जानत हौ सज्ञाना। कहा कहौं भाषत भगवाना॥
तुम्हरे चित्तदया नहिं आई। पाये बहु दुख पांचोभाई॥

पांच गांउ तुमहूं न दिवाये । अपने पुत्रहिं नहिं समुझाये ॥
दो० महादुःख सहि पांडवन तबकीन्हों यहकर्म ।
मारन चाहो भीमको काहू कहो तुम धर्म ॥
कृष्ण वचन सुनि अन्धभुवारा । कहेसुमति करिहृदयविचारा ॥
बड़े भाग ते भीम वचाये । धन्यकृष्ण अन्धहिंसमुझाये ॥
क्रोध सकल अब गयो हमारा । महा कृपा भै पांडुकुमारा ॥
पुत्र सकल रण जुझे हमारा । महा शोक भा नंदकुमारा ॥
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि । परशहि अंग पांडवनप्रोधहिं ॥
धर्मराज अरु भीम जुझारा । पारथ सहदेव नकुल कुमारा ॥
सबहि अंध चरणन लपटाने । तजिकै क्रोध दया बहुमाने ॥
पांडव पुत्र महा अज्ञाना । आपन पुत्र सत्य करि जाना ॥
ऐसे पुत्रन शोक मिटाये । प्रेम हर्ष तब पांडव पाये ॥
दो० धृतराष्ट्रक को परशि कै पुत्र सुशोक मिटाइ ।
तब पांचौ पांडव बहुरि गंधारी पहँ जाइ ।
गन्धारी यह कीन्ह पयाना । आइ व्याससुनि तहांतुलाना ॥
पुत्र शोक गन्धारी अहई । शाप देन पाण्डव को चहई ॥
पट्टी बांधे है दोउ नैनहिं । तहां व्यास भाषे यह बैनहिं ॥
बचन हमार वेद परमाना । तू आगे मैं करौं बखाना ॥
शांति होइ सबदुखन मिटाई । तुव सेवा करें पांचौ भाई ॥
जात युद्ध दुर्योधन राऊ । आज्ञालो नहिं परशेउ पाऊ ॥
तब तुम्हरे मुख आइन बाता । धर्मज संजय पाप निपाता ॥
इतनी बात पुत्र सन भाषा । पूरण भयो धर्म अभिलाषा ॥
वचन तुम्हार जक्त महँ टरई । तो रवि चंद्र उदयनहिं करई ॥
सोई वचन भयो परमाना । विरथे धर्म कुकर्म नशाना ॥
दो० क्रोधक्षमाकरु देवितुव कहेउव्याससमुझाइ ।
धर्म वृद्धि क्षयपापकी यहे सुनो मन लाइ ॥
व्यास वचन सुनिकै गन्धारी । तज्यो क्रोधतबकहेउ विचारी ॥

ठाढ़े पांच बन्धु भगवाना। कहेउ व्यास गन्धारि बखाना॥
जो कछु व्यास कहत हैं बानी। वेद प्रमाण सत्य हम जानी॥
पांचव पुत्र परम रिस नाहीं। सुतको शोक भयो मनमाहीं॥
जेहि सम कुन्ती जननी तासू। तैसे हमैं देखि परगासू॥
कुरुपति शकुनी करणहु चारी। पापी सबै भूप संहारी॥
पांडु पुत्र पापहि मन दीन्हो। जानु भंग दुर्योधन कीन्हो॥
नाभी हेठ दाग पर हारा। ताते मनुभा क्रोध हमारा॥
पापी भीम जानु में मारा। सुनत त्रासभयो पांडुकुमारा॥
मन महँ त्रास हाथ तब जोरे। मातन कहो दोष कह मोरे॥

दो० सबै वीर संहारि के बाच्यो एक भुवार।
ताहिन मारेंजननिहम निफल युद्धहमार॥

जीते जीति न सकेहु भुवारा। पाप कपट करिके हम मारा॥
अरु भाई कर दोष विचारी। ताते जानु भंग करि डारी॥
जादिन सभा द्रौपदी आनी। जानु देखायो सो अज्ञानी॥
तो दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा। जानु भंग ता कारण कीन्हा॥
राजा बिन जीते ते माई। केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई॥
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे। दीन्हों नहीं गर्व मन पागे॥
तेहु न मानी बात भुवारा। कहु जननी का दोषहमारा॥
का कारण नहिं धर्म विचारा। जसकरि जानातस हममारा॥
अपने कर्म भयो संहारा। नाहिं न सुतकछुदोषतुम्हारा॥
हु दुख मोहिं दीन्ह करतारा। धर्मराज अस सुतरणमारा॥

दो० नकुल साथ दुश्शासनहिं लरे प्रथम मैदान।
तुम गहि भुजा उखारेहु बढ़े बड़ो अपमान॥

कहि भीम कहउ समुझाई। बिना दोष कीन्हों नहिं माई॥
रजस्वला जो द्रौपदी रानी। गहि कर केशसभामा आनी॥
क वस्त्र सोउ खैंचके लीन्हा। तहँ माता हनहूं प्रणकीन्हा॥
गा उखारों जबहिं तुम्हारी। पुरे प्रतिज्ञा तबहिं हमारी॥

यो क्रोध तज्यउ परमाना। पाण्डव शाप भयो परित्राना॥
न्धारी तब बोली बाता। आनो कुन्ती शत्रु अजाता॥
चो बन्धव कुन्ती लाये। सबहीमिलि कुरुखेतसिधाये॥
दो० गन्धारीकुन्ती सहित पांच बन्धु भगवान।
युद्धभूमितब सबैजन देखतठाढ़ निदान॥
हैं शतबधू रूप उजियारी। मानहुंचन्द्रकला द्युति धारी॥
अपने अपने कंत उठाये। रोदन करें सबै बिलखाये॥
निहुं मृगी शिशु यूथ बिहाई। रोदन करें सबै बिलखाई॥
द्धभूमि देखी भयकारा। देखे वीर अनेक जुझारा॥
कुण्डल नाना रतन अपारा। महारूप ते परे भुवारा॥
थन छत्र अरु दण्ड अपारा। पूरिरहेउ रणभूमि मंझारा॥
सन अस्त्र बहुतक तहँ देखे। नाना मुकुट रतनमय लेखे॥
शोणित नदी बहत है ऐसी। सरिता यम वैतरणी जैसी॥
गज रथ अश्व मनुष्यअपारा। बहेजात शोणित की धारा॥
तीन तार शोणित गंभीरा। परे नृपति क्षत्री बलबीरा॥

दो० रोवत हैं सब त्रियागण नाना रूप अपार।
आपन आपन कंतको रोदन करत पुकार॥

काहू केर शीश है नाहीं। काहू केर परे कटि बाहीं॥
काहू केर दोउ भुज नाहीं। काहुहिशूल घाव तन आहीं॥
कोइ कटे खड्ग ते आधा। काहुहि परे भूमिपर कांधा॥
काहू केर जांघ द्वौ काटे। काहू केर हृदय में छाटे॥
ऐसे परे वीर बहु तहई। भारथ रणहि भूमि है जहई॥
काक गृद्ध जंबुक जहं नाना। अरु दुर्गंधि त्रासु है घ्राना॥
बहुत रूप पक्षी गण आये। मांस खाइ आनन्द बढ़ाये॥
प्रेत भूत वैताल अपारा। नाचें योगिनि ताल सँभारा॥
नचें कबन्ध देत करतारी। योगिनि डाकिन करें धमारी॥

दो० क्रोधवंत धनु बाणलै कोइ युद्ध प्रकास।
उठे कबंध रणखेतमहँ प्रेतकरहिंसुबहास॥

कोइ पतिकहि कोइकहैकुमारा। कोई बंधु करि करै पुकारा
भयो महारण आरत शोरा। रोदन भयो महा घनघोरा
रोवहिं शतहु बधू बिलखानी। महा बिकल दुर्योधन रानी
सो कहँ लग मैं करहुं उचारा। भयोरुदन जहँ शब्दअपारा
हाहा कंत प्राणपति राजा। जाको यश सब जक्तविराजा
वासुक लक्ष्मी कंध नृपाला। करैं सेवा लाखन भूपाला
छत्रहि छत्र रहत जगछाई। सेवा करन आवत बहुराई।
रतन सिंहासन पाट तुम्हारा। नाम तुम्हार जान संसारा।
रतन मुकुट आलंकृत नाना। रूप देखिकै काम लजाना॥
अधिक सुंदरी तुम्हरी रानी। कर्मवश्य यह गति भै आनी॥

दो० अपनेअपनेकहँसुन्दरी शतबंधवकी नारि।
बहुविलापकहिजातनहिं रोवहिंशीशउघारि॥

लखि गंधारी भई अधीरा। देख्यो यह कारण यदुवीरा
सकल बधू रोवतीं हहारी। तुमहीं सबअनाथ करिडारी
जो सुंदरि मैं, तुमहिं गनाहीं। भईअनाथ रोवत सबआहीं
राजा एक करै सुत सेवा। ताकी यहगति कीन्ह्यो भेवा
जो तन अतर सुगंध सोहाई। तौन शरीर गृद्ध खग खाई
यात्रा समय पुत्रसन भाखा। वचन हमार राउ नहिंराखा
ताहि दोष नहिं नंद कुमारा। सबै पराक्रम आहि तुम्हारा।
जूझे सौ सुत रह्यउ न कोई। अंधनृपतिकी का गति होई॥
अस कहि रोवहिं ऊंचपुकारी। ताहि देखि बोले बनवारी॥
तुम्हरे सुत मम वचन न माना। मोरकहासो तृणसम जाना॥

दो० भीषम द्रोण बुझाये और बिदुर मुनिव्यास।
कहा न मान्यो काहुकर कीन्ह्योरणपरगास॥

धृतराष्ट्रक तब बहुत बखाना। इन कीन्ह्योसबकरअपमाना॥
पांडव वीर महाबल भारी। हठिकैकुरुपतिरणहिविचारी॥
अपने कर्मन भये विनाशा। नारायण यह वचन प्रकाशा॥
सुनिकै बात कहत गंधारी। अपने कर्मनगो अपकारी॥
दोष न काहू को मन धरेऊ। सो बंधव तेहि संगहि मरेऊ॥
दो० क्षात्रि धर्म उनकरेउ रण सबै वीर मैदान।
कुरुक्षेत्रतनत्यागिकै सबचढ़िगये विमान॥
तब तीनउजन कह्यो बुझाई। सुनिये मातु परम सुखदाई॥
शोक तजौ न करो बिललापा। गयेस्वर्ग सब कह संतापा॥
भीम पाप कीन्ह्यउ बहुसंगा। ताते हम कीन्हेउ रणरंगा॥
मारे दल पांडव संहारा। बधे द्रौपदी पंच कुमारा॥
पांडवको सो पराभव दीन्हा। राजाद्रुपदपुत्र बध कीन्हा॥
अब आज्ञा दीजै नरनाहा। जैये हमहूं निज थल माहा॥
बेदा मांगि तीनों तब गयऊ। द्रोणी व्यासाश्रम पगुधरेऊ॥
कृप कृतवर्म द्वारका गयऊ। कुरुक्षेत्रमहं सबजन रह्यऊ॥
गये सबै रण भूमि मंझारा। जहं बहु वीर परे विकरारा॥
रोदन करैं तहां सब कोई। वाम विधाता काहु न होई॥
भयो शोर तहं आरत भारी। एक बार शत बधू पुकारी॥

दो० महाशोर कुरुक्षेत्रमहँ रोदनभयो अपार।
नगरलोगकीनारिसब रोवतकरतपुकार॥

राजा धर्म सुनो यह पाये। कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये॥
पांचो पाण्डव नंद कुमारा। कुरुक्षेत्र तुरतहिं पगुधारा॥
प्रथमे धर्मराज गये आगे। अंध नृपतिके चरणनलागे॥
कहीं युधिष्ठिर पुत्र तुम्हारा। मोरे दोष न करो बिचारा॥
बाप पिता हम पुत्र तुम्हारा। क्षमो दोष जोभयो हमारा॥
राज पाट सब अहे तुम्हारा। हम सेवक समेत परिवारा॥

बहु प्रकार तब अस्तुतिकीन्हा। तबधृतराष्ट्र शांति मनलीन्हा।
अन्धनृपतितबकह्यउ विचारी। भीम सबै मम पुत्र सँहारी।
मिलन हेतु हमरी है आशा। कपट बुद्धि मन में परगाशा।
भस्म करन चाहै मन माहीं। तबकह कृष्णभीम यहँ नाहीं।

दो० काल्हि आइ कै भेंटिहैं भीम तुमहिं नरनाह।
चारो बन्धव मिलेतहँ विनय बहुत करिताह॥

तब यहश्रीपति युक्ति उपायउ। लोहे भीम तहां निर्मायउ।
भीमसेन कहँ राखि दुराई। लोहे भीम अन्ध पहँ लाई॥
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई। मिलो हेतुकरि कण्ठलगाई॥
नृपके कपट आहि मनु भाई। मारो भीमहि दुख मिटिजाई॥
कहा बात हिरदयमा चाही। पुत्रकेशोक विकल तनमाही॥
हर्षत क्रोध मिले तब राई। मनहुंपरी दुखिया निधिपाई॥
अयुत नागको बल तनमाही। क्रोधित भीमसेन को गाही॥
मिलत लोह चूरण करिडारा। पुहुमी माहिं परा कै क्षारा॥
संजय हाहा करी पुकारा। भीमसेन को करे सँहारा॥
सबही हाहा शब्द पुकारा। भयो मोह तब अन्ध भुवारा॥
तब माया करि रोवन लागे। भीम शोक हिरदय महँपागे॥

दो० हाय भीमसुत राजा बहु विधि करत पुकार।
शोक शांति जबहीं भयो श्रीपति वचन उचार॥

राजहि बात कहत यदुनाथा। रोदन कहा करो नरनाथा॥
अहै भीम सुनियो होराई। धृतराष्ट्रक को कृष्ण बुझाई॥
राजा कहत सुनहु बनवारी। है सब रचना कृष्ण तुम्हारी॥
सर्वमयी तुम हो भगवाना। तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना॥
वैसी बुद्धि तासु को दयऊ। जाते शत बन्धव मरिगयऊ॥
पांडव फल जीते पुरुषारथ। भक्तहेतु कीन्ह्यउ तुमस्वारथ॥
पांडव कुल के भयो उबारा। कौरव वंश कीन्ह संहारा॥

दिनाअठारहअस रण रच्यऊ। शत बन्धव महँ एकनबच्यऊ॥
मोर वंश तुम कीन्ह सँहारा। कृष्ण लीजिये शापहमारा॥
त्रिंशति षट संवत यदुराई। तवकुलआपुसमहँ कटिजाई॥
दो० छपनकोटि यदुवंश है पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्णतुमशाप मम एकहि दिन संहार॥
हँसि के कृष्णकही यह बाता। कोअस है जगमें सज्ञाता॥
यदुवंशिन सों जीतन चहई। कौन जक्त में ऐसो अहई॥
आपहि वंश होय अपकारा। यद्यपिपायो शाप तुम्हारा॥
पापी कुरुपति गयो सँहारा। काह दोष धौं भयो हमारा॥
हमजब गये हस्त्यन दरवारा। पांच गांव मांगे भूपारा॥
ग्राम देहि नहिं मारन चहई। तब कुरुपतिसनभीषमकहई॥
मोहिंशाप केहिकारण दीन्ह्यउ। सहेजक्तपतिकहिबे लीन्ह्यउ॥
सुनिकै लज्जित भै गंधारी। कृष्ण वचनसों शोकनिवारी॥
पुत्र शोक छांडेउ गंधारी। तज्योक्रोधतनु सुरतिसँभारी॥
ऐसे सुनतशांत सब भयऊ। तबहींकृष्ण हर्षमन लयऊ॥

दो० क्षमा क्रोध जबहीं भयो अंध कुरूपति राय।
पाछे तहँवां द्रौपदी पुत्र शोकबहु पाय॥

ांच पुत्र गये वधे हमारा। विलपे डारि भूमिमंझारा॥
ांधारी गहि हाथ उठाई। लीन्ह वधू कहँ कंठलगाई॥
हु प्रकार समुझावहिं वानी। भइतब मौनि द्रौपदीरानी॥
बे वधू ले कंतन रोवत। देवलोक सबसुरगण जोवत॥
रुण वयस सब ही हैं वाला। प्रथमबयसअतिरूपविशाला॥
े केश न देह सँभाला। व्याकुलसकलमहा विकराला॥
इसब देखि परिहस्यो शोका। पुत्र तुम्हार गये सुरलोका॥
सुभद्रा सुतहि पुकारी। पुत्रहि विनाधीर किमिधारी॥
क्रव्यूह युद्ध में वीत्यउ। करण द्रोण वीरनते जीत्यउ॥

ऐसो पुत्र जासु को मरई। तासुजननिकिमि धीरजधरई॥

दो० कैसे जीवै मातु वह और तासु की नारि।
उत्रा रोवनि लाजतजि हा प्रीतम सुखकारि॥

देख्यो विस्मय श्री भगवंता। रोवत पारथ शोच अनंता
उत्रहि देखि सबैतहँ रोवत। कुंती रानि वधू मुख जोवत
सासु सुभद्रा कहि समुभावत। उत्रा कहँ कर गहि बैठावत
यहि प्रकार रोवत सब नारी। कुंती मातु करै मनु हारी
ऐसे एक एक भइ धीरा। शोकते व्याकुल रहे शरीरा
कुंती रानी औ गंधारी। कीन्ह वधुनको बहु मन हारी

दो० आरत नाद मिटा तब बहु बहु धीर धराइ।
सबमिलि त्यागहु शोकअब कह्यायुधिष्ठिरराइ॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते स्त्रीपर्वणि
कुरुपाण्डव विलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

आरतनाद शान्त जब भयऊ। धृतराष्ट्रक राजा सों कहऊ
सुनहु बात धर्मज सुत राजा। अब नहिं शोचकरनकोकाजा।
हरिकी माया ते संसारा। आवत जात न लागै बारा।
मरे वीर भारत मैदाना। दानव हते देव जे नाना।
अष्टादश क्षोहिणि दलभारी। भारत भूमि परे सब भारी।
द्रोण करण भगदत्त भुवारा। और नृपति जे हते अपारा।
और नृपति जिनकेनहिं कोई। समगति करो सबन को सोई।
राजा कैसो करे उपाई। दाह कर्म बीरन के आई।
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा। लागे करन दाह कर काजा।
धर्मज भीम धनञ्जय बीरा। औरनकुल सहदेव रणधीरा।

दो० पांचो बंधवमिलि तहां करेंदाह उपदेश।
बड़े बड़े सरदार सब क्षत्री बीर नरेश॥

चन्दन अगरसहित घृतलीन्हे। दाह कर्म सबही को कीन्हे॥
पहिले दुर्योधन शत भाई। लषण कुँवर को दाह कराई॥
भूमि गुप्त करि कुरुपति धारा। बाहर काढ़ि कुँवर को जारा॥
द्रोण वीर भगदन्त भुवारा। और कलिंग शूर बरियारा॥
कर्ण वीर अँगार मति रानी। क्षेत्र माँझ सतीभइ आनी॥
और त्रिया जेहिसत मनमाना। भई संगपति सती प्रमाना॥
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा। अभिमन्यु दाहकरे तबकाजा॥
उत्रा सती होन को जाई। कहँ कृष्ण तासों समुझाई॥
तुम्हर गर्भ पुत्र यक होई। कुरु पाण्डव के सरबर सोई॥
दुइ मास गर्भ कहिभाखा। बहुसमुझाइ कृष्ण तेहिराखा॥

दो० बहु प्रकार उत्रा कहँ कह्यउ कृष्ण समुझाइ।
दुहूँ वंश महँ एक पति होइ गर्भ तुव आइ॥

नृ विराट अरु द्रौपद राजा। सोमदत्त के दाहन काजा॥
अंशुमान को दह्यो शरीरा। चेकितान दह्यो रणधीरा॥
काशीराज शिखण्डी वीरा। धृष्टद्युम्न को दह्यो शरीरा॥
करि और त्रिगर्त नरेशा। दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा॥
द्रुपदी के पांच कुमारा। गति कीन्ही तब धर्मभुवारा॥
घटोत्कच भीम कुमारा। और हलंबुष दानव बारा॥
दाहन कर्म सबहि को कीन्हा। क्षत्री वीर जहांलगि चीन्हा॥
के को जेतने असवारा। अरु पायक जे भये सँहारा॥
भारत महँ जूझे हैं जेते। दाहकर्म धर्मज किये तेते॥
धृतराष्ट्र अरु सँग नरनाथा। गये गंगतट ब्राह्मण साथा॥

दो० तर्पण अरु अस्नान करि क्षत्री देव प्रमान।
याहि प्रकार राजा कर दाहन कर्म सिरान॥

करि अस्नान नगर में आये। तब कुंती पुत्रन समुझाये॥
त सुपुत्र आपहि संसारा। सोइ कर्ण सुत हते हमारा॥

कन्या कलँक भयो अवतारा। सूर्यध्यानकीन्ह्यउ ज्यहिवारा॥
ज्येष्ठ बन्धु सोइ करण तुम्हारा। प्रेत कर्म तेहि करो भुवारा॥
यह चरित्र राजै सुनि पाये। हायकरण तुम कहां सिधाये
भ्राता आजु बात सुनि पाये। अनजाने रण तुमहिं गिराये
आगे माता नाहिं जनाये। भाष्यो तब जब मारि गिराये
मो कहँ शोक सिन्धु में डारेउ। पहिले माता नाहिं सँभारेउ
तबहिं शाप माता कहँ दीन्हा। तव गुण मातु कर्णबधकीन्हा
गुप्त कथा नारिन तन माहीं। रहे कदापि कला उर नाहीं।

दो० महा शोक राजा हृदय कर्णहिं हेतु विलाप।
ज्येष्ठ बन्धु बधकीन्हेउ भयो महा बड़ पाप॥

कर्ण वीरके कर्महिं कीन्हे। वेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे॥
है वृषकेतु जो कर्ण कुमारा। कर्म पिता के करै सँभारा॥
औरो ज्ञाति सबै परिवारा। कीन्हे कर्म वेद व्यवहारा॥
तर्पण ज्ञान गंग महँ कीन्हा। पिण्डदानतब दशदश दीन्हा॥
यह कीरति जलमें निर्बाहा। पुनि बाहर आये नरनाहा॥
क्रियाकर्म सबके हित कीन्ह्यउ। बहुतदानविप्रनकहँदीन्ह्यउ॥
विदुर और धृतराष्ट्र भुवारा। पांचो पांडव नन्द कुमारा॥
गृह में गये सबै यक साथा। पाण्डव सङ्ग आपु यदुनाथा॥
रहे गेह महँ सब जन आई। कुन्ती अरु गन्धारी माई॥
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई। चिंतावन्त धर्मसुत राई॥

दो० ज्ञाति बन्धु को शोक है धर्मराज मनमाह।
दुख पावत हैं हृदय महँ पाण्डव पति नरनाह॥

यहि अंतर तहँ सबमुनि आये। पाराशर तब द्वर्पि सिधाये॥
नारद मुनि आये पुनि तहँवां। सनक सनंदन हूंगे जहँवां॥
व्यासकपिलअरुअष्टपिगणनाना।मुनिवशिष्ठतहँ कियोपयाना॥
ऋषि जमदग्नि संग सब आये। धर्मराज तब दर्शन पाये॥

पांचों बंधव बैठे जहँवां। कुरुनृप और विदुरहैं तहँवां॥
बंधु शोकते धर्म शरीरा। नयनश्रवतजलबहु दुखपीरा॥
राज पाट हित बंधव मारा। महाशोक महँ धर्म भुवारा॥
रोदन करें तहँ धर्म नरेशा। बन्धुशोक तन भयो प्रवेशा॥
तबहीं व्यास सिखावन लागे। राजनीति धर्मज के आगे॥

दो॰ बहु प्रकार समुझाय के धीर धरायो व्यास।
कृष्ण समेत बन्धु सब बुद्धिचक्षुहं पास॥

सुर अरु असुर दनुज नरदारा। बन्धु बन्धु ते बैर सँभारा॥
सर्प गरुड़ बांधव परमाना। सदा युद्ध ते करें निदाना॥
सदा सों यहे बात चलिआई। तुम कह शोच करत होराई॥
जन्म मृत्यु होते परमाना। हरिमाया काहू नहिं जाना॥
तीनोंरूप त्रिगुण अवतारा,। सिरजें पालें करें सँहारा॥
जनमत संग मृत्यु तो आवा। माया रूप गर्भ नर पावा॥
मरिहैं सबै न बचिहै कोई। जेतने देव दैत्य नर सोई॥
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा। मरहिं अष्टकुल नागपसारा॥
मरिहैं धरती और अकाशा। मरिहैं मेघ नीर परगाशा॥
मरिहैं चन्द्र सूर्य अरु तारा। मरिहैं ब्रह्मऋषिहि संसारा॥

दो॰ शोक परिहरो धर्मसुत देखहु ज्ञान विचार।
जो जन्मा सो सब मरा मृत्यु लोक संसार॥

केतक भये मही अवतारा। कहां गये वे सबै भुवारा॥
ते भये कहत नहिं आवैं। अन्तकाल सबमृत्युहि पावैं॥
राजा रंक मरें सब भारी। मरिहैं महावीर धनुधारी॥
यहि लोक नाम यहि अहई। जो कोइ जन्म आइकै गहई॥
रहें सबै अमर नहिं कोई। केवल सुयश रहै जग सोई॥
माता पिता बधू सुत भाई। जीवतभरि माया अधिकाई॥
अन्तकाल एको नहिं अहई। अपनोधर्म आप सँग रहई॥

अथ महाभारत

शान्ति पर्व।



राजा सुनौ शान्ति विस्तारा। करत राज श्रीधर्म्म भुआरा॥
ज्ञाति शोकते धर्म्म भुआरा। भावत नहीं राज संसारा॥
दिन दिन महाशोच तब माना। चौथेपन का कौन पयाना॥
शतबन्धुनरु द्रोण गुरु मारा। रोवहिं धर्म्म दीर्घ जलधारा॥
कर्ण बन्धु सोऊ वध कीना। भीपम तौ शरशय्या लीना॥
यहै शोच तौ राजा करही। दिन२तनु दुःखित दुखपरही॥
जेही अवसर मुनि सब आये। नारद और वशिष्ठ सिधाये॥
मार्कंडेय कपिल अरु भृगुमुनि। जमदग्नी औरौ मुनीशगुनि॥
वृहदश्व लोमश सज्ञानी। सब मन्त्रीगण विदुरप्रमानी॥

दो० श्रीवलभद्र नारायण पांचौ बन्धु भुआर।
बैठे सबै सभा विषे सुतौ परीक्षित वार॥

सबै करत राजा से बाता। श्रीबलहरिमुनिऋपिसख्याता॥
परजा भाग धर्म्मसुत राजा। पुरी हस्तिना शोभित राजा॥
बड़े भाग कुरु सब संहारे। परम सुःखकर राज भुआरे॥
जस संजय नृप शोक गमाये। नारद सबको कहिसमुझाये॥
वेदव्यास ऋपी बहु ज्ञानी। धर्म्मराज से कहे बखानी॥
ज्ञान तन्त्र सुनहु नृप बाता। चलो वेगि भीपम पै ताता॥
व्यास वचन सुनिके नरनाथा। चले नृपति हरिबलहैं साथा॥
औरौ सबै मुनी सँग लाये। कुरुक्षेत्र में पहुँचे आये॥
जहँ शरशय्या भीपम पाये। बैठ रावै तहां मन लाये॥
[illegible] भीपम कहँ देखा। महा शोक बाढ्यो नृप पेखा॥

हृदय शोक प्रकाशिकै कहै लाग नृप बैन॥
बालक काल पिताके हीना। तब प्रतिपालन तुमहीं कीना॥
मोसम पापी मुग्ध न आना। भीषम मैं मारे अज्ञाना॥
सत्य वचन हमको गुरु जाना। मैं कर पाप असत्य बखाना॥
जेठ बन्धु कर्णहि रण मारा। अस्त्रहीन पारथ संहारा॥
मोसम पापी जगत न कोई। भये नहीं नहिं होवै कोई॥
पांच पुत्र द्रुपदी के गयऊ। औ अभिमनुरणमेंबधभयऊ॥
कौन सुःख है राज हमारा। अल्पकाल पातक को टारा॥
जाऊं वनहि तजौं मैं राजा। वनोवास कुमती के काजा॥
शोक अनल ते दहै शरीरा। महाशोक से कह नृप वीरा॥
दो० शोक व्याकुल है राजा जक्तबन्धु दुख ताप।
कर्म लिखा नहिं जानहि सहब कहा संताप॥
कहही बात व्यास समुझाई। समाधान कै सुन अब राई॥
बाल युवा वृद्धहु किन होई। अन्तकाल मरते सब कोई॥
दुख सुखहै यक सम संसारा। काल सर्व्व संहारनहारा॥
रोगी मरे वैद्य मरि जाई। स्त्री पुरुष मरें सब राई॥
राजा प्रजा गुणी सब मरैं। देवरु दैत्य जन्म सब धरैं॥
मरिहैं गँधरब यक्ष अपारा। चांद सूर्य्य मरिहैं अवतारा॥
सिधि संन्यासी मरिहैं भारी। मरिहैं राजा रङ्क भिखारी॥
जहँवा जन्म मृत्यु है तहँवा। दुख सुखसब एकसँग आवा॥
यहै बात जब भीषम सुना। सुनतहि हृदय में तब गुना॥
दो० शरशय्या महँ भीष्म कह सुनो धर्म नरनाह।
जहँ संयोग वियोग तहँ यही भेद जो आह॥
पानी विंब देख संसारा। नाश होत नहिं लागे वारा॥
होतव्यता जो कर कर्त्तारा। कहा तुम्हार रहब संसारा॥
जन्मे वीर रूप जग जाना। होती मीच पतंग समाना॥
रात्री दिन पटऋतु परमाना। रचना रचते विविध विधाना॥

पुनि पुनि आय करै पैसारा। आवत जात न लागहिं वारा॥
कहैं व्यास सुनहु नृप सोई। आशा छोंड़िसकत नहिंजोई॥
औषध विद्या मन्त्र अपारा। अस्त्र सेज औवलि विस्तारा॥
घना कुटुम्ब वहुत विस्तारा। अन्तकाल को राखे पारा॥
काहूकेर पुत्र पितु नाहीं। भार्य्या भगिनी मातु न आहीं॥
जैसे पथिक चलै मग माहीं। तैसे जक्त माय सब आहीं॥
एकहि संग रहै परिवारा। अन्तकाल को देखनहारा॥

दो० कौन पन्थ कै गवन है पाव न कोई चाह।
मोर मोर जो भाषता सो माया हरि आह॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा। घरी रहट जानौ संसारा॥
कर्म्म छल जैसे जो करई। सो प्रकार जग भुगते फिरई॥
मायाजाल कपट मन वन्दा। सब घट पूरण वालगोविन्दा॥
यहि से तरे नाम इक धाई। यज्ञ ध्यान मनसाफल पाई॥
विना भक्ति विष्णुः को देखा। कोटियज्ञ औ धुर्म्म अलेखा॥
पूर्व्वज पाप सोय फल पावै। धर्म्म पन्थ से सो सुख पावै॥
गंगासुत तव कहत वखानी। श्रुति इतिहासपुराण वखानी॥
अत्री कहेउ जनक के पाहीं। जनक यज्ञशाला के माहीं॥

दो० स्वर्ग मृत्यु पाताल सब सृजा प्रजापतिताहि।
देव दैत्य नर नाग है जन्मत वाढ़त ताहि॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई। पृथ्वी भारन व्याकुल होई॥
राय कहा परजापति ताहाँ। पिंग भये भारत रणमाहाँ॥
दिनादिन सब बाढ़ी परिजाना। परजापति से प्रथम वखाना॥
क्रोधरुद्र के नैन निहारा। कन्या एक भई अवतारा॥
ब्रह्मा पाँह कहे सब वाता। आज्ञाकहो कवन सख्याता॥
सबै जक्त अव करौं सँहारा। तबै प्रजापति कहा विचारा॥
मत्यः नाम प्रजापति भाखा। अम्वु रुद्रके को गुणराखा॥
न परिवार करौं गण भंगा॥

सूर्य वदन यमको परमाणा। परम अधर्म विचारहु ताना॥
दो० चित्रगुप्त सँग यम रहैं मृत्युलोक संचार।
सुन्दा गृहस्थीरयम करत जगत संहार॥
इंडअस्त्र तव ताको दीन्हा। यही प्रकार प्रजापतिकीन्हा॥
शिव विद्याधर हैं परमाना। गँधरव किन्नर सुर तवजाना॥
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा। उपमा कौन कहै को पारा॥
उत्तम द्वार मार्ग्ग उजियारा। सो सूरज नहिं तहाँ पसारा॥
योगी सिद्ध संन्यासी जेते। पश्चिम द्वार जातहैं तेते॥
पूर्व द्वार उत्तम अस्थाना। तहाँ जायँ जो सुनो बखाना॥
कन्या शृंगी अन्नको दाना। पूर्व माहिं सो पावहिं जाना॥
सत्यवन्त दाया परमाना। अतिथिसेवपरहितसनजाना॥
देवास्थल पुष्कर जो निकरै। पूर्व द्वारसे सव संचरै॥
तीनद्वारके भेद बखाना। जौनकर्मकरिजेहिदिशिजाना॥
दो० उत्तमकथा प्रकाशकिय सुनो धर्म कर राव।
जवन कर्म्म करता जवन तहाँ तवन सो पाव॥
अव सुन दक्षिणमार्ग्ग भुवारा। तहँ पर हैं चौरासी धारा॥
राति दिवस है तहँ अँधियारा। सात लाख औ तीनहजारा॥
हैं यमदूत तहां निहधीरा। देखत सवै कुरूप शरीरा॥
लोहदण्ड सव के कर माहीं। वहै द्वार यम रूप कुआहीं॥
पापी जीव तहाँ दुख पावै। राजा हम से कहत न आवै॥
रहै नदी वैतरनी ताहीं। रक्तमांस औ जल औगाहा॥
नाना कृमी विकट शरीरा। जल सरिता सोहै गंभीरा॥
तहँ जो जात सुनो सो काना। भीषम भाषैं शास्त्र प्रमाना॥
परदारा परद्रव्य चोरावै। मिथ्या निन्दा पाप तेहि भावै॥
औ ब्राह्मण गोहत्या करहीं। मातपिता गुरु चित्त न धरहीं॥
दो० नगर पापकर भञ्जता दुख देवै संसार।
गुरुजन ते हिंसा करै तहाँ करत पसार॥

इनको तो यमदूत ले जाई। जहाँ धर्म यम राजा अ
चित्रगुप्त तहँ करत विचारा। जाको जस पावे संस
पावन शमन नदी गंभीरा। ताते दाहत विवश शरी
लोहदण्ड मारें यम ताही। ऐसे कष्ट देत बहु आ
ऐस प्रजापति सिर्जे ताही। कर्म फल सब भुगतें जा
सब विष्णुः माया जो अहे। नानारूप भीष्म तो क
जन्मत संग मृत्यु अवतारा। यहिसे शोच न करो भुवार
कर्मके वश नरपाव कलेशा। छुटै न कोटिकल्प परवेश
श्रीकृष्णपद चितवन करै। कर्म बन्धसे सो उद्ध
दो० याहि विचारो भूपते तजो शोक संताप।
श्रीपति सबके कर्ता नाना पुण्यरु पाप॥
ताते सब कर्त्ता हरी करन करावन सोय।
इन्हींचरणलवलावहीं इनसे और न कोय॥
इतिश्रीमहाभारतभाषाशांतिपर्वभीष्मदर्शधर्मराजा
पावनोनामप्रथमोऽध्यायः सम्पूर्णः १॥
पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा। तजो शोक शत करहू काज
सो जस राजा कथा सँचारा। भरत नाम राजा संसार
हरि बिन और एकनहिं जाना। महाराज भक्ती भगवा
राज्य कियो बहुदिन विस्तारा। बन्धु राज्य दे वन पगु धा
कियो प्रवेश महावन नृपती। निरतभक्तिपथ कृष्णकिग
एक दिवस अस्नान के काजा। सरवर मांह गये तब राज
गर्भवती हरिणी यक आई। नीर पिये को जल में जा
पूरण गर्भ मृगी सो आहे। माया विष्णु सुनो जो आ
पीकर नीर चली शिर नाई। प्रसव समय तो आय तुला
उदरपीर जो भई अपारा। प्रसव भई सो सुनो भुवार
बालक एक नदी के तीरा। राव चरित्र देख रणधीरा
दो० विधि के रचना ऐसिहै मृगी तजा तहँ प्रान।

देख भरत राजा तहां सर में करत स्नान ॥
नृपति शिशु परा अनाथा। तबहिं ताहि पाले नरनाथा ॥
अरु नीर देत आहारा। बहुत प्रीतिके पाल भुआरा ॥
य विचारि मृगा बन आये। सुत समान तो पालहि राये ॥
तने दिवस बीति तब गये। यक दिन मृगा भाग बनगये ॥
ये सँग जो मृग के तहां। परम सुख रहे सँगमें जहां ॥
जा हृदय महादुख आना। ढूंढ़त नहिं पायो पछताना ॥
बन ले गयो मोर कुरंगा। ताके हेतु सदा मन भंगा ॥
कितने दिवस शोकमहँ गयऊ। अन्तकाल राजा को भयऊ ॥
ब यमदूत गये ले ताहीं। हिरणा शोक हेतु मन माहीं ॥

दो० कै विचार तब धर्म नृप दीन मृगा अवतार।
मृग स्वरूप में जो रहै कौड़लपुरी मँझार॥

हसलाख मुनिनेरे तो जाना। कारण कहा ऐस भगवाना ॥
म चेतौ माया अवतारा। मृगा रूप यह हेतु तुम्हारा ॥
रव बात भयो तब ज्ञाना। जलतृणतजे कियानहिंपाना ॥
सा शोक मृगा तज प्राना। पाया तब दर्शन भगवाना ॥
ागे जन्म भये अवतारा। तब सो राजहिभयो उधारा ॥
ारे शोक कालके फांसा। ताते भूप करै हरि आशा ॥
रता करता तारत हरि है। तीनों लोक बखानत हरि है ॥
ारो वेद प्रजापति धारा। ध्यान धरे हरि पावत पारा ॥
प सहसमुख गुण जो गावै। नारद कपिल सनातनध्यावै ॥
री करैं तप जा पद आशा। करैअनन्तब्रह्माण्डप्रकाशा ॥

दो० सो हरि बिना सुजक्त महँ दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम तो अंग्रित परमान॥

हस नाम ते धर्म न आना। सहसनाम गांगेय बखाना ॥
ारि वेद में सार जो आहे। सहसनाम से पाप न राहे ॥
म रमहि रामे रम रामा। राम सहसन नाम समाना ॥

राज स्वरूप व्याक भय नाहीं। छूटे व्याध धर्म्म पद जाहीं॥
करि संक्षेप बखाने नाना। सहस नामके महिमा आना॥
नाम अनन्त अन्त को जाना। एक नाम से पद निर्व्वाना॥
पञ्च नाम से द्वादश नामा। अष्टाविंश नाम है ज्ञाना॥
सत्य नाम सहसन में जाना। पुनि अनन्तको नाम बखाना॥
परमतत्त्व अह नाम जो एका। सुमिरहिंसन्तजोहृदयविवेका॥
परमधर्म्म को सार है सोई। नाम सहस्र पढ़े जो होई॥

दो० राम कृष्ण रघुपति हरी राघव राधा रवन।
विभुगोपाल शारंगधर गोवर्द्धनधर जवन॥
रावणारि कंसारि हरि भक्त बन्धु भगवान।
ध्यानकरौ मनजानिधरि मनसावाचाजान॥
सर्वसार जे जगपती इतना नाम बखान।
नाम भजे पातक हरत भूप सुनौ दै कान॥

इतिश्रीमहाभारतभाषाशांतिपर्वद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः २॥

राजा सुनौ कथा तौ अहै। पुनि गंगासुत राजहि कहै॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सोहाई। चौथे शूद्र वर्ण सुन राई॥
गंगासुत तब कहैं बखानी। इनके धर्म्म नीति सज्ञानी॥
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना। विद्या वेद सहस्र प्रमाना॥
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना। वेद प्रमाणहि जवन बखाना॥
योग न जाप न औ अध्यापन। उद्यापन औ धर्म्मपरायन॥
हत्यऽद्रि ब्रह्मवर्ण के धर्म्मा। गंगासुत भाष्यो यह मर्मा॥
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना। ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमाना॥
सुन्दर जन्म जातु संसारा। संस्कार से द्विज संचारा॥
वेद अभ्यास विप्र सुजाना। ब्रह्म जनमसे ब्राह्मण जाना॥

दो० संध्या तर्पण विविध विधि वेद पाठ परमान।
परमकर्म यह विप्रका भीषम कहा बखान॥

क्षत्री गो ब्राह्मण का पालै। मंत्री प्रीति शत्रु संहारै॥

भिक्षा जु अन्न कर दाना । गाढ़े शरण न जाय जो प्राना ॥
रण में शूर धर्म्म मन माना । है क्षत्री जो धर्म्म बखाना ॥
वैश्य बणिज कृषि को संचारी । द्विज वैष्णव पूजा अनुसारी ॥
सदा धर्म्म जो यहै बखाना । चौगुण वर्ण धर्म्म जगजाना ॥
सुन्दर धर्म्म सुनै सब कोई । तीन वर्ण को सेवत सोई ॥
आलस तजो भक्त भगवाना । चौगुण वर्णरु धर्म्म बखाना ॥
आपन आपन राखहि धर्म्मा । चार वर्ण के याही कर्म्मा ॥
सृष्टि होय है केहित न सेवा । त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा ॥
कै वीचार परै गृह माहीं । तब तासू गृह भोजन खाहीं ॥
राजधर्म्म जो सुन विस्तारा । मिथ्यावाद दण्ड नहिं सारा ॥
अन्य प्रजा जो लोभ न करही । दानरु धर्म्म यज्ञ मन धरही ॥
नीति बाहुबल यह संसारा । पालहु प्रजा पुत्र परकारा ॥
वचन प्रतिज्ञा अहै प्रमाना । भूप यही नित पाल सुजाना ॥
मन्त्री दिश न धरै विश्वासा । प्रीतिप्रतीति वचनपरकासा ॥
राऊ वृह्म जो विष्णु स्वरूपा । पूजा करब एक मति भूपा ॥
तीन दिना के सुनब पुराना । राजधर्म सब सुनहु प्रमाना ॥

दो० देव दोष मिथ्या नहीं रहही रैन सचेत ।
राजनीतिका धर्म अस रिपुसे जीतब खेत ॥

पती धर्म पती कर सेवा । यह वृत्तान्त सुनहु जो भेवा ॥
सेवक धर्म पती सेवकाई । विनबोले सबकर अधिकाई ॥
याते धर्मज सब सुख पावै । गृहद्वारा विवाह करवावै ॥
राहू अंग गुरुका देई । सेवक धर्म कहे पुनि तेई ॥
गृह को धर्म अभ्यागत पूजा । अन्नदान से आन न दूजा ॥
वैष्णव धर्म यकांतके पाऊ । लीन ज्ञान परसंग उपाऊ ॥
ओ संन्यास तपस्या करै । भीषम राजा यह संचरै ॥
सबहि धर्मसार यततोऊ । अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ ॥

दो० परहिंसा परकर्म ज त्यागै दयावंत हित होय ।

क्षुधार्थी अनदानदे यहि से धर्म न कोय॥
गुरु भक्ती पर नाहीं भक्ती। भक्तीविना जाततनु अगती
विष्णुपरे सुर और जु नाहीं। गुरुविष्णु सम कहिये ताही
गंगा परे नदी नहिं कोई। एकादशि सम व्रत नहिंहोई
वेद नाम जो साम प्रमाणा। इन्द्रियनाम न रूप प्रमाणा
यह सव नाना शास्त्रक धर्मा। ताको कहिये उत्तम कर्मा
क्षत्री होय शोच का करहू। ज्ञान हमार हृदय में धरहू
रणमें क्षत्रि उपस्थित होई। वन्धु पिता पुत्रहु नहिं कोई
तातें शोच तजो परमाना। राजा सुनिये करौं वखाना
साहसरण क्षत्री को कामा। भजोचरणतुमश्रीघनश्यामा
हरिको चरण सदा मन लावो। भवसागर तर निश्चयजावो

दो॰ पिता बंधु सुत क्षत्रिको रणमें कौन विचार।
आपन धर्म जु आप सँग भीषमकर उपचार॥
धर्म एक सँग होत निज और संग नहिंकोय।
यहिते वह मन राखिये धर्म न छोड़ौ सोय॥

इतिश्रीमहाभारतभाषाछन्दकृतशांतिपर्वतृतीयो
ऽध्यायः समाप्तः ३॥

वैशम्पायन कहैं विचारा। भीषम भाषे धर्म भुव.
व्रतन शिरोमणि एकादशी। तुलसी पुष्प तीर्थ वनरशी।
ताको राजा सुन विस्तारा। दुर्लभजन्म जो कह संसारा।
एकादशिकी महिमा याहै। भीषम धर्मराज सों कहै।
दैत्य मुरासुर अति बल भारी। ताते हरि माया संचारी॥
युद्ध माहिं जीती नहिं पारा। मुरा असुर दानव संहारा॥
हरिको नाम मुरारी तवसे। हरिवासर जु जन्महै तवसे॥

दो॰ अनगिन माया विष्णुकी योगमाया संचार।
एकादशि व्रत महिमा सो तो सुनो भुआर॥

[illegible] राजा। [illegible] रूप करै सो साजा॥

...वती तासुकी रानी। धर्म पुत्र गत शूर सुज्ञानी॥
एकादशि व्रत सो संचारा। ताको राजा सुनो विचारा॥
...पके पुष्प वाटिका आही। तोरे पुष्प उर्वशी जाही॥
मालाकार पतीका दहे। धर्म्म प्रभाण सभातो गहे॥
राजा पहँ तो वात जनाये। तब राजा देखनको आये॥
...उर्बशि सब अर्थ सुनाये। हमें सुरपती यहां पठाये॥
पुष्प हेतु आये तो कामा। पतिव्रतरत धर्महिके कामा॥
एकादशिको पुण्य जो चहिये। तवहिविमानअमरपुरजइये॥
राजा पूछे सब व्यवहारा। कहो भेद नाहीं संसारा॥
दो० दशमी एकहिबेर नृप नियम करे आहार।
एकादशिउपवास व्रत शुचितनु रूपसवार॥
एकादशि व्रत रहै उपासा। प्रात द्वादशी होत प्रकासा॥
करि अस्नान अन्न दे दाना। एकोतरसै सेर वखाना॥
...हिके मांह छूट जो होई। एकादशि निसरावा देई॥
...वेना पीत उछरंग न करे। ताको पुण्य सर्वको धरे॥
ताको पुण्य सो पावहि तवहीं। जाय विमान स्वर्गको जवहीं॥
...राजाको जगमो नाहीं। यहिप्रकारको जानत आहीं॥
खोजत एक तु भई उपाई। रजक एक नगरीमें अहई॥
तासु नारि सो रही कोहाई। एकादशिको अन्न न खाई॥
...य विवश सोरही उपासा। व्रतपूरण द्वादशी प्रकासा॥
तेन चरणनसे छुये विमाना। तवहिविमानतुस्वर्गउड़ाना॥
दो० यहगतिदेखत भूपमणि एकादशि परमान।
पुत्र समान प्रजापती पालत रूप सज्ञान॥
दुखी दरिद्र कोइ पुर नाहीं। धर्म दृढ सो राजा माहीं॥
एकादशि विन और न जाना। और देव नहिं पूजतआना॥
दशमी घर घर डोंड़ि बजाई। कहे दूत सबकहँ हँकराई॥
दशमी संयम के उपहारा। हरिवासर त्यागी संचारा॥

एकादशी जागरण करे । प्रातस्नान द्वादशी
करे अनेक अन्न जो दाना । पुरमें गृह प्रति करे बखा
ऐसी बात नगर संचारा । गज बाजी नहिं पावअहा
वृद्ध युवा पशु नर अस नारी । बालक दूध न दे थनहा
चारों वर्ण प्रजा जे रहे । पशुअरु जीवजन्तु जो अ
पापक नगर नहीं लवलेशा । ऐसा व्रत सब नगर प्रवे

दो० पशु श्वानादिक गजादिक और जीव चंडार ।
मृत्यु समय प्राणी सबै नहिं यमलोक सँचार ॥

एकबार कौतुक तो भयऊ । यक चंडाल मृत्यु जो भयऊ
पापी महा रहा अपराधी । यमके दूत चले ले बांधी
विष्णुदूत तत्क्षण तहँ धाये । यमदूतन को दूर कराये
बहुप्रचारसे गये जु ताही । जीवहि विष्णुदूत ले जा
यमके दूत भाग सब राई । यमराजा सन खबरि जना
विष्णुदूत सारे प्रभु काजा । ले चण्डाल गये सुन राज
बन्ध छोरिके हमको मारे । जीवहि ले वैकुण्ठ सिधा
रथ चढ़ाय लेगे पुनि सोई । यमसे दूत कहें अस रो
भागे हम ले आपन प्राना । धर्मराज तुम सुनो बखाना
धर्मराज दूतन दुख देखी । अपने मनमें विस्मय लेखी

दो० दूतहि सँगले भूपमणि ब्रह्मलोक पगधार ।
ब्रह्मपास तौ जायतब कहा वचन संचार ॥

मोरकाज यह पदसे नाहीं । जेहि मन माने दीजैताही
कारण तासु सुनो प्रसाला । अवधनगर चंडाल महाना
ताको लेन दूत सब गयऊ । विष्णुकेदूत महादुख दय
तब ब्रह्मा लागे अनुसारन । सुनो धर्म कहताहों कार
एकादशी विदित संसारा । महापातकी पावत पा
एकादशी क्षुधा जो सहै । तेहिके अनेक पाप सब द
तार दूत तहँ जाय न पारा । एकादशी विष्णु अधिकार

पुना बात ब्रह्मा कै जाना। धर्म्मरायको आप बखाना ॥
मोरा इह पद नाहीं काजा। कहे बात ऐसे यमराजा ॥
दो० तब ब्रह्मा कह बात यह सुनौ धर्म्मके राव।
करत पक्ष तव कारणे रचिये एक उपाव ॥
नारद कहा नारि औ नारा। ताते मोहित भये भुआरा ॥
यज्ञजमो बूझा को जाना। सर्व देव को अंश प्रमाना ॥
सेजो नाना रूप अपारा। लै ब्रहा तासें जिव डारा ॥
तवपर एक किये परधाना। मोहनी रती रूप परमाना ॥
मोरी बात अवधपुर जाई। रुपमांगतको धर्म्म नशाई ॥
ठकर पान सुकन्या जाई। नगर निकट ठहरी वन आई ॥
राजा तहां अहेरहि गयऊ। तहां भेट कन्यासे भयऊ ॥
कामवश्य तो राजा मोहे। कह कत मात पिता को अहे ॥
तब कन्या कह बात विचारी। यहि वन में है वास हमारी ॥
दो० सुरकन्या देवानुगृह भया मोर अवतार।
व्याह नहीं भा भूपमणि रहत वनै मंझार ॥
राजा काम मोह कै कहई। अस स्वरूप जे वनमें रहई ॥
व्याह न करत सो कौने काजा। कन्या कहत सुनो हो राजा ॥
मनवांछित वर जो मैं पाई। सोई कन्त सत्य समुझाई ॥
राजा कहे चहौ का सोई। पूँछे देव जो मनमें होई ॥
अवधनगर जो देश अनूपा। मैं राजा रुपमांगत भूपा ॥
अपने बल जीता संसारा। दैत्य अनेक दुष्ट संहारा ॥
सूरज वंश कहत मैं तोहीं। आवै मन तो वरिये मोहीं ॥
कन्या कहा तेज मन जेते। महाबली मैं चाहों तेते ॥
सत्यप्रण, जो राजा कहिये। तब हम राजा तुमको वरिये ॥
सत्य हमार संग नरपती। तो हम मानी ताकहँ पती ॥
दो० जब जो चाहें हम नृपति तब सो दीजे मोहिं।
यही शपथ करु राजा तब हम वरिये तोहिं ॥

राजा सत्य कियो परमाना। कन्या तवहीं कीन पयाना॥
केतिक दिवस रहे तब राऊ। मोहित भये मोहनी भाऊ॥
दशमी राजा संयम कियऊ। एकादशि व्रत तब ते भयऊ॥
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े। तवहिं मोहनी बोलत गाढ़े॥
खावहु पान भूपमणि राऊ। तब राजा ताकहँ समझाऊ॥
एकादशि का संयम आहै। मोरे हेतु नगर सब राहै॥
तब मोहनी कहत रिसियाई। यह तौ कंत मोहिं नहिं भाई॥
राजा भय पुरवासिन सुना। सुनत वात सवही मनगुना॥
दानरु यज्ञ होम के कर्म्मा। जानौ यज्ञराजको धर्म्मा॥
संन्यासी वैरागहु जेते। व्रत उपवास कर्म हैं तेते॥

दो॰ पान खाइये भूपमणि तजहू व्रतकर बान।
परवशते यह खाइये दीजै हमको दान॥

राजा तब मोहनी से सुना। सुनत वात सवही मनगुना॥
ऐसी वात वहुरि जनि कहौ। जो हमार जिव राखा चहौ॥
तुमहूं व्रत करिये मनलाई। लेहु अभयपद हरिपुर जाई॥
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ। जाना भूप सत्य अब गयऊ॥
पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा। देवआनि अब कहौ भुआरा॥
एकादशी तजो तुम राजा। जो चाहतहो सत्य सुराजा॥
नहिं तो देव पुत्रकर माथा। नहिं तो व्रत तजहू नरनाथा॥
राजा सुनिकै चकृत भयऊ। बिनती बचनकहे तबलयऊ॥
मानत नहीं मोहनी वाता। राजहि शोकभयो तब गाता॥
निज रानी से जाय जनाई। धर्मांगत पुत्रहु सुनि पाई॥

दो॰ पुत्र कहा सो वचन तब सुनौ सत्य तुम तात।
अंतकालपै देखहु पर्दा सत्य संघात॥

धर्मांगत जु वचन तब भाखौ। मममस्तक देकै पून राखौ॥
बहुत प्रकार पुत्र समझावा। रानी राजा के मनभावा॥
एकादशि व्रत करि अस्नाना। पिता पुत्र दीन्हीं बहुदाना॥

पुत्र पद्म आसन करि बैसे। धरे ध्यान योगी जन जैसे॥
तहाँ मोहनी कहे वखानी। संज्ञावती केशधरि तानी॥
सब सबै तहँ देखन आये। तब राजा कर खड्ग उठाये॥
आसन डोलेव शंकर जाना। द्विजस्वरूप करिगेभगवाना॥
दिव्य एक रथ आयो ताहाँ। दर्शन प्रकट दियो नरनाहा॥
गृहु सहित परम पद पाये। अन्तरिक्ष राजा मनभाये॥
तब मोहनि को श्रीभगवाना। शाप्यो नरकग्राम परमाना॥
दो० मम भक्तन पर संकट कीन तहाँ चण्डार।
तातें अगति तुम्हारि भइ नहीं तोर उद्धार॥
तब मोहनी बहुत दुख पाई। तब राजा पहँ विनती लाई॥
तमहू मोर दोप नरनाहा। मम उद्धार करौ जगमाहा॥
तब नृप हरिसे विनती लाई। देव दयापति श्रीयदुराई॥
पाप अनुग्रह करु नरनाथा। रहिहै तौ यह मोरे साथा॥
तब प्रसन्न भाषे भगवाना। जाहू यन्त्र होव परित्राना॥
द्वादशि में जो पारण करै। और शयनजो नींद संचरै॥
ताके व्रतहि धर्म बहु होई। तुमका व्रत छैहै पुनि सोई॥
तबहिं मुक्ति होय तेरी नारी। जग वैकुण्ठपुरी अधिकारी॥
यह वरदान जो मोहनि पाई। पुरीसहित नृपनगर सिधाई॥
दीपम भाषे पद्मपुराना। धर्मराज सुनतहि सुखमाना॥
दो० एकादशिका महातम भाषे सव गांगेव।
वैशंपायन कहत भे जनमेजय सुनभेव॥
हरिवासर उत्तम जु व्रत सवै पाप क्षय होय।
नाम सदा जो गावही त्यहि समान ना कोय॥
इतिश्रीमहाभारतभाषाशांतिपर्वएकादशीकथावर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ४॥
जनमेजय सुनिये यह काना। धर्मराजसे भीष्म बखाना॥
नरपती मैं तुलसि बखानी। ताकी महिमा कह को जानी॥

तुलसी रोपहि पूजहि ताही। प्रातदर्श से पाप नशाही
तुलसी रानि विष्णु हे राऊ। करत ध्यानहरिलोकसोपाऊ
एक पात्र राधे यदुराई। जन्म जन्मके पाप नशाई
करे प्रदक्षिण नामस्कारा। कबहुँ यमपुर नहिं पैसारा
शीश नवाय पत्र शिर धरही। तनुमेंके सब पातक हरही
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा। अंधमार्ग उज्यारा कीन्हा
तुलसी दल पूजे भगवाना। शालिग्राम शिला परमाना
सदा वास वैकुण्ठहि पावै। तुलसीमहिमा कहत न आवै

दो० सुमिरण तुलसी मन्त्रको लहै वैकुण्ठ स्थान।
धर्म्मराज के आग्रह भीषम कहे बखान॥

शालिग्राम रूप हरि जोई। तुलसी दल संतुष्टहि होई
पूर्व दैत्य यक जलचर नामा। तासु त्रियावृन्दाजु बखाना
देवन संग महारण होई। दैत्यहि जीतिसकै नहिंकोई
वृन्दा पतिव्रता अवतारा। आप शरीर दैत्यकर धारा
तब हरिमाया करि विस्तारा। तासु धर्म नहिं दैत्य संहारा
वृन्दा पहँ यह माँगेव हरी। कैछल जाय नारि सो करी
रति दानहि जब वृन्दा दयऊ। तब रणमध्य दैत्यवधभयऊ
तब वृन्दा जाना सब भेऊ। पाहन शाप हरीको दयऊ॥
दैत्यहि गति कारण तब नारी। तब हरिपाहीं कहेउ विचारी॥
हरिने कही कोटि अवतारा। पाहन खंडव देह हमारा॥

दो० पत्र तोर मम पूजा तैं तरिहै संसार।
शालिग्राम होब हम तुम तुलसी अवतार॥

सो तुलसी की ऐसी महिमा। शंकर शेष बखानत महिमा॥
तुलसी माला जप जो करै। ताहि फूल सच्यत जो धरै॥
शालिग्राम शिलाको जोई। तुलसी दलसे पूजत कोई॥
उत्तम पूजा कोइ करावै। अन्तवास वैकुण्ठहि पावै॥
तुलसी मंजन हरिके पासा। भीषम कहे बात परकासा॥

तुलसी गृह मंजन जो करै । उत्तम मारग सो पगु धरै ॥
तुलसी माहँ अर्घ्य जल देई । अन्तकाल सुख पावै सोई ॥
तुलसी बास बदन परकाशै । तौने वास पाप सो नाशै ॥
तुलसी गेह द्विजन जो देई । उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो होई ॥
तुलसी मृत्यु समय जल पावै । पापी ह्वै बैकुण्ठ सिधावै ॥
दो० तुलसी महिमा भाष्यऊ धर्मराज सुन कान ।
तुलसी भक्ती करत जो ताहि प्रीति भगवान ॥
आगे सुनौ धर्म्म के राऊ । तीरथमाहँ बनारस भाऊ ॥
जाति पत्र दै पूज महेशा । यमके नगर न करु परवेशा ॥
श्रीफल केर पत्र महँ सोई । शिवा शम्भु संतुष्टित होई ॥
शिवके लोक वास सो पावै । काशी मध्य जु प्राण गँवावै ॥
जो काशी में करवट देई । मन वांछित फल पावै सोई ॥
जो काशी में करतो वासा । यमके दूत न आवहिं पासा ॥
जो काशी में नर कहुँ मरई । तौ कैलास गमन सो करई ॥
जो काशी में धरही ध्याना । ह्वो शिवलिंग रूप परमाना ॥
जो काशीमें गोधन दाना । ताको फल अनन्त नहिं जाना ॥
जो काशी तीरथ नृप कहै । हर त्रिशूल पै काशी अहै ॥
दो० जो काशी महँ वास कर सहित महातम राव ।
शिवस्वरूप तेहि अंतहै यमके नगर न जाव ॥
तरे पतित वह गंगा पावनि । देव मुनिनके शोक नशावनि ॥
कोटिन लिंग करै परकाशा । सदा रहत वासहि कैलाशा ॥
महिमा ताहि कहत ना आवै । तीर्थ बनारस वृषव्रतावै ॥
यमके द्वारन परी पुकारा । काशीवास वर्ण अधिकारा ॥
हरपूजा काशी की महिमा । बहुत प्रकार बखानी वृन्ना ॥
धन्य धन्य लक्ष्मी जनावै । संतत वृद्धि शत्रुक्षय जावै ॥
रणमें जेतिक होत प्रकाशा । तनु से व्याधि होत है नाशा ॥
शिवस्वरूप लिंग परकासा । अंतकाल तेहि शिवपुरबासा ॥

क्षुधावन्त भो विप्रवर प्रेत तवहिं कहि लीन ॥
लेखक कहता बात विचारी । ब्राह्मण सुन अपराधहमारी
लेखक कह माया भम्माँऊ । क्षुधावन्ततो यक द्विजआऊ
ठाढ़ विप्र आशा तब कीन्हा । ताकोमें कुछ उतर न दीन्हा
पहर एक ठाढ़ा है रह्यऊ । भानिराश मुखफिरिकैगयऊ
तौने पाप प्रेत अवतारा । ताते लेखक नाम हमारा
वहिके बात सुनौ परवेशा । द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा
गुरु नारायण माना नाहीं । विद्या पात्र गर्व्व मन माहीं
गुरू विप्र माना नहिं राई । प्रेत कि योनि ताहि से पाई
सुनि पांचोजन केर उपाई । विस्मय होय कहा द्विजराई
काम भखनहो जक्क तुम्हारा । ताते देह धरेव संसारा
दो० लज्जावंतहि पंचजन कहे वचन विस्तार ।
मल मूत्र उच्छिष्ट सब यह सब करै अहार ॥
अन्धकार में रहन हमारा । करो गोसाईं मम उद्धारा ॥
दयावन्त द्विज कहे पुराना । गंगा केर महातम ज्ञाना ॥
श्रवण परत पातक क्षयहोई । सुनतबचन तरिगे सबकोई ॥
गंगा पतितपावनी अहै । मृत्यु लोक को महिमा कहै ॥
एक समय सब देव उपाई । बैठे सभा अनूप बनाई ॥
विष्णु कहा शङ्कर से बाता । पंचवदन राग सख्याता ॥
शङ्कर कहेव देव से बानी । धरो धीर मैं कहत बखानी ॥
पंचवदन जो राग गँभीरा । सबै देव धरिसके न धीरा ॥
लिये कमण्डलु सो जल परे । राग निमित्त तो शङ्कर करे ॥
दो० विष्णु शरीरहि सोयजल राख्यो ब्रह्मा जानि ।
सुनो नृपति भीषम कहे गंगा चरित बखानि ॥
जब बलिछले त्रिपदहरिभयऊ । एकजपद आकाशहिगयऊ ॥
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा । वहिजलसे चरणोदकलीन्हा ॥
कन्या रूप भई अवतारा । जलस्वरूप प्रकटी त्रयधारा ॥

ो गंगा मृतलोकहि आई। सोइ महातम सुन मनलाई॥
तितपावनी गंगा जु अहैं। महापातकी पातक दहैं॥
सूर्य्य वंश तप सगर जु भयऊ। साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ॥
महावीर सैना वलवाना। अश्वमेध यज्ञहि नृपठाना॥
वहुत मुनी आये सव राऊ। अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ॥
सौ सव व्रत करिकै उपकारा। श्यामकर्ण पूजा संचारा॥
साठि सहस्र पुत्र दल संगा। परदक्षिण करि छुटा तुरंगा॥
दो० नाना देश जु सव जिते कहत होय विस्तार।
सुरपति मन्त्र किये तव यज्ञखण्ड अनुसार॥
जाना इन्द्र मोर पद लेई। तासे मन शङ्का भै तेई॥
इन्द्र आय तव मायाधरी। श्यामकर्ण को लै गे हरी॥
पुरी पताल कपिलमुनि पाहीं। वांधे अश्वजान कोउ नाहीं॥
लगी समाधि मुनी नहिं जानी। गये इन्द्र निज स्वर्ग स्थानी॥
तव सव वहुतो खोज तुरंगा। कहँ गो अश्व भयामनभंगा॥
तव पद चिह्न तुरंगम जाई। देखा अश्व मुनीके ठाईं॥
तव सव खोदे पुहुमी माहा। साठि सहस्र कुदारिन जाहा॥
खा सवहि चोरकरि जाना। मारा लात धरेव जो ध्याना॥
दो० छूटा ध्यान जु मुनीको क्रोधित नयन निहार।
साठि सहसू समेत तो भये पलक मो क्षार॥
गरभूप तव सुनि यह वाता। साठि सहसू जो पुत्रनिपाता॥
त्र शोक राजा तव कियऊ। महा खँभारयज्ञ नहिं भयऊ॥
ठ पुत्र असमंजस आवा। राजा ताको वेगि पठावा॥
पिल मुनीसे कहो प्रणामा। हे मुनि कवन कीनहो कामा॥
असमंजस गये पताला। जहँवांध्यानकपिलमुनिगावा॥
य प्रणाम कीन तेहि क्षणमें। कपिल मुनी हर्ष तव मनमें॥
भाषा जो मुनी विचारा। विना दोष मम लातहि मारा॥
हि जरे सव राजकुमारा। हम नहिं जानें अश्वतम्हारा॥

लै घोड़ा तुम जाहु कुमारा। करौ जाय तुम यज्ञ सँचारा
करि परणाम अश्व तब लाये। अवधनगरमें तुरत सिधाये
दो० करी यज्ञ पूरण तबै जो है तासु विधान।
सगरनृपति अति हर्षिमन दीनाद्विजकोदान॥
यहि परकार यज्ञ तब भयऊ। कितने दिवसबीतिकै गयऊ
सगर नृपति परलोकहि गयऊ। असमंजसराज्यहिमनदयऊ
वन्धुवर्ग कस हो उद्धारा। यह चिन्ता राजा अनुसारा
तब वशिष्ठ से पूँछा जाई। तिन गंगाको नाम बताई
ब्रह्म कमण्डलुमें सो अहै। करिकै ध्यान मुनी तब कहै
करिकै तप जो आनै पारहु। कुल समूह तुरतै उद्धारहु
सुनिकै राय हेमंचल गयऊ। तहाँ जाय तबहींमन दयऊ
देववाणि को भा संचारा। तुमसे नाहीं होव भुआरा।
तोर पुत्रकै सुत अवतारा। पुत्र तोर तो करे उधारा।
तब सुनि राजा गृहफिर गयऊ। असमंजसताको सुतभयऊ।
दो० असमंजस को अन्तभा अंशुमानभे राव।
केतिक दिनये राज्यकरि सन्तत नाहीं पाव॥
सुनी बात यह जबहिं भुआरा। मोरे सुतसे वंश उधारा।
मोरे पुत्र भया तो नाहीं। ताते राज्य छोड़िकै जाहीं।
राजा गये छोड़िकै राजै। हेमाचल में तप के काजै।
कै तप भूप तजे तब प्राना। सोते धर्म रानि सब जाना।
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी। तब वशिष्ठ से कहा बखानी।
वंश नाश ह्वैगो मुनिराऊ। सुनि वशिष्ठ तब कहाउपाऊ।
सूर्य्यवंश हित चिन्ता करै। तब वशिष्ठ ज्ञानहि हितकरै॥
वाम वाम करु रति शृंगारा। होई पुत्र करब उपकारा।
रानी गृह आई तब नाहीं। रति शृंगार कीन बिन नाहीं॥
दो० रहस गर्भ आशा भई मुनि जाय भग आरा।
[illegible] है गत जन्म पाकाम॥
दशगमास

अस्थिन हीन मांसके देहा। लै वशिष्ठ गर्भकरू येहा॥
मुनि कह जहां सुमारग आहीं। अष्टावक्र मुनि न्हानकजाहीं॥
सो मारग में राखु कुमारा। होव अस्थित्तौ सुनो भुआरा॥
बालक लैके तहां रखाई। दूनों रानी तब ग्रह जाई॥
अष्टावक्र मुनी तो आये। पन्थ में बालक देखन पाये॥
जाना मुनी करै अपमाना। विस्मय हर्ष वचन अनुमाना॥
अस्थि रहत वाके जो देहा। अधिक वंक हो कहा सनेहा॥
तो विन अस्थी देह सँवारा। होइहौदिव्यअस्थिसुकुमारा॥
कहत तासुतनु अस्थी भयऊ। दैआशिषमुंनितवग्रहगयऊ॥
रानी देखि अङ्कमें लाऊ। देखा बोल वशिष्ठहि ठाऊ॥
दो॰ हर्षित ह्वै मुनिनाथ तव धस्यो भगीरथ नाम।
वालदशाके अन्त तव सुनहु सकल वखान॥
त्रैलोक केरा उपकारा। वह सब कैसे होय उधारा॥
बहिं भूप जो चाहे जाना। मुनिवशिष्ठ तव जायतुलाना॥
द्य अर्घ्य देकर परणामा। पितृ उधारन पूजहि कामा॥
व वशिष्ठ भाष्यो यह वानी। गंगाविनुनहिंगतिअरुजानी॥
जा कह गंगा कत अहैं। नारदसन वशिष्ठ तव कहैं॥
चे राव जु नारद आये। गंगामर्म्म पूंछि मन लाये॥
रद कहा सुनो हो राऊ। मैं यकदिन गो इन्द्रके ठांऊ॥
ेव गंगा महिमा ताहीं। इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं॥
द्र देश में आयों ताहा। यम राजासों पूछे आहा॥
हुँ कहा मैं जानत नाहीं। यह तो मर्म्म ब्रह्मका चाहीं॥
दो॰ पूछा विधिसे जायकर कह्यो शम्भु पहँ जाव।
शिवपहँ तव हम जायके पूछा भेद वताव॥
वकह तव गंगाका नामा। नाशत पाप करे मनकामा॥
हु विष्णुपहँ तुम मुनिराऊ। गंगाभेद तहां सव पाऊ॥
। वैकुण्ठ विष्णु पहँ गयऊ। महाभेद मैं पूछत भयऊ॥

विष्णुकहा सुनचितधरि नारद। गयेविष्णु पहला गुणशारद
सुने विष्णु यह मनोकामना। बड़आश्चर्य्यचित्तमहँआना
गंगाकी महिमा जु बखाना। विष्णुरूप भे विष्णु सुजाना
नारद गये जहां तौ राऊ। पूछा महिमा गंगा नाऊ
देखारूप शंख कर चारी। चक्र गदा अरु पद्म सवारी
पूछा बात कहा तिन जानी। चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानी
श्वान योनिमें भा अवतारा। विना अहार महादुख भारा।
दो० गंगाजल यक मुनीले जातरहे मग माहिं।
और एक मुनि मांगेऊ भेट भई तब ताहिं॥
तेहि मारग पर परे हजारहि। विप्रविप्र दोउ हर्षितकारहि॥
कुशसे जल मुनि मुनिपर डारा। परा बूंद यक भाग्य हमारा॥
बूंद एक जल तनुमहँ डारा। तासे रूप यह भयो हमारा॥
तब वैकुण्ठ माहँ हम आये। नारद राजहि बात सुनाये॥
तो गंगा आने जो पावहु। पितर सबै यमपाश छुड़ावहु॥
राजा सुनत बात विस्तारा। मन्त्री सौंपा राज्य भँडारा॥
माता पाहँ बिदा तब भयऊ। मन्त्र एक भागीरथ दयऊ॥
प्रथम मेरुपर गे तप कीन्हा। यमअरुनियममाहिंमनदीन्हा॥
धर्म्मराज हर्षित मन भयऊ। मन्त्र एक भागीरथ कियऊ॥
सिद्धकरौ यह मन्त्र नरेशा। पैहौ गंगाकर उपदेशा॥
दो० यही मन्त्रके सिद्ध हित तबगे चलि कैलाश।
कथारूप गंगा अहे महाशोक परकाश॥
बारह वर्ष तपस्या कीन्हा। पूरण आश शंभु वरदीन्हा
गंगा अर्थ भगीरथ कहे। कहारहे मोहिं पाहन अहे
बारहवर्ष रहे निरहारा। गंगानहिं पाये कर्त्तारा
तहिं विष्णु का तप संचारा। बारह वर्ष रहे निरहारा
[illegible] अस्तुति के परकासा। कह प्रसन्न हरि राजा पासा।
[illegible]री भुजा गरुड़ असवारा। भागीरथ तब करे विचारा॥

हौ तुम भक्त हमारे राजा। करौं तोर मनवाञ्छितकाजा॥
चलहू संग हमारे तहाँ। पुरवैं आशा गंगा जहाँ॥
हरि आगे पाछे जु भुवारा। आये तव ब्रह्माके द्वारा॥
अर्घ्य पाद्य गंगा तव दीन्हा। वहीनीर चरणोदक लीन्हा॥
दो० शीश माहँ चरणोदक ब्रह्मा डारयउ ताहि।
शिवआराधन कीन्ह्यउ ब्रह्मकमंडलु माहिं॥
न्या हरिसे कहा विचारा। तुम्हरे चरण मोर अवतारा॥
वेष्णु कहा गंगा तव नामा। पापविनाशन जगविश्रामा॥
ाहु मृतकपुर करौ न वारा। तव गंगा वाणी संचारा॥
गगके पाप हमहिं निस्तरैं। मेरे पाप कहौ को हरैं॥
ारे पाप हरैं हरि कहहीं। साधुस्नान करैं तौ दहहीं॥
रको पाप जंतु तौ खाई। वही जंतु नर भक्षै आई॥
ासुके पाप तासुके पाहा। सत्यस्नान तोरिगति आहा॥
ुनि जलरूप गंग भइ तवहीं। आज्ञा हरिकी पाई जवहीं॥
ागीरथ जो अस्तुति सारा। माता पितृनकर उद्धारा॥
ह्मा हरिको कर परणामा। लै गंगाजल राजा ग्रामा॥
दो० आगे नृप भागीरथ पाछे सुरसरिधार।
पहुँचे तौ कैलासमा शङ्कर देखि विचार॥
ाना गंगा चली भुआरा। जटा तीन तौ तहां पसारा॥
टामाहँ गंगा शिव लयऊ। महाशोर भागीरथ कियऊ॥
रि तुम वड़ दानी जु कहाये। मैं सेवक नर दुख वहुपाये॥
ब गंगा तुमतौ म्वहिं दीना। अव वटपारी कै तुम लीना॥
शिवसमाधि हरि हर्षितभयऊ। माँगु माँगु वर बोलनलयऊ॥
ाजा कहा कष्ट वहु लाये। महाकष्ट से गंगा पाये॥
ूटी समाधि शंभु सुख भयऊ। माँगु माँगु वर शंकर कहेऊ॥
ो तुम राखा दीजे दाना। मोरे पितृ होयँ परित्राना॥
अस्तुति वहुत भगीरथ कीना। तव गंगाको शङ्कर दीना॥

कै प्रणाम आये तव राऊ। शंख बजावें हर्ष उपाऊ॥

दो० हेमगिर्द दुर्गम शिखर अटकी गंगा ताह।
पर्व्वत लाँघि न पारहि रोवें तव नरनाह॥

गंगा कहा पुत्रसे वाता। इंद्रपास अवजाव सख्याता
ऐरावत हस्ती लै आवो। दहिमार्ग करि पारहि जावो
राजा गये इन्द्र के पाहा। अस्तुति बहुत करे नरनाहा
बारहवर्ष तपस्या कीन्हा। तवहिं इंद्र यह आज्ञादीन्हा
माँगु माँगु वर सुन नृप वाता। ऐरावत दीजै सुरत्राता
इन्द्र कहा तुम गज पहँ जावो। जासे मनवांछित फलपावो
भागीरथ तव गज पहँ आये। सववृत्तांत गजहि समुझाये
पर्व्वतमें करिदीजै द्वारा। हमलै गंगा जायँ सो पारा
गज भाषा हमसे नहिं होई। होय काज वच राखे कोई

दो० जो गंगा रति देइ मोहिं देव तवै करिपार।
नातौ हमसे होय नहिं अन्ते खोजु भुआर॥

सुनिकै राव गये फिरि ताहाँ। गंगा जाना अन्तर माहाँ।
रोदन भूप करौ केहि हेता। आनहुगज तुम जायसचेता।
कहहु हस्तिसे वचन हमारा। सहै हमार जु तीन प्रहारा।
तौ हम देवें रतिको दाना। जाहु पुत्र ममकरौ वखाना।
तव राजा फिरि गजपहँ आये। यह वृत्तांत कह्यो समुझाये॥
सुनिकै गज तव परम अनन्दा। भागीरथ कह सुनशुभदन्दा॥
तीन तरंग हमारे सहै। रति संग्राम हमारो लहै॥
भाषे गज सो सहव तरंगा। तव तरंग परहारयउ गंगा॥
एक लहर तव गजगे साहा। दुखित महाजीव अवगाहा॥

दो० गये वूड़ि गज तत्क्षणहि पहिले लेत तरंग।
दूसरिलहरजोजलउठी सहिनहिंसक्योगयंद॥

तव गज सुस्तभयो जलमाहीं। गंगाकी अस्तुति तव कहीं॥
मैं पापी माता सुनु वाता। राखु प्रहार शरण सख्याता॥

तव महिमा जानैं सब देवा। करत चरण तुम्हरे नितसेवा॥
गंगा कह्यो अरे अज्ञानी। गर्भहिसे तव यह गति जानी॥
देव सबै मगराह उपाई। सुनतै गज तव उठा हो राई॥
दंतराय पर्व्वत गज ताहाँ। भये रंध्र तव पर्व्वत माहाँ॥
चलिकै पार भये गजधारा। गजने इन्द्रलोक पगु धारा॥
आगे चले भगीरथ राऊ। पाछे गंगा चार सिधाऊ॥
जेह्नुमुनीश करैं तप जहाँ। पहुँचे जाय अचंभित तहाँ॥
दो० जाना मुनिहिं गंग यह आय मृत्यु अस्थान।
परम हर्ष मन महामुनि कर गंगा कहँ पान॥
भागीरथ विस्मय तव भयऊ। तव मुनीशकी सेवा कियऊ॥
मुनिके पाहँ विष्णु को धाये। बारह वर्ष तु तहाँ गँवाये॥
कोटिन विप्र गऊ दे दाना। नहिं गंगासम तीर्थ बखाना॥
विष्णु आय हर्षित तव भयऊ। मुनिकरध्यानतुरतछुटिगयऊ॥
विष्णुकहा तव मुनि सों वाता। भागीरथ जगमहँ सख्याता॥
गंगा देहु बहुत सुख पाये। पितृलोक उद्धारन आये॥
तव मुनि ज्ञान विचारे तहाँ। मैं गंगा देउँ केहिविधि महाँ॥
मुत्र अशुद्ध मुख जूठा होई। कहे उच्छिष्ट जगत सवकोई॥
जाँघ चीरिकै गंग निकारा। जाह्नविनाम ताहि से धारा॥
अन्तर्द्धान विष्णु भे जाहीं। भागीरथ हर्षित मन माहीं॥
आये देश माहिं तव राऊ। माता पहँ वे गंगा लाऊ॥
दो० गंगा पाहीं कहा यह गंगा कहि गोहराव।
तवहीं माता तव तहाँ और ध्रुव बैठाव॥
माता पाहँ भगीरथ गयऊ। मध्य नगर हर्षित तवभयऊ॥
कहेउ बात माता के पाहा। गंगाका वृतांत सव काहा॥
तहां देव गंगा परवाहा। जाते जाय विष्णुपुर माहा॥
यहि प्रकार पूंछत हो राऊ। अभ्यन्तर अव सुनो उपाऊ॥
गंगा नाम गऊ इक रहे। एक अहीर पुछरत रहे॥

पवन तेज पत्ता सो झरे। महादेव के शिर पर परे॥
दो० महादेव हर्षित वदन कहे बात तो लीन।
ले वरदान आय अव पुष्पांजलि जो दीन॥
उतरि रूख से व्याधा पड़ा। हाथ जोरिके सम्मुख खड़ा
शिव प्रसन्न होकर वर दीन्हा। राजा श्री धन्यवन्ता कीन्हा
अन्तकाल सो गो कैलाशा। भोलानाथ भक्त परकाशा
व्याधा तव जानै नहिं पाये। दैवी गति पत्ता हरि पाये
जगत माहँ करिके सुख नाना। अन्तकाल कैलास पयाना
भक्तवछल तौ शिव भगवाना। ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना
रण में जो शत्रू संहारा। सोच भवानी वर संसारा
राजा धर्म्म भक्ति मन धरौ। शोक दुःख राजा परिहरौ
शोक करौ तौ गहि है नाहीं। वचन मोर राखौ मन माहीं
केवल करौ हरी को ध्याना। पावहु राजा पद निर्व्वाना
दो० तजौ शोक हो राजा चितवो राधारौन।
यहि प्रकार भीषम कहा तौ कीयो है गौन॥
राजा सुना यही सब वानी। तजाशोक तवहीं परमानी
देव मुनी सब जो अस्थाना। सहितपांडवन श्री भगवाना
प्रति वासर तौ राजा जाई। सुना ज्ञान पितामह नाई
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन। सुनते पाप होत हैं खण्डन
सोचरित्र संक्षेपहि कहे। पुनि विस्तार बहुत तो रहे
दो० भीषम वर्ण्योधर्म्म सो सुनो सत्य ममपाह।
महापाप सब नाशही सुनते श्रवणन माह॥
नाना शास्त्र पुराण मत भीषम कह्यो वखान।
राजा हृदय राख यह सत्य वचन परमान॥
इतिश्रीमहाभारतभाषाशांतिपर्व्वसप्तमोऽध्यायः ७॥
वैशम्पायन गावन लागे। जनमेजय श्रोताके आगे।
यहिविधिवहुतदिवसजवगयऊ। उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ।

भीषम तवहीं चेतेउ ज्ञाना। अवतजि देह करीय पयाना॥
धर्मराज के पाहँ बखाना। राजा सुनो बात परमाना॥
शरशय्या वहुते दुख सहेऊ। उत्तरायण सूरज अब भयऊ॥
अब शरीर तजिहौं परमाना। धर्मराज से कहत बखाना॥
अवतो कली होव परवाना। सन्तत भूप विचारखो ज्ञाना॥
एही कृष्ण देव परवाना। अन्तकाल गतिश्रीभगवाना॥
हरिको छोड़ि रहहु जनि राजा। कहों बात तोरे भल काजा॥
अब तोहार जो होय उधारा। भीषम भाषे पाहि भुवारा॥
दो० अब वैकुण्ठे आवहरि शून्य देव अस्थान।
केतिक दिनके अन्तमें गमनब श्रीभगवान॥
नृपति युधिष्ठिरसे यदुराई। वहु प्रकार भीषम समुझाई॥
हरिते भीषम कह्यो बखाना। सर्वलोकपति हो भगवाना॥
कृपा करो हम तजें शरीरा। विश्वरूप तुमहीं यह बीरा॥
बहु प्रकारते अस्तुति कीन्हा। तुरतशरणतबकृष्णहिदीन्हा॥
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना। तादिनभीषम कखउबखाना॥
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा। सातो तीरथ कहे विचारा॥
श्रीपति और जो पांचो भाई। सबे पितामह लिये बोलाई॥
विदाभये सबते प्रभु गाये। तजे शरीर परम सुख पाये॥
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये। विष्णु दूत सँग लेने आये॥
रथ ऊपर भीषम बैठाये। स्वर्गलोक की राह सिधाये॥
दो० परमहर्ष नारायण भीषम तजो शरीर।
गये वैकुण्ठ विष्णुपुर परम अनंदित धीर॥
धर्मराज तब रोदन कीन्हा। क्रियाकर्म सबकर मनदीन्हा॥
कीन्हाकर्म वेद व्यवहारा। शास्त्र शांती कर संचारा॥
श्रीपति कहे राव सन बानी। पुरी हस्तिनापुर महँ आनी॥
श्रीपति संग करहु सब काजा। करहु राज्य हर्षित मन राजा॥
मोरी भक्ति करो मन लाई। पुहुमी राज्य करो सुखदाई॥

पवन तेज पत्ता सो झरे। महादेव के शिर पर परे॥

दो० महादेव हर्षित वदन कहै बात तौ लीन।
ले वरदान आय अब पुष्पांजलि जो दीन॥

उतरि रूख से व्याधा पड़ा। हाथ जोरिकै सम्मुख खड़ा
शिव प्रसन्न होकर वर दीन्हा। राजा श्री धन्यवन्ता कीन्हा
अन्तकाल सो गो कैलाशा। भोलानाथ भक्त परकाशा
व्याधा तव जानै नहिं पाये। दैवी गति पत्ता हरि पाये
जगत माहँ करिकै सुख नाना। अन्तकाल कैलास पयाना।
भक्तवछल तौ शिव भगवाना। ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना।
रण में जो शत्रू संहारा। सोय भवानी वर संसारा।



महाभारत ।

अश्वमेधपर्व

सबलसिंह चौहान विरचित

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण की रीतिपर दोहा चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है

जिसमें

श्री राजाधिराज महाराज युधिष्ठिरजी ने श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ के सम्पूर्ण दिशा व दिशान्तरों के राजाओं को जीतके अश्वमेध यज्ञ की है वही कथा इसमें वर्णित है

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

पांचवींवार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

सन् १९०२ ई०॥

हमको विदा दीजिये राई। हमहुँ द्वारका देखें जाई॥
हर्षित राजा करै बखाना। गतिहमारि तुमहीं भगवाना॥
मैं अनाथ तुम जनके साथा। अस्तुतिकरतबहुत नरनाथा॥
पायो बँधुसँग द्रौपदि रानी। मिलेउ सबैसँग शारँगपानी॥
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई। भये विदा तु चले यदुराई॥
दो० सात्यकि रथको साजेऊ श्रीपतिभे असवार।
सबते विदाहोय हरि द्वारावति पगुधार॥
हर्षित गये देव भगवाना। द्वारावती नगर परमाना॥
आये द्वारावति यदुराई। यदुवंशी हर्षित सब आई॥
धर्मराज राजा सुखकरही। सदाधर्म धर्मंहि हितधरही॥
नगरलोग सब तहँके सुखी। स्वप्नहुतहँ सुनिये नहिंदुखी॥
पुत्र समान प्रजा प्रतिपाला। धर्मरूप श्रीधर्म भुवाला॥
एही भांति राज्य नृप करही। धर्मराज शोकित मनरहही॥
सजन सखा बंधूजन जेते। गुरू गोत्र कुल भीषम तेते॥
तिन सबको मारे निज हाथा। यही शोच शोचै नरनाथा॥
प्रजालोग तब करैं अनन्दा। जनुचकोर पाये निशिचन्दा॥
भारत कथा पाप क्षय जाई। पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई॥
दो० बैशम्पायन कथा करि पुरहस्तिना प्रकाश।
जाते पावहिं परमपद होत पापको नाश॥
भारत कथा पुण्य फल करैं नारि नर गान।
शांतिपर्व भाषारचत सबलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेभाषासबलसिंहचौहानकृतेशान्तिपर्व्वे-
एयष्टमोऽध्यायः ८॥

इतिश्रीशांतिपर्वसमाप्तम्॥



महाभारत।

अश्वमेधपर्व

सबलसिंह चौहान विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण की
रीतिपर दोहा चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है

जिसमें

श्री राजाधिराज महाराज युधिष्ठिरजी ने श्यामकर्ण घोड़ा
छोड़ के सम्पूर्ण दिशा व दिशान्तरों के राजाओं को
जीतके अश्वमेध यज्ञ की है वही कथा इसमें वर्णितहै

सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

पांचवीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

सन् १९०२ ई०॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ महाभारत ।

अश्वमेधपर्व ।



दोहा गौरीनन्दन के चरण विनवौं वारम्वार ।
जिनके चिंतन करतहीं विघ्नहोयँ जरिछार १
पाराशर ऋषिके तनय व्यासदेव भगवान ।
आचारज हौ भारतके करौ नाथ कल्यान २
महरानी वानी सुमिरि करौं कथा सुखदान ।
यज्ञपर्व्व भाषा रचत सवलसिंह चौहान ३
वैशम्पायन कह्यो बुझाई । यज्ञ कथा सुनु कुरु कुलराई ॥
कियो युधिष्ठिर नृप तव शोका । भीषम भये जवहिं परलोका ॥
कह्यो व्यास सन धर्म्मकुमारा । मारा गोत्र पाप वहु भारा
यज्ञरु योग जाप का कर्म्मा । कैसे पाप छुटैं हो धर्म्मा
सुनी वात तव कहे ऋषेशा । पातक खण्डव तोर नरेशा
परशुराम कहँ सव जगजाना । हने मातु आज्ञा पितु माना
माता द्विज वध हत्या पाये । अश्वमेध तव यज्ञ वनाये
यज्ञ कियो तव पातक हरे । तुमहूं करो यज्ञ अनुसरे
रामचन्द्र दशरत्थ कुमारा । रावण वंश कियो संहारा
विश्वशर्म्मा को सो सुत अहे । ब्रह्म वधन तो रामहि गहे ।
वाजी यज्ञ कियो प्रभु रामा । द्विज वध छूटि भये निःकामा ।
दो॰ अश्वमेध तुमहूं करो गोत्रहि वध दुख हेत ।
धर्म्मराज यह सुना जव भाष्यो वात सचेत ॥
यज्ञ समर्थ जो धन मम नाहीं । कैसे यज्ञ होय जगमाहीं ॥

फल विहीन तरु पाक्षि न जाई। धन विहीन तसपुरुष कहाई॥
बिन धन धर्म कहो कस होई। धन से हीन पुरुप जगजोई॥
कहै व्यास सुनु धर्मकुमारा। अर्थ चहो सुनु वात हमारा॥
पूर्व मरुत्त नृप यज्ञ बनाये। सुर नर मुनिजन हर्ष बढ़ाये॥
दिये दान बहु विधि परकारा। किये अयाचक मग्नअपारा॥
लै न सके तो तजि नृप गयऊ। गिरिहिमालयकेवीचहिरह्यऊ॥
सौ धन लेय यज्ञ प्रण ठानो। सुरतकरी धर्मराज बखानो॥
द्विज धन लैके यज्ञ बनाओ। यज्ञकरत तौ अप्रयश पाओ॥
व्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा। सो सवद्विजननहीं अधिकारा॥
पूर्व दैत्य वन राजा गयऊ। ताही मारि देव धन लयऊ॥
दो० सोई धन हरिचन्द्र नृप दीन्ह्यो मुनि को दान।
पाछे बलिराजा भये सव धन ताको जान॥
जो बलि राजा दीन्ह्यो दाना। पाछे परशुराम जग जाना॥
कश्यप मुनि को दीन्ह्यो दाना। ऐसे धन राजा को जाना॥
दान देय खाही विलसाही। ताको धन्य मुनी यश गाही॥
सो धन लै करु यज्ञ भुआरा। कछू दोषनहिं लागु तुम्हारा॥
राजा धर्म व्यास सन कहही। यज्ञ अश्व मोरे नहिं अहही॥
सुना व्यास तवकहै असवाता। आनहु अश्व आह सख्याता॥
भद्रावति पुर हय है राई। यौवनाश्व राजा के ठाई॥
दश करोड़ दल हयको रक्षक। यज्ञ नहीं लो करै प्रत्यक्षक॥
ताही जीति अश्व लै आओ। धर्मराज ते बात जनाओ॥
भीम आदि बान्धव हैं जेते। करि संग्राम थके नर तेते॥
दो० मेघवर्ण वृषकेतु है बालक औ पितु शोक।
तासन कछू न भाषिये दोष देय सव लोक॥
सुनिकै भीम कहत अस बानी। करवे यज्ञ अश्व धन आनी॥
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा। आनबधनअश्वबहुजगकाजा॥
हमें सहाय जगत के तारण। केहितेडरियकौन सो कारण॥

राजा कह्यो सुनहु सब भाई। कत अकेल बाजी बहुताई॥
दश करोड़ दल राख तुरंगा। कैसे भीम करब रणरंगा॥
सुनि कै वृषकेतू तब कहैं। आज्ञा देहु संग हम रहैं॥
आनो भीम के साज तुरंगा। यौवनाश्व को करिये भंगा॥
सुनते राजा कहे बखानी। कैसे कहन सको यह बानी॥
तोरे पितहिं धनंजय मारा। देखे मुख मन दुःख हमारा॥
तब वृषकेतु कहेउ सुन राजा। कीन्हेउ भलाकर्ण को काजा॥

दो० सभा मांझ द्रौपदि कहँ पराभाव सो दीन्ह।
एहि पापते तजेउतनु उन्हके गति तुम कीन्ह॥

पार्थ बाण से गंग बहाये। ताते पिता धर्म्म पद पाये॥
सुने भीम राजा सुख पाये। मेघवरन तब बात सुनाये॥
भीम संग हम जैहैं तहां। भद्रावती नगर है जहां॥
कै प्रण तेज अश्व लै आऊं। धर्म्मराज को यज्ञ कराऊं॥
भीम पितामह कर्णको नन्दन। करि रण उत्कट हेतु तुरंगन॥
सुनि हर्षित भये धर्म्मकुमारा। यज्ञ भेद बहु पुण्य प्रकारा॥
केते विप्र कौन मति दाना। केते घृत साकल्य प्रमाना॥
व्यास कहे मुनि बीस हजारा। लाख कलशहै घृत विस्तारा॥
तीन लाख साकल्यहिं लाई। इन्दु कुँदन के अश्व बनाई॥
पीत पूँछ अरु बपु है श्यामा। चैत्र पूर्णतिथि कीजे कामा॥
कंचन पत्र बांध शिर ताही। अपने नाम यज्ञपति चाही॥

दो० हम छोड़ा है अश्व यह जगतबीर कोउ श्रोर।
घड़ी एक जो गहि रखे जीतब सो प्रण टौर॥

फेरे अश्व लघुशङ्का जहाँ। सहसन गऊ दान दे तहाँ॥
एकहिं सेज द्रौपदी साथा। साधन योग करो नरनाथा॥
यावत अश्व गेह नहिं आवे। तावत भोजन विप्र कराबै॥
बीचहिं खड्ग राखिके राजा। वर्षदिवससाधन यह साजा॥
नारी पाले मन नव जाई। बड़ी खड्ग चितवे तब राई॥

अश्वमेध इन्द्रहि मन धारा। स्त्री व्रत पाली नहिं पारा॥
सत्यकेतु नाम सुनु राऊ। अश्वमेध के सबै नशाऊ॥
व्यासगये कहि अपने थाना। राजा करहिं हरीको ध्याना॥
सुनत राउ तव चिन्ता करै। कठिन वरत आशा हरि धरै॥
अभ्यंतर आये भगवाना। द्वारपाल ते कहे वखाना॥

दो० कहो जाय राजापहँ आये श्री भगवान।
सबै जानिकै आनहीं कीजे जाय वखान॥

प्रतीहार तव कह हरि पाहीं। तुवअटकाव किआज्ञा नाहीं॥
कहे कृष्ण रात्री परमाना। कौने मत हम करौं पयाना॥
सुनि प्रतिहार तहाँ तव गयऊ। जहाँ धर्मनृप स्थित रहेऊ॥
सुनि सव वचन वंधु हरषाये। सहित द्रौपदी बाहर आये॥
राजा हरिहिं कियो परणामा। चारों वंधु मिले परमाणा॥
विहँसि वचन तव राजा कहेऊ। चिन्तामसतवमनमहँअहेऊ॥
तेहि पीछे रानी मिलि आई। भे अचिन्त तव पांचो भाई॥
पञ्चाली भाषेउ परतक्षक। सदा भक्त के हो तुम रक्षक॥
सभामाहँ तो लज्जा तारा। दुर्वासा छल मन विस्तारा॥
सदा भक्त के रक्षा कारण। जगतमाहँ कीन्हे तनु धारण॥

दो० सावधान वैठे सवै परम हर्ष मन कीन्ह।
धर्म्मराज नृप समभिकै हरि सन भाषे लीन्ह॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा। नाथ आय के दर्शन दीन्हा॥
अश्वमेध हम कियो विचारा। जो आज्ञा करै नन्दकुमारा॥
कृष्ण कहे राजा के पाहीं। जगत माहँ ऐसा को आहीं॥
जानो मन्त्र भीम यह दीन्हा। उदर भरे कर उद्यम कीन्हा॥
दैत्यनिसंग भयो मन भंगा। कामी विवश सदा सुखरंगा॥
जगत माहिं जो धर्म न जाना। महावीर भक्त परमाना॥
जानत नाहिं आप वल वाही। भक्त वीर सव देखा नाहीं॥
रामचन्द्र यज्ञ निरमाये। चतुरंगिणि को संग पठाये॥

शुक्रमती ग्राम इक अहे। श्रुतदेव तहाँ राजा रहे
तहँ भा युद्ध महा भयकारी। पुनिबालकदोउ शरननमारी
दो० चारों बंधु वधे रण, कुश लव दोउवीर।
तुम कत यज्ञ करे चहो अस भाषे यदुवीर॥
को तुम को तौ रक्षा करिहै। को रणरचे अश्व को हरिहै
सुनिके भीम कहे तव ज्ञानी। अस कसभाषहु शारँगपानी।
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहे। पाछे मंत्र राजपहँ कहे
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं। जगत माहँ कोउ दूसर नाहीं॥
तुमतो स्त्रीके वश अहो। कहते कहत मौन ह्वै रहो॥
धर्मराजको भ्रम उपजायो। काहित काज नाश करवायो॥
अश्वमेध हम तो अव करिहैं। ऐसे गोत्र पापसे तरिहैं॥
जेते वीर जगत में आहीं। मारों सवहिं महारण माहीं॥
तुम हमार सर्वस हो स्वामी। तुम सवही के अंतर्यामी
सुनिके कृष्ण हर्ष तौ पाये। तव राजा ते हर्ष सुनाये
दो० धर्म्मराज ते श्रीपती आपे वात विचार।
पातक जो है गोत्रवध हम कहँ देहु भुआर॥
मैं तो पाप करों सव झारी। सुखते कीजे राज्य अघारी
भीम तवहिं इक उत्तर दीन्हा। पातक कौन आपु हरिलीन्हा
पाप देहिं जो तुम कहँ राजा। पाप वढ़े अरु धर्म अकाजा
महापुण्य मख में जत होई। तुम कहँ राजा देहैं सोई।
हम तो यज्ञ करों प्रण ठानी। करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी।
वृषकेतू जो कर्ण कुमारा। मेघवर्ण सुत प्राण अधारा।
मोरे संग दोय जन जैहैं। श्यामकर्ण अश्वहि ले ऐहैं॥
करों युद्ध घोड़ा लेआवों। तो वृकओदर नाम धरावों॥
धन जन सव जो है नृप पाहीं। लाओं शीघ्र हस्तिपुर माहीं॥
तुम सहाय जोहो जगतारण। तो हम भरमहि कौन कारण॥
दो० सुनिके हर्ष जगतपति हर्षित आज्ञा दीन्ह।

अश्वमेध प्रवेश यह सूक्षम भाषा कीन्ह ॥
जाको सुन जनमेजय नाशैं पाप पहार।
सोई यज्ञ कियेते नर उतरैं भवपार॥
इतिश्री महाभारत भाषा अश्वमेध यज्ञ कथनंनाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥

पुनि राजासों कथा प्रमाना। यामिनगत तौ भये विहाना॥
मेघवर्ण अरु भीम सयाना। वृषकेतू सँग कीन्ह पयाना॥
कुन्ती नृप औ श्रीभगवाना। इनसबकहँ कीन्ह्यो परणामा॥
माता कछु सम्भर लै दीन्हो। भीमसेन तब भोजन कीन्हो॥
पुनि माता कछु औरो लाई। मेघवर्ण कहँ दीन्ह बनाई॥
भीम कहे तब श्रीपति पाहीं। यौवनाश्व नगरी हम जाहीं॥
तुम रक्षा परजाके करहू। सत्यबात यह हियमहँ धरहू॥
यह कहिके तीनों जन जाई। यौवनाश्व पुर चले चलाई॥
तीनोंजना एक सँग भयऊ। यौवनाश्व के नगरहिं गयऊ॥
ग्राम रन्ध्र पुष्करणी अहे। वनउपवन चहुँदिक् लहलहे॥
पुष्पवाटिका देखेउ जाई। अनुदिन पुष्प रहे तहँ छाई॥
दो॰ पर्वत एक विराजही यज्ञ वेद पुर माहँ।
तेहि पर पै तीनों जने बैठे हय के चाहँ॥
जब दोपहर दिवस भयो भारी। जल के हेतु अश्व पगुधारी॥
श्यामकर्ण हय चालत आवै। चँवर छत्र तापर छवि छावै॥
बहुतक दल हय गज सँगआये। देखत मेघवर्ण मन लाये॥
भीमसेन सन कह तब बाता। आनों जाइ अश्व सख्याता॥
यह कहिके तुरन्त चलिभये। गिरि ते कूदि भूमिपर गये॥
राक्षस माया तब सञ्चारा। दशदिक् करेलागुअँधियारा॥
पाहन वर्षा अधिक चलावै। देखत लोगन दिशा गमावै॥
दैवन दूत स्वर्ग महँ गयऊ। इन्द्र पाहँ जाकर सो कहेऊ॥
दैत्य एक माया परकाशा। जगतअहत है करै विनाशा॥

दूसर दूत सुरेश पठाये। मेघवर्ण ताकहँ समुभा
दो० मेघवर्ण पुनि कहेउ तव तुमशंकित केहिकाज।
लै जैहैं हम अश्व तहँ यज्ञ धर्म के राज॥
सुनत दूत गवते सचुपाये। सुनासीर कहुँ जाय जना
तव सुरेश मन माहँ थिराना। अश्वमेध सुनि बहु हर्षा
मेघवर्ण माया संचारा। सबैवीर भये शिथिलअपार
पीछे अश्व हरण तो करे। पर्वत माहँ तबै पगुधरे
देखे भीम हर्ष तब माने। राजा दल सब शंका आ
राजा दलदेखें तब धाये। रणहित तबवृषकेतु सिधाये
वीरन काहँ हांक जब दीन्हा। सबै वीर यह भाषण कीन्ह
काह नाम औ जात तोहारा। भाषो सो तो पाहँ हमार
तब वृषकेतू कहा रिसाई। युद्धसमय का जाति जना
युद्धकरो या भागो भाई। नाम गोत्रका करो सगा
तब वीरन सब रणदिय ठाना। महामार नहिं जातवखान
दो० महाबली सब सैन्य के जल सम वर्षत बान।
कोटि वीर शर वर्षते कर्ण कुँवर पर आन॥
कर्णपुत्र तब बाण चलाये। अगणित वीरहिंमारिगिराये
भगे वीर पुरुषारथ देखे। जूझे वीर रण माहँ अलेखे
राजा आगे परी पुकारा। हरे अश्व सबदल कहँ मारा
राजा कह केता दल अहै। हम ते रण करने को चहै
धावन कहै देखता अहै। तीन वीर हैं सब तब कहै
यौवनाश्व नृप तहँ पगु धारा। और चले सब राजकुमारा
कर्णपुत्र को राजा देखा। बालक देखत अचरज पेखा
राजा पूंछा कहो कुमारा। नाम गोत्र का अहै तुम्हारा
सुनि कुँवर तब कहै विचारा। कश्यप गोत्रक कर्णकुमारा
धर्म्मराज यज्ञहि मन लाये। तासु तुरग लेन हम आये
दो० यौवनाश्वतब अस कहेउ तुम्हरे सम रण नाहिं।

रथ लीजे मम पास से करो युद्ध रणमाहिं॥
र्णपुत्र तब कियो बखाना। मैं ता रथ को युद्ध न जाना॥
ाजा पुनि कह बाण चलैये। कर्णपुत्र जब यह सुनिपैये॥
म तो वृद्ध अहो मैं ज्वाना। तुम्हरे दरश करें भगवाना॥
ाजा तब दश बाण चलाये। कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये॥
ीन बाण राजा को मारा। निष्फल कीन्हे सबै भुवारा॥
र्द्धचन्द्र कुँवर तब छाँटे। चमर छत्र गुण शारँग काटे॥
तब राजा धनु पै गुणधारा। साठबाण वृषकेतुहिं मारा॥
रक्तबाण कुँवर तब लीन्हा। तीनबाणरिसकरितजिदीन्हा॥
सारथि अश्व तजे तब प्राना। जूझे राजा सब दल जाना॥
अग्नि पवन के बाण चलाये। उड़िकै सैन्यअग्निजरिजाये॥
दो० तब राजा दूसर रथहि क्रोधित भये सवार।
वारिबाण तब भूपमणि तहँ जो कीन्ह प्रहार॥
ताते सब जो अग्नि बुताये। बाणन कर्णकुमार छिपाये॥
भीमसेन तब देखन पाये। राजा महामार मन लाये॥
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये। काटे बाण विलम्ब न लाये॥
पुनि इकबाण नृपति कहँ मारा। क्रोधित भो मद्रेश भुआरा॥
मारेउ बाण कर्णसुत राऊ। कर्णपुत्र को मूर्च्छा आऊ॥
देखत भीम क्रोध तब पाये। गहिकर गदा क्रोधकरिधाये॥
काह कहब राजा से जाई। यहकहिभीम चले रिसिआई॥
धावत जँघते पवन चलाये। हय गज रथ पैदलउड़िआये॥
बहुते गज तहँ भये सँहारा। जैसे पुण्य पाप करु छारा॥
यौवनाश्व राजा को मारा। ताको नाम सुवेश उदारा॥
दो० कुँवर हांक तब भीम को क्रोधित दीन्हे आय।
गदा घाव तब धायके मारे भीम घुमाय॥
क्रोधित भीमसेन फिरि आये। सो बैरी फिर भूमि गिराये॥
तब सुवेश आपुहि सम्भारा। भीमसेन को भूमि पछारा॥

भीम उठाये गज़ते भारे। राजपुत्र के ऊपर डारे॥
मास्यो गदा घाव भूवारा। पड़े दोऊ रणभूमि मँझारा॥
राजा सुनो कथा अब आगे। कर्णपुत्र मूर्छा ते जागे॥
यौवनाश्वको मारेउ बाना। पाँचशरन तप मोहन जाना॥
राजा मूर्छि परे मैदाना। कर्णपुत्र धर्षा करि ज्ञाना॥
फेंट छोड़ि अंबर तब लीन्हा। कुँवरपवन तब राजहिं कीन्हा॥
भाषे जो भक्ती भगवाना। तब राजा पाये दिव्यज्ञाना॥
याहि अंतर राजा तब जागे। रहु रहु के तब बोलन लागे॥
दो० चेत पाय देखा तबै कुँवर डोलावैं पौन।

विवे भोजन पान कराये। हर्ष होय तव भोजन पाये॥
यन किये रैनी सख्याता। गत भइ रैन भये परभाता॥
जा उठि सेवकहि हँकारा। सवते वात कहे संचारा॥
ठ साजन को कर मनलाई। हर्षित सब हस्तिनपुर जाई॥
दो० नगर लोग सब जेते दल बल हय गज साथ।
नगर हस्तिनापुर चले जहँ दर्शन यदुनाथ॥
यौवनाश्व माता के पासा। जाय तहां ये वचन प्रकासा॥
माता चली हस्ति पुर माहीं। कृष्णचरण जेहिपुरमें आहीं॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये। देश देशके नृप सब आये॥
सदा धर्म रूपहि भगवाना। जाके चरण गंग परमाना॥
माता चलो ताहिपुर माहीं। जहँवसन्दपतियुधिष्ठिरआहीं॥
तव माता कहि वचनसुनाई। कारण कवन तहां को जाई॥
देवधर्म नाहीं हम जाना। वहां गये मम देश नशाना॥
गोरस अन्न दासि अरु दासा। गये हमारे होहिं विनाशा॥
कृष्ण युधिष्ठिर का दोउ करै। आपन पुर मिथ्या परिहरै॥
जैसे गृह चैहें मन दीन्हा। तैसे गृह आपन मन कीन्हा॥
दो० बहु प्रकार राजा कहे माता मानति नाहिं।
काल बांधि मातु कहँ राव तव डारा डोलीमाहिं॥
यहि प्रकार माता कहँ लीन्हा। तव राजा चलवे मन दीन्हा॥
पुरके लोग चले सब संगा। नृपति सदल हियभरे उमंगा॥
नाना अन्न जेतें गज श्वेता। चले हर्ष नृप सबै सचेता॥
दिवस पांच तो पंथ सिराना। देश हस्तिना आय तुलाना॥
योजन एक हस्तिपुर रहे। राजापाहिं भीम तब कहे॥
हां रहो राजा तुम आई। मैं यह वात जनावों जाई॥
इहि कहिके वृकओदर गयऊ। हस्तिनपुर प्रवेश तब भयऊ॥
चारों बन्धु और भगवन्ता। इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता॥
भाषेउ तब सह वात बुझाई। अश्व सहित लै आयउ राई॥

राजा सब परिवार समेता। आयउ तव दर्शनके हेता
दरश चहै प्रभु तव चरननकी। जो तारन सुर नर मुनिजनकी
तब नृप धर्मराज अस कहई। जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई
जाय कहहु अस वयन हमारा। तुम द्रुत नवसत करहु शृंगारा
भूषण अलङ्कार सजु अंगा। वेगि चलहु कुन्तीके संगा
भीमसेन द्रौपदि पहँ गये। पूछा कुशल कहन तब लये
कहेउ भीम सब कुशल हमारा। यौवनाश्व मम पुर पगुधारा
परभावति अति नैनबिशाला। सखीसहस दश संग रसाला

दो० तुरै सहित सब आयऊ भूषण करहु बनाव।
दरश तुम्हारा चहत हैं भेटहु आगे जाव॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी। बिनु शोभा नहिं देव मुरारी
यहि अवसर नहिं यादवराई। बिन गोविन्द नहिं शोभापाई
तब द्रौपदी भीम से कहीं। हैं हरि निकट गये नहिं अहीं
इतना कहत भीम संचरा। नृपके पास देखि हरि खरा
चले नृपति सँग चारो भाई। कृष्णसहित शोभा बनिआई

दो० रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर गज चढ़ि चारो भाइ।
चले नकुल सहदेव सह पार्थ भीम समुहाइ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई। हय बनायकर अग्र चलाई
धर्मराज पै अमरहुं जाई। हनिनिशान जनुघनघहराई
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा। महि डगमगै सैन्यके भारा
धाय दोउ दल सम्मुख भयऊ। धर्मराज तब देखन लयऊ
देखि नृपति मन कीन्ह विचारा। बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा

दो० यौवनाश्व कहँ देखा सुत पत्नी परिवार।
तब रथ से उतरे नृपति दोउ मिले भुआर॥

इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधपर्वभाषाकृतयौवनाश्वधर्मराज
सम्मिलनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

वैशम्पायन ऋषि तब आगे। जनमेजय सन भाषन लागे

यौवनाश्व तब लागै पाऊ। आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ॥
तुम मोरे जस चारो भाई। मिलेउ कृष्णनृपदीन्हदिखाई॥
धरहु चरण उर करु सेवकाई। जेहि ते अहै हमार बड़ाई॥
यौवनाश्व प्रणयउ यदुवीरा। भो निर्म्मल वज्र शुद्ध शरीरा॥
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा। नृप द्रौपदि सह आशिषदीन्हा॥
पुन्य तुरँग सब कहबे लयऊ। जेहिहिततीनर्वीरचलिगयऊ॥
पुनि वृषकेतु कर्ण के वारा। जेहिते भयउ सुखी परिवारा॥
दो॰ भावी धन्य हमार यह पूर्व्व पुणय बहु कीन्ह।
दर्शन नयन जुड़ानेउ नृप ये कहिबे लीन्ह॥
पुनि अर्ज्जुन माद्रीसुत आये। भे अनन्द तब अङ्कम लाये॥
अर्ज्जुन नमस्कार तब कियऊ। अस्तुतिकरितबकहबेलयऊ॥
हमरे तुम जस धर्म्म नरेशा। अतिगरिष्ठ जस देवमहेशा॥
धन्य देश जहँ बसहु नरेशा। हमरे भाग्यन यहां प्रवेशा॥
पुनि सुवेश पारथ से मिलेऊ। करिप्रणाम तब कहबे लयऊ॥
वृषकेतु के कीन्ह बखाना। जिनके करत मिले भगवाना॥
धन्य तहां जहँ बस भगवाना। बिनुगोविन्द नर प्रेतसमाना॥
हरिसम दुर्लभ और न आना। कृष्ण नाम नित करोबखाना॥
दो॰ धर्म्मराय यदुपति सहित आनँद भये अपार।
मिलकर सब आवत भये नगर कीन्ह पैसार॥
पहर एकजवनिशिगत भयऊ। दामोदर तब कहबे लयऊ॥
सुनहु बात इक धर्म्मकुमारा। यज्ञ काज सब करहु सँभारा॥
चैत पूर्णिमा गत भो राजा। अब बिशाखशुभकरियेकाजा॥
मासबिशाखतिथिनौमीधरिया। तेहि दिनयज्ञअरम्भनकरिया॥
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा। यज्ञकरे कहँ यह व्यवहारा॥
कचा सुवरन सागर पारा। तहँ रह बीभीषण भूआरा॥
तहँवां से कंचन जो आवे। सोइ यज्ञ के यतन करावे॥
तब राजा मन बिस्मय कीन्हा। कौन पुरुषकहँ यज्ञयहदीन्हा॥

तव अर्ज्जुन अस कहवे लागे। राजा कहहु हमारे आगे॥
जेहि कारण तुम विस्मय करहू। सो आयसु मेरे शिर धरहू॥
दो० तव राजा मन हर्षेउ हँसिकै बीरा दीन्ह।
अर्ज्जुन लीन्हों विहँसिके चरण जुवन्दे कीन्ह॥
कृष्णहिं किय प्रणाम करजोरी। होहु सहाय जगतपति मे
तवहीं कृष्ण किये अनुसारा। वेगि जीत फिरु पण्डुकुम
तवअर्ज्जुन दक्षिणदिशिगयऊ। तहँ यक राक्षस भेटत भय
भाष्यो दैत्य भाजिकहँ जासी। मारों तोहिं मेलिके फाँ
तव अर्ज्जुन तिष्ठित कै कहई। कौन वीर तैं डांटत अह
तव दानव अस कहे प्रचारी। राय विभीषण के रखवा
तव अर्ज्जुन कियमनअनुमाना। मारों दैत्य करों यश मा
दैत्य शैल शिर ऊपर लावा। सम्मुखअर्ज्जुनसपदिचलाव
अर्ज्जुन सपदि बाण करलीन्हा। शैलकाटि तो टुइटुक कीन्ह
दैत्य भाजि लङ्का कहँ गयऊ। हनुमत सों भेटत तव भयउ
कह दानव सुनु पवनकुमारा। इक क्षत्री वड़ आउ जुझार
तहँवां सों भागत मैं आवा। तुम्हरे शरणहिं जीवबचावा
दो० मैं जानत हौं रामहहिं कीतो लक्ष्मण आहि।
भगि आये हम तुम पहां जाहु खोजलेहु ताहि॥
यह सुनि पवनतनय मन हर्षा। चलहुसाथ नहिं कीजेअर्सा
कह दानव सुनु पवनकुमारा। हमनाहिं जाउव साथतुम्हारा
शैल एक मैं उन पर डारा। धनुष टँकोर कीन्हा वे क्षारा॥
तिनके डरसे भगि मैं आवा। कैसे मुख मैं उनहिं देखावा॥
वन्दि चरण दानव गो तहां। वीभीषण नृप बैठत जहां॥
तव कहिवचन ताहिं समुझावा। वीभीषणसुनि आनँद पावा॥
तवहनुमत निजमन अनुमाना। पवनतनय तो पवनसमाना॥
दो० पवन तनय तव ऊछला उदधिपार चलिआय।
सेतु बांध जहँ बांधेउ खड़े हुये पुनि जाय॥

हनुमत कोपि कहे अस बाता। कौनवीर यह आहि विधाता॥
पूछ्यो आये तुम केहि कारन। तबकह पारथलाउ न वारन॥
कह अर्जुन सूनो कपि वीरा। हमअर्जुन आहहिं रणधीरा॥
गुरु सहोदर वध हम कीन्हा। चिन्तासोइ युधिष्ठिर लीन्हा॥
बोलेउ राज्य छोड़ि वन जाहीं। भारी पाप भये हम पाहीं॥
छगुनत गये रात सब बीती। चिन्तान्नपाहिंभयउ नहिंरीती॥
व्यास ऋषि तब पूछे लीन्हा। कारणताहि यज्ञ उन कीन्हा॥
तब राजा दोऊ कर जोरा। सुनहुव्यासमुनि विनतीमोरा॥
गुरु सहोदर वध हम कीन्हा। भारीपाप हमहिं विधिदीन्हा॥
कहा व्यास सुनु धर्म सुराजा। त्रेता कियउ राम मखसाजा॥
रामचन्द्र त्रेता महँ भयऊ। पूर्विलकथाकहन तब लयऊ॥
रामचन्द्र रावण वध कीन्हा। ताकारण यज्ञहिंचित दीन्हा॥
ऐसतयज्ञ तुमहुँ जो करहू। तब यहि पापन ते उद्धरहू॥
व्यासऋषय असकहिकेगयऊ। तेहिके सेवक वनचर रह्यऊ॥
रामचन्द्र तबकिय अनुमाना। केहिविधिउतरबजलधिमहाना॥
तीन दिवस सागर तट रहेऊ। तऊ न पथ सागरसनलहेऊ॥
तब कोपेउ लक्ष्मण बलवीरा। खैंच श्रवणलगि धनुपैतीरा॥
करधरि जांबवंत समुझावा। ल्यासीउदधिआपुचलिआवा॥
सुनिलक्ष्मण मन धीरज भयऊ। ब्राह्मणरूप सिंधुचलिअयऊ॥
ऐ स्वामी का अवगुण मोरा। कहिहितवाण शरासनजोरा॥
हौं सेवक तुव आदि गुसाईं। तुम मारहु मम काह बसाई॥
तुम जो मोकहँ दीन्ह बड़ाई। उतरहि कपितोका प्रभुताई॥
नलअरुनील जो कपिकरवीरा। औ सुग्रीव आहिं रणधीरा॥
नल अरु नील खेल लरिकाई। वाही समय ब्रह्मऋषि आई॥
तेन अशीष दीन्हा मनलाई। सिंधु शिला तोहिंदे उतराई॥
सो नलनील आहि तुवसाथा। आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा॥
दो० सो अशीश तिन पाये कीजे कापर रोख।

सो आज्ञा इन दीजिये बांधहिं सागर चोख।
तब हनुमत सुग्रीव बुलावा। तुरतआयतिनप्रभुशिरनावा
तबकपि कहा सबहिं समुझाई। गिरि पहार तुम आनहुजाई
तब सब मिलि पहार लै आये। सेतु बांध तब तुरित बँधाये
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा। चले वीर निर्भय मन कीन्हा
यहि मिसु सागर बांधेउ बीरा। तब तुव लङ्क जरे रणधीरा
सेतुबन्ध चढ़ि जाय न देऊं। मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं
दो० रामचन्द्र कर सेवक पवनपुत्र हनुमान।
रण जीतेउ कौरवदल देखों तुव अनुमान॥
अर्ज्जुन बाण हाथ कै लीन्हा। तब हनुमन्तहि उत्तर दीन्हा
तोहिं राम अतुलितबलदीन्हा। तौ समर्थ मम खोजे लीन्हा
तुम हनुमन्त पवनसुत जाये। बलअनुमान न मोसन आये
कहु सागरहिं करौं जरि छारा। कहु बाणन ते बांधौं सारा
कहहु मारि पौरुष तुव चूरौं। कीतोहिं मारि सिन्धुमहँ बूरौं
कोपि वचनजब अर्ज्जुन कहेऊ। हनुमत तबसम्मुख है रहेऊ
दो० कोपि पूंछ तब फेरा हनुमत वीर रिसान।
दोउ वीर बिचक्षण दोऊ चतुर सयान॥
तब अर्जुन धनुशर संधाना। हनुमत सन भाषेउ परमाना
एकहिं बाण समुद्रहिं पाटौं। तब निजनाम धनंजय राखौं
तब हनुमंत कोपि कह बैना। देखब बाण तोर भरि नैना
मोर बांध तैं चढ़िकै देखा। तोर बाण मोरे केहि लेखा
तोरौं बाण तौ हनुमत बीरा। नातरु सेवक हों रणधीरा
जो तोरे जिय अस मन देऊ। तब अर्जुनहुं प्रतिज्ञा लेऊ
दोनों बीर पैज जब किये। डोलेउ नारायण तब हिये
धरे ध्यान तब श्री भगवन्ता। जहां हुते अर्जुन हनुमन्ता
दो० यज्ञविषम जहँ थे हुते आसन टरु भगवान।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे भक्तिवश्य भगवान॥

ऊठे कृष्ण द्वारका वासी। सर्वकृष्णघट आहिं निवासी॥
एक रूप राखे मख माहाँ। दूसर देह सिन्धु तट माहाँ॥
खैंचेउ बाण शरासन ताना। मारेउ शर पारथ सन्धाना॥
दोऊ वीर प्रतिज्ञा कीन्हा। कृष्णचरणतब सुमिरेलीन्हा॥
उदधि पाटिगो आरहिंपारा। कहअर्जुन सुन पवनकुमारा॥
जो यह पाव तोरु हनुमाना। तौ न छुवों मैं धनु गुन बाना॥
कृष्ण चरित्र तबे यह कीन्हा। बांध के तरे पीठ प्रभुदीन्हा॥
तब हनुमन्त कोपि कह बाता। देखब बांध तोर मैं भ्राता॥
दो० हनुमान बहु कोप करि उछल बांध बलवीर।
जहँवाँ हनुमत पग धरैं हरि तहँ देहिं शरीर॥
तब हनुमत लज्जित ह्वैगयऊ। दौरिचरण अर्जुन कहँनयऊ॥
यहां बहुत जो कंचन पावों। तब मैं हस्ती नगर सिधावों॥
कह हनुमत यह केतिक बाता। सुवरन आनि देहुँ मैं भ्राता॥
तब अर्जुनकहँ धीरज दयऊ। कहि यहबचनपवनसुतलयऊ॥
वही ठाम अर्जुनहि बिठावा। आज्ञा ले हनु लङ्कहिआवा॥
तत्क्षण खोजे कंचन मेरू। कंचन खोज लेत चहुँ फेरू॥
दो० खोजत बीतेउ तीनदिन हनुमत मन अनुमान।
क्रोधित भे तब हनुबली लङ्का सबै सकान॥
यह जब भेद बिभीषण पावा। जहां पवनसुत तहँवां आवा॥
अंजलि जोरि बीनती कीन्ही। कवनकाज प्रभुआयसुदीन्ही॥
तब हनुमन्त कहैं सुनु वीरा। कच्चा सोन देहु रणधीरा॥
कहा बिभीषण अंजनि पूता। तुम आपुहीं कीन्हअजगूता॥
सगरी लङ्का खोरि जरावे। तहँ सो कंचन रह न पावे॥
एक बात सुनहू हनुमाना। रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना॥
दो० हम तुम्हार सेवक अहैं मोपर वृथा कोहातु।
जिउ हमार तुव आगे जैसे शशिको राहु॥
यह तो बात पवनसुत सुनेउ। परमज्योतिके सुमिरणकियेउ॥

वाणी यह तब भई तुरन्ता। काहे कोपेउ तुव हनुमन्ता
प्रथम लात कंगूरन मारा। सो खसिपरेउ समुद्र मँझारा
सो कंचन समुद्र महँ अहई। मांगि लेहु यह वाणी कहई
तवहिं विभीषण विदा करावा। तबहींचला पवनसुत आवा
डाटि दर्प जो कह हनुमन्ता। देहु रत्न नहिं बांधु तुरन्ता
ब्राह्मणरूप उदधि प्रगटाना। हनुमतसे छलकियो महाना
हम नहिं जानहिं कंचन मेरु। काहे कोपि कहत चहुँफेरु

दो० हम नहिं जानहिं हनुमत कंचन मेरु सुमेरु।
जो घट मोरे होहि तौ खोजि लेहु चहुँफेरु॥

कहियह सिन्धु हँसो मदमाता। तब हनुमन्तकोपि कहवाता
जैसे लङ्का में जो डाहा। तैसे आज समुद्र उबाहा
पवनपुत्र तव मैं हनुमन्ता। नातो कंचन देहु तुरन्ता
नातो रारि होइ यहिठाई। देखिहो आजुमोरिमनुसाई
तब हनुमत लँगूर उठावा। अवलोकत मीनहुँ डरखावा
तब कीन्हेउ अजगुतहनुमन्ता। विधी विष्णु तब कांपुतुरन्ता

दो० देहु मोहिं कंचन नहीं कह अस पवनकुमार।
ब्रह्मा विष्णु जु रक्षहीं तौ मारों परचार॥

इतनी बात पवनसुत करिया। सिन्धुडरे मत्स्यहुखरभरिया
कह राघौ सुनु सिन्धु गुसाईं। इहां मृत्यु हम सवकर आई
देहु सोन सब के जी रहई। राघो अस समुद्र से कहई
कह समुद्र जो है घट तोरे। आनिदेहु कस लावहु भोरे
उगलि मीन तव कंचन दीन्हा। करनउठायसिन्धु तवलीन्हा
पवनपुत्र के आगे आवा। करिविनतीहनुमतसमुझावा
मैं नहिं जानों धर्म्म दोहाई। क्षमा करहु अपराधगोसाईं
राघव मत्स्य कहां तो पावा। सोमोहिंआपुहिआनिमिलावा

दो० तवहिं पवनसुत हर्ष कंचन लिये सुमेरु।
आनि दीन्ह अर्ज्जुन कहँ अङ्कमाल कियफेरु॥

न हनुमंत अर्जुन सन कहेउ । हमसेवक अब राउर अहेउ ॥
हँ सुमिरहु आवें तोहिंपासा । अरुहनुमतयहबचनप्रकासा ॥
से रामचन्द्र के काजा । विमुखहोहिं तौमातुहिंलाजा ॥
दो० तब अर्जुन सम्बोधेउ सुनहु वीर हनुमान ।
हमहूँ तुरत अब जाहिंगे जहँवाँ श्रीभगवान ॥
क्रमालिका अर्ज्जुन किये । पुर हस्तिन कहँ मारगलिये ॥
नूमंत तब उहवाँ गयऊ । तबअर्जुन हस्तिनपुरअयऊ ॥
न्हि प्रणाम पार्थ तबजाई । कृष्ण लीन्ह तब अंकमलाई ॥
नि कुन्ती तब हर्ष कराई । द्रौपदि सँगलै आरति लाई ॥
य युधिष्ठिर अंकम कीन्हा । सहदेवनकुलचरणशिरदीन्हा ॥
दो० पंचौ पांडव मुदित मन कृष्ण युधिष्ठिर राय ।
धन्य धन्य तुम अर्जुन यज्ञ सम्बोधे आय ॥
न राजा अब कथा प्रमाना । पतिव्रता परपुरुष न जाना ॥
मराज नृपती सख्याता । पूछे व्यास ऋषी ते बाता ॥
मं अधर्म पुण्य अरु पापा । लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा ॥
रि वर्ण के धर्म प्रमाणा । अपने धर्म केरि निर्माणा ॥
ह्मण क्षत्री शूद्र बईसा । चारों वर्ण धर्म परदीसा ॥
जन जाप न होम प्रमाणा । अपने धर्म करें निर्माणा ॥
ट कर्मन बिप्रन परमाना । इहसब बिना विप्रकतजाना ॥
न शौर्य अरु सत्य जुझारा । क्षत्री धर्म याहि परकारा ॥
पी वणिज वैश्यहु कर जाना । सेवक धर्म शूद्र परमाना ॥
दो० यहि प्रकार सुनु राजा धर्म कथा परभाव ।
रानी धर्म जो राजा तोहिं कहौं अब राव ॥
ति आज्ञा सनन्द रह जोई । परपुरुषन से रहे अगोई ॥
ासु ससुर की सेवा करे । बीथिन माहिं सोचि पगुधरे ॥
ा धर्म्म इहै परकारा । अबअधर्म जो सुनोभुआरा ॥
मन छहो हीन द्विज जोई । क्षत्री वंश और जो कोई ॥

आपन धर्म जो वैश्य न जाना। दूसर कर्म करे परमान
शूद्र गर्भ उत्तम ते करे। इहे अधर्म्म रूप संचे
ये गृह कहँ नारी जो जाई। बिना काज सूनो हो राः
पति के आज्ञा नाहिं जो माना। अपर पुरुषते बात बखाना
विधवा होके करे शिंगारा। जानहु सब अधर्म्मके सारा
माता पिता पुत्र नहिं सेवा। चंचल पुरुष नारि जो भेवा
दो० इहै सकल सुन राजा कहौं अधर्म उपाय।
पुण्य पाप औ राजा सुनो सत्य मनलाय॥
गुरुको शिष्य जान सम हरी। छेद वेद मन माहँ न करी
है गुरु ब्रह्मा रूप समाना। भिन्न भाव वाकोनहिं जाना
सदा पवित्र सुकीरति रहै। मातासम परनारिहि कहै
भिक्षुक नाहीं होत निराशा। कूप तड़ाग बाग परकाशा॥
येही पुण्य जगत महँ सारा। व्यास कहे सुनुपांडुकुमारा॥
पाप कर्म कै सुनो बिचारा। गुरुको आनहि भावनिहारा॥
हृदयनाहिं सत्सुकृत प्रकाशा। परनारी ते सदा विलासा॥
भिक्षुक जन निराश फिरजाई। ज्ञान धर्म्म हृदये नहिं राई
तनु अपवित्र सदा जो रहे। मिथ्या वचन संतसे कहे
गुरू द्रोह पावे न प्रसादा। यह सबते है परम विपदा॥
दो० यह सब पातक जगतहै परधन हरु जो कोय।
सदा पाप मन बसत है राजा सुनिये सोय॥
लक्ष्मी को भाषों अस्थाना। सदा पवित्र जौन नर जाना॥
सात वर्ष कन्या जु कहावे। ताके दान धर्म्म फल पावे॥
पतिव्रता नारी जो होई। सदा पवित्र रहति है
द्विज वैष्णव अरुगुरुजनमाना। देवालय बहु कर निम
काहू की निंदा नहिं करहीं। ताके गृह लक्ष्मी संच
अब सुनु राजा कथा विछेदा। जहां लक्ष्मी तहाँ न भे
जाके सदा जुआ मन भावे। सुरापान में चित्त रम

परदारन रति सबै सुहावे। धातुनाम जो सबै चुरावे॥
पुस्तक तेल घीव अरु धाना। मूल पुष्प फल काठसमाना॥
अमवस्या संक्रांति सुहावे। एकादशी नारि मनलावे॥
दो० ग्रहणसमयअरुश्राद्धदिन तियसँगभोगसुहाय।
देव गुरू नहिं मानहीं तहाँ न लक्ष्मी जाय॥
व्यास कहे राजा के पाहा। यज्ञअश्व आनहु नरनाहा॥
धर्म्मराज भीमहि हँकराये। जाहुद्वारका हरिहित भाये॥
आनहु कृष्ण सहित परिवारा। द्वारावति मधुपुरी मँझारा॥
सबहि संग लै आवो जाई। राजा भीमहि कहा बुझाई॥
भीमसेन तब हर्ष प्रमाना। तब द्वारावति कियो पयाना॥
पहुँचेजाय कृष्णके द्वारा। जेंवत थे तहँ नन्दकुमारा॥
बहुविधि भोजन परसे आनी। पवन करत चारों पटरानी॥
जाम्बवतीअरुरुक्मिणिबाला। सतिभामा लक्ष्मणा रसाला॥
जाम्बवती तब हास्य बखाना। नँदगृहभोजन भूलेउ कान्हा॥
क्षीर पियत बन महँ यदुराई। सो सब चितसे दीन्हभुलाई॥
दो० कौतुक नारी करत तहँ सो नहिं कीन्ह बखान।
तेहि अवसरमें भीम तब तहँको जाय तुलान॥
तब सतिभामा हरिते कहे। आये भीमसेन तो अहे॥
इहाँ न आवन दीजे नाथा। बूझेभीम कहत तब गाथा॥
कौतुक भीम करन तब लागे। ठाढ़होय आंगन महँ आगे॥
कैधौं अशुचि होउँ भगवाना। कैधौं मैं पापी अज्ञाना॥
कहा सोदाइ हरिके आहे। ऐसाकाम कीन्ह जो चाहे॥
जो वाकहँ हम देखन पावें। नासा श्रवण हीन करवावें॥
जो कछु अटके कण्ठ तुम्हारे। देउँ गदा ते बेगिहिं टारे॥
कौतुक सुने हर्ष भगवन्ता। हँसिके भीमहि कहे तुरन्ता॥
आवो भीम जु भोजन करहू। मनमें कछू रोष नहिं धरहू॥
दो० भीमसेन तब भाषेउ जो तुम भये भुआर।

जानो हरि हम जेंय भे आपुन करो अहार॥

सुनिके कृष्ण हर्ष मनलाये। बाँहगही भीमहिं बैठाये॥
भोजन पान तुरित करवाये। कियआचमन परमसुखपाये॥
बैठे भीम निमंत्रण दीन्हे। बांचेउ कृष्ण हर्ष तवकीन्हे॥
तब श्रीपति अक्रूर बुलाये। पुनिप्रद्युम्न अनिरुद्धमँगाये॥
कृतवर्मा तुरन्त हँकराये। सुनिसात्यकी सारथी धाये॥
सबते कहा कृष्ण यदुराई। साजहुदल हस्तिनपुर जाई॥
वाजिमेध सुयज्ञ परवाना। देखहु जाय ताहि अस्थाना॥
सुनिके सबहिं हर्ष तौ पाये। आगे पुरके लोग सिधाये॥
वर्ण वर्ण हयचढ़ि सबधाये। श्वेत वाजिपर श्रीहरिआये॥

दो० वर्ण वर्ण सब हयचले कौतुक होत अपार।
बल वसुदेव बुझायके भाषे नन्दकुमार॥

रक्षाकरो नगर के माहा। रहो द्वारका कहो यदुनाह
तब वसुदेवजु बोलन लागे। प्रेम अर्थ श्रीपति के आगे
साधूलोग धर्म जो जाना। तबतो सँग लीजे भगवाना
नारीवश कामीजन होई। दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई
इन्हके संग गवन जनि करहू। वचन मोर तुम हियमें धरहू
यह कहिके तब विदा कराये। कृष्ण चलेउ बहु हर्ष बढ़ाये
रानी सबै कृष्ण के संगा। हर्षित गात चले श्रीरंगा
भीम करत हांसी मग माहीं। देखत बहुत नारिके पाहीं
वर्ण वर्ण सब चलिभे तहाँ। आये एक सरोवर जहाँ
कुंज अनेक हंस बहुताई। नाना भँवर तहाँ गुणताई

दो० कौतुक प्रेमकथा हरी कहें रुक्मिणी पाँह।
भानु अस्त जब कीन्हेउ सदा भँवर रसचाह॥

निशिके माहँ हर्ष तब पाये। प्रातकि[illegible]हिंकिरवाये
[illegible] मग थिरना रहे। सुनि प्रद्युम्न रुक्मिणिपहें
यहां न [illegible] कछु राखों। [illegible]

भौंरा तो बालक सम अहै। माता के हिय भीतर रहै॥
बालक सम रोदन सो करै। माता हिय अन्तर संचरै॥
प्रेम सहित सुत गोद लगावै। प्रीति हेतु मन चंचल धावै॥
जब रुक्मिणि यहबात जनाई। सुनतहिं कृष्ण परमसुखपाई॥
रहे रात भरि हरि पुनि तहाँ। अनुपम पाथ सरोवर जहाँ॥
तबहिं चले आये यहि भाँती। मिले हरी के बाल-सँघाती॥

दो० नाना कौतुक सभासव करत श्याम को देख।
परम अनन्दित हर्षहिय आदि सखा सव पेख॥

पाछे सब गोपी तब आईं। हर्षित दर्श कृष्ण को पाईं॥
नाना कौतुक भाव बनाई। चले अनेक सङ्ग मन लाई॥
सबै संग मिल चल भगवाना। तव यमुनातट आयतुलाना॥
तहँ उतरे प्रभु श्री यदुराई। नगर लोग सब भेटेउ आई॥
ब्राह्मण अरु बन्दीजन नाना। पावनगुण गावत सविधाना॥
नर नारी देखहिं घनश्यामा। संन्यासी को करैं प्रणामा॥
...कि सावधान इत रहो। धर्म्मराज को पुर महँ कहो॥
निशि भो विगत प्रात जब भये। सबै राखि हरि अंकृत लये॥
अश्व चढ़े सब जन ले साथा। पुर हस्तिन गौने यदुनाथा॥

दो० नाना कौतुक अस्तुति पन्थ माहँ विस्तार।
बहुत होत भये नाटक सूक्षम किया विचार॥

इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञकृतकृष्णराजासम्मिलनो नामतृतीयोऽध्यायः ३॥

...शम्पायन कथा सुनाये। राजा गृह तो श्रीपति आये॥
...ब अन्तःपुर गये यदुराई। राजा देखि परम सुख पाई॥
...तराष्ट्रक अरु विदुर वन्धुगन। कृष्णमिलेउपारथसहसवजन॥
...कृपाचार्य्यहि से कीन्हा। धर्म्मराज तब पूछन लीन्हा॥
...ये संग वंश परिवारा। कहे कृष्ण सब आउभुआरा॥
...ता और हलधर को ताहीं। रक्षाको राखो पुर माहीं॥

सुने धर्म्म राजा सुख पाये। अन्तःपुर तौ श्रीपति आये॥
कुन्ती और सुभद्रा भेटी। पंचाली भेटी दुख मेटी॥
पीछे धर्म्मराज पहँ आये। धर्मराज अर्जुनहि बुलाये॥
कुन्ती आदिक जेती नारी। निपुण काज करकर शृंगारी॥
दो० सबै संगलै चलिये जेहि थल सब यदुवंश।
धर्म्मराजके वचनका सबनर कराहिं प्रशंश॥
चले सबै संगहि हरि लीन्हे। आगे सबन अश्वकरिलीन्हे॥
राजा चले सबै दल संगा। नारी सब तौ परम अनंगा॥
आये सबै यमुन तट जहां। सब यदुवंशी उतरे तहां॥
देवकि और रोहिणी आई। कुन्ती चरण परी सो जाई॥
रुक्मिणि अरु सतिभामानारी। कुन्ती चरण परी व्यवहारी॥
पांचाली हरिजन तेहि परशीं। यहिप्रकार त्रियासबदरशीं॥
सतिभामा परिहास कर तहां। परम कथा सतिभामाकहा॥
पंच पुरुष वश तुम कसकीन्हा। तब पंचाली यह वर दीन्हा॥
तुम कछु बोल हरी ते कहो। कैसे पुरुष कीन्ह वश चहो॥
आपन तन मन दीजै वारी। तबहिं कंतवश करै सोनारी॥
दो० एक पुष्पके अर्थ तू सखिके दीन्हेउ कन्त।
कैसे प्रीतम होत वश मुँहकी प्रीति अनन्त॥
यहप्रकार ते कौतुक नाना। सखिन सबै आपन हठठाना॥
सतिभामा देवन सन कहा। करन अश्वपूजन सब चहा॥
देवन कहा कृष्ण के पाहा। श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा॥
मातु अश्वको पूजन चहँ। आज्ञा कहा नरायण कहँ॥
धर्मराज सब वीर बोलाये। समाधान कै सब समुझाये॥
त्रिया अश्व पूजी घर आवैं। तब तुव कार्य पूर मन भावैं॥
तब वीरन सब साज बनाये। श्यामकर्ण के संग सिधाये॥
सब जब अश्वहि पूजन लागी। कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी॥
गो अनुशल्व तहां विकराला। जहां अश्वको पूजें बाला॥

कृष्णहिं वधौ शाल महँ आई। लेउँ बैर मारौं यदुराई॥
दो० यह बिचारिकै राक्षस घेरेउ जाय तुरंग।
शोर भयो त्रिय यूथ महँ वीर भये सब भंग॥
अश्व बाँधि वह हमहीं राखा। समाधान अपने बल भाखा॥
कृष्ण कहे पारथ ते बाता। हरे अश्व सब के सख्याता॥
महा गर्व करि यह लै गयऊ। आजुकाल दैत्यन यह भयऊ॥
धर्मराज से कह ब्रजराजा। अश्वहरन से भै मोहिं लाजा॥
मरहिं वीर तुव हारहिं क्षत्री। यौवनाश्व क्षत्री पति अत्री॥
अश्वलीन्ह अबका बरु चहिये। ताकारण सबही ते कहिये॥
तब श्रीपति बीरा कर लीन्हे। क्षत्रिनशीश नीच तब कीन्हे॥
काहू के साहस नहिं चीन्हें। कामदेव तब बीरा लीन्हे॥
मैं गहि अश्वक्षणक महँ लावौं। कामदेव तब नाम कहावौं॥
कामदेव चढ़ि रथ पर धाये। नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये॥
दो० प्रद्युमन के हाथ तब बीरा श्रीपति दीन्ह।
वीर सबै चुप भवन गे वृषकेतुहि सँग लीन्ह॥
कर्णपुत्र रथ चढ़िकै धाये। कामदेव के साथहि आये॥
डंक दीन अरु शंख बजाये। दैत्यराज सुनि कोपित धाये॥
हु रहु काम कहे जब बाता। कर्णपुत्र देखेउ सख्याता॥
ब अनुशल्य काम परचारा। बहु प्रकार ताहीं तुतकारा॥
तिव्रत नारि पुत्र के पाहीं। चल तेज तोरत धूक नाहीं॥
हाक्रोध करि दैत्य भुवारा। पांच बाण कामहिं के मारा॥
गत बाण तब भयो अचेता। उड़िहरिपहँ छँड़ि तब खेता॥
ख क्रोध किय नन्दकुमारा। तुरत कामको चरण प्रहारा॥
नके बहु अवगुण प्रभु कहा। कर्म कर्मीन जन्मलिय कहा॥
भपात काहे नहिं भयऊ। हारे समर प्राण नहिं गयऊ॥
दो० गर्भ पात जो होते के मरते रण देश।
काहे होत कुनाम मम भाषे श्री हृषिकेश॥

सुनत भीम असगुन मनलाई । ऐ प्रभुकाम भागि नहिं आई ॥
वाण तेज ले तुर उड़ि आये । वरवस काम आप पहँ आये ॥
सबै दोष क्षमिये अब कामा । हम ले संग जात हैं धामा ॥
कामहि संग भीम ले धाये । गदा घाय बहु बीर उड़ाये ॥
भीम ने गदा घाव दल मारा । हाथ पायँ चूरण करि डारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा । कोटिन गदा रथिनको मारा ॥
कर्णपुत्र तव भीम ते कहई । आप समान जगतको अहई ॥
तुम लायक दल है यह नाहीं । इत क्यों अस्त्र गहे रणमाहीं ॥
सुने भीम हर्षित है कहई । काम परा भय संगर रहई ॥
तुम मारो रिपु को दल भारी । हम राजहि मारब परचारी ॥
दो० यहकहि भीमक्रोधित भयो तव राजा शिरधाय ।
कालसरिस शर मारेउ भीम मुरछि गिरजाय ॥
मुर्छित भीम देखि जगतारन । आये इत रण को पगुधारन ॥
क्रोधित दारुक रथ ले आये । हांकमारि राजा पहँ आये ॥
तव अनुशल्य हांककर दीन्हा । मैंही इन को वध है कीन्हा ॥
भीम काम रण महँ मैं मारा । अव वल देखौं नन्दकुमारा ॥
तवहीं दैत्यराज परचारा । भारी वाण कीन्ह परिहारा ॥
चारो वाण तुरंगहि लागे । रथके अश्व तुरत ही भागे ॥
भो अदेख रथ श्री भगवाना । तवहरिको आगमन वखाना ॥
मैं तो पापी हों भगवाना । आप गये मैं भेद न जाना ॥
पुहुपवंत कन्या जो होई । रजस्वला अस्नान करोई ॥
तादिन पुरुष जो तजिके भागे । गर्भपात की हत्या लागे ॥
दो० मोर देश के सब नहीं अरु मम पावन कीन्ह ।
दीजे दर्शन नाथ मोहि सुनिहरि दर्शनदीन्ह ॥
जब श्री हरि तो आगे आये । तव अनुशल्य हर्षि पहँचा
तीनिवाण तव प्रभुहि चलाये । एकहि शरते काटि गिरा
हरिके वाण क्रोधते काटे । औरहु एकबाण तव डा

प्रभु के तनु में लाग्यो बाना। मूर्छितभये तहाँ भगवाना॥
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो। भागे सैन्य चेत तब पायो॥
धर्म्मराज जब देखे नैना। हा हा शब्द करे तब बैना॥
हरिप्रिया अरु रुक्मिणि रानी। मूर्च्छित देखा शारँगपानी॥
रोदन करती हरि की रानी। हा हा शब्द भये घनबानी॥
प्रभु चेते जागे यदुराई। सबहि समोधिपरमसुखपाई॥
तब सतिभामा कह्यो रिसाई। कछुक चेत जाग्यो यदुराई॥
तब प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ। बलिअनुशल्यमलेक्षनकियऊ॥

दो॰ तुम भागे केहि हेतु प्रभु कह सतिभामा बात।
चण्डिरूप अब धरबमैं दैत्य बधब सख्यात॥

यहि अन्तरश्रीपति तब जागे। महा क्रोध हिरदे महँ लागे॥
गहे अस्त्र रथहीं चढ़ि धाये। युद्धभूमि रण भीमहिं आये॥
वृषकेतुहि कर शारँग धारा। सत्त बाण अनुशल्यहि मारा॥
तब अनुशल्य चारि शर मारा। वृष्यकेतु रण काटि प्रचारा॥
चारी बाण बहुरि कर जोड़े। मारेउ रथके चारिउ घोड़े॥
एक बाण ते सारथि मारा। रथ सारथि पैदल संहारा॥
तेहि क्षण सूरज देख न पाये। हय रथ तब वेगहीं पठाये॥
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना। शरनछांह अनुशल्यछिपाना॥
सारथि अश्व तुरत संहारा। क्रोधित भो अनुशल्यभुवारा॥
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा। तब करगहि वृषकेतु फिरावा॥

दो॰ कर्णपुत्र क्रोधित भये अनुशल्यहि गहि लाय।
सम्मुख देखत कृष्ण के पन्द्रह बार फिराय॥

फेर असकहा सुनोजगनायक। यह तुरंग हरने के लायक॥
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा। जो अनुशल्य वीरकहँ मारा॥
ऐसी बात कहन हरि लागे। यहि अन्तरअनुशल्यहुजागे॥
तब देखा तहँ श्री भगवाना। नाना स्तुति हर्ष बखाना॥
कर्ण पुत्र कहँ धनि कर भाखे। तब प्रताप में श्रीपति राखे॥

जो जगदीश्वर भगत उधारे। ध्रुवहि अचल पद करसंचारे।
स्तुति करत बहुत तहँ राऊ। सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ॥
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा। हर्षगात आलिंगन दीन्हा॥
दक्षिणकर गहि कर हरिलाये। धर्मराजके दर्श दिखाये॥
सम्मुख हाथ जोरिभे ठाढ़े। धर्मराज तब वचन उचारे॥
॥ दो० भीमआदि मम बन्धुजे तुमहो तिनहि समान।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु राजा कहे बखान॥
तब अनुशल्य कही असव्याता। देहौं शीश भुजा सख्याता॥
भाषे प्रभु अरु धर्म भुवाला। धन्य धन्य हो कर्णकुमारा॥
तव प्रताप अनुशल्यहि पाये। परम हर्ष तब राजा आये॥
पाछे राजा धर्म्म नरेशा। सहित अश्व पुरका परवेशा॥
रथ तुरंग गज पैदल सारा। नृप हस्तिनपुरका पगुधारा॥
पहुंचे जाय नगर के माहीं। वीर आदि जेते सब आहीं॥
अरु क्षत्री गण जेते आये। अर्घ्य देय आसन बैठाये॥
भोजन पान सवन करवाये। ऐसे दिन तब बीस गँवाये॥
चैत्र पूर्णिमा पुरब प्रमाणा। तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा॥
सबै विप्र तहँ यज्ञ बनाये। द्रुपदसुता नृप तबहिं नहाये॥
॥ दो० गांठि जोरि तब राजा बैठि यज्ञ महँ जाय।
मणि सुवर्ण बहुदान दै उठीं युवतिजन गाय॥
यज्ञ दान जो कछु विधिआना। तेहि प्रकार तहँ दीन्हो दाना॥
वाद्य शब्द घन मानो गाजे। पूजा अश्व वेद तब साजे॥
उत्तम धरी वेद जो वरणा। बांधि अश्वके माथआभरणा॥
तामहँ लिखे धर्म के राजा। अश्वमेध यज्ञहि तिनसाजा॥
ऐसो क्षत्री को जग आही। गहे अश्वको निजबल याही॥
यह लिखिके पार्थहि बोलवाये। अश्व संग तब भूप पठाये॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुवारा। प्रद्युमन है अरु कामकुमारा॥
अपनी अनी संग के लीजे। तबहिंगमनअश्वहिसँगकीजे॥

ारथ सुनत हर्ष तहँ पाये। धर्मराजको शीश नवाये॥
ाथे मुकुट गाण्डिव हाथा। और सेन क्षत्री सख्याता॥
दो० दल साजे सेनापती जहँ लगि सब सरदार।
भेटे सबै सुपार्थ कहँ अरु धृतराष्ट्र भुवार॥
ब तो विदा भये सुख पाये। पाछे शीश मातु कहँ नाये॥
श्रव संग नृप आज्ञा दीन्हा। पारथ कह माता सों लीन्हा॥
ुंती कह केतक दल संगा। निज बलते गवनहु रणरंगा॥
ारथ कहे रावै सरदारा। श्रीपति अरु हैं कामकुमारा॥
दुवंशी थे सोहहिं संगा। यदुनंदन दीन्हो मम संगा॥
ुंती कहा सुनो मत दीन्हे। कर्णपुत्रकी रक्षा कीन्हे॥
ासों यज्ञ सफल नहिं पैहो। जो पुत्रन कहँ कहूं जुझैहो॥
ह कहिके तब आज्ञा दीन्हा। पारथ चरणवन्दना कीन्हा॥
ले पार्थ तब हर्षित गाता। कर्णपुत्र पुनि चलेसख्याता॥
द्रावती कुवँरकी रानी। सुनिपतिविदाहोतबिलखानी॥
दो० पियअनुरागिनि नारितव कहत पार्थसों बात।
जहँ इच्छा तहँ जाइये जिव हमार लै साथ॥
णमहँ कादरता नहिं करो। मम लज्जा माथे पै धरो॥
र्णपुत्र बामासों कहे। जो सब तीर्थ पुण्य पै अहे॥
यापिण्ड तिरिया गति पावे। हरीनाम यमदूत बरावे॥
हसब तो जो झूंठ बखानहिं। तोहमभागहिं रणसंग्रामहिं॥
से चले कहे रह सोई। आपन सेनासंग लगोई॥
ीपति और भीम उठिधाये। पारथको पहुंचावन आये॥
ध्यदेश गये तजा तुरंगा। नाना दल पारथ के संगा॥
बलातुरंग तेज पगु जाई। तो पारथ परसे यदुराई॥
र्मराज माथेपर लीन्हा। श्रीपतिकामबुलाइदिलीन्हा॥
ारथ मेरो सब धन प्राना। तुम रक्षा कीजो सज्ञाना॥
दो० यह कहि सौंपा कामको पारथही यदुराय।

॥ भीमसेन ते पारथ विदाभये सुखपाय॥
सेन संग पारथ चलिआये। श्रीपतिपुनि हस्तिनपुरआये॥
भीम कृष्ण हस्तिनपुर आये। पारथ अश्व संग तब धाये॥
बाणे बाणन होत अघाता। चले बीर पारथ के साथा॥
अनुशल्यअरु कर्णपुत्र चला। मेघवर्ण यौवन भूपाला॥
औसुवेग जो प्रद्युमन बीरा। अनिरुद्धबीर जो है रणधीरा॥
सैन समूह चले जो साजा। महाघोर तब बाजन बाजा॥
चलेबीर कै हर्षित नाना। सबही बीर भगत भगवाना॥
महाबली सब दल है राऊ। चले बीर आनंद उपजाऊ॥
दल चतुरंग पंथ नहिं पावै। आगे अश्व तेज पग धावै॥
पाछे सेना बीर अपारा। हयसंग चले बीर विस्तारा॥
हय गज रथ जो पैदल नाना। क्षत्री महाबीर जगजाना॥
दिशिदक्षिण प्रथमहिसो धाये। खलबल महाबीर सँगलाये॥
॥ दो० पवनवेग दिशि दक्षिण चला तुरन्त तुरंग।
हर्षित सब सेनाधिपति करत कुतूहल रंग॥

इतिश्रीमहाभरतभाषाकृतेअश्वदक्षिणदिशिगमनोनाम
॥ चतुर्थोऽध्यायः ४॥

राजा सुनो ऋषी तब कहै। महिसरस्वती नगर इकअहै॥
नालपुंज तहँका नरनाहा। प्रथमहिअश्वगयो चलिताहा॥
नाम प्रदीप राजनि कुमारा। कुंज महा त्रियरूप अपारा॥
नदी नर्मदा तट सो अहै। तहां अश्व गो मुनि असकहै॥
कुंज माहिं स्त्री जब पाये। तहँ पर बीर देखि मन लाये॥
पढ़ि पत्रहिं तिरियन समुझाये। धर्मराज के हय नहिं आये॥
है रक्षक पारथ धनुधारी। मुनिनारी सब यह पगुधारी॥
तबहिं कुँवर रणकर मनधरे। दलले पारथ सम्मुख लरे॥
तब सब क्षत्री देखन धाये। कर्णपुत्र तहँ आगे आये॥
नाये रणनहँ सोह विचारो। पाछे पारथ पास सिधारो॥

दो० पांच बाण हनि कर्णसुत मारे चारि तुरंग।
पुनि सारथि रथ काटिकै कियो वीर तव भंग॥
अयगांसी शर राजकुमारा। क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा॥
कर्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना। तब अनुशल्य चलाये बाना॥
शरन छाँह छपि राजकुमारा। जुरे वीर दूनो सरदारा॥
नीलध्वज सुनि दल लै आये। बाणावरिकर पुत्र छँड़ाये॥
सब दल कहँ तव मारे बाना। पार्थ हाँककरि क्रोध बखाना॥
क्रोधयुक्त सुनि पारथ पायो। पांच बाण लै क्रोधि चलायो॥
एकै बाण ते राजा काटे। तब पारथ क्रोधित शर छाँटे॥
नीलध्वज तव मूर्च्छा पाये। जागो महायुद्ध मन लाये॥
अग्निबाण तव राजा मारा। पारथ दल से भयो संहारा॥
रथ गज दल पैदल असवारा। जरे लगे सब करे पुकारा॥
दो० मारि पार्थ तव वरुण शर पावक स्तुति ठानि।
हाथ जोरिकै पार्थ तहँ बहु प्रशंस उर आनि॥
सदा कृपा तव हमरे पाहीं। रथ धनुबाण दिये तुमआहीं॥
अबकह दुख यह हमकोदीन्हा। बारेक महँ सेना बध कीन्हा॥
तब कह पावक ऐसी बानी। पारथ तुम तो भये अज्ञानी॥
सदा रहत सँग जगके तारण। अश्वमेध कीजै केहिकारण॥
हमं राखे राजा कर माना। ससुर हमार महिपजगजाना॥
जनमेजय पूछत मन लाई। नीलध्वज कत ससुर कहाई॥
कैसे नृप कन्या तेहि दीन्हा। वैशम्पायन कह मन लीन्हा॥
नीलपुंजकै ज्वाला रानी। स्वाहा नाम कन्या भै आनी॥
भइ तरुणी तव पुत्रिहिं राऊ। चाहो वर सो हमें सुनाऊ॥
कन्या कहै मनुप नहिं काजा। देव श्रेष्ठ जो बर देहु राजा॥
दो० बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान।
जो मन आवत पुत्रि तव हमतें कहो बखान॥
कन्या कहेउ चारके करनी। कीन्हे पाप छले अरु पियरनी॥

सफ काम वश हुइ अज्ञाना। ऐसे सँगते धर्म नश
दूजो पति जो नारी करै। कुम्भीपाक नरक महँ
अग्नी माहँ मरेते जरहीं। ताते दुइपति नहिंअनुसर
यहिकारण तनु अग्निहि दीजै। वचनमोरपितु यहसुनली
पुरजन राजा अचरज माना। कन्या करै अग्निको ध्या
राजा कहा सर्व्व जो खाहीं। सात जीभताके मुख आ
मुख अरु चर्मत्यागि सुखकैसे। नदी नार नीचे वह जै
हरकाशीश तेज यश गंगा। पृथ्वीमहँ लिन कीन्हप्रसंग
काहू बात न कन्या मानी। समाधान कै तवहीं आन

॥ दो० चंदन घृतअरु चिनीलै तिल जो मधुको राव।
जायफल लौंग कपूरकी आहुति होम कराव॥

वेद वाक्य मन्तर अहिवाना। विप्ररूपतव अग्नि तुलान
राजा पाहिं हर्षि पगुधारा। देखि विप्र तव पूछ भुवार
कोहो देव कहाँ ते आये। तवब्राह्मणअस वचनसुनाये
कन्या स्वाहा हमको दीजै। तातें आये नृप सुनिलीजै
नृपति कहे सो पावक चहै। विप्र कहे हम पावक अहै
राजा कहा प्रतीत मोहिं कीजै। अग्नी रूप आपनो कीजै।
मन्त्री कहा यही विधि जवहीं। पावकरूप प्रकटकियोतवहीं॥
भइ प्रतीत तव स्तुति लाई। कन्याकी तव मौसी आई॥
सो कहि द्विज चेटक यह करै। प्रकट रूप अग्नी को धरै॥
राजा कहे आप गृह माहीं। परखाये कैसीजै ताहीं॥

॥ दो० ताके गृहपावक गये रूप धरा वहु भार।
चीर कुचकिहि जारत और शीशको वार॥

राजा पहँ वह रोवत गई। राखिलेहु वह पावक अहई॥
स्तुति करि नृप आगि बुझाई। तवहिं व्याह की वातचलाई॥
मेरे गृहमें संतत रहो। आवे रिपु तेहि जारत रहो॥
ऐसे वचन करो परमाना। तव राजा दिये कन्यादाना॥

ना गृह में पावक रहे। वैशम्पायन राजहि कहे॥
वाचा से सैन जराई। ताते पारथ स्तुतिलाई॥
थ पहँ पावक तव कहे। पयनिधि बहुतकछू अबअहे॥
व देखो दल तुमही नैना। उठिहै सबै तुम्हारी सैना॥
वै उठे जब पार्थ निहारा। राजा पहँ पावक पगुधारा॥
दो॰ कहेजाय तव नृपति सन पारथ मित्रहमार।
मिलोजाय नहिं जीतिहो जेहि सहाय कर्तार॥
रथ मित्र कहे वैसाई। मोहिं खवायो अन्नपुराई॥
वन सुनत राजा खुशभये। तब रानी को पूँछन गये॥
लन मंत्र ते कोपी रानी। जब राजाको बोली वानी॥
ना रण न जुझाये काहू। कायर ह्वै मिलिवे को जाहू॥
ना सुनत क्रोधकर भारी। गो पारथ पहँ रण विस्तारी॥
ना क्रोधित धनु संधाना। तेहिक्षण बहुत चलायोवाना॥
। वाण पार्थ तवमारा। वाण छाहँ ते भयो अँधारा॥
ग पार्थ के राजहि लागे। रथ चढ़ाय सारथि लै भागे॥
अचेत तिरियासे कहे। सुतहि गवाँय मन्त्र तवगये॥
ो॰ अस कहि हय धन राजा संगहि चले लेवाय।
श्यामकरन करि आगे पारथ भेटेहु जाय॥
जाय द्रव्य वहु दीन्हे। हर्षित पारथ सो लै लीन्हे॥
पति तुम राउ हमारा। परममित्र पारथ संचारा॥
घ पाय चलिवे मन दये। सँग नीलध्वज राजा भये॥
ला क्रोध शोक ते भारी। तुरत बधों गृहमें पगुधारी॥
ा पहँ सो रोदन कीन्हा। मोर पुत्र पारथ बध कीन्हा॥
लेहु पारथ ते जाई। सुनतहि बात कहे सो भाई॥
ने गृह महँ बैठहु जाई। आयो हम कहँ खोवन धाई॥
पुनि ज्वाला क्रोधित भई। रोवत गंगा तट चलि गई॥
ी चढ़े कहे सो नारी। भयो पाप लखु गंग हत्यारी॥

गंगाक्तरिके मानुष जेते। ज्वालापाहि कहे सब तेते॥
दो० पतितपावनी गंगजू जगको पाप विनास।
सिधमुनि तटतेहि जायके पावत सुरपुरवास॥
धर्म्म रूप तब कहे भवानी। गंग दोषका कहा बखानी॥
ज्वाला कहा ऋषपुत्री भारी। सात पुत्र दीन्हें जल डारी॥
एक पुत्र तव तात बचाये। ताको पारथ मारि गिराये॥
सुनतहि गंगा क्रोध अपारा। पारथ कहँ शापो विस्तारा॥
मेरो पुत्र पार्थ संहारा। छठे मास सो जैहै मारा॥
ज्वाला कहा कृपा करु माई। त्राण जन्म लै सरव जाई॥
तब गंगा दीन्हो वरदाना। ज्वाला तजे गंग महँ प्राना॥
प्राण तजे भो शर अवतारा। अर्धचन्द्र पर्व्वत तनु धारा॥
जन्म बाण पाय परसंगहि। पारथ सुत के रहे निखंगहि॥
वभ्रुवाहन है नाम भुआरा। वही पुत्रते करब संहारा॥
दो० यह चरित्र इतहीं भये उत तव चलत तुरंग।
नीलध्वज अर्जुन सहित यौवनास्व नृप संग॥
जौन धर्म इक कानन रहा। अरण्यगयो माहीं बनमहा॥
योजन एक शिला है जाहीं। अश्वजात भयो ताही माहीं॥
पाहन लागि अश्व रहे कैसे। चुम्बक लोहे लागत जैसे॥
कोटि यतनकरि अश्वछुड़ावत। शिलाछोड़ितवअश्वनआवत॥
तब सब शोच करनतहँ लागे। कहे जाय पारथ के आगे॥
पारथ देखि शोच भयो भारी। तब सेवकसे कहा हँकारी॥
देखो ऋषि कोउ इत अहै। पारथ बात सबन ते कहै॥
हरि गये हेरन वन माहीं। शंभरि नाम मुनितहँ आहीं॥
नाहर गऊ सर्प शिष्य संता। मूस मँजारी संग अनंता॥
सदा प्रीति उनमें जहँ रहे। ऐसो तेज मुनीको रहे॥
दो० द्युतिहि देखिके मुनिकहा बोलि धनंजय चाह।
पारथ प्रदुम्न सात्यकी यौवनास्व नरनाह॥

णपुत्र संग ले गये तहां। ऋषि आश्रमहै बनमें जहां॥
र्थ जाय तहँ बात जनाये। धर्मराज यज्ञहि मन लाये॥
शाहित हम सब इत आये। बनमें अश्व शिला अटकाये॥
ौन उपाय अश्व अब छूटे। गोत्रबन्ध को पातक टूटे॥
ब ऋषि कहे पार्थ सज्ञानी। गीता सुनिके भये अज्ञानी॥
जो तुम काज करन को चाहो। अस जनि कहो नारिते चाहो॥
कहो कि गोत्र बन्धु संहारा। जो पाले सो मारनहारा॥
सब शरीर पुरुष रह मही। गेह लिलार मुनी अस कही॥
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ। अश्वमेध तौ करत अकारथ॥
पारथ कहा विष्णुकी माया। कोई जग महँ अन्त न पाया॥

दो० पारथके सुनि वचन अस तब ऋषि कहे प्रकास।
शिला चरित्र जो कौतुक हर्ष धनंजय पास॥

संज्ञा पत्नीचण्ड इक रहे। ताकी कन्या चण्डी अहे॥
उद्दालकको दीन्हेउ व्याही। लै नारी आयो गृह माहीं॥
पति सेवा सिखवै सेवकाई। चण्डी सुनत क्रोध तबपाई॥
पति सेवा को मोहिं जो कहा। मोसों नाहिं परोजन अहा॥
पुनि भाषे पूजासन लाओ। चण्डि कहेका हेतु सुनाओ॥
पती पुत्र ते मोर न कामा। तोरा वचन करों परमाना॥
एक बार मज्जन लगि जाई। कहे कमण्डलु दीजै लाई॥
सुनतहिं नारि क्रोधभयो भारी। डारेउ फोरि भूमि दैमारी॥
पतिके संग शयन नहिं करे। पतिकों हँसी करत सो फिरे॥
दुष्ट त्रियाते मुनि दुख पाये। सुनतकमंडलु मुनिपदआवे॥

दो० दुर्बल देखि उद्दालक पूछेउ मुनि मनलाय।
कौन हेतु दुर्बल भयो कहो मुनी समुझाय॥

तब उद्दालक बोलत गयऊ। तिरियादुष्ट विधातै दयऊ॥
मोरकहा मनमें नहिं धरे। अपने मनका कारज करे॥
पीतर श्राद्ध समय दुखपावें। क्यहिबिधिपितृश्राद्धमहँआवें॥

तव हँसिकह्यो कमण्डलुबानी । उलटी बात कहो नहिं ज्ञान
जो कछु काय्यं करण तुम चहो । उलटे वचन नारि ते कह
हमतो गौतम तीर्थहि जैवे । फिरत समय यहिमारगऐ
असकहिमुनी कमण्डलुगयऊ । तिरियहिआपु हीनमतदय
काल्ही श्राद्ध पिताकी अहै । प्रात कमण्डलु आवन न
मोते श्राद्ध कर्म्म नहिं होई । केहिविधिआवकमण्डलुसो
सुनतहिं नारी क्रोधित भई । बोली बात कन्त मति ग

दो० द्विजहिं बुलाओ प्रेमकरि देवपिण्डको दान ।
उत्तम होवे श्राद्धविधि, मैं करिहौं निरमान ॥

बात उलटिके श्राद्ध प्रचारा ।श्राद्धकर्म्मयहिविधिअनुसार
जो कछु वचन कहै मुनि ताहीं । तौन बात तियमानतिनाहीं
ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये । इतना कहि मुनिनामनशाये
मुनि कछु काय्यं करनको कहई । प्राणजायबरु तियनहिंकरई
बात भूलिके मुनि संचारो । लै पिण्डा गंगा में डारो
सुनत बात क्रोधित ह्वै नारी । लै पिण्डा घूरे महँ डारी
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी । पाहन होहु जन्म हत्यारी
जब पारथ के दर्शन पैहौ । शीघ्र शापते तव तरिजैहौ
शिलाभई तव मुनिकी नारी । फेरो हाथ बात सुनम्हारी
करिप्रणाम पारथ शुभ कीन्हा । जातहिं हाथशिलामहँदीन्हा

दो० छूटा अश्व चला तव, पाहन ते भइ तीय ।
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष कै जीय ॥

इतिश्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधयज्ञकृतचुंबकअश्व
छूटनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

वैशम्पायन कथा सुनाये । पारथ अश्व चले मन लाये ।
छूट शिला ते अश्व सिधाये । पंचज पुरी अश्व तो आये ।
हंसध्वज राजा पुर माहीं । पांच पुत्र राजा के आहीं ।
सुन्दरसेरन सबल कुमारा । तीजे नाम सुरथ संचारा ।

ौथा पुत्र सुरथ परवाना। सबते छोट सुधन्वा माता॥
तजाय राजहिं समझाये। अश्व संग है पारथ आये॥
ुनि राजा मन चिन्ता आई। तब सब सेनापतिहिं बुलाई॥
बते कहनलाग असबैना। अबलौं दीख न पङ्कजनैना॥
लखौं आजहरि आनँद कन्दा। पारथ पास सदा यदुनन्दा॥
गर माहिं कोउ जनि रहहू। लाओ सबहिं दरश हरिकरहू॥
दो॰ हर्षित ह्वै सब आयकै कह्यो सुनौ नरनाह।
जो नहिं आवै युद्धहित भुँजव कराहे माह॥
राजा चले सबै दलसाजा। बाजन लगे अनेकन बाजा॥
बिद्रथ चन्द्रकेतु तब आना। चन्द्रसेन सँग दल परमाना॥
चन्द्रदेव औ बरत सिधाये। यह पांचौ राजा सँग भाये॥
सत्रह सेनापति लै साथा। रणको चलत भये नरनाथा॥
पांच सहस इकसौ रथआये। सहस निशान तोप लदवाये॥
गजके ठाट पचासि हजारा। लक्ष सहस्र रहैं असवारा॥
ब दल चढ़ि मैदानहि हये। पाछे कुँवर सुधन्वा गये॥
दलमधि तेल कराहन भरी। पावक लाय तप्त तब करी॥
ो नहिं आवे दलमहँ कोई। मांझ कराह मृत्यु त्यहि होई॥
ांखलिखित प्रोहित दुइ भाई। वाचा हेतु सर्व्वसो जाई॥
दो॰ चले सुधन्वा हर्ष हिय माताको शिरनाय।
कृष्ण दरश गति पाइहो माता कहेसिबुझाय॥
हिंते गये कुँवर परनामा। पाछे गये बहिनि के धामा॥
हिनी करले आरति कीन्हा। तब बीरनते बोलन लीन्हा॥
हिनि भेटिकै बाहर आई। त्रिया प्रभावति देखन पाई॥
ेया कन्त सन कह बरि नारी। ताहिछोड़िकहँ चलेसिधारी॥
री एक सदाव्रत आही। चलियेभवन देहु रतिचाही॥
वर कह्यो दिवस न होही राती। तबनारीव्याकुलह्वै बिनवती॥
तु स्नान कीन्हा मैं नाथा। रतीदान दे करो सनाथा॥

बिन अपराध पुरुष तियत्यागा। गर्भ वधेकर हत्या लागा॥
बहुप्रकार नारिहि समुझाये। मिलना कठिन बहुरिसुरभा॥

दो० बिवशहि रसभे कुँवर तब बिलमे ततक्षणयाम।
सूचित भये रतिदान दै चले पार्थ संग्राम॥

कुँवर कह्यो सुनु वचन हमारे। को पीछे रह प्रश्न बिचारे॥
ताको भुँजइँ कराहन माहीं। याही प्रण कीन्हो मनमाहीं॥
तब नारी कह रतिदै जेये। पीछे दरश तिहारो पैये॥
बिबरा कुँवर नारी के परे। टोप सनाह उतारी धरे॥
रति रस हेत तवहिं तो साजा। इत दलमाहिं हंसध्वजराजा॥
पूछनलाग सचन के पाहीं। देखियत कुँवरसुधन्वा नाहीं॥
सुधि कराह भूलो मैं जाना। वेगिदूत तहँ करो पयाना॥
गहिकर केश कुँवर लै आओ। ताहि कराहे माहिं जराओ॥
राजा दूत चलन मन दीन्हा। करिरतिकुँवरशीघ्रशुचिकीन्हा॥
बांधि अस्त्र रथ भे असवारा। हर्षित चलिभा राजकुमारा॥

॥दो० यहि अवसर में दूत सब देख्यो कुँवरहि जाय।
॥ राजा आज्ञा जो दियो कुँवरहि कहा बुझाय॥

सुनतहिं शीश गाज जनु परी। दूतन पाहिं वचन अनुसरी॥
आज्ञा तात अहै परमाना। यहकहि कुँवरहिकीनपयाना॥
जातहिं गये पिता के आगे। क्रोधितह्वै नृप बोलन लागे॥
पारथ हरिके दर्शन कारण। आये नहीं मूढ़ मति धारण॥
मेरी आनि कुँवर नहिं माने। सुनतकुँवर करजोरि बखाने॥
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहें। रती दान जल्दी यक चहें॥
तेहिते च्वहिं ह्वैगई अबारा। कीजै जो कुछ होय विचारा॥
राजा दूतहि कह्यो बुझाई। तेलहि तप्त करो अब जाई॥
अब तो नात पुत्र का नाहीं। पूछो जाय पुरोहित पाहीं॥
सुनतहिं तेल तप्त तब कीन्हा। प्रोहित पाहिं पूछसबलीन्हा॥

।दो० तबहिं पुरोहित असकह्यो अब पूछत काजानि।

पुत्र हेतु माया विवश, ताते पूंछत आनि ॥

वचन हीन राजा तब भयऊ । अबहम यहाँ रहबनहिंकहेऊ ॥
जायदूत राजा पहँ कहेऊ । राजाके मन चिन्ता भयऊ ॥
राजागे प्रोहित के पासा । बिनती करिकै वचनप्रकासा ॥
करिबिनती प्रोहित दोउ भाई । अपने सँग लैगयो लेवाई ॥
तेल तप्तहै पावक जैसो । मन्त्री पाहिं कहे नृप ऐसो ॥
मध्य कराह सुधन्वहि डारो । तेलके मध्य जराय के मारो ॥
मन्त्री गयो कुँवर के पासा । कहके वचन जाय परगासा ॥
हमते कछु नहिं बनत बिचारा । आज्ञातातजो कीन्हतुम्हारा ॥
मांधि कराह डारो छिन आना । सुनाकुँवर तब कीन्हबखाना ॥
वचन तात का करो प्रमाना । मन्त्र मोहिं भावे नहिं आना ॥

दो० शोच कियेका होत अब परवश जानि कोइहोय ।
अब काकी शङ्का करो कुँवर कह्यो असरोय ॥

तेल कराह अग्नि सम ताता । कुँवर कह्यो धीरजधरि बाता ॥
मोसन घाटि भई जगतारन । आवते हरि दरशन कारन ॥
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी । तुहीं बिभीषण लिये उबारी ॥
दीनदयाल राखि अब लीजे । महिमा प्रकट आपनी कीजे ॥
जैसे ग्रहते गजहिं छुड़ायो । ताहीबिधि अबमोहिं बचायो ॥
ऐसो सुयश रहे संसारा । कूदा कराह राजकुमारा ॥
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा । तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा ॥
बहुप्रकार हरि अस्तुति ठानी । कह्यो अल्पनहिं बहुतबखानी ॥
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली । दीन्ह कराह कुँवर को डाली ॥

दो० पावक उठा कराह सों देखहिं सब दलवीर ।
त्राहि त्राहि सबहिन कही राखिलिये रघुवीर ॥

सबहिं दलके सब सरदारा । कुँवरहिं राखि इनें किननारा ॥
शीतल तेल भयो सत्याता । कुँवरवदन नयो कंजप्रभाता ॥
राम कृष्ण जपत बहिनामा । प्रोहित संगले नृप आना ॥

कुँवरहि देखि पुरोहित कहे । जाते अग्नि बरायनि रहै॥
कीधौं तेल तप्त नहिं आही । कीकछुजरी कुँवर मुखम
दूतन कह्यो झूठ सब अहे । केवल नाम कृष्ण को
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी । नरियर एक कराहे ड
परत कराह फूटि छितराई । प्रोहित के माथे लग ज
तत्क्षण प्रोहित बहुत लजाना । भक्तद्रोह मैं कियो निदा
दो० धनि धनि कुँवर सुधन्वा तोर हृदय हरिवास ।
परा कराहे मों कहा मिले कुँवर के पास ॥
बिप्रआय अंकहि भरि लीन्हा । अस्तुतिबहुतकुँवरकी कीन्ह
कुँवर प्रताप विप्र सुख पयऊ । भक्तिप्रभाव बदननहिंजरेउ
ऐसी महिमा प्रभुकी बाढ़ी । प्रोहितकुँवर दुहुँनकहँकाढ़ी
कुँवर साथ लैगये नृप आगे । प्रोहिततबहिंकहनअसलागे
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना । इनके हृदय बास भगवाना
सुनि राजा तब सुतहिं बुलायो । उठिनृप दौरि अंकलपटायो
राजा कुँवर दुहुँन सुख पायो । बहुत प्रशंसा करि बैठायो।
पितुके दोष धरहु नहिं मनमें । मैं दलगमन करौं अवरणमें।
हर्षित कुँवर तात पग परशे । करि प्रणाम प्रोहितके दरशे॥
दो० रणको चले कुँवर तब रथ पर ह्वै असवार ।
गह्यो तुरँग तुमजाय अब सबते कहा भुआर ॥
बीरन जाय अश्व हरि लाये । युद्ध करनको राव सिधाये॥
कुँवर सुधन्वा सबके आगे । बाद्य जुझाऊ बाजन लागे॥
सब दल समाधान करि रहे । तब पारथ प्रदुमन से कहे।
हमरो हय जो हरि लैगये । अस बलधारी नृप सब भये।
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा । नीलध्वज कृतवर सरदारा।
कामकहे अब उचितक आहे । औरो सबहिं अस्त्र कर गहे॥
मेरी तात संमती अहो । आप युद्ध कत कीन्हो नहो॥
कर्णपुत्र तब कहे यह बाता । तुम दुर्द्धीर प्रलय के घाता॥

इतहि रहो तुम हम रणजाहीं। इतना कहि आये रणमाहीं॥
दो० कर्णपुत्र अरु नृपसुवन दोउ भये इकठाँव।
राजपुत्र तब पूंछता कर्णपुत्र के नाँव॥
कह वृषकेतु कर्ण ममताता। कश्यपकुलजो कहसख्याता॥
वृषकेतु नाम हमारो अहै। सुनिकै बात सुधन्वा कहै॥
बन्धु छाद मुनि गोत्र हमारा। नाम सुधन्वा वीर अपारा॥
दोउ वीरन तो रण अणठाना। क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुवाना॥
नृपति पुत्र के मारे वाना। सारथिरथ सबकिय भंगाना॥
मूर्च्छा पाय क्षणक महँ जागे। बाणन वृष्टि करन तबलागे॥
दो० दूसर रथ सारथि लिये पुनि आये वहि ठाम।
कर्णपुत्र तब चढ़यो रथ सुमिरि कृष्णका नाम॥
कर्णपुत्र बहुजय रण लीन्हा। विपुलवीरक्षणमहँ वधकीन्हा॥
हना सुधन्वा बाण रिसाई। कर्णपुत्र को मूर्च्छा आई॥
कर्णपुत्र रण मूर्च्छित जाना। तब प्रद्युम्न हाँके मेदाना॥
ततहिं काम पंचशर मारे। सारथि हय पैदल संहारे॥
विशिख लग्यो तब खसेतुरंगा। जोती ध्वज छत्रहु भे भंगा॥
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना। क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुवाना॥
तीनि बाण सारथि संहारा। सिंहनाद करि राजकुमारा॥
नष्ट भयो रथ खण्ड तुरंगा। दण्ड छत्र तो भे रदभंगा॥
दोनों वीर भिड़े रण करनी। कबहुँ गगन कबहूँके धरनी॥
गदा गदा ते क्षत बहु लागे। मूर्च्छे दोउ कुँवर तब जागे॥
दो० कामदेव मूर्च्छित रहे कुँवर रथहि चढ़िजाय।
साहस क्षोहिणि सैन्यदल मारतकुँवर रिसाय॥
देख तबै कृतवर्मा धाये। कुँवर के ऊपर बाण चलाये॥
राजपुत्र बाणन ते मारा। औ साण अश्वहि संहारा॥
एक बाण ते सारथि मारा। रण महँ गर्जे राजकुमारा॥
तब कृतवर्मा साजि सिधाये। देखतहीं अनुशाल्वहु धाये॥

तीक्षण राज बाण विस्तारा। सो अनुशल्य कुँवरपर डार
मूर्च्छित कुँवर परे रण माहीं। बहुते दल मारेगे ताहीं
हाहाकार करत सब भागे। राजपुत्र यहि अन्तर जागे
क्रोधित कुँवर बाण तब मारा। मूर्च्छाभङ्ग अनुशल्यभुआरा

दो० क्रोधवन्त ह्वै राजसुत मारे बाण अपार।
हय गज रथ पैदल कटे पारथ दल संहार॥

पारथ दल तब भागन लागा। ताक्षण वीर सात्यकी जागा
विपरित बाण क्रोध करि छाटे। पंच बाण ते धनु गुण काटे
दोनों वीर लड़त मैदाना। दोनों मानहुँ देव समाना
रक्त भिजे जनु टेसू फूले। देखत रूप वीर सब भूले
शेल चक्र कुँवर धै मारा। मूर्च्छेसात्यकि रणहिंमँझारा
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे। तब अर्जुन रथहाँक्यो आगे
कहा टेरि सुनु राजकुमारा। मोर नाम अर्जुन धनुधारा
भीषम द्रोण कर्ण संहारा। बड़े बड़े वीर और सरदारा
कुँवर कहा पारथ जगतारण। सबरथ जित्ते वीरता कारण।

दो० हरिसे सारथि साजिके आये हौ रणमाहिं।
ताते भाषत पार्थ यह जीति तुम्हारी आहि॥

तुमहिं जीतिहौं लैकरि काजा। करिहैं यज्ञ हंसध्वज राजा।
सुनि पारथ तब बाण चलाये। दश बाणते कुँवर बिचलाये।
काट्यो बाण कुँवर भयो क्रोधा। राजकुमार महाबल योधा॥
बरषै बाण सकै को भाषन। सौते सहस सहसते लाखन॥
पारथ पावक बाण चलाये। कुँवरके दलको बहुत जराये॥
वरुण बाण कुँवर तब मारा। अग्नि बुझी बाढ़ी जलधारा॥
बर्षा की जनु उपमा पाये। पवन बाण तब पार्थ चलाये॥
जलगयो सूखिउड़न दललागा। राजहिं दीख पुत्र रिसपागा॥
तीस बाण क्रोधित ह्वै छाटे। ध्वज पताक पारथ के काटे॥
कह्यो कुँवर अब पारथ सुनिये। सारथि गिरे सारथी चहिये॥

दो० हरि सारथि को सुमिरही जो चाहै कल्याण।
नातरु बाम विधाता अन्तकाल तव प्राण॥
रथ सुनिकै जोती गहे। रणदल माँझ जान अवचहे॥
हाकष्ट आयो परमाना। पारथ तब सुमिर्यो भगवाना॥
मिरतही तुर्तहिं हरिआये। जोती गहे पार्थ सुखपाये॥
पारथने कीन्ह प्रमाना। राजकुँवर तब करै बखाना॥
पन भाग्य बड़ा मैं जाना। तुम दर्शन दीन्हा भगवाना॥
स्तुति करिकै शारँग गहे। बचन एक पारथ तव कहे॥
ण समान पायहो सारथ। आज देखिहौं तुवपुरुपारथ॥
र्थ कह्यो शर तीन हमारा। ताते करब तोहिं संहारा॥
वर कह्यो तीनहुँ शर कटिहौं। खंडखंड करि मस्तक कटिहौं॥
ह्यो पार्थ जो तोहिं न मारौं। अपने पितृ नरक महँ डारौं॥
तना सुनि द्वौ वीर रिसाने। क्रोधवन्त है शारँग ताने॥
दो० कुँवर कह्यो शर तोर मैं जो न हतौं सुनु बात।
तो मम वास अधोगत कुँवर कहै सख्यात॥
जपुत्र तब बाण चलाये। हरिसमेत रथ माहिं बचाये॥
थ मारि सो पाछे गये। पारथते हरि बोलत भये॥
पुरुपारथ देखो पारथ। वधपरतिज्ञा कीन्ह अकारथ॥
नारि कुँवर व्रत आहे। ऐसी बात कौन निर्व्बाहे॥
तुमते यह व्रत नहिं होई। कौन पुण्यते मारब सोई॥
कुमार बाण तब छाटे। हय गजरथ पैदल सब काटे॥
यो कुँवर गोवर्द्धन धरे। गाय गोपकी रक्षा करे॥
रथको अब राखो हरी। सुनत क्रोध पारथ तनुजरी॥
बाण पारथ कर लीन्हा। तामहँपुण्यजगतपतिदीन्हा॥
वर्द्धन धरि जो फल भये। सोइ पुण्य हरि शरको दये॥
दो० धाये देखन देव सब रहत काहि प्रण आज।
दोउ वीर हैं भक्त हरि काह करी व्रजराज॥

मारे पारथ बाण तुरन्तहिं। कुँवरबात यह कह भगवन्तहिं
जो नहिं शर काटि है के पापू। यह कहि बाण चलाये आपू
अर्द्धचन्द्र तब बाणन मारा। पारथ को शर काटि पवारा
अचरज सबै देवतन माना। तब पारथ लिय दूसर बाना
रामऽवतार पुण्य जो कीन्हा। सोसब पुण्य बाणको दीन्हा
पारथ बाण करै सन्धाना। कुँवर कहै सुनिये भगवाना
पुण्य तोहारे पारथ बाना। मैं प्रण काटे तृणहि समाना
परनारी ते जो रति भावो। बिन काटे सो पातक पावो
पारथ बाण तजे जो भारी। करु संधान कुँवर धनुधारी
ऐसे बाण क्रोधकरि छाटे। पारथ क्राहि वोहु शर काटे

दो० शङ्खध्वनि तब कुँवर करि देवन अचरज पाय।
पारथ शर हरि सैन्य सब काटे तृणसम भाय॥

कहे श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजै। रहौ युद्ध शङ्खध्वनि कीजै।
हरिपारथ तब शङ्ख बजाये। पाछे श्रीपति कह मन लाये।
लेहु बाण सुनु बात हमारा। यही बाण बध होय कुमारा।
पारथ बाण हाथले लीन्हे। मध्यकालअधिपश्चिम दीन्हे।
श्रीपतिशर मन्त्रावलि कीन्हे। सोइ बाण श्रीपति करदीन्हे।
फर पर आप चले भगवाना। पारथ सो शर करु संधाना।
कुँवर कहै जाने जगतारन। फर पर बैठिके आवतमारन।
मेरो प्रण सुनिये प्रभु सोई। हरि हर नाम भेद कछु होई।
जो नहिं यह शर काटि गिरायो। तो यह पाप जगतमहँ पायो।
पारथ मारे कोपित बाना। तीनलोक शर देखिसकाना॥

दो० कुँवर तेहि तब बाण को मारि माँझ शरमाहिं।
काट्यो बाण मुरारिको रहकाल जाहि आहि॥

सबै देवतन अचरज माना। पंखसहित आधाउड़िआना॥
आधा बाण लग्यो तब जाई। राजपुत्र शिर काटि गिराई॥
जूझे कुँवर जगत यश पायो। हरिकिरपा शीशउड़िआयो॥

कृष्णहिं कृष्ण जपत शिर रहई । धाय कवंध अस्त्र कर गहई ॥
शीशहि गहे हँसत भगवाना । पारथ शर कीन्हा संधाना ॥
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा । राजाके रथ डारि सो दीन्हा ॥
तब हंसध्वज शिर लै हाथा । रोदन करत ठोकि कै माथा ॥
बहु विलाप तो करै भुआरा । ताको नहिं कीन्हा विस्तारा ॥
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा । प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा ॥
दो० हर्षित ह्वै हरि शीश गहि दीन्हो गगन चलाय ।
तहँ शिवशङ्कर पाय शिर मालामुण्ड बनाय ॥
दूसर पुत्र सुरथ है नामा । पितुकेसम्मुखकीन्ह प्रणामा ॥
तात शोक वारण अब कीजै । हमैं युद्ध की आज्ञा दीजै ॥
पितु की आज्ञा हर्षित पाये । रथ पर चढ़ि रणहेतु सिधाये ॥
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा । मानहु प्रलय गाज घनघोरा ॥
अब कत जैहौ पारथ वीरा । मेरो बन्धु मारि रणधीरा ॥
हरी पुण्य दुइ जन्म को दीन्हा । मेरो बन्धु तबहिं वध कीन्हा ॥
यहि प्रकार सब कहा सुनाई । पारथ पाहिं कह्यो यदुराई ॥
बन्धु शोकते व्याकुल आवो । अब यासों नहिं जीतनपावो ॥
पारथ कह्यो कौन रणधीरा । सहसन वधे एक दिन वीरा ॥
आप सहाय जगत के नायक । सुरथ कहा गमजीतनलायक ॥
दो० कृष्ण कहा पारथ सुनो सुरथ शूर सतवन्त ।
ताते प्रद्युमन आदिले लड़हु कहा भगवन्त ॥
सब वीरन मिलि कुंवरहि घेरा । मारुमारु कहि सबहिन टेरा ॥
पारथ के पाछे यदुराई । आगे वीर घनेरे जाई ॥
योजन त्रय पाछे हरि आये । आगे वीरन ने अटकाये ॥
सुरथ कह्यो पारथ है काहा । सुने वीर हांके रणमाहा ॥
हम सन रण जो करिये आछो । हरि पारथ को पूछो पाछो ॥
सुनतहि सुरथ क्रोध तब पाये । वीरन ऊपर वाण चलाये ॥
ऐसो वाण क्रोध करि मारे । पैदलरथ अरु अश्व सँहारे ॥

सोई शिर जो हम पहँ आवै। मुण्डमाल के मध्य लगावै
याको अनुज सुधन्वा अहै। ताको शीश प्रथम मैं गहै
अब जो शिर सुरथको पावों। मुँडमाला शिव शोभा पावों
भृंगी चले गरुड़ पहँ आये। जाके वचन कहत तब लाये
देहु शीश तत छिहीं छिनाई। सुनतहिंगरुड़क्रोधअतिपाई
पवन पच्छ हरि दूत उड़ाई। हरको दूत हरे पहँ आई
श्वास पवन ते गरुड़ उड़ाये। उड़तहिंउड़तप्रयागहिंआये
दो॰ गरुड़ शीशको डारिके लौटि कृष्णढिग आय।
नन्दी ताहि उठाय के दीन्ह शम्भुको लाय॥
महादेव मुंडमाल बताये। सुरथ जूझ नृप देखन पाये
तब रणको नृप कियो पयाना। देखत उतरे श्रीभगवाना
हाथ उठाय कहा भगवाना। राजा राखो शारँग बाना
सुतको शोकछाँड़ि अब दीजै। मेल मिलाप पार्थ से कीजै
राजा सुनत हर्ष तब पाये। धाय कृष्णके पद लपटाये
जो मैं रूप कृष्ण कर देखो। पुत्र शोक मेरे क्यहि लेखो
तब पारथ से बाँह मिलाये। पारथ मिले हर्ष अतिपाये
पाँच दिवससे अश्व छुड़ाये। श्रीपतिहस्तिनपुरहिंसिधाये
धर्मराज पहँ श्रीहरि कहाऊ। सबही राजधर्म कहिदयऊ
अश्वछूट तब पार्थ सिधाये। हंसध्वजको संग लगाये
दो॰ उत्तरदिशि अब अश्व चलु महाभयानक देश।
सघनकुंज कानन विपे अश्वहिं कीन्ह प्रवेश॥
सरवरएक अश्व तब गयऊ। प्रविशतजलअश्विनिसोभयऊ
कौतिक दूर रह्यो दुखपागे। सरवर एक और है आगे
ताको जल हय कीन्हो पाना। अश्विनितेभयोबाघ प्रमाना
सभै अचम्भो पूछहि राव। याहि अर्थ मुनि हमें बताव
अश्व अश्विनी भो केहिकाजा। व्याघ्र भयो कत पूछे राजा
फेरि अश्व ह्वैहै की नहीं। सुनि मुनि वैशम्पायनकही

तयुग माहिं देवि तस साधे। वहिसर तट शङ्कर अवराधे॥
शङ्कर हेतु तवहिं मन लावा। असुर एक पापी मतिभावा॥
कह्यो तबै कृत करु अज्ञानी। चलौ संग करिवे हम रानी॥
सुनत शाप तब देवी दीन्हा। भस्म तुरन्त दैत्यको कीन्हा॥
दो॰ सर परशे जो पुरुष भये त्रिया होत परमान।
यही शापते राज सुनु अश्विनि भये निदान॥
क वर्ण मुनि सतयुग रहे। दूजे सर स्नानहि गहे॥
करि स्नान ध्यान मन लाये। सरवर को शापित भे पाये॥
हि सरको जल प्रविशै जोई। निश्चय वाघसो प्राणी होई॥
हिं सरमाहिं अश्वजव गयऊ। बाघरूप ताकारण भयऊ॥
ारथ मही शोध तो पाये। तब सो हरिको चरणनवाये॥
ारो पाप सिन्धु भगवाना। अश्विनिप्रभुकरहूनिरमाना॥
वहीं दलहि ध्यान मन लये। राजा सुनि प्रसन्न मन भये॥
गरो दोष अश्व को गयऊ। श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ॥
र्पित मे तव चले चलाये। स्त्री राज्य सो पहुँचे आये॥
दो॰ त्रियाराज को त्रिया सब पुरुष नहीं है ताह।
गन्धर्वराज शापदिय पुरुष न जन्मेचाह॥
कीन्ह भोग तब गँधरब देखा। महाक्रोध दैत्यनवध लेखा॥
दैत्य को मारि देश कहँ शापा। पुरुष जन्म पुर होय न पापा॥
औरो पुरुष भोग मन धरै। गये तीस दिन निश्चय मरै॥
यहि प्रकार ते शाप दिखाई। तब गन्धर्व स्वर्गपुर जाई॥
तबते देश रूप यह भयऊ। श्यामकर्ण हय तहँपर गयऊ॥
देखत एक त्रिया तहँ आई। श्यामकर्ण सो हरि लेजाई॥
धर्मराजको हय यह अहै। पारथ रक्षक नृप ते कहै॥
परिमल नाम रजा इक अली। हँसिके कहेसि कीन्हता भली॥
लै हयशाला बांधेउ जाई। साजि निपादल युद्धहि जाई॥
दो॰ हय गज पैदल रथन चढ़ि चलीं सबै जो तीय।

चन्द्रवदनी कठोर कुच रूप विधाते दीय॥
पारथ पाहँ परीमल कहई। अवहूँ आश अश्वके अहई॥
आशा तजहु भोग करु आई। युद्ध करे तो कालहि खाई॥
तवहिं सबै दल मोहित भयऊ। कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहेऊ॥
पारथ कह्यो सुनहु हो त्रिया। तुम्हरेपहँगये पुरुष न जिया॥
परिमल कहै काल तव आये। युद्ध माहिं जय कोधौं पाये॥
सतते भोग करौ मनलाई। सुख में करौ परम सुख पाई॥
युद्ध करी जय पैहौ नही। सुनिके अस्त्र पार्थ तव गही॥
मोहन वाण हने तव पारथ। हँसीत्रिया कहभये अकारथ॥
सुर नर मुनी शंभु उर धरें। देखत हमहिं तासु मन हरें॥
मोहन वाण करहि का मेरो। पारथ आज काल है तेरो॥
दो० मोहन वाण हमार है देखत मोहत शंभु।
मोहन वाण तुम्हार जो मम का करत अनंभु॥
नई वैस नवयौवन वारी। मृगनयनी सरोज रतनारी॥
जव पारथ क्रोधित शर गहे। तव देवन नभ दुन्दुभि महे॥
यह कहि पंचवाण तव मारे। और सहस्रन वाण प्रहारे॥
तिरिया वधे पाप हो पारथ। प्रीति करौ तो होवे स्वारथ॥
पारथ सन तो प्रीति विचारो। परिमलते जो वचन सँचारो॥
यज्ञहि होत योग मन लइये। लैके दल जो मम इतअइये॥
नातो पुरी हस्तिना जइये। फिरवतुरन्तमोहिंप्रतिपलिये॥
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना। पुरीहस्तिना करिय पयाना॥
छूटा अश्व पार्थ तव चले। क्षत्री वीर सङ्ग सव भले॥
दो० ऐसे तरु देखे सबै फूल सुरभि परमान।
ओ मनुष्य समफल लगे अचरज भयो महान॥
देखत सबहिन अचरज माना। देखत चले अश्व परधाना॥
एक नैन देखा बँगदेशा। देश विदेश और प्रविदेशा॥
जाके श्रवणन सम द्वै काना। एक देश देखा परमाना॥

तीन नयन अरु तीनै नासा। एक देश ऐसा परकासा
एक देश नरसिंह स्वरूपा। भोग गंधरव सुखअनुरूपा
यहि सब देश अश्वतो गयऊ। जीते सबै बश्य तब भयऊ
चलत अश्व आये पुनि तहां। भीषम नाम दैत्य रह जहां
एक चक्रवर्त्ती पुर आना। तहँको अश्वहिंकीन्हपयाना
मेदु हाथ दो प्रोहित अहैं। सुनी बात यह नृपते कहैं
अर्ज्जुनादि सब लाय तुरंगा। जासु बन्धु तोर पितु भंगा

दो० पिता शत्रु तुव आवत बधौ ताहि महराज।
रणमें धाओ बाण लै यज्ञ करो जगसाज॥

चारि मासके व्रत हम अहैं। निराहार हैं तुमते कहैं
मदिरा रक्तासव नहिं खाये। बालक यती भाइजे पाये
जटाधारि अस्नान अहारा। कार्तिक कन्या भक्ष अपारा
अब तो वारन कीन्हे चहौं। बधौं पार्थही ताते कहौं
भीषम सुनिकै क्रोधित भये। युद्धहिं हेतु चलन मनदये
कोटिन दललै दैत्य सिधायो। लङ्काकीनिशिचरिबहुआयो
दैत्यनि एक दीख हनुमाना। भागुभागु सो करै बखाना
यह बन्दरके जाना भाई। पलमहँ लङ्कापुरी जराई
सुने एक अरु कहै बुझाई। नरके मारे कौन बड़ाई
मानुष मारे रावण राऊ। मैं कुच ते सब सैन्य गिराऊ

दो० औरौ भाषो एक तो तोरौ कुच सम बेल।
कुचको अग्र हमारहू योजन इकका मेल॥

यह कहि स्वर्ग माहँ सो गई। पारथको दल गो भहरई
बहुते दल तो मारो जाई। दलपर जाय प्रकट तो भई
लेकर दल तो आगे आय। पारथ पाहँ कहे समुझाय
तोको हतिकै भीम सँहारौं। पिता बैरलै चह्न सँवारौं
यह कहि बाण वृष्टि करलाये। वृक्ष पहाड़ अनेक चलाये
लक्षबाण तब पारथ मारा। पर्वत वृक्ष अस्त्र गोळारा

वहु दैत्यनी वड़ो दुख दीन्हा । पारथ वीर वाण तव लीन्हा ॥
मारे रथ पैदल असवारा । दैत्यन दल तो वहु संहारा ॥
प्राणअन्त भयऊ जव जाना । तव राक्षस माया निर्माना ॥
दो० वाघ सिंह औ गऊ सम सेना भयो प्रमान ।
भीषम वह अचरज भयो तपा रूप परवान ॥
माया ते पारथ तव कहे । येह दैत्य देता दुख अहे ॥
पारथ तो माया सव जाना । तुर्तहिं वधे ताहि परमाना ॥
छूटे प्राण दैत्य तव गयऊ । महाहर्ष पारथ को भयऊ ॥
सव सेना को पल महँ मारा । जीते रणमहँ पाण्डुकुमारा ॥
मरे दैत्य जव सव हर्षाना । पारथ रथ वैठे हनुमाना ॥
चले अश्व तो किये पयाना । पारथके सँग दल वहुनाना ॥
यौवनाश्व नीलध्वज राऊ । हंसध्वज वृषकेतु सिधाऊ ॥
मेघ वर्ण आहै अनुशाला । कामदेवहीं पुत्र गोपाला ॥
चले अश्व के पाछे जाय । अश्व चला तो तेज पराय ॥
चले अश्व तव आये तहाँ । मणिपुर नाम ग्राम इकजहाँ ॥
दो० सत्यवन्त सव क्षत्रिगण इक नारी व्रत वेश ।
सव राजा कर देत हैं अर्जुन पुत्र नरेश ॥
पुर उपमा नहिं जातकहि जनु कैलास समान ।
ऐसी शोभा देखि तहँ पुर इन्द्रासन जान ॥
इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञपर्व्वभाषाकृतभीषमदैत्य
वधोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥
वैशम्पायन कहे बखाना । पुर उपमा नहिं जातवखाना ॥
पारथ संग वीर जो रहैं । वड़े वली हैं सव मिलि कहैं ॥
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना । तत्क्षण देखे मृत्यु निशाना ॥
गीध उड़ें पारथ शिर लागे । सवहिं देखि तो संशय पागे ॥
नगर लोग अश्वहि तव देखा । गे राजा ते कहें विशेखा ॥
सुनतहि राजा वीर पठाये । श्यामकर्ण को तुर्त मँगाये ॥

कंचन पत्र शीश पर रहेऊ। प्रथमे राव ज्ञान सव अहेऊ ॥
तब राजा मन्त्री सन कहे। धर्मराज को हय यह अहै ॥
पारथ ताको रक्षक अही। मेरे पितु अस राजा कही ॥
ताते मन्त्री कहे विचारी। कौनी बुद्धि करौं अव भारी ॥
दो० तात भंग मम तात करु शापे तो कह तात।
ब्याह भई ता कारणे पारथ तारु सख्यात ॥
पारथको स्पर्श जब लीन्हा। ऐसे त्रिया व्याह तो कीन्हा ॥
छांड़ि गये होते जो ताता। अव हम भेटकरव सख्याता ॥
करि मन प्रेम बुद्धि वीचारा। आने अश्व कौन परकारा ॥
मन्त्री कहे अश्व लै मिलो। राजा कहै मन्त्र यह भलो ॥
तव राजा बहु साज बनाये। नाना द्रव्य अनेक मँगाये ॥
नाना राग रंग तव ठाना। श्यामकर्ण लै किये पयाना ॥
गज ते उतरि राव तव गये। पारथ चरण माथ तव दये ॥
मैं अव पुत्र तोहार प्रमाना। चित्रांगदा गर्भ निर्माना ॥
सम्पति राज्यलेहु अव ताता। कीजै कृपा जन्मकर दाता ॥
पारथ के दलका सरदारा। सव पारथ सों कहै सुसारा ॥
दो० पारथ मिलो न पुत्रते देखौ सुतकर देश।
शीश चरण दै सुनि रहे मणिपुरपती नरेश ॥
पारथ उपजो क्रोध अपारा। नृपके हृदय लात इक मारा ॥
पापत तोहिं लाज नहिं आवे। वेश्यगती मम पुत्र कहावे ॥
मोसे जन्म तोर नहिं अहे। मेरो पुत्र ऐस नहिं कहे ॥
अभिमन्यु पुत्र जानु संसारा। चक्रव्यूह अकेल संहारा ॥
नाच गान गन्धर्व को काजा। राजा मे तुहिं नेकु न लाजा ॥
धर्म्महि गहे सर्व मन लाये। भय आतुर तव देखन पाये ॥
युद्ध न भो तोहिं शरणन लागे। देखत भय आतुरते पागे ॥
बभ्रूवाहन सुनत रिसाना। क्रोधवन्त है वचन वखाना ॥
और सही सव जो तुम कही। एक बात तो जात न सही ॥

औरो बाण काम को लागे। मूर्च्छित भये नेकु नहिं जागे॥
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना। यौवनाश्व लीन्हे तब बाना॥
क्रोधवन्त तब बाणन काटे। पारथ पुत्र मांझ तो काटे॥
पारथ सुत तब मारे बाना। यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना॥
तब सुवेग अमरष भरि धाये। मणिपुरपतिपर बाणचलाये॥
मध्यबाण तब राजा काटे। बाण सुवेग और तब बाटे॥
मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ। पलकमाहँ चेतन्त तब पाऊ॥
चेत भये तब माखो बाना। तब सुवेग मूर्च्छित मैदाना॥
दो० मेघवर्ण तब धायऊ करले शारँग बान।
महायुद्ध तब लागेऊ राजा सुनहु बखान॥
मेघवर्ण पुरुषारथ करे। दल अनेक खेतन महँ परे॥
जबहिं मणीपति माखो बाना। मेघवर्ण मूर्च्छित मैदाना॥
मेघवर्ण मूर्च्छा जब पाये। तब हंसध्वज राजा धाये॥
रहरहु करि मारे तब बाना। मणिपतिको छाये मैदाना॥
ऐसे शर तब राजा मारे। रथ सारथि पैदल संहारे॥
हंसध्वज कीन्हा प्रभुताई। पांच क्षोहिणी मारि गिराई॥
कोपित भये मणीपुर राऊ। हंसध्वजपर बाण चलाऊ॥
रथ सारथी कीन्ह नीदाना। हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना॥
जेते वीर सबै बध भये। वृषकेतू सों पारथ कहे॥
जैये पुत्र हस्तिना देशहि। कहोजायसुधि धर्म्मनरेशहि॥
दो० कहो जाय वृत्तांत सब याय राविकारीन।
जो तुम जूझे रण विषे कहे जाय सुधि कौन॥
तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै। हमहिं शाप दै प्राण गँवैहै॥
जब पारथ यह कहे बखानी। तब देखाहि मृत्यु निशानी॥
पारथ ऊपर गृद्ध उड़ि आये। रुण्ड छांह टलि पारथ पाये॥
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधारो। यह अवकष्ट जायसमुझाओ॥
मोरे बदहि यज्ञ नृप करे। मोपर कालआय अब निपरे॥

दो० विनतासुत जिमि इन्द्रवध तैसे हति तुव प्रान।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत मारे राजहिं वान॥

तवमणिपुरपतिस्वर्ग्गहि गयऊ। सूर्य तेजमहँ छिपिसोरह्यऊ
वहँते जवहीं कीन्ह पयाना। तोसम वीर न देख्योआन
तव फिरि गये सूर्यके पाहा। अंग अंग तनु जर नरनाह
पुत्र सुपुत्र कहे रिसिआई। हंसध्वजको वधि प्रभुताई
ताते स्वर्ग्ग देखायो तोहीं। अजहूं वीर न चीन्ह्यो मोहीं
मणिपुरपति तव वसुधा आये। वृषकेतू पर वाण चलाये
कर्णपुत्र स्वर्ग्गहि महँ गयऊ। पाछे प्रकट भूमिमहँ भयऊ
कवहुँ अकाश कवहुँ धरधरनी। पार्थ ठाढ़ देखत रणकरनी
वाण लगे तव मांस उड़ाये। अन्तरिक्ष महँ पक्षी खाये
पांचदिवसलौं तव रण कीन्हा। रैनिदिवससांसहुनहिंलीन्ह

दो० मारे वाणजु क्रोधकर मणिपुरपती नरेश।
काटि शीश वृषकेतु कर भये युद्ध करशेश॥

उठी कवन्ध अस्त्र तो धरे। शिर पारथ के रथ पर परे
हय रथ पैदल रुण्ड सँभारे। देखा पार्थ रुदन संचारे
हाहा कर्णपुत्र धनुधारी। सुन्दरमुखवलिजाउँतुम्हारी
कुन्ती नृप भाई यदुराई। इन सबते का कहिहौं जाई
वहुप्रकारते रोदन करहीं। विविधभाँतिविलापसंचरहीं
हाहरि सारथि कीन्ह हमारा। आवतको नहिं दोषतुम्हारा
कर्णपुत्र का वदन निहारी। मोहित भये पार्थ धनुधारी
शीश गोदले मुर्च्छे पारथ। रसना रटै श्रीपती सारथ
पारथ मूर्च्छित राजें देखा। आयनिकटतौ कही विशेखा
देखे मूर्च्छित पारथ आई। वभ्रुवाहन परमसुख पाई

दो० मूर्च्छित जाने तात कहँ धनुपहि अग्र उठाय।
कटू वचन कहि मणिपती भापतकटकसुभाय॥
सुनिये राजा श्रवण दै ताको करौं वखान।

केये का काम है गहौ धनुष कर बान ॥

इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधपर्व्वभाषावभ्रुवाहनयुद्धकर्ण-
पुत्रवधोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

वैशम्पायन करैं बखाना। पारथपुत्र कह्यो परमाना ॥
सुत वैश्यन को तब तुम कहेऊ। ताकारण ते प्रण हम गहेऊ ॥
पृथ्वी परत नहिं क्षत्रिय कोई। वैशम्पायन हय ले सोई ॥
एते दल महँ बीर न ऐसे। कर्णपुत्र कहँ देख्यो जैसे ॥
तुम क्षत्री हम वैश्य सख्याता। करौ युद्ध ऐसी कहि बाता ॥
यह सुनि कर तब पारथ जागे। महा खँभार क्रोध में पागे ॥
बाण धनुष तब कर में लीन्हा। क्रोधितह्वैरथचढ़िशुभकीन्हा ॥
करिके क्रोध कहा यह पाहा। रे मणिपुरपति जैहै काहा ॥
मेरो दल तुमने सब मारा। तोहिं वधौं अब पांडुकुमारा ॥
थोरो बहुत बात कहि आये। बाणवृष्टि तो पारथ लाये ॥

दो० क्रोधितःपारथ वीर तब बाण वृष्टि झरि लाय।
रथ गज हय पैदल घने त्रासित सब भहराय ॥

कृतवर्मा को उत्तम साथी। अश्वत्थामा नामा हाथी ॥
भीमउपर कुंजर जब धायो। बीचहि अर्ज्जुनमारिगिरायो ॥
प्रलयकाल महँ शंकर जैसे। पारथ अब प्रहारत तैसे ॥
पारथ बाण करे संधानहि। देखे कोइ न मर्म्महिजानहि ॥
छूटत बाण न देखे पायो। तब देख्यो जब मारिगिरायो ॥
मणिपुरपति तब विचले जाई। पारथ लगे कोट महँ आई ॥
बाण धावते गढ़ तब तोरे। शर के घाव कँगूरा फोरे ॥
नगर नारि नर रानी भागी। शर ते पावक पुरमें लागी ॥
तबहीं पारथ किय प्रभुताई। क्रोध भये मणिपुरके राई ॥
मारे बाण मणीपुर राऊ। चारों हय के लागो घाऊ ॥
तीनि बाण पारथ को मारे। एक बाण ते छत्र सँहारे ॥
सात बाण मुर्च्छे तब वीरा। बेरथ भये पार्थ रणधीरा ॥

दो० तब दोउ जन भूमि महँ युद्ध करत विपरीत।
महामारु को कहिसकै देखत सब भये भीत॥
पारथ ने जेते शर काटे। मणिपुरपति तुरतहिं सबक
बभ्रुवाहन बोले तब कीन्हा। अस्त्र अनेक जु देवनदीन
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये। सारथि भे हरि सदा बचा
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे। कृपिणी के घर भिक्षुक जै
मम माता है सती प्रमाना। ताको दोष दीन्ह अज्ञान
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना। निष्फल होत ताहिको बान
यह अपराध बूझ दे गारी। अजहूंसुधिनहिंलीन्हतुम्हा
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना। तबलगिहमनहिंमारहिंबाना
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा। मणिपतिबायलभये अपारा
बभ्रुवाहन क्रोधित शरमारा। बाणनतें भैगो अँधियार
॥दो० प्रबल बाण तब मारेउ मणिपुरपती भुआर।
पारथ तब मोहित भयो भूलें घात प्रहार॥
कोपि पार्थ तब बाण चलाये। पैनहिं सकहिं पुत्र विचलाये
गंगा शाप तुलानेउ आई। बिसरा बल औ बुद्धि नशाई
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा। लीन्हें अर्द्धचन्द्र शर हाथा।
गंग बैर लै ज्वाला रानी। अर्द्धचन्द्र शर आपसमानी।
उहै बाण लै धनु संधाना। तेज मनो द्वादशहू भाना॥
देखत शर पारथ अकुलाना। लक्षबाण बहु किय संधाना॥
पावक बाण लगो तब झारन। पै वह बाण लगे नहिं टारन॥
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई। तजे कबंध शीश उड़ि जा
॥दो० कार्तिक सुदि एकादशी उत्तरा मंगलवार।
सांझ समय जूझे तहां पारथ पाण्डुकुमार॥
पारथ बध राजा तब धाये। शंखध्वनि करि हर्ष मनाये
हर्षवन्त बहु बाजन बाजें। बन्दीजन तो अस्तुति साजे
नगर माहिं तब भूपति चले। नाना शकुन होत सब भले

तब अन्तःपुर को शुभ कीन्हा। रानी उतरि आरती लीन्हा॥
राजा सुनि तब आनँद मानो। जीते सुत बहु हर्ष बखानो॥
दासी एक जाय कहि तहां। चित्रांगदा उलूपी जहां॥
महाबीर हैं पुत्र तुम्हारा। पारथ को कीन्हा संहारा॥
सुनत दोउ मूर्च्छित भुविपरी। दासी सब तब विस्मयकरी॥
राजा पाहिं कहा तब जाई। माता दोउ मूर्च्छा खाई॥
सुनतहिं राजा अचरज पाये। देखन मातुहिं तुर्त सिधाये॥
दो॰ कोइ चन्दन कोइ पवन करि हाहा करत पुकार।
अस देखा दोउ मातु कहँ मणिपुरपती भुआर॥
अलङ्कार विन विधवा जैसे। मातुहिं जाय दीख नृप तैसे॥
माता कहँ तब भूप उठाये। औरो वचन कहे मन लाये॥
हर्ष माहिं दुखमो का जाना। माता हम सों कहो वखाना॥
मेरो सुयश सुनो असमाता। पारथ कहँ मार्यो सख्याता॥
हंसध्वज नीलध्वज राजा। योवनाश्व प्रदुमन रणगाजा॥
अनुशल्वा सुवेग जूझारा। और महाबल कर्णकुमारा॥
अलङ्कार पहिरो हे माता। देखत हैं अत्र मंगलदाता॥
सुनत वचन माता तब कहे। हेसुत तुम पापी बड़ अहे॥
पारथ कन्त हमारो अहे। मेरो सुत के पापहि कहे॥
दो॰ मेरो भूषण सकल तुव ताहि उतारयो आज।
अब भूषण पहिरावतो नेक न आवे लाज॥
ज्ञनाशि धर्महिं दुख दीन्हे। कुन्ती कहँ पारथ विन कीन्हे॥
इक समय पूँछेउ नहिं मोहीं। पापी पापबुद्धि भइ तोहीं॥
हम अब कन्तहि संग सिधावें। रे पापी न्याहिं कन्त देखावें॥
अह कहि दोउ तिय वाहर गई। विस्मय राय बहुत विधिभई॥
तब उलुपी भापण अस कहई। एक परीक्षा पियके अहई॥
आप विलोकत हैं अब रोय। है उपाय करि सके जो कोय॥
मणि संजीवन अहै पताला। प्राण सजीव होय ततकाला॥

जीवहि पारथ जो मणि आवै। बभ्रुवाहन सुनतै सचुपावै॥
हमरे पितुसन शंकर हारे। वलसम भो को सर्प विचारे॥
मैं पताल चलि मणि लैआवों। जीतिनागअब तातजिआवों॥
सुनत मातु कह हेतु बुझाई। पुत्र न करु यह वड़िलरिकाई॥
विषम विषैलो तेज प्रत्यक्षक। पंद्रह कोटि नाग जहँ रक्षक॥
दो० सौ मुख कोइ दुइसै वदन कोइ वदन सौतीन।
चार पांच छः सात सौ वदन आठ सौ कीन॥
नागन केर मणी है प्राना। परस्वारथ जिय देतकोदाना
रहो पुत्र मैं मन्त्र उपावों। अपनो भूषण पितहिं पठावों
तवहीं मन्त्रि वोलि कै लीन्हा। सवै आभरण साथहिदीन्हा
कहियो जाय पिताके पाहीं। तुव दुहिता विधवाभइआहीं।
मणी देहु तो तात बचायो। कह्यो तवहिं इकलोजवपायो।
तात पाहँ जो सहोदर कहेऊ। खलु कै रहो रहा नहिं चहेऊ॥
पुण्डरीक मन्त्री कह वाता। नाशहोय तनुपार्थ सख्याता॥
पिण्ड लगे तो मणि का करहीं। कैसे प्राण फेरि संचरहीं॥
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई। सुनत बभ्रुवाहन तव कहई॥
दो० वड़े वड़े सरदार सव कर्णपुत्र औ तात।
जाहुडसी यह कहें सव मणिपति कहसख्यात॥
तव मन्त्री सवकहँ जो डसेऊ। हर्षित होय पतालहि धसेऊ॥
पञ्च पेड़ दाड़िम के अहहीं। ताहि देखि अवमोते कहहीं॥
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं। पांचो पेड़ आपुते जरहीं॥
जानि परीक्षा मृतके पावो। तोहमनुममिलिप्राणगँवावो॥
देखो जाय जरे तरु आहीं। तव रोदनकरिचलिपियपाहीं॥
हाहाकन्त पुकारत चली। संगहि उलुपी रोवत भली॥
दो० देखा जाये शीश भुइँ दोउ त्रिया लगि पावँ।
शीश लगाये हृदय महँ देह परी केहि ठावँ॥
रोदन करत कन्तको देखी। बहुतविलाप न जाय विशेखी॥

हाहा कंत किरात सँहरेहू। राहु वेधके द्रुपदी हरेहू॥
द्रोणहि हेतु द्रुपद ले धायो। नृप विराटके गऊ छोड़ायो॥
पावक शरण होत नरनाथा। वन अखंड जास्यो हरिसाथा॥
रुदन करे अरु बात संचारी। सुतमम शीशकाटिमहिडारी॥
माता कह सुनिये अवराई। दीजै कठिन चिता बनवाई॥
तुजिहों कन्त सङ्ग में प्राना। सुनि रोदन करि पुत्र बखाना॥
पितुको जानि अश्व लै गयऊ। मिलततात गारी मोहिं दयऊ॥
सो माता अब कहा न जाय। यहित्ते क्रोध हृदय मम आय॥
जन्मत हमें मातु बध करती। शोकसिंधु केहि कारण परती॥

दो॰ विभव विलास हुलास रस विन पारथ केहिकाज।
निश्चय अब पावक जरौं स्वामी संग लै साज॥

सेवक बोलि के राजा कहँ। रचो चिता जरनो हम चहँ॥
चित्रांगदा सुनत तब कहे। आपुहिं जरो हेतुका अहे॥
लै भूषण तौ चली प्रवेशा। प्रथम गये व्यालनके देशा॥
सुतल तलातल सब परमाना। देखे जाय लोक तहँ नाना॥
नागसुता सब धर्म्म सुशाला। देखत पहुँचे सप्त पताला॥
गंगधार देखन जब पाये। तब गंगा पहँ शीश नवाये॥
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा। पूजत हरहि और नहिं दूजा॥
नागसुता सब देखहिं नाना। मदनरूपलखिचित्तलोभाना॥
पूजि देवता तुर्त सिधाये। सुधा कुण्ड तब देखन पाये॥
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं। हरित वदन जे उपमा धरहीं॥
ताहि देखिके अग्र सिधारा। पहुँचे शेषनाग दरबारा॥
कर्कोटक जहँ मंत्री अहे। हरित वर्ण ते शोभित रहे॥

दो॰ भरी सभा महँ मंत्री दीन्ह आभरण डारि।
तुव दुहिता विधवा भई भाषे बात विचारि॥

सो कन्या मणिहेतु पठाई। जाते पार्थ जिये सुखदाई॥
सुनिके शेष अचंभो माना। सबै कथा जो पूछि प्रमाना॥

कैसे पार्थ तज्यो है प्राना। पुण्डरीक सुत कियो बखाना
धर्मराज यज्ञहि निर्माये। हयरक्षक अर्जुनहिं पठाये
बहुत देश जीतत जब आये। तब मणिपुर जोअश्वसिधाये
बभ्रूवाहन पार्थकुमारा। गह्यो अश्व जब सुने भुआरा
पिता जानि मिलने जब गये। तब पारथ बहु गारीदये
तात क्रुद्ध है रण अनुसारा। सब दलसहित पार्थको मारा
तुव कन्या सब विनय प्रमाना। है सरवर संजीवन जाना
मणीदेहु तौ बचिहै पारथ। नातो सब जो भये अकारथ
दो० शेष कहे विस्मय बदन धृतराष्ट्रक की बात।
सुन मंत्री आश्चर्य है पार्थ मृत्यु उत्पात॥
मणी देहु औ अमृत भाई। जाते पार्थ प्राण बचिजाई
सुनते सबै नाग रिस ताता। एकहि बदन कहे सब बाता
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ। पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ
पुरी पताल नाग जहँ सरई। कहो बात तब कत संचरई
यह मणि मृत्युलोक कहँजाई। औषध मंत्र होव कत राई
तेज हमार हीन विष होई। भय हमार मनिहै नहिं कोई
ताते मणी दीन्ह नहिं चही। सुनते शेषनाग तब कही
मणि दीजै कैहै यश मेरो। और काम तो होय घनेरो
मन्त्री कहे देव नाहिं राजा। मणी गये नाशै सब काजा
धनुष बांधिकै नागन खैहै। गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै
दो० शेष कहे मणि दीजिये पारथ हरिको दास।
आये दूत सुआश करि कैसे करहुँ निरास॥
ग्वाल बच्छ जब ब्रह्मा हरे। माया रूप कृष्ण सब करे
वर्ष एक विधि रहे भुलाये। सो पारथ के आय सहाये
मैं मणि देहौं जग यश रहे। सुनत बात मन्त्री अस कहे
जो विनाश नागन कुल कीजै। मृत्युलोक तौ मणि यह दीजै
मन्त्री हेतु कहा सब यही। राजा के मन विस्मय रही

अब हम कछू कहें नहिं बाता । अहिके भवन गये सख्याता ॥
पुण्डरीक के शेष बुझायो । हम ते कछू नहीं बनिआयो ॥
वहँ हैं कृष्ण जगत के तारण । तुम पताल आये केहिकारण ॥
शेषनाग तो कह मन दयऊ । आशा भंग दूत तव भयऊ ॥
भये निराश चले पुनि तहां । नर नारी मग जोहत जहां ॥

दो० रोदन करतीं त्रियासब विस्मय मन बहु राय ।
मग जोहत अभ्यन्तर दूत पहूंचे आय ॥

बातें कह्यो सबै समुझाई । पुरी पताल मणी नहिं पाई ॥
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हे । सुनत क्रोध बभ्रुबाहनकीन्हे ॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहई । मृत्यु भुवन को मणीनअहई ॥
मणि अमृत हतिसर्पहि लाऊं । बभ्रुवाहन तब नाम कहाऊं ॥
इन्द्र वरुण यम शङ्कर होई । जीतों सबहिं जो आवै कोई ॥
इतना कहि किय रणके साजा । लै दल चले युद्ध के काजा ॥
पहुंचे जबहिं शेष सुनि पाये । तब मन्त्री सन कहा बुलाये ॥
आये रणहि मंत्र का अहै । सुनत बात मंत्री तब कहै ॥
तुम तो जाव करन रण साजा । मारहुँ सबहिं शोच का राजा ॥
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये । नाग सैन्य तब अद्भुत आये ॥
रथ गज रथ परभे असवारा । विषम विषैल चले मणिआरा ॥

दो० दोय तीनसौ चार मुख विषधर वीर अपार ।
गहे अस्त्र आये सबै अगणित पार्थ कुमार ॥

सुत पारथ कुवँर रिसाना । सर्पन लागे अद्भुत बाना ॥
गहि अस्त्र विषम फुफकारा । मानुष जूझै होत सँहारा ॥
वह सांग मारयो असि बाना । मारा सर्प वीर बलवाना ॥
तके तेजहि दल अकुलाना । जूझादल तब बहुत रिसाना ॥
स एकदस दल बध भयऊ । बभ्रुबाहन नाम तब लयऊ ॥
धृतराष्ट्रक सो मारे बाना । क्रोधवन्त ह्वै काल समाना ॥
र मोरको अस्त्र चलायो । ऐसे बहुत नाग दिखलायो ॥

महा मारु तब भ्रकुटी भारी। मारेगये बहुत विषधारी॥
पुनि सब नागन कीन्ह दरेरा। दशो दिशा में नरदल घेरा॥
बभ्रुवाहन तब बहुत रिसाना। क्रोधित मारे मधुको बाना॥

दो० मधू प्रश्न करिकै तबै आरत पिलके बान।
चाम मांस औ हाड़ जे छेदे उभय प्रमान॥

ऐसी मारु भई घमसाना। तबहिंनागदल सब भहराना॥
मारन गये क्रोध करि बाना। मागे हेतु कहा सो माना॥
अवहूं मणी तुरंतहि दीजै। शेष कहा मन्त्री अंस कीजै॥
शेषनाग उर हर्षजु कीन्हा। मणि अमृत दोऊ ले दीन्हा॥
मिलन हेतु सो सब पग धरे। गृह में मन्त्री रोदन करे॥
बैरी पाण्डव दुष्ट हमारा। मणि अमृत ले करै विचारा॥
दुष्ट दुर्बुधी दो सुत अहैं। तब ते बात तात सन कहैं॥
हम हैं ऐसो पुत्र तुम्हारा। जिये पार्थ कैसे संसारा॥
आजु जाहु राजा सँग धाई। हम कछु तबहीं रचब उपाई॥

दो० शिर आनब मैं पार्थका रुंड रहै मैदान।
देखों कैसे सुधामणि करि देही जिवदान॥

यह कहि तात तुरन्त सिधाये। दूनों बन्धु मणीपुर धाये॥
भेद कोउ जाने नहिं पाये। पारथ को ले शीश सिधाये॥
कुंज विपिन महँ मलिके डारा। शीश तहीं तब प्रिया निहारा॥
रोदन करें प्रिया बहुरूपा। मणिपति मिले धायके भूपा॥
मणि अमृत दीजे तो हाथा। हर्षित चले मणीपुर साथा॥
शेष आदि सबही तव आये। रणभूमी जहँ पार्थ गिराये॥
देखा तहां शव दुइनारी। काहु हरो शिर करो गोहारी॥
राजा सुनते मूर्च्छित भयो। हे विधि कौन कर्म तें कियो॥
जबहीं राजा मूर्च्छित भयो। पुरी हस्तिना की सुधि कियो॥
पारथ सपना मातुहि दयऊ। कुन्ती हरिते बोलन लयऊ॥

दो० तेलकूपद महँ पार्थ अरु सबन करे अस्नान।

वढ़ि गर्दभन दखीतादिशि कीन्हा रैनिपयान ॥
ोवर्तन सुलाल है फूल। पारथ सपन देखि भय शूल ॥
ोदन करि कुन्ती संचारे। श्रीपति कीन्हा पारथ मारे ॥
ले भीम तव कुंति डेरानी। हरी गरुड़ पर आसनठानी ॥
ार्थ हेतु चले शारँगपानी। मणिपुर चले पहूंचे आनी ॥
ुखा रण इमशान समाना। तम्त्र एक देख भगवाना ॥
अगणित रानी रोदनकरहीं। कृष्णरु भीम तहां पगुधरहीं ॥
ेखा हरि पारथ के रुण्डा। रोदन करैं त्रिया विनमुण्डा ॥
कह तव हरिहिं कौन रणराना। को पारथ को कौन निदाना ॥
ा पारथ करि कहा बखानी। रोये भीम कुंति पटरानी ॥
तहीं भीम कहा अस्तवानी। ऐसो कौन वीर जग जानी ॥

दो० मेरे देखत अश्व हरि वधे पार्थ रणधीर।
जाहि कुशल सो प्राण लै ऐसो को यदुवीर ॥

भ्रुवाहन रोदनकरि कहे। हमतो पुत्र पार्थ कर अहे ॥
कर्म दोष हत्या हम पाये। तातहि अपने हाथ गिराये ॥
अमृत हरि पताल ते लाये। अभ्यंतर शिर कोउ दुराये ॥
ाते भीम गदा परिहारो। मेरो शीश चूर्ण करिडारो ॥
ं दर्शन श्री हरिके पाये। जगके भय मोमन नहिंआये ॥
श्रीपति हनें मृत्यु अब दीजे। मेरोपाप उऋण अब कीजे ॥
चेत्रांगद तव रोदन करी। कुन्तीके चरणन महँ परी ॥
ोकित कुन्ती परि मुर्च्छाई। शेष कहा सुनिये यदुराई ॥
पाण्डुवंश बूड़त अब कैसे। तुमहिं कियो रक्षा उपजैसे ॥
ुनिके हरि चिन्ता उर पागे। सवै लोग तव बोलन लागे ॥

दो० ब्रह्मचर्य्य जो पुण्य हम कीन्ह जगत मोमार।
तो आवे शिर पार्थ को चोर होउ संहार ॥

कहते तुरत शीश तव आये। मन्त्री दुष्ट नाश तव पाये ॥
पाय शीश कन्धा पर धारे। हरि मणिहाथ कहे संचारे ॥

उरमें पारथ मणि तव राखे । उठत पार्थहि श्रीपति भाखे ॥
लागे शीश उठो तव कैसे । चुम्बकमाहिं लोहलग जैसे ॥
प्रद्युमनवहमणिधरिजगवन्दन । रहुरहुकरि तव उठेअनन्दन ॥
कर्णपुत्र सुवेग कुमारा । यौवनाश्व अनुशल्यभुआरा ॥
हंसध्वज नीलध्वज राऊ । जागे सवै चेत तव पाऊ ॥
पारथ आदि सवै जव जागे । धाय कृष्णके चरणन लागे ॥
सेवक शेषनाग तो भयऊ । शेषअनन्द वहुतविधिभयऊ ॥

दो० नाना कौतुक वाद्य तव होत अनन्द अपार ।
पैदल सैना पार्थले सुनत नगर पगुधार ॥

वभ्रूवाहन लज्जा पाये । सभामाहिंनहिं मुख देखराये ॥
कहै पाप पितुको वध ऐसो । पाप याहि छूटै धों कैसो ॥
करवट लेऊँ दहौं तनु काशी । हिमप्रयाग जाइहौं प्रकाशी ॥
तवहुँ पापका छूटत अहै । सुनिकै भीम वोधि तव कहै ॥
सुनहू पुत्र शोच नहिं कीजै । हमजोकीन्हश्रवणसुनिलीजै ॥
भीष्मपितामह मैं संहारा । द्रोण गुरू अपने कर मारा ॥
हरि दर्शन सों पाप नशाना । तुव दर्शन पाये भगवाना ॥
पारथ गहे तवहिं सुत हाथा । गहि बैठारे अपने साथा ॥
पुरमहँ भई अनन्द वधाई । परमहर्ष माने यदुराई ॥

दो० पांच दिवस आनन्द वहु वीते मणिपुर देश ।
प्रात समय सव आयहू वोलत भये ऋषेश ॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई । चित्रांगदहि लीन्ह सँगलाई ॥
शेषसुता तो संग सुजाना । कुन्ती अरु मममातु प्रमाना ॥
अव तो जाहुँ हस्तिना देशहि । हमहस्तिनके संग विशेषहि ॥
सुनतै सवको सँगकरि लाये । भीम विदा तो हस्तिन पाये ॥
शेषनागको पूजा दीन्हे । शेषागमन पतालहि कीन्हे ॥
भीमसेन हस्तिनपुर गये । सवै वात तो कहवै लये ॥
विस्मय हर्षतु धर्म्मकुमारा । वैशम्पायन कथा सँचारा ॥

पांडु विजय यह पुण्य कहानी। बाढ़े धर्म्म पापकी हानी॥
तब जनमेजय पूछन लागे। कौनो कौन देश नृप आगे॥
कहा भयो कैसो रण भारी। वैशम्पायन कहो विचारी॥
दो॰ वैशम्पायन भाषेऊ रहस कथा सुनु राय।
मणिपुरते हय छूटेऊ चले वीर सँग धाय॥
इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषामणिपुरतेहय
छूटनोनामनवमोऽध्यायः ९॥
बभ्रुवाहन संग है पारथ। वैशम्पायन कहै यथारथ॥
चलत पंथ महँ कौतुक भायो। ताम्रध्वज हय देखन पायो॥
मोरध्वज को पुत्र जुझारा। अपनो अश्व करे रखवारा॥
मोरध्वजहि यज्ञ निर्माये। पारथ को हय देखन पाये॥
पारथ को हय गह सो पाये। पठै सचिव तौ अर्थ सुनाये॥
बहुत शुद्ध मन्त्री की वाता। ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता॥
हरे अश्व दलको संहारा। कहै कुँवर तौ काज हमारा॥
संवत मध्य यज्ञ तो करे। अष्टम यज्ञ अश्व तब हरे॥
हरे अश्व तौ हर्ष अपारा। तब पारथ दल परी पुकारा॥
हरयो अश्व तब खरब भारी। तब पारथ ते कह ब्रनवारी॥
दो॰ महाबली तो मोरध्वज सब राजा कर देत।
बभ्रुवाहन कह सत्य है हम कर देत सचेत॥
कह्यो कृष्ण नर्मद के तीरा। इनके तात यज्ञ करि धीरा॥
इनते जीति सके नहिं कोई। यद्यपि सेना साजे जोई॥
गंध पुष्प दल करी प्रमाना। अनुशल्या रह कन्धस्थाना॥
हंसध्वज नयनन महँ राखो। औरकाम अनिरुद्धहि भाखो॥
सात्यकि पुत्र पच्छ के माहा। मेघवर्णदल रक्षक ताहा॥
पारथ सुत औ कर्ण कुमारा। दोनों चोचन के रखवारा॥
ऐसे दल संयुत करवाये। मोरध्वज पहँ कृष्ण सिधाये॥
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहे। आपे युद्ध हेतु मन गहे॥

आपुहि युद्ध करिय मनलाई। मोको नाहीं भ्रम यदुराई॥
अर्द्धचन्द्र शर सैना करै। अगणित ताम्रध्वज संचरै॥
दो० सत्रह वाणन हाथ लै मारयो विरह अनंग।
तीनि वाण तो श्याम के मारयो ताकि अभंग॥
पांच वाण दारुक को मारे। घायलभयेन ज्योति सम्हारे।
रण महँ गर्जा सिंह समाना। मारा सात्यकि को तव वाना॥
कृतवर्म्महिं मारे नौ वाना। सहस वाण प्रद्युम्न समाना।
वाण सहस्र कामसुत ताना। अनिरुध क्रोधे काल समाना।
रह रह अव सह वाण हमारा। यह कहि वहुत वाण संचारा।
करिकै क्रोध वाण तव छाटे। मोरध्वज ता वीचहिं काटे॥
पांचवाण ताम्रध्वज मारा। मारे चारौ तुरंग तोपारा॥
व्याकुल भये क्रोध रण ठये। पारथ दल सब घायल भये॥
प्रद्युमन के रथ को तो तोरा। तव अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा॥
दो० तव दोनों वसुधालरे महा मारु तो ठान।
मल्लयुद्ध तव ठानऊ अनिरुध गिरे मैदान॥
औरे रथ ताम्रध्वज चढ़े। महामार युद्धहि मन बढ़े॥
हरि ते भाषे अनिरुध गिरे। तव देखत वृषकेतू फिरे॥
मारि हांक तौ वाण प्रहारा। ताम्रध्वज को रथ संचारा॥
जौने रथ ताम्रध्वज आवै। कर्णपुत्र सो मारि गिरावै॥
तवहीं क्रोध ताम्रध्वज भयो। काल समान वाण तो लयो॥
तेहिशर मूर्च्छित कर्णकुमारा। पांचवाण लो तेहि संचारा॥
ताते मूर्च्छित भो अनुशल्या। देखत वभ्रुवाहन तव चल्या॥
पांचवाण रहु रहु करि मारा। ताम्रध्वज रथ काटि पँवारा॥
यौवनाश्व पारथ सुत मारे। ताम्रध्वज सो काटि पँवारे॥
क्रोधित वाण छाड़ि तव दीन्हा। वभ्रुवाहनको मूर्च्छित कीन्हा॥
दो० रहो कृष्ण रणमाहिं अव सहो हमारो वान।
क्षत्री भागेउ देखते पारथ दल भहरान॥

सबै वीर देखत हैं ताहां। ताम्रकेतु डारत रण माहां॥
देखत पारथ वीर रिसाना। ताम्रध्वज कहँ मारेउ वाना॥
नवो वाण पग अश्वन मारे। और प्राण ते रथ संहारे॥
औरे रथहिं भये असवारा। नवो वाण पारथ कहँ मारा॥
और वाण ते रथ संहारा। औरे रथहिं भयो असवारा॥
तवहीं क्रोध करे वहु लीन्हा। वाण वृष्टि पारथपर कीन्हा॥
ते असदेखि सुचित तहँभयऊ। शंखध्वनि पारथतहँ कियऊ॥
ताम्रध्वज का रथ संहारा। औरे रथ चढ़ि श्यामकुमारा॥
क्रोधवन्त वाणन तव मारा। पारथ के सारथि संहारा॥
और वाण पारथ के लागे। मूर्च्छितभे पुनि पारथ जागे॥
महा मारु पारथ पर दीन्हे। एक सहस्र मारि रथ लीन्हे॥
दो० ताम्रध्वज को सबै दल पारथ शर भहरान।
तवहूं ताम्रध्वज वली छांड़ा नहिं मैदान॥
पारथ मारा वाण रिसाई। ताम्रध्वज रथ मारि गिराई॥
औरहि रथ पर भो असवारा। पारथ ऊपर वाण प्रहारा॥
पारथ के शर प्रवल समाना। क्षोहिणिदुइदलगिरे प्रमाना॥
अयुत वाण ताम्रध्वज मारा। पारथ क्रोधित वाण सँचारा॥
धनुष गुन काटे तव पारथ। दोय सहस मारे रथ सारथ॥
सातदिवसलग दिनअरुराती। ऐसी मारु भई बहु भांती॥
ताम्रध्वज शर हते रिसाई। पारथ को रथ चला उड़ाई॥
ऊपरते रथ भुवि करि थामा। हस्तकमल पर लीन्हेश्यामा॥
भुवि पर जव राखे यदुराई। तव ताम्रध्वज क्रुद्धविलखाई॥
भूमें में उड़ाय रथ डारा। राखे कर धरि नन्दकुमारा॥
दो० श्रीपति गदा चाव करि आकरि चरण प्रहार।
मूर्च्छा रहि पल एकला जागे राजकुमार॥
तीनि वाण हरिको तव मारा। कह हरि पार्थ करो संहारा॥
म तुम आजहि इनको मारं। यहिअन्तर श्रीकृष्ण विचारं॥

मारे रिस करि पारथ बाना। बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना॥
क्रोधवन्त है बाण चलाये। ताम्रध्वज गुन काटि गिराये॥
तब ताम्रध्वज कहे रिसाई। अब पारथ राख्यो यदुराई॥
जौनहिं रथ पर पारथ आये। सारथि भें तब रथहि बचाये॥
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना। पारथ दल तौ सब भहराना॥
हय गज रथ पैदल हैं जेते। वहि रण में बिचले सब तेते॥
दो० ताम्रध्वज को सबै दल क्रोधित है भगवान।
गहे चक्र तब चक्रधर महा मारु तब ठान॥
रथ ते वेगि उतरि कै धाये। तीनि लोक तब शङ्का पाये॥
डगमगानि भुवि सब संसारा। एक क्षोहिणी दल संहारा॥
तब सुचित्र बहुघातें करे। आय धाय श्रीकृष्णहि धरे॥
दहिने हाथ गहे तब धाये। बायें कर पद शीश चढ़ाये॥
पारथ जाना मिले प्रमाना। ताम्रध्वजहिं क्रोध तब माना॥
वाम चरण पारथ कहँ मारा। हरि पर गिरे सुचित्रकुमारा॥
हरि अर्जुन तब मूर्छित भये। लेकर अश्व चलन मन दये॥
हर्षिगात अपने पुर चले। दूनौ अश्व संग हैं भले॥
मोरध्वज तब देखन पाये। दूजो अश्व कहां ते लाये॥
दो० ताम्रध्वज औ मंत्रि ने भाषे सब विरतन्त।
धर्मराज कर अश्व है रक्षक कमलाकन्त॥
रक्षक पारथ श्री भगवाना। सबदल मोहित कियमैदाना॥
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहे। धृक धृक सुत तू मेरा अहे॥
हरि को तजे अश्व लै आये। धृकजीवन तोहिं गुरुपदाये॥
बहुप्रकार ते डाटन लागे। इत पारथ हरि मूर्छा जागे॥
बभ्रुवाहन आदि सरदारा। चेतन भये सबै विस्तारा॥
पारथ कहे कहां यदुराई। अश्वहि लिये कहां सो जाई॥
हमहुं को चलिये लै तहां। सुनी बात तब श्रीपति कहा॥
रत्नपुरी मोरध्वज राऊ। वह लै अश्व गयो परमाऊ॥

परम बली है भक्त हमारा । माया कै कीजै संचारा ॥
हम द्विज हम तुम हो बालक । यहिविधिचलौकहैंगोपालक ॥
दो॰ नृप का सत्त देखाइहौं तुम को पारथ वीर ।
॥ बाल वृद्ध माया करी चलो नृपति के तीर ॥
सैन राखि के दउ जन आये । रत्नपुरी निशि माहिं सिधाये ॥
नर नारी कौतुक लख नाना । प्रातहोत नृप पहँलो आना ॥
यज्ञशाल मो राजा अहे । दूनो अश्वहि देखत रहे ॥
जाय बिप्र जब आशिष दयो । तब राजा यह बोलत भयो ॥
बिन प्रणामतुम आशिषदयऊ । मोको महापाप द्विज भयऊ ॥
द्विज कह कछु पाप नहिं राजा । याचक द्विजकी है यहकाजा ॥
करि प्रणाम तब राजा कहे । कहो बिप्र मन कामन कहे ॥
द्विजन कहो मध्यपुर ग्रामहि । कृष्णशर्म्मा है मेरो नामहि ॥
अपने सुत को व्याह बनाये । पुत्रबधू ले तुम पहँ आये ॥
मार्ग माहिं घन कानन अहे । तहां सिंह मेरो सुत गहे ॥
दो॰ मैं बिलाप बहु कीन्ह तब सिंह न छांडे पुत्र ।
॥ हम न गहे शिराही गहे खान चहत ममपुत्र ॥
सिंह कहे आयू जेहि अहें । ताको हम नाहीं द्विज गहें ॥
जो चाहत हो पुत्र बचावा । तौ दीजे जो मम मन भावा ॥
एक वस्तु मांगा हम पासा । जाते हम आये करि आसा ॥
मोरध्वज राजा तब कहे । मेरे देश सिंह नहिं अहे ॥
तब राजा पूछन यह लागे । तुम ते सिंह कहो का माँगे ॥
जो माँगे सो हमें सुनाओ । जामें तुम अपनोसुत पाओ ॥
मिथ्या होय न बात हमारी । तब द्विज यह वाणी संचारी ॥
मोरध्वज को अर्द्ध शरीर । न्वहिंदे सुतकहँ ले द्विजवीर ॥
तब हम कहा सिंह सुनु वीरा । मोहित नृपकत देत शरीरा ॥
तबहिं सिंह कह सत जो है है । दी है देह कछु ना कहि है ॥
दो॰ ताते नृप मैं आयऊं अपने सुत की आस ।

॥ धर्म्म राज साहस सुनो सो तो तुम्हरे पास ॥
मोरध्वज हर्षित ह्वै कहो। लेहु शरीर विप्र जो चहो॥
कछु नहिं दुःख करो संचारा। यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा॥
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते। हाहा शब्द पुकारत तेते॥
काल स्वरूप विप्र इक आवा। नगरनिवासिन बहुदुखपावा॥
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो। राजा तहां जाय भो ठाढ़ो॥
करि अस्नान तुलसिदल लये। कृष्णध्यानमहँअतिमनदये॥
तबहिं म्लेच्छ राजा ते कहे। करवत शिर देखौ जो गहे॥
पशु पक्षी रोवत पुर भारी। तब रानी गइ कहै विचारी॥
कुमुदावती तु रानी कहई। अर्द्ध अंग स्त्री द्विज अहई॥
दो० हर्ष गात द्विज भाषेऊ सिंह कहा समुभाय।
वाम अंग जनि लायऊ दहिना लाओ जाय॥
वाम अंग पतिव्रता आहै। ताते सिंह तुम्हें नहिं चाहै॥
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये। करिप्रणामतौद्विजहिंसुनाये॥
पितु को अंग पुत्र सो अहै। मेरो तनु लीजै यह कहै॥
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई। तबहिं विप्रयहवचनसुनाई॥
सिंहहिं कहा और नहिं काजा। लाओ तनु मोरध्वज राजा॥
स्त्री पुरुष चीरि हैं देहा। विस्मयनाहिं आनन्दसनेहा॥
मंगल करिकै देह चिराओ। दहिने अंग विप्र लै आवो॥
स्त्री पुरुष हर्ष तब करी। करवतलै राजाहिं शिर धरी॥
इन्द्र आदि देवन गण जेते। नृप सत देखन आये तेते॥
नगर लोग सब देखहिं नाना। स्त्री पुरुष तु हर्ष निदाना॥
दो० उलटे आरा नयन कर अर्द्ध शीश गयो चीर।
वाम नैन मोरध्वजहि तुर्त चलो तब नीर॥
देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं। कादर दान लेत द्विजनाहीं॥
देत शरीर तु रोदन करें। याहि दान हम कैसे धरें॥
बरु पुत्रही सिंह लै खाऊ। यहकहि चलेतुर्त द्विजराऊ॥

संगाहिपारथ करिकै चलेऊ। लोग सबै तहँ देखत भयऊ॥
तब रानी करवती उतारा। गहे दावि शिर हाथ भुवारा॥
कहहीं वात नाथ सुनि लीजै। विप्र काहि सन्तुष्ट करीजै॥
तजे शरीर विमुख द्विज जाई। अहो कन्त द्विज लेहु मनाई॥
तव राजा कर शिर धरि कहे। पाछे वात विप्र सों कहे॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै। पाछे आप गमन जो कीजै॥
करवत ते नहिं दुःख हमारे। वहुतदुःखजो विमुखसिधारे॥
दो० वाम अंग रोदन करे हम निष्फल संसार।
दक्षिण अंगहि हर्ष वहु मैं द्विज काज सँवार॥
सुनतहि वात हर्ष द्विज पाये। हर्षित राजहिं रूप दिखाये॥
चतुर्भुजा कै दर्शन दीन्हा। माँग माँग वर वोले लीन्हा॥
देशरीर संतुष्ट किय मोहीं। जगमें भक्त देखियत तोहीं॥
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो। सवदलजीतिलियोजिन मेरो॥
तव राजा अस्तुति वहु कहे। पाछे वात विप्र सों कहे॥
माथे हाथ मृतक को दीन्हा। सर्व कलेश नाशतव कीन्हा॥
राजा कह विश्वम्भर देवा। माँगहु वर सूनो हरि भेवा॥
जैस परीक्षा हमरी लयऊ। स्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ॥
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा। ऐसनयाचहु त्यहि जगतारा॥
यहकहिधनअरु सम्पतिदयऊ। दूनहु अश्व आपसँगलयऊ॥
दो० यह भाषे जगहेतु कहँ पाय दर्श भगवान।
करे यज्ञ हरि दर्श त्यहि होय सदा कल्यान॥
अश्वदल नृप संगले चले मोरध्वज राव।
भक्त परीक्षा लेन को तो हरि कौन उपाव॥
इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधयज्ञभाषाकृतमोरध्वजराजा
दर्शनपावनोनामदशमोऽध्यायः १०॥
इतो हय ले पारथ चले। वैशम्पायन वोलत भले॥
दल समग्र चलि आयो तहां। सरस्वति पुरी नगर है जहां॥

वीर भानु तहँ नाम नरेशा। दोनों अश्व करें परवेशा।
नगर के लोग धर्म्म अनुरूपा। आये अश्व सुन्यो तब भूपा।
पंच वीर को आज्ञा दयऊ। तबहिं अश्व नृपतिपहँगयऊ।
सुरभ सुलभअरु नीलअमाना। कुवलयबलपांचो बलवाना।
पांच वीर रण मों गह गहे। तब मणिपुरपति रहुरहुकहे।
शंखनाद तब वीरन कीन्हा। धनुषबाण हाथे सब लीन्हा।
वर्षन लगी बाण की धारा। दोउ दल जूझे वीरअपारा
रथ गज अश्वरु पैदल लाखन। जूझन लगे सकै को भाषन।

दो० यहि अन्तर यम आयकै सैना वधे हजार।
यह नृप यम जो माता भाषे नन्द कुमार॥

ताते सैना इह बध कीन्हा। तब पारथ पूछे कह लीन्हा।
यमको कत नृप कन्या दीन्हा। सुनते कृष्ण कहे तब लीन्हा।
राजाके मालिन भो वारी। योग स्वयम्बर भूप विचारी।
राजा पूछहि कन्या कहो। मांगहुवर जो मनमें चहो।
देव नाग अरु मनुज सुरारी। जोवर चाहो कहो कुँवारी।
कन्या कहै तात ते बाता। यमराजा को चाहत ताता।
कालहि पाय त्रिया जो मारे। अन्त जन्म तो गृह पगुढारे।
तबै कन्त दूसर तो होई। महापाप ताते है सोई।
ताते प्रथमहि यम को वरो। एक पुरुष दूसर परिहरो।
नृपकन्या नृपपर मन साधे। निशिवासर यमको आराधे।

दो० नारद यह तो जानिकै यमपुरगो हरपाय।
कन्याका वृत्तान्त सब कहा धर्म्म सन जाय॥

पांच पुण्य जानो सम राजा। मालिनिसुधिविसरेकेहिकाजा।
धर्म्मवन्त कन्या सो अहे। सारस्वतपुर नृपको रहे।
एकव्रत सो मनमहँ धरे। यम राजा को चाहत बरे।
जाय करो अब ताको व्याहा। तब यम भाष्यो नारदमाहा।
आपु [illegible] हम पाछे एहैं। वैशाख मास मों हमहूँ जैहैं।

शुक्लपक्ष मों ऐहों सही। नारद सुना चले तव जही॥
सारस्वत नगरे तव गयऊ। सवै वात राजा सों कहेऊ॥
कहिके नारद सुरपुर गयो। शुक्लपक्ष वैशाख तु भयो॥
धर्मराज सव वीर वोलाये। सवै लोग तव तुरतहिंआये॥
दुइ आहें सवके सरदारा। शुक्र प्रमेह रोग आपारा॥
दो० सवन रोग सों यम कहे चलो संग वरिआत।
ब्याह हमारो होत है सारस्वत पुर जात॥
तव सव रोग कहें यह वाता। पुण्य धर्म्म है क्वां वहुताता॥
तहां हमार नहीं संचारा। तुरत तेज वल जाव हमारा॥
यमहि कहा पापी नर जेते। रूप कुरूप देखिहैं तेते॥
धर्मवान जेते नर अहई। रूप अनूप देखिहैं कहई॥
जाको पीड़ा कर वहु भाई। ताको भेद कहो समुझाई॥
ब्रह्मवधे कर पातक जाही। ब्रह्म अंश क्षयी गहु ताही॥
गोदावरि गौतम इक मासा। परशे क्षयी रोगको नासा॥
देव द्रव्य हरवरी सतावै। तासु शरीर विशूचिक आवै॥
ताको नाम खण्ड है भाई। अजयाकंचन मुखनाहिं जाई॥
दो० कंचन भूषण अन्नया दान दिये ते जाय।
गर्भपातके पाप ते गहत जलन्धर आय॥
एकोत्तर सो तुला जो करई। छत्र छत्र दीन्हे सो हरई॥
रस अरु द्रव्य जो चोरी करै। ताको व्याधि अरुचित धरै॥
कंचन दान करे ते जाय। गावै देहि कहे यमराय॥
वेश्या संग हरे गुरुनारी। सन्निपात पीडा तो धारी॥
पङ्क उधारन को धन हरे। यमराजा को चाहत वरे॥
श्रुति दे भूषण भेटत दाना। दूनहु व्याधि तुरन्त पराना॥
भूमिदान दीन्हे सो जाई। पुनिद्विजभोजन जायछोडाई॥
अरुचक तो ताही ने धरे। लाखन द्विज भोजन परिहरे॥
आशा भङ्ग पंथ वटपारी। शूलव्याधि तेहि होती भारी॥

॥ दो० पक्षी कोटिन नाशकर या बेंचत जो होय।
॥ हेमयज्ञ वैष्णव द्विजहिं दान दिये क्षय होय ॥
वरदनि कादर हुचका होय। लक्ष होम महँ नाशो सोय
साजुयोग जो दारे होई। चुगुल रोग पावत है सोई
तेलकुण्ड दाना एक मासा। तवसो व्याधि होतिहै नासा
निन्दा सन्त रोग मुख पावै। लक्ष दान दै ताहि भगावै
परनारी देखत जो धावहि। नैन रोगते बहु दुख पावहि
गुरु हतनेको ध्यान जो धरही। नैन रोग तुरतहि परिहरही
अंश छोड़ावै घेघा होई। पंच रतन दान खा सोई
देखत दान सूम मुरझाही। मृगी रोग होता है ताही
कृष्ण धेनु कंचन कर दाना। मृगी रोग जाता क्षय माना।
॥ दो० यज्ञ स्थित जो ढाहतनु डारत बन्दी माहि।
॥ शिवपूजै अतिहेतु सो तव सो व्याधिनशाहि ॥
यही प्रकार और बहुतेरे। नाना व्याधि पुरुष तनुघेरे॥
यहि प्रकार ते सबहि बुझाये। तव सब सारस्वत पुर आये॥
राजा हर्ष गात कै कहै। कन्यादान देन तौ चहै॥
मेरो रिपु सों करहु लराई। यह बाचा तो कीन्ह्यो राई॥
तव कन्या दीन्हो यह दाना। पारथ पाहँ कहैं भगवाना॥
तै बाचा ते रण हरि लाये। ताते युद्ध हेतुको धाये॥
आप सबै रणको मन दीजै। युद्ध जीति अश्वहिको लीजै॥
पारथ के रथ पर हरि आये। युद्ध हेतु सबही मन लाये॥
बीर वर्म्म राजा तव आये। पारथ सों तव बात सुनाये॥
करो युद्ध पारथ मन लाई। महा मारु कैहै प्रभुताई॥
॥ दो० जो सेना सरदार सब मैं जानत बल तासु।
॥ सुनीबात क्रोधित वदन पारथ वचन प्रकासु॥
छांड़ो अश्व कहैं हम राजा। ना तौ महामार अब साजा॥
बर्म्मा बीर तो बोलन लागे। अश्व कहां अब पैहो मांगे॥

कुश्रो अश्वले मख में करौं। तुम्हें समेत कृष्ण कहँ धरौं॥
मोरे रण लायक नहिं पारथ। पारथ सुनौ क्रोध पुरुषारथ॥
मारे पारथ वाण अपारा। वर्म्मा वीर काटि शर डारा॥
तब सो वाण पार्थ कहँ मारा। साठि वाण तौ नन्दकुमारा॥
पांच वाण मारे ध्वजराऊ। लग्यो वाण तव मूर्च्छा पाऊ॥
तब राजा के सारथि आये। तव पारथ वहु वाण चलाये॥
पारथ शर तौ वर्षत नाना। वीर वर्म्म मारे वहु वाना॥
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये। वाण वुन्द ते वर्षा लाये॥
दो० पारथ मारा वाण तव कोटि वाण संजाय।
सात वाण तव राजहीं मारे पार्थ रिसाय॥
नृप करि क्रोध साठि शरमारा। सो शर लागे नन्दकुमारा॥
चारि वाण अश्वहि पर दयऊ। तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ॥
वीरवर्म तब कह यह वाता। मोरे जयकर पाव सख्याता॥
भीषम द्रोण कर्ण संहारा। ते शर काम न आव तुम्हारा॥
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि। नृपरथ तुम लैजाहु अकाशहि॥
घोर सिन्धु रथ डारौ जाई। सुना हनू तव चले रिसाई॥
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ। वीरवर्म्म वहुवल तव कियऊ॥
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ। लै रथ अंतरिक्ष पुनि कहेऊ॥
जहाँ स्वर्ग्ग माहीं हनुमन्ता। पारथ रथ ले गयो तुरन्ता॥
दो० हनूमान सन भाषेऊ लीजै रथहि हमार।
हम लै आये पार्थ कहँ सहितै नन्दकुमार॥
कहिये रथ लै डारौं कहाँ। क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहाँ॥
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा। सुयशतुम्हार जगतमां वाजा॥
साधु भक्त औ वली कहाये। वीरवर्म्म तो वात चलाये॥
मैं तो नाम सुना है तोरा। लै रथ जान सकै नहिं मोरा॥
यह कह एक मुष्टिका दई। हनूमान के पीरा भई॥
हरि राजा पारथ हनुमाना। तव सव वसुधा आयप्रमाना॥

देखत श्रीपति हाथ प्रहारे ॥ वीरवर्म्म मूर्छित बिकारे
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ । तुर्त कृष्ण के आगे गयऊ ॥
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी । आयों शरणे कृष्ण तिहारी ॥
तुव दर्शन करि पातक भागे । प्रेम भक्ति हिरदय महँ जागे ॥
।दो० तव राजा अस्तुति करी धनुषबाण दिय डार ।
॥ करि प्रणाम घोड़ा लिये आगे किये भुवार ॥
पारथ सन भाष्यो यदुराई । इनते जय काहू नहिं पाई ॥
वीरवर्म को जीतन पायो । मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो ॥
पारथ कह जो तुम्हें मनायो । तासों जगमा जय को पायो ॥
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा । भांति भांतिके बाजन बाजा ॥
सब दल लैके नग्रहि गये । दिन इक छै बीती जब गये ॥
देश भूमि तब आगे कीन्हा । अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा ॥
शत सहस्र हाथी तो दये । ओरहु अश्व अनेकन लये ॥
छूट अश्व तो संग नरेशा । भरमत फिरा अनेकन देशा ॥
नदी एक महँ पैठ तुरंगा । तटहीं तट पारथ दलसंगा ॥
पारथ भये अश्व तौ जाई । तबै सर्व दल पार सिधाई ॥
॥दो० परमानन्दित सर्व्व दल पारथ हयके संग ।
॥ वैशम्पायन मह कहत पारथ परम अनंग ॥
॥ चले अश्वके संग सब नाना बीर नरेश ।
आम देश सब जीतिके चन्द्रहासके देश ॥
इतिश्रीमहाभारतअश्वमेधपर्वकृतवीरवर्म्माकोजीतनो
॥ नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥
बैशम्पायन राजहि कहा । चलो अश्व तब आगे कहा ॥
चन्द्रहास राजा जहँ रहे । तहांअश्वचलि भो मुनिकहे ॥
कित गो अश्व शोच सब पाये । यहिअन्तर नारदमुनि आये ॥
पारथ पाहँ कह्यो समुझाई । कुंतलपुरहि अश्व तब जाई ॥
चन्द्रहास जो कहाये । बड़ो कष्ट राजा तब पाये ॥

दुष्टबुद्धि वैरी तेहि अहे। रक्षक सदा लक्ष्मिपति रहे॥
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये। मही प्रसाद राज पद पाये॥
तब पारथ कह विनती लाई। चन्द्रहास गुण कहो गुसाँई॥
नारद कहा भल समय सुहाये। कथा सुने का हेतु सुनाये॥
अश्व कहां खोये मन लाई। तब पारथ बोले विहँसाई॥
दो॰ कुरु पाण्डवके युद्ध महँ एक पलकके माहि।
गीता कृष्ण बखानेऊ सुना ज्ञान हम ताहि॥
सुनत कथा नारद तब कहहीं। कदिदलदेश धर्म्म नृपरहहीं॥
ताके गेह जन्म इन लये। जन्मत तात मातु मरिगये॥
लैकै धाइ कुँडलपुर आई। वर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई॥
तीनि वर्षको बालक अहे। पट अंगुलि बायांपद रहे॥
ताको लोग दया करि राखें। लक्षण राज सबै तो भाखें॥
दुष्टबुद्धि मंत्री गृह माहीं। एक दिना सो बालक जाहीं॥
जादिन द्विज उन भोजनदयो। सोदिन बालक तहँवां गयो॥
रूप देखि मंत्री सुख पायो। करि बहु प्रीति अग्र बैठायो॥
द्विज मुनि तो कहते यह बाता। बालक नृप होवो सत्याता॥
राजा ह्वैहे आशिष दयो। दुष्टबुद्धि तब चिंतत भयो॥
दो॰ तब विप्रन को विदा करि मनमां करे बिचार।
मंदन अमल दो पुत्र मम पै यह होत भुवार॥
यह बालक राजा मुनि कहे। ताते मन बहु चिन्ता गहे॥
मुनिके वाक्य झूठ नहिं सही। बोलि चण्डालहिं मंत्री कही॥
बालक हति चिह्नहि ले आवो। धन सम्पति मोते बहु पावो॥
ले चण्डाल बाल बन गये। दवि पावत शिशुमुखमांदये॥
गोली खेले सुख मो रहे। तब चण्डाल हतन को चहे॥
हरि माया मोह्यो चंडारा। पूर्व पाप कहँ जनु अवतार॥
बाल बधे अघ का गति होई। बालक पद नारी जनि ...ई॥
बाम पाद पट अंगुलि देखी। काटिलीन तो देखि ...खी॥

दुष्टबुद्धिको दीन्ह्यो जाई। धन सम्पति चंडालहि पाई॥
भई झूठ विप्रन मुख बानी। बालक हते होति रजधानी॥
दो० दुष्टबुद्धि आनन्दित बालक वन महँ रोय।
पशु पक्षी वन जन्तु सब करि अनुहार सुजोय॥
सो वन गयो शिकारहि राजा। नाम कुलिंद भक्त रघुराजा॥
ते बालक देखन को पाये। हर्ष गात लै गोद चढ़ाये॥
दुष्टबुद्धिके सेवक सोई। पाले शिशू हर्ष मन होई॥
सन्नावती तासु त्रिय आहीं। बालक लेकर दीन्ह्यो ताहीं॥
पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो। गुरुको सौंपि पढ़े कहँ दीन्ह्यो॥
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे। कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे॥
गुरु तब जाय कुलिंदहि कहे। तुव सुत बाउर हरि हरि कहे॥
औरहु कछू बात नहिं अहई। तब कुलिंद गुरुसों अस कहई॥
सात वर्ष महँ विद्या देहौ। यज्ञरु जाप पवित्र सिखैहौ॥
दो० जादिन ते सुख पायऊ राजा शिशु धन वृद्धि।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु सर्वतासुकर सिद्धि॥
सात वर्ष मों यज्ञ कराये। पुत्रहिं तबै पढ़न बैठाये॥
वेद पुराण शास्त्र तो पाये। क्षत्रीव्रत सब अस्त्र सिखाये॥
पारथ मनहिं हर्ष उपराजू। ऐसेहि भक्तहि देखन आजू॥
पन्द्रह वर्ष के भये कुमारा। दुर्ग विजय कीन्हा संचारा॥
बहुतक देश जीति धन लावै। अपने देश अनेक बसावै॥
द्विजवैष्णव तौ अगणित राखे। ग्राम भूमि दे प्रीतिहि भाखे॥
ग्राम ग्राम महँ देवल दीन्हा। कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा॥
घर घर सब जपैं भगवाना। श्रवण करैं सब वेद पुराना॥
सबही व्रत एकादशि अहहीं। परमानन्द प्रजा सब रहहीं॥
दुर्ग विजय करि रह पन चारे। आरति हर्षित मातु उतारे॥
दो० [illegible] देखि सब मोहित यह मँ गयो कुमार।
कह [illegible] पुरी आदि नृप हमार॥

तिन्ह कहँ वस्तु पठाये कंचन। बारह सेर सीप गृह रंचन।
सेर प्रष्ठ रानी सचिवन ते। सो सुत जाहु सेवकहिं चेते।
पत्री लिखि दीना ता हाथा। औ कंचन दीन्हा है साथा।
गयो पत्थ में पहुँचे ताहा। जादिन व्रत एकादशि आहा।
करि अस्नान ध्यान मन दये। तब मंत्री के गृह को गये।
भीतर वस्त्र देखि संचारा। मंत्री कुशल पूछि विस्तारा।
कहे कुशल तो सबै सँदेशा। और वस्तु तब दीन्ह प्रवेशा।
पत्री पढ़ी सुनी सब बीता। दुर्ग विजय देवस सख्याता॥
तब भोजन कहँ मन्त्री कहै। सब परकार भवन मम अहै॥
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं। एकादशी अन्न ना खाहीं॥
॥ दो० प्रातकालहै द्वादशी पारण कीन्हों जानि।
॥ विदा होन जब लागेउ मंत्री कहा बखानि॥
चन्दनपुर हम देखन जाई। विदा मांगि नृपते चलिआई॥
राज्यकार्य्य मदनहि जो दीन्हा। चन्दनपुर मंत्री शुभ कीन्हा॥
जाय दीख चन्दनपुर थाना। वही गाम कीयो है आना॥
देखत मनमहँ चिन्ता भयो। तब कुलिंद के गृहको गयो॥
बहु आनन्द कुलिंदहि करे। तब मंत्री पूछन मन धरे॥
जब तुम्हरे गृह बालक भयो। मोहिं खबरि काहू नहिं दयो॥
कहे कुलिंद नहीं त्रिय जाये। कानन विचरत बालक पाये॥
छठईं अँगुरी काटी कोई। बालक व्याकुल बनमहँ रोई॥
हम लै आये पाले आनी। मंत्री सुनत बुद्धि हेरानी॥
जाना निश्चय बालक जो है। चाण्डाल नहिं मारा सो है॥
॥ दो० अस्त्र शेल सम लागई मन आनन्द न पाव।
॥ केहिविधि बालक मारिये कार्यो मंत्रहिगाव॥
करिहों झूठ मुनिन की बानी। चन्द्रहास ते कहा बखानी॥
कागज मसी कलम लै आओ। लैपत्री तुम मम गृह जाओ॥
चन्द्रहास आनी के दयऊ। मन में मंत्री शोचत भयऊ॥

हि कंप देखि मोहित भयो भारी। वही ठांवबिलमी घरि चारी॥
तिनन्ह सखिहि किये प्रणाम बनाई। हे प्रिय जनु विधिदेहुजगाई॥
दो॰ पुरुष निकट गइ नारि तब देखतिरूप अघाय।
पिता हाथ की पत्रिका तासु पागमहँ पाय॥
खोलिकै पाती पढ़े। महाशोच तो मनमहँ बढ़े॥
आवै यहिको तुरतहिं मारें। तब का बन जब सबै बिगारें॥
रूप देखि भइ मोहित नारी। मनमा तब इक युक्तिविचारी॥
लिख कनिष्ठ ते कज्जललीन्हा। जहँविप तहँ विपयाके दीन्हा॥
रवविधि तो छाप बनाई। बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई॥
लिसखीन्हमहँमिलिसोजाई। नाना कौतुक सखिनबनाई॥
देखि तब रही लोभाई। लागी कौतुक करें सोहाई॥
कन्या अपने गृह गई। सांझ पहर की बेरा भई॥
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै। खावै पान मगन मन होवै॥
जारूढ़ कै चलते भये। मंत्री गृह अभ्यन्तर गये॥
दो॰ द्वार द्वार प्रतिहार तो बैठे द्वार महँ जात।
सप्तम द्वारे शूर हैं अष्ट द्वार सख्यात॥
तेन तो जायमदन सों कहा। चन्द्रहास द्वारेमहँ रहा॥
दि पुराण सुनै तो आहा। सुनत तुरंत चले उठि ताहा॥
हर आय भेट हियलाई। भीतर को सो गयो लिवाई॥
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा। सबै कुशल कहवे तब लीन्हा॥
मूढ़ पत्र तब तात पठाये। यह पत्री पढ़ि बूझहुजाये॥
पढ़ने मदन सभामहँ लागे। सोसति मदनलिखाहै आगे॥
यही हेतु पत्री लिखि दये। चन्द्रहास गति सुन्दर लये॥
शील पराक्रम पण्डित सोई। हम सम्पति कर ठाकुर होई॥
कछू विचार हृदय नहिं कीजे। तुरतहिं विपयाव्याहिसोदीजे॥
रण कार्य सिद्धि तब होई। मदन पढ़े चिट्ठी महँ सोई॥
दो॰ हर्षित मदन हृदय महँ तुर्त ज्योतिपी लाय।

॥ सर्व सुयोग सुमंगल लग्न विवाह धराय ॥
विषया तहां मनाव भवानी । चन्द्रहास वरदे कल्यानी
तृतिया व्रत करिहों मैं तोरी । तुम जो आश पुजावहु मोरी
अन्तःपुरे मदन तब गये । सब वृत्तान्त मातुपहँ कहे
शोधन समय व्याह परमात्मा । चन्द्रहासवर विषया वासा
विषया ते सवसखिन सुनाई । सुनते विषया लज्जा पाई
लग्न भये तब बाजन बाजे । मंगलचार सखी गण साजे
चन्द्रहास को तव अन्हवाये । विषया को शृङ्गार बनाये
विविध प्रकार लग्न धरवाये । ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये
गोत्र पूंछि कह तब मन लाई । चन्द्रहास तब बात सुनाई
माता पिता गोत्र हरि अहे । ले कुलिंद पारावति कहे
॥ दो० शाखोच्चार उचारि कै वेद जो विविध प्रमान ।
॥ शास्त्रधर्म कुलधर्म मत मदन देत हैं दान ॥
कन्यादान मदन तब कीन्हा । गज तुरंग मणि मुक्ता दीन्ह
रजत सुवर्ण बहुत तेहि दीन्हा । सब भण्डार शून्य तो कीन्हा
होम करी गँठिबंधन भये । भाँवरि सात अग्नि पर दये
दक्षिण ब्राह्मण सबहिन पाये । यहि प्रकार ते व्याह कराये
सब द्विज और पुरोहित आये । दान देय सब विदा कराये
मँगलाचार युवति जन गाये । बहुत गुणीजन मँगता आये
विप देवायके सारन चहें । हरि सहाय तो नारद कहें
केवल हरिहि सदा मन लाये । विप देते विषयासो पाये
परमभक्त प्रभु कपट न करे । एक पिता भक्ती मन धरे
ताहि सदा हरि रक्षक अहें । काह करे विप नारद कहें
॥ दो० मंगलदायक यही प्रभु नारद कहा बखानि ।
॥ वैशम्पायन भाषेऊ सुनत दुःख की हानि ॥
दुष्टबुद्धि चन्दनपुर माहां । तब कुलिंद को पाये ताहां
[illegible]

बहु प्रकार ते कष्ट दिखावे । यहिविधिसवसों धनमँगवावे ।
मठ देवालय देखत जरई । महाकष्ट कालिंदहि करई ।
लूटि मारि लीन्हा जब देशा । तब कुलिन्द को भई अँदेशा ।
मंत्री महाहर्ष मन भयऊ । जाना शत्रु नाशि अवगयऊ ।
इकदिन वसे दुजे दिन गये । तीजे अंत भोर जब भये ॥
हर्पित है चण्डोल सवारा । तुरत आपने पुर पगुधारा ॥
सौ तीनसो कहार सोहाये । त्यहिचंडोलसमपवनचलाये ॥
मारग माहिं सर्प एक रहे । विपया खाकी बातें कहे ॥
दो० मूँहकलश मो हम हते देखा विषया व्याह ।
चूझा तहिं सो मन्त्रिने चला हर्ष मनमाह ॥
बाद्य शब्द सुनियो मनभंगा । विधना कीन्ह छत्र को भंगा ॥
गृहके निकट पियादे भये । जहँ मंगत जन तहँवाँ गये ॥
व्याह अर्थ सवही तहँ कहे । मन्त्री सुनत क्रोध उर दहे ॥
भापे चन्द्रहास है जाना । मंगत जन भापे परमाना ॥
आगे जात द्विजन को देखा । आशिर्वाद देत द्विज पेखा ॥
चन्द्रहास वर भाग्यन पाये । सुनतहिं मन्त्री मारन धाये ॥
गाठि गहे बहु क्रोधित पागे । देखत सवे विप्र तव भागे ॥
यहु यज्ञ में सूत्र उतारी । काहू कुश पंती अण्डारी ॥
भागे द्विज गृह मंत्री आये । चित्र विचित्रहिं देखन पाये ॥
स्त्री धूप दीप लै आई । तब मन्त्री पूछा मनलाई ॥
दो० कहा दये कह पायऊ मंगल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊ स्त्री कहे बुभाय ॥
पूछे काह तासु कह दीन्हा । स्त्री सवे निवेदन कीन्हा ॥
धन रतनन दे कन्या दीन्हा । सुनतक्रोध मंत्री तब कीन्हा ॥
क्रोधवंत मंत्री चलि आगे । वर कन्या तो चरणन लागे ॥
क्रोधित नैन सो देखत अहे । सत्य असत्य न एको कहे ॥
आगे वैठिके मदन वोलाये । धिकधिककरितबबातसुनाये ॥

पत्री पढ़िके काम न कीन्हा। मदन जोरिकर बोले लीन्हा॥
धन अरु रत्न अश्व गज दये। सब भण्डार सून तब भये॥
सुनतै अधिक क्रोध उरभये। जावनवास तु आज्ञा दये॥
मदन कहा मम दोष न दीजे। काअपराधप्रकट त्यहिकीजै॥
एक घाटि भइ है मैं जाना। नहीं कुलिंद बुलायो माना॥
दो॰ आज्ञा दीन्ही जाहि हम लाओ चरणमनाय।
तुमने लिखा सुसत्य है जरहु काहि मनलाय॥
सुनतै मंत्री बहुतै जरई। करमींजै औ हाहा करई॥
मंत्री कह वह पत्री लाओ। बांचि अर्थ तौ हमें सुनाओ॥
मदन तुरंत पत्रि लै आये। विषया नाम तु तुरत बताये॥
देखत पत्री विस्मय भयऊ। बहुत बोध तौ पुत्रहि दयऊ॥
विधिका लिखा मेटि नहिंजाई। आनकरत आनै होजाई॥
करि संतोष तु पोथी लीन्हा। चंद्रहास तब बोलन लीन्हा॥
जनि कछु संशय करुमनमाहीं। तुमतौ हमरे पितु सम आहीं॥
कपट रूप भाष्यो तब बाता। मनहिंविचारे वध सख्याता॥
यहि हतिकै कन्या विधवाओं। करिकैछल यहि तुरत मराओं॥
बोलि चँडाल कहै यह बानी। प्रथमहिकपट करेहुअज्ञानी॥
दो॰ अब तौ मानहु बात मम लेकर बान कृपान।
पुर बाहर है चण्डि गृह छिपि रहियो सज्ञान॥
संध्या जाय मारियो ताहीं। बहुतै धन पैहौ मम पाहीं॥
तब चण्डाल जाय छिपि रह्यो। चंद्रहास सों मंत्री कह्यो॥
हमरे कुलकी चण्डी आहा। पूजहुजाय कियो है ब्याहा॥
संध्या समय अकेले जैयो। चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो॥
सुनत बात तौ पूजन चले। मदन गये राजा गृह भले॥
कुंतल राजै सपना पाई। गालव प्रोहित को समुझाई॥
विना शीश देखा परछाहीं। कहौबुझाय कौन फल आहीं॥
[illegible] आये मनि कहै

ौर परीक्षा बहुत बताई। जाते मृत्यु जान सब राई ॥
हुत अरिष्ट तु सुने भुआरा। ताको नहीं करे विस्तारा ॥
दो० कुन्तल नृपती मदनते कही वात समुझाय।
चंद्रहास को राज्य दे हम तप कानन जाय ॥
न्यादान राजपद पाये। तुरतहि चन्द्रहास को लाये ॥
ोधुलि वेरा सब चलि आहीं। आगे और लग्न है नाहीं ॥
नतहि मदन तुरंत सिधाये। मगमहँ चन्द्रहास को पाये ॥
प दीप नैवेद्य सुहाये। कहँ लै चल्यो पूछि मनलाये ॥
द्रहास कह मंत्रि पठाये। अकसर चण्डी पूजन आये ॥
दन कह्यो हम पूजैं जाई। तुमहिं तुरन्त हँकारत राई ॥
दन पुष्प जो हमको दीजे। आप विजय राजापहँ कीजे ॥
नैवेद्य मदन तब चले। चंद्रहास नृप गृहगयो भले ॥
दन कहे तो असगुन भये। मनमहँ तौ वहुचिंतित भये ॥
दो० करि अभिषेक तब राजा दीन्हा कन्यादान।
राज्य देश भण्डार सब दीन्हे हर्ष प्रमान ॥
य देश संकल्पहि दीन्हा। राजा वनहिगमनतब कीन्हा ॥
न गये चण्डी गृह माहीं। मृत्यु भवन केगो तब ताहीं ॥
ण्डालन तब कीन्हे घाऊ। भूल खड्ग लै घाव लगाऊ ॥
न तबहिं चण्डी ते कहा। हमको बलि दीन्हे तुमअहा ॥
चारथ किय मैं गो मारा। माता पूजत तुमने मारा ॥
नहिं महिषासुर हों माता। रक्तबीजनहिं समनसख्याता ॥
निशुम्भ नहीं हां माई। परमज्योति तुमसुनमनलाई ॥
कहि प्राण अंत तब भयऊ। रो चण्डाल सबै गृह गयऊ ॥
हास राज्यासन पाये। मंत्री गृह लै त्रिया सिधाये ॥
जाय मंत्रिहि समुझाये। कहे जाय सब बात बुझाय ॥
० राजा कन्यादान दिय करि नृप वनै पयान।
मंत्रि बात तब सुनतही लागे शोक समान ॥

चंद्रहास जब आये आगे । कन्यासहित चरण तबलागे ॥
मंत्री पूंछ चण्डि गृह माहीं । गये हते कीधौं पुनि नाहीं ॥
चंद्रहास कह मदन सिधाये । हमहिं नृपतिके भवन पठाये ॥
चंद्रहास कहि गृहको गये । पुत्रशोक मंत्री कहँ भये ॥
रोवत चलिभो चण्डी पाहां । अंधकार रैनी भइ ताहां ॥
श्मशान महँ आये जबहीं । भूत प्रेत सब भागे तबहीं ॥
वरते चिता काठ यक लाये । तेहिउजियारचण्डिगृहआये ॥
डारि काठ तब पुत्र उठाये । ग्रीव लगाय रुदन मनलाये ॥
मण्डप माहँ खम्भ यक आहू । मारे शीश खम्भ के माह ॥
मृतक भयो मंत्री परसांता । यहिअन्तर तब भयोबिहाना ॥

। दो० द्विज पूजन कहँ गयो जब देखा गृहमों जाय ।
मंत्री मदन परे हते चण्डी मण्डप आय ॥

विप्र जाय राजा ते कहेऊ । चंद्रहास तहँपर तब गयऊ ॥
बहु अस्तुति चण्डी की करै । कुण्ड खनाय यज्ञ संचरै ॥
घृतचीनी यव तिल तबलीन्हा । वेद मंत्र आवाहन कीन्हा ॥
चण्डी पहँ राजा अस कहै । तू तौ शक्ति मातु जग अहै ॥
मोरे हेतु पूजने आये । मोतेरिसकरिबलि यह खाये ॥
यह कहिकै तब होम शरीरा । सर्व शरीर होम नृप वीरा ॥
पाछे माथ उतारन चहै । काढि खड्ग हाथे महँ गहै ॥
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी । चंद्रहास यह बचन बखानी ॥
जन्म जन्म भक्ती भगवंता । दीजे माता हमहिं तुरंता ॥

दो० पाछे मांग्यो भूपने ये द्वौ देहु जिआय ।
चंद्रहास यह आपेउ सुनहु चण्डिकामाय ॥

तब हँसि चण्डी कह मृदुबानी । अचलभक्ति होइहि सज्ञानी ॥
बालापनका चरित तुम्हारा । सो कलि में गावत संसारा ॥
मुँदो नयन मैं देउँ जिआई । सुनत नयन मूँयो तबराई ॥
मंत्री मदनहि दिये जगाई । अंतर्द्धान चण्डि कै जाई ॥

नयन खोलिके राजा देख्यो। उठे दोउ तव हर्ष विशेख्यो॥
तीनहुँ जन तव मग्नहि गयऊ। चंद्रहास अस राजा भयऊ॥
तव पारथ पूछे मन लाई। फेरिकुलिंद मिलेकिमि आई॥
पारथ सों नारदमुनि कहै। चंदनपुर कुलिंद दुख सहै॥
जो कुछ धन होते परमाना। सब दे दियो द्विजनको दाना॥
दो० करि विचार पावक दहन मरै पाय दुख पाये।
संशय यह तव मंत्रिसन कहा दूत कोइ जाय॥
तव मंत्री चंदनपुर गयऊ। बहुप्रकार अनुहारी कियऊ॥
चंद्रहास चंदनपुर गयऊ। देखि कुलिंद हर्ष मन भयऊ॥
सब समेत कुंतलपुर आये। परमहर्ष ते राज रजाये॥
तीनि राजा तप कियऊ। चंद्रहास को सुत तव भयऊ॥
पयासुत मकरध्वज नामा। पद्म नेत्र सुंदर परमाना॥
चक्र मालीनी विद्यांती। दोनों गर्भ दोउ सुत जानी॥
ल दशा बीते जब ताही। शालग्राम व्रत साधे आही॥
ला महातम उत्तम अहै। शालग्राम निरञ्जन लहै॥
त्यु समय चरणोदक पावै। पापी तरि वैकुण्ठ सिधावै॥
रमायल जो भक्षत कोई। देव पितृ सन्तुष्टित होई॥
नी दाता द्वीपन राऊ। चंदन लेपन मुक्ति उपाऊ॥
दो० शालग्राम जहाँ रहैं देव पितृ सब ताहिं।
सर्व तीर्थ जल पुण्य तो चरणाम्रतके माहिं॥
तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं। विष्णु समान देवता नाहीं॥
तुलसी मंजरि हरिको बाशा। दर्श पाप होत हैं नाशा॥
चंद्रहास नृप भयऊ। सबै कथा तुमते कहिदयऊ॥
नारद देवलोक कहँ गयऊ। सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ॥
लेकर कुन्तलपुर आये। राजा अश्वहि देखन पाये॥
पढ़े राजा सुख पाये। धर्मराजको अश्व जु आये॥
राज देखिके श्रीपति नैना। चंद्रहास हर्षित कह बैना॥

मकरध्वज ते बात जनाई। पूरब दिवस निकट भो आई
युद्ध रचे जग हो है नाशा। लैके अश्व मिलो हरि पासा

दो० पंद्रह दिन पर्यंत हय रक्षा कीन्ह्यो राव।
पाछे मिलने हेतु तब चंद्रहास नृप आव॥

तिलक सुतुलसी माल विराजै। मोरपंख रथ ऊपर छाजै।
तब श्रीपति देखे कहँ पाये। होय चतुर्भुज तुरत सिधाये।
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे। चारो भुजते अङ्कम लीन्हे।
चंद्रहास चरणन में परे। बहु प्रकार ते अस्तुति करे।
तब राजा से कह भगवाना। इनके हृदय मोर अस्थाना।
आकर मिलो भक्त यह आहे। तब पारथ श्रीपति ते काहे।
भारत माहँ कहे यदुराई। प्रणको गुन आये दुखदाई।
ताको मिलो कहो का राजा। क्षत्री धर्म होत है लाजा।
तब हरि भाषे यह तनु मेरा। मिले आयके हर्ष घनेरा।

दो० प्रभू पुण्य सों राजा। भाषे श्री यदुराय।
सुनत विहँसिके पारथ मिले तुरंतहि जाय॥

प्रेम हर्ष भे अंकम गहे॥ चंद्रहास राजा ते कहे॥
मो मन करना हती लराई। पै इक वर्ग आस निअराई॥
युद्धहि रचे यज्ञ करभंगा॥ ता कारण मिलाप तुव संगा॥
जहँ श्रीपती तहाँ रण कैसो। यह अचरजमनमाहँ अँदेशो॥
अश्वरुधन राजा तब जाना। राजा दीन्ह चरण भगवाना॥
श्रीपति राजा तासुत किये। प्रेम हर्ष आनंदित भये॥
तीन दिवस रह तेहि पुर माहा। छूटो अश्व चलो पुनि ताहा॥
चंद्रहास कहँ तब संग लीन्हा। बालक ते जिन रक्षा कीन्हा॥
ते पुर छांड़ि रहब घर माहीं। कृष्ण संग सेना करि जाहीं॥
लै दल चंद्रहास तब चले। पारथ संग चले सुत भले॥

दो० प्रेम हर्ष नारायण। पारथ परमानंद।
चंद्रहास संगहि चले विष्णु भक्त सानंद॥

चला अश्व भ्रमंत फिरे नाना देश विदेश।
ऐस न कोई जगत महँ पकरे अश्व नरेश॥
इतिश्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्वणिचन्द्रहासमिलनो
नामद्वादशोऽध्यायः १२॥
...पायन कहें बखानी। चलाअश्व विधिवतपरमानी॥
जौनें जौन देश हय गयऊ। सबै नृपति पारथवश भयऊ॥
पाछे अश्व चले जग माहां। समुद्र माहँ परवेश्यो ताहां॥
पारथ तत्र शोचन को लागे। दीन वचन भाषे हरि आगे॥
कहो कृष्ण का करौं उपाई। तब पारथ सों कह यदुराई॥
तुम हंसध्वज पुत्र तुम्हारा। मोरध्वज हम पंच भुवारा॥
ये सब रथी उदधि महँ चले। दरशनमात्र रिपूदल भले॥
पांचौ रथ सागर महँ गये। जल में रथ चलतेतब भये॥
आये सकरा देवल आये। पशु पक्षी तहँपर बहु आये॥
देखा पुनि इक दालभमुनी। बटको पत्र धरे शिर पुनी॥
दो० जंघा भेदी लाल भ्रू औ बहु अहै भुअंग।
नमस्कार गे कीन्ह तव पांचौरथ इक संग॥
...रथ कहे गेह किन करो। ऐसा कष्टहेतु केहि धरो॥
...नी कहै दुख गृह मेंअहै। स्त्रीग्रहण पाप बहु रहै॥
...री घरी वीचारत नाना। पहिं पाप झूंठ परवाना॥
...तक नहीं धर्म पुनि नाना। पाप पुण्य बहुते वीधाना॥
...त नारी कब देखब नैना। माया विष्णू को सब चैना॥
...ते थोरे जीवन काजा। ताते गृह कीजे नहिं राजा॥
...कंडेय वशिष्ठ जो मुनी। लोमश मुनी आदि हैं पुनी॥
...लय समय हम देखा जते। पारथ बात कहत हैं तते॥
दो० एक वट तरे आरहैं तासु एकसो डार।
एक पत्र के उपरे बाल रूप कर्तार॥
...रूप वट पत्रहि रहे। पद अँगुष्ठ सो चाटत रहे॥

तैं प्रभु जाना मैं मनमाहा। एही कृष्ण संत जग आहा॥
अब मोको आलिंगन दीजे। धर्मराजको यज्ञसु कीजै॥
श्रीपति कहैं मुनी सों बाता। महामुनी तुम हो सख्याता॥
एक वार करि गर्व जु नाना। हरिमाया इक पवन उड़ाना॥
मोहिं समेत गयो ले तहां। अष्टमुखी ब्रह्मा है जहं
उन पूछा तुमको यह अहो। इन कह ब्रह्मा जानत रहो
उन कह अष्टवदन हैं मोहीं। कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं
दो० अष्टवदन ब्रह्मा हम तुम हो कौन प्रकार।
यहे रूप तो बोलतो भयो पवन संचार॥
दूनो ब्रह्मारो तब तहां। सोलह मुख ब्रह्मा है जहां
उनहु एक परकार सुनाये। तीनो ब्रह्मा पवन उड़ाये
बत्तिस बदन पाहँ तब गयऊ। उनहुरारितौयहिविधिकियउ
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये। चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये
उनहू रारि करे मन लाई। पांचो ब्रह्मा पवन उड़ाई
इक सौ अट्ठाइस मुख जहां। उनहू गर्व बात तो कहा
छाहो ब्रह्मा उड़िगे तहां। शतमुख ब्रह्मा रहते जहां
तिनने सब को ज्ञान सिखायो। यह दालभमुनि कथासुनायो
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये। बकदालभ मुनि सबै बताये
मुनि को लै चंडोल चढ़ाई। अश्व दोउ लाये यदुराई
दो० चले अश्व तब लेके बकदालभ मुनि साथ।
वैशम्पायन कहत हैं सुन जनमेजय नाथ॥
चले अश्व तब आये तहां। जयद्रथ को बालक है जहां
दूतन कहा हमारे देशा। अर्जुन कृष्ण कीन परवेशा
जा पारथ जयद्रथहि मारो। सुनत मृत्यु त्यहि भये भुवारो
सभामाहिं मृत्यु तो भये। ताकी माता रोदन ठये
रोदन करत हरी पहँ गई। पारथ हमें महा दुख दई
पती पुत्र मारो दुइ सही। देखत दयावन्त हरि कही

चलो पुत्र तव देखौं जाई। सभामाहँ पहुँचे यदुराई॥
देखा नृपहि अचेतन परे। श्रीहरि हाथ शीशपर धरे॥
उठे पुत्र कहते भय त्यागो। सुनतहिवात तुरत सो जागो॥
जागे हर्षित भै महतारी। पुत्रहि लै पारथ पग डारी॥
दो० पारथ विनय कीन्ह बहु नेवता दीनो शाल।
पुत्रसहित हर्षित मन चले यज्ञके काल॥
श्रीपति कहत पार्थके पाहीं। वर्ष तुलान चलो गृहमाहीं॥
सुनो अश्व गये वनवारी। सबै नृपन सों कहा मुरारी॥
नीलध्वज हंसध्वज राऊ। वीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ॥
चंद्रहास्य अनुशल्या अहै। यौवनाश्व वेगहिं तब कहै॥
वृषकेतु औ कामकुमारा। सब सों भाषो श्रीभर्तारा॥
हम तो जात अग्रगृह आछे। तुम सब मिलिके आवहुपाछे॥
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ। आनंदित तब अर्जुनभयऊ॥
राजा सुनत हर्ष मन माना। हरिको दे आलिंगन दाना॥
जहां जहांपुर भै रण करनी। करि विस्तार सबै हरिवरनी॥
दो० भीम आदि पाण्डव सबै परशे सबै मुरारि।
रुक्मिणि आदि जो नारी तहां गये वनवारि॥
भीम सङ्ग हरिगे जहँ नारी। सतभामा परिहास विचारी॥
नाना कौतुक भये कुमारा। ताको नहीं करे विस्तारा॥
तब हरि भीम नृपति पहँ आये। चले अग्र राजा समुझाये॥
धृतराष्ट्रक आगे तव कीजै। आगेहो पारथ कहँ लीजै॥
कुंती आदि सहित गंधारी। औ जेती श्रीपतिकी नारी॥
वेदध्वनि कर ब्राह्मण चले। कीन्हा गवन लोग सबभले॥
दधी दूब अक्षत औ माला। यह सब लेइ चले द्विजपाला॥
आरति बहुते भांति सँवारी। चलीं साजि क्षत्रिनकी नारी॥
शङ्खध्वनि तो होत अपारा। नाना भ्रमर करत गुंजारा॥
आवते अश्व अग्र हैं दोऊ। वकदाल्भ्य संग हैं सोऊ॥

दो० भूप भूप सब भेटत मिलत सबै सरदार।
स्त्री से स्त्री सबै लेत अहैं इकवार॥
मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ। धर्म्मराज आनंदित भयऊ॥
राजा सब तो करैं जोहारा। पुण्य प्रतापी धर्म्मकुमारा॥
सब राजाको करि सन्माना। यज्ञ रचा तो वेद विधाना॥
अश्वमेध को मण्डप साजै। अष्ट द्वार तो सरस विराजै॥
वेलि पर्ण औ पुष्प बनाये। यज्ञ साज सबही निर्माये॥
बक्रदालभ जो वर्णै धर्म्मा। लागे मुनी यज्ञके कर्मा॥
वामदेव वशिष्टहि आये। पाराशर मुनि अत्रि सिधाये॥
भरद्वाज ऋषि गौतम आये। मुनि अंगिरा आइ मनभाये॥
आठो मुनी दया के पाला। वरन कीन्ह है धर्म भुआला॥
छीछन भै नृप द्रौपदि रानी। हरिणा सिंह गहे कर जानी॥
दो० धौम्य पुरोहित यह कह्यो जइये गंगातीर।
निज तिरिया लै जाइये भंग न गंगा नीर॥
तिरियन संग चले सब भले। अरुंधती वशिष्ठहुँ चले॥
कृष्णसंग श्रीरुक्मिणि रानी। प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी॥
ऊषा अरु अनिरुध के जोरी। भीम सुसंग हिडंबी तोरी।
वृषकेतू भद्रावति रानी। मोरध्वज कुमोदनी रानी।
यौवनाश्व चंद्रावति चली। नीलध्वज नंदिनी भली।
वेद पढ़ैं द्विज सबै सिखायें। नारद सत्यभामा गृह आये।
कहे बात रुक्मिनिणि हरि प्यारी। गांठि जोरि जल हेतु पधारी॥
तब सतभामा मुनि ते कहे। सदा कृष्ण मेरे ढिग रहे॥
तहां हरी मुनि देखन पाये। ऐसे अष्ट नारि पहँ आये॥
गोपिन गृह कह देखन जाई। तहवाँ देखा श्रीयदुराई॥
दो० सत्यभामा श्रीजाम्बवति रुक्मिणि नारी संग।
गांठी जोरी चले हरि भरन हेतु जल गंग॥
जलके हेतु तु सबै सिधाये। तब राजा नारद पहँ आये॥

हरी सहित जेते हैं राजा । गंगा माहँ करैं जल काजा ॥
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरे । पाछे और सबन संचरे ॥
व्यास आदि जल पूजन करे । कंचन कलश नीरसों भरे ॥
चले नीर ले सब नृप रानी । अरुंधती रुक्मिणी बखानी ॥
कलश भार दुखदायक अहे । सुनिये बात जाम्बवति कहे ॥
कर पर धर तो कृष्ण पहारा । शीशन धरे कलशको भारा ॥
बहुते कौतुक खित कीन्हे । आये सबै गंग जल लीन्हे ॥
वेदध्वनिके कलश उतारा । युवती गावहिं मंगलचारा ॥
दो० श्याम कर्ण जल पान करि रानी नृप अस्नान ।
द्रौपदि रानी धर्म सुत जैसो यज्ञ विधान ॥
धोती पहिरि मुनी सब आये । उत्तम चंदन अंग लगाये ॥
रथ भीम देत हरि दाना । राजा सबै किये अस्नाना ॥
दक्षिणा भये यज्ञ के हेता । सबकहँ पूजन कियो सचेता ॥
वेद उचार मंत्र तब कीन्हे । धौम भीम ते बोले लीन्हे ॥
गये श्रवण अश्वको मारा । ताते चले क्षीर के धारा ॥
तब सबहीं विस्मयके माना । धौमकह्यो भीमहि सुनकाना ॥
करो अश्व होइ द्वै खण्डा । तबहीं भीम गहे कर खण्डा ॥
तहाँ भीम क्रोध करि छांटा । दोय टूकके अश्वहि काटा ॥
र उड़ि रविमण्डल महँ रहे । सुघर अश्व जग जीवनकहे ॥
के हृदय आप हरिमारा । हृदय चली रक्तके धारा ॥
दो० अश्वज्योति हरि अंगमों प्रविशतभे तबजाय ।
परा अश्व वसुधाविषे भो कपूर तनु आय ॥
कपूर धराहे आगे । व्यास होम करने को लागे ॥
ड माहिं तब आहुति दीन्हे । तबहींव्यास कहनकहँलीन्हे ॥
द्र आगमन परिश्रम करो । तबहीं इन्द्र वचन अनुसरो ॥
कह्यो पावक मुख मेरो । आहुतिदें सब देव घनेरो ॥
वलिखा आहे गुरु पारा । होम करो द्विज वेद उचारा ॥

सो कपूर ते आहुति दये। सब संसार संतुष्टित भये॥
अङ्ग धर्म आगम में लागे। धर्मराज के पातक भागे॥
कृष्ण कह्यो सब राजा ठांय। यज्ञ धर्म्म लीजे तन आय॥
अब आगे कलियुग जो ऐहै। कोइ न ऐसो यज्ञ करेहै॥
नृपति देव संतुष्टित भये। सबै यज्ञ के पातक गये॥

दो० शेषस्नान भुवाल तब कीन्हा रानी संग।
सहस दण्ड धरि छत्र तब ताने नृपशिर रंग॥
भयो यज्ञ सब पूरण भागे पाप अनंत।
जहाँ आप ठाकुर रहे तहाँ सबै हर्षंत॥

वैशम्पायन कथा सुनावे। तौ सब राजा तहाँ न आवे॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ। श्रीहरिको आलिंगन किलऊ॥
पाछे देन लगे सब दाना। जो कछु होवे यज्ञ विधाना॥
व्यासहि भूमिदान तौ दयऊ। साठ एक वकदालभ भयऊ॥
एक हस्ति अरु एक तुरंगा। कंचन माल एक तौ संगा॥
मुक्ता अंजलि गऊ हजारा। सेवकचारि तु दिये भुआरा॥
एकक द्विज तौ एतिक पाये। करि मख सब दरिद्र भगाये॥
गाज सौ चार तुरंग हजारा। प्रतिदिन दीन्हो भूप उदारा॥
खिलको भूषण पहिराये। वैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये॥
अतिहर्ष धर्म्म नृप जाना। सिंहासन बैठे भगवाना

ष्णा कह्यो धर्म्मजके पाहीं। है अन्याय छुटो है नाहीं॥
ीन मास बीते कलि ऐहै। आपन न्याय आप करिलैहै॥
म जो दीन बांटि कै आधा। ऐसे कली कपट दुख दाधा॥
ह कहु घरको दीन्ह पठाये। पाछे राजन बिदा कराये॥
दो० जहां देश है जाहि कर तहँ तहँ गये नरेश।
अश्वमेध भारत कथा काटे पाप कलेश॥
धि संयोग आय बन आवा। वैशम्पायन कथा सुनावा॥
स युधिष्ठिर कहवै लीहेउ। ममअसमखकाहून्नहिंकीहेउ॥
ही बीच नकुल इक आवा। मध्य उच्छिष्ट बुड़की खावा॥
तमन देखि बूड़े पै सोई। क्षण बूड़े क्षण ऊपर होई॥
ह अचरज तहं देखतभयऊ। यहिविधिपहरएक सोगयऊ॥
ष्ण देव सों राजा कहै। यह चरित्र देखो कस अहै॥
च्छिष्ट माहिं बूड़े उतराई। तनमन देखि बहुतपछताई॥
स नकुल मैं कबहुँ न देखा। कंचन मुख कबहूं ना देखा॥
हीं कृष्ण कहा समुझाय। यह वृत्तांत कहौं मैं गाय॥
व कथा सुनो नरनाहा। जाहीते मुख कंचन आहा॥
वृत्तान्त कहौं मैं तोहीं। जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं॥
जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ। बहुतदुःखतनुआपितभयऊ॥
त पत्नी द्विज के सँग आहा। चारों प्राणी रह सँग माहा॥
म दरिद्र दुखित सो रहई। तीरथव्रतसोफिरिफिरिकरई॥
ौ धर्म बहुतै सो करई। अस ब्राह्मणशुचिवन्ता रहई॥
रों प्राणी वहु शुचिवंता। निशिबासरध्यावत भगवंता॥
क्षा मांगि विप्रलै आवै। आधा अन्न संकल्प करावै॥
ही विधि बहु दिवस गँवावा। व्यासदेवतब नृपहि सुनावा॥
रों प्राणि विप्रसो रहेउ। एकते एक धर्म बहु किहेउ॥
ो० एक दिवस चलि यात्रा पत्नी सह द्विजराव।
ऋषि अनंग तहँ भूपती सबही कृष्ण सुनाव॥

चलो यात्रा विप्र नहाई। चारिदिवस सो अन्न न पाई॥
सुधावंत ब्राह्मण तब भयऊ। पंचदिवस याहीविधिगयऊ॥
छठयें दिवस नगर इक आयो। विधिसंयोग तहां कस भयो॥
सब कर खेत तहां इक अहई। मारग बीच तहां सो रहई॥
जव काटी किसान लै गयऊ। जव इक परा तहांपर रहेऊ॥
तवद्विजपुत ब्राह्मणिसों कहेऊ। चुनहु आय वुद्धी यहकिहेऊ॥
पुत्र सहित द्विजवनि लीन्हेउ। एककजवचुनिराशिजोकीन्हेउ॥
सब सब चुनी बनावत भयऊ। तबहीं विप्रकहतअसभयऊ॥
आधीआधा द्विज तब किहेऊ। आधाअंश हाकिमहिदिहेऊ॥
आधा अंश गृहस्थ विचारी। जो उबरा सो लिह्यो सँभारी॥
सो ब्राह्मणि लेगे जतसारा। जवको चूरन कीन सुसारा॥
सत्तुपीसि ब्राह्मणि लै आई। दोना पांच ब्राह्मणी बनाई॥
पांचोपत्र कीन्ह द्विज जबही। एकक पत्र चारलिय तबही॥
इकसो अभ्यागत कहँ राखा। अस धर्मिष्ठ कृष्ण तो भाषा॥
जबहीं भोजन चाहे लीन्हा। स्तुति आय विप्रइक कीन्हा॥
तब द्विज चरण पखारा जाई। बहु आदर आन्यो बैठाई॥
हर्ष सहित द्विजपत्र जु दीन्हा। तबहींद्विज कृष्णार्पण कीन्हा॥
कह्यो विप्र संतुष्ट न भयऊ। आपन पत्र जोब्राह्मणदयऊ॥
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा। चारो पत्तर जेवे लीन्हा॥
करि प्रसाद अचवा पुनि सोई। नीर प्रवाह पुहुमि में होई॥
एक नकुल तहँ आव पियासा। ठोर कुँवा ये नीर प्रकाशा॥
नीर उच्छिष्ट मुखे जब पिहेऊ। कंचन मुखहितहाँतक भयऊ॥

दो० अस कौतुक तहँ होतभा सुनो राव चितलाय।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत सब सुवर्ण होजाय॥

नकुल मनहिमन करे हुलासा। अबविधिगौर जोपुरबैआसा॥
सुना नकुल ने यह सबभाऊ। राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ॥
वहुत अपच आये मखशाला। औरोमहु आगे महिपाला॥

बड़ बड़ ऋषै तहाँ चलिआये। प्रेम पुनीत देख मन भाये॥
औरो देव मुनीजन भारी। तिनके सँग आये बनवारी॥
नकर जूंठ परा तहँ होई। तनु मोरा कंचन हो सोई॥
यहगुणजानि नकुलतहँ आवा। उच्छिष्टमाहितनुआपबोरावा॥
सो जुदेह सुवरण नहिं होई। तब तब बुड़की मारै सोई॥
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई। सुनतहि मानभंग भो राई॥
राय युधिष्ठिर गर्व्व गमावा। लज्जावश है शीश नवावा॥
सबै ऋषै कहँ लज्जा आवा। मान महातम सुनत गमावा॥
दो० यह चरित्र सुन राजा कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मान जु भंगभे रहे ऋषै शिरनाय॥
कृष्ण साथ लिय सब परिवारा। द्वारावती नगर पगधारा॥
प्रेम हर्ष आनंद उपाय। कृष्ण द्वारका पहुँचे जाय॥
वैशम्पायन कहै बखानी। अश्वमेध है पुण्य कहानी॥
दुखी सुनै दारिद्र पराय। रोगी रोग तुरत क्षय जाय॥
निःपुत्री सुनतै सुत पावै। पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै॥
सहसन धेनु देइ जो दाना। सर्व्व तीर्थ करते अस्नाना॥
पर्व्व अठारह सुन फल होई। अश्वमेध जानो फल सोई॥
यह चरित्र सुनि जे मनलाई। यमके दूत निकट नहिं जाई॥
कथा सुनत देते जो दाना। प्रापति देव होयँ भगवाना॥
पाण्डव विजय कहै अनुसारा। कह संक्षेप करै विस्तारा॥
दो० पाण्डव विजय कथा यह पुण्य श्लोक बखान।
अश्वमेध सम्पूरण सुनु राजा सज्ञान॥
अश्वमेध मख पातक हरता। राजा सुनो श्रीपती करता॥
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना। तापर रह प्रसन्न भगवाना॥
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं। सुन अनसुनी एकसमताहीं॥
मनसा फल प्रापति तो होई। यही सत्यके जानो सोई॥
मनमों धरै ज्ञान गुरुदेवा। मनमें पार होत नर सेवा॥

श्रद्धा मन जानो परवाना। ताते परब्रह्म पहिचाना
काम क्रोध मद अक्षय चाहा। भावै ज्ञान कहोका ताहा।
का कामी के आगे ज्ञाना। काह क्रोधते भक्ति बखाना।
का लम्पटके आगे धर्म्मा। कामी काह पुण्यका कर्म्मा॥
जैसे ऊपर बीज बोवाये। तैसे यह सब भेद बताये॥

दो० भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परवेश।
मनमें भक्ति न जासुके सो नहिं फल उपदेश॥

॥ श्री[illegible] ॥

महाभारत

आश्रमवासिक। मुशलपर्व संयुक्त

सबलसिंहचौहानविरचित

अत्युत्तमश्रीगोस्वामितुलसीदासकृतरामायणकीरीतिपर

दोहा चौपाई में सरलतासे वर्णित है

जिसमें

विदुरकथा, सपत्नीक धृतराष्ट्र और कुंतीका देहत्याग, और अर्जुनका श्रीकृष्णचन्द्रजीके हाल लेनेकेलिये रथारूढ़ होकर द्वारकापुरीमें गमन, दुर्वासादि ऋषियोंका तप निमित्त द्वारकामें गमन, दुर्वासाशाप, मुशलके खण्ड करके समुद्रमें डालना तहाँ मछलीका खाकर बालियत केवटका पाना, उद्धव का श्रीकृष्णजीकी आज्ञानुसार बदरिकाश्रम गमन; राजा जनमेजयका नवयोगियोंसे सम्वाद आदि कथायें संयुक्त हैं

आठवाँ बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी॰ आई॰ ई॰) के छापेखाने में छपी

सन् १९०२ ई०॥

आश्रमवासिकपर्व ॥

जयतिजयति रघुवर श्रीरामा । भक्त जनन को पूरण कामा ॥
बन्दौं गुरु गोविंद सब ताता । बन्दौंपुनि श्रीपितु अरुमाता ॥
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा । बार बार शिवकी करिसेवा ॥
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी । सविधिकाव्यजनकीजो सेवी ॥
बन्दौं व्यासादिक मुनि नारद । हनूमान जो ज्ञान विशारद ॥
सबलसिंह यह भारत भाखा । श्रीप्रभु जब अरके दै राखा ॥
औरँगशाह दिलीपति राजत । मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत ॥
ये नृप के पुरुपन महँ गाये । सबलसिंह चौहान बनाये ॥
सम्वत सत्रह सै इक्यावन । शुक्लपक्ष दशमी बुधसावन ॥
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा । व्यासदेव को सुमिरणकीन्हा ॥

दो० लक्ष्मीके पति जौन हैं हैं लक्ष्मी वश जाहि ।
सल्लक्षण जामें मिलैं बन्दत हों मैं ताहि ॥
श्रीहरिव्यापक जक्तसब तेहिते वंदिय सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि आश्रमवासिकपर्व ॥

नृपवर यज्ञ सरावत भयऊ । कछुदिनअश्वमशम्भुचलिगयऊ ॥
नृपवर यज्ञ सुभग श्रमभयाः । जादिन सभा अनूपम ठय ।
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो । ठौरहिं ठौर भूप जन पैठे
कथा बारता विविध प्रकारा । सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहार

दो० प्रथमहिं पूजियगणपतिहि जाकी सेवा सर्व ।
सबलसिंहचौहानकहि भाषा आश्रमपर्व ॥

सबजन नृप बैठे आसन प्रति । होइनि यज्ञ ठौर होवे अति
ताहि समय द्वैपायन आये । नृप सब बंदि आत नतपाये

सिंहासन पर नृप वर राजत । नृत्यहोत बाजन वहु बाजत ॥
ठे भूप सकल पृथिवीके । अर्जुन भीम जीति लीन्हेके ॥
बभ्रुवाहन हैं नृप अनुशाला । नीलाम्बुजआदिकमहिपाला ॥
औरो वहु बैठे तहँ राजा । विविधतँबूर तबलजहँवाजा ॥
तब नृपवर जनमेजय बोले । पाणिजोरिमुख अम्मृतखोले ॥
सकल भूप तहँ रहे वखानी । कहा हुते वलि शारँग पानी ॥
कहमुनि सुनुनृपवचन सोहाये । तुवहित हेत कहत हमगाये ॥
सो० रहे दूरि के राय जे आये नृप यज्ञ महँ ।
जेनगीचके आय निजनिज नगरनको गये ॥
षष्ठमास की वात यज्ञंतर नृप ह्वै गयो ।
रहेदूरि नृपतात द्वैपायन सहभूप मणि ॥
नाचहोइ तहँ विविध प्रकारा । मुखसोरहिं जोरहिंसवतारा ॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं । कुच देखाइके भूपरिझावहिं ॥
द्वादश षोड़श वर्ष कि नारी । करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी ॥
तासु आभरण कौन वखानैं । पहिरे कर्ण मोतिया सानैं ॥
त्रिवली तरल तरंग सोहाई । अभिगण नाभि मनोहरताई ॥
कटिकरकिङ्किणि तहँछविछाई । पग नूपुर झनकार सोहाई ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु साजैं । मधुरमधुर ध्वनि पायलबाजैं ॥
दो० नाचैं नारिमनहुरति अलक झलक छविहोत ।
चंद्रवदनिमृगनैनिशिशु भृकुटी कुटिलउदोत ॥
सो० कुंदकलीसमदांत अधर अनूपम चिबुकतिल ।
कुचसुचक्रकीभांत तिलप्रसून नाशा सुभग ॥
यहिविधि नृत्यहोत दिनराती । नृपसमाज देखत मुनिपांती ॥
द्वैपायन नृपगे आश्रमको । रयनव्यतीतमिलनकोकोको ॥
यहिविधिहोत रोजप्रतिउत्सव । आवत देश केर वकील सव ॥
जीतत हारत सकल वकीला । करतसुभगहितनृपगणमोला ॥
बभ्रूवाहन नृप दुःशाला । जीवनाथ आदिक महिपाला ॥

कारिकरिफौजासाजि सवराजा। विदाभांगिगे सहित समाज॥
लैजनवास विदा प्रानिन कै। चलेन्रमतिसवश्रीशिवसुत॥
करत बखोई धर्मज केरी। निजनिज धाम गये नृप॥
इहां हस्तिपुर धर्मज राजा। नितनव मंगलमोद समाज॥
वहुत वर्ष वीते सुखदाई। आगे नृप सुनु कथा सुहाई॥
यकदिन कृष्णचन्द्र वलरामा। पुत्र पौत्र आदिक वर वामा॥
आये धर्मराज के धामहिं। रथाउचितसवजोन्हप्रणामहिं॥
वास कीन्हश्रीप्रभु वलनागर। कुंतीभगिनिद्रुपदिमिलिआगर॥
यहिविधि वीतिगये कछुकाला। रहे कृष्ण गे हलधर बाला॥

दो॰ कृष्णचन्द्र नारिन सकल वलसँग दीन्हपठाइ।
आपुरहे हस्तिन नगर आनन्दित सुखपाइ॥

यहिविधि कृष्णचन्द्र सुखदाई। रहे हस्तिना मास गँवाई॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहं आये। तिन्हबोलायतिन्हवातजनाये॥
इनकी भूमि लीन्ह जोतनहित। जोततरहत सुनो हे नृपनित॥
तामें मिलो सघन भंडारा। हमरोहक नहिं ताहि पुकारा॥
सोहम धनहिं कृष्णनहिं लीजे। यादव पांडु न्याव करि दीजे॥
हमसों अन्नदेव ते कामा। गड़ो मिलोसो याकर जामा॥
यहसुनिवोलेउ द्विजवर दूसर। नहिं हमार धन उपजो ऊसर॥
हम सों वपु दण्ड सों रहे। और मिले सो याफर ॥
नाहीं होत अन्न जब याके। तबहू लेत दण्ड हम
उपजे जो करोरि धन भाई। तबहू वहै मिलतहै
उपजो जबन अवनि धनराजा। हमसों नहीं कछु है

दो॰ नृपवर सुनिद्विजवर वचन कृष्णपाहिं दतादि।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हें पडमास मिरवादि॥

पडमास महँ तुम द्विज आवो। धर्मराज मुख न्याव कर
यहसुनिगेद्विजातनिजधामहिंदास आनन्दित

सूत आगे नृपसुत अव कथा । मैं गुणगाइ कहत भइ व्यथा ॥
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा । द्विजन बुलाइ दान बहु दीन्हा ॥
कै विदा सुभद्रा पासहि । द्रुपदिहि मिली बहुरि कैसादहि ॥
मिलि नृप भीम पार्थसों भेंटत । संत्रिहिन कुलहि सिलि सब भेटत ॥
कर्णपूत गांधारी मातहिं । तो पितु अंध और बहु जातहिं ॥
मिलत सबन सों आलत कीन्हा । रथ कै वेगि द्वार कहि चीन्हा ॥
मिलत सबन यदुवंशिन आछे । गयेप्रथम मंदिर कहँ पाछे ॥
तनृप धर्मराज शुभ करई । चलै न मारग सत्य न टरई ॥
ते कछुक दिवस इमि ईछे । आये व्यास शिष्य सह पीछे ॥
खे नृपति बंधुन सह वन्दे । अश्वासन लखि व्यास अनन्दे ॥
व्यास सुनु धर्म सहीसो । कहेउ दास कारण सब हीसो ॥
आगम तोहि लागत फीको । जाते होउ दास नृप हीको ॥
सुनत वृद्धि हँसि दीन्हों । कहेउ कृपा तव सब सुख कीन्हों ॥
मारि राज्य हम पावा । तव प्रसाद ओड़ा किरि आवा ॥
अब कछु दिनसों महामुनि लखत अन्य उपकार ।
मिथ्या वाक्य प्रमोद अति और सकल आकार ॥
ताहि समय सुनु तात करत वृत्त कही व्याससों ।
आयो द्विज अतरात । बोलिन्यात लागे करन ॥
द्विज है भूमि हमारी । अन्न छांड़ि सब लेव करारी ॥
हाथ भूमि क्रय ताहीं । करि क्रिया लेउँ हम याहीं ॥
बोलेउ द्विज दूजो वानी । लेवे छीन कहत शिवआनी ॥
भूमि वित्त सो चाहिये । और मिलै मोको नृप अहिये ॥
निसवाहि नाधिकाधिक बोले । वृक्ष हले धरणी सब डोले ॥
के तिहुंपुर सब कांपे । जल समुद्र उछले अरु तापे ॥
हुतत आंगुरी चापी । पवन चली समुयास बकांपी ॥
सुनि धर्मज कपत डगो मे समुदित भूपाल ।
रामकृष्ण कहिकै गिरे भेसचेत पुनि हाल ॥

आधो अर्द्ध दीन्ह कै राजन। तवलागो पूछन महराजन॥
अहोव्यास मुनिकारण कहिये। नहिंतोचित्त अनलसोदहिये॥
कहोव्यास यह कलियुगलागो। धर्म धर्म नृपधर्महिं त्यागो॥
ताते आपु वद्रि पहँ जैये। गलिहेवारहरिआश्रमरहिये॥
कलिमें सकलगोत्र वधकरिहैं। पाप तिहारे ऊपर धरिहैं॥
कलियुग नगरहेतु हम भाखा। दोष झूंठ तव ऊपर राखा॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना। व्यासधर्म विनजाको आना॥
व्यासगये निजआश्रम कार्हीं। कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं॥
चलोकृष्ण पहँ मांगि रजाई। तव उत्तरदिशि चाह्यो जाई॥
सुनिअर्जुनअतिशयसुखमाना। भीम नकुल मंत्री हर्षाना॥
वेगवंत अर्जुन रथ साजा। तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा॥
चारि बंधु भूपति सँगलीन्हे। हरिपुरओर गमननृपकीन्हे॥
चले अलौकिक देखत शोभा। जितहिजाततितहींमनलोभा॥
कतहूं शिक्षित पंडित बालक। कतहूंजात सैनरिपुशालक॥
कहूंलरत गज अतिहिततारे। उज्ज्वलगिरि समानभैभारे॥
माल महिष उष्ट्रादिक नाना। लड़त शब्द फाटततेकाना॥
कहत धनुर्विद सूरति छीजत। पुरवाहर कै कोउकोउईव्रत॥
कोउ नृत नाटक करतरिझावत। बारमुखी नाचैं गुण गावत॥
मालीगण सींचत कहुँ बागन। मधुकरकाम अंधसहरागन॥
कहुं कहुं होत युद्ध के साजा। आवत नृपन पत्र जहँराजा॥

सो॰ कोकवि करे बखान जहां रहैं श्रीब्रह्मप्रभु।
असकोत्रिभुवनआनजोनभजतश्रीप्रभुअसहि॥

कहुं विवाह चूड़ाकरनादी। गावत मंगलचार सदादी॥
सर अरु बाग नदीतट पावन। भर्मत नारी काम लजावन॥

दो॰ कोकिलपिकअरुमोरगणसुमनसहितऋतुराज।
रहतसदा हरिकीकृपा होनितप्रति यहकाज॥

दो० यहिविधि लखत सबंधु नृप करत मिलनसबपास।
रामकृष्णकहि मिलतसब कुशल कहत हमदास॥
कहेउकृष्ण नृपकहु केहिकाजा। आये सकल बंधु महराजा॥
व्यासवचन अरु न्यावबतायो। कलियुग घोरपापमयआयो॥
जानचहत उत्तरदिशि प्रभुहम। कीन्हगोत्रबध हमनाहींकम॥
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी। हम तो पलक कोर प्रभुहेरी॥
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन। कलियुगअहैघोरयहिकाजन॥
तुम्हें गोत्र वध पाप न ह्वै है। पुनिकलियुगवासीनहिंछुइहै॥
कहिहैं धर्म्मराज जो कीन्हा। पाप पुण्य उनहूंनहिं चीन्हा॥

सो० व्यासकहेउयहिहेत कलिवासी जोजनकरत।
दोष तुम्हें जो देत पापलहै तुव सोइ सुनो॥

कलियुग ऐहै घोर अपारा। तामें चलै न कछुक अचारा॥
वृद्ध स्यान मम भुगिहैं राई। मानहिं मातु पिता नहिंगाई॥
यौवन मदवश करहिं कुकर्मा। तजिहैं देश लोक कुलशर्मा॥
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपुंजा। जोतजिदिवसकरहिंनिशिपूजा॥
वीर्य्य हीन क्षत्री ह्वै जैहं। तवहीं म्लेच्छ नृपति ह्वैऐहैं॥
वैश्य देव द्विज सेवा हीना। कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीन्हा॥
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहं। बूझोनृप कब कलियुग ऐहैं॥

दो० भाद्र मास पक्षकृष्णजो त्रयोदशी रविवार।
अवतै वाकी मासपट कलियुगकर अवतार॥

जब कलियुग गंगाकहँ जाना। तबऐहैं अतिअवगुणनाना॥
नारि धर्म्म जो विधवा करिहैं। कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं॥
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला। संकर वर्ण होइ कलिकाला॥
कछुदिन करहु राज्य नृपआछे। हमसहचलबकछुक दिनपाछे॥
अब तुम नगर जाइयो राजन। प्रथमकहेउकिहेउजबसाजन॥
दो० सुनि नृप प्रभुके वचन वर मिले सबहिं भूपाल।

अर्जुन रहिगे द्वारकहि आगे सब जन हाल॥
नगर आइ भूपाल सुहाये। पोत्रहि थोरि सुकंठ लगाये॥
माता को सब बात जनाई। कृपाचार्य्य सुनते दुख पाई॥
धीरज धरि कुन्ती यह भाखा। पतिसंगगमनमोहिविधिराखा॥
पुत्र बिना कस रहिहौं राई। जात्रा चहत सुतहि तुमहाई॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा। तबकछुहृदयज्ञान भरिआवा॥
कलियुगपुत्रजो प्रियअबआयो। तातेमान मोहिं नहिं भायो॥
हम सबको तिलअंजलि दीजै। उत्तर पंथ गमन तब कीजै॥

॥ दो० चलन कृष्ण आपहु कहे तबलग माताजाय।
आये अर्जुन तेहि समय गये मातु लगधाय॥

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी। अर्जुन कही कथा जस हेरी॥
कहेउ कृष्ण नृपरहोकछुकदिन। सुनिनृपभयेप्रशंसलछिनछिन॥
डेकारज अबो के है पारथ। मातुजाबयहसबविधिस्वारथ॥
सन्ध्या भई सबन शुभ कीन्हा। भोर अन्हाय दानसबदीन्हा॥
क्रिया कराई सुबिर सुहाये। गयेहुते बहु दिन अब आये॥
ताही समय आगमन कीन्हा। पुरजनसहितनृपतिबरचीन्हा॥
बंदि चरण सब जन तब बैठे। चरण धोइ आसनपर पैठे॥

॥ दो० कुन्तीद्रुपदी भगिनि प्रभु तुवपितु मातुसबंदि।
आशिषदीन्हों मुदितमन श्रीबर विदुरअनंदि॥

संध्या देखि क्रिया नित कीन्हे। भोजनकीन्ह सबनमुदलीन्हे॥
ताहि समय नृप बंधु सयाना। विदुरहि कहेउपोढ़िये आना॥
करहु तात अब तुम विश्रामा। यहसुनिकहेउविदुरनिजकाम
विदुरकहे भूपति सों बोले। चाहत मिलन भ्रातमनडोले
आज्ञा दियो धर्म के राजन। विदुरचले मिलिबेको काजन
॥दो० किंकरजन लेगे विदुर चरण गहेउ कहि नाम।
[illegible] सह संजयअभिराम॥

सो० विदुर मिले सह नारि बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो मुख चारि ताकी प्रभुता है महत॥
हा विदुर कहत भूपाला। असकहिदम्पतिठोंकतभाला॥
य विदुर ममसुत सब जूझे। अजहुँक्षु द्रतनप्राण असूझे॥
त गोत्रजन सों भयों हीना। पुत्र हीन हम अवहूं चीन्हा॥
रत न फूटत हियो हे भाई। मम, समभयो न होने आई॥
अस कहि दम्पति रोवनलागे। अससुनिजनमेजयनृपआगे॥
धीरज दियो विविध परकारा। दियो ज्ञान भू एक अकारा॥
तव बोले नृप अंध सुजाना। कहँ कहँ गये वन्धुइतआना॥
इतते गये सुनहु नरपाला। रहे उजयनि जहां महकाला॥
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका। सोमनाथवसिभयो अशोका॥
गंगाद्वार वास तव कीन्हा। आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा॥
वाराणसी तहां ते आये। विश्वेश्वर के दर्शन पाये॥
गये हिमालय कहँ भूपाला। अलकापुरीलख्योसुखशाला॥
व्यासाश्रम दश वर्ष वितायें। तहँ ते चित्रकूट कहँ आये॥
यह सत्संग ऋषिन कर लीन्हा। ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा॥
तहँ ते गये वड़े सो देशहि। भुवनेश्वरकिये दर्श विशेषहि॥
रामनाथ कर दरश सुहाये। तात तहां ते इतको आये॥
लहि मैत्रेयपास कछुशुभगति। तुमहिंदेखिवे आयगये सति॥
तव सुधि विसरतिहुती न नेको। देखत तुमहिं सुखी नहिंएको॥
चलौ भ्रात तप हेतु महावन। जहँथलअहे व्यासकरपावन॥
सुनुनृप दुख न मानिये एको। सोइहरिविनुजगमाहिनएको॥
सोई जल सोई थल जानो। सगुन निगुन तेसेहि मानो॥
सोई पृथ्वी सोइ अकासा। आपुइ स्वामी आपुइ दासा॥
आपुहि राजा आपुहि रानी। सोई अग्नि सोई हे पानी॥
सोई धन सोइ चोर कराला। सोई मरत सोई हे काला॥
सोइ है हीन सोई है पावन। सोइ हे राम सोई है रावन॥

हरि आपुइ नर आपुइ नारी। आपुगृहस्थ आपुब्रह्मचारी
आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि पुत्र आपुही भ्रात
आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी। आपुहि महिष आपुहीसानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई। आपुहि आपु चरावन जाई
आपुहि भँवर आपुही फूला। आपुहि ज्ञान विनाजन मूल
राज रंक दूजो नहिं कोई। आपुइ आपु निरंजन होई
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका। तैसे जानै ब्रह्म विवेका
यहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरण नाशै भ्रम भागै
योग समाधि ब्रह्म चित लावै। ब्रह्मानंद सुनहि तब पावै
सोइ वैकुंठ सोई है नरका। सोइ है शोक सोई है हरषा

दो० मातु सोई पितु सुत सोई सोई नृपति सोइ रंक।
एकरूप जानो सुखद नृप मति करियो शंक॥

बोले विदुर सुनहु हे राजा। दुखनशदेखिपरतकेहिकाजा
कहां अंध नृप सुनिहे भाई। भीम वचन मोहिं सहो न जाई

सो० और सकल सुखदेत भीम कहत मोहिं कटुवचन।
सो न सहब मनलेत कोभापे हरिकी रचन॥

विदुरजाहिजिमिनृपकटुभाषत। श्वानसमाननृपतितुवमापत
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे। टूक देखाय बुलावत पीछे
तस तुवदशा करत नरनायक। भीम कहत नृपस तुवलायक
खात शूद्रगृह लाज न आवत। हीन वंश अजहुं होरावत
ताते करो चलो तप जाई। नातरु लहौ अधिक दुखदाई
सुनि कटु बैन तबहिं कहं ईछे। विदुर सुनाय ज्ञानसहु पीछे
सुनो बंधु जगकर व्यवहारा। जामें बंधो सकल संसारा
सुखदुख त्याग जानियोराजा। [illegible]
दो० एकवणिक है बहुत धन चल्यो करन [illegible]।

एक दिवस वनमों परा सूर्य अस्तकी ब्यार॥

हैं षट चोर मिले हे राजन। लूटन संगचले तेहि काजन॥
हुतचलो तबवणिक अजानो। बसनहेत नहिंनगर निरानो॥
अधिकअधिकवनचलतपरतजस। पकेतालयकरहो बैठितस॥
तहँ षट आकर चोरन लागे। वणिक देखिभयवशतबभागे॥
बनमहँ परो भुलायवणिकजब। देख्योतबचरित्रनृपसब अब॥
कहूं देखि भाजत गज भारी। कहूं सिंह कहुँ सर्प करारी॥
दावा देखि जात भय भागत। गिरत परतउठि कांटालागत॥

दो० यहि विधिते ब्याकुलभयो गिस्यो अँधेरे कूप।
वैशंपायन मुनिकहेउ सुनु जनमेजय भूप॥

बटको बृक्ष हेठ पर राजत। पकरिवणिकडालीकहँताजत॥
जो शाखा लटको मधि कूपहि। ताहि रहे देखत हे भूपहि॥
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउराजत। शाखा काटिरहे पुनि गाजत॥
पकरिचहतसोइ हेठहि आवन। हालतडार गिरत मधुपावन॥
सुखमधिगिरतचाटिसुखपावत। कूपहि सर्पदेखि भय लावत॥
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हों। ऐसहिदशासबहिं प्रभुकीन्हों॥
बोले तब नृप वचन सुहाये। कौनत वन अब देहु बताये॥
बोले विदुर सुनहु हे भाई। जीवहिवणिक जानिजोआई॥
कामक्रोध अरुमोह लोभ मन। इन्द्रिय यइजानोतसकरजन॥
अरु पुत्रादि सकल परिवारा। पाइ सहायक चोर अपारा॥
जाते कहत बनाय जीवको। उत धन धर्म अधर्म हीवको॥
जेमिव्याघ्रादिडरावतवणिकहि। तिमिकुलचोरडरावतजनिकहि॥
मन है दुःख जौन संसारा। स्त्री आदि कूप है कारा॥
आंधू वह शाखा जौन। द्रव्य अहे तो बहता पौन॥
मूषक राति दिवस करिजानो। काल सर्प को नृपकरि मानो॥
कह संजय जोविदुर बखानत। हमहूंकहत जाहुअस जानत॥

दो० इंद्री हे अरमन वहक देह सुरथ रथवान।
याके वश भमंत फिरत जीवन कछु हे आन॥
सो० कह संजय मतिमान रूपहिं देखा साधुको।
ताविनकछुनहिंआन जड़ चेतन उत्पन्निसत॥
दो० भई व्यतीत सुरैनि तव भयो ज्ञानको भोर।
धर्म नृपति आवत भयो वंदत पितुहितओर॥

नृपति भीम अर्जुन तव वंदे। नकुल देव सहदेव अनंदे
नाम कहेउ तव पांडव चीन्हो। गदगदहवदम्पतिशिपदीन्हे
कृपाचार्य्यमिलिविदुरहिभेटत। संजय मिलो तापत्रय मेटत
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे। औरौ सकल बसैया नेरे
कर्णपुत्र। नृपहृदय लगायो। मेघवर्ण मिलि दुसहनशायो
बैठे निजनिज आसनपर सब। अंधनृपति गदगद बोले तब
होहो पुत्र धर्म सुखदाता। कियप्रतिपालमोरअरुमाता
दुर्योधन आदिक सब जूझे। तबसों तुम सोको अति बूझे
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं। रोमहिं रोम अशीशत तोहीं
मम सुत तुमहिं दुःखबहुदीन्हो। फल पायो ते आपन कीन्हो
अब ममदेह सकल जर जरसे। बलमुहीन सब निकरिगईसे
सरिता हेठ वृक्ष मोहिं जानो। त्वक्ष उखरिवो शंक न मानो

दो० आज्ञा दीजे जाइँ हम दम्पति भ्राता साथ।
कर्ममुक्तिहित बने कछु उतहित धन जोहाथ॥

नृपसुनियहबंधुनसहदुखअति। बोलतभे तब ज्ञानचक्षुपति
हमरे तुम सबके सुखदाता। केहिविधिकहोंजाहुअसबाता
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू। होय सुभग सह मंगलसेतू
तब कुंती बोली बिलखाई। हमहू चलब संग तुव राई
सुनते सब काहुन समुझावा। कुंतीके मन नेकु न आवा
तब धृतराष्ट्र कहन असलागे। धर्मराज राजा के आगे
पुत्र मात सम्बंधी जोई। जानाहे औरौ सुन सोई।

पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै। भोरजाव पुनि सबब्रतधरिकै॥

सुनि धर्मज गुणऐन वंदि सबनि पितु पदपदुम।
आये निज निज ऐन नित्यक्रिया भोजन कियो॥

चै शुचि सहदेव बुलाये। तिन नृपआयसुमुखदसुनाये॥
सबन वस्त्र पट नाना। गजरथ वाजी उष्ट्र विताना॥
भोजन के साज अथोरा। लै मति दगपहँ जाहु करोरा॥
नि किङ्कर सकल बुलाये। जो जेहिलायक ताहि सुनाये॥
त मुखबानी किङ्कर जन। लैसबगयेमिलेअतिअरुबन॥
साज नृपमन्दिरमों सब। होनलागतव साजसकलतब॥

निशा भयो पुनि विक्रमो गये धर्म के राज।
पितहिं वन्दिलागेकरन सबजनसबविधिसाज॥

भयो पिण्डा नृप दीन्हा। जसविधिवेदकहेउतसकीन्हा॥
श्राद्ध यथाविधि कीन्हों। दान अथोर विप्र नृपदीन्हों॥
सकल अयाचक भये। यकदिन एकनिशा इमिगये॥
ोदय लखिचालतकीन्हा। दानदयासों ब्राह्मण दीन्हा॥
ापदे निज धामन आयो। जनमेजयसुनिमुनि सबगायो॥

कुन्ती मिलि गन्धारिता विदुरसहित मिलिधर्म।
सबन मिलत आगे चले पुरजनसह जिमिसर्म॥
पुरजनमहँ सुरराजसम नृप धर्मज सह भाय।
नारी नर सब विकल ह्वै हा हा हा कहिराय॥

तराष्ट्र सबनसमुझावा। मिलिसबहिंयोजनयकआवा॥
जकहँ आशिप दीन्हा। संजयकहँ प्रबोध तब कीन्हा॥
काहुन पलटायो राजा। गाङ्गेय मिले अर्द्ध महराजा॥
ोह तोरि तृणइव सब। आगे चले सुनहु नृपवर अब॥
कंधधरि कर नरपाला। पति कंधा गंधारी बाला॥
कुन्ती धरि हाथा। चले नवाय गङ्गकहँ माथा॥

करि मज्जन अरु वहुकर दाना। चले वनहिं चारिउजन[illegible]
यहिविधि करत वासमगमाहीं। चले जात नितभयदु[illegible]
व्यासाश्रममिलिसबमुनिजूहन। भे प्रसन्न भोजन फल[illegible]
व्यासहिंमिलत अधिकसुखपावा। कहमुनिभलीकीन्हजो[illegible]
जैमुनि शुकदेव वकादलम्भी। औरोमिले मुदितमुनि[illegible]
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता। सुतजूझनआदिक बहु[illegible]
कहमुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा। नेकु हृदयमहँ ज्ञान न आ[illegible]

दो० निज तन तूल भराइकै निजकर अग्निलगाय।
दोष देय तव ईशको कह्यो ऋषै समुझाय॥

सो० ताते करु तप भूप हृदय राखि अव्यक्त प्रभु।
देखि चराचर रूप जो त्रिभुवनमहँ एक प्रभु॥

करन लगे तव नृपहो रानी। विदुरआनिकरिज्ञानसुहा[illegible]
भे अद्भुत सदृश यमराजा। मग्नफिरतवन और न का[illegible]
उत नृप धर्मराज दुख पावत। लख्योतबैऋषिनारद आव[illegible]
उठे सभासद मुनि कहँ वंदे। लख्योधर्म्मनृप वहुत अन[illegible]
अर्घ देइ आसन बैठार्यो। मुनिसमीपअसवचनउचा[illegible]
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ मुनीशा। फिरतरहत तुमसदा अहीश[illegible]

दो० तुम मुनीश सर्वज्ञ प्रभु जानत मन भगवान।
कहो खवरि कछु विदुरकी सवलसिंह चौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेसवलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रमवासिपर्वप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

विदुर विरक्त फिरत वनमाहीं। त्यागो तन गे हरिपुर काहीं।
तो पितु और दोउ पटरानी। गईं अग्निजरिसुनगुणखानी।
भये विकलसुनि बन्धुनृपाला। जोगतिहोतविकलजिमिशाला॥
रोवत वार वार हाहा कहि। मूर्च्छित ह्वै गिरत महिमाहिं॥
यह देखत बोले मुनि नारद। सुनुनृपवर विज्ञान विशारद॥

मरण भयो न कछू यह जाना। समुझनहेतु कहेउ असराना॥
हे पितु भक्त सदृश कोइ नाहीं। परपितुमानतसमपितुआहीं॥
अबचलि दरश करौ पितु केरा। नातरु काल आयगो नेरा॥

दो० यह कहिकै नारद ऋषै चले ब्रह्मपुर ओर।
अब आगे सुनु नृप कथा श्रोतनके शिरमोर॥

तुरत तयार नृपति वरभये। बंधुसहितनृप मिलिअवगये॥
पति औ नारी सकल समाजा। नगरमहाजनअरु द्विजराजा॥
चले सकल जेहि राजत पुरमों। वाण सदृश यहलागतउरमों॥

सो० चलेनृपाल भुआल सहितबंधु पुरजन सकल।
ठौर ठौर रक्षपाल राखि चले हस्तीनगर॥

नृप तव नगर राखि रक्षकगन। चलेसवनसहदुखितनृपतिवन॥
तीरथ करत वास भगवाना। चले वनहिंजहँ कुरुपतिराना॥
गये व्यास आश्रम के पासा। भे पद त्रान विहीन सुदासा॥
मिलतऋषिनकहँविविधविधाना। गये जहां हैं व्याससुजाना॥
मिलेव्यासकहँ वंदनकरि करि। वारवारशिरपद महँधरिधरि॥
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया। कृपा कटाक्ष सवनपर दाया॥
मिले पिता औ मातन काहीं। नाम सुनाइ कहेउ कछुनाहीं॥
सकल मोहवश जल नैननमहँ। को असकहै दशा नृपभैतहँ॥

दो० दै अशीश सव कहँ सवन वैठे सव जनराय।
वैशम्पायन कहत हैं जन्मेजय पहँ गाय॥

दुर्लभ देखि राय कहँ राजा। सहमतुनहिं दुर्वल तपकाजा॥
बोले नृपवर गदगद वानी। कहँहैं विदुर कहेउ तवरानी॥
कुंती कहभे परमहंस वै। ढूंढ़न चले अकेल वने स्वै॥
देख्यों भागिजात वनमाहीं। गोहरायो ठिठुके त्यहि नाहीं॥
तदपि वृक्षआश्रितचीन्हों जव। नयननीर भरिरहेउठाढ़ि तव॥
वरण गहेउ धर्मजके राजा। ताहिसमय दुंदुभि वरवाजा॥

विदुर त्याग तनु ताही औसर। गे यमराज विदुर
देखि धर्म नृप बंधु बोलाये। कहिसबकथा नयन
दाहन चहेउ तबै वाणीभय। जीवनमुक्तिविदुरयम

दो० यमराजा को अंग हैं विदुर भक्त भगवान
धर्मराजहियसुमतिभो परत्रयिकसुनिकान॥

सो० आयो राजा धर्म कहेउ कथा सब विदुरकी।
कीन्हों विधिवत कर्म निजकर राजाअंधवर॥

रहेवनहिं कछुदिन शुभबीतत। महादुःखलखिमुनिवर
पूछेउ सबसों को केहि चाहत। जासों होत उऋणमों
कुंती कहेउ कर्ण मैं देख्यो। गंधारी जामात्रहि ले
सुभद्राआदिक सुतकहँमागत। पितुसुतबंधुपतिहिशरण
सबै कौशिकी तट लै गयऊ। तपप्रभाव सब आवत भ
दिव्य दृष्टि अंधहि नारी सह। सुनत लगायो कह हाहा
कोउपति मिलत महामुद छाये। कोउकोउ पुत्रन हृदयल
कोऊ भाई बापहि लावत। दुखमिटिगेकोउमंगलगा
रैनि एक सुखसे सब बीतत।अरुणोदयलखिसबजतचौ
फांदे सब वन नृप छल माहीं। रहे न एकौ धौं कोउ मा
सकल मोहवश नारि अपारा। धसीं जलै करि घोरचिक्का
कोउकोउ वनमहँढूंढ़त भागत। कोउकोउप्राणतजतभैलग
कोउकोउव्याघ्रादिकधरिखायो। जलमहँबसिसबप्राणगँवाय
कोउकोउशून्यहोम मखशाला। जरीं अग्निसहँ जे बरबाल

दो० सब काहुन तन त्यागिकरि गईं पतिनके साथ।
व्यासकहेउ यहधर्मसों अबभेल तबहिं अनाथ॥

सो० आये सुनि नरपाल जहां होमशाला नृपति।
सुनु अब कछु सुतहाल वैशम्पायन कहतभे॥

धर्मनृपति मख करत रहे तहँ। मखशालारह व्यासकरजहँ
अग्नि प्रचंडशिखा अतिबाढ़ी। अर्द्ध नृपति अंगहि तहँढाढ़ी।

कुंती चलन चहेउ उठि तहँते। अक्षविहीन नृपतिवर जहँते॥
मन बिचारि जरी सँग तिनके। रामकृष्णकहिकहि वै जिनके॥
कोऊ ऋषि अरु पाण्डुकुमारा। रहे न तब कोउ उठवनहारा॥
आय नृपति यह दशा निरेखी। कीन्होंरुदन सुनत जिनदेखी॥
रोयउठे सहनृप बन्धुन जन। और नगर वासी आये वन॥
रोवहिं कुंतिहि गन्धारी कह। हायहाय कहि अंधनृपतिसह॥
लैकर अस्थि सुदंपति केरी। लीन्हे अस्थि ढुंढ़िमा केरी॥
कीन्हे कर्म सविधि गंगातट। जहँ पवित्रवन मोहिं एकवट॥
कीन्हतिलंजलिदेयसविधिविधि।चलेधीरधरिनगरनृपतिसिधि॥
करि वंदनऋषिव्यासस्रबनको। चलेमगहिंमहँश्रमनहिंमनको॥

दो० वास चलनकरि मगनसब नृपराजन सहभाय।
नारीसंग सुभद्र सह द्रुपदी सह दुख पाय॥

सो० आयेनगर नृपाल दिये तिलांजलिदिवसनिशि।
एकादश सुखपाल दिये वाजि नारी सबन॥

दो० द्वादशयें दिन भूपमणि दीन्हों दान अथोर।
वासलसो दम्पति तवै सहकुन्ती सबओर॥

पायोवास सुखद सब काहू। मिटेउ दुःख प्रवलित जो राहू॥
धर्मराज जो विदुर कहायो। निजपुरवास न्यावमनलायो॥
जनमेजय सुनि भाषन लागे। सम्पुट जोरि मुनीशन आगे॥
नाथ कहौ यम केहि अपराधू। भये मनुज गुणवर अरुसाधू॥
बोले मुनि राजा के आगे। गदगद वचन रावके पागे॥
एक मण्डपी ऋषी सोहावन। करतहु तप्त पवनमधि पावन॥
बहु तसकर चोरी कर लाये। तहँ वन मध्य मोर करि पाये॥
तहँ वन डारि सकल तब भागे। उननृप आपुउदयलखिजागे॥
धन बिहीन लखि रक्षक डाटे। तिनके चोप रह्यो नहिंकाटे॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे। धन देख्यो देख्यो मुनिवौरे॥
धन लदाइ मुनि बूझन लागे। अरेचोर कोधहि अतिपागे॥

धरे मौनव्रत मुनि नहिं बोले। धनसहायकरि गयो नृपतोले
नृप देखत अति क्रोधहिपागे। कहिकटुवचनकहनअसलाग
सूजी देहु चढ़ाय सुचोरहि। दियचढ़ाइतबमुनिवरओरहि

दो० सूजीपर बैठे ऋपै धरे तत्त्व को ध्यान।
कष्ट पाय सब ऋषि तबै आये ऋषिके थान॥

सो० खगमृग रूपनधारि आये मुनि बूझन लग्यो।
पापकौन असचारि जो ऋषिवर अतिकष्टहौ॥

दो० हरिइच्छा असकहिदयो सबसों मुनिवर गौन।
राय सुनत दीन्हो छुटै आयो यम के भौन॥

हे यमराज कहो केहि पापन। लह्योघोरदुख सुनुसोइदापन।
कह यमराज सुनो मुनिराजा। लह्योकष्टअतिसुनुसोइकाजा॥
है पतंग गुद बाली कीन्हो। तेहिकारण इतनो दुखलीन्हो॥
यहसुनि क्रोधितकै ऋषिबोले। अग्निशिखामुखअग्निहिबोले॥
शूद्रसदृशतुव प्रकृति जनावत। शूद्रयोनिजन्मज तुम पावत॥
सुनियमराज चरणगहिलीन्हो। कै प्रसन्न तब आशिष दीन्हो॥
कैहै शूद्र मुख भाषन कीन्हो। हरिके भक्त और सिखदीन्हो॥
पुनि यमराज होइ हौ आई। आयेसुनि कहि अतिसुखपाई॥
विदुर व्यास तप बल ते राई। भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई॥
बोले जनमेजय भूपाला। व्यासरच्यो नरवश सबबाला॥
वनसहँ देहत्यागि तिन्हकीन्हों। मायातप यह चाहत चीन्हों॥
बोलेमुनि तपबल ऋषिव्यासा। कीन्ह देखु अमरावति बासा॥
मैं जानी नृप तुव मन इच्छित। ताते आवत पिता परीक्षित॥
ताहि समय नभगहगह बाजत। आवतदेखिविमानन्हिराजत॥
किन्नर देव नृपति संग आवत। बाजत बेणु अप्सरा गावत॥
नील नारि नलनी कच राजत। कुचयुग भरतफूलनकुबाजत॥

दो० चमकत मोतिनजोरिमुख हँसत फँसत चितहून।
लजत देखत जाहि रति मति न रहत शुभजून॥

सो० यहि विधि सुभग सुजान आयो रथ वगमेलमें।
मिले पतिहि दै यान वार वार वन्दत उदित॥
मिले देव किन्नर सब राजा। बाजे हरि तन आनँद बाजा॥
मिले परीक्षितकहँ सबनृपगण। नातगोत्रसुतसहपुरजनजन॥
तव जनमेजय द्विजन बोलाये। आशिप पाय प्रसन्न जनाये॥
देव सकल पितु सह उठि ईछे। मज्जन करवायो सब पीछे॥
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो। ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो॥
सिंहासन पर पूजा कीन्हों। चरणधोय चरणामृत लीन्हों॥
सुभग सुगंधित माला दीन्हों। शय्यादे आश्वासन कीन्हों॥
तवपश्चिमलखिअस्तदिवाकर। द्विजभूपन मिलिमिलेपुत्रवर॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे। चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँवन्दे॥
दो० बाजै किंकिणि चारु ध्वनि नाचन लागींनारि।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर तनक न लागीवार॥
तव जनमेजय भूपवर मुनि अस्तुतिअनुरागि।
सूत शौनकादिककहत निशावीति सबजागि॥
तरुणचूड़ अरुणोदयलागत। श्रोतावक्ता सब जनजागत॥
मज्जनकरि आसन प्रति आये। जनमेजय इमि अर्जसुनाये॥
कहो तात सब कथा सुहावन। पापनशनि समपुण्यबढ़ावन॥
शत्रुनशनि मित्रनिसुखदानी। कलिनाशनिमुनिमहजिमिवानी॥
कल्पलता कल्पाय सुतासी। कुंदकली उचलित कुंदासी॥
जीवनसी जीवात्मा ईशी। परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी॥
दो० जीवन धनसी ईशसी पीससदृश गुणदाय।
सो अब भाष्योमहामुनि कलिजन पापनशाय॥
सो० मुनिवर भाष्यो बेन राजासुनु धरि ध्यान वह।
सबसुखको जोऐन पढ़तसुनत सुखनवल नित॥
यकदिन राजाधर्म भोर उठे श्रीकृष्ण कहि।
कीन्हों नितकृतकर्म बन्धुनसह राजित सभा॥

ताहिसमय कलियुगसुधिआई। देह दशा धर्मज दुख पाई॥
कह पारथ हरिपुर अब जैये। उत्तर चलो कृष्ण पहँ लैये॥
मातुपिता के हित इत रहेऊ। ते सबगाय सविधि ते कहेऊ॥
अब रहिबो नहिं उचितसुभाई। ताते लावहु श्रीहरि जाई॥
अर्जुन सुनत सुभग रथसाजा। भीमहिं मिलेसबहिंपुनिराजा॥
दो० वेगवन्त अर्जुन चले जहां बसत भगवान।
आश्रमवासिकपर्व्व कहि सबलसिंहचौहान॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआश्रम
वासिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥



मुशलपर्व ॥



दो० श्रीगिरिजागणपतिसुमिरि वरणिभक्ति हनुमान।
मूशल को भाषा रचत सबलसिंह चौहान॥
जनमेजय मुनिसों जवन भाष्यो सुनि शुभगाथ।
ताहि सुभग भाषारचत धरिशिर निजप्रभुपाथ॥

बन्दा गुरु गोविंद के पायन। जिन प्रसाद ह्वजे सुखदायन॥
सुमिरों अवधनाथ सीतापति। नारद शारद सुमिरिमहामति॥
सुमिरोंआदिकाव्यघटव्यासहि।जाकीसविधिभांतिमोहिंआशहि
ईश्वर रूप जानि जगती को। सुमिरोंराम आदि शिवनीको॥
सम्वत सहस्र से शुभ तीशा। भाद्रमास सप्तमि रजनीशा॥
औरंगशाह दिलीपति नायक। सबलसिंहतव हरिगुणगायक॥
वैशम्पायन कहत सुनाई। सुनहुसाथ कुलवर नृपराई॥
जय धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी। ग हरिपुर सह कुन्ती रानी॥

दो० इत अर्जुन गे द्वारकहि कुशल हेत सुखपाय।
मार्ग मिले नारद सुमुनि रथमों लिये चढ़ाय॥

विविधभांति भाषतशुभगाथा। जातचले अर्जुन मुनिसाथा॥
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा। मिले अन्तनहीं श्री बलरामा॥
अनिरुधसाम्बप्रद्युम्नसुआदी। औरो चले देखि मिलनादी॥
देखि पार्थ नारद मुनि राई। उतरे रथ सुमिलनहित धाई॥

यदुवंशिन प्रणाम तब कीन्हो । नारदमुनि आशिषतबदीन्हो
पग बन्दे पारथ हलधर के । हिये लगाय कहतहाँ नीके
जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती । बन्दे चरण मिले सब जाती
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे । मिले सात्विकादिक छलछूबे
यहिविधि मिलत पार्थसुनिराम । राजहिं मिलिगे जहँसुखधाम
सम बन्दे तहँ मुनिवर ईछे । अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे
अर्घपाद मुनिवर कहँ दीन्हा । विधिवतपूजिसुआशिषलीन्हा
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ । मिलेपार्थ सबत्रियनयथारथ
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा । मनभावतआशिषशुभलीन्हा
पटरानिन सेवा मन दीन्हो । पार्थकृष्णमुनिभोजनकीन्हो ।

दो० भोजन करि बीरा लयो सुभग सुगन्धित लेप ।
तब सोये बर पार्थ भट बूड़ेउ नारद सोपि ॥

सो० आगम कहौ मुनीश केहि कारण आवन भयो ।
कहेउ नारद सुनि ईश ब्रह्मा पठयो आपुपहँ ॥

मानुषउमिरि अधिकह्वै गयऊ । अजहुँन आवनहरिकरभयऊ ।
प्रभुडर कालडरत नहिंआवत । यदुकुलकतहुँजीवनहिंजावत ।
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे । उग्रसेन आदिक ज्येठारे ।
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला । ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला ।
कहति सृष्टि नइनीति चलाई । केहिकारण मोहिं ईश बनाई ।
चतुर्मुखा केहि कारण भाषत । देवन में सरिता करि राखत ।
हौं पुनि उनहीं केर बनावा । अंतखोज प्रभु हसहुँ न पावौ ॥
तो निजकर क्योंनाहिं बनावत । हमरे ऊपर दोष धरावत ।
ब्रज मों गाय गोप उन कीन्हो । तब प्रथमे हम परचोलीन्हो ।
ताते अब यहउचित न तुमको । हँसबनउचित प्रभूहे हमको ।
ताते कृपा करहु बनवारी । पाहिपाहि मैं शरण तुम्हारी ।
औरो कही बात करजोरी । कहँलों कहौं अनुग्रह तोरी ।
हँसिकह प्रभु भो घोर नेवारा । तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ।

ह मुनि भार अथोर अपारा। यदुकुल मारिहिनकाहुहिमारा॥
रेय नाथ अब कछुक उपाई। जाते नाथ लोक निज आई॥
हरि गन्धारी सुत जूझे। तबअस पुनि संजयसों बूझे॥
दो० श्री हरि पक्षी पाण्डु के जयकी आशाछूटि।
अंध दीन्ह मेरे लिये शत सुत विधनै लूटि॥
कहा कृष्ण सिरजे तवै सुनु माता अस कौन।
हारि यहां मेटन चहैं मनमानी किय जौन॥
यह सुनि क्रोधा लुब्ध ह्वै शाप गँधारीदीन्ह।
अबते छत्तिस वर्ष में जो मोकहँ तुम कीन्ह॥
करि असमत गन्धारी शापा। निजकुलहतेसुनिजकरपापा॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा। गुणगावतमुनिचलेअकाशा॥
ब्रह्मा पास कही जो हेरी। यदुकुल नाश आइहै फेरी॥
यहिविधि बीतिगये कछुकाला। आगे सुनहु नृपति भोहाला॥
एक दिन ब्रह्मा अतिदुख पायो। अजहुँनकाशीश्रीप्रभुआयो॥
अस मन समुझि देव ले साथा। गे द्वारकहि जहांव्रजनाथा॥
करि परिक्रमा नायकरि शीशा। अस्तुति करत देवदिगईशा॥
पाहि पाहि शरणागत वत्सल। हे कृपालु पालन श्रीअत्सल॥
दीनानाथ देवकी नन्दन। मैं तव शरण भक्तपालनजन॥
जय गोविंदवासी वृन्दावन। जयतिदेवजयजगजनवन्दन॥
जय जय जय माधव असुरारी। तारण तरण गौतमी नारी॥
दशरथसुतजयजयजगपालक। जनकसुता वारनहरिबालक॥
परशुराम निज रूप मानहर। बनहिवासकियनाशत्रिशिरखर॥
मृग मारीच वधन सीता छल। वानरसंगसहित हनुमतवल॥
सेतु बांधि रावण को मारो। अवधपुरी प्रभु भक्ति उधारो॥
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण। चलियेनिजपुरश्रीजगतारण॥
ई प्रभु भक्त वछल वनवारी। हँसि तव मधुर गिरा उचारी॥
वलब कछुक दिन में हे देवा। यह सुनि लगे जनावन सेवा॥

दो० सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल गे प्रसन्न तब सर्व।
सबलसिंह चौहान कहि भाषा मुशल पर्व॥
इतिश्रीमहाभारतेमुशलपर्वभाषासबलसिंहचौहानकृते
प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

गे निजधाम देव समुदाई। अवनृप कथा सुनहुजोगाई
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे। कृष्णचंद्र सन बूझन लागे
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा। जोप्रथमहिं प्रभुमंत्र अरूपा
इतसों जाइ चलन जब चहे। तब कुंती माता बश रहे
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई। जान चहत उत्तर नृपराई
चलन हेतु प्रभु तुमहूं भाखा। चलहु नाथ अब काहे राखा।
यह सुनि धर्म बन्धु की बानी। सुनु नृप बोले शारँगपानी।

दो० चलब कछुक दिनमैं सुनहु रहौ इतै कछु काल।
सुनु असकहिराखतभये श्रीप्रभु करिकै जाल॥

रहे बहुत दिन आदर लहिके। अतिमुदसहितबारताकहिके॥
यकदिनहरिअसकह्योबिचारी। नाशहोइ केहिबिधि कुलकेरी॥
ताहि समय नारदमुनि आये। हरिगुणगावत आदर पाये॥
तिनसों बूझेउ यदुकुलनायक। नाश यत भाषो जेहि लायक॥
नारद कह बिन शाप दिवाये। देखि न परत कि युद्ध मचाये॥
यह भाषत नारद सुनु राई। ताहिसमयऋषिमुनिगणआई॥
आये व्यासशिष्य सब साथा। हमहूं हते सुनिय नरनाथा॥
शृंगी ऋषि भृंगी मुनिनायक। देवलकपिलआदिसुखदायक॥
सनतकुमार सप्तऋषि राजा। दुर्वासाऋषि सहित समाजा॥
विश्वामित्र वशिष्ठादिक मुनि। अरुकौंडिल्यसुनोभाषतगुनि॥

दो० अरु भृगुनायक अंगिरा पाराशरऋषिराय।
देखि कृष्ण आदिक सकल परेपायँ सहपाय॥

सो० उग्रसेन सह कृष्ण पायँ धोय भोजन ५ ।
हलधरकौन्ह्योप्ररन् केहिकारण आगम सकल

बोले मुनिवर व्याससुहावन । अशनदेहु इतकछुदिनपावन ॥
चतुर्मास वरषाऋतु पावन । देहुअशनयहिहितसबआवन ॥
रहवइतै सबमुनि सुखदायक । करब सुतप जो आज्ञापायक ॥
कहहलवर समभाग्य अपारा । महा महामुनि जो पगुधारा ॥
रहोदेव हम अशन सोहावन । टिकयोमुनिन्हअपावनपावन ॥
नितप्रति भोजन सुभगवनाई । विलग मुनिन्हप्रति देतपठाई ॥
यहिविधिकछुक दिवसन्टपबीते । यकदिनसब शिकार हितरीते ॥
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नाती । लै आज्ञा कै चढ़िसबभांती ॥
खेलि शिकार मारि मृग रूरे । पुरहि पठाय चले मुदपूरे ॥
आये मुनिवर जेहि वनबासा । बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्वासा ॥
कोउकहमुनि भोजनहितआये । मांगत भीख कतहुँ नहिंपाये ॥
मिलो पेटभरि इतै अहारा । परे ताहिते ये शठ द्वारा ॥
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई । जो विधि लिखा होतहै सोई ॥

दो० कोउ कह हैं सर्वज्ञ निधि कृपा यत्न मुनिराज ।
नृपन चाहियो दानशुभ मुनिवर भोजनकाज ॥

सो० निंदो मति सबकोय इनको मानत कृष्णबलि ।
जो विश्वास न होय करु न परिक्षा लेहुतम ॥

क्रोधित मुनिवर बोले बैना। सुत सुख देख्यो यहकुल
दो॰ बोले मुनिवर क्रोधकरि होय सत्य यहवैन।
याही सुत के होतही मरैं कृष्ण सह सैन॥
सो॰ सकुलसंहरिहैंसवै जिनटिकाय अपमान किय।
अससुनिये नृपपर्व मरैरुक्मिणी जवनतिय॥
यहसुनिसकल भभरितबभागे। मनहुँ सिंह कोउ सोवतजा
मुनिहि सकोप बकत बहुवैना। इतआये सब निजनिज ऐ
सकल बात सब काहुन पावा। जुरिसमाज सबनृपपहँ आ
सुनत कृष्ण अतिभये प्रसन्य। उग्रसेन सह शोचत अ
शोचत बसुदेव अरु बलरामा। बारबारकहि शिवहरि ना
तब नृप मंत्री ज्ञात बोलाये। उद्धव सात्यकादि सब आ
शोचसुमत करि यह ठहराये। बोलि लोहार सहस्रन आ
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ। चूरन करि समुद्र महँ बहे
ताते भयो सुखर उत्पन्य। औरौ सुनौ कछुक नृप अन
एक चूर जो लोह बहायो। शापसत्य हित मीनसो खा
मीनहि ताहि पकरिकै लावा। बालि नाम धीमर जो आ
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा। तीक्षण धार थोथ महँ सो
दो॰ सुनु नृप भावी मिटै कस अरु श्रीकृष्णप्रताप।
जो न चहत श्रीकृष्ण प्रभु करत कोटिकहशाप॥
[illegible] दिन बीतिगये यहि भांती। आनँदजातदिवस अरु रा
[illegible]प्रभुकृष्ण हृत्य अस जागी। द्वारावती शाप नहिं [illegible]
[illegible]नसमुझि हृत्तिभगवाना। चहहुँप्रभासकरियअसना
[illegible]नि सकल बुलाय सुवासी। भोर चलनकह आनँदरा
[illegible]नि उद्धव हरिपद ध्याये। नमस्कारकरि अस्तुति ग
[illegible] लागे हाहा कहि। [illegible]
[illegible]

सो० कहौ नाथ काकरिय हम जातेहोहुँ सनाथ।
असकहिलागे रुदनतव धरेउचरणपर माथ॥
सो० भाष्योश्रीप्रभु बैन करतशोच तुमहौ कहा।
धरिपद निजहियऐन करोजाय तपवद्रिका॥
यहदेखतहौ जौन सकल जग। सोजानहु सवजाहि एकमग॥
हय गय द्रव्य पुत्र अरु दारा। सोसवजानु झूठ व्यवहारा॥
मरणकालकोउकाम न आवत। कविकोविद मैसज्जनगावत॥
मम नाभीते कमल भयो जव। ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तव॥
ताते भई सृष्टि विस्तारा। मैंहूं धरेउँ वहुत अवतारा॥
चारि वेद श्वासन ते गाये। मुखते द्विज भुजक्षत्रियगाये॥
वैश्य जानु पद शूद्र वनावा। याहीमें सव जग वेलमावा॥
तव श्रीकृष्ण कृपाअतिकीन्हे। ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे॥
औ यह कह्यो सुनौ उद्धव तुम। अवतुमजाउ वद्रिकाकोगुम॥
नाश होन चाहत अव द्वारा। किहेउदिवसप्रतिभजनहमारा॥
वृक्ष योनिते मनुज होत जव। सुमिरणमेरो उचितसुनहुतव॥
सुनि उद्धव तव शीश नवायो। परिक्रमा करि तुरत सिधायो॥
इत यदुवंशी भोर भये जव। चले प्रभास काल प्रेरित तव॥
सजिसजिसाजचले सव कोई। पुरजन कृष्णसहितवलिजोई॥
दो० कहँलगि कहिये सुनहुनृप चले सहित यदुनाथ।
सात्यकि कृतवर्मा सहित यदुजन पुरजनसाथ॥
उग्रसेन वसुदेव विन रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु सुखदसुगाहिके वाहिं॥
सो० उद्धव ज्ञान वुझाय वद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
उद्धव दुःख नशाय ब्रह्म मिले करि नेहवर॥
राखि नगर रखवारी। आपु चलनहित कीन्हतयारी॥
अरु पारथसों कहेऊ। आयो कालि नारिसह रहेऊ॥
प्रभासक्षेत्र सुख पाई। तहँ नारद मुनि वीण वजाई॥

नारद आयसु दीन कृपाला। जाहुनगर द्वारकहिविशाल
सिखवो तात मातु नृपजाई। मोह मूल को शूल नशाई
तहँनारद असज्ञान सिखावत। भूमिअकाशहिनिजदरशाव

दो० वृक्षयोनिते मनुज तनु पायो पुनि हरिपूत।
तातेअजहुँ न सुमिरियो होनचहतहौ भूत॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो पूर्वभाग्य मुनिराज।
भक्ति मुक्ति मांगीनहीं अबआवतिहै लाज॥

सो० मुनिबोलेइमि बैन तुवहित हेतहि कहतहम।
यकइतिहास गुनैन नौयोगीश्वर जनकको॥

नौयोगीश ऋषभ सुत आये। जनक देखिके शीश नवाये
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती। सिंहासन दीन्हो मन माती
कृपा कीन्ह ममभाग्य अपारा। ऋषभदेव सुत जो पगुधारा
जैसेकियोपवित्र मोहिंचरणन। तैसे पूछत करिये बरणन
तब बोले योगी वर बैना। निजइच्छित तुम पूछत हैना
कहा जनक कर सम्पुटकरिके। कौनवस्तुअस्थिर बिनभरिकै
जो कह धन स्त्री अरु बालक। आज्ञाकरिकैअरुकुलपालक
ताते मुनि कछु अस्थिर नाहीं। धनदकुशासन सब मरिजाहिं
ताते शोक होत है भारी। है अस्थिर को कहो बिचारी
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी। अस्थिर नाश न कहिये तैसी
बोले कश्यप नामक योगी। प्रथमभयो हरिहर यश भोगी
बहुसुखप्राप्त उन्हें मिथिलेशा। जे हरिभक्ति ते त्यागिअँदेशा
पुत्र दार धन सब परिवारा। भाग्यमानजिमिअलबकरारा
जे लपटे पुत्रादिक नेहा। ते जब मरे विकल संदेहा
ताते नाश वस्तु है जोई। अलग रहै सुख पैहै सोई
हरि अवतार यहिहेतु धरत हैं। गाय जाहि नरना[illegible]रि तरत
जो मन लाग एकधा नाहीं। थोरा थोरा कीजिय [illegible]
जिमिभूखा अन ज्योंज्यों खैहै। त्यों त्यों धृत तासु [illegible]